# कग्युद महाप्रणिधान पाठ-संकलन

# कग्युद महाप्रणिधान पाठ-संकलन

संकलन कर्त्ता

17वें कर्मापा उर्ग्यन ठिनले दोर्जे

अनुवादक एवं सम्पादक :

आचार्य वङ्छुक दोर्जे नेगी

आचार्य रमेश चन्द्र नेगी (माथस)

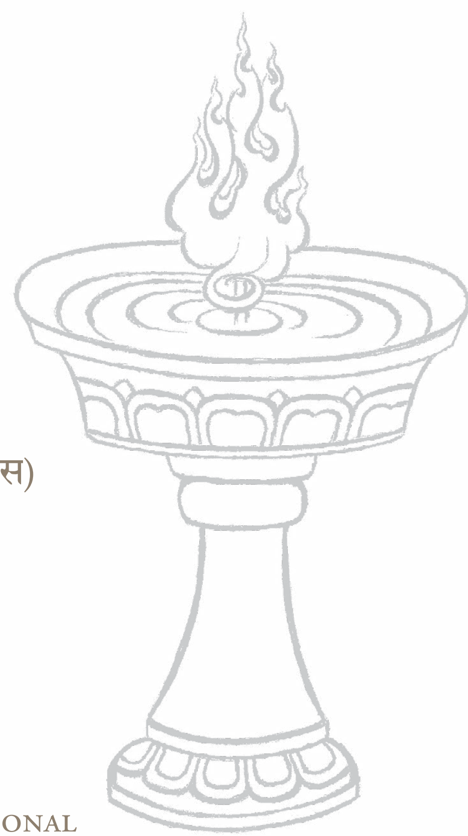

Kagyu Monlam International

बोधगया 2016

Kagyu Monlam
Kagyupa International Monlam Trust
Sujata Bypass
Bodhgaya, 823231 Gaya, Bihar, India

Copyright © 2016 Kagyu Monlam International. The contents of this book may be reproduced for free distribution if they are not changed or altered in any way.

For any other usage or distribution, contact executive@kagyumonlam.org for permission.

Illustrations by Sergey Noskov

Ebook edition © 2020 by dharmaebooks.org

Dharma Ebooks is a project of Dharma Treasure, which operates under the editorial guidance of the 17th Gyalwang Karmapa, Ogyen Trinley Dorje. The proprietary rights of Dharma Ebooks belong to Dharma Treasure Corporation.

正 法 寶 藏
Dharma Treasure

དཀར་ཆག།

# विषयानुक्रमणिका


## दैनिक त्रिविध-पाठ

उपोसथ संवर-विधि . . . 3
त्रिदण्डकम् . . . 7
आर्यत्रिरत्नानुस्मृतिसूत्रम् . . . 7
प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्रम् . . . 8
दैनिक त्रिविध-पाठ . . . 9
त्रिरत्नानुस्मृतिसूत्र– . . . 13
प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्रम् . . . 16

## महाप्रणिधान-पाठ का क्रम

## प्रणिधान के बीस अंग

शरणगमन और बोधिचित्तोत्पाद . . . 25
1. भूमि-अधिष्ठानांग . . . 27
2. विहार अधिष्ठानांग . . . 27
3. पूजा-अधिष्टानांग . . . 29
4. आवाह्नांग . . . 31
5. स्वागतांग . . . 34
6. स्नानांग . . . 34
7. काय परिमार्जनांग . . . 35
8. वस्त्र एवं आभुषणार्पणांग . . . 36
9. लेप-अर्पणांग . . . 36
10 & 11 वन्दना और स्तुत्यांग द्वय . . . 37
आभासालंकार सूत्र में आया बुद्ध-स्तुति . . . 37
राष्ट्रपालसूत्र में आये मुनि-स्तुति . . . 49
सूत्रालंकार में आये मैत्रेयनाथ द्वारा बुद्ध-स्तुति . . . 57
स्वामी रङ्-जुङ दोर्जे द्वारा संगृहीत शत-जातक वन्दना . . . 61
द्वादश लीला-स्तुति . . . 64
12. पूजार्पण . . . 68
रत्नोल्का-धारणी में कथित पूजा . . . 68
बोधिचर्यावतार में आई पूजा . . . 72

13. पाप-प्रायश्चितांग ... 77
त्रिसन्कध-सूत्र ... 77
सुवर्णप्रभा मे कथित प्रायश्चित ... 84
14. चित्तोत्पाद-अंग ... 90
15. अनुमोदन-अंग ... 94
16. धर्मचक्र प्रवर्त्तन प्रेरणा-अंग ... 95
17. दीर्घकाल तक रहने के लिये अभ्यर्थना-अंग ... 95
18. कुशल-मूल परिणामना-अंग ... 96
वज्रध्वज परिणामना में कथित ... 96
सुवर्णप्रभा में वर्णित ... 106
रत्नमाला में आये प्रणिधान ... 114
19. प्रणिधान-अंग ... 119
भद्रचर्या-प्रणिधान ... 119
मैत्रेय-प्रणिधान ... 134
बोधिचर्या-प्रणिधान ... 141
सुखावती-ज्ञेया-प्रणिधान ... 156
महाप्रणिधान ... 164
जीवित आयुष्मान् और मृतक के लिये परिणामना ... 178
प्रणिधानसिद्धि-धारणी ... 182
शासन-उज्जवलार्थ-प्रणिधान ... 184
सभी परम्पराओं के शासनधरों के दार्घायु हेतु प्रणिधान ... 188
20. मंगलवचनांग ... 192
आगम-वस्तु में आये मंगलकारी प्रार्थना ... 192
बारह लीलाओं का मंगलाचरण ... 198
देव परिपृच्छा मंगल श्लोक ... 206
अष्ट मंगल-द्रव्य भेंट ... 213
सात राजशाही वस्तुयें। ... 219
आठ मंगल-लक्षण भेंट ... 223
मरपा के मुख से कहे मंगल-वचन ... 225
विशाल मेलाप-स्थल मंगलाचरण ... 227
सत्यसिद्धक ... 231

## बुद्ध-बोधिसत्त्वों की स्तुति का संग्रह

भगवान् नाथ मञ्जुवज्र का मंगलाचरणकारी स्तुति विहरति स्म। ... 237
भिक्षुणी लक्ष्मी द्वारा रचित आर्य (अवलोकितेश्वर) स्तुति ... 240
ब्रह्म-पटल नामक जिन मैत्रेयनाथ का विलापपूर्ण स्तुति ... 245
भूमि सु-अलंकार स्तुति ... 261
श्रीसमन्तभद्र-स्तुति एवं प्रणिधान ... 264
षड्-अलंकार श्रेष्ठ-द्वय की स्तुति ... 276
पञ्चविंशति-रथ की अभ्यर्थना ... 280

संक्षिप्त वज्रधर अभ्यर्थना ........ 282
संक्षिप्त हेतु-यान-परम्परा अध्येषणा (बोधिसत्त्वसंवर-परम्परा-अध्येषणा) ........ 284

## शासन एवं सत्त्वों की बाधा-निवारक-विधि

आर्या की सप्तांग पूजा ........ 291
एकविंशिति तारा-स्तुति (अनुशंसा सहित) ........ 294
सप्त-शरण ........ 301
सुचित्रण ........ 303
शुक्ल-तारा स्तुति ........ 311
अधिष्ठान-आभास नामक सरस्वती देवी-स्तुति ........ 315
गुरु की सप्तपदी अध्येषणा ........ 319
बाधा-निवारक अध्येषणा ........ 320
अध्येष्णा : आशय-सहजसिद्धक ........ 334

## कुशलमूल को बोधि में परिवर्तित करने वाले आकस्मिक परिणामना एवं प्रणिधान

सत्य-पद-सिद्धि प्रणिधान ........ 345
काम-अध्येषणा-नाम सत्त्व-सुखोत्सव ........ 350
मार्गक्रम प्रणिधान ........ 354
शङ्क-पा-धर्म प्रणिधान ........ 356
दम्-पा का त्रिंशिका-प्रणिधान ........ 363
नीतार्थ महामुद्रा प्रणिधान ........ 367
अवलोकितेश्वर प्रणिधान ........ 373
महान् तग्-लुङ् थङ्-पा का प्रणिधान ........ 380
मुक्त-रत्न नामक ठो-फु प्रणिधान ........ 385
सत्र-प्रणिधान (नाम) भट्टारक फग्-डु वचन ........ 432
छल्-पा प्रणिधान ........ 434
असाधारण परिणामना और प्रणिधान ........ 440
मि-ला (रस्-पा) का प्रणिधान ........ 449
भोट-देश सुख-प्रणिधान ........ 453

## पूर्व-पश्चिम क्षेत्र-व्यूह प्रणिधान

सूत्राभिप्रायार्थ नामक अमरावती-क्षेत्र प्रणिधान ........ 457
विशुद्ध-सुखावती प्रणिधान ........ 467
संक्षिप्त सुखावती प्रणिधान ........ 489

## महाप्रणिधान के अवसर पर कुछ आवश्यक विधियाँ

स्थविर-नमन-पूजा ........ 495
संक्षिप्त सप्त तथागत पूजा-विधि ........ 505

गुरु-पूजा विधि ..... 534
नाथ बेर्-चन् चम्-डल् का संक्षिप्त पोषण-विधि ..... 595
कर्म-आशु प्रार्थना ..... 598

## नाथ-अविक्षिप्त धारणी-सूत्र

आर्य-सर्वकर्मावरण-विशोधनी नाम धारणी ..... 603
(आर्य-)दुःख-विमुक्तक-धारणी-सूत्र ..... 608

## दीर्घायु-अध्येषणा

परमपावन 14वें दलाई लामा की अमर-अमृत भद्रघट (नामक) दीर्घायु-अध्येषणा ..... 617
परम नायक 17वें कर्मापा तन्-ज़िन् कुन्-ख्यब् वङ्-गी दोर्जे की अनाभोगेच्छा (नामक) दीर्घायु-अध्येषणा ..... 621
काग्युद् गुरुओं की दीर्घायु-अध्येषणा ..... 624
कम्-छङ सप्त पिता-पुत्र की दीर्घायु-अध्येषणा ..... 627

## महाप्रणिधान के अवसर पर प्रवचन-पाठ

सप्त त्रिंशत (सैंतीस) मण्डल(-पूजा) ..... 633
दशदिग् चार काल (नामक) शासन-विस्तार प्रणिधान ..... 641

## दीप-प्रणिधान

महाकारुणिक की भावना-जप जगदर्थ आकाश-व्याप्त ..... 647
दीप-प्रणिधान ..... 650

# दैनिक त्रिविध-पाठ

# ཐེག་ཆེན་གསོ་སྦྱོང་གི་ཆོ་ག །
# उपोसथ संवर-विधि

བླ་མའམ་རྟེན་གྱི་དྲུང་ནས་གསོ་སྦྱོང་གི་སྡོམ་པ་ལེན་པ་ལ། ཕྱག་གསུམ་འཚལ། པུས་མོ་བཙུགས་ཏེ།
गुरु एवं अधिष्ठान के समक्ष उपोसथ संवर लेने के लिए तीन बार (पञ्चाग अथवा अष्टांग) प्रणाम करें। (तत्पश्चात्) घुटने टेककर–

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ།
छ्योग चु न शुग पई सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे दग ल गोङ सु सोल
दशों दिशाओं में विराजमान समस्त बुद्ध एवं बोधिसत्त्व मुझे ध्यान दें।

སློབ་དཔོན་དགོངས་སུ་གསོལ།
लोप पोन गोङ सु सोल
गुरु मुझे ध्यान दें।

ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྟ་ཅང་ཤེས་ལྟ་བུ།
जि तर ङोन ग्यि दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् त चङ शेस् त बु
जैसे पूर्व के तथागत, अर्हत्, सम्यक् सम्बुद्ध, आजानेयाशवोपम.

གླང་པོ་ཆེན་པོ། བྱ་བ་བྱས་ཤིང་། བྱེད་པ་བྱས་པ། ཁུར་བོར་བ། རང་གི་དོན་རྗེས་སུ་ཐོབ་པ།
लङ पो छेन पो    छ व छेस् शिङ    छेद् प छेस् प    खुर बोर व    रङ गि दोन जेस् सु थोप प
महावृषभ, कृत-कृत्य, कृत-कार्य, भार-त्याजक, स्वार्थ-अनुलब्ध,

སྲིད་པ་ཀུན་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡོངས་སུ་ཟད་པ། ཡང་དག་པའི་བཀའ། ལེགས་པར་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཐུགས།
सिद् प कुन तु छोर व योङ सु ज़े प    यङ दग पई का    लेग पर नम पर डोल बई थुग
भवसंयोजनपरिक्षयक, सम्यक्-आगम, सुविमुक्तचित्तक

ལེགས་པར་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་ཤེས་རབ་ཅན་དེ་དག་གིས། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་གྱི་ཕྱིར་དང་།
लेग पर नम पर डोल बई शेस् रप चेन दे दग गीस्    सेम चेन थम चे क्यि दोन ग्यि छ्यिर दङ
सुविमुक्त-ज्ञानवान्–उनके द्वारा सर्वसत्त्वार्थ,

ཕན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། གྲོལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། མུ་གེ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་།
फेन पर छ बई छियर दङ  डोल वर छ बई छियर दङ  मु गे मेद् पर छ बई छियर दङ
**कल्याणार्थ, मुक्तार्थ, अकाल को समाप्त करने के लिए,**

ནད་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་
ने मेद् पर छ बई छियर दङ  छङ छुप क्यि छ्योग क्यि छोस् नम योङ सु ज़ोग पर छ बई
**रोग को समाप्त करने के लिए, बोधिपाक्षिक धर्मों की परिसमाप्ति के लिए,**

ཕྱིར་དང་། བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ངེས་པར་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།
छियर दङ  ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप ङेस् पर तोग पर छ बई छियर
**अनुत्तर सम्यक् सम्बुद्ध को नियत रूप से अवगम करने के लिए**

གསོ་སྦྱོང་ཡང་དག་པར་མཛད་པ་དེ་བཞིན་དུ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བས་ཀྱང་། དུས་འདི་ནས་བཟུང་སྟེ།
सो छोङ यङ दग पर ज़े प दे शिन दु  दग मिङ दि शेस् ग्यि वे क्यङ  दुस् दि नेस् ज़ुङ ते
**सम्यक् रूप से उपोसथ किया था, उसी प्रकार मैं अमुक ...नाम वाला भी इस काल से लेकर**

ཇི་སྲིད་སང་ཉི་མ་མ་ཤར་གྱི་བར་དུ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་གྱི་ཕྱིར་དང་།
जि सिद् सङ ञि म म शर ग्यि बर दु  सेम चेन थम चे क्यि दोन ग्यि छियर दङ
**यावत् कल के सूर्योदय नहीं होने तक सर्वसत्त्वार्थ,**

ཕན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། གྲོལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། མུ་གེ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་།
फेन पर छ बई छियर दङ  डोल वर छ बई छियर दङ  मु गे मेद् पर छ बई छियर दङ
**कल्याण के लिए, मुक्त होने के लिए, अकाल नहीं होने के लिए,**

ནད་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་
ने मेद् पर छ बई छियर दङ  छङ छुप क्यि छ्योग क्यि छोस् नम योङ सु ज़ोस पर छ बई
**रोग की समाप्ति के लिए, बोधिपाक्षिक धर्मों की परिसमाप्ति के लिए और**

ཕྱིར་དང་། བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ངེས་པར་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གསོ་སྦྱོང་
छियर दङ  ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप ङेस् पर तोग पर छ बई छियर सो छोङ
**अनुत्तर सम्यक् सम्बुद्ध के नियत अवबोधन के लिए उपोसथ को**

ཡང་དག་པར་བླང་བར་བགྱིའོ། །ལན་གསུམ་མཐར་བླ་མས་ཐབས་ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་པ་ལ་ལེགས་སོ་ཞེས་བརྗོད།
यङ दग पर लङ बर ग्यि हो  थप यिन नो  लेग सो
**सम्यक् रूप से ग्रहण करता हूँ।** तीन बार। गुरु द्वारा–**उपाय है।** ऐसा कहने पर–**साधु,** ऐसा कहना चाहिए।

དེང་ནས་སྲོག་གཅོད་མི་བྱ་ཞིང་། །
देङ नेस् सोग चोद् मि छ शिङ
आज से प्राणिहत्या नहीं करूँगा।

གཞན་གྱི་ནོར་ཡང་བླང་མི་བྱ། །
शेन ग्यि नोर यङ लङ मि छ
अन्य के धन को भी ग्रहण नहीं करूँगा।

འཁྲིག་པའི་ཆོས་ཀྱང་མི་སྤྱད་ཅིང་། །
ठिग पई छोस् क्यङ मि चे चिङ
सम्भोग धर्म का आचरण नहीं करूँगा।

རྫུན་གྱི་ཚིག་ཀྱང་མི་སྨྲོ། །
ज़ुन ग्यि छिग क्यङ मि म्हो
झूठ के शब्द को भी नहीं बोलूँगा।

སྐྱོན་ནི་མང་པོ་ཉེར་བརྟེན་པའི། །
क्योन नि मङ पो ञेर तेन पई
बहुत से दोषों को आश्रय देने वाले।

ཆང་ནི་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱ། །
छङ नि योङ सु पङ बर छ
मद्य का परित्याग करूँगा।

ཁྲི་སྟན་ཆེ་མཐོ་མི་བྱ་ཞིང་། །
ठि तेन छे थो मि छ शिङ
बहुत ऊँचे आसन पर नहीं बैठूँगा।

དེ་བཞིན་དུས་མ་ཡིན་པའི་ཟས། །
दे शिन दुस् म यिन पई ज़ेस्
ऐसे ही अकाल भोजन।

དྲི་དང་ཕྲེང་བ་རྒྱན་དང་ནི། །
डि दङ ठेङ व ग्येन दङ नि
गन्ध, माला, अलंकार तथा।

གར་དང་གླུ་སོགས་སྤང་བར་བྱ། །
गर दङ लु सोग पङ बर छ
नृत्य एवं गीत आदि का त्याग करूँगा।

ཇི་ལྟར་དགྲ་བཅོམ་རྟག་ཏུ་ནི། །
जि तर ड चोम तग तु नि
जैसे अर्हत् सदा।

སྲོག་གཅོད་ལ་སོགས་མི་བྱེད་ལྟར། །
सोग चोद् ल सोग मि छेद् तर
प्राणिहत्या आदि नहीं करते हैं।

དེ་བཞིན་སྲོག་གཅོད་ལ་སོགས་སྤང་། །
दे शिन सोग चोद् ल सोग पङ
वैसे ही प्राणिहत्या आदि का त्याग करता हूँ।

བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་མྱུར་ཐོབ་ཤོག།
ल मेद् छङ छुप न्युर थोप शोग
अनुत्तर बोधि शीघ्र प्राप्त हो।

སྡུག་བསྔལ་མང་དཀྲུགས་འཇིག་རྟེན་འདི། །
दुग ङल मङ दटुग जिग तेन दि
बहुत दुःखों को विलोडन करने वाला यह लोक।

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་སྒྲོལ་བར་ཤོག །
सिद् पई छो लेस डोल वर शोग
भव-सागर से तर जाये।

ཕྱག་གསུམ།
तीन बार प्रणाम।

ཨོཾ་ཨ་མོ་གྷ་ཤཱི་ལ། སམྦྷ་ར་སམྦྷ་ར། བྷ་ར་བྷ་ར། མ་ཧཱ་ཤུདྡྷ་ས་ཏྭ། པདྨ་བི་བྷུ་ཥི་ཏ་བྷུ་ཛ། དྷ་ར་དྷ་ར།
ओं अमोघशील। सम्भर सम्भर। भर भर। महाशुद्धसत्व। पद्मविभुषितभुज। धर धर।
ओं अमोघशील सम्भर-सम्भर भर-भर महाशुद्धसत्त्व पद्मविभूषित भुज धर-धर

ས་མནྟ་ཨ་བ་ལོ་ཀི་ཏེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།
समन्त अबलोकिते हूँ फट् स्वाहा।
समन्त-अवलोकिते हूँ फट स्वाहा।।

ཁྲིམས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་སྐྱོན་མེད་ཅིང་། །
ठिम क्यि छुल ठिम क्योन मेद् चिङ
शील-नयशील दोष रहित हों।

ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་པར་དག་དང་ལྡན། །
छुल ठिम नम पर दग दङ देन
विशुद्ध शीलनय से युक्त हो जाऊँ।

རློམ་སེམས་མེད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱིས། །
लोम सेम मेद् पई छुल ठिम क्यीस्
आसक्ति रहित शीलनय के द्वारा।

ཚུལ་ཁྲིམས་ཕ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
छुल ठिम फ रोल छ्यिन ज़ोग शोग
शीलपारमिता परिपूर्ण हो जाए।।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་སློབ་གྱུར་ཏེ། །
ग्यल व कुन ग्यि जेस् सु लोप ग्युर ते
समस्त जिनों का अनुशिक्षण कर।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། །
ज़ङ पो चोद् प योङ सु ज़ोग छेद् चिङ
भद्रचर्या परिपूर्ण करके।

ཚུལ་ཁྲིམས་སྤྱོད་པ་དྲི་མེད་ཡོངས་དག་པ། །
छुल ठिम चोद् प डि मेद् योङ दग प
शीलचर्या विमल परिशुद्ध हों।

རྟག་ཏུ་མ་ཉམས་སྐྱོན་མེད་སྤྱོད་པར་ཤོག །
तग तु म ञम क्योन मेद् चोद् पर शोग
सदा अदूषित हो दोष रहित चर्या करूँ।।

ལུས་ལ་ཆོས་གོས་གསུམ་གྱི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
लुस् ल छोस् गोस् सुम ग्यि टि शीस् शोग
काय में त्रिचीवर का मंगल हो।

ངག་ལ་སྡེ་སྣོད་གསུམ་གྱི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ङग ल दे नोद् सुम ग्यि टि शीस् शोग
वाक् में त्रिपिटक का मंगल हो।

སེམས་ལ་བསླབ་པ་གསུམ་གྱི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
सेम ल लप प सुम ग्यि टि शीस् शोग
चित्त में त्रिशिक्षा का मंगल हो।

ཀུན་ལ་དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
कुन ल कोन छोग सुम ग्यि टि शीस् शोग
सभी में त्रिरत्न का मंगल हो।।

# त्रिदण्डकम्

बुद्धं शरणं गच्छामि। धर्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि। (त्रिवारम्) (द्वितीयं अपि ...तृतीयं अपि)

शास्ता भगवांस्तथागतोऽर्हन् सम्यक्सम्बुद्धो विद्याचरणसम्पन्नः सुगतो लोकविदनुत्तरः पुरुषदम्यसारथिः शास्ता देवमनुष्यानां बुद्धो भगवान् श्रीजिनशाक्यमुनिं नमस्करोमि पूजयामि शरणं च गच्छामि॥

## आर्यत्रिरत्नानुस्मृतिसूत्रम्

नमो सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः

(बुद्धानुस्मृतिः) इत्यपि बुद्धो भगवांस्तथागतोऽर्हन् सम्यक्संबुद्धो विद्याचरणसम्पन्नः सुगतो लोकविदनुत्तरः पुरुषदम्यसारथिः शास्ता देवमनुष्याणां बुद्धो भगवानिति। निष्यन्दः स तथागतः पुण्यानाम्, अविप्रणाशः कुशलमूलानाम्, अलङ्कृतः क्षान्त्या, आलयः पुण्यनिधानानाम्, चित्रितोऽनुव्यञ्जनैः, कुसुमितो लक्षणैः, प्रतिरूपो गोचरेण, अप्रतिकूलो दर्शनेन, अभिरतिः श्रद्धाधिमुक्तानाम्, अनभिभूतः प्रज्ञया, अनवमर्दनीयो बलैः, शास्ता सर्वसत्त्वानाम्, पिता बोधिसत्त्वानाम्, राजा आर्यपुद्गलानाम्, सार्थवाहः निर्वाणनगरसम्प्रस्थितानाम्, अप्रमेयो ज्ञानेन, अचिन्त्यः प्रतिभानेन, विशुद्धः स्वरेण, आस्वादनीयो घोषेण, असेचनको रूपेण, अप्रतिसमः कायेन, अलिप्तः कामैः, अनुपलिप्तो रूपैः, असंसृष्ट आरूप्यैः, विप्रमुक्तः स्कन्धेभ्यः, विसम्प्रयुक्तो धातुभिः, संवृत आयतनैः, प्रच्छिन्नो ग्रन्थैः, विमुक्तः परिदाघैः, परिमुक्तस्तृष्णया, ओघादुत्तीर्णः, परिपूर्णो ज्ञानेन, प्रतिष्ठितोऽतीतानागतप्रत्युत्पन्नानां बुद्धानां भगवतां ज्ञाने, अप्रतिष्ठितो निर्वाणे, स्थितो भूतकोट्याम्, स्थितः सर्वसत्त्वालोकनीयायां भूमौ, सर्वे इमे तथागतानां विशेषतः सम्यग् गुणाः।

(धर्मानुस्मृतिः) सद्धर्मस्तु आदौ कल्याणः, मध्ये कल्याणः, पर्यवसाने कल्याणः, स्वर्थः, सुव्यञ्जनः, केवलः, परिपूर्णः, परिशुद्धः, पर्यवदातः, स्वाख्यातः भगवतो धर्मः, सान्दृष्टिकः, निर्ज्वरः, आकालिकः, औपनायिकः, ऐहिपश्यिकः, प्रत्यात्मवेदनीयो विज्ञैः, स्वाख्यातो भगवतो धर्मविनयः सुप्रवेदितः नैर्याणिकः, संबोधिगामी, अभिन्नः संस्तूपः, सप्रतिशरणः, छिन्नप्लोतिकः।

(संघानुस्मृतिः) सुप्रतिपन्नो भगवत आर्यसंघः, न्यायप्रतिपन्नः, ऋजुप्रतिपन्नः, सामीचीप्रतिपन्नः, अञ्जलीकरणीयः, सामीचीकरणीयः, पुण्यश्रीक्षेत्रः, महादक्षिणापरिशोधकः, प्राहवनीयः, आहवनीयः।

॥ आर्यत्रिरत्नानुस्मृतिसूत्रं समाप्तम्॥

## प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्रम्।

॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

आर्यावलोकितेश्वरबोधिसत्त्वो गम्भीरायां प्रज्ञापारमितायां चर्यां चरमाणो व्यवलोकयति स्म॥ पञ्चस्कन्धांस्तांश्च स्वभावशून्यान् पश्यति स्म।

इह शारिपुत्र रूपं शून्यता, शून्यतैव रूपम्। रूपान्न पृथक् शून्यता, शून्यताया न पृथग् रूपम्। यद्रूपम् तद् शून्यता या शून्यता तद्रूपम्॥ एवमेव वेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानि॥

इह शारिपुत्र सर्वधर्माः शून्यतालक्षणा अनुत्पन्ना अनिरुद्धा अमला न विमला नोना न परिपूर्णाः। तस्माच्छारिपुत्र शून्यतायां न रूपम् , न वेदना न संज्ञा न संस्काराः न विज्ञानानि। न चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकाय मनांसि, न रूपशब्दगन्धरसस्प्रष्टव्यधर्माः। न चक्षुर्धातुर्यावन्न मनोधातुः। न विद्या नाविद्या न विद्याक्षयो नाविद्याक्षयो यावन्न जरामरणं न जरामरणक्षयो न दुःखसमुदयनिरोधमार्गा न ज्ञानं न प्राप्तित्वम्॥

बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञापारमितामाश्रित्य विहरति चित्तावरणः। चित्तावरणनास्तित्वादत्रस्तो विपर्यासातिक्रान्तो निष्ठनिर्वाणः। त्रयध्वव्यवस्थिताः सर्वबुद्धाः प्रज्ञापारमितामाश्रित्य अनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुद्धाः॥

तस्माज्ज्ञातव्यः प्रज्ञापारमितामहामन्त्रो महाविद्यामन्त्रो अनुत्तरमन्त्रो असमसममन्त्रः सर्वदुःखप्रशमनमन्त्रः सत्यममिथ्यत्वात् प्रज्ञापारमितामुक्तो मन्त्रः तद्यथा गते गते पारगते पारसंगते बोधि स्वाहा॥

इति प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्रम् समाप्तम्

सर्वपापस्याकरणं कुशलस्योपसम्पदा।
स्वचित्तपर्यवदापनं एतद् बुद्धानां शासनम्॥

तारका तिमिरं दीपो मायावश्याय बुद्बुदम्।
स्वप्नं च विद्युदभ्रं च एवं द्रष्टव्यसंस्कृतम्॥

अनेन पुण्येन तु सर्वदर्शितमवाप्य निर्जित्य च दोषविद्विषः।
जरारुजामृत्युमहोर्मिसङ्कुलात् समुद्धरेयं भवसागराज्जगत्॥

॥भवतु सर्वमङ्गलम्॥

# རྒྱུན་ཆགས་གསུམ་པ།
# दैनिक त्रिविध-पाठ

དུས་ཆེན་གྱི་དུས་ལ་སོགས་པར་ཕྱག་འཚལ་ཞིང་བསྟོད་དབྱངས་སྒྲོགས་པ་དང་། མཆོད་པ་དང་སྡིག་པ་བཤགས་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་བསགས་ཤིང་གོང་དུ་སྤེལ་བ་དང་། འགལ་རྐྱེན་སྒྲིབ་པ་སྦྱོང་བའི་ཆོ་གའི་རིམ་པ་བསྒྲིགས་པ་ལ། དང་པོ་རྒྱུན་ཆགས་གསུམ་པ་འདོན་པ་ལ། ཐོག་མར་ཕྱག་འཚལ་བའི་རྒྱུད་ནི།

विशेष पवित्र-उत्सव आदि के समय वन्दना कर स्तुति-घोष की घोषणा करना, पूजा तथा पापदेशना इत्यादि पुण्यसम्भार का संचय कर उसमें बढ़ोत्तरी करना, आवरण रूपी विरुद्ध-प्रत्यय के शोधन हेतु (विशेष) विधिक्रम की स्थापना की जाती है। इस अवसर पर प्रथम दैनिक त्रिविध-पाठ के समय प्रणाम-तन्त्र तो–

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས། རིག་པ་དང་ཞབས་སུ་ལྡན་པ།
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस्   रिग प दङ शप सु देन
भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध, विद्याचरणसम्पन्न,

བདེ་བར་གཤེགས་པ། འཇིག་རྟེན་མཁྱེན་པ། སྐྱེས་བུ་འདུལ་བའི་ཁ་ལོ་སྒྱུར་བ། བླ་ན་མེད་པ།
प   दे वर शेग प   जिग तेन ख्येन प   क्येस् बु दुल बई ख लो ग्युर व   ल न मेद् प
सुगत, लोकविद्, पुरुषदम्यसारथि, अनुत्तर,

ལྷ་དང་མི་རྣམས་ཀྱི་སྟོན་པ་མཉམ་མེད་ཤཱཀྱའི་རྒྱལ་པོའི་ཞབས་ཀྱི་རྡུལ་དྲི་མ་མེད་པ་ལ་མགོ་བོས་རབ་ཏུ་གཏུགས་ཏེ་གུས་
ल्ह दङ मि नम क्यि तोन प ञम मेद् शाक्यई ग्यल पोइ शप क्यि दुल डि म मेद् प ल गो वोस्
देव और मनुष्यों के शास्ता अद्वितीय शाक्यराज के विमल चरणरज को शीर्ष नवाकर आदरपूर्वक

པས་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཞེས་པའི་ཚིག་མཚམས་རྣམས་ལ་ཕྱག་བྱའོ། །ཡབ་སྲས་མཇལ་བའི་མདོ་ལས།
रप तु तुग ते गुस् पेस् छ्यग छ़ल लो
प्रणाम करता हूँ। इस (प्रणाम करता हूँ) पद के बाद (पञ्चाङ्ग आदि) प्रणाम (प्रत्यक्ष रूप से) करना चाहिए। पिता-पुत्र समागमसूत्र में–

གང་ཚེ་རྐང་གཉིས་གཙོ་བོ་ཁྱོད་བལྟམས་ཚེ། །
गङ छ़े कङ ञीस् त्सो वो ख्योद् तम छ़े
जब द्विपाद प्रमुख आप उत्पन्न हुए।

ས་ཆེན་འདི་ལ་གོམ་པ་བདུན་བོར་ནས། །
स छेन दि ल गोम प दुन बोर नेस्
इस महाभूमि पर सात पद रखकर।

ང་ནི་འཇིག་རྟེན་འདི་ན་མཆོག་ཅེས་གསུངས། །
ङ नि जिग तेन दि न छोग चेस् सुङ
कहा–मैं इस लोक में उत्तम हूँ।

དེ་ཚེ་མཁས་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दे छ़े खेस् प ख्योद् ल छ्यग छ़ल लो
तदा विद्वान्! आपको प्रणाम करता हूँ।।

ཏོག་གཟུངས་ལས།
केतु धारणी में–

རྣམ་དག་སྐུ་མངའ་མཆོག་ཏུ་གཟུགས་བཟང་བ། །
नम दग कु ङा छोग तु ज़ुग ज़ङ व
विशुद्ध कायवान् परम भद्र-काय-युक्त।

གྲགས་པ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ལྷང་ངེ་བ། །
डग प जिग तेन सुम न ल्हङ ङे व
प्रकाशित है यश तीनों लोकों में ।

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་གསེར་གྱི་ལྷུན་པོ་འདྲ། །
ये शेस् ग्य छ़ो सेर ग्यि ल्हुन पो ड
ज्ञानसमुद्र, सुवर्ण मेरु-सा।

མགོན་པོ་མཆོག་བརྙེས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
गोन पो छोग ञेस् ख्योद् ल छ्यग छ़ल लो
नाथ परम प्राप्तक, प्रणाम है आपको।।

འཕགས་པ་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་གི་མདོ་ལས།
राष्ट्रपाल(परिपृच्छा)सूत्र में–

མཚན་མཆོག་ལྡན་པ་དྲི་མེད་ཟླ་བའི་ཞལ། །
छ़ेन छोग देन प डि मेद् द बई शल
परम नाम वाले, विमल चन्द्रमुख।

རྡུལ་བྲལ་ཁྱོད་འདྲ་སྲིད་པ་གསུམ་མ་མཆིས། །
दुल डल ख्योद् ड सिद् प सुम म छीस्
रज विरक्त आप-सा, त्रिलोक में कोई नहीं।

གསེར་མདོག་འདྲ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सेर दोग ड व ख्योद् ल छ्यग छ़ल लो
सुवर्ण वर्ण-सा, आपको प्रणाम है।

མཉམ་མེད་མཁྱེན་ཅན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ञम मेद् ख्येन चेन ख्योद् ल छ्यग छ़ल लो
अप्रतिम ज्ञानवान्, आपको प्रणाम है।। इति।

ཞེས་དང་། འདུལ་བ་རྣམ་འབྱེད་ལས།
विनय विभंग में–

མི་མཆོག་འདུལ་བ་ཁ་ལོ་སྒྱུར་མཛད་ཅིང་། །
मि छोग दुल व ख लो ग्युर ज़े चिङ
हैं नरोत्तम, दम्य (तथा) सारथि।

དབང་པོ་ཞི་ཞིང་ཉེར་ཞི་ཞི་ལ་མཁས། །
वङ पो शि शिङ ञेर शि शि ल खेस्
इन्द्रियशान्त होकर उपशान्त-शान्ति में कुशल।

ཀུན་སྦྱོར་འཆིང་བ་གཅོད་མཛད་དེ་བཞིན་གཤེགས། །
कुन छ्योर छिङ व चोद् ज़े दे शिन शेग
हैं तथागत संयोजन-बन्धन-छेदक।

མཉན་ཡོད་བཞུགས་པ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ञेन योद् शुग प दे ल छ्यग छ़ल लो
श्रावस्तीवासी, उनको प्रणाम है।।

ལེགས་གྲུབ་ཀྱི་རྒྱུད་ལས། མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ལྡན་པ། །
ལེགས་གྲུབ་ཀྱི་རྒྱུད་ལས། गोन पो थुग जे छे देन प
सुसिद्धतन्त्र में–नाथ, महाकरुणावान्।

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་སྟོན་པ་པོ། །
थम चे ख्येन प तोन प पो
सर्वज्ञता के प्रदर्शनकर्त्ता।

བསོད་ནམས་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་ཞིང་། །
सोद् नम योन तेन ग्य छ़ोइ शिङ
पुण्य-ज्ञानसमुद्र के क्षेत्र।

དེ་བཞིན་གཤེགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दे शिन शेग ल छ्याग छ़ल लो
तथता-आगत को प्रणाम करता हूँ।।

དག་པ་འདོད་ཆགས་བྲལ་བའི་རྒྱུ། །
दग प दोद् छग डल बई ग्यु
शुद्ध, रागविरक्ति के हेतु।

དགེ་བས་ངན་སོང་ལས་གྲོལ་ཞིང་། །
गे वे ङेन सोङ लेस डोल शिङ
कुशल द्वारा दुर्गति से तरते।

གཅིག་ཏུ་དོན་དམ་མཆོག་གྱུར་པའི། །
चिग तु दोन दम छोग ग्युर पई
एकान्ततः परम-श्रेष्ठ हैं।

ཞི་གྱུར་ཆོས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
शि ग्युर छोस् ल छ्याग छ़ल लो
शान्तभूत धर्म को प्रणाम करता हूँ।।

གྲོལ་ནས་གྲོལ་བའི་ལམ་ཡང་སྟོན། །
डोल नेस् डोल बई लम यङ तोन
मुक्त हो मुक्ति का मार्ग दिखाते।

བསླབ་པ་དག་ལ་རབ་ཏུ་གུས། །
लप प दग ल रप तु गुस्
शिक्षाओं में अत्यन्त आदरवान्।

ཞིང་གི་དམ་པ་ཡོན་ཏན་ཞིང་། །
शिङ गि दम प योन तेन शिङ
परमक्षेत्र गुणक्षेत्र हैं।

དགེ་འདུན་ལ་ཡང་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
गेन दुन ल यङ छ्याग छ़ल लो
संघ को भी प्रणाम करता हूँ।।

ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བཞི་པ་ལས།
चतुर्गाथा

སྐུར་གྱུར་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ལ། །
कुर ग्युर प नि थम चे ल
में–समस्त कायभूतों में।

མཚན་མཆོག་སུམ་ཅུ་གཉིས་མངའ་བའི། །
छ़ेन छोग सुम चु ञीस् ङा बई
बत्तीस परम लक्षणों से युक्त हैं।

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གྲགས་ལྡན་པ། །
ज़ोग पई सङ ग्येस् डग देन प
सम्यक् सम्बुद्ध (नाम से) प्रसिद्ध हैं।

རྒྱལ་བ་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल व कुन ल छ्याग छ़ल लो
समस्त जिनों (बुद्धों) को प्रणाम करता हूँ।।

རྫོགས་སངས་གང་དུ་བལྟམས་པ་དང་། །
ज़ोग सङ गङ दु तम प दङ
(सम्यक्) सम्बुद्ध जहाँ उत्पन्न हुए।

གང་དུ་བྱང་ཆུབ་ལ་རེག་དང་། །
गङ दु छङ छुप ल रेग दङ
जहाँ बोधि का स्पर्श किया।

ཞི་བའི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་དང་། །
शि बई खोर लो कोर व दङ
किया शान्त धर्मचक्र का प्रवर्त्तन।

ཟག་མེད་མྱ་ངན་འདས་པ་དང་། །
ज़ग मेद् न्य ङेन देस् प दङ
अनास्रव निर्वाण को प्राप्त किया।।

བདེ་གཤེགས་གང་དུ་བཞུགས་པ་དང་། །
दे शेग गङ दु शुग प दङ
जहाँ तथागत ने वास किया।

འཆག་པ་དང་ནི་བཞེངས་པ་དང་། །
छग प दङ नि शेङ प दङ
चंक्रमण किया तथा खड़े रहे।

སེང་གེ་ལྟ་བུར་གཟིམས་པ་ཡི། །
सेङ गे त बुर ज़िम प यि
सिंह समान शयन किया था।

གནས་དེ་ལ་ཡང་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नेस दे ल यङ छ्यग छ़ल लो
उन स्थानों को प्रणाम करता हूँ।।

སྟེང་དང་འོག་དང་བར་དག་དང་། །
तेङ दङ ह़ोग दङ बर दग दङ
ऊपर, नीचे तथा मध्य में।

ཕྱོགས་དང་ཕྱོགས་མཚམས་རྣམས་སུ་ཡང་། །
छ्योग दङ छ्योग छ़म नम सु यङ
दिशा तथा उपदिशाओं में भी।

སྐུར་བཅས་སྐུ་ནི་མེད་པ་ཡི། །
कुर चेस् कु नि मेद् प यि
प्रतिमा युक्त तथा प्रतिमा रहित।

མཆོད་རྟེན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཞེས་དང་།
छोद् तेन नम ल छ्यग छ़ल लो
स्तूपों को (मैं) प्रणाम करता हूँ।। इति।

མཐུན་པའི་སྨོན་ལམ་དགེ་ཚོགས་དཔག་མེད་ལས། །
थुन पई मोन लम गे छ़ोग पग मेद् लेस
समान प्रणिधान, अपरिमित पुण्यसम्भार से।

སྤྱད་པ་སྤྱོད་པ་ན་ཡང་མཆེད་གྱུར་ཅིང་། །
चे प चोद् प न यङ छेद् ग्युर चिङ
चर्याचरण के काल में बन्धु हुए थे।

བསྐལ་བཟང་གཅིག་ལ་མཛད་པ་མཐར་ཕྱིན་པའི། །
कल ज़ङ चिग ल ज़े प थर छ्यिन पई
एक भद्रकल्प में कर्म-पारंगत।

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སྟོང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़ोग पई सङ ग्येस् तोङ ल छ्यग छ़ल लो
एक हज़ार सम्बुद्धों को प्रणाम करता हूँ।।

ཡབ་སྲས་མཇལ་བའི་མདོ་ལས།
पितापुत्रसमागमसूत्र में–

དང་པོར་བྱང་ཆུབ་མཆོག་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་ནས། །
दङ पोर छङ छुप छोग तु सेम क्येद् नेस्
**प्रथम, बोधिचित्त उत्पन्न करके।**

བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་གསུམ་དུ་ཚོགས་བསགས་ཤིང་། །
कल प डङ मेद् सुम दु छ़ोग सग शिङ
**तीन असंख्य-कल्प तक सम्भार संचित किया।**

བར་དུ་གཅོད་པའི་བདུད་བཞི་འཇོམས་མཛད་པ། །
बर दु चोद् पई दुद् शि जोम ज़े प
**विघ्नकर्त्ता रूपी चार मारों को नष्ट किया।**

བཅོམ་ལྡན་སེང་གེ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चोम देन सेङ गे ख्योद् ल छ्यग छ़ल लो
**भगवान् हरि आपको प्रणाम करता हूँ।।**

ཞེས་དང་། ཏིང་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས།
ཞེས་དང་། ཏིང་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས།
इति च। समाधिराजसूत्र में–

ནམ་མཁའ་འདྲ་ཞིང་རྡུལ་བྲལ་དྲི་མ་མེད། །
नम खा ड शिङ दुल डल डि म मेद्
**आकाशोपम रजहीन विमल।**

ཤེས་རབ་སྲས་པོ་ལུས་དང་མཚན་མི་མངའ། །
शेस् रप सेस् पो लुस् दङ छ़ेन मि ङा
**प्रज्ञापुत्र, काय तथा लक्षण रहित।**

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཟབ་ཐུགས་རྗེ་ཅན། །
योन तेन ग्य छ़ो रप ज़प थुग जे चेन
**गुणसमुद्र, अतिगम्भीर करुणावान्।**

མཚུངས་མེད་ཕྱག་ནི་བདག་གི་སྤྱི་བོར་ཞོག །ཅེས་སོ། །གཉིས་པ་མདོ་འདོན་པའི་རྒྱུད་ལ།
छुङ मेद् छ्यग नि दग गि चि बोर शोग
**अद्वितीय हैं, हस्त मेरे शीर्ष पर रखें।।** इति। द्वितीय, सूत्रपाठ-तन्त्र में

## དཀོན་མཆོག་རྗེས་དྲན་གྱི་མདོ་ནི།
## त्रिरत्नानुस्मृतिसूत्र–

འདི་ལྟར་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས།
दि तर सङ ग्येस् चोम देन देस् दे नि दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस्
**इस प्रकार वह भगवान् तो तथागत-अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध,**

རིག་པ་དང་ཞབས་སུ་ལྡན་པ། བདེ་བར་གཤེགས་པ། འཇིག་རྟེན་མཁྱེན་པ། སྐྱེས་བུ་འདུལ་བའི་ཁ་ལོ་སྒྱུར་བ།
रिग प दङ शप सु देन प दे वर शेग प जिग तेन ख्येन प क्येस् बु दुल बई ख लो ग्युर व
**विद्याचरणसम्पन्न, सुगत, लोकविद्, पुरुषदम्यसारथि,**

བླ་ན་མེད་པ། ལྷ་དང་མི་རྣམས་ཀྱི་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཏེ།
ल न मेद् प ल्ह दङ मि नम क्यि तोन प सङ ग्येस् चोम देन देस् ते
**अनुत्तर, देव-मनुष्य के शास्ता बुद्ध भगवान् हैं।**

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེ་ནི་བསོད་ནམས་དག་གི་རྒྱུ་མཐུན་པ། དགེ་བའི་རྩ་བ་རྣམས་ཆུད་མི་ཟ་བ། བཟོད་པ་དག
दे शिन शेग प दे नि सोद् नम दग गि ग्यु थुन प गे बई त्स व नम छुद् मि ज़ व ज़ोद् प दग
**वह तथागत तो पुण्यों के निष्यन्द, अक्षय कुशलमूलक,**

གིས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་པ། བསོད་ནམས་ཀྱི་གཏེར་རྣམས་ཀྱི་གཞི། དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་རྣམས་ཀྱིས་སྤྲས་པ།
गीस् रप तु ग्येन प सोद् नम क्यि तेर नम क्यि शि पे छे ज़ङ पो नम क्यीस् टेस् प
**क्षान्ति से सुभूषित, पुण्यनिधियों के आधार, अनुव्यञ्जनों से सुशोभित,**

མཚན་རྣམས་ཀྱི་མེ་ཏོག་རྒྱས་པ། སྤྱོད་ཡུལ་རན་པར་མཐུན་པ། མཐོང་ན་མི་མཐུན་པ་མེད་པ།
छेन नम क्यि मे तोग ग्येस् प चोद् युल रेन पर थुन प थोङ न मि थुन प मेद् प
**लक्षण रूपी पुष्पों से प्रफुल्लित, उचित आचरणयुक्त, अप्रतिकूलदर्शनयुक्त,**

དད་པས་མོས་པ་རྣམས་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ། ཤེས་རབ་ཟིལ་གྱིས་མི་ནོན་པ། སྟོབས་རྣམས་ལ་བརྗི་བ་མེད་
दे पेस् मोस् प नम ल ङोन पर गा व शेस् रप ज़िल ग्यीस् मि नोन प तोप नम ल ज़ि व मेद्
**श्रद्धा द्वारा अधिमुक्तवानों के लिए अभिनन्दनीय, अनभिभूत प्रज्ञावान्, अनवमर्दनीय बलशाली,**

པ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྟོན་པ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཡབ། འཕགས་པའི་གང་ཟག་རྣམས་ཀྱི་
प सेम चेन थम चे क्यि तोन प छङ छुप सेम पा नम क्यि यप फग पई गङ ज़ग नम क्यि
**समस्त सत्त्वों के शास्ता, बोधिसत्त्वों के पिता, आर्यपुद्गलों के राजा,**

རྒྱལ་པོ། མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་དེད་དཔོན། ཡེ་ཤེས་དཔག་ཏུ་མེད་པ།
ग्यल पो न्य ङेन लेस देस् पई डोङ ख्येर दु डो व नम क्यि देद् पोन ये शेस् पग तु मेद् प
**निर्वाणनगर में जाने वालों के सार्थवाह, अपरिमित ज्ञान वाले,**

སྤོབས་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ། གསུང་རྣམ་པར་དག་པ། དབྱངས་སྙན་པ། སྐུ་བལྟ་བས་ཆོག་མི་ཤེས་པ།
पोप प सम ग्यीस् मि ख्यप प सुङ नम पर दग प यङ ञेन प कु छे त वे छोग मि शेस् प
**अचिन्त्य प्रतिभावान्, विशुद्ध वचन वाले, मधुर स्वर वाले, अतृप्तिकारक काय वाले,**

སྐུ་མཚུངས་པ་མེད་པ། འདོད་པ་དག་གིས་མ་གོས་པ། གཟུགས་དག་གིས་ཉེ་བར་མ་གོས་པ།
कु छुङ प मेद् प दोद् प दग गीस् म गोस् प ज़ुग दग गीस् ञे वर म गोस् प
**अनुपम काय वाले, रागों से अलिप्त, रूपों से अननुलिप्त,**

གཟུགས་མེད་པ་དག་དང་མ་འདྲེས་པ། སྡུག་བསྔལ་དག་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ། ཕུང་པོ་དག་ལས་རབ་ཏུ་རྣམ་
ज़ुग मेद् प दग दङ म डेस् प दुग ङल दग लेस नम पर डोल व फुङ पो दग लेस रप तु नम
**अरूपियों से अमिश्रित, दुःखों से विमुक्त, स्कन्धों से विनिर्मुक्त,**

པར་གྲོལ་བ། ཁམས་རྣམས་དང་མི་ལྡན་པ། སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་བསྡམས་པ། མདུད་པ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་བཅད་པ།
पर डोल व   खम नम दङ मि देन प   क्ये छेद् नम बदम प   दुद् प नम शिन तु चे प
**धातुओं से अयुक्त, संवृत आयतन वाले, ग्रन्थियों का अत्यन्त विच्छेद करने वाले,**

ཡོངས་སུ་གདུང་བ་དག་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ། སྲིད་པ་ལས་གྲོལ་བ། ཆུ་བོ་ལས་བརྒལ་བ།
योङ सु दुङ व दग लेस नम पर डोल व   सिद् प लेस डोल व   छु बो लेस गल व
**संतापों से विनिर्मुक्त, भव से मुक्त, ओघ से पार,**

ཡེ་ཤེས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ། འདས་པ་དང༌། མ་བྱོན་པ་དང༌། ད་ལྟར་བྱུང་བའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་
ये शेस् योङ सु ज़ोग प   देस् प दङ   म छोन प दङ   द तर छुङ बई सङ ग्येस् चोम देन देस्
**ज्ञान (से) परिपूर्ण, अतीत-अनागत तथा प्रत्युत्पन्न भगवान् बुद्धों के**

རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལ་གནས་པ། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་མི་གནས་པ། ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་མཐའ་ལ་
नम क्यि ये शेस् ल नेस प   न्य ङेन लेस देस् प ल मि नेस प   यङ दग प ञिद् क्यि था ल नेस
**ज्ञान में प्रतिष्ठित, निर्वाण में अप्रतिष्ठित,भूतकोटि में स्थित तथा**

གནས་པ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་གཟིགས་པའི་ས་ལ་བཞུགས་པ་སྟེ། འདི་དག་ནི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་སྐུ་
प   सेम चेन थम चे ल ज़िग पई स ल शुग प ते   दि दग नि सङ ग्येस् चोम देन देस् क्यि कु छे
**सर्वसत्त्वदर्शकभूमि पर विराजमान हैं। ये तो भगवान् बुद्ध के सम्यक्**

ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་རྣམས་སོ། །
बई योन तेन यङ दग प नम सो
**कायमाहात्म्य रूपी गुण हैं।**

ཆོས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ནི། དམ་པའི་ཆོས་ནི་ཐོག་མར་དགེ་བ། བར་དུ་དགེ་བ། ཐ་མར་དགེ་བ། དོན་བཟང་པོ།
दम पई छोस् नि थोग मर गे व   बर दु गे व   थ मर गे व   दोन ज़ङ पो
धर्मानुस्मृति तो–**सद्धर्म तो आदि में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी, अन्त में कल्याणकारी है, स्वर्थ,**

ཚིག་འབྲུ་བཟང་པོ། མ་འདྲེས་པ། ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ། ཡོངས་སུ་དག་པ། ཡོངས་སུ་བྱང་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་
छिग डु ज़ङ पो   म डेस् प   योङ सु ज़ोग प   योङ सु दग प   योङ सु छङ व   चोम देन देस्
**सुव्यञ्जन, केवल, परिपूर्ण, परिशुद्ध, पर्ववदात, भगवान् द्वारा**

ཀྱིས་ཆོས་ལེགས་པར་གསུངས་པ། ཡང་དག་པར་མཐོང་བ། ནད་མེད་པ། དུས་ཆད་པ་མེད་པ། ཉེ་བར་གཏོད་པ།
क्यीस् छोस् लेग पर सुङ प   यङ दग पर थोङ व   ने मेद् प   दुस् छे प मेद् प   ञे वर तोद् प
**सु-आख्यात, सान्दृष्टिक, निर्ज्वर, अकालिक, औपनयिक,**

འདི་མཐོང་བ་ལ་དོན་ཡོད་པ། མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པར་བྱ་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་
दि थोङ व ल दोन योद् प    खेस् प नम क्यीस् सो सो रङ गीस् रिग पर छ व    चोम देन देस्
**ऐहिपश्यिक, प्रत्यात्मवेदनीय, भगवान् द्वारा कथित**

ཀྱིས་གསུངས་པའི་ཆོས་འདུལ་བ་ལེགས་པར་སྟོན་པ། ངེས་པར་འབྱུང་བ། རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་འགྲོ་བར་བྱེད་པ།
क्यीस् सुङ पई छोस् दुल व लेग पर तोन प    ङेस् पर छुङ व    ज़ोग पई छङ छुप तु डो बर छेद्
**धर्म विनय पर स्वाश्रित,नैर्याणिक, सम्बोधिगामी,**

མི་མཐུན་པ་མེད་ཅིང་འདུས་པ་དང་ལྡན་པ། བརྟེན་པ་ཡོད་པ། རྒྱུ་བ་བཅད་པའོ། །
प    मि थुन प मेद् चिङ दुस् प दङ देन प    तेन प योद् प    ग्यु व चे प ह़ो
**अभिन्न न होते हुए संग्रहशील, सप्रतिशरण तथा आवागमन का छेदक है।**

དགེ་འདུན་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ནི། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་དགེ་འདུན་ནི་ལེགས་པར་ཞུགས་པ། རིགས་པར་ཞུགས་པ། དྲང་པོར་ཞུགས་པ།
དགེ་འདུན་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ནི། थेग प छेन पोइ गेन दुन नि लेग पर शुग प    रिग पर शुग प    डङ पोर शुग
संघानुस्मृति तो–**महायान का संघ सुप्रतिपन्न, न्यायप्रतिपन्न, ऋजुप्रतिपन्न,**

མཐུན་པར་ཞུགས་པ། ཐལ་མོ་སྦྱར་བའི་འོས་སུ་གྱུར་པ། ཕྱག་བྱ་བའི་འོས་སུ་གྱུར་པ།
प    थुन पर शुग प    थल मो छर बई ह़ोस् सु ग्युर प    छ्यग छ बई ह़ोस् सु ग्युर प
**सामीचीप्रतिपन्न, अञ्जलीकरणीय, वन्दनीय,**

བསོད་ནམས་ཀྱི་དཔལ་གྱི་ཞིང་། ཡོན་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བ་ཆེན་པོ། སྦྱིན་པའི་གནས་སུ་གྱུར་པ།
सोद् नम क्यि पल ग्यि शिङ    योन योङ सु छोङ व छेन पो    छिन पई नेस सु ग्युर प
**पुण्यश्रीक्षेत्र, दक्षिणामहापरिशोधक, दाक्षिणेय**

ཀུན་ཏུ་ཡང་སྦྱིན་པའི་གནས་སུ་གྱུར་པ་ཆེན་པོའོ། །ཞེས་དང་།
कुन तु यङ छिन पई नेस सु ग्युर प छेन पो ह़ो
**एवं सदा महादाक्षिणेय है।** इति।

ཡང་ན་ཤེར་སྙིང་གི་མདོ་འདོན་པར་གསུངས་ཏེ།

अथवा प्रज्ञा(पारमिता)हृदयसूत्र के पाठ के लिए कहा गया है–

རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཨཱརྱ་པྲཛྙཱ་པཱ་ར་མི་ཏཱ་ཧྲི་ད་ཡ། །
ग्य गर के दु    आर्य प्रज्ञापारमिता ह्रिदया।
**भारतीय भाषा में–आर्य-प्रज्ञापार-मिताहृदया (का एक भाग)।**

བོད་སྐད་དུ། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོ་བམ་པོ་གཅིག་གོ །
बोद् के दु फग प शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन पई ञिङ पो बम पो चिग गो
**भोटभाषा में–फग्स-पा शेस्-रब्-की फा-रोल्-तु छिन्-पई ञिङ्-पो बम्-पो चिग्-गो।**

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
थम चे ख्येन प ल छ्यग छ़ल लो
**सर्वज्ञ (बुद्ध) को प्रणाम।**

འདི་ལྟར་འཕགས་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་
दि तर फग प कुन तु चेन रेस ज़िग क्यि वङ पो छङ छुप सेम पा शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन
**इस प्रकार बोधिसत्त्व आर्यसमन्तावलोकितेश्वर ने प्रज्ञापारमिता रूपी गम्भीरचर्या का आचरण करते हुए**

ཟབ་མོ་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་པའི་ཚེ། རྣམ་པར་བལྟས་ན་ལྔ་ཕུང་དེ་དག་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པར་མཐོང་ངོ་། །
प ज़प मो चे प चोद् पई छे नम पर तेस् न ङ फुङ दे दग ङो बो ञिद् क्यीस् तोङ पर थोङ ङो
**व्यवलोकन किया। उन पञ्चस्कन्धों को शून्यता स्वभाव में देखा।**

འདི་ནི་ཤཱ་རིའི་བུ་གཟུགས་སྟོང་པ་ཉིད་དེ། སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱང་གཟུགས་སོ། །གཟུགས་དང་སྟོང་པ་ཉིད་ཐ་དད་པ་
दि नि शा री बु ज़ुग तोङ प ञिद् दे तोङ प ञिद् क्यङ ज़ुग सो ज़ुग दङ तोङ प ञिद् थ दे प
**शारिपुत्र! यहाँ रूप शून्य है। शून्यता रूप है। रूप से शून्यता भिन्न नहीं है। शून्यता से रूप भिन्न नहीं है।**

ཡང་མ་ཡིན། གཟུགས་དང་ཡང་ཐ་མི་དད་དོ། །གང་གཟུགས་པ་དེ་སྟོང་པ་ཉིད། གང་སྟོང་པ་ཉིད་པ་དེ་
यङ म यिन ज़ुग दङ यङ थ मि दे दो गङ ज़ुग प दे तोङ प ञिद् गङ तोङ प ञिद् प दे
**जो रूप है, वह शून्यता है। जो शून्यता है, वह रूप है।**

གཟུགས་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པའོ། །
ज़ुग ते दे शिन दु छ़ोर व दङ दु शेस् दङ दु छेद् दङ नम पर शेस् पहो
**ऐसे ही वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान भी हैं।**

འདི་ནི་ཤཱ་རིའི་བུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་མ་སྟེ། མི་སྐྱེ་མི་འགག །མི་གཙང་མི་བཙོག །
दि नि शा री बु छोस् थम चे तोङ प ञिद् क्यि छ़ेन म ते मि क्ये मि गोग मि त्सङ मि त्सोग
**शारिपुत्र! यहाँ समस्त धर्म शून्यता लक्षण वाले, अनुत्पन्न, अनिरुद्ध, विमल, न अविमल,**

མི་འཕེལ་མི་འགྲི། དེ་ལྟ་བས་ན་ཤཱ་རིའི་བུ་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་གཟུགས་ཀྱང་མེད། ཚོར་བ་ཡང་མེད།
मि फेल मि डि दे त वे न शा री बु तोङ प ञिद् ल ज़ुग क्यङ मेद् छ़ोर व यङ मेद्
**न ऊन (अल्प), न परिपूर्ण हैं। शारिपुत्र! अतः शून्यता में रूप नहीं है। वेदना नहीं है।**

འདུ་ཤེས་ཀྱང་མེད། འདུ་བྱེད་ཀྱང་མེད། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་མེད། མིག་དང་རྣ་བ་དང་སྣ་དང་ལྕེ་དང་
दु शेस् क्यङ मेद्   दु छेद् क्यङ मेद्   नम पर शेस् प यङ मेद्   मिग दङ न व दङ न दङ चे दङ
**संज्ञा नहीं है। संस्कार नहीं है। विज्ञान नहीं है। चक्षु, कर्ण, घ्राण, जिह्वा, काय तथा**

ལུས་དང་ཡིད་ཀྱང་མེད། ཁ་དོག་དང་སྒྲ་དང་དྲི་དང་རོ་དང་རེག་དང་ཆོས་ཀྱང་མེད།
लुस् दङ यिद् क्यङ मेद्   ख दोग दङ ड दङ डि दङ रो दङ रेग दङ छोस् क्यङ मेद्
**चित्त नहीं हैं। वर्ण (रंग),रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्प्रष्टव्य-धर्म नहीं हैं।**

མིག་གི་ཁམས་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཁམས་སུ་ཡང་མེད། རིག་པ་ཡང་མེད། མ་རིག་པ་ཡང་མེད། རིག་པ་ཟད་
मिग गि खम नेस् यिद् क्यि खम सु यङ मेद्   रिग प यङ मेद्   म रिग प यङ मेद्   रिग प ज़े
**चक्षुधातु से मनोधातु पर्यन्त नहीं है। विद्या नहीं है। अविद्या नहीं है। विद्या का क्षय नहीं है।**

པ་ཡང་མེད། མ་རིག་པ་ཟད་པ་ཡང་མེད་པས་ན། རྒས་ཤིང་ཤི་བ་ཡང་མེད། རྒས་ཤིང་ཤི་བ་ཟད་པ་
प यङ मेद्   म रिग प ज़े प यङ मेद् पेस् न   गेस् शिङ शि व यङ मेद्   गेस् शिङ शि व ज़े प
**अविद्या का क्षय नहीं होने से जरा (वृद्ध) होकर मरण भी नहीं है। जरा होकर मरणक्षय**

ཡང་མེད། སྡུག་བསྔལ་དང་། འདུས་པ་དང་། འགོག་པ་དང་། ལམ་ཡང་མེད། ཤེས་པ་ཡང་མེད། ཐོབ་པ་
यङ मेद्   दुग ङल दङ   दुस् प दङ   गोग प दङ   लम यङ मेद्   शेस् प यङ मेद्   थोप प
**भी नहीं है। दुःख, संग्रह, निरोध तथा मार्ग नहीं हैं। ज्ञान नहीं है। प्राप्ति भी नहीं है।**

ཡང་མེད། མ་ཐོབ་པ་ཡང་མེད་པར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་གནས་ཏེ།
यङ मेद्   म थोप प यङ मेद् पर छङ छुप सेम पा शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन प ल नेस ते
**अप्राप्ति के नहीं होने से बोधिसत्त्व प्रज्ञापारमितानिष्ठ होते हैं।**

སྤྱོད་པས་སེམས་སྤྱོད་པ་ཡང་མེད། སེམས་མི་སྤྱོད་པ་ཡང་མེད། དེ་ལྟར་མེད་པ་ལ་གནས་པས་ན་ལོག་པ་
चोद् पेस् सेम चोद् प यङ मेद्   सेम मि चोद् प यङ मेद्   दे तर मेद् प ल नेस पेस् न लोग प
**चर्या के द्वारा चित्तचर्या भी नहीं है। चित्त की अचर्या भी नहीं है। इस प्रकार अभावनिष्ठ होने से**

ལས་ཤིན་ཏུ་འདའ་སྟེ། ཐུབ་པ་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའོ། །
लेस शिन तु दा ते   थुप प नि न्य ङेन लेस देस् पहो
**विपर्यास से अत्यन्त अतीत हैं। मुनि तो निर्वाण को प्राप्त हुए हैं।**

དུས་གསུམ་དུ་རྣམ་པར་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་གནས་ཏེ།
दुस् सुम दु नम पर शुग पई सङ ग्येस् थम चे क्यङ शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन प ल नेस् ते
**त्रैकालिक समस्त विराजमान बुद्ध प्रज्ञापारमितानिष्ठ हैं।**

སྤྱོད་པས་བླ་ན་མེད་པ་གཡུང་དྲུང་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཀུན་ཏུ་མངོན་པར་སངས་རྒྱས་སོ། །
चोद् पेस् ल न मेद् प गयुङ डुङ ज़ोग पई छङ छुप तु कुन तु ङोन पर सङ ग्येस् सो
**चर्या से अनुत्तर शाश्वत (सम्यक्) सम्बुद्धत्व में सर्वतः अभिसम्बुद्धत्व को प्राप्त हुए हैं।**

དེ་བས་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཆེན་པོའི་སྔགས། རིག་པ་ཆེན་པོའི་སྔགས། བླ་ན་མེད་པའི་
दे वे न शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन प छेन पोइ ङग  रिग प छेन पोइ ङग  ल न मेद् पई
**इसलिए प्रज्ञापारमिता महामन्त्र, महाविद्यामन्त्र, अनुत्तरमन्त्र,**

སྔགས། མཉམ་པ་དང་མི་མཉམ་པའི་སྔགས། སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བའི་སྔགས། བདེན་ཏེ་མི་བརྫུན་པས་ན་
ङग  ञम प दङ मि ञम पई ङग  दुग ङल थम चे रप तु शि बई ङग  देन ते मि ज़ुन पेस् न
**असमसममन्त्र, सर्वदुःखप्रशमन-मन्त्र, अमिथ्या होने से सत्य,**

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྔགས་སྨྲས་སོ། །
शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन पई ङग मेस् सो
**प्रज्ञापारमितोक्तमन्त्र को कहा।**

སྔགས་ལ། ཏདྱཐཱ། ག་ཏེ་ག་ཏེ་པ་ར་ག་ཏེ་པ་ར་སཾ་ག་ཏེ་བོ་དྷི་སྭཱ་ཧཱ། །
ङग ल  तद्याथ। गते गते पारगते पारसंगते बोधि स्वाहा
**मन्त्र– तद्यथा, गते गते पारगते पारसंगते बोधि स्वाहा।**

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོ་རྫོགས་སོ། །
फग प शेस् रप क्यि फ रोल तु छ्यिन पई ञिङ पो ज़ोग सो
**आर्यप्रज्ञापारमिताहृदया (का एक भाग) समाप्त हुआ।**

ཞེས་སོགས་ཐུབ་པ་ཆེན་པོའི་གསུང་རྒྱས་བསྡུས་གང་རུང་དང་། ཤེར་ཕྱིན་རྡོ་རྗེ་གཅོད་པ་ལས།
इस प्रकार महामुनि के किसी संक्षिप्त एवं विस्तृत वचन अर्थात् सूत्र आदि का पाठ (भी) करना चाहिए। तथा वज्रच्छेदिका में–

སྐར་མ་རབ་རིབ་མར་མེ་དང་། །
कर म रप रिप मर मे दङ
**तारा,तिमिर तथा दीप।**

སྒྱུ་མ་ཟིལ་པ་ཆུ་བུར་དང་། །
ग्यु म ज़िल प छु बुर दङ
**माया, ओस एवं बुद्बुद्।**

རྨི་ལམ་གློག་དང་སྤྲིན་ལྟ་བུ། །
मि लम लोग दङ टिन त बु
**स्वप्न, विद्युत् तथा मेघोपम।**

འདུས་བྱས་ཆོས་རྣམས་དེ་ལྟར་ལྟ། །ཞེས་དང་།
दुस् छेस् छोस् नम दे तर त
**तथा संस्कृत धर्मों को देखें।।**इति।

ཚོམས་ལས། ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་ལས་བྱུང་། །
छोस् नम थम चे ग्यु लेस छुङ
उदान (छ़ोम्स) में–समस्त धर्म हेतु से उत्पन्न।

དེ་རྒྱུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས། །
दे ग्यु दे शिन शेग पेस् सुङ
उन हेतुओं को तथागत ने कहा है।

རྒྱུ་ལ་འགོག་པ་གང་ཡིན་པ། །
ग्यु ल गोग प गङ यिन प
हेतु का है जो निरोध।

དགེ་སྦྱོང་ཆེན་པོས་འདི་སྐད་གསུངས། །
गे छोङ छेन पोस् दि के सुङ
महाश्रमण कहते हैं ऐसा।।

སྡིག་པ་ཅི་ཡང་མི་བྱ་ཞིང་། །
दिग प चि यङ मि छ शिङ
पाप(कर्म) कुछ भी न करें।

དགེ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་སྤྱོད། །
गे व फुन सुम छ़ोग पर चे
कुशल-सम्पद् का आचरण करें।

རང་གི་སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་འདུལ། །
रङ गि सेम नि योङ सु दुल
स्वचित्त का परिदमन करें।

འདི་ནི་སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་ཡིན། །
दि नि सङ ग्येस् तेन प यिन
यह है, बुद्धों का शासन।।

ཡོད་སྨྲའི་སོར་མདོ་ལས། ལུས་ཀྱི་སྡོམ་པ་ལེགས་པ་སྟེ། །
लुस् क्यि दोम प लेग प ते
सर्वास्तिवादि प्रातिमोक्षसूत्र में–अच्छा है काय का संवर।

ངག་གི་སྡོམ་པ་འང་ལེགས་པ་ཡིན། །
ङग गि दोम पह़ङ लेग प यिन
है अच्छा वाक् का संवर।

ཡིད་ཀྱི་སྡོམ་པ་ལེགས་པ་སྟེ། །
यिद् क्यि दोम प लेग प ते
चित्त का संवर अच्छा है।

ཐམས་ཅད་དུ་ནི་སྡོམ་པ་ལེགས། །
थम चे दु नि दोम प लेग
संवर सर्वत्र अच्छा है।

ཀུན་ཏུ་བསྡམས་པའི་དགེ་སློང་ནི། །
कुन तु बदम पई गे लोङ नि
सदा संवृत भिक्षु तो।

སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ལས་རབ་ཏུ་གྲོལ། །ཞེས་སོ། །
दुग ङ्ल कुन लेस रप तु डोल
सभी दुःखों से विमुक्त होता है।।इति।

གསུམ་པ་བསྔོ་བ་བྱ་བའི་རྒྱུད་ནི། སྐྱེས་རབས་ཀྱི་ཕྲེང་བ་ལས།
तृतीय, परिणामनातन्त्र तो जातकमाला में–

བསོད་ནམས་འདི་ཡིས་ཐམས་ཅད་གཟིགས་པ་ཉིད། །
सोद् नम दि यीस् थम चे ज़िग प ञिद्
इस पुण्य के द्वारा सर्वदर्शी।

ཐོབ་ནས་ཉེས་པའི་དགྲ་རྣམས་ཕམ་བྱས་ནས། །
थोप नेस् ञेस् पई ड नम फम छेस् नेस्
प्राप्त कर, दोष-रिपुओं को हराकर।

སྐྱེ་ག་ན་འཆིའི་ཆུ་རླབས་འཁྲུག་པ་ཡི། །
क्ये ग न छी ब लप ठुग प यि
जाति, जरा,रोग, मरणतरंगों से विक्षिप्त।

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་འགྲོ་བ་སྒྲོལ་བར་ཤོག །ཅེས་དང་།
सिद् पई छ़ो लेस डो व डोल वर शोग
भवसागर से जगत् तर जाये।। इति।

སྤྱོད་འཇུག་ལས། འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་སྨན་གཅིག་པུ། །
डो बई दुग ङल मेन चिग पु
(बोधि-)चर्यावतार में–एकमात्र जगत्-दुःखों के औषध।

བདེ་བ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བའི་གནས། །
दे व थम चे छुङ बई नेस
स्रोत हैं समस्त सुखों के।

བསྟན་པ་རྙེད་དང་བཀུར་སྟི་དང་། །
तेन प ञेद् दङ कुर ति दङ
(बुद्ध-)शासन लाभ-सत्कार सहित।

བཅས་ཏེ་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཅིག །ཅེས་དང་།
चेस् ते युन रिङ नेस ग्युर चिग
दीर्घकाल तक स्थित रहें।।इति।

འདུལ་བ་ལུང་ལས། ཀླུ་རྒྱལ་དགའ་བོ་ཉེར་དགའ་བོ། །
लु ग्यल गा बो ञेर गा बो
विनयागम में–नागराज नन्द (और) उपनन्द।

གཞན་ཡང་གྲོང་ཁྱེར་གནས་པ་རྣམས། །
शेन यङ डोङ ख्येर नेस प नम
अन्य भी, नगर में रहने वाले।

ཚེ་རིང་ནད་མེད་ཕུན་སུམ་ཚོགས། །
छ़े रिङ ने मेद् फुन सुम छ़ोग
दीर्घायु (और) निरोग-सम्पद् हों।

རྟག་ཏུ་བདེ་བ་ཐོབ་པར་ཤོག །ཅེས་སོ།།
तग तु दे व थोप पर शोग
सदा सुख को प्राप्त करें।। इति।

# महाप्रणिधान-पाठ का क्रम
# प्रणिधान के बीस अंग

# སྐྱབས་འགྲོ་སེམས་བསྐྱེད།
# शरणगमन और बोधिचित्तोत्पाद

བདག་ལ་སྡང་བར་བྱེད་པའི་དགྲ། གནོད་པར་བྱེད་པའི་བགེགས། ཐར་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བར་དུ་གཅོད་པར་
दग ल दङ बर छेद् पई ड   गनोद् पर छेद् पई गेग   थर प दङ थम चे ख्येन पई बर दु चोद्
मुख्य रूप से वे सभी शत्रु जो मुझसे वैर रखते हैं, नुकसान पहुँचाते हैं, मोक्ष एवं सर्वज्ञता की प्राप्ति में

བྱེད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གཙོ་བྱས་པའི། མ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་བ་དང་ལྡན། སྡུག་
पर छेद् प थम चे क्यीस् ज़्ो छेस् पई   म नम खा दङ ञम पई सेम चेन थम चे दे व दङ देन
विघ्न पैदा करते हैं, सहित खसम सभी प्राणी सुखी हों,

བསྔལ་དང་བྲལ། མྱུར་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་རིན་པོ་ཆེ་ཐོབ་པར་ཤོག ཞེས་ལན་གསུམ་དང་།
दुग ङल दङ डल   न्युर दु ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप रिन पो छे थोप पर छ
दुःख से रहित हों और शीघ्रातिशीघ्र अनुत्तर सम्बुद्ध-रत्न को प्राप्त हों। इसका तीन बार आवृत्ति करें।

དེའི་ཆེད་དུ་སངས་མ་རྒྱས་ཀྱི་བར་དུ་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དགེ་བ་ལ་བཀོལ།
दे छेद् दु सङ म ग्येस् क्यि बर दु लुस् ङग यिद् सुम गे व ल कोल
तदर्थ बुद्धत्व की प्राप्ति तक काय, वाक्, चित्त तीनों को कुशल में प्रवृत्त करता हूँ।

མ་ཤིའི་བར་དུ་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དགེ་བ་ལ་བཀོལ། དུས་དེ་རིང་ནས་བཟུང་སྟེ་ཉི་མ་སང་ད་ཙམ་གྱི་བར་
म शी बर दु लुस् ङग यिद् सुम गे व ल कोल   दुस् दे रिङ नेस् ज़ुङ ते ञि म सङ द ज़म ग्यि बर
मृत्यु पर्यन्त काय, वाक्, चित्त को कुशल का वाहन बनाता हूँ। आज से प्रारम्भ करके कल इसी काल तक

དུ་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དགེ་བ་ལ་བཀོལ། ལན་གསུམ།
दु लुस् ङग यिद् सुम गे व ल कोल
काय, वाक्, चित्त तीनों को कुशल में संलग्न करता हूँ। तीन बार आवृत्ति करें।

ནམ་མཁའི་མཐའ་དང་མཉམ་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད། རྐང་གཉིས་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་
नम खई था दङ ञम पई सेम चेन थम चे   कङ ञीस् नम क्यि छोग सङ ग्येस् चोम देन देस्
आकाश सम सभी प्राणी द्विपादों में श्रेष्ठ भगवान् बुद्ध के शरण में जाते हैं।

རྣམས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་དམ་པའི་ཆོས་རྣམས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
नम ल क्यप सु छिह़ो  दोद् छग दङ डल व नम क्यि छोग दम पई छोस् नम ल क्यप सु छिह़ो
**तृष्णा रहितों में श्रेष्ठ सद्धर्म के शरण में जाते हैं।**

ཚོགས་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་རྣམས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །ཞེས་ཚར་ཅི་རིགས་དང་།
छ़ोग नम क्यि छोग फग पई गेन दुन नम ल क्यप सु छिह़ो
**गणों में श्रेष्ठ आर्य संघ के शरण में जाते हैं।** ऐसा यथासम्भव आवृत्ति करे तथा-

སྤྱོད་འཇུག་ལས། བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོར་མཆིས་ཀྱི་བར། ། སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छङ छुप ञिङ पोर छीस् क्यि बर  सङ ग्येस् नम ल क्यप सु छि
**बोधिगर्भ की प्राप्ति तक बुद्धों के शरण में जाता हूँ।**

ཆོས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡི། ། ཚོགས་ལའང་དེ་བཞིན་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छोस् दङ छङ छुप सेम पा यि  छ़ोग लह़ङ दे शिन क्यप सु छि
**सद्धर्म और बोधिसत्त्वों के संघ में भी, उसी प्रकार शरणगमन करता हूँ।8।**

ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་བདེ་གཤེགས་ཀྱིས། ། བྱང་ཆུབ་ཐུགས་ནི་བསྐྱེད་པ་དང་། །
जि तर ङोन ग्यि दे शेग क्यीस्  छङ छुप थुग नि क्येद् प दङ
**जैसे पूर्ववर्ती तथागतों ने बोधिचित्त को ग्रहण किया था।**

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བསླབ་པ་ལ། ། དེ་དག་རིམ་བཞིན་གནས་པ་ལྟར། །
छङ छुप सेम पई लप प ल  दे दग रिम शिन नेस प तर
**बोधिसत्त्वों के शिक्षा का आनुपूर्वीक्रम से पालन किया था।**

དེ་བཞིན་འགྲོ་ལ་ཕན་དོན་དུ། ། བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་བསྐྱེད་བགྱི་ཞིང་། །
दे शिन डो ल फेन दोन दु  छङ छुप सेम नि क्येद् ग्यि शिङ
**उसी प्रकार जगत-कल्याण के लिये बोधिचित्त का उत्पाद करता हूँ तथा**

དེ་བཞིན་དུ་ནི་བསླབ་པ་ལ། ། རིམ་པ་བཞིན་དུ་བསླབ་པར་བགྱི། །ཞེས་ལན་གསུམ་བརྗོད།
दे शिन दु नि लप प ल  रिम प शिन दु लप पर ग्यि
**उसी क्रम से बोधिसत्त्वों की शिक्षा को भी सीखूँगा।9।** इस प्रकार तीन बार आवृत्ति करे।

## 1. ས་གཞི་བྱིན་བརླབས་ཀྱི་ཡན་ལག །

## भूमि-अधिष्ठानांग

དེ་ནས་འདི་སྐད་ཅེས་བརྗོད་དེ།
उसके उपरान्त ऐसा कहें-

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བདེན་པ་དང་། བྱིན་རླབས་དང་། ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་མཐུ་དང་།
कोन छोग सुम ग्यि देन प दङ छिन लप दङ छ़ोग ञीस् योङ सु ज़ोग पई थु दङ
**त्रिरत्न की सत्यता, आनुभाव और पुण्य-द्वय के परिपूर्णता के प्रताप से**

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ཡོན་ཏན་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཞིང་དག་པའི་སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་པ་
छोस् क्यि यिङ क्यि रङ शिन ग्यि योन तेन दङ छङ छुप सेम पा नम क्यि शिङ दग पई छोर
**धर्मधातु का प्रकृतस्थ गुण, बोधिसत्त्व के क्षेत्रशुद्धि प्रयोग इत्यादि एवं**

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་སྦྱངས་པའི་མཐུ་དང་། བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་མོས་པའི་མཐུ་ལས།
व ल सोग प सङ ग्येस् क्यि शिङ योङ सु छङ पई थु दङ दग चग नम क्यि मोस् पई थु लेस
**बुद्धों के क्षेत्र परिशुद्धि के प्रभाव से तथा हम लोगों के अधिमुक्ति के बल से**

གནས་འདི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱན་དང་། བཀོད་པ་དང་། ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་
नेस दि सङ ग्येस् क्यि शिङ थम चे क्यि ग्येन दङ कोद् प दङ योन तेन फुन सुम छ़ोग प थम
**यह स्थान भी बुद्ध क्षेत्रों के अलंकार-वियूह, गुण और सभी**

ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །ཅེས་ལན་གསུམ་བརྗོད།
चे दङ देन पर ग्युर चिग
**श्री से पूर्ण सम्पन्न हुआ**- ऐसा सोचें और तीन बार इसकी आवृत्ति करें।

## 2. གནས་ཁང་བྱིན་བརླབས་ཀྱི་ཡན་ལག །

## 2. विहार अधिष्ठानांग

སྤྲོ་ན་མདོ་སྡེ་དགོངས་འགྲེལ་ལས་གསུངས་པའི། དེའི་དབུས་སུ་གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་པོ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བདུན་མཆོག་ཏུ་འབར་བར་
दे उस् सु शल मेद् खङ छेन पो रिन पो छे न दुन छोग तु बर
उत्साह होने पर सन्धिनिर्मोचन से उद्धृत का पाठ करें- **उसके मध्य महाविमानगृह, सप्तरत्न जटित विमान-व्यूह,**

བཀོད་པ། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་འགེངས་པའི་འོད་ཟེར་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་
बर कोद् प जिग तेन ग्यि खम पग तु मेद् प शिन तु ग्येस् पर गेङ पई ह़ोद् ज़ेर छेन पो रप तु
**अपरिमित लोकधातुओं में महारश्मि बिखेरते हुये,**

འབྱུང་བ། གནས་ཐ་དད་པ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་མཐའ་ཡས་པས་རྣམ་པར་གནས་པ། རྒྱ་ཡོངས་སུ་མ་ཆད་པ།
छुङ व नेस थ दे प शिन तु नम पर छ्ये व था येस् पेस् नम पर नेस प ग्य योङ सु म छे प
**अन्यत्तम विशिष्ट विशेषताओं से सम्पन्न, विशालान्त रहित,**

ཁམས་གསུམ་པ་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ། འཇིག་རྟེན་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་པ། དེའི་བླ་མའི་
खम सुम प लेस यङ दग पर देस् पई चोद् युल जिग तेन लेस यङ दग पर देस् प दे ल मई
**त्रिधातु से अतीतों का गोचर, सम्यग् लोकातीत, अनुत्तर पुण्यमूल से उद्भूत,**

དགེ་བའི་རྩ་བ་ལས་བྱུང་བ། ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་ཅིང་དབང་བསྒྱུར་བའི་རྣམ་པར་རིག་པའི་མཚན་ཉིད།
गे बई त्स़ व लेस छुङ व शिन तु नम पर दग चिङ वङ ग्युर बई नम पर रिग पई छ़ेन ञिद्
**अत्यन्त विशुद्ध वशीकृत विद्या-लक्षण।**

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གནས། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་དགེ་འདུན་དང་ལྡན་པ། ལྷ་དང་། ཀླུ་དང་།
दे शिन शेग पई नेस छङ छुप सेम पा पग तु मेद् पई गेन दुन दङ देन प ल्ह दङ लु दङ
**तथागतों का निवास, बोधिसत्त्व संघ से युक्त, अनन्त देव, नाग,**

གནོད་སྦྱིན་དང་། དྲི་ཟ་དང་། ལྷ་མ་ཡིན་དང་། ནམ་མཁའ་ལྡིང་དང་། མིའམ་ཅི་དང་། ལྟོ་འཕྱེ་
गनोद् छिन दङ डि ज़ दङ ल्ह म यिन दङ नम खा दिङ दङ मिह़म चि दङ तो छ्ये
**यक्ष, गन्धर्व, असुर, गरुढ़, किन्नर, महोरग,**

ཆེན་པོ་དང་། མི་དང་མི་མ་ཡིན་པ་མཐའ་ཡས་པ་རྣམ་པར་རྒྱུ་བ། ཆོས་ཀྱི་རོ་ཡི་དགའ་བ་དང་བདེ་བ་
छेन पो दङ मि दङ मि म यिन प था येस् प नम पर ग्यु व छोस् क्यि रो यि गा व दङ दे व
**मनुष्य, अमनुष्य आदि य़हाँ चहलकदमी करते हुये। सद्धर्म का रसपान कर आनन्द और महासुख**

ཆེན་པོས་བསྟེན་པ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་ཐོབ་པར་བྱེད་པར་ཉེ་བར་གནས་པ།
छेन पोस् तेन प सेम चेन थम चे क्यि दोन थम चे यङ दग पर थोप पर छेद् पर ञे वर नेस प
**का अनुभव करते हुये। सर्वसत्त्वार्थ सम्पन्न करने के लिये उपस्थित।**

ཉོན་མོངས་པའི་དྲི་མའི་གནོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། བདུད་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ञोन मोङ पई डि मई गनोद् प थम चे दङ डल व दुद् थम चे योङ सु पङ प थम चे क्यि
**क्लेश रूपी दोषों से रहित, सभी मारों से पूर्णातीत, सभी व्यूहों में**

བཀོད་པ་ལས་ལྷག་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བཀོད་པའི་གནས། དྲན་པ་དང་། བློ་གྲོས་དང་རྟོགས་པ་ཆེན་
कोद् प लेस ल्हग प    दे शिन शेग पई कोद् पई नेस    डेन प दङ    लो डोस् दङ तोग प छेन
**विशिष्ट तथागत व्यूहस्थ। स्मृति, सम्प्रजन्य, महा-अधिगम के**

པོས་ངེས་པར་འབྱུང་བ། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཆེན་པོའི་བཞོན་པ་ཡིན་པ། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་
पोस् ङेस् पर छुङ व    शि नेस दङ ल्हग थोङ छेन पोइ शोन प यिन प    नम पर थर पई गो
**द्वारा निःसरण, शमथ विपश्यना का वाहक। शून्यता, अनिमित्त**

སྟོང་པ་ཉིད་དང་། མཚན་མ་མེད་པ་ཉིད་དང་། སྨོན་པ་མེད་པ་ནས་འཇུག་པ། རིན་པོ་ཆེ་པདྨའི་རྒྱལ་
तोङ प ञिद् दङ    छ़ेन म मेद् प ञिद् दङ    मोन प मेद् प नेस् जुग प    रिन पो छे पेमाई ग्यल
**अप्रणिहित महा-विमोक्ष मुख में प्रवेश। अनन्त गुणों से अलंकृत रत्न**

པོ་ཆེན་པོ་ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་པས་བརྒྱན་པའི་བཀོད་པ་ལ་བརྟེན་པའི་གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་པོར་གྱུར།
पो छेन पो योन तेन था येस् पेस् ग्येन पई कोद् प ल तेन पई शल मेद् खङ छेन पोर ग्युर
**कमलराज व्यूह पर आधारित यह महाविमानगृह बना।**

དེའི་དབུས་སུ་ལྷ་དང་། ཀླུ་དང་མི་ལ་སོགས་པའི་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་པའི་ཁྲིའི་སྟེང་དུ། ལྷ་མིའི་གོས་རིན་
दे उस् सु ल्ह दङ    लु दङ मि ल सोग पई रिन पो छे न छ़ोग पई ठी तेङ दु    ल्ह मी गोस् रिन
**उसके मध्य विभिन्न देव, नाग, मनुष्य आदि के विभिन्न रत्नों से निर्मित आसन, उसके ऊपर देव-मनुष्यों के**

ཐང་མེད་པ་བཏིང་བའི་སྟེང་དུ། གཙང་ཞིང་དྲི་མ་མེད་པའི་པདྨའི་གདན་སྣ་ཚོགས་པ་བཤམས་པ་སོ་སོར་གསལ་
थङ मेद् प तिङ बई तेङ दु    ज़ङ शिङ डि म मेद् पई पेमाई देन न छ़ोग प शम प सो सोर सल
**मूल्यवान वस्त्रों से बना बिछोना, उसके ऊपर नया निर्मल पद्मासन, इस प्रकार प्रत्येक स्थाप्य का स्पष्ट रूप से**

བར་གྱུར། ཞེས་པ་ནི། གཞལ་མེད་ཁང་གདན་དང་བཅས་པ་གསལ་གདབ་པའོ། །
वर ग्युर
**भावना करें।** यह विमानगृह आसन सहित प्रकट हुआ।

### 3. མཆོད་པ་བྱིན་བརླབས་ཀྱི་ཡན་ལག།

### 3. पूजा-अधिष्टानांग

༄ དེ་ནས་མཆོད་པ་གསལ་གདབ་པ་ནི། ཁྲི་དེ་དག་གི་སྟེང་དུ། རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་དང་ལྷ་མིའི་གོས་སྣ་ཚོགས་
ठि दे दग गि तेङ दु    रिन पो छे न छ़ोग दङ ल्ह मी गोस् न छ़ोग
तद्पश्चात् पूजा-सामग्री का प्रकटीकरण-**आसन से ऊपर विविध देव एवं मनुष्यों के मूल्यवान् वस्त्रों से**

ལས་གྲུབ་པའི། གདུགས་དང་། བླ་རེ་དང་། འཕན་དང་། ལྡ་ལྡི་དང་། ལྷའི་མེ་ཏོག་མནྡཱ་ར་བ་ལ་སོགས་པ་
लेस डुप पई दुग दङ ल रे दङ फेन दङ द दि दङ ल्हई मे तोग मन्दा र व ल सोग प
**निर्मित छत्र, वितान, क्षिप्त, पताका और देव-पुष्प मन्दारव की**

རྣམས་ཀྱི་ཆར་དང་། བླ་རེ་དང་། གདུགས་དང་། འཕན་དང་། ལྡ་ལྡི་ལ་སོགས་པ་མཛེས་པར་བྲེས་ཤིང་།
नम क्यि छर दङ ल रे दङ दुग दङ फेन दङ द दि ल सोग प ज़ेस् पर डेस् शिङ
**वृष्टि तथा वितान, छाता, क्षिप्त, पताका आदि सुन्दर रुप से सुसज्जित है।**

ཕྱོགས་རྣམས་ཀུན་རིན་པོ་ཆེ་དང་། དར་དང་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པའི་དྲྭ་བ་དང་དྲྭ་ཕྱེད་དང་། འཕན་དང་ལྡ་
लोग नम क्यङ रिन पो छे दङ दर दङ मे तोग ल सोग पई ड व दङ ड छेद दङ फेन दङ द
**दिशायें रत्न, वस्त्र, पुष्प आदि हारार्धहार, क्षिप्त, पताका आदि से**

ལྡི་ལ་སོགས་པས་མཛེས་པ་དང་ས་གཞིར་ལྷ་དང་མིའི་མེ་ཏོག་སིལ་མ་བཀྲམ་ཞིང་། མཆོད་ཡོན།
दि ल सोग पेस् ज़ेस् प दङ स शिर ल्ह दङ मी मे तोग सिल म टम शिङ छोद् योन
**सुशोभित तथा भूमि देव और मनुष्यों के फूलों से बिखरे। अर्घ,**

མེ་ཏོག །བདུག་སྤོས། མར་མེ། དྲི་ཆབ། ཞལ་ཟས། རོལ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཕུང་པོ་གསུམ་པའི་མདོ་དང་།
मे तोग दुग पोस् मर मे डि छप शल ज़ेस् रोल मो ल सोग प फुङ पो सुम पई दो दङ
**पुष्प, धूप, गन्ध, नैवेद्य, शब्द तथा त्रिसकन्ध सूत्र और**

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ལས་འབྱུང་བ་ལྟ་བུའི་མཆོད་པའི་སྤྲིན་གྱི་རྒྱ་མཚོ་ཕུལ་དུ་ཕྱུང་ཞིང་སྣ་
ज़ङ पो चोद् पई मोन लम लेस छुङ व त बुइ छोद् पई टिन ग्यि ग्य छ़ो फुल दु छुङ शिङ न
**भद्रचर्याप्रणिधान में आये विविध अचिन्त्य अद्भुत**

ཚོགས་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐའ་ཀླས་པར་རྒྱས་པར་གང་ཞིང་ཟད་མི་ཤེས་པ་
छ़ोग प सम ग्यीस् मि ख्यप प नम खई खम क्यि था लेस् पर ग्येस् पर गङ शिङ ज़े मि शेस् प
**पूजामेघ सागर आकाश पर्यन्त विपुल अक्षय पूर्ण हुआ।**

དང་ལྡན་པར་གྱུར། ཞེས་སོ།།
दङ देन पर ग्युर
ऐसा।

## 4. སྤྱན་འདྲེན་གྱི་ཡན་ལག །

## 4. आवाह्नांग

དེ་ནས་སྤྱན་འདྲེན་པ་ནི། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस्
तदुपरान्त निमन्त्रण- **भगवान् तथागत अर्हत् सम्यग् सम्बुद्ध**

ཤཱཀྱའི་དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་དང་བཅས་
शाक्यई वङ पो ल सोग प छ्योग चुइ सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा ञेन थोस् क्यि गेन दुन
**मुनि शाक्येन्द्र आदि दश-दिशाओं के बुद्ध-बोधिसत्त्व और श्रावक संघ सहित**

པ་ཐམས་ཅད། བདག་སོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉེས་ལྟུང་གི་དྲི་མ་སྦྱང་ཞིང་བསོད་ནམས་ཀྱི་
दङ चेस् प थम चे  दग सोग सेम चेन थम चे क्यि ञेस् तुङ गि डि म छङ शिङ सोद् नम क्यि
**आप सभी, हम सत्त्वों के दोष, आपत्ति-मल शुद्ध करने तथा पुण्य-संभार**

ཚོགས་སྤེལ་བའི་སླད་དུ་སྤྱན་འདྲེན་ཞིང་མཆིས་ན། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བསྐུལ་ཏེ། དེང་དུས་ལ་བབ་ཀྱིས་
छ़ोग पेल बई ले दु चेन डेन शिङ छीस् न  थुग जे छेन पोस् कुल ते  देङ दुस् ल बप क्यीस्
**में वृद्धि हेतु हम आमन्त्रित करते हैं। अतः महाकरुणा से प्रेरित हो, आज (परोपकार) समय**

དགོངས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། ཞེས་དང་།
गोङ पर ज़े दु सोल
**आया है- ऐसा विचार करें।**

རྒྱ་ཆེར་རོལ་པ་ནས་འབྱུང་བ་ལྟར། ཀྱེ་དོན་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ་འདིར་གཤེགས་སུ་གསོལ། ཀྱེ་ལྷའི་ལྷ། ཀྱེ་ཁ་ལོ་བསྒྱུར་བ། ཀྱེ་
क्ये दोन थम चे डुप प दिर शेग सु सोल  क्ये ल्हई ल्ह  क्ये ख लो ग्युर व
ललितविस्तर में आये अनुसार- **हे सिद्धार्थ, यहाँ आगमन करें। हे देवों के देव, हे सारथि,**

དགའ་ཞིང་བདེ་བ་དང་མཆོག་ཏུ་དགའ་བར་མཛད་པ། ཀྱེ་སྨན་པ་བླ་ན་མེད་པའི་གྲགས་པ་མངའ་བ། ཀྱེ་ཀུན་
क्ये गा शिङ दे व दङ छोग तु गा बर ज़े प  क्ये मेन प ल न मेद् पई डग प ङा व  क्ये कुन
**हे हर्ष से हर्षित और अति आनन्दित करने वाले। हे अनुत्तर भैषज्य नाम से प्रसिद्ध। हे सर्वज्ञ।**

ནས་སྤྱན་མངའ་བ། ཀྱེ་མི་མཉམ་པ་དང་མཉམ་ཞིང་འགྲན་ཟླ་མེད་པའི་ཡོན་ཏན་དང་གཟི་བརྗིད་མངའ་བ།
नेस् चेन ङा व  क्ये मि ञम प दङ ञम शिङ डेन द मेद् पई योन तेन दङ ज़ि जिद् ङा व
**हे असम सम अतुलनीय गुण और तेजस्वी।**

མཚན་དང་དཔེ་བྱད་བཟང་པོས་ཡང་དག་པར་བརྒྱན་པའི་སྐུ་མངའ་བ་འདིར་གཤེགས་སུ་གསོལ། ཞེས་དང་།
छेन दङ पे छे ज़ङ पोस् यङ दग पर ग्येन पई कु ङा व दिर शेग सु सोल
लक्षण और व्जञ्जनों से सम्यग् अलंकृत यहाँ पधारें। ऐसा।

མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་གསང་བའི་སྒྲོན་མ་ལས།
आर्य मञ्जुश्री नामसंगीति गुह्य-साधन-प्रदीप में-

མ་ལུས་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་མགོན་གྱུར་ཅིང་། །
म लुस् सेम चेन कुन ग्यि गोन ग्युर चिङ
अशेष सत्त्वों के नाथ

བདུད་སྡེ་དཔུང་བཅས་མི་བཟད་འཇོམས་མཛད་ལྷ། །
दुद् दे पुङ चेस् मि ज़े जोम ज़े ल्ह
निष्करुण मार-समूह को नाश करने वाले देव

དངོས་རྣམས་མ་ལུས་ཇི་བཞིན་མཁྱེན་གྱུར་པའི། །
ङोस् नम म लुस् जि शिन ख्येन ग्युर पई
सभी धर्मों का यथावत ज्ञान रखने वाले

བཅོམ་ལྡན་འཁོར་བཅས་གནས་འདིར་གཤེགས་སུ་གསོལ།།
चोम देन खोर चेस् नेस दिर शेग सु सोल
भगवान, अपने पार्षद सहित यहाँ पधारें।10।

ཞེས་དང་། བཅོམ་ལྡན་བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་དུ་མ་རུ། །
चोम देन कल प डङ मेद् दु म रु
जगद्-दया के कारण भगवान् ने

འགྲོ་ལ་བརྩེ་ཕྱིར་ཐུགས་རྗེ་རྣམ་སྦྱངས་ཤིང་། །
डो ल त्ज़े छ्यिर थुग जे नम छङ शिङ
असंख्य कल्पों पूर्व करुणा का अभ्यास किया।

སྨོན་ལམ་རྒྱ་ཆེན་དགོངས་པ་ཡོངས་རྫོགས་པའི། །
मोन लम ग्य छेन गोङ प योङ ज़ोग पई
विस्तृत ऐच्छिक प्रणिधान पूर्ण करने का

ཁྱེད་བཞེད་འགྲོ་དོན་མཛད་དུས་འདི་ལགས་ན། །
ख्येद् शेद् डो दोन ज़े दुस् दि लग न
आपके इच्छानुसार सत्त्वार्थ क्रिया का समय यही है।

དེ་ཕྱིར་ཆོས་དབྱིངས་པོ་བྲང་ལྷུན་གྲུབ་ནས། །
दे छ्यिर छोस् यिङ फो डङ ल्हुन डुप नेस्
अतः निर्भोग धर्मधातु प्रासाद से

རྫུ་འཕྲུལ་བྱིན་རླབས་སྣ་ཚོགས་སྟོན་མཛད་ཅིང་། །
ज़ु ठुल छिन लप न छोग तोन ज़े चिङ
विविध ऋद्धि और आनुभाव को प्रदर्शित करते हुये।

མཐའ་ཡས་སེམས་ཅན་ཚོགས་རྣམས་བསྒྲལ་བའི་ཕྱིར།།
था येस् सेम चेन छोग नम डल बई छ्यिर
अनन्त प्राणि-समूह के मुक्ति हेतु

ཡོངས་དག་འཁོར་དང་བཅས་ཏེ་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
योङ दग खोर दङ चेस् ते शेग सु सोल
अपने विशुद्ध पार्षदों के साथ पधारें।।

ཆོས་རྣམས་ཀུན་གྱི་དབང་ཕྱུག་གཙོ། །
छोस् नम कुन ग्यि वङ छ्युग त्ज़ो
सभी धर्मों के प्रधान अधिपति

བཙོ་མ་གསེར་གྱི་མདོག་འདྲ་ཞིང་། །
त्ज़ो म सेर ग्यि दोग ड शिङ
काञ्चन तप्त वर्ण वाले।

ཉི་མ་ལས་ལྷག་གཟི་བརྗིད་ཆེ། །
ञि म लेस ल्हग ज़ि जिद् छे
सूर्य से भी बढकर तेजस्वी वाले

དད་པས་སྤྱན་ནི་དྲང་བར་བགྱི། །
दे पेस् चेन नि डङ बर ग्यि
श्रद्धापूर्वक आमन्त्रण करता हूँ।।

ཞི་ཞིང་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ལྡན་པ། །
शि शिङ थुग जे छे देन प
शान्त, महाकरुणा बन

དུལ་ཞིང་བསམ་གཏན་ས་ལ་བཞུགས། །
दुल शिङ सम तेन स ल शुग
दम्य, समाधि-भूमि में स्थित।

ཆོས་དང་ཡེ་ཤེས་ཆགས་བྲལ་བ། །
छोस् दङ ये शेस् छग डल व
धर्मों में निर्लिप्त ज्ञानी

ཀུན་ཏུ་མི་ཟད་ནུས་པར་ལྡན། །
कुन तु मि ज़े नुस् पर देन
अक्षय बल से युक्त।।

ཚུར་སྤྱོན་ཚུར་སྤྱོན་ཞི་དག་ལྷ། །
छुर चोन छुर चोन शि दग ल्ह
पधारे, पधारें, शिव-शुद्ध-दिव्य

ཐུབ་པ་སྐྱེས་མཆོག་ཐམས་ཅད་མཁྱེན། །
थुप प क्येस् छोग थम चे ख्येन
श्रेष्ठ पुरुष सर्वज्ञ मुनि।

ཤིན་ཏུ་ལེགས་བྱས་གཟུགས་བརྙན་ནི། །
शिन तु लेग छेस् ज़ुग ञेन नि
अति सुकृत्यों का परिणामों को धारण करने वाले प्रतिभास

མཆོད་པའི་གནས་འདིར་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
छोद् पई नेस दिर शेग सु सोल
इस पूजा-स्थल पर पधारें।।

ཞེས་དང་། མ་ག་དྷ་བཟང་མོའི་རྟོགས་བརྗོད་ལས།

एवं मगध-भद्री अवदान में-

ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་དག་ཤེས་རབ་ཤིན་ཏུ་དག །དད་ལྡན་
छुल ठिम नम दग शेस् रप शिन तु दग
विशुद्ध शीलवान्, प्रज्ञावान्

སྙིང་པོ་ཉན་ཐོས་ཆེ་རྣམས་ཀྱིས། །
दे देन ञिङ पो ञेन थोस् छे नम क्यीस्
श्रद्धावान्, सारवान् महाश्रावक।

མགོན་མེད་གྱུར་པ་བདག་ལ་རྗེས་བཟུང་བའི། །
गोन मेद् ग्युर प दग ल जेस् ज़ुङ बई
अनाथ मझे, अनुगृहीतार्थ

དོན་མཛད་ཐུགས་རྗེས་དགོངས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दोन ज़े थुग जेस् गोङ पर ज़े दु सोल
कल्याणार्थ करुणापूर्वक ध्यान दें।।

ཞེས་སྤྱན་འདྲེན་རྒྱས་བསྡུས་སྐབས་དང་བསྟུན་པ་དང་། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཚོ་ག་ཡོན་ཏན་འབྱུང་གནས་ལས།

इस प्रकार समयानुसार विस्तृत एवं संक्षिप्त आवाह्न का पाठ करें। आर्य मञ्जुश्री मण्डल गण संभव विधि से-

བདག་དང་འགྲོ་ལ་ཐུགས་བརྩེའི་ཕྱིར། །
दग दङ डो ल थुग त्ज़े छिर
मुझे और प्राणियों को दया करुणा से

ཉིད་ཀྱི་རྫུ་འཕྲུལ་མཐུ་ཡིས་ནི། །
ञिद् क्यि ज़ु ठुल थु यीस् नि
आप अपने ऋद्धि-बल से।

ཇི་སྲིད་མཆོད་པ་བདག་བགྱིད་པ། །
जि सिद् छोद् प दग ग्यिद् प
जब-जब भी (हम) पूजा करें

དེ་སྲིད་བཅོམ་ལྡན་བཞུགས་སུ་གསོལ། །
दे सिद् चोम देन शुग सु सोल
तब-तब भगवान् आप वहाँ विराजमान हों।।

## ༥. བྱོན་ལེགས་ཀྱི་ཡན་ལག །

## 5. स्वागतांग

བཅོམ་ལྡན་འདིར་ནི་བྱོན་པ་ལེགས། །
चोम देन दिर नि छोन प लेग
भगवान् आपका यहाँ स्वागत है

བདག་ཅག་བསོད་ནམས་སྐལ་པར་ལྡན། །
दग चग सोद् नम कल पर देन
हम पुण्यवान् एवं भाग्यशाली हैं।

བདག་གི་མཆོད་ཡོན་བཞེས་སླད་དུ། །
दग गि छोद् योन शेस् ले दु
हमारे पूजा और दक्षिणा स्वीकार हेतु

འདི་ཉིད་དུ་ནི་བཞུགས་སུ་གསོལ། །
दि ञिद् दु नि शुग सु सोल
यहाँ विराजमान हों- ऐसी मेरी प्रार्थना है।।

## 6. ཁྲུས་གསོལ་གྱི་ཡན་ལག །

## 6. स्नानांग

སྤྱོད་འཇུག་ལས། ཁྲུས་ཀྱི་ཁང་པ་ཤིན་ཏུ་དྲི་ཞིམ་པ། །
ठुस् क्यि खङ प शिन तु डि शिम प
स्नान-गृह अत्यन्त सुगन्धित

ཤེལ་གྱི་ས་གཞི་གསལ་ཞིང་འཚེར་བ་བསྟར། །
शेल ग्यि स शि सल शिङ छ़ेर व तर
फर्श निर्मल एवं दीप्तिमान स्फटिकों से निर्मित।

རིན་ཆེན་འབར་བའི་ཀ་བ་ཡིད་འོང་ལྡན། །
रिन छेन बर बई क व यिद् ह़ोङ देन
रत्न निर्मित प्रभास्वर मनोहर है

མུ་ཏིག་འོད་ཆགས་བླ་རེས་བྲེས་པ་དེར། །
मु तिग ह़ोद् छग ल रेस् डेस् प देर
मोती से बने वितान अत्यन्त भास्कर है।।

ཇི་ལྟར་བལྟམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
जि तर तम प त्ज़म ग्यीस् नि
जिस प्रकार (सिद्धार्थ के) जन्म लेने के तुरन्त बाद

ལྷ་རྣམས་ཀུན་གྱིས་ཁྲུས་གསོལ་ལྟར། །
ल्ह नम कुन ग्यीस् ठुस् सोल तर
सभी देवताओं ने स्नान कराया था।

ལྷ་ཡི་ཆུ་ནི་དག་པ་ཡིས། །
ल्ह यि छु नि दग प यीस्
दिव्य, शुद्ध जल से

དེ་བཞིན་བདག་གིས་སྐུ་ཁྲུས་གསོལ། །
दे शिन दग गीस् कु ठुस् सोल
उसी प्रकार मैं स्नान कराता हूँ।।

རྒྱལ་བའི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ལ་ཉོན་མོངས་མི་མངའ་ཡང་། །
ग्यल वई कु सुङ थुग ल ञोन मोङ मि ङा यङ
जिन (बुद्ध) के काय, वाक् चित्त में यद्यपि कोई क्लेश नहीं है

སེམས་ཅན་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་སྒྲིབ་པ་སྦྱང་སླད་དུ། །
सेम चेन लुस् ङग यिद् सुम डिप प छ्ङ ले दु
प्राणियों के शरीर, वचन और मन के आवरण शोधन के लिये।

རྒྱལ་བའི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ལ་ཁྲུས་ཆབ་འདི་གསོལ་བས། །
ग्यल वई कु सुङ थुग ल ठुस् छप दि सोल वे
जिन के काय, वाक्, चित्त के स्नान करुँगा

སེམས་ཅན་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་སྒྲིབ་པ་དག་གྱུར་ཅིག །
सेम चेन लुस् ङग यिद् सुम डिप प दग ग्युर चिग
जिससे प्राणियों के शरीर, वचन और चित्त का आवरण शुद्ध हों।।

དེ་བཞིན་གཤེགས་དང་དེ་ཡི་སྲས་རྣམས་ལ། །
दे शिन शेग दङ दे यि सेस् नम ल
तथागत और उनके पुत्र बोधिसत्त्वों को

རིན་ཆེན་བུམ་པ་མང་པོ་སྤོས་ཀྱི་ཆུས། །
रिन छेन बुम प मङ पो पोस् क्यि छुस्
रत्न निर्मित कलश में सुगन्धित जल को

ཡིད་འོང་ལེགས་པར་བཀང་བ་གླུ་དང་ནི། །
यिद् ह़ोङ लेग पर कङ व लु दङ नि
अच्छी तरह भर कर, गीतों और

རོལ་མོར་བཅས་པ་དུ་མས་སྐུ་ཁྲུས་གསོལ། །
रोल मोर चेस् प दु मेस कु ठुस् सोल
वाद्यों की ध्वनि के साथ स्नान करता हूँ।।

## 7. སྐུ་ཕྱི་བའི་ཡན་ལག །

## 7. काय परिमार्जनांग

དེ་དག་སྐུ་ལ་མཚུངས་པ་མེད་པའི་གོས། །
दे दग कु ल छुङ प मेद् पई गोस्
शरीर पोंछना-उनके शरीर को अनुपम वस्त्र जो

གཙང་ལ་དྲི་རབ་བསྒོས་པས་སྐུ་ཕྱི་འོ། །ཞེས་སྐུ་ཕྱི་བ་དང་།
ऩ्चङ ल डि रप गोस् पेस् कु छ्यि ह़ो
साफ सुगन्धित है, उससे पोंछता हूँ।।यह शरीर पोंछना हुआ।

ख



## 8. ན་བཟའ་འབུལ་བའི་ཡན་ལག །

## 8. वस्त्र एवं आभुषणार्पणांग

དེ་ནས་དེ་ལ་ཁ་དོག་ལེགས་བསྒྱུར་བའི། །
दे नेस् दे ल ख दोग लेग ग्युर बई
इसके उपरान्त उन्हें सुगन्धित

ན་བཟའ་ཤིན་ཏུ་དྲི་ཞིམ་དམ་པ་འབུལ། །
न ज़ा शिन तु डि शिम दम प बुल
धूपों से सुवासित चीवर अर्पित करता हूँ।। यह चीवरार्पण हुआ तथा

གོས་བཟང་སྲབ་ལ་འཇམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་། །
गोस् ज़ङ सप ल जम प न छ़ोग दङ
सुकोमल चिकने ओर नाना वर्ण वाले वस्त्र

རྒྱན་མཆོག་བརྒྱ་ཕྲག་དེ་དང་དེ་དག་གིས། །
ग्येन छोग ग्य ठग दे दङ दे दग गीस्
श्रेष्ठ सैंकड़ों प्रकार के अलंकारों से

འཕགས་པ་ཀུན་ཏུ་བཟང་དང་འཇམ་དབྱངས་དང་། །
फग प कुन तु ज़ङ दङ जम यङ दङ
आर्य समन्तभद्र, मञ्जुश्री और

འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་སོགས་ལའང་བརྒྱན་པར་བགྱི། །
जिग तेन वङ छ्युग सोग लह़ङ ग्येन पर ग्यि
अवलोकितेश्वर आदि बोधिसत्त्वों को भी विभूषित करता हूँ।। यह आभुषणार्पण हुआ।

ཞེས་རྒྱན་འབུལ་བ་དང་།

## 9. लेप-अर्पणांग

སྟོང་གསུམ་ཀུན་ཏུ་དྲི་ངད་ལྡང་བ་ཡི། །
तोङ सुम कुन तु डि ङे दङ व यि
त्रिसाहस्त्र लोक तक फेलने वाली

དྲི་མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་ཐུབ་དབང་ཀུན་གྱི་སྐུ། །
डि छोग नम क्यीस् थुप वङ कुन ग्यि कु
गन्ध श्रेष्ठ से सभी मुनीश्वर के कायों को

གསེར་སྦྱངས་བཙོ་མ་བྱི་དོར་བྱས་པ་ལྟར། །
सेर छङ त्सो म छि दोर छेस् प तर
जैसे अच्छी तरह तपाये, मांजे, धोये सुवर्ण सदृश

འོད་ཆགས་འབར་བ་དེ་དག་བྱུག་པར་བགྱི། །
ह़ोद् छग बर व दे दग छुग पर ग्यि
उज्जवल प्रभामय गन्ध से लेप करता हूँ।।

ཞེས་པས་བྱུག་པ་འབུལ་བ་དང་།

यह लेप-अर्पण हुआ।

སྣང་རྒྱན་མདོའི་ཕྱག་བསྟོད།

# आभासालंकार सूत्र में आया बुद्ध-स्तुति

## 10 & 11. ཕྱག་བསྟོད་གཉིས་ཀྱི་ཡན་ལག །
## 10 & 11 वन्दना और स्तुत्यांग द्वय

དེ་ནས་ཕྱག་འཚལ་བ་དང་བསྟོད་དབྱངས་སྒྲོགས་པ་ནི། སྨོན་ན་ཡེ་ཤེས་སྣང་བ་རྒྱན་གྱི་མདོ་ལས་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱིས་སངས་རྒྱས་ལ་བསྟོད་པ་ནི།
इसके उपरान्त वन्दना और स्तुति-संगीति पाठ। इच्छा होने पर ज्ञानाभास-अलंकार-सूत्र में आये आर्य मञ्जुश्री द्वारा बुद्ध की स्तुति का पाठ करें।

ཁ་དོག་རྟགས་དང་དབྱིབས་མི་མངའ། །
दोग तग दङ यिप मि ङा
वर्ण, लक्षण, संस्थान से अतीत

རྩ་བ་མི་མངའ་གནས་མི་མངའ། །
ज़ा व मि ङा नेस मि ङा
मूल रहित, स्थान रहित, निर्मूल-निर्वास

མི་འགག་འབྱུང་བ་མི་མངའ་བ། །
मि गग छुङ व मि ङा व
अनिरुद्ध, अनुत्पन्न

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མི་གནས་གནས་པ་མི་མངའ་བ། །
मि नेस नेस प मि ङा व
अप्रतिष्ठित, स्थिति रहित

བླང་བ་མི་མངའ་དོར་མི་མངའ། །
लङ व मि ङा दोर मि ङा
स्वीकार-त्याज्य विवर्जित

སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་ལས་རྣམ་གྲོལ་བ། །
क्ये छेद् डुग लेस नम डोल व
षडायतन से विमुक्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་མི་གནས་ཤིང་། །
छोस् नम कुन ल मि नेस शिङ
सभी धर्मों में निर्लिप्त

དངོས་དང་དངོས་མེད་རྣམ་པར་སྤངས། །
ङोस् दङ ङोस् मेद् नम पर पङ
अस्ति-नास्ति से अतीत

འདུ་བྱེད་མཉམ་པ་ཉིད་བརྙེས་པ། །
दु छेद् ञम प ञिद् ञेस् प
सभी धर्मों में समता लब्ध

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཁམས་གསུམ་དག་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །
खम सुम दग लेस नम पर डोल
त्रिधातु से विमुक्त

མཁའ་ལྟར་མཉམ་ཉིད་ཐུགས་སུ་ཆུད། །
खा तर ञम ञिद् थुग सु छुद्
ख सदृश समता अवबोध कर

འདོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་མི་གོས་པ། །
दोद् प नम क्यीस् मि गोस् प
तृष्णाओं से निर्लिप्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

གཤེགས་དང་བཞུགས་དང་གཟིམས་པ་ཡི། །
शेग दङ शुग दङ ज़िम प यि
चलते, बैठते, शयन करते

སྤྱོད་ལམ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ། །
चोद् लम नम प थम चे दु
सभी ईर्यापथों में

རྟག་ཏུ་མཉམ་པར་བཞག་མཛད་པ། །
तग तु ञम पर शग ज़े प
आप समाहित रहते हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མཉམ་པར་འབྱོན་ཅིང་མཉམ་པར་གཤེགས། །
ञम पर छ़ोन चिङ ञम पर शेग
समता में आगमन करते, समता में प्रस्थान करते हैं

མཉམ་པ་ཉིད་ལ་གནས་པ་པོ། །
ञम प ञिद् ल नेस प पो
समता में स्थित रहते

མཉམ་ཞིང་འཁྲུགས་པར་མི་མཛད་པ། །
ञम शिङ ठुग पर मि ज़े प
समाधि से कभी विचलित नहीं होते

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མཉམ་པ་ཉིད་ལ་ཞུགས་གྱུར་ཅིང་། །
ञम प ञिद् ल शुग ग्युर चिङ
समता में स्थित रहते हैं

ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་མཉམ་པར་བཞག །
छोस् नम कुन ल ञम पर शग
सभी धर्मों में समाहित होते हैं

མཚན་མ་མེད་ལ་ཞུགས་གྱུར་པ། །
छ़ेन म मेद् ल शुग ग्युर प
निर्लक्षण में स्थित होते हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མི་གནས་དམིགས་པ་མི་མངའ་བ། །
मि नेस मिग प मि ङा व
अप्रतिष्ठित हो अनालम्बन रहकर

མངའ་དབང་བརྙེས་གྱུར་པ། །
छोस् ल ङा वङ ञेस् ग्युर प
धर्म पर अधिकार प्राप्त करते

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྒྲ་སྐད་དང་། །
सेम चेन कुन ग्यि ड के दङ
सभी सत्त्वों के ध्वनि और भाषा

སྐད་ཅིག་གཅིག་གིས་གཟིགས་མཛད་པ། །
के चिग चिग गीस् ज़िग ज़े प
एक क्षण में अवलोकन करते

མིང་དང་གཟུགས་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །
मिङ दङ ज़ुग लेस नम पर डोल
नाम-रूप से विनिर्मुक्त

རྣམ་པ་མེད་ལ་འཇུག་མཛད་པ། །
नम प मेद् ल जुग ज़े प
निराकार में प्रवृत्त होने वाले

མཚན་མ་དག་དང་རྣམ་བྲལ་ཞིང་། །
छ़ेन म दग दङ नम डल शिङ
सभी लक्षणों से विमुक्त

མཚན་མ་མེད་ལ་འཇུག་མཛད་པ། །
छ़ेन म मेद् ल जुग ज़े प
निर्लक्षण में प्रवृत्त होने वाले

ཡང་དག་རྟོག་པ་རྣམ་མ་བརྟགས། །
यङ दग तोग प नम म तग
सम्यग् संकल्प प्रज्ञप्ति रहित

ཤེས་རབ་བསགས་ཤིང་མཉམ་པར་བཞག །ཆོས་ལ་
शेस् रप सग शिङ ञम पर शग
समाहित होकर, प्रज्ञा का विकास कर

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

དེ་བཞིན་གཟུགས་དང་སྤྱོད་ལམ་དག །
दे शिन ज़ुग दङ चोद् लम दग
तथैव रूप एवं ईर्यापथ

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

རྒྱུ་དང་ཕུང་པོ་ཐམས་ཅད་བཅད། །
ग्यु दङ फुङ पो थम चे चे
हेतु और स्कन्ध का पूर्णोच्छेदन कर

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མཚན་མའི་རྣམ་པ་རྣམ་པར་སྤངས། །
छ़ेन मई नम प नम पर पङ
लक्षणाकार से विवर्जित

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཐུགས་ཡིད་རབ་ཏུ་མི་གནས་ཤིང་། །
थुग यिद् रप तु मि नेस शिङ
चित्त-मन से रहित

ཡིད་མཛད་མི་མངའ་མི་དགོངས་པ། །
यिद् ज़े मि ङा मि गोङ प
अमनिसकार विकल्प रहित

मི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ནམ་མཁའ་འདྲ་བར་གནས་མི་མངའ། །
नम खा ड बर नेस मि ङा
आकाशवत स्थिति रहित

ཐོགས་པ་མི་མངའ་སྤྲོས་མི་མངའ། །
थोग प मि ङा टोस् मि ङा
असंघात, प्रपञ्च रहित

ནམ་མཁའ་མཉམ་པའི་ཐུགས་མངའ་བ། །
नम खा ञम पई थुग ङा व
आकाश सदृश चित्त वाले

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ནམ་མཁའ་དབུས་མཐའ་མ་མཆིས་པ། །
नम खा उस् था म छीस् प
यथा आकाश मध्यान्त रहित है

སངས་རྒྱས་ཆོས་ཉིད་དེ་དང་འདྲ། །
सङ ग्येस् छोस् ञिद् दे दङ ड
तथा बुद्ध-धर्म-धातु भी है

དུས་གསུམ་ཡང་དག་འདས་གྱུར་པ། །
दुस् सुम यङ दग देस् ग्युर प
(आप) त्रिकाल-अतीत हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་སངས་རྒྱས་ཏེ། །
नम खई छ़ेन ञिद् सङ ग्येस् ते
बुद्ध आकाश लक्षण हैं

ནམ་མཁའང་མཚན་ཉིད་མཆིས་མ་ལགས། །
नम खहृङ छ़ेन ञिद् छीस् म लग
आकाश निर्लक्षण है

རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་རྣམ་གྲོལ་བ། །
ग्यु दङ डेस् बु नम डोल व
हेतु-फल (सिद्धान्त से) विनिर्मुक्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ངར་འཛིན་མི་མངའ་སྒྲ་མི་མངའ། །
ङर ज़िन मि ङा ड मि ङा
अहंकार विहीन, शब्द-अतीत

གཟུང་བ་མ་མཆིས་ཆུ་ཟླ་འདྲ། །
ज़ुङ व म छीस् छु द ड
ग्राह्य रहित, चन्द्र-बिम्ब सदृश

ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་མི་གནས་པ། །
छोस् नम कुन ल मि नेस प
धर्म में अप्रतिष्ठित

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཕུང་པོ་རྣམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དང་། །
फुङ पो नम दङ क्ये छेद् दङ
स्कन्ध और आयतन

ཁམས་རྣམས་དག་ལ་མི་གནས་ལ། །
खम नम दग ल मि नेस ल
तथा धातु में अप्रतिष्ठित

ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །
छिन चि लोग लेस नम पर डोल
विपर्याय विनिर्मुक्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མཐའ་གཉིས་དག་ལས་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་། །
था ञीस् दग लेस नम डोल शिङ
अन्तद्वय से विमुक्त

བདག་ཏུ་ལྟ་བ་ཡང་དག་བཅད། །
दग तु त व यङ दग चे
आत्मदृष्टि का समूलोच्छेद कर

ཆོས་དབྱིངས་མཉམ་པ་ཉིད་བརྙེས་པ། །
छोस् यिङ ञम प ञिद् ञेस् प
धर्मधातु समता लब्ध

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

གཟུགས་ཀྱི་གྲངས་ལས་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་། །
ज़ुग क्यि डङ लेस नम डोल शिङ
रूपात्म से अतीत

དམ་ཆོས་མ་ལགས་རྣམ་པར་སྤངས། །
दम छोस् म लग नम पर पङ
अधर्म का परित्याग कर

ལེན་དང་གཏོང་བ་མི་མངའ་བ། །
लेन दङ तोङ व मि ङा व
आदान-प्रदान से से रहित

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

བདུད་ཀྱི་མིང་ལས་རབ་འདས་ཤིང་། །
दुद् क्यि मिङ लेस रप देस् शिङ
मार के भी नाम से पार

ཆོས་ཀུན་རྟོགས་པར་ཐུགས་སུ་ཆུད། །
छोस् कुन तोग पर थुग सु छुद्
सभी धर्मों का अधिगम कर

སྒྲིབ་པ་མི་མངའ་ཆོས་གྱུར་པ། །
डिप प मि ङा छोस् ग्युर प
आवरण रहित धर्मभूत

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

དོན་འཚལ་རྣམས་ཀྱིས་མཆིས་མི་བརྗོད། །
दोन छ़ल नम क्यीस् छीस् मि जोद्
परमार्थ ज्ञाता अस्ति नहीं कहते

མ་མཆིས་ཞེས་ཀྱང་བརྗོད་མི་བགྱི། །
म छीस् शेस् क्यङ जोद् मि ग्यि
न ही अनस्ति कहते हैं

ལན་མེད་ཚིག་ལམ་མ་མཆིས་པ། །
लेन मेद् छिग लम म छीस् प
शब्दातीत होने से प्रत्युत्तर भी नहीं रहता

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

གཉིས་ཀྱི་ཆོས་ལ་མི་རྟེན་པར། །
ञीस् क्यि छोस् ल मि तेन पर
द्वैत पर आश्रित हुए विना

ཐེག་པའི་རྒྱལ་མཚན་ཀུན་ཏུ་བཙུགས། །
थेग पई ग्यल छेन कुन तु त्सुग
यान-ध्वज को सर्वत्र स्थापित करने वाले

གཉིས་དང་གཉིས་མེད་རྣམ་གྲོལ་བ། །
ञीस् दङ ञीस् मेद् नम डोल व
द्वैत-अद्वैत विनिर्मुक्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཁྱོད་ཀྱིས་ཡིད་ཀྱི་ཉེས་པ་དང་། །
ख्योद् क्यीस् यिद् क्यि ञेस् प दङ
आपने मन के दोषों और

ལུས་ཀྱི་ནད་བཞི་ཕམ་པར་མཛད། །
लुस् क्यि ने शि फम पर ज़े
शारिरिक चारों दोषों को जीता

བསམ་ཡས་དཔེ་དང་རྣམ་བྲལ་བ། །
सम येस् पे दङ नम डल व
अचिन्त्य उपमाओं से अतीत अतुलनीय

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པར་འཇུག་མཛད་ཅིང་། །
ल्हुन ग्यीस् डुप पर जुग ज़े चिङ
निर्भोग में प्रवृत्त होने वाले

ཉེས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤངས། །
ञेस् प थम चे नम पर पङ
सभी दोषों से विनिर्मुक्त

སྤྱོད་པ་མཁྱེན་པས་ཐོག་དྲངས་པ། །
चोद् प ख्येन पेस् थोग डङ प
सभी चर्यायें ज्ञान से प्रेरित

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཁྱོད་དགོངས་ཞི་ཞིང་ཟག་མི་མངའ། །
ख्योद् गोङ शि शिङ ज़ग मि ङा
आप शान्त हैं, आस्रव रहित हैं

འབྱུང་མིན་འབྱུང་བའི་བདག་ཉིད་ཅན། །
छुङ मिन छुङ बई दग ञिद् चेन
भूत रहित होने पर भी भूतात्मक

གནས་དང་རྟོག་པ་མི་མངའ་བ། །
नेस दङ तोग प मि ङा व
न स्थित है, न विकल्प है

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

དམིགས་པ་མི་མངའ་ཐུགས་ཀྱིས་སུ། །
मिग प मि ङा थुग क्यीस् सु
आपका निरालम्बन चित्त

བདག་གཞན་འདུ་ཤེས་མི་མངའ་བ། །
दग शेन दु शेस् मि ङा व
आपमें स्व-पर का संज्ञान नहीं

དམིགས་དང་དམིགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནི། །
मिग दङ मिग प नम क्यीस् नि
आलम्बन और आलम्ब्य द्वारा

སྒྲིབ་པ་མེད་པའི་ཆོས་གྱུར་པ། །
डिप प मेद् पई छोस् ग्युर प
(पर आप) ऩिरावरणभूत हैं

དམིགས་པ་དག་དང་སེམས་རྣམས་ནི། །
मिग प दग दङ सेम नम नि
आलम्बन तथा चित्त

བསམ་ཡས་མཉམ་པ་ཉིད་བརྙེས་པ། །
सम येस् ञम प ञिद् ञेस् प
अचिन्त्य समता को प्राप्त

གནས་པ་མི་མངའ་མཁྱེན་པ་ཡིས། །
नेस प मि ङा ख्येन प यीस्
अप्रतिष्ठित ज्ञान के द्वारा

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྤྱོད་གཟིགས་པ། །
सेम चेन कुन ग्यि चोद् ज़िग प
सभी प्राणि-चर्याओं के अवलोकन-कर्ता

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ལན་འགའ་ཡང་། །
सङ ग्येस् नम क्यीस् लेन गा यङ
बुद्ध किसी भी किसी को, अर्थात्

ཀུན་གྱི་སེམས་ནི་རབ་ཏུ་མཁྱེན། །
कुन ग्यि सेम नि रप तु ख्येन
सभी के मन को जानता है

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཀུན་གྱི་སེམས་ནི་རྨོངས་པར་བགྱིད། །
कुन ग्यि सेम नि मोङ पर ग्यिद्
सभी का चित्त मोहित करते हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མཆིས་མ་ལགས། །
ङो बो ञिद् क्यीस् छीस् म लग
स्वभाव से नहीं होता

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཞིང་རྣམས་ཀུན་དང་དེ་བཞིན་དུ། །
शिङ नम कुन दङ दे शिन दु
सभी क्षेत्र तथा

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

སེམས་དང་ཆོས་ཀུན་གཏན་མ་དམིགས། །
सेम दङ छोस् कुन तेन म मिग
चित्त और धर्मों को कदापि नहीं देखते

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀུན་མཁྱེན་པ། །
छोस् नम थम चे कुन ख्येन प
समस्त धर्मों के ज्ञाता

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग ह्रल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

ཆོས་ཀུན་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་སྟེ། །
छोस् कुन ग्यु म त बु ते
सभी धर्म माय सदृश है

སྒྱུ་མ་ཉིད་ཀྱང་མཆིས་མ་ལགས། །
ग्यु म ञिद् क्यङ छीस् म लग
माया भी (स्वभावतया) नहीं होता

སྒྱུ་མའི་ཆོས་ལས་རྣམ་གྲོལ་བ། །
ग्यु मई छोस् लेस नम डोल व
माया रूपी धर्मों से विनिर्मुक्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग ह्रल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

རྫོགས་སངས་འཇིག་རྟེན་སྤྱོད་མཛད་ཀྱང་། །
ज़ोग सङ जिग तेन चोद् ज़े क्यङ
सम्बुद्ध लोक में चर्या करते हैं

འཇིག་རྟེན་ཆོས་ལ་རྟེན་མི་མཛད། །
जिग तेन छोस् ल तेन मि ज़े
लेकिन लोक-धर्म से निराश्रित हैं

འཇིག་རྟེན་རྣམ་རྟོག་མི་མངའ་བ། །
जिग तेन नम तोग मि ङा व
लोक-विकल्प रहित हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग ह्रल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

སྟོང་ཕྱིར་སྟོང་ལ་སྤྱོད་མཛད་ཅིང་། །
तोङ छिर तोङ ल चोद् ज़े चिङ
शून्य के कारण शून्यता में चर्या करते हैं

ཁྱོད་ཉིད་སྟོང་ཞིང་སྤྱོད་ཡུལ་སྟོང་། །
ख्योद् ञिद् तोङ शिङ चोद् युल तोङ
आप भी शून्य हैं, गोचर विषय भी शून्य है

སྟོང་པ་སྟོང་པར་སྟོན་མཛད་པ། །
तोङ प तोङ पर तोन ज़े प
शून्य, शून्यता को देशित करते हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग ह्रल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་དང་། །
ग्यु म त बुइ तिङ ज़िन दङ
माया सदृश समाधि और

སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོས་རྣམ་འཕྲུལ་ཞིང་། །
ग्यु ठुल छेन पोस् नम ठुल शिङ
महामाया द्वारा विकुर्वित

ཐ་དད་མ་མཆིས་སྒོམས་ཞུགས་པ། །
थ दे म छीस् ग़ोम शुग प
भिन्न नहीं समाधिस्थ हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग ह्रल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

དུ་མ་མ་ལགས་གཅིག་མ་ལགས། །
दु म म लग चिग म लग
अनेक नहीं, एक नहीं

གདེག་དང་གཞག་པ་མི་མངའ་བ། །
देग दङ शग प मि ङा व
उत्प्रेश और प्रक्षेप से रहित

རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གྱིས། །
दोर जे त बुइ तिङ ज़िन ग्यीस्
वज्र रूपी समाधि द्वारा

ངོས་མ་མཆིས་པར་མཉམ་གཞག་པ། །
ङोस् म छीस् पर ञम शग प
निस्वभाव में समाधिस्थ

འདྲེན་པ་དུས་རྣམས་ཐམས་ཅད་དུ། །
डेन प दुस् नम थम चे दु
नायक सभी कालों में

སྣ་ཚོགས་ཐབས་དང་ལྡན་པ་པོ། །
न छ़ोग थप दङ देन प पो
विविध उपायों से युक्त

སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བརྒྱུད་པའི་ཐབས། །
सेम चेन नम क्यि ग्युद् पई थप
सत्त्वों को परम्परा में (दीक्षित करने हेतु) उपाय-
कुशल

དེ་ཕྱིར་མི་གཡོ་མྱ་ངན་འདས། །
दे छिर मि गयो न्य ङेन देस्
आप अचल निर्वाण-लब्ध हैं

མཚན་མ་མི་མངའ་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ། །
छ़ेन म मि ङा ल्हुन ग्यीस् डुप
निर्लक्षण निर्भोग

རིང་དང་ཉེ་ལ་མི་འཇུག་ཅིང་། །
रिङ दङ ञे ल मि जुग चिङ
दूर और पास अप्रविष्ट

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

སྐད་ཅིག་གཅིག་ལ་མངོན་སངས་རྒྱས། །
के चिग चिग ल ङोन सङ ग्येस्
एकक्षण में अभिसम्बोधि प्राप्त

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མི་གཡོ་མྱ་ངན་འདས་པ་རྟོགས། །
मि गयो न्य ङेन देस् प तोग
अचल, निर्वाण-अधिगम

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

མཁྱེན་པས་མཁས་པར་གྱུར་པ་ལགས། །
ख्येन पेस् खेस् पर ग्युर प लग
अतः आप सुविज्ञ कहलाते हैं

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

སྤྲོས་པ་མི་མངའ་སྐྱོན་མི་མངའ། །
टोस् प मि ङा क्योन मि ङा
निष्प्रपञ्च निर्दोष

སྣང་མེད་བདག་གི་མི་མངའ་བ། །
नङ मेद् दग गि मि ङा व
निर्भास निरात्मक

རྣམ་རྟོག་མི་མངའ་སྐྱོན་མི་མངའ། །
नम तोग मि ङा क्योन मि ङा
निर्विकल्प, निर्दोष और

ཀུན་ཏུ་མཁྱེན་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན། །
कुन तु ख्येन प थम चे ख्येन
सदैव ज्ञान रखते, आप सर्वज्ञ हैं

སྟོབས་བཅུ་ཆུ་བོ་རྒལ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
तोप चु छु बो गल व ख्योद् ल छग छ़ल लो
दशबली, ओघोत्तीर्ण आपको नमन है

འཇིགས་བྲལ་འཇིགས་མེད་སྩོལ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जिग डल जिग मेद् ज़्चोल व ख्योद् ल छग छ़ल लो
निर्भय, अभय-दाता आपको नमन है

མ་འདྲེས་ཆོས་རྣམས་ངེས་པར་ཐུགས་སུ་ཆུད་གྱུར་པ། །
म डेस् छोस् नम ङेस् पर थुग सु छुद् ग्युर प
अमिश्रित सभी धर्मों का नियत अवबोध-कर्ता

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་འདྲེན་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
डो व कुन ग्यि डेन प ख्योद् ल छग छ़ल लो
समस्त सत्त्व-नायक आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

ཀུན་སྦྱོར་འཆིང་བ་བཅད་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कुन छोर छिङ व चे प ख्योद् ल छग छ़ल लो
संयोजन-बन्धनोच्छेदन-कर्ता आपको नमन है

ཕ་རོལ་ཕྱིན་ཏེ་ཐང་ལ་བཞུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
फ रोल छोन ते थङ ल शुग ल छग छ़ल लो
पारंगत, शाल-भूमि में विराजित को मेरा नमन है

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

བདག་གིས་བདག་ཉིད་ཇི་བཞིན་པར། །
दग गीस् दग ञिद् जि शिन पर
स्व-स्वभाव का यथावत

མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि तेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे निराश्रित आपको (मैं) वन्दना करता हूँ।।

སྐྱེ་བོ་ངལ་བའི་རྣམ་འདྲེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
क्ये बो ङल बई नम डेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
**विश्रान्त जनों के नायक, आपको मेरा नमन है**

འཁོར་བར་གཤེགས་ཤིང་མི་གནས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
खोर वर शेग शिङ मि नेस प ल छग छ़ल लो
**संसार से प्रस्थान कर अप्रतिष्ठित को मेरा नमन है।।**

འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་དག་ན་སེམས་ཅན་རྣམས་དང་ནི། །
डो व थम चे दग न सेम चेन नम दङ नि
**समस्त जगत के सभी प्राणियों के मध्य**

ཐབས་ཅིག་བཞུགས་ཀྱང་ཐུགས་ཡིད་རབ་ཏུ་དབེན་གྱུར་པ། །
थप चिग शुग क्यङ थुग यिद् रप तु वेन ग्युर प
**साथ बैठने पर भी चित्त अति एकान्तिक**

ཇི་ལྟར་པདྨ་ཆབ་ཀྱིས་གོས་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། །
जि तर पेमा छप क्यीस् गोस् पर मि ग्युर शिङ
**यथा कमल जल से निर्लिप्त होता है**

སངས་རྒྱས་ཐུབ་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་སྟོང་ཉིད་ཤིན་ཏུ་བསྟེན། །
सङ ग्येस् थुप प ख्योद् क्यीस् तोङ ञिद् शिन तु तेन
**बुद्ध मुनि आप शून्यता का अति सेवन करते हैं।।**

མཚན་མ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་བཤིག །
छ़ेन म थम चे नम प कुन तु नम पर शिग
**सभी लक्षणों को सदैव हेतु पूर्ण नष्ट कर**

ཁྱོད་ལ་གར་ཡང་སྨོན་པར་མཛད་པ་མཆིས་མ་ལགས། །
ख्योद् ल गर यङ मोन पर ज़े प छीस् म लग
**आपको किसी प्रकार का कोई अभिलाषा नहीं**

སྟོན་པའི་གོ་འཕང་བླ་མེད་དབེན་པ་ཉིད་ལགས་ཏེ། །
तोन पई गो फङ ल मेद् वेन प ञिद् लग ते
**शास्ता-पद अनुत्तर और एकान्तिक है**

དམིགས་མེད་ཆུ་བོ་རྒལ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मिग मेद् छु बो गल व ख्योद् ल छग छ़ल लो
**निरालम्बन ओघोत्तर आपको नमन है।।**

སངས་རྒྱས་མཐུ་ཆེན་བསམ་གྱིས་ཁྱབ་པ་མ་ལགས་ཏེ། །
सङ ग्येस् थु छेन सम ग्यीस् ख्यप प म लग ते
**बुद्ध का महाबल अचिन्तीय है**

མི་གནས་ནམ་མཁའ་མཉམ་པ་ཉིད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि नेस नम खा ञम प ञिद् ल छग छ़ल लो
**अस्थान आकाश जैसे आपको  नमन है।।**

ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་མཆོག་མངའ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
योन तेन कुन ग्यि छोग ङा ख्योद् ल छग छ़ल लो
**समस्त श्रेष्ठ गुण युक्त आपको मेरा नमन है**

དཔལ་འཕགས་ལྷུན་པོ་འདྲ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཞེས་སོ། །
पल फग ल्हुन पो ड व ख्योद् ल छग छ़ल लो
**श्रीयुत, आर्य गिरि सदृश आपको मेरा नमन है।।** इति।

ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་མདོའི་ཐུབ་བསྟོད།

# राष्ट्रपालसूत्र में आये मुनि-स्तुति

འཕགས་པ་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་གིས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས་མཚན་དཔེའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་བསླབ་བཏུས་སུ་དྲངས་པ་ནི།

आर्य राष्ट्रपालपरिपृच्छा-सूत्र में आये लक्षण एवं व्यञ्जनों द्वारा स्तुति जो शिक्षासमुच्चय में उद्धृत है-

མཚན་མཆོག་ལྡན་པ་དྲི་མེད་ཟླ་བའི་ཞལ། །
छ़ेन छोग देन प डि मेद् द बई शल
श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त विमल चन्द्रमुख

གསེར་མདོག་འདྲ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सेर दोग ड व ख्योद् ल छग छ़ल लो
कनक-वर्ण सदृश आपको में वन्दना करता हूँ।

དུལ་བྲལ་ཁྱོད་འདྲ་སྲིད་པ་གསུམ་ན་མཆིས། །
दुल डल ख्योद् ड सिद् प सुम म छीस्
त्रिभुवन में स्थित आप सदृश दूसरा नहीं

མཉམ་མེད་མཁྱེན་ཆེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ञम मेद् ख्येन छेन ख्योद् ल छग छ़ल लो
असम महाज्ञानी आपको मैं वन्दना करता हूँ।1।

རྒྱལ་བའི་དབུ་སྐྲ་འཇམ་མཛེས་སྣུམ་ཞིང་བཟང་། །
ग्यल वई उ ट जम ज़ेस् नुम शिङ ज़ङ
जिन (बुद्ध) आपका केश, मृदु, चारु, स्निग्ध और शुभ है

ཁྱོད་ཀྱི་གཙུག་ཏོར་འདི་ནི་རི་རྒྱལ་བཞིན། །
ख्योद् क्यि त़ुग तोर दि नि रि ग्यल शिन
आपका यह उष्णीष गिरिराज तुल्य है

གཙུག་ཏོར་མི་མཐོང་ཁྱོད་དང་མཚུངས་མ་མཆིས། །
त़ुग तोर मि थोङ ख्योद् दङ छुङ म छीस्
अदृश्य उष्णीष युक्त आप सदृश दूसरा नहीं।2।

ཐུབ་པ་ཁྱོད་ཀྱི་སྨིན་མཚམས་མཛོད་སྤུས་མཛེས། །
थुप प ख्योद् क्यि मिन छ़म ज़ोद् पुस् ज़ेस्
मुनि आपका भ्रू-मध्य उर्ण शुभ है

ཀུནྡ་ཟླ་བ་ཁ་བ་དུང་ལྟར་དཀར། །
कुन्द द व ख व दुङ तर कर
कुन्द, चन्द्र, हिम, शंख सदृश श्वेत है

ཐུགས་རྗེ་གང་གིས་འགྲོ་བ་འདི་གཟིགས་པ། །
थुग जे गङ गीस् डो व दि ज़िग प
कृपा पूर्वक इस जगत को देखते हैं

སྤྱན་མཆོག་བཟང་པོ་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོ་འདྲ། །
चेन छोग ज़ङ पो उत्पल ङोन पो ड
नीलोत्पल सदृश शुभ श्रेष्ठ नेत्र तथा

རྒྱལ་བ་དྲི་མེད་སྤྱན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल व डि मेद् चेन ल छग छ़ल लो
विमल-नेत्र जिन को मै वन्दना करता हूँ।3।

ལྗགས་ཡངས་སྲབ་ལ་ཟངས་ཀྱི་མདོག་འདྲ་བ། །
जग यङ सप ल ज़ङ क्यि दोग ड व
विशाल, ताम्र सदृश तनु जिह्वा

དེ་ཡིས་རང་གི་ཞལ་གྱི་གདོང་ཡང་ཁེབས། །
दे यीस् रङ गि शल ग्यि दोङ यङ खेप
जो स्व-मुख मण्डल को आवृत्त करता

ཆོས་གསུངས་པས་ནི་འགྲོ་བ་འདུལ་བར་བགྱིད། །
छोस् सुङ पेस् नि डो व दुल वर ग्यिद्
धर्म देशना से जगत को विनीत करते

འཇམ་སྙུམ་གསུང་ལྡན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जम नुम सुङ देन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे मधुर स्निग्ध वाचक को मैं वन्दना करता हूँ।4।

ཚེམས་བཟང་ཤིན་ཏུ་བརྟན་པ་རྡོ་རྗེ་འདྲ། །
छ़ेम ज़ङ शिन तु तेन प दोर जे ड
सुदृढ वज्र सदृश सुन्दर दाँतें

བཅུ་དང་སུམ་ཅུ་སྙོམས་ཤིང་ཐགས་བཟང་བ། །
चु दङ सुम चु ञोम शिङ थग ज़ङ व
एक बराबर, चालीस और अविरल हैं

འཛུམ་པ་མཛད་ནས་འགྲོ་བ་འདུལ་བར་བགྱིད། །
ज़ुम प ज़े नेस् डो व दुल वर ग्यिद्
स्मित से जगत को विनीत करते हैं

བདེན་གཏམ་སྙན་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
देन तम ञेन प ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे सत्य और मृधुवादी को मैं वन्दना करता हूँ।5।

རྒྱལ་བ་ཁྱོད་ཀྱི་གཟུགས་དང་མཚུངས་མ་མཆིས། །
ग्यल व ख्योद् क्यि ज़ुग दङ छुङ म छीस्
जिन, आप अतुलनीय रूपवान हैं

འོད་ཀྱིས་ཞིང་བརྒྱ་དག་ཀྱང་སྣང་བར་བགྱིད། །
ह़ोद् क्यीस् शिङ ग्य दग क्यङ नङ वर ग्यिद्
(आपके) प्रभा से सैंकड़ों क्षेत्र प्रकाशित होते

འཇིག་རྟེན་ན་ནི་ཚངས་དབང་སྐྱོང་དེ་དག །
जिग तेन न नि छ़ङ वङ क्योङ दे दग
लोक में ब्रह्मा, इन्द्रपाल भी

བཅོམ་ལྡན་ཁྱོད་ཀྱི་འོད་ཀྱིས་ཟིལ་དུ་བརླག །
चोम देन ख्योद् क्यि ह़ोद् क्यीस् ज़िल दु लग
भगवान् आपके प्रभा से अभिभूत होते हैं।6।

ཨེ་ནྱའི་བྱིན་པ་མཉམ་མེད་བཅོམ་ལྡན་འདས། །
ए न्यई छिन प ञम मेद् चोम देन देस्
आपका चाल गजराज सा, एणेय-जंघ, अद्वितीय भगवान्

གླང་པོའི་རྒྱལ་པོ་རྨ་བྱ་སེང་གེའི་སྟབས། །
लङ पोइ ग्यल पो म छ सेङ गे तप
मयूर और मृगराज सदृश हैं

བཅོམ་ལྡན་གཉའ་ཤིང་གང་དུ་གཟིགས་ཤིང་གཤེགས།།
चोम देन ञा शिङ गङ दु ज़िग शिङ शेग
भगवान् आपकी नजर युगान्त दूरी तक रहता

ས་དང་རི་དང་ངམ་པ་གཡོ་བར་མཛད། །
स दङ रि दङ ङम प गयो वर ज़े
पृथ्वी, गिरि और दम्भी भी हिल जाते हैं

བཅོམ་ལྡན་སྐུ་མཆོག་མཚན་གྱིས་བརྒྱན་པ་སྟེ། །
चोम देन कु छोग छ़ेन ग्यीस् ग्येन प ते
भगवान् आपका श्रेष्ठ काय लक्षणों से सुशोभित है

ཁྱོད་ཀྱི་པགས་པ་འཇམ་ཞིང་གསེར་མདོག་འདྲ། །
ख्योद् क्यि पग प जम शिङ सेर दोग ड
आपकी त्वचा कोमल एवं सुवर्ण वर्ण सदृश है

འགྲོ་བ་གཟུགས་འདི་ལྟ་བས་ངོམས་མི་འགྱུར། །
डो व ज़ुग दि त वे ङोम मि ग्युर
प्राणी जितने भी आपके शरीर को देखे तृप्ति नहीं होती

ཁྱོད་ནི་མཚུངས་པ་མ་མཆིས་གཟུགས་དང་ལྡན། །
ख्योद् नि छुङ प म छीस् ज़ुग दङ देन
आप अतुलनीय रूपवान् हैं

ཁྱོད་སྔོན་བསྐལ་པ་བརྒྱར་ནི་དཀའ་ཐུབ་སྤྱད། །
ख्योद् ङोन कल प ग्यर नि का थुप चे
आपने पूर्व में सैंकड़ों कल्प तपस्या किया

ཁྱོད་གཏོང་དུལ་དང་སྦྱིན་པ་ཀུན་ལ་དགྱེས། །
ख्योद् तोङ दुल दङ छिन प कुन ल ग्येस्
आप समस्त त्याग, दम और दान से आनन्दित होते हैं

སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་ཐུགས་རྗེ་བྱམས་ཐུགས་ལྡན། །
सेम चेन कुन ल थुग जे छम थुग देन
समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री और करुणावान् हैं

མཆོག་ཏུ་ཐུགས་རྗེ་ཅན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छोग तु थुग जे चेन ल छग छ़ल लो
ऐसे परम कारूणिक आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

ཁྱོད་ནི་སྦྱིན་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་རྟག་ཏུ་དགྱེས། །
ख्योद् नि छिन दङ छुल ठिम तग तु ग्येस्
आप दान और शील से सदैव हर्षित होते हैं

ཁྱོད་ནི་བཟོད་དང་བརྩོན་འགྲུས་དགྱེས་རབ་བརྟན། །
ख्योद् नि ज़ोद् दङ ज़ोन डुस् ग्येस् रप तेन
क्षान्ति और वीर्य के आनन्द से आप सुदृढ हैं

ཁྱོད་ནི་བསམ་གཏན་ཤེས་རབ་འོད་ཟེར་མངའ། །
ख्योद् नि सम तेन शेस् रप ह़ोद् ज़ेर ङा
आप समाधि, प्रज्ञा के आभा से युक्त हैं

མཚུངས་མེད་ཡེ་ཤེས་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छुङ मेद् ये शेस् ङा ल छग छ़ल लो
ऐसे अद्वितीय ज्ञानी को मैं वन्दना करता हूँ।।

ཁྱོད་ནི་སྨྲ་བ་ངན་པའི་ཚོགས་ཅན་འཇོམས། །
ख्योद् नि म व ङेन पई छ़ोग चेन जोम
आप मिथ्यावादी के समूह को ध्वस्त करते हूँ

ཁྱོད་ནི་སེང་གེ་ལྟ་བུར་འཁོར་དུ་སྒྲོགས། །
ख्योद् नि सेङ गे त बुर खोर दु डोग
आप सिंह-नाद सदृश समूह में दहकते हैं

ཁྱོད་ནི་སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་དྲི་གསུམ་སེལ། །
ख्योद् नि मेन पई ग्यल पो डि सुम सेल
आप वैद्यराज त्रिमल का अन्त करते हैं

མཆོག་ཏུ་དགའ་མཛད་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छोग तु गा ज़े ख्योद् ल छग छ़ल लो
परम प्रीतिकर आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

ཐུབ་པ་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ནི་རྣམ་པར་དག །
थुप प कु सुङ थुग नि नम पर दग
मुनि आपका काय, वाक्, चित्त विशुद्ध है

པདྨ་ཆུ་ལྟར་སྲིད་པ་གསུམ་མི་གོས། །
पेमा छु तर सिद् प सुम मि गोस्
पद्म जल से अलिप्त सदृश त्रिभव से अलिप्त है

ཁྱོད་ནི་ཚངས་དབྱངས་ཀ་ལ་པིངྐའི་སྐད། །
ख्योद् नि छ़ङ यङ क ल पिङ्कई के
आपका ब्रह्मघोष अथवा कलविङ्क सदृश है

སྲིད་གསུམ་ཕ་རོལ་གཤེགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सिद् सुम फ रोल शेग ल छग छ़ल लो
त्रिभव से पार गमन-कर्ता आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

ཁྱོད་ཀྱིས་འགྲོ་འདི་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་དང་། །
ख्योद् क्यीस् डो दि ग्यु म त बु दङ
आपने जगत को माया सदृश

གར་ལ་ལྟ་དང་རྨི་ལམ་འདྲ་བ་དང་། །
गर ल त दङ मि लम ड व दङ
नर्तकी को देखने और स्वप्न सदृश अर्थात्

བདག་མེད་སེམས་ཅན་མེད་ཅིང་སྲོག་འགྲོ་མེད། །
दग मेद् सेम चेन मेद् चिङ सोग डो मेद्
अनात्म, न सत्त्व, न जीव, न गति

ཆོས་རྣམས་སྨིག་རྒྱུ་ཆུ་ཟླ་འདྲ་བར་མཁྱེན། །
छोस् नम मिग ग्यु छु द ड बर ख्येन
समस्त धर्म मरीचि, चन्द्र बिम्ब सदृश जाना है।।

སྟོང་པ་ཞི་བ་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཚུལ། །
तोङ प शि व क्ये व मेद् पई छुल
शून्य, शान्त, अनुत्पाद विधि को

མ་ཤེས་པས་ནི་འགྲོ་བར་འཁྱམས་གྱུར་ཏེ། །
म शेस् पेस् नि डो बर ख्यम ग्युर ते
न जानने वाले जगत में भटकते हैं

ཐུགས་རྗེ་ཐབས་ཚུལ་རིགས་པ་བརྒྱ་དག་གིས། །
थुग जे थप छुल रिग प ग्य दग गीस्
करुणा, उपाय-कौशल्य और सैंकड़ों युक्तियों से

དེ་དག་རྣམས་ནི་འཇུད་པར་མཛད་པ་ལགས། །
दे दग नम नि ज़ुद् पर ज़े प लग
उन्हें उसमें प्रवेश करवाते हैं।।

འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་ནད་མང་བརྒྱ་དག་གིས། །
दोद् छग ल सोग ने मङ ग्य दग गीस्
राग आदि सैंकड़ों अनेक रोगों से

སྐྲག་པར་གྱུར་པའི་འགྲོ་ལ་རྟག་གཟིགས་ཏེ། །
टग पर ग्युर पई डो ल तग ज़िग ते
भयभीत, जगत को सदैव अवलोकन करते

བདེ་གཤེགས་སེམས་ཅན་བརྒྱ་དག་ཡོངས་འགྲོལ་ཞིང་།།
दे शेग सेम चेन ग्य दग योङ डोल शिङ
सुगत सैंकड़ों प्राणियों को परिपूर्ण तारते हैं

ཟླ་མེད་སྨན་པ་ལྟ་བུར་རྣམ་པར་རྒྱུ། །
द मेद् मेन प त बुर नम पर ग्यु
उत्तम वैद्य सदृश विचरण करते हैं

སྐྱེ་དང་རྒ་དང་འཆི་དང་མྱ་ངན་ནོན། །
क्ये दङ ग दङ छि दङ न्य ङेन नोन
जन्म, जरा, मरण और से हत

སྡུག་དང་བྲལ་དང་སྨྲེ་སྔགས་འདོན་པ་བརྒྱུས། །
दुग दङ डल दङ मे ङग दोन प ग्येस्
प्रिय विप्रयोग तथा विलाप परिदेव करने वालों को

ཏག་ཏུ་ན་བའི་སྡུག་བསྔལ་གཟིགས་ནས་ནི། །
तग तु न बई दुग ङल ज़िग नेस् नि
मुनि करुणावश संकट परिमोचन के लिये

ཐུབ་པ་ཐུགས་རྗེས་ཡོངས་སུ་འགྲོལ་ཞིང་རྒྱུ། །
थुप प थुग जेस् योङ सु डोल शिङ ग्यु
विचरण करते हैं।।

དུད་འགྲོ་ཡི་དྭགས་དམྱལ་བའི་འགྲོ་རྣམས་སུ། །
दुद् डो यि दग न्यल बई डो नम सु
तिर्यक् प्रेत एवं नरक योनियों में

འགྲོ་ཀུན་ཤིང་རྟའི་འཕང་ལོ་བཞིན་དུ་འཁོར། །
डो कुन शिङ तई फङ लो शिन दु खोर
समस्त प्राणी रथचक्र सदृश भ्रमण करते

གླེན་པ་དམིགས་བུ་མ་མཆིས་མགོན་མ་མཆིས། །
लेन प मिग बु म छीस् गोन म छीस्
मूढ, अन्धे और अनाथ

དེ་ལ་ལམ་གྱི་དམ་པ་སྟོན་མཛད་པ། །
दे ल लम ग्यि दम प तोन ज़े प
उन्हें (आप) सद्-मार्ग का निर्देशन करते हैं।।

གཙོ་བོ་མཚུངས་པ་མེད་པས་གང་བསྟན་པ། །
त्सो वो छुङ प मेद् पेस् गङ तेन प
अतुलनीय प्रभु, जो देशना करते हैं

འཕགས་ལམ་དེ་ཉིད་གང་དག་སྔོན་ཚད་ཀྱིས། །
फग लम दे ञिद् गङ दग ङोन छे क्यीस्
उस आर्य मार्ग के पूर्ववर्ती

ཆོས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་པ། །
छोस् क्यि वङ छुग डो बई दोन ज़े प
जगत कल्याण-कर्ता धर्मेश्वर

རྒྱལ་བ་དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་རབ་ཏུ་གསུངས། །
ग्यल व दे दग नम क्यीस् रप तु सुङ
जिनों ने प्रवचन किया था।।

འཇམ་ཞིང་མཉེན་ལ་ཡིད་དུ་འོང་བའི་མཆོག །
जम शिङ ञेन ल यिद् दु ह्रोङ बई छोग
आपका वचन कोमल, मृदु, मनोहर,श्रेष्ठ

ཚངས་ལས་ལྷག་པར་མཆོག་ཏུ་དགའ་བསྐྱེད་པ། །
छ़ङ लेस ल्हग पर छोग तु गा ग्यिद् प
ब्रह्म से परम प्रीतिकर

དྲི་ཟ་མི་འམ་ཅི་ལྷའི་བུ་མོ་མཆོག །
डि ज़ मि ह्रम चि ल्हई बु मो छोग
गन्धर्व, किन्नर, अपसराओं के

སྒྲ་དེ་ཟིལ་གྱིས་མནན་ནས་གསུངས་པར་མཛད། །
ड दे ज़िल ग्यीस् मनेन नेस् सुङ पर ज़े
ध्वनि को भी अभिभूत करता है।।

བདེན་དང་དྲང་བ་མི་ཟད་ཐབས་ཚུལ་གྱིས། །
देन दङ डङ व मि ज़े थप छुल ग्यीस्
सत्य, ऋजु, अक्षय उपायों द्वारा

ཡོངས་སྦྱོངས་ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་ལྡན་པའི་གསུང་། །
योङ छङ योन तेन था येस् देन पई सुङ
परिशोधक अनन्त गुणों वाली उपदेश को

དེ་ཐོས་སེམས་ཅན་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་ཕྲག་དག །
दे थोस् सेम चेन ठग ठिग ग्य ठग दग
सुनाकर सैंकड़ों करोड़ों प्राणियों को

ཐེག་པ་གསུམ་གྱིས་ཞི་བར་མཆི་བ་བགྱིད། །
थेग प सुम ग्यीस् शि वर छि व ग्यिद्
त्रियान में आरुढ़ कराकर शान्त कराते हैं।।

ཁྱོད་ལ་མཆོད་པས་ལྷ་ཡི་བདེ་བ་ནི། །
ख्योद् ल छोद् पेस् ल्ह यि दे व नि
आपकी पूजा से (विभिन्न)

རྣམ་པ་མང་དང་དེ་བཞིན་མི་ཡི་འཐོབ། །
नम प मङ दङ दे शिन मि यि थोप
अनेक विध देव-सुख

མི་ཡི་བདག་པོ་འགྲོ་ལ་ཕན་བགྱིད་པ། །
मि यि दग पो डो ल फेन ग्यिद् प
राजा, जगत हितकारी

ཕྱུག་ཅིང་ནོར་ཆེ་འཁོར་པ་ཆེན་པོར་འགྱུར། །
छुग चिङ नोर छे छोर प छेन पोर ग्युर
धनी और सम्पन्न समृद्धी को प्राप्त करेगा।।

མཚུངས་མེད་ཁྱོད་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པས་ནི། །
छुङ मेद् ख्योद् ल दे प क्येद् पेस् नि
अप्रतिम, आपको श्रद्धा करने से

འགྲོ་ལ་དགེ་བ་བཅུ་པོ་ཀུན་བྱེད་པ། །
डो ल गे व चु पो कुन छेद् प
जगत को दश कुशल में प्रवृत्त करेगा

རྒྱལ་བ་ཁྱོད་ལ་མཆོད་པ་བགྱིས་པས་ནི། །
ग्यल व ख्योद् ल छोद् प ग्यीस् पेस् नि
जिन, आपकी आराधना से

ཡོངས་སུ་དགའ་ལྡན་ལྷ་ཡི་བདག་པོ་དང་། །
योङ सु गा देन ल्ह यि दग पो दङ
समस्त देव, तुषित देवाधिपति

འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་རྣམ་མང་སེལ་མཛད་པ། །
डो बई दुग ङल नम मङ सेल ज़े प
जगत के विविध दुःख को हरने वाले

ཐོས་པའང་དེ་ལྟར་འབྲས་བུ་མཆིས་ལགས་ཏེ། །
थोस् पहृङ दे तर डेस् बु छीस् लग ते
श्रवण करने से उक्त फल को प्राप्त करेगा

བཅོམ་ལྡན་ལམ་ལ་མཁས་ཤིང་ལམ་མཁྱེན་པ། །
चोम देन लम ल खेस् शिङ लम ख्येन प
भगवान् मार्ग-विध हैं, मार्ग-ज्ञाता हैं

བཅོམ་ལྡན་འགྲོ་བ་དག་ནི་འཕགས་པའི་ལམ། །
चोम देन डो व दग नि फग पई लम
भगवान् जगत को आर्य मार्ग अर्थात्

བསོད་ནམས་གཏེར་ཁྱོད་བསོད་ནམས་དོན་གཉེར་བའི།།
सोद् नम तेर ख्योद् सोद् नम दोन ञेर बई
आप पुण्यार्थियों के पुण्य-निधि हैं

གླིང་བཞིའི་བདག་པོ་འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་བ་མཆོག །
लिङ शी दग पो खोर लोस् ग्युर व छोग
चार द्वीपों के राजा और चक्रवर्तीराज बनेगा

རིན་ཆེན་རབ་བཟང་བདུན་ལྡན་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
रिन छेन रप ज़ङ दुन देन थोप पर ग्युर
सात शुभ रत्नों को प्राप्त करेगा।।

ཚངས་པ་བརྒྱ་བྱིན་འཇིག་རྟེན་བདག་པོ་དང་། །
छ़ङ प ग्य छिन जिग तेन दग पो दङ
ब्रह्मा, इन्द्र, जगताधिकारी

གཞན་འཕྲུལ་པ་དང་འཐབ་བྲལ་རབ་དགར་འགྱུར། །
शेन ठुल प दङ थप डल रप गर ग्युर
परिनिर्मित और सुयामाधिपति बनेगा।।

མཉམ་མེད་ཁྱོད་ལ་མཆོད་དང་མཐོང་བ་དང་། །
ञम मेद् ख्योद् ल छोद् दङ थोङ व दङ
अतुलनीय आपकी पूजा, दर्शन और

གནས་མཆོག་ཀ་ཤི་མེད་པ་འཐོབ་པར་འགྱུར། །
नेस छोग ग शि मेद् प थोप पर ग्युर
तथा अन्त में निर्जरा अमृत श्रेष्ठ-पद प्राप्त करेगा।।

འཇིག་རྟེན་འདི་ནི་ངན་པའི་ལམ་ལས་བཟློག །
जिग तेन दि नि ङेन पई लम लेस दोग
जगत को दुर्गति कुपथ से निवृत करते हैं।

བདེ་བ་ཞི་བ་རྡུལ་དང་བྲལ་ལ་འགོད། །
दे व शि व दुल दङ डल ल गोद्
सुख, शान्ति और मल रहित पद में प्रविष्ट कराते हैं।।

བསོད་ནམས་བགྱི་བ་རྟག་ཏུ་མི་བས་ཏེ། །
सोद् नम ग्यि व तग तु मि वे ते
गत पुण्य-क्रिया कभी नष्ट नहीं होता है

བྱང་ཆུབ་དམ་པ་མ་ཐོབ་བར་དུ་ནི། །
छङ छुप दम प म थोप बर दु नि
परम बोधि की प्राप्ति तक

བསྐལ་པ་བྱེ་བ་མང་པོར་བས་མི་འགྱུར། །
कल प छे व मङ पोर वे मि ग्युर
बहु कल्प कोटियों में भी (यह) क्षय नहीं होता।।

གཞན་འཕྲུལ་འདྲ་བ་རྟག་ཏུ་དགའ་བགྱི་བ། །
शेन ठुल ड व तग तु गा ग्यि व
परनिर्मित सदृश सदैव प्रीतिकर तथा

ཡོངས་སུ་དག་ཅིང་མཛེས་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
योङ सु दग चिङ ज़ेस् प थोप पर ग्युर
परिशुद्ध रुचिकर का लाभ प्राप्त करेगा।

དམ་པའི་ཞིང་དུ་ལུས་དང་ངག་ཡིད་ཀྱིས། །
दम पई शिङ दु लुस् दङ ङग यिद् क्यीस्
शुद्ध क्षेत्र में काय-वाक् चित्त से

སེམས་ཅན་དག་ནི་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར། །
सेम चेन दग नि नम पर दग पर ग्युर
सभी सत्त्व विशुद्ध होंगे।।

རྒྱལ་བ་མཆོད་པའི་མི་ཡིས་འདི་ལ་སོགས། །
ग्यल व छोद् पई मि यीस् दि ल सोग
जिन आचरण करने वाला व्यक्ति उक्त आदि

ཡོན་ཏན་རྣམ་པ་དུ་མ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
योन तेन नम प दु म थोप पर ग्युर
अनेक विध गुणों को प्राप्त करेगा।

མཐོ་རིས་ཐར་པ་མི་ཡི་བདེ་བ་དང་། །
थो रीस् थर प मि यि दे व दङ
स्वर्ग, मोक्ष मनुष्य का सुख तथा

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་བསོད་ནམས་གཏེར་ཐོབ་འགྱུར། །
डो व कुन ग्यि सोद् नम तेर थोप ग्युर
समस्त जगत के पुण्य-निधि को प्राप्त करेगा।।

ཁྱོད་ཀྱི་བརྗོད་དང་གྲགས་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ། །
ख्योद् क्यि जोद् दङ डग प ग्य छेन पो
तुम्हारा यश और कीर्ति विपुल होगा

ཕྱོགས་རྣམས་ཀུན་གྱི་ཞིང་མང་བརྒྱར་ཡང་མཆིས། །
छोग नम कुन ग्यि शिङ मङ ग्यर यङ छीस्
सभी दश दिशाओं के सैंकड़ों बहु-क्षेत्र में फैलेगा।

རྒྱལ་བ་ཁྱོད་ཀྱི་བསྔགས་པའི་ཕྲེང་བ་ནི། །
ग्यल व ख्योद् क्यि ङग पई ठेङ व नि
जिन, तुम्हारे यश गाथाओं को

བདེ་བར་གཤེགས་རྣམས་འཁོར་དུ་རྟག་པར་སྒྲོགས། །
दे वर शेग नम खोर दु तग पर डोग
सुगतों के पार्षद में भी ध्वनित करेंगे।।

རིམས་ནད་བྲལ་ཞིང་འགྲོ་བ་ཐར་མཛད་པ། །
रिम ने डल शिङ डो व थर ज़े प
विगत ज्वरा जगत को मोक्ष दिलाने वाले

མཐོང་ན་དགའ་བ་ཐུགས་རྗེ་མཆོག་ལྡན་པ། །
थोङ न गा व थुग जे छोग देन प
प्रियदर्शी परम करुणावान्।

བཅོམ་ལྡན་དབང་པོ་ཞི་བ་ཞི་དགེས་པ། །
चोम देन वङ पो शि व शि गेस् प
भगवान् आप शान्तेन्द्रिय शमरत हैं

མི་མཆོག་དམ་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि छोग दम प ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे श्रेष्ठ सद्-पुरुष को मैं वन्दना करता हूँ।।

བདག་གིས་རྒྱལ་བ་ཁྱོད་ཀྱི་གསུང་ཐོས་ནས། །
दग गीस् ग्यल व ख्योद् क्यि सुङ थोस् नेस्
जिन आपके वचनों को सुनकर मैने

དཔའ་བོ་བདེ་གཤེགས་མཚུངས་པར་བདག་གྱུར་ཏེ། །
पा बो दे शेग छुङ पर दग ग्युर ते
वीर सुगत सदृश मैं बन कर

ལྷ་དང་མི་དང་ཀླུས་མཆོད་བདེ་བར་གཤེགས། །
ल्ह दङ मि दङ लुस् छोद् दे वर शेग
देव, मनुष्य वा नागों द्वारा पूजित सुगत

བསོད་ནམས་རྒྱ་ཆེན་གང་བསྒྲུབས་གྱུར་པ་འདིས། །
सोद् नम ग्य छेन गङ डुप ग्युर प दीस्
जो पुण्य मैने अर्जित किया उससे

མངོན་པར་ཤེས་པ་ལྔ་ཐོབ་མཁའ་ལ་གནས། །
ङोन पर शेस् प ङ थोप खा ल नेस
पंचाभिज्ञ प्राप्त कर गगनस्थ होउँ।

དྲི་མེད་ཆོས་ནི་འགྲོ་ལ་རྣམ་པར་དབྱེ། །
डि मेद् छोस् नि डो ल नम पर ये
निर्मल धर्म को मैं जगत को बाँटुं।।

ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་མཐར་ཕྱིན་དེང་བསྟོད་པས། །
योन तेन कुन ग्यि थर छिन देङ तोद् पेस्
समस्त गुणों में पारंगत, आज इनका स्तुति कर।

འགྲོ་བ་སངས་རྒྱས་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་ཤོག །ཅེས་སོ། །
डो व सङ ग्येस् गो फङ थोप पर शोग
समस्त जगत बुद्धत्व को प्राप्त करें।। इति।

སེམས་བརྩེ་མ།

# सूत्रालंकार में आये मैत्रेयनाथ द्वारा बुद्ध-स्तुति

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་བརྩེ་བ་ཅན། །
सेम चेन नम ल ज़्चे व चेन
सत्त्वों के प्रति अनुकम्पा रखने वाले

མི་འབྲལ་བ་ཡི་དགོངས་པ་ཅན། །
मि डल व यि गोङ प चेन
अवियोग आशय वाले

ཐུབ་པ་སྒྲིབ་ཀུན་ངེས་པར་གྲོལ། །
थुप प डिप कुन ङेस् पर डोल
मनि, समस्त आवरणों से विमुक्त हैं

ཁྱོད་ཀྱི་མཁྱེན་པས་ཤེས་བྱ་ཁྱབ། །
ख्योद् क्यि ख्येन पेस् शेस् छ ख्यप
आपका ज्ञान ज्ञेय-व्याप्त है

སེམས་ཅན་དག་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
सेम चेन दग नि थम चे क्यि
समस्त सत्त्वों के सभी

ཉོན་མོངས་འཇོམས་མཛད་ཉོན་མོངས་ལ། །
ञोन मोङ जोम ज़े ञोन मोङ ल
क्लेश प्रहारक, क्लिष्टवानों के प्रति

ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ཆགས་མི་མངའ། །
ल्हुन ग्यीस् डुप चिङ छग मि ङा
निराभोग निरासक्त

ཕྲད་དང་བྲལ་བའི་དགོངས་པ་ཅན། །
ठे दङ डल बई गोङ प चेन
संयोग और वियोग आशय वाले।

ཕན་བདེ་དགོངས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ། །
फेन दे गोङ ख्योद् ल छग ज़्छल
सुख-हिताशय वाले आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཟིལ་གྱིས་གནོན། །
जिग तेन थम चे ज़िल ग्यीस् गनोन
सभी लोकों को अभिभूत करते हैं।

ཐུགས་གྲོལ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
थुग डोल ख्योद् ल छग ज़्छल लो
मुक्त चित्त वाले आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

ཉོན་མོངས་མ་ལུས་ཐམས་ཅད་འདུལ། །
ञोन मोङ म लुस् थम चे दुल
अशेष क्लेशों का सर्व विनाश करने वाले।

བརྩེ་བཅས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़्चे चेस् ख्योद् ल छग ज़्छल लो
करुणा रखने वाले आपको मैं वन्दना करता हूँ।।

ཐོགས་པ་མི་མངའ་རྟག་པར་ནི། །
थोग प मि ङा तग पर नि
निरासंग निरन्तर

མཉམ་པར་གཞག་ཅིང་འདྲི་ཀུན་གྱི། །
ञम पर शग चिङ डि कुन ग्यि
समाहित रहते हुये सभी प्रश्नों का

རྟེན་དང་བརྟེན་པ་བཤད་བྱ་དང་། །
तेन दङ तेन प शे छ दङ
आश्रय, आश्रित, देश्य और

བློ་གྲོས་རྟག་ཐོགས་མི་མངའ་བ། །
लो डोस् तग थोग मि ङा व
सदैव आपका प्रतिभा अप्रतिहत है

གཤེགས་ནས་སྤྱོད་པ་མཁྱེན་མཛད་དེ། །
शेग नेस् चोद् प ख्येन ज़े दे
एक साथ बैठ कर चर्या को जान कर

འོང་དང་འགྲོ་དང་ངེས་འབྱུང་ལ། །
ह़ोङ दङ डो दङ ङेस् छुङ ल
आवागमन और निःसरण का

ལུས་ཅན་ཀུན་གྱིས་ཁྱོད་མཐོང་ན། །
लुस् चेन कुन ग्यीस् ख्योद् थोङ न
देहदारियों द्वारा आपका दर्शन करने पर

མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་རབ་དྭང་བར། །
थोङ व त्ज़म ग्यीस् रप दङ बर
दर्शन मात्र से प्रसन्नता प्रदान करने वाले

ལེན་དང་གནས་དང་གཏོང་བ་དང་། །
लेन दङ नेस दङ तोङ व दङ
जो आदान, स्थिति और त्याग

ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་ཡེ་ཤེས་ལ། །
तिङ ङे ज़िन दङ ये शेस् ल
ध्यान और ज्ञान पर

ལན་སྟོན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लेन दोन ख्योद् ल छग छ़ल लो
उत्तर देने वाले, आपको मेरा प्रणाम है।।

གསུང་དང་མཁྱེན་པ་འཆད་བྱེད་ལ། །
सुङ दङ ख्येन प छे छेद् ल
वचन, ज्ञान एवं व्याख्यान में।

ལེགས་སྟོན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लेग तोन ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे सु-देशना-कर्ता को मेरा प्रणाम है।।

དེ་དག་སྐད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་གྱི། །
दे दग के क्यीस् सेम चेन ग्यि
उन्हीं के भाषाओं में सत्त्वों के

ལེགས་འདོམས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लेग दोम ख्योद् ल छग छ़ल लो
उपदेशक को मेरा प्रणाम है।।

སྐྱེས་བུ་དམ་པ་ལགས་པར་འཚལ། །
क्येस् बु दम प लग पर छ़ल
सद्-पुरुष है- ऐसा अच्छी तरह जानते हैं।

མཛད་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़े प ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे विधायक को मेरा प्रणाम है।।

སྤྲུལ་དང་ཡོངས་སུ་སྒྱུར་བ་དང་། །
टुल दङ योङ सु ग्युर व दङ
निर्माण और परिणामना

མངའ་བརྙེས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ङा ञेस् ख्योद् ल छग छ़ल लो
अधिकार लब्ध हैं, उनको मेरा प्रणाम है।।

ཐབས་དང་སྐྱབས་དང་དག་པ་དང་། །
थप दङ क्योप दङ दग प दङ
उपाय, शरण और शुद्धता

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རབ་བསླུ་བའི། །
सेम चेन नम ल रप लु बई
सत्त्वों के वञ्चन-कर्ता

རང་གཞན་དོན་དུ་ཡེ་ཤེས་དང་། །
रङ शेन दोन दु ये शेस् दङ
स्व-परार्थ ज्ञान को तथा

སྟོན་མཛད་མུ་སྟེགས་གཞན་དག་གིས། །
तोन ज़े मु तेग शेन दग गीस्
उपदेशक अन्य तैर्थिकों से आप।

བསྲུང་མེད་བསྙེལ་བ་མི་མངའ་བ། །
सुङ मेद् ञेल व मि ङा व
निरा-रक्ष, असम्मोषित

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་གཉིས་སྤངས་པ། །
कुन नेस् ञोन मोङ ञीस् पङ प
द्विविध संकलेषों से विवर्जित

ཀུན་མཁྱེན་སྤྱོད་ལ་རྒྱུ་བ་དང་། །
कुन ख्येन ख्योद् ल ग्यु व दङ
सर्वज्ञ आप विचरण करते हों या

ཀུན་མཁྱེན་མིན་སྤྱོད་མི་མངའ་སྟེ། །
कुन ख्येन मिन चोद् मि ङा ते
असर्वज्ञता का चर्या नहीं रहता

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་བྱ་བ་ལ། །
सेम चेन कुन ग्यि छ व ल
सत्त्वार्थ कृत्यों में

ཐེག་ཆེན་ངེས་པར་འབྱུང་བ་ལ། །
थेग छेन ङेस् पर छुङ व ल
महायान के निर्याण में

བདུད་འཇོམས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दुद् जोम ख्योद् ल छग छ़ल लो
मारों को नाश करने वाले, आपको मेरा प्रणाम है।

སྤངས་དང་ངེས་འབྱུང་བགེགས་མཛད་པར། །
पङ दङ ङेस् छुङ गेग ज़े पर
त्याग और निःसरण में बाधा करने वाले

མི་བཟི་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि ज़ि ख्योद् ल छग छ़ल लो
अनवमर्दनीय हैं, आपको मेरा प्रणाम है।।

འཁོར་གྱི་ནང་ན་བག་བརྐྱང་གསུང་། །
खोर ग्यि नङ न बग क्यङ सुङ
पार्षदों के मध्य अप्रभावित वक्ता

འཁོར་སྡུད་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
खोर दुद् ख्योद् ल छग छ़ल लो
गणाकर्षक, आपको मेरा प्रणाम है।।

གནས་པ་ཀུན་ལ་རྟག་པར་ནི། །
नेस प कुन ल तग पर नि
विहार करते हों, कभी भी आपमें।

ཡང་དག་དོན་ལྡན་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །
यङ दग दोन देन ख्योद् छग छ़ल
ऐसे भूतार्थिक को मेरा प्रणाम है।।

ཁྱོད་ནི་དུས་ལས་མི་འདའ་བས། །
ख्योद् नि दुस् लेस मि दा वे
आप समय का उल्लंघन नहीं करते।

མཛད་པ་ཏག་ཏུ་དོན་མངའ་བ། །
ज़े प तग तु दोन ङा व
आपकी समस्त कृत्य अर्थवान् होती है

འཇིག་རྟེན་ཀུན་ལ་ཉིན་མཚན་དུ། །
जिग तेन कुन ल ञिन छेन दु
सदैव जगत में अहोर्निश

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ། །
थुग जे छेन पो दङ देन प
महाकरुणावान्

སྤྱོད་པ་དང་ནི་རྟོགས་པ་དང་། །
चोद् प दङ नि तोग प दङ
आचरण और अधिगम

ཉན་ཐོས་རང་སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི། །
ञेन थोस् रङ सङ ग्येस् कुन ग्यि
समस्त श्रावक और प्रत्येक-बुद्धों के

སྐུ་གསུམ་དག་གི་བྱང་ཆུབ་ཆེ། །
कु सुम दग गि छङ छुप छे
त्रिकायत्म महाबोधि को

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་ཐེ་ཚོམ་དག །
सेम चेन कुन ग्यि थे छ़ोम दग
सत्त्वों के सभी सन्देहों का

འཛིན་པ་མི་མངའ་ཉེས་མི་མངའ། །
ज़िन प मि ङा ञेस् मि ङा
निराग्रह हैं, निर्दोष हैं

མི་གཡོ་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ལ། །
मि गयो छोस् नम थम चे ल
अचल हैं, समस्त धर्मों में

མི་བསྙེལ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मि ञेल ख्योद् ल छग छ़ल लो
ऐसे असम्मोष को मेरा प्रणाम है।।

ལན་དྲུག་ཏུ་ནི་སོ་སོར་གཟིགས། །
लेन डुग तु नि सो सोर ज़िग
षट् कालों में प्रत्यवेक्ष करते हैं।

ཕན་དགོངས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
फेन गोङ ख्योद् ल छग छ़ल लो
कल्याणाशय वाले, आपको मेरा प्रणाम है।।

ཡེ་ཤེས་དང་ནི་ཕྲིན་ལས་ཀྱིས། །
ये शेस् दङ नि ठिन लेस क्यीस्
ज्ञान और कृत्य।

བླ་མ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल म ख्योद् ल छग छ़ल लो
उत्तम गुरु को मेरा प्रणाम है।।

རྣམ་པ་ཀུན་བརྙེས་ཐམས་ཅད་དུ། །
नम प कुन ञेस् थम चे दु
सर्वदा पूर्णतया प्राप्त कर सदैव

གཅོད་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चोद् प ख्योद् ल छग छ़ल लो
उच्छेद करने वाले को मेरा प्रणाम है।।

རྙོག་པ་མི་མངའ་མི་གནས་པ། །
ञोग प मि ङा मि नेस प
निष्कलुषित हैं, अनवस्थित हैं।

སྤྲོས་མེད་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཞེས་སོ། །
टोस् मेद् ख्योद् ल छग छ़ल लो
निष्प्रपञ्चमयी- ऐसे आपको प्रणाम है।। इति।

སྐྱེས་རབས་ཕྱག་འཚལ།

# स्वामी रङ्-जुङ दोर्जे द्वारा संगृहीत शत-जातक वन्दना

ན་མོ་ཤཱཀྱ་མུ་ན་ཡེ། །
नमो शाक्यमुनये
नमो शाक्यमुनये।

ཚོང་དཔོན་གཉིས་དང་རི་བོང་དང་། །
छ़ोङ पोन ञीस् दङ रि बोङ दङ
श्रेष्ठी द्वय, और शश

ཐམས་ཅད་སྒྲོལ་དང་མཆོད་སྦྱིན་བྱེད། །
थम चे डोल दङ छोद् छिन छेद्
विश्वंतर तथा यज्ञ।।

ལེགས་པར་ཕ་རོལ་ཕྱིན་དང་ཉ། །
लेग पर फ रोल छिन दङ ञ
सुपारग और मत्स्य

དཀའ་ཐུབ་ཅན་དང་ཚོང་དཔོན་ནོ། །
का थुप चेन दङ छ़ोङ पोन नो
विस (तपस्वी) और श्रेष्ठी

སྤྲེའུ་རི་དྭགས་ཤ་ར་བྷ། །
टे हु रि दग श र भ
महा-कपि, मृग शरभ

ཚངས་དང་གླང་ཆེན་དེ་དག་བཅུ། །
छ़ङ दङ लङ छेन दे दग चु
ब्रह्म और महा-हस्ति ये दस।।

སྟག་མོ་ཤི་བི་ཀོ་ས་ལ། །
तग मो शिवि कोसल
व्याघ्री, शिवी, कोशल

ཨ་གསྟྱ་དང་ཤ་སྦྱིན་དང་། །
अगस्त्य दङ श छिन दङ
अगस्त्य औस माँस-दान

བརྒྱ་བྱིན་བྲམ་ཟེ་སྨྱོས་བྱེད་མ། །
ग्य छिन डम ज़े न्योस् छेद् म
शक्र, ब्राह्मण, उनमादयन्ती

བྱ་དང་བུམ་པ་ཕྲུག་པོའི་བུ། །
छ दङ बुम प छ्रुग पोइ बु
वर्तकापोतक, कम्भ, अपुत्र

བྱང་ཆུབ་ངང་པ་བྱང་ཆུབ་ཆེ། །
छङ छुप ङङ प छङ छुप छे
चुड्ड-बोधि, हंस महाबोधि

རུ་རུ་སྤྲེལ་རྒྱལ་བཟོད་པ་སྨྲ། །
रु रु टेल ग्यल ज़ोद् प म
रुरु, महाकपि, क्षान्ति

ཟླ་བ་ལྕགས་ཀྱི་ཁྱིམ་དུ་སྐྱེས། །
द व चग क्यि ख्यिम दु क्येस्
सोम, अयोगृहपुत

མ་ཧེ་ཤིང་ཏ་ཡི་དམ་བརྟན། །
म हे शिङ त यि दम तेन
महिष, रथ, धृष्ट प्रतिजान

རིགས་ངན་གྲགས་པའི་འོད་དང་བཅུ། །
रिग ङेन डग पई ह़ोद् दङ चु
अधो-कुल और यशप्रभा ये दस।।

ཀུན་ཏུ་གོ་ཆེད་ཁྱེ་འུ་གཉིས། །
कुन तु गो छेद् ख्ये ह़ु ञीस्
सदा खक्खर बालक द्वय

ཆུ་སྐྱེས་འཇིག་རྟེན་དགའ་དང་བཅུ། །
छु क्येस् जिग तेन गा दङ चु
अम्बुज और लोकानन्द दस।।

ཆུ་འབེབས་དང་ནི་མེ་ལོང་གདོང་། །
छु बेप दङ नि मे लोङ दोङ
मेघ, आदर्शमुख

རྔ་དང་ཆུ་སྲེག་དྲང་སྲོང་བཅུ། །
ङ दङ छु सेग डङ सोङ चु
दुन्दुभी, नागराज और ऋषि ये दस।।

བརྒྱ་བྱིན་བྲམ་ཟེ་གར་མཁན་མོ། །
ग्य छिन डम ज़े गर खेन मो
शक्र, ब्रह्मण नर्त्तकी

སེང་གེ་ཁྱེ་འུ་སྤྲིན་དང་བཅུ། །
सेङ गे ख्ये ह़ु टिन दङ चु
केशरिन्, शिशुऔर मेघ ये दस।।

དེས་པ་དང་ནི་གླང་པོ་ཆེ། །
देस् प दङ नि लङ पो छे
पेशल, महागज

དེད་དཔོན་གསེར་མདོག་ཀུན་དྷ་དང་། །
देद् पोन सेर दोग कुन ध दङ
सारथि, सुवर्ण-वर्ण, कुन्द

ཁྱིམ་བདག་སྒྲོན་སྣང་རི་བོང་དང་། །
ख्यिम दग डोन नङ रि बोङ दङ
गृहपति, दीपाभास, शशक

བརྟན་བྱེད་བདེ་བྱིན་སྙན་པའི་འོད། །
तेन छेद् दे छिन ञेन पई ह़ोद्
धृत्री, सुखदत्त, मधुर प्रभा

ཚངས་སྦྱིན་ཆོས་ཚོལ་ཡེ་ཤེས་ལྡན། །
छ़ङ छिन छोस् छ़ोल ये शेस् देन
ब्रह्मदत्त, धर्मान्वेषी, ज्ञानवान्,

གནག་ལྷས་སྐྱེས་དང་གཞོན་ནུ་དང་། །
गनग ल्हेस् क्येस् दङ शोन नु दङ
गोशालीवत, कुमार

སྙིང་རྗེ་ཅན་གཉིས་སྐར་མ་དང་། །
ञिङ जे चेन ञीस् कर म दङ
कारुणिक द्वय, नक्षत्र

ང་ལས་ནུ་དང་ཀླུ་ཡི་རྒྱལ། །
ङ लेस नु दङ लु यि ग्यल
मन्धाता, नागराज

འོད་ལྡན་བྲམ་ཟེ་རྒྱན་པོ་པ། །
ह़ोद् देन डम ज़े ग्येन पो प
प्रभास, ब्रह्मण, आक्षिक

འཆར་ཀ་ནོར་ཅན་ཟླ་དགའ་དང་། །
छर क नोर चेन द गा दङ
उदयिन, धनिक सोमनन्द

ནམ་མཁའ་དཔལ་གྱི་སྡེ་དང་བཅུ། །
नम खा पल ग्यि दे दङ चु
आकाश, श्रीसेन ये दस।।

ཤི་བི་བྲམ་ཟེ་རྟག་ཏུ་བརྙས། །
शि बि डम ज़े तग तु ञेस्
शिवी, ब्रह्मण, सदापरिभूत

སུ་ཤ་དེ་བ་བསོད་ནམས་སྟོབས། །
सु श दे व सोद् नम तोप
सुशदेव, पुण्यबल,

སྔོ་བསངས་དང་ནི་ཉི་འཕྲེང་སྤོང་། །
ङो सङ दङ नि ञि ठेङ पोङ
श्यामक, सूर्यमालात्यज

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གཉིས་ཏེ་བཅུ། །
छङ छुप सेम पा ञीस् ते चु
बोधिसत्त्व द्वय ये दस।।

བཟོ་དང་རོལ་རྩེད་ངེས་འབྱུང་དང་། །
ज़ो दङ रोल त्सेद् ङेस् छुङ दङ
शिला, विलास-क्रीड़ा, अभिनिष्क्रमण

བྱང་ཆུབ་ཆོས་འཁོར་མྱ་ངན་འདས། །
छङ छुप छोस् खोर न्य ङेन देस्
बोधि (प्राप्ति) धर्मचक्र प्रवर्त्तन, महापरिनिर्वाण आदि

རྒྱལ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल व ख्योद् ल छग छ़ल लो
जिन, आपको मेरी वन्दना है।।

མཛད་པའི་ཡོན་ཏན་མཐར་ཕྱིན་ཤོག །
ज़े पई योन तेन थर छिन शोग
लीलाओं के गुणों को पारंगत करूँ।।

སྙིང་སྟོབས་ཆེན་པོ་ཟླ་འོད་དང་། །
ञिङ तोप छेन पो द ह़ोद् दङ
महासत्त्व, चन्द्रप्रभा

སེང་གེ་དེད་དཔོན་ནོར་བཟང་དང་། །
सेङ गे देद् पोन नोर ज़ङ दङ
सिंह, सार्थवाह, सुधन (मणिभद्र)

འོད་བཟང་དྲང་སྲོང་ཏོག་གི་བློ། །
ह़ोद् ज़ङ डङ सोङ तोग गि लो
सुप्रभा, ऋषि, केतुमति

ཛ་བོང་མུ་ཁྱུད་ཨུཏྤ་ལ། །
ङ बोङ मु ख्युद् उत्प ल
ऊष्ट्रा नेमि, उत्पल

འཕོ་དང་ལྷུམས་ཞུགས་བལྟམས་པ་དང་། །
फो दङ ल्हुम शुग तम प दङ
अवतरण (तुषित से) गर्भ-प्रवेश, जन्म

དཀའ་སྤྱད་དྲུང་གཤེགས་བདུད་སྡེ་བཅོམ། །
का चे डुङ शेग दुद् दे चोम
दुष्करचर्या, (बोधिवृक्ष) समीप गमन, मार समूह का नाश

མཛད་པའི་ཡོན་ཏན་མཐར་ཕྱིན་པའི། །
ज़े पई योन तेन थर छिन पई
लीलाओं के गुणों को पारंगत करने वाले

བདག་ཀྱང་ཁྱོད་ལྟར་གཞན་དོན་དུ། །
दग क्यङ ख्योद् तर शेन दोन दु
मै भी आपके सदृश परार्थ के लिये

མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་ལ་བསྟོད་པ།

# द्वादश लीला-स्तुति

ཐབས་མཁས་ཐུགས་རྗེས་ཤཱཀྱའི་རིགས་སུ་འཁྲུངས། །
थप खेस् थुग जेस् शाक्यई रिग सु ठुङ
उपाय-कौशल तथा करुणावश, शाक्य-कुल में जन्म लिया

གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་བདུད་ཀྱི་དཔུང་འཇོམས་པ། །
शेन ग्यीस् मि थुप दुद् क्यि पुङ जोम प
अन्यों द्वारा अजय, मारों के समूह को नष्ट किया।

གསེར་གྱི་ལྷུན་པོ་ལྟ་བུར་བརྗིད་པའི་སྐུ། །
सेर ग्यि ल्हुन पो त बुर जिद् पई कु
सुवर्ण-गिरि सदृश देदीप्यमान काय वाले

ཤཱཀྱའི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
शाक्यई ग्यल पो ख्योद् ल छग छ़ल लो
शाक्य कुल के राजा, आपको मैं वन्दना करता हूँ।1।

གང་གིས་དང་པོར་བྱང་ཆུབ་ཐུགས་བསྐྱེད་ནས། །
गङ गीस् दङ पोर छङ छुप थुग क्येद् नेस्
जिन्होंने प्रारम्भ में बोधिचित्त को उत्पन्न किया, फिर

བསོད་ནམས་ཡེ་ཤེས་ཚོགས་གཉིས་རྫོགས་མཛད་ཅིང་། །
सोद् नम ये शेस् छ़ोग ञीस् ज़ोग ज़े चिङ
पुण्य एवं ज्ञान-सम्भार-द्वय को पूर्ण करके

དུས་འདིར་མཛད་པ་རྒྱ་ཆེན་འགྲོ་བ་ཡི། །
दुस् दिर ज़े प ग्य छेन डो व यि
इस (कषाय) युग में यहाँ विपुल कृत्यों को कर, जगत के

མགོན་གྱུར་ཁྱོད་ལ་བདག་གིས་བསྟོད་པར་བགྱི། །
गोन ग्युर ख्योद् ल दग गीस् तोद् पर ग्यि
नाथ बनने वाले, आपकी मैं स्तुति करता हूँ।2।

ལྷ་རྣམས་དོན་མཛད་འདུལ་བའི་དུས་མཁྱེན་ནས། །
ल्ह नम दोन ज़े दुल बई दुस् ख्येन नेस्
देवों का अर्थ सम्पन्न कर, जम्बुद्वीप के विनेयजनों को दम्य देख

ལྷ་ལས་བབས་ནས་གླང་ཆེན་ལྟར་གཤེགས་ཤིང་། །
ल्ह लेस बप नेस् लङ छेन तर शेग शिङ
महागज सदृश देवलोक से अवतरित होकर गमन करते हुये।

རིགས་ལ་གཟིགས་ནས་ལྷ་མོ་སྒྱུ་འཕྲུལ་མའི། །
रिग ल ज़िग नेस् ल्ह मो ग्यु ठुल मई
कुल का अवलोकन कर महामाया के

ལྷུམས་སུ་ཞུགས་པར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल्हुम सु शुग पर ज़े ल छग छ़ल लो
गर्भ में प्रवेश करने वाले, आपको मैं वन्दना करता हूँ।3।

ཟླ་བ་བཅུ་རྫོགས་ཤཱཀྱའི་སྲས་པོ་ནི། །
द व चु ज़ोग शाक्यई सेस् पो नि
दस माह पूर्ण कर शाक्य-कुमार के रूप में

བཀྲ་ཤིས་ལུམྦིའི་ཚལ་དུ་བལྟམས་པའི་ཚེ། །
ट शीस् लुम्बी छ़ल दु तम पई छ़े
मंगलमयी लुम्बिनी वन में जब आपने जन्म लिया।

ཚངས་དང་བརྒྱ་བྱིན་གྱིས་བཏུད་མཚན་མཆོག་ནི། །
छङ दङ ग्य छिन ग्यीस् तुद् छेन छोग नि
ब्रह्मा और इन्द्रदेव द्वारा स्तुति किया, जिनका शरीर श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त था

བྱང་ཆུབ་རིགས་སུ་ངེས་མཛད་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छङ छुप रिग सु ङेस् ज़े छग छ़ल लो
जो बोधिकुल में जन्मने को इंगित करती थी- ऐसे बोधि नियत की मैं वन्दना करता हूँ।4।

གཞོན་ནུ་སྟོབས་ལྡན་མི་ཡི་སེང་གེ་དེས། །
शोन नु तोप देन मि यि सेङ गे देस्
कुमार बलवान् नरसिंह द्वारा

ཨཾ་ག་མ་ག་རྡར་ནི་སྒྱུ་རྩལ་བསྟན། །
अं ग म ग धर नि ग्यु त्सल तेन
अंग और मगध में कला प्रदर्शन कर

སྐྱེ་བོ་དྲེགས་པ་ཅན་རྣམས་ཚར་བཅད་ནས། །
क्ये बो डेग प चेन नम छ़र चे नेस्
समस्त अहंकारी पुरुषों को पराजित किया

འགྲན་ཟླ་མེད་པར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
डेन द मेद् पर ज़े ल छग छ़ल लो
ऐसे अद्वितीय हुये, आपकी वन्दना करता हूँ।5।

འཇིག་རྟེན་ཆོས་དང་མཐུན་པར་བྱ་བ་དང་། །
जिग तेन छोस् दङ थुन पर छ व दङ
जगत को धर्मानुरूप चलाने का पाठ सिखाने तथा

ཁ་ན་མ་ཐོ་སྤང་ཕྱིར་བཙུན་མོ་ཡི། །
ख न म थो पङ छिर त्सुन मो यि
भविष्य में आने वाली निन्दा को त्यागने के लिये रानी तथा

འཁོར་དང་ལྡན་མཛད་ཐབས་ལ་མཁས་པ་ཡིས། །
खोर दङ देन ज़े थप ल खेस् प यीस्
पार्षदों के साथ उपाय-कुशलता पूर्वक

རྒྱལ་སྲིད་སྐྱོང་བར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल सिद् क्योङ वर ज़े ल छग छ़ल लो
राजधर्म का पालन करने वाले, आपको मैं वन्दना करता हूँ।6।

འཁོར་བའི་བྱ་བ་སྙིང་པོ་མེད་གཟིགས་ནས། །
खोर बई छ व ञिङ पो मेद् ज़िग नेस्
सांसारिक क्रिया-कलापों में निःसारता को देख

ཁྱིམ་ནས་བྱུང་སྟེ་མཁའ་ལ་གཤེགས་ནས་ཀྱང་། །
ख्यिम नेस् छुङ ते खा ल शेग नेस् क्यङ
गृहत्याग कर आकाश मार्ग से प्रस्थान करके।

མཆོད་རྟེན་རྣམ་དག་དྲུང་དུ་ཉིད་ལ་ཉིད། །
छोद् तेन नम दग डुङ दु ञिद् ल ञिद्
विशुद्ध चैत्य के सामने स्वयं अपने से

རབ་ཏུ་བྱུང་བར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
रप तु छुङ बर ज़े ल छग छ़ल लो
प्रव्रजित होने वाले की मैं वन्दना करता हूँ।7।

བརྩོན་པས་བྱང་ཆུབ་བསྒྲུབ་པར་དགོངས་ནས་ནི། །
त्सोन पेस् छङ छुप डुप पर गोङ नेस् नि
उद्यम कर बोधि प्राप्ति की कामना लिये

ནཻ་རཉྫ་ནའི་འགྲམ་དུ་ལོ་དྲུག་ཏུ། །
नै रञ्ज नई डम दु लो डुग तु
नैरञ्जना नदी के किनारे छह वर्षों तक।

དཀའ་བ་སྤྱད་མཛད་བརྩོན་འགྲུས་མཐར་ཕྱིན་པས། །
का व चे ज़े त्सोन डुस् थर छिन पेस्
कठोर तपस्या द्वारा वीर्य-पारंगत होकर

བསམ་གཏན་མཆོག་བརྙེས་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सम तेन छोग ञेस् ज़े ल छग छ़ल लो
श्रेष्ठ समाधि को लाभ करने वाले, की मैं वन्दना करता हूँ।8।

ཐོག་མ་མེད་ནས་འབད་པ་དོན་ཡོད་ཕྱིར། །
थोग म मेद् नेस् बे प दोन योद् छिर
अनादि से किया गया प्रयास सार्थक हों, अतः

སྐྱིལ་ཀྲུང་མི་གཡོ་མངོན་པར་སངས་རྒྱས་ནས། །
क्यिल टुङ मि गयो ङोन पर सङ ग्येस् नेस्
अभिसंबोधि के लिये अचल वज्रासन लगाकर

ཐུགས་རྗེས་འགྲོ་ལ་མྱུར་དུ་གཟིགས་ནས་ནི། །
थुग जेस् डो ल न्युर दु ज़िग नेस् नि
करुणा द्वारा जगत को त्वरित अवलोकन कर

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་ནས་གདུལ་བྱ་རྣམས། །
छोस् क्यि खोर लो कोर नेस् दुल छ नम
धर्मचक्र प्रवर्त्तन कर विनेयजनों को

གཞན་གྱི་རྒོལ་བ་ངན་པ་ཚར་གཅོད་ཕྱིར། །
शेन ग्यि गोल व ङेन प छ़र चोद् छिर
अन्य वादियों के कुमत को पराजित करने के लिये

འཁོར་མོ་འཇིག་གི་ཡུལ་དུ་བདུད་རྣམས་བཏུལ། །
खोर मो जिग गि युल दु दुद् नम तुल
वाराणसी देश में मारों को दमन किया

སྲིད་པ་གསུམ་ན་དཔེ་མེད་ཡོན་ཏན་གྱིས། །
सिद् प सुम न पे मेद् योन तेन ग्यीस्
त्रिलोक में अपने अतुलनीय गुणों द्वारा

ལྷ་མི་འགྲོ་བ་ཀུན་གྱིས་རབ་མཆོད་པ། །
ल्ह मि डो व कुन ग्यीस् रप छोद् प
समस्त देव और मनुष्यों द्वारा सु-पूजित किया

ལེ་ལོ་ཅན་རྣམས་མྱུར་དུ་བསྐུལ་བྱའི་ཕྱིར། །
ले लो चेन नम न्युर दु कुल छई छिर
आलसियों को त्वरित धर्म में प्रेरित करने के लिये

མ་ག་དྷ་ཡི་བྱང་ཆུབ་ཤིང་དྲུང་དུ། །
म ग ध यि छङ छुप शिङ डुङ दु
मगध में बोधिवृक्ष के नीचे।

བྱང་ཆུབ་རྫོགས་པར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छङ छुप ज़ोग पर ज़े ल छग छ़ल लो
संबोधि को प्राप्त करने वाले की मैं वन्दना करता हूँ।9।

ཝཱ་རཱ་ཎ་སཱི་ལ་སོགས་གནས་མཆོག་ཏུ། །
वा रा ण सा लि सोग नेस छोग तु
वाराणसी आदि उत्तम स्थानों में।

ཐེག་པ་གསུམ་ལ་འགོད་མཛད་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
थेग प सुम ल गोद् ज़े छग छ़ल लो
त्रियान में प्रविष्ट कराने वाले को मैं वन्दना करता हूँ।10।

མུ་སྟེགས་སྟོན་པ་དྲུག་དང་ལྷས་བྱིན་སོགས། །
मु तेग तोन प डुग दङ ल्हेस् छिन सोग
षट् तैर्थिक शास्ता और देवदत्त आदि।

ཐུབ་པ་གཡུལ་ལས་རྒྱལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
थुप प गयुल लेस ग्यल ल छग छ़ल लो
ऐसे विवाद में विजयी को मैं वन्दना करता हूँ।11।।

མཉན་དུ་ཡོད་པར་ཆོ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་བསྟན། །
ञेन दु योद् पर छो ठुल छेन पो तेन
श्रावस्ती में महा-प्रातिहार्य प्रदर्शित करने पर।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
तेन प ग्येस् पर ज़े ल छग छ़ल लो
ऐसे शासन का प्रचार-प्रसार करने वाले को मैं वन्दना करता हूँ।12।

རྩྭ་མཆོག་གྲོང་གི་ས་གཞི་གཙང་མ་རུ། །
ज़्व छोग डोङ गि स शि ज़ङ म रु
कुशीनगर के पवित्र भूमि पर।

འཆི་མེད་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་སྐུ་གཤེགས་ནས། །
छि मेद् दोर जे त बुइ कु शेग नेस्
अमृत वज्र सदृश काय को प्राप्त कर

མྱ་ངན་འདའ་བར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
न्य ङेन दा बर ज़े ल छग छ़ल लो
महापरिनिर्वाण की लीला दिखाने वाले को मैं वन्दना करता हूँ।13।

ཡང་དག་ཉིད་དུ་འཇིག་པ་མེད་ཕྱིར་དང་། །
यङ दग ञिद् दु जिग प मेद् छिर दङ
वास्तव में आप क्षय रहित हैं, तथापि

མ་འོངས་སེམས་ཅན་བསོད་ནམས་འཐོབ་བྱའི་ཕྱིར། །
म ह़ोङ सेम चेन सोद् नम थोप छई छिर
भविष्य सत्त्वों के पुण्य प्राप्त करने हेतु

དེ་ཉིད་དུ་ནི་རིང་བསྲེལ་མང་སྤྲུལ་ནས། །
दे ञिद् दु नि रिङ सेल मङ टुल नेस्
तुरन्त आपने अनेक अस्थियों को विकुर्वित किया

སྐུ་གདུང་ཆ་བརྒྱད་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कु दुङ छ ग्ये ज़े ल छग छ़ल लो
ऐसे अस्थियों को आठ भागों में उपलब्ध कराने वाले, आपको मै वन्दना करता हूँ।14।

ཞེས་པ་འདིའི་ཐོག་མའི་ཤློ་ཀ་གཅིག་པུ་རྗེ་འབྲི་གུང་པས་མཛད་པར་གྲགས་ཤིང་དེ་ཕྱིན་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའོ། །
इसमें मात्र प्रथम श्लोक डी-गुङ् द्वारा रचित है- ऐसा प्रसिद्ध है। शेष आचार्य नागार्जुन कृत हैं।

ཕྱག་འཚལ་བསྡུས་ན།
संक्षेप में वन्दना करने पर-

ཇི་སྙེད་སུ་དག་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་ན། །
जि ञेद् सु दग छोग चुइ जिग तेन न
जितने भी दश-दिशाओं के लोक में

དུས་གསུམ་གཤེགས་པ་མི་ཡི་སེང་གེ་ཀུན། །
दुस् सुम शेग प मि यि सेङ गे कुन
जो त्रिकालगत नरसिंह है, मैं

བདག་གིས་མ་ལུས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ། །
दग गीस् म लुस् दे दग थम चे ल
उन अशेष समस्त (बुद्धों) को

ལུས་དང་ངག་ཡིད་དང་བས་ཕྱག་བགྱི་འོ། །
लुस् दङ ङग यिद् दङ वे छग ग्यि ह़ो
काय, वाक्, चित्त प्रफुल्लित होकर वन्दना करुँगा।1।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་སྟོབས་དག་གིས། །
ज़ङ पो चोद् पई मोन लम तोप दग गीस्
भद्रचर्या प्रणिधान बल से

རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཡིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ། །
ग्यल व थम चे यिद् क्यीस् ङोन सुम दु
समस्त जिनों को मन में अभिमुख कर।

ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་ལུས་རབ་བཏུད་པ་ཡིས། །
शिङ गि दुल ञेद् लुस् रप तुद् प यीस्
क्षेत्र-कण सदृश शरीर प्रमाण से

རྒྱལ་བ་ཀུན་ལ་རབ་ཏུ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཞེས་སོ། །
ग्यल व कुन ल रप तु छग छ़ल लो
सभी जिनों को प्रणाम करुँगा।2। इति।

## དཀོན་མཆོག་ཏ་ལ་ལས་གསུངས་པ།

# रत्नोल्का-धारणी में कथित पूजा

### 12. མཆོད་འབུལ་གྱི་ཡན་ལག །
### 12. पूजार्पण

དེ་ནས་མཆོད་པ་འབུལ་བ་ནི། དཀོན་མཆོག་ཏ་ལ་ལའི་གཟུངས་ལས་གསུངས་པ་བསླབ་བཏུས་སུ་དྲངས་པ་ནི།

रत्नोल्का-धारणि में कथित, जो शिक्षासमुच्चय में उद्धृत है-

མེ་ཏོག་ཕལ་ཆེར་མེ་ཏོག་བླ་རེ་དང་། །
मे तोग फल छेर मे तोग ल रे दङ
विपुल पुष्प एवं पुष्प निर्मित वितान

མེ་ཏོག་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
मे तोग न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
विचित्र पुष्प सभी जगह बिछा कर

མེ་ཏོག་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
मे तोग कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
पुष्प व्युह रश्मि फैलाते हुये तथा

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग ञिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।1।

བདུག་པ་ཕལ་ཆེར་བདུག་པའི་བླ་རེ་དང་། །
दुग प फल छेर दुग पई ल रे दङ
धूप अवतंसक, धूप वितान

བདུག་པ་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
दुग प न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
विविध धूप सभी जगह फैला कर

བདུག་པ་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
दुग प कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
धूप व्यूह रश्मि को प्रमुञ्चित करते हुए

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग ञिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।2।

ཕལ་ཆེར་སྤོས་དང་སྤོས་ཀྱི་བླ་རེ་དང་། །
फल छेर पोस् दङ पोस् क्यि ल रे दङ
नाना गन्ध, गन्ध वितान

སྤོས་ཀྱི་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
पोस् क्यि कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
गन्ध व्युह किरणों को बिखेरते हुये

སྣ་ཚོགས་སྤོས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
न छ़ोग पोस् नम कुन तु टम छेस् शिङ
भिन्न-भिन्न गन्धों को फैलाकर

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग जिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।3।

ཕྲེང་བ་ཕལ་ཆེར་ཕྲེང་བའི་བླ་རེ་དང་། །
ठेङ व फल छेर ठेङ बई ल रे दङ
माला अवतंसक माला निर्मित वितान

ཕྲེང་བ་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
ठेङ व कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
माला व्यूह जो प्रभा को बिखेर रही है।

ཕྲེང་བ་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
ठेङ व न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
विचित्र माला विकीर्ण कर रही

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग जिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।4।

ཕྱེ་མ་ཕལ་ཆེར་ཕྱེ་མའི་བླ་རེ་དང་། །
छे म फल छेर छे मई ल रे दङ
चूर्ण राशि एवं चूर्ण वितान

ཕྱེ་མ་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
छे म कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
चूर्ण व्यूह प्रकाश को प्रेषित करते हुये

ཕྱེ་མ་སྣ་ཚོགས་ཀུན་དུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
छे म न छ़ोग कुन दु टम छेस् शिङ
विविध चूर्णों को विकीर्ण कर

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग जिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।5।

ན་བཟའ་ཕལ་ཆེར་ན་བཟའི་བླ་རེ་དང་། །
न ज़ा फल छेर न ज़ई ल रे दङ
विपुल वस्त्र समूह वस्त्र निर्मित वितान

ན་བཟའ་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
न ज़ा कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
वस्त्र व्यूह रश्मि पुंज को बिखेरते हुये

ན་བཟའ་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
न ज़ा न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
विश्व वस्त्र विकीर्ण करते हुये

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग जिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।6।

ཕལ་ཆེར་གདུགས་དང་གདུགས་ཀྱི་བླ་རེ་དང་། །
फल छेर दुग दङ दुग क्यि ल रे दङ
विपुल छत्र एवं छत्र वितान

གདུགས་ཀྱི་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
दुग क्यि कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
छत्र शिल्प प्रकाश-पुंज को उत्सर्जन करते हुये।

སྣ་ཚོགས་གདུགས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
न छ़ोग दुग नम कुन तु टम छेस् शिङ
विविध छत्र से सजा कर

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग जिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।7।

རིན་ཆེན་ཕལ་ཆེར་རིན་ཆེན་བླ་རེ་དང་། །
रिन छेन फल छेर रिन छेन ल रे दङ
विपुल रत्न-राशि और रत्न निर्मित वितान

རིན་ཆེན་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
रिन छेन कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
रत्न व्यूह रश्मि को प्रमुञ्चित करते हुये।

རིན་ཆེན་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
रिन छेन न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
विभिन्न रत्न समूहों को फैलाकर

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग ञिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।8।

པདྨ་ཕལ་ཆེར་པདྨའི་བླ་རེ་དང་། །
पेमा फल छेर पेमाई ल रे दङ
पद्म अवतंसक पद्म निर्मित वितान

པདྨ་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
पेमा कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
पद्म व्यूह रश्मि प्रमुञ्चित करते हुये।

པདྨ་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
पेमा न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
विचित्र पद्म बिखेरते हुये

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग ञिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।9।

རྒྱན་ཕྲེང་ཕལ་ཆེར་རྒྱན་ཕྲེང་བླ་རེ་དང་། །
ग्येन ठेङ फल छेर ग्येन ठेङ ल रे दङ
विपुल हार-राशि हार वितान

རྒྱན་ཕྲེང་བཀོད་པའི་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་སྟེ། །
ग्येन ठेङ कोद् पई ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये ते
हार व्यूह रश्मि उत्सर्जित करते हुये।

རྒྱན་ཕྲེང་སྣ་ཚོགས་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ་བྱས་ཤིང་། །
ग्येन ठेङ न छ़ोग कुन तु टम छेस् शिङ
नाना हारों को सजा कर

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་དེ་དག་རྒྱལ་བ་མཆོད། །
दग ञिद् छेन पो दे दग ग्यल व छोद्
उससे महात्मा लोग जिनों की पूजा करते हैं।10।

རྒྱལ་མཚན་མཆོག་བཀོད་འོད་ཟེར་རབ་བཀྱེ་ཞིང་། །
ग्यल छ़ेन छोग कोद् ह़ोद् ज़ेर रप बक्ये शिङ
उत्तम ध्वज व्यूह रश्मि उत्सर्जन करते हुये

དེ་དག་རྒྱལ་མཚན་དཀར་དམར་སེར་པོ་དང་། །
दे दग ग्यल छ़ेन कर मर सेर पो दङ
ये ध्वज श्वेत, रक्त, पीला तथा

སྔོ་དང་རྒྱལ་མཚན་བཀོད་པ་སྣ་ཚོགས་པ། །
ङो दङ ग्यल छ़ेन कोद् प न छ़ोग प
नीला और विचित्र शिल्प आकारों में हैं

དུ་མས་རྒྱལ་བའི་ཞིང་རྣམས་བརྒྱན་པར་བྱེད། །
दु मेस ग्यल वई शिङ नम ग्येन पर छेद्
अनेक ध्वजों से बुद्ध क्षेत्र अलंकृत कर।11।

ནོར་བུའི་དྲྭ་བ་སྣ་ཚོགས་བཀོད་པའི་གདུགས། །
नोर बुइ ड◌ॗ व न छ़ोग कोद् पई दुग
मणि-जाल विचित्र व्यूह छत्र

དར་གྱི་ལྡ་ལྡི་བ་དན་རབ་དཔྱངས་ཤིང་། །
दर ग्यि द दि व देन रप चङ शिङ
पट्ट पताका जालों से सुसज्जित

དྲིལ་གཡེར་སྒྲ་བ་རྒྱལ་བའི་གསུང་སྒྲོགས་པ། །
डिल गयेर ड◌ྲ व ग्यल वई सुङ डोग प
किङ्किणी-जाल जिन स्वर घोष करते हुये

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དབུ་ལ་དེ་དག་འཛིན། །
दे शिन शेग पई उ ल दे दग ज़िन
तथागत के शीर्ष के ऊपर उसे धारण कर।12।

ལག་པའི་མཐིལ་ནས་མཆོད་པ་བསམ་ཡས་རྣམས། །
लग पई थिल नेस् छोद् प सम येस् नम
हथेली पर रखे अचिन्त्य पूजा सामग्रियों द्वारा

རྒྱལ་བ་གཅིག་ལ་མཆོད་པ་བྱེད་པ་ལྟར། །
ग्यल व चिग ल छोद् प छेद् प तर
जैसे एक जिन की पूजा करते हैं

རྒྱལ་བ་མ་ལུས་ཀུན་ལའང་དེ་བཞིན་ཏེ། །
ग्यल व म लुस् कुन लह़ङ दे शिन ते
उसी प्रकार समस्त जिनों की पूजा करते हैं

དྲང་སྲོང་ཏིང་འཛིན་རྣམ་འཕྲུལ་དེ་འདྲ་འོ། །
डङ सोङ तिङ ज़िन नम ठुल दे ड ह़ो
यह ऋषि-समाधि द्वारा विकुर्वित अनुत्तर-पूजा है।13।

ཞེས་འབྱུང་།། །།

སྤྱོད་འཇུག་ལས་གསུངས་པ།

# बोधिचर्यावतार में आई पूजा

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་དང་དམ་པའི་ཆོས། །
दे शिन शेग प नम दङ दम पई छोस्
तथागत और सद्धर्म जो

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་རྣམས་ལ་ལེགས་པར་མཆོད། །
योन तेन ग्य छ़ो नम ल लेग पर छोद्
जो गुणों के सागर हैं, पूजा करता हूँ।1।

སྨན་གྱི་རྣམ་པ་གང་དག་ཡོད་པ་དང་། །
मेन ग्यि नम प गङ दग योद् प दङ
जितने भी प्रकार के औषधि हैं

ཆུ་གཙང་ཡིད་དུ་འོང་བ་ཅི་ཡོད་དང་། །
छु ज़ङ यिद् दु ह़ोङ व चि योद् दङ
स्वच्छ एवं मनोरम जितने भी जल हैं

ནགས་ཚལ་ས་ཕྱོགས་དབེན་ཞིང་ཉམས་དགའ་དང་། །
नग छ़ल स छोग वेन शिङ ञम गा दङ
एकान्त में रमणीय वन-खण्ड

ཤིང་གང་འབྲས་བཟང་ཡལ་ག་དུད་པ་དང་། །
शिङ गङ डेस् ज़ङ यल ग दुद् प दङ
लतायें, भद्र फलों से शाखायें झुकी हैं

སྤོས་དང་དཔག་བསམ་ཤིང་དང་རིན་ཆེན་ཤིང་། །
पोस् दङ पग सम शिङ दङ रिन छेन शिङ
धूप और कल्प तरु रत्न वृक्ष हैं

དཀོན་མཆོག་དྲི་མ་མེད་དང་སངས་རྒྱས་སྲས། །
कोन छोग डि म मेद् दङ सङ ग्येस् सेस्
निर्मल रत्न सदृश हैं तथा बुद्ध-पुत्रों को

མེ་ཏོག་འབྲས་བུ་ཇི་སྙེད་ཡོད་པ་དང་། །
मे तोग डेस् बु जि ञेद् योद् प दङ
जितने भी फूल एवं फल हैं

འཇིག་རྟེན་རིན་ཆེན་ཇི་སྙེད་ཡོད་པ་དང་། །
जिग तेन रिन छेन जि ञेद् योद् प दङ
जगत में जितने भी रत्न हैं

རིན་ཆེན་རི་བོ་དང་ནི་དེ་བཞིན་དུ། །
रिन छेन रि बो दङ नि दे शिन दु
रत्नमय पर्वत, उसी प्रकार

ལྗོན་ཤིང་མེ་ཏོག་རྒྱན་སྤྲས་སྤུད་པ་དང་། །
जोन शिङ मे तोग ग्येन टेस् पुद् प दङ
वृक्ष पुष्प रूपी आभरणों से विभुषित

ལྷ་སོགས་འཇིག་རྟེན་ན་ཡང་དྲི་དང་ནི། །
ल्ह सोग जिग तेन न यङ डि दङ नि
देव आदि लोक में भी गन्ध,

མ་རྨོས་འཁྲུངས་པའི་ལོ་ཏོག་རྣམ་པ་དང་། །
म मोस् ठुङ पई लो तोग नम प दङ
विना हल चलाये उत्पन्न फसल और

གཞན་ཡང་མཆོད་པར་འོས་པའི་རྒྱན་རྣམས་ནི། །
शेन यङ छोद् पर ह़ोस् पई ग्येन नम नि
उसके अतिरिक्त पूजा उपयोगी जो अलंकार हैं-

མཚོ་དང་རྫིང་བུ་པདྨས་བརྒྱན་པ་དག །
छ़ो दङ ज़िङ बु पेमोस् ग्येन प दग
सरोवर, तालाब जो पद्म से सुशोभित हैं

ངང་པ་ཤིན་ཏུ་སྐད་སྙན་ཡིད་འོང་ལྡན། །
ङङ प शिन तु के ञेन यिद् ह़ोङ देन
हंस अत्यन्त मनोहर ध्वनि कर रही हैं

ནམ་མཁའ་རབ་འབྱམས་ཁམས་ཀྱི་མཐས་གཏུགས་པ། །
नम खा रप छम खम क्यि थेस् तुग प
आकाश धातु पर्यन्त

ཡོངས་སུ་བཟུང་བ་མེད་པ་དེ་དག་ཀུན། །
योङ सु ज़ुङ व मेद् प दे दग कुन
जो दूसरे के द्वारा परिगृहीत नहीं हैं

བློ་ཡིས་བླངས་ནས་ཐུབ་པ་སྐྱེས་ཀྱི་མཆོག །སྲས་དང་
लो यीस् लङ नेस् थुप प क्येस् क्यि छोग
उनको बुद्धि द्वारा गृहीत कर पुरुष श्रेष्ठ मुनि

བཅས་པ་རྣམས་ལ་ལེགས་འབུལ་ན། །
सेस् दङ चेस् प नम ल लेग बुल न
सहित बोधिसत्त्वों को अर्पित करता हूँ

ཡོན་གནས་དམ་པ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་རྣམས་ཀྱིས། །
योन नेस दम प थुग जे छे नम क्यीस्
दक्षिणा के अनुत्तर पात्र महाकारुणिक आप लोग

བདག་ལ་བརྩེར་དགོངས་བདག་གི་འདི་དག་བཞེས། །
दग ल त्ज़ेर गोङ दग गि दि दग शेस्
मुझ पर कृपा करके मेरे द्वारा अर्पित इसे ग्रहण करें।।

བདག་ནི་བསོད་ནམས་མི་ལྡན་བཀྲེན་ཆེན་ཏེ། །
दग नि सोद् नम मि देन टेन छेन ते
मैं अपुण्यवान् हूँ, महा दरिद्र हूँ

མཆོད་པའི་ནོར་གཞན་བདག་ལ་ཅང་མ་མཆིས། །
छोद् पई नोर शेन दग ल चङ म छीस्
पूजा के लिये मेरे पास अन्य कुछ भी नहीं है।

དེས་ན་གཞན་དོན་དགོངས་པའི་མགོན་གྱིས་འདི། །
देस् न शेन दोन गोङ पई गोन ग्यीस् दि
इसलिये परहित आशयी नाथ, यह

བདག་གི་དོན་སླད་ཉིད་ཀྱི་མཐུས་བཞེས་ཤིག །ཅེས་མཆོད་པ་འབུལ།
दग गि दोन ले ञिद् क्यि थुस् शेस् शिग
मेरे कल्याणार्थ आत्म-बल से स्वीकारें।।

རྒྱལ་དང་དེ་སྲས་རྣམས་ལ་བདག་གིས་ནི། །
ग्यल दङ दे सेस् नम ल दग गीस् नि
बुद्ध और बोधिसत्त्वों को मैं

བདག་གི་ལུས་ཀུན་གཏན་དུ་དབུལ་བར་བགྱི། །
दग गि लुस् कुन तेन दु उल बर ग्यि
अपना सम्पूर्ण शरीर सदा के लिये समर्पित करता हूँ।

སེམས་དཔའ་མཆོག་རྣམས་བདག་ནི་ཡོངས་བཞེས་ཤིག
सेम पा छोग नम दग नि योङ शेस् शिग
सत्त्व-श्रेष्ठ लोग मुझे पूर्णरूप से स्वीकारें

།གུས་པས་ཁྱེད་ཀྱི་འབངས་སུ་མཆི་བར་བགྱི། །
गुस् पेस् ख्येद् क्यि बङ सु छि बर ग्यि
मैं श्रद्धा से आपके दासत्व को स्वीकारता हूँ।।

བདག་ནི་ཁྱེད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བས་ན། །
दग नि ख्येद् क्यीस् योङ सु ज़ुङ वे न
मै आपके द्वारा परिग्रहण करने पर

སྲིད་ན་མི་འཇིགས་སེམས་ཅན་ཕན་པར་བགྱི། །
सिद् न मि जिग सेम चेन फेन पर ग्यि
भव में भय रहित होकर लोकहित करूँगा।

ཐུབ་དབང་མཆོད་གནས་མཆོག་ལ་ཡིད་འོང་བའི། །
थुप वङ छोद् नेस छोग ल यिद् ह़ोङ बई
पूजनीय मुनीन्द्रों को मनोहर

མེ་ཏོག་མནྡཱ་ར་དང་པདྨ་དང་། །
मे तोग मन्दा र दङ पेमा दङ
पुष्प मान्दारव, पद्म और

ཨུཏྤལ་ལ་སོགས་དྲི་ཞིམ་ཐམས་ཅད་དང་། །
उत्पल ल सोग डि शिम थम चे दङ
उत्पल इत्यादि सभी सुगन्धित

ཕྲེང་བ་སྤེལ་ལེགས་ཡིད་འོང་རྣམས་ཀྱིས་མཆོད། །
ठेङ व पेल लेग यिद् ह़ोङ नम क्यीस् छोद्
सुगठित मनोहर मालाओं से पूजा करता हूँ।।

སྤོས་མཆོག་ཡིད་འཕྲོག་དྲི་ངད་ཁྱབ་པ་ཡི། །
पोस् छोग यिद् ठोग डि ङे ख्यप प यि
उत्तम गन्ध मनोहर सुगन्ध से व्याप्त

བདུག་པའི་སྤྲིན་ཚོགས་རྣམས་ཀྱང་དེ་ལ་དབུལ། །
दुग पई टिन छ़ोग नम क्यङ दे ल उल
धूप मेघ समूह को भी आपको अर्पित करता हूँ।

ཞལ་ཟས་བཟའ་བཏུང་སྣ་ཚོགས་བཅས་པ་ཡི། །
शल ज़ेस् ज़ा तुङ न छ़ोग चेस् प यि
खाद्य विविध भोज्य और पेय से युक्त

ལྷ་བཤོས་རྣམས་ཀྱང་དེ་ལ་དབུལ་བར་བགྱི། །
ल्ह शोस् नम क्यङ दे ल उल बर ग्यि
नैवेद्यों को भी अर्पित करता हूँ।।

གསེར་གྱི་པདྨ་ཚར་དུ་དྲང་བ་ཡི། །
सेर ग्यि पेमा छ़र दु डङर व यि
सुवर्ण पद्मों में पंक्तिबद्ध

རིན་ཆེན་སྒྲོན་མེ་རྣམས་ཀྱང་དབུལ་བར་བགྱི། །
रिन छेन डोन मे नम क्यङ उल बर ग्यि
रत्नद्वीप को भी अर्पित करता हूँ।

ས་གཞི་བསྟར་བ་སྤོས་ཀྱིས་བྱུགས་པ་དེར། །
स शि तर व पोस् क्यीस् छुग प देर
समतल भूमि गन्ध लेप किया उसपर

མེ་ཏོག་ཡིད་འོང་སིལ་མ་དགྲམ་པར་བགྱི། །
मे तोग यिद् ह़ोङ सिल म डम पर ग्यि
मनोहर पुष्प बिखेर कर उसे भी अर्पित करता हूँ।।

གཞལ་མེད་ཕོ་བྲང་བསྟོད་དབྱངས་ཡིད་འོང་ལྡན། །
शल मेद् फो डङ तोद् यङ यिद् ह़ोङ देन
विमान प्रसाद मनोहर स्तुति गीतों से गुंजता हुआ

མུ་ཏིག་རིན་ཆེན་རྒྱན་འཕྱང་མཛེས་འབར་བ། །
मु तिग रिन छेन ग्येन छङ ज़ेस् बर व
लटकते मुक्तमणि के हारों से सुशोभित प्रकास करने वाला

དཔག་ཡས་ནམ་མཁའི་རྒྱན་གྱུར་དེ་དག་ཀྱང་། །
पग येस् नम खई ग्येन ग्युर दे दग क्यङ
अपरिमित आकाश युक्त इन्हें भी

ཐུགས་རྗེའི་རང་བཞིན་ཅན་ལ་དབུལ་བར་བགྱི། །
थुग जे रङ शिन चेन ल उल बर ग्यि
करुणा स्वभाव वालों को अर्पित करूँगा।।

རིན་ཆེན་གདུགས་མཛེས་གསེར་གྱི་ཡུ་བ་ཅན། །
रिन छेन दुग ज़ेस् सेर ग्यि यु व चेन
सुवर्णखचित-दंड रूपमनोहर,

དབྱིབས་ལེགས་ལྟ་ན་སྡུག་པ་བསྒྲེང་བ་ཡང་། །
यिप लेग त न दुग प डेङ व यङ
तने हुए, रत्नमय छत्र

དེ་ལས་གཞན་ཡང་མཆོད་པའི་ཚོགས། །
दे लेस शेन यङ छोद् पई छोग
इसके अतिरिक्त पूजा राशि

སེམས་ཅན་སྡུག་བསྔལ་སིམ་བྱེད་པའི། །
सेम चेन दुग ङल सिम छेद् पई
सत्त्वों को दुःख से राहत देने वाली

དམ་ཆོས་དཀོན་མཆོག་ཐམས་ཅད་དང་། །
दम छोस् कोन छोग थम चे दङ
समस्त सद्धर्म धर्म रत्नों,

རིན་ཆེན་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་ཆར། །
रिन छेन मे तोग ल सोग छर
रत्न एवं पुष्पों की वर्षा

ཇི་ལྟར་འཇམ་དབྱངས་ལ་སོགས་པས། །
जि तर जम यङ ल सोग पेस्
जैसे मञ्जुश्री इत्यादि ने

དེ་བཞིན་བདག་གིས་དེ་བཞིན་གཤེགས། །
दे शिन दग गीस् दे शिन शेग
वैसे ही मैं तथागतों.

ཁོར་ཡུག་རྒྱན་གྱི་རྣམ་པ་ཡིད་འོང་བརྒྱན། །
खोर युग ग्येन ग्यि नम प यिद् ह़ोङ ग्येन
मुक्ताजटित, अतिरमणीय,

རྟག་ཏུ་ཐུབ་དབང་རྣམས་ལ་དབུལ་བར་བགྱི། །
तग तु थुप वङ नम ल उल बर ग्यि
महामुनियों के ऊपर धारण कराता हूँ॥

རོལ་མོ་དབྱངས་སྙན་ཡིད་འོང་ལྡན། །
रोल मो यङ ञेन यिद् ह़ोङ देन
मनोहर वाद्य-घोष आदि

སྤྲིན་རྣམས་སོ་སོར་གནས་གྱུར་ཅིག །
टिन नम सो सोर नेस ग्युर चिग
प्रत्येक मेघ सदृश उपस्थित बना रहे।।

མཆོད་རྟེན་རྣམས་དང་སྐུ་གཟུགས་ལ། །
छोद् तेन नम दङ कु ज़ुग ल
चैत्यों और मूर्तियों पर

རྒྱུན་མི་འཆད་པར་འབབ་པར་ཤོག །
ग्युन मि छे पर बप पर शोग
निरन्तर होता रहे।।

རྒྱལ་བ་རྣམས་ལ་མཆོད་མཛད་པ། །
ग्यल व नम ल छोद् ज़े प
बुद्धों की पूजा की

མགོན་པོ་སྲས་དང་བཅས་རྣམས་མཆོད། །
गोन पो सेस् दङ चेस् नम छोद्
नाथों सहित बोधिसत्त्वों की पूजा करता हूँ।।

བསྡུས་པར་བྱེད་ན།
सारांश करना चाहे-

མེ་ཏོག་དམ་པ་ཕྲེང་བ་དམ་པ་དང་། །
मे तोग दम प ठेङ व दम प दङ
उत्तम पुष्प, उत्तम माला

སིལ་སྙན་རྣམས་དང་བྱུག་པ་གདུགས་མཆོག་དང་། །
सिल ञेन नम दङ छुग प दुग छोग दङ
उत्तम वाद्य, लेपन और छत्र।

མར་མེ་མཆོག་དང་བདུག་སྤོས་དམ་པ་ཡིས། །
मर मे छोग दङ दुग पोस् दम प यीस्
उत्तम दीप, धूप, गन्धों के द्वारा

རྒྱལ་བ་དེ་དག་ལ་ནི་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व दे दग ल नि छोद् पर ग्यि
उन समस्त जिनों का पूजा करता हूँ।5।

ན་བཟའ་དམ་པ་རྣམས་དང་དྲི་མཆོག་དང་། །
न ज़ा दम प नम दङ डि छोग दङ
उत्कृष्ट वस्त्र, उत्कृष्ट गन्ध

ཕྱེ་མའི་ཕུར་མ་རི་རབ་མཉམ་པ་དང་། །
छे मई फुर म रि रप ञम प दङ
चूर्ण राशि मेरु समान।

བཀོད་པ་ཁྱད་པར་འཕགས་པའི་མཆོག་ཀུན་གྱིས། །
कोद् प ख्ये पर फग पई छोग कुन ग्यीस्
सर्वोत्तम विशिष्ट एवं भव्य व्यूह द्वारा

རྒྱལ་བ་དེ་དག་ལ་ཡང་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व दे दग ल यङ छोद् पर ग्यि
उन सभी जिनों की पूजा करता हूँ।6।

འདིར་སྤྲོ་ན་སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་ཀྱི་བསྟོད་ཚོགས་གཞན་ཡང་རྒྱས་བསྡུས་སྐབས་དང་སྦྱར་རོ། །
यहाँ इच्छा होने पर बुद्ध-बोधिसत्त्वों के अन्य स्तुति समूह का विस्तार एवं संक्षेप को समयानुसार जोड़ें।

## 13. སྡིག་པ་བཤགས་པའི་ཡན་ལག །

## 13. पाप-प्रायश्चितांग

དེ་ནས་སྡིག་པ་བཤགས་པའི་ཡན་ལག་ནི། ཉེ་བར་འཁོར་གྱིས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས་བྱུང་བའི་ཕུང་པོ་གསུམ་པ་ནི།
तदुपरान्त प्रायश्चित-अंग उपालि परिपृच्छा-सूत्र में आये त्रिसकन्ध पाठ

བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ། སངས་རྒྱས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །ཆོས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །དགེ་འདུན་ལ་
दग मिङ दि शेस् ग्यि व सङ ग्येस् ल क्यप सु छिह़ो छोस् ल क्यप सु छिह़ो गेन दुन ल
**मैं ..अमुक नाम वाला बुद्ध के शरण में जाता हूँ। धर्म के शरण में जाता हूँ।**

སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་
क्यप सु छिह़ो दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल छग
**संघ के शरण में जाता हूँ। तथागत अर्हत् सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि का वन्दना करता हूँ।**

འཚལ་ལོ། །རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོས་རབ་ཏུ་འཇོམས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །རིན་ཆེན་འོད་འཕྲོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छ़ल लो दोर जे ञिङ पोस् रप तु जोम प ल छग छ़ल लो रिन छेन ह़ोद् ठो ल छग छ़ल लो
**वज्रगर्भ प्रमर्दिन को वन्दना करता हूँ। रत्नार्चिष को वन्दना करता हूँ।**

ཀླུ་དབང་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དཔའ་བོའི་སྡེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དཔལ་དགྱེས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लु वङ गि ग्यल पो ल छग छ़ल लो पा बोइ दे ल छग छ़ल लो पल ग्येस् ल छग छ़ल लो
**नागेश्वर-राज को वन्दना करता हूँ। वीरसेन को वन्दना करता हूँ। वीर नन्दिन को वन्दना करता हूँ।**

རིན་ཆེན་མེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །རིན་ཆེན་ཟླ་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཐོང་བ་དོན་ཡོད་ལ་ཕྱག་
रिन छेन मे ल छग छ़ल लो रिन छेन द ह़ोद् ल छग छ़ल लो थोङ व दोन योद् ल छग छ़ल
**रत्नाग्नि को वन्दना करता हूँ। रत्नचन्द्र को वन्दना करता हूँ। अमोघ दर्शिन् को वन्दना करता हूँ।**

འཚལ་ལོ། །རིན་ཆེན་ཟླ་བ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དྲི་མ་མེད་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དཔལ་བྱིན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लो   रिन छेन द व ल छग छ़ल लो   डि म मेद् प ल छग छ़ल लो   पल छिन ल छग छ़ल लो
विमल को वन्दना करता हूँ। शूरदत्त को वन्दना करता हूँ।

ཚངས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཚངས་པས་བྱིན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཆུ་ལྷ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཆུ་ལྷའི་ལྷ་
छ़ङ प ल छग छ़ल लो   छ़ङ पेस् छिन ल छग छ़ल लो   छु ल्ह ल छग छ़ल लो   छु ल्हई ल्ह
ब्रह्मा को वन्दना करता हूँ। ब्रह्मदत्त को वन्दना करता हूँ। वरुण को वन्दना करता हूँ।

ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དཔལ་བཟང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཙན་དན་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །གཟི་བརྗིད་མཐའ་ཡས་
ल छग छ़ल लो   पल ज़ङ ल छग छ़ल लो   त्ज़ेन देन पल ल छग छ़ल लो   ज़ि जिद् था येस् ल
वरुणदेव को वन्दना करता हूँ। भद्रश्री को वन्दना करता हूँ। चन्दनश्री को वन्दना करता हूँ। अनन्तौजस् को

ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །འོད་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མྱ་ངན་མེད་པའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སྲེད་མེད་
छग छ़ल लो   ह़ोद् पल ल छग छ़ल लो   न्य ङेन मेद् पई पल ल छग छ़ल लो   सेद् मेद् क्यि
वन्दना करता हूँ। प्रभासश्री को वन्दना करता हूँ। अशोकश्री को वन्दना करता हूँ।

ཀྱི་བུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མེ་ཏོག་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚངས་པའི་འོད་ཟེར་རྣམ་པར་
बु ल छग छ़ल लो   मे तोग पल ल छग छ़ल लो   दे शिन शेग प छ़ङ पई ह़ोद् ज़ेर नम पर रोल
नारायण को वन्दना करता हूँ। कुसुमश्री को वन्दना करता हूँ। तथागत ब्रह्मज्योति

རོལ་པ་མངོན་པར་མཁྱེན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་པདྨའི་འོད་ཟེར་རྣམ་པར་རོལ་པ་མངོན་
प ङोन पर ख्येन प ल छग छ़ल लो   दे शिन शेग प पेमाई ह़ोद् ज़ेर नम पर रोल प ङोन पर
विक्रीड़िताभिज्ञ को वन्दना करता हूँ। तथागत पद्मज्योति विक्रीड़िताभिज्ञ

པར་མཁྱེན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ནོར་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དྲན་པའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཚན་
ख्येन प ल छग छ़ल लो   नोर पल ल छग छ़ल लो   डेन पई पल ल छग छ़ल लो   छ़ेन पल
को वन्दना करता हूँ। धनश्री को वन्दना करता हूँ। स्मृतिश्री को वन्दना करता हूँ।

དཔལ་ཤིན་ཏུ་ཡོངས་གྲགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དབང་པོ་ཏོག་གི་རྒྱལ་མཚན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
शिन तु योङ डग ल छग छ़ल लो   वङ पो तोग गि ग्यल छ़ेन ग्यि ग्यल पो ल छग छ़ल लो
सुपरिकीर्तितनामधेयश्री को वन्दना करता हूँ। इन्द्रकेतुध्वजराज को वन्दना करता हूँ।

ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་གནོན་པའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །གཡུལ་ལས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
शिन तु नम पर गनोन पई पल ल छग छ़ल लो   युल लेस शिन तु नम पर ग्यल व ल छग छ़ल लो
सुविक्रान्तश्री को वन्दना करता हूँ। सुविजितसंग्राम को वन्दना करता हूँ।

རྣམ་པར་གནོན་པས་གཤེགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཀུན་ནས་སྣང་བ་བཀོད་པའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नम पर गनोन पेस् शेग प ल छग छ़ल लो   कुन नेस् नङ व कोद् पई पल ल छग छ़ल लो
**विक्रान्तगामिन को वन्दना करता हूँ। समन्तावभासव्यूहश्री को वन्दना करता हूँ।**

རིན་ཆེན་པདྨས་རྣམ་པར་གནོན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་
रिन छेन पेमोस् नम पर गनोन प ल छग छ़ल लो   दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग
**रत्नपद्म-विक्रामिन् को वन्दना करता हूँ। तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध**

པའི་སངས་རྒྱས་རིན་པོ་ཆེའི་པདྨ་ལ་རབ་ཏུ་བཞུགས་པ་རི་དབང་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
पई सङ ग्येस् रिन पो छे पेमा ल रप तु शुग प रि वङ गि ग्यल पो ल छग छ़ल लो
**रत्नपद्मसुप्रतिष्ठितशैलेन्द्र-राज को वन्दना करता हूँ।**

དེ་དག་ལ་སོགས་པ་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་
दे दग ल सोग प छ्योग चुइ जिग तेन ग्यि खम थम चे न दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग
**आप सभी तथागत दशों दिशाओं के समस्त लोकधातुओं में**

པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་གང་ཇི་སྙེད་ཅིག་བཞུགས་ཏེ་འཚོ་ཞིང་གཞེས་པའི་སངས་རྒྱས་
पर ज़ोग पई सङ ग्येस् चोम देन देस् गङ जि ञेद् चिग शुग ते छ़ो शिङ शेस् पई सङ ग्येस् चोम
**जितने भी तथागत, अर्हत्, सम्यग् सम्बुद्ध विराजमान हैं, जीवनयापन कर रहे हैं,**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ།
देन देस् दे दग थम चे दग ल गोङ सु सोल
**आप सभी भगवान् बुद्ध मेरी ओर ध्यान दें।**

བདག་གིས་སྐྱེ་བ་འདི་དང་། སྐྱེ་བ་ཐོག་མ་དང་མཐའ་མ་མ་མཆིས་པ་ནས། འཁོར་བ་ན་འཁོར་བའི་སྐྱེ་བ་
दग गीस् क्ये व दि दङ   क्ये व थोग म दङ था म म छीस् प नेस्   खोर व न खोर बई क्ये व
**मेरे द्वारा वर्तमान जन्म और आद्यान्त जन्मों में संसारचक्र में संसरण करते समय अन्य**

གཞན་དག་ཏུ་སྡིག་པའི་ལས་བགྱིས་པ་དང་། བགྱིད་དུ་སྩལ་བ་དང་། བགྱིས་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའམ།
शेन दग तु दिग पई लेस ग्यीस् प दङ   ग्यिद् दु त्ऱल व दङ   ग्यीस् प ल जेस् सु यि रङ बह़म
**जन्मों में पाप किये हों, कराये गये हों, किये गये का अनुमोदन किये हों,**

མཆོད་རྟེན་གྱི་དཀོར་རམ། དགེ་འདུན་གྱི་དཀོར་རམ། ཕྱོགས་བཞིའི་དགེ་འདུན་གྱི་དཀོར་འཕྲོགས་པ་དང་།
छोद् तेन ग्यि कोर रम   गेन दुन ग्यि कोर रम   छोग शी गेन दुन ग्यि कोर ठोग प दङ
**स्तूप का धन, संघ का धन या चारों दिशाओं के संघ का धन अपहरण किया है,**

འཕྲོག་ཏུ་སྩལ་བའམ། འཕྲོག་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའམ། མཚམས་མ་མཆིས་པ་ལྔའི་ལས་བགྱིས་པ་དང་།
ठोग तु ज़ल पह्म ठोग प ल जेस् सु यि रङ बह्म छम म छीस् प ङई लेस ग्यीस् प दङ
अपहरण कराया गया हो, अपहरण किये जाने पर उसका अनुमोदन किया हो,

བགྱིད་དུ་སྩལ་བ་དང་། བགྱིས་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའམ། མི་དགེ་བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལམ་ཡང་དག་པར་
ग्यिद् दु ज़ल व दङ ग्यीस् प ल जेस् सु यि रङ बह्म मि गे व चुइ लेस क्यि लम यङ दग पर
अथवा पंच आनन्तर्य कर्म किया हो, कराया गया हो, किये जाने पर उसका

བླང་བ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། འཇུག་ཏུ་སྩལ་བ་དང་། འཇུག་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའམ། ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་
लङ व ल शुग प दङ जुग तु ज़ल व दङ जुग प ल जेस् सु यि रङ बह्म लेस क्यि डिप प
अनुमोदन किया हो, अथवा दशाकुशल कर्मों के पथ का सम्यग् ग्रहण किया हो,

གང་གིས་བསྒྲིབས་ནས། བདག་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་མཆི་བའམ། དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་སུ་མཆི་བའམ། ཡི་དྭགས་
गङ गीस् डिप नेस् दग सेम चेन न्यल बर छि बह्म दुद् डोइ क्ये नेस सु छि बह्म यि दग
करने दिया हो, करने वाले का अनुमोदन किया हो, अथवा ऐसे कर्मावरण जिससे आवृत होकर मेरा नरक गति

ཀྱི་ཡུལ་དུ་མཆི་བའམ། ཡུལ་མཐའ་འཁོབ་ཏུ་སྐྱེ་བའམ། ཀླ་ཀློར་སྐྱེ་བའམ། ལྷ་ཚེ་རིང་པོ་རྣམས་སུ་
क्यि युल दु छि बह्म युल था खोप तु क्ये बह्म ल लोर क्ये बह्म ल्ह छे रिङ पो नम सु
हो, तिर्यक् गति हो, प्रेत गति हो, प्रत्यन्त देश में पैदा होउँ, म्लेच्छ में जन्म लेउँ, दीर्घायुवाले देव में

སྐྱེ་བའམ། དབང་པོ་མ་ཚང་བར་འགྱུར་བའམ། ལྟ་བ་ལོག་པར་འཛིན་པར་འགྱུར་བའམ།
क्ये बह्म वङ पो म छङ बर ग्युर वह्म त व लोग पर ज़िन पर ग्युर बह्म
उत्पन्न होउँ, अपूर्ण इन्द्रिय वाला बनूँ, अथवा बुद्ध के प्रादुर्भाव पर हर्षित नहीं होने वाला

སངས་རྒྱས་འབྱུང་བ་ལ་མཉེས་པར་མི་བགྱིད་པར་འགྱུར་བའི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་གང་ལགས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་
सङ ग्येस् छुङ व ल ञेस् पर मि ग्यिद् पर ग्युर बई लेस क्यि डिप प गङ लग प दे दग थम चे
बनूँ- ऐसे सभी कर्मावरण जितने भी हों वे सभी

སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡེ་ཤེས་སུ་གྱུར་པ། སྤྱན་དུ་གྱུར་པ། དཔང་དུ་གྱུར་པ། ཚད་མར་གྱུར་པ།
सङ ग्येस् चोम देन देस् ये शेस् सु ग्युर प चेन दु ग्युर प पङ दु ग्युर प छे मर ग्युर प
बुद्ध भगवान् जो ज्ञानभूत हैं, साक्षीभूत हैं, चक्षुभूत हैं, प्रमाणभूत हैं,

མཁྱེན་པས་གཟིགས་པ། དེ་དག་གི་སྤྱན་སྔར་མཐོལ་ལོ། །འཆགས་སོ། །
ख्येन पेस् ज़िग प दे दग गि चेन ङर थोल लो छग सो
ज्ञाता हैं, द्रष्टा हैं- उनके समक्ष प्रतिदेशना करता हूँ। प्रकट करता हूँ।

མི་འཆབ་བོ། །སླན་ཆད་ཀྱང་སྡོམ་པར་བགྱིད་ལགས་སོ། །
मि छप बो  लेन छे क्यङ दोम पर ग्यिद् लग सो
**गुप्त नहीं रखूँगा। भविष्य में न करने की प्रतिज्ञा करता हूँ।**

སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། བདག་གིས་སྐྱེ་བ་འདི་དང་སྐྱེ་བ་ཐོག་མ་དང་
सङ ग्येस् चोम देन देस् दे दग दग ल गोङ सु सोल  दग गीस् क्ये व दि दङ क्ये व थोग म दङ
**आप सभी भगवान् बुद्ध मेरी ओर ध्यान दें। मैने इस जन्म और आद्यान्त**

མཐའ་མ་མ་མཆིས་པ་ནས། འཁོར་བ་ན་འཁོར་བའི་སྐྱེ་བ་གཞན་དག་ཏུ་སྦྱིན་པ་ཐ་ན་དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་སུ་
था म म छीस् प नेस्  खोर व न खोर बई क्ये व शेन दग तु छिन प थ न दुद् डोइ क्ये नेस सु
**रहित दूसरे जन्मों में संसार में संसरण करते समय दान में छोटे से छोटा पशु**

སྐྱེས་པ་ལ་ཟས་ཁམ་གཅིག་ཙམ་སྩལ་བ་གང་ལགས་པ་དང་། བདག་གིས་ཚུལ་ཁྲིམས་བསྲུངས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་
क्येस् प ल ज़ेस् खम चिग त्सम त्सल व गङ लग प दङ  दग गीस् छुल ठिम सुङ पई गे बई त्स व
**योनि में जन्म लिये को एक कौर मात्र भोजन दिया हो, मेरे द्वारा शील पालन से प्राप्त**

གང་ལགས་པ་དང་། བདག་གིས་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་ལ་གནས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་གང་ལགས་པ་དང་། བདག་གིས་
गङ लग प दङ  दग गीस् छ़ङ पर चोद् प ल नेस पई गे बई त्स व गङ लग प दङ  दग गीस्
**कुशलमूल जो भी हो, ब्रह्मचर्यावास से कुशलमूल जो भी अर्जित किया हो, मेरे द्वारा**

སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བགྱིས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་གང་ལགས་པ་དང་། བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་
सेम चेन योङ सु मिन पर ग्यीस् पई गे बई त्स व गङ लग प दङ  दग गीस् छङ छुप क्यि सेम
**सत्त्व परिपक्व कर जो कुशलमूल अर्जित हों, मेरे द्वारा जो बोधिसत्त्वकुशलमूल हों,**

ཀྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་གང་ལགས་པ་དང་། བདག་གིས་བླ་ན་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་གང་ལགས་པ་དེ་
क्यि गे बई त्स व गङ लग प दङ  दग गीस् ल न मेद् पई ये शेस् क्यि गे बई त्स व गङ लग प दे
**मेरे द्वारा अर्जित अनुत्तर ज्ञान का जो भी कुशलमूल हों,**

དག་ཐམས་ཅད་གཅིག་ཏུ་བསྡུས་ཤིང་བཟླུམས་ཏེ་བསྡོམས་ནས་བླ་ན་མ་མཆིས་པ་དང་།
दग थम चे चिग तु बदुस् शिङ दुम ते बदोम नेस् ल न म छीस् प दङ
**वे सभी एकत्रित कर, संगठित कर, जोड़कर अनुत्तर,**

གོང་ན་མ་མཆིས་པ་དང་། གོང་མའི་ཡང་གོང་མར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བས།
गोङ न म छीस् प दङ  गोङ मई यङ गोङ मर योङ सु ङो वे
**अति-उत्तरोत्तरोत्तर एवं अनुत्तर**

བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप तु योङ सु ङो बर ग्यिहो
सम्यग् सम्बोधि में परिणामणा करता हूँ।

ཇི་ལྟར་འདས་པའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྔོས་པ་དང་།
जि तर देस् पई सङ ग्येस् चोम देन देस् नम क्यीस् योङ सु ङोस् प दङ
जैसे पूर्व के भगवान् बुद्धों ने परिणामना किया था,

ཇི་ལྟར་མ་འོངས་པའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་འགྱུར་བ་དང་།
जि तर म ह़ोङ पई सङ ग्येस् चोम देन देस् नम क्यीस् योङ सु ङो बर ग्युर व दङ
जैसे भविष्य के भगवान् बुद्धों द्वारा परिणामना होगा

ཇི་ལྟར་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ད་ལྟར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་མཛད་པ་དེ་ལྟར་བདག་གིས་
जि तर द तर छुङ बई सङ ग्येस् चोम देन देस् नम द तर योङ सु ङो बर ज़े प दे तर दग गीस्
तथा जैसे वर्तमान के भगवान् बुद्धों द्वारा सम्प्रति में परिणामना करते हैं, वैसा मैं भी

ཀྱང་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
क्यङ योङ सु ङो बर ग्यिहो
परिणामना करता हूँ।

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་བཤགས་སོ། །བསོད་ནམས་ཀྱི་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་། །
दिग प थम चे शग सो    सोद् नम क्यि जेस् सु यि रङ ङो
समस्त पापों को प्रायश्चित करूँगा, पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ,

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་གསོལ་བ་འདེབས་སོ། །
सङ ग्येस् थम चे ल सोल व देप सो
सभी बुद्धों से अभ्यर्थना करता हूँ-

བདག་གིས་ཡེ་ཤེས་བླ་ན་མེད་པའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
दग गीस् ये शेस् ल न मेद् पई छोग तु ग्युर चिग
मेरा ज्ञान अनुत्तर एवं श्रेष्ठ हों।

མི་མཆོག་རྒྱལ་བ་གང་དག་ད་ལྟར་བཞུགས་པ་དང་། །
मि छोग ग्यल व गङ दग द तर शुग प दङ
मनुष्यों में उत्तम वर्तमान जिन जहाँ कहीं भी निवास कर रहे हों,

གང་དག་འདས་པ་དག་དང་དེ་བཞིན་གང་མ་བྱོན། །
गङ दग देस् प दग दङ दे शिन गङ म छोन
**तथैव जो भी भूत और भविष्य में आने वाले हैं,**

ཡོན་ཏན་བསྔགས་པ་མཐའ་ཡས་རྒྱ་མཚོ་འདྲ་ཀུན་ལ། །
योन तेन ङग प था येस् ग्य छ़ो ड कुन ल
**अनन्त सागर सदृश गुण वालों का प्रशंसा करता हूँ।**

ཐལ་མོ་སྦྱར་བར་བགྱིས་ཏེ་སྐྱབས་སུ་ཉེ་བར་མཆིའོ། །ཞེས་སོ།། །།
थल मो छर बर ग्यीस् ते क्यप सु ञे वर छिह़ो
**दोनों अञ्जलि जोड़कर उपशमनगमन करता हूँ।** इति।

## གསེར་འོད་དམ་པའི་མདོ་ལས་གསུངས་པའི་བཤགས་པ།

# सुवर्णप्रभा मे कथित प्रायश्चित

སངས་རྒྱས་རྐང་གཉིས་དམ་པ་དག །
सङ ग्येस् कङ ञीस् दम प दग
द्विपादों में उत्तम

ཐུགས་བརྩེ་ཐུགས་རྗེ་ལྡན་པའི་ཐུགས། །
थुग त्ज़े थुग जे देन पई थुग
कृपा और करुणा चित्त वाले।

གང་དག་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་ན། །
गङ दग छोग चुइ जिग तेन न
जो दश दिशाओं के लोक में

བཞུགས་པ་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། །
शुग प दग ल गोङ सु सोल
अवस्थित हैं, मुझे ध्यान दें।1।

བདག་གིས་སྔོན་ཆད་སྡིག་པའི་ལས། །
दग गीस् ङोन छे दिग पई लेस
मैंने पूर्व में पाप कर्मों को

ཤིན་ཏུ་མི་བཟད་གང་བགྱིས་པ། །
शिन तु मि ज़े गङ ग्यीस् प
जो अति असह्य कृत्य हैं, किया है।

སྟོབས་བཅུའི་སྤྱན་སྔར་མཆིས་ནས་ནི། །
तोप चुइ चेन ङर छीस् नेस् नि
दशबली के सम्मुख आकर

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཤགས་པར་བགྱི། །
दे दग थम चे शग पर ग्यि
उन सबका प्रायश्चित करता हूँ।2।

ཕ་མ་དག་ཏུ་མི་འཛིན་དང་། །
फ म दग तु मि ज़िन दङ
माता-पिता को सम्मान न देकर

སངས་རྒྱས་རྣམས་སུ་མི་འཛིན་དང་། །
सङ ग्येस् नम सु मि ज़िन दङ
बुद्ध को विश्वास न करके।

དགེ་བ་དག་ཏུ་མི་འཛིན་པས། །
गे व दग तु मि ज़िन पेस्
कुशल को ग्रहण न कर

སྡིག་པ་བདག་གིས་གང་བགྱིས་དང་། །
दिग प दग गीस् गङ ग्यीस् दङ
जो पाप मेरे द्वारा सम्पन्न हुआ।3।

ཕྱུག་པའི་རྒྱགས་པས་རྡེགས་པ་དང་། །
छुग पई ग्यग पेस् डेग प दङ
ऐश्वर्य मद से मस्त होकर

རིགས་དང་ལོངས་སྤྱོད་རྒྱགས་པ་དང་། །
रिग दङ लोङ चोद् ग्यग प दङ
कुल और सम्पत्ति के अहंकार से तथा।

གཞོན་པའི་རྒྱགས་པས་དྲེགས་པ་ཡིས། །
शोन पई ग्यग पेस् डेग प यीस्
कुमार-मद से मस्त होकर

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་དང་། །
दग गीस् दिग प गङ ग्यीस् दङ
जो पाप मैने किया है।4।

ཉེས་པའི་དམིགས་སུ་མ་མཐོང་བས། །
ञेस् पई मिग सु म थोङ वे
दोष को दोष न देख कर

ཉེས་པར་བགྱིས་པའི་ལས་རྣམས་དང་། །
ञेस् पर ग्यीस् पई लेस नम दङ
दुष्ट-कृत्यों को करके तथा

ཉེས་པར་བསམ་ཞིང་ཉེས་སྨྲས་པའི། །
ञेस् पर सम शिङ ञेस् मेस् पई
धुर्त का चिन्तन कर गलत बोल

སྡིག་ལས་བདག་གིས་གང་བགྱིས་དང་། །
दिग लेस दग गीस् गङ ग्यीस् दङ
जो पाप मैने किया है।5।

བྱིས་པའི་བློ་ཡིས་འཇུག་པ་དང་། །
छीस् पई लो यीस् जुग प दङ
बाल बुद्धि में प्रवृत्त होकर

མི་ཤེས་མུན་པའི་སེམས་དང་ནི། །
मि शेस् मुन पई सेम दङ नि
अज्ञान से आवृत चित्त द्वारा।

སྡིག་པའི་གྲོགས་པོའི་དབང་གྱུར་དང་། །
दिग पई डोग पोइ वङ ग्युर दङ
पापी मित्र के प्रभाव में आकर

ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འཁྲུག་སེམས་དང་། །
ञोन मोङ नम पर ठुग सेम दङ
क्लिष्ट और व्याकुल चित्त से।6।

རྩེད་མོར་དགའ་བའི་དབང་ཉིད་དང་། །
ज़ेद् मोर गा बई वङ ञिद् दङ
क्रीड़ा-रति के वश में आकर

མྱ་ངན་དང་ནི་ནད་དབང་དང་། །
न्य ङेन दङ नि ने वङ दङ
शोक-रोग के प्रभाव से

ནོར་གྱིས་མི་ཚོག་ཉེས་པ་ཡིས། །
नोर ग्यीस् मि छोग ञेस् प यीस्
अतृप्त-धन दोष द्वारा

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་དང་། །
दग गीस् दिग प गङ ग्यीस् दङ
मैंने जो पाप किये हों।7।

འཕགས་མིན་སྐྱེ་བོ་འདྲེ་བ་དང་། །
फग मिन क्ये बो डे व दङ
अनार्य जन के संसर्ग से

ཕྲག་དོག་སེར་སྣ་སྒྱུ་དང་ནི། །
ठग दोग सेर न ग्यु दङ नि
ईर्ष्या, मात्सर्य और वञ्चन

གཡོ་དང་དབུལ་བའི་ཉེས་པ་ཡིས། །
गयो दङ उल बई ञेस् प यीस्
शाठ्य तथा दरिद्रता दोषों के कारण।

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་དང་། །
दग गीस् दिग प गङ ग्यीस् दङ
जो भी पाप मैंने किया हो तथा।8।

ཕོངས་དང་རྒུད་པའི་དུས་ཀྱི་ཚེ། །
फोङ दङ गुद् पई दुस् क्यि छे
निराशा और बरबादी में

ཕྱུག་པོ་མ་ཡིན་འགྱུར་བ་ཡིས། །
छुग पो म यिन ग्युर प यीस्
ऐश्वर्य के ह्रास होने पर

གཡོ་བའི་སེམས་ཀྱི་དབང་ཉིད་དང་། །
गयो बई सेम क्यि वङ ञिद् दङ
चंचल चित्त के वश में आकर

བཀྲེས་དང་སྐོམ་གྱིས་ཉེན་པ་ཡིས། །
टेस् दङ कोम ग्यीस् ञेन प यीस्
भूख-प्यास के संकट में

བཟའ་བ་དག་དང་བཏུང་བ་དང་། །
ज़ा व दग दङ तुङ व दङ
भोजन और पेय के लिये

ཉོན་མོངས་གདུང་བ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། །
ञोन मोङ दुङ व न छ़ोग क्यीस्
विविध क्लेशों से संतप्त होकर

ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་སྡིག །ཉེས་སྤྱོད་རྣམ་པ་
लुस् दङ ङग दङ यिद् क्यि दिग
काय, वाक्-चित्त से

འདི་འདྲའི་ཚུལ་གྱིས་གང་བགྱིས་པ། །
दि डई छुल ग्यीस् गङ ग्यीस् प
अर्थात् इस प्रकार जो भी हुआ हो

སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་ཆོས་རྣམས་དང་། །
सङ ग्येस् नम दङ छोस् नम दङ
बुद्धों को तथा सद्धर्म को

འདོད་པ་རྣམས་ཀྱི་འཇིགས་རྒྱུ་དང་། །
दोद् प नम क्यि जिग ग्यु दङ
राग से भय के कारण।

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་དང་། །
दग गीस् दिग प गङ ग्यीस् दङ
मैंने जो भी पाप किये हों।9।

འདོད་དང་ཁྲོ་བའི་དབང་དག་དང་། །
दोद् दङ ठो बई वङ दग दङ
काम, क्रोध के प्रभाव में आकर।

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་དང་། །
दग गीस् दिग प गङ ग्यीस् दङ
जो भी पाप मैंने किये हों।10।

བུད་མེད་རྒྱུ་དང་གོས་ཀྱི་ཕྱིར། །
बुद् मेद् ग्यु दङ गोस् क्यि छिर
स्त्री के लिये तथा वस्त्र हेतु।

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་དང་། །
दग गीस् दिग प गङ ग्यीस् दङ
जो भी पाप मैंने किया हो।11।

གསུམ་བསགས་ནི། །
ञेस् चे नम प सुम सग नि
त्रिदोष, पाप संचय से।

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
उन सबको मैं प्रायश्चित करता हूँ।12।

དེ་བཞིན་ཉན་ཐོས་རྣམས་ལ་ཡང་། །
दे शिन ञेन थोस् नम ल यङ
तथैव श्रावकों को भी।

གུས་པ་མ་ལགས་གང་བགྱིས་པ། །
गुस् प म लग गङ ग्यीस् प
श्रद्धा नहीं करके जो पाप किया

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
उन सबको भी मैं प्रायश्चित करता हूँ।13।

གང་ཡང་རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་། །
गङ यङ रङ सङ ग्येस् नम दङ
जितने भी प्रत्येक-बुद्ध और

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལ་ཡང་། །
छङ छुप सेम पा नम ल यङ
बोधिसत्त्व हैं उनको भी।

གུས་པ་མ་ལགས་བགྱིས་པ་རྣམས། །
गुस् प म लग ग्यीस् प नम
श्रद्धा नहीं कर जो पाप मैने किया

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
उन सबको भी मैं प्रायश्चित करता हूँ।14।

དམ་ཆོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ལ་ཡང་། །
दम छोस् म व नम ल यङ
सद्धर्म का देशना करने वालों को भी

གུས་པ་མ་ལགས་བགྱིས་པ་དང་། །
गुस् प म लग ग्यीस् प दङ
श्रद्धा नहीं करके जो पाप मैने किया तथा

ཆོས་ལ་འདང་གུས་པར་མ་བགྱིས་པ། །
छोस् लहङ गुस् पर म ग्यीस् प
धर्म के प्रति श्रद्धा-अभाव से जो पाप हुआ

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
उन सबको भी मैं प्रायश्चित करता हूँ।15।

བདག་གིས་རྟག་ཏུ་མི་ཤེས་པས། །
दग गीस् तग तु मि शेस् पेस्
मेरे द्वारा सदैव अज्ञानता वश

དམ་པའི་ཆོས་ནི་སྤངས་པ་དང་། །
दम पई छोस् नि पङ प दङ
सद्धर्म का परित्याग और

ཕ་མ་རྣམས་ལ་མ་གུས་དང་། །
फ म नम ल म गुस् दङ
माता-पिता का सम्मान नहीं कर

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
जो पाप हुआ, उन सवका भी मैं प्रायश्चित करता हूँ।16।

བླུན་པ་དང་ནི་བྱིས་པ་དང་། །
लुन प दङ नि छीस् प दङ
मूर्खता और बाल-बुद्धि के कारण

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་དང་། །
दोद् छग शे दङ ति मुग दङ
राग-द्वैष और मोह के कारण।

ང་རྒྱལ་དྲེགས་པས་བསྒྲིབས་བགྱིས་པ། །
ङ ग्यल डेग पेस् डिप ग्यीस् प
अहंकार और मान से आवृत होकर

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །ཞེས་དང་།
दे दग थम चे दग छग सो
जो भी पाप किया, उन सबको प्रायश्चित करता हूँ।17।

བསྡུས་པར་ནི།
इति, सक्षेप तो-

སྲིད་འགྲོ་ཉམ་ངར་བྱིས་པའི་བློ་ཡིས་ནི། །
सिद् डो ञम ङर छीस् पई लो यीस् नि
भवगति संकट में बाल-बुद्धि द्वारा

ཤིན་ཏུ་མི་བཟད་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་པ། །
शिन तु मि ज़े दिग प गङ ग्यीस् प
अति घोर पाप मैने जो किया।

སྟོབས་བཅུ་མངའ་བའི་སྤྱན་སྔར་མཆིས་ནས་ནི། །
तोप चु ङा बई चेन ङर छीस् नेस् नि
दशबल के सम्मुख स्थित होकर

སྡིག་པ་དེ་ཀུན་སོ་སོར་བཤགས་པར་བགྱི། །
दिग प दे कुन सो सोर शग पर ग्यि
उन सभी पापों को एक-एक कर प्रायश्चित करता हूँ।18।

སྐྱེ་བ་ཉམ་ང་སྲིད་པ་ཉམ་ང་དང་། །
क्ये व ञम ङ सिद् प ञम ङ दङ
जन्म संकट और भव संकट में

འཇིག་རྟེན་ཉམ་ང་གཡོ་སེམས་ཉམ་ང་དང་། །
जिग तेन ञम ङ गयो सेम ञम ङ दङ
लोक संकट और चापल्यमद् चित्त संकट में।

ལུས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ཉམ་ང་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། །
लुस् क्यि चोद् प ञम ङ न छ़ोग क्यीस्
विविध काय प्रचार संकट में

བདག་གིས་སྡིག་པ་གང་བསགས་དེ་འཚགས་སོ། །
दग गीस् दिग प गङ सग दे छग सो
मैंने जो पाप अर्जित किये, उनका प्रायश्चित करता हूँ।19।

བྱིས་པ་བླུན་བྱུས་ཉོན་མོངས་ཉམ་ང་དང་། །
छीस् प लुन छेस् ञोन मोङ ञम ङ दङ
बाल-मूढ़ता, क्लेश संकट और

སྡིག་པའི་གྲོགས་དང་ཕྲད་པ་ཉམ་ང་དང་། །
दिग पई डोग दङ ठे प ञम ङ दङ
पापी-मित्र समागम संकट से।

སྲིད་པ་ཉམ་ང་འདོད་ཆགས་ཉམ་ང་དང་། །
सिद् प ञम ङ दोद् छग ञम ङ दङ
भव संकट, राग संकट से

ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་མུན་པ་ཉམ་ང་དང་། །
शे दङ ति मुग मुन प ञम ङ दङ
द्वेष संकट और मोहान्धकार संकट से।20।

ངལ་བའི་ཉམ་ང་དུས་ཀྱི་ཉམ་ང་དང་། །
ङल बई ञम ङ दुस् क्यि ञम ङ दङ
क्षय संकट और समय सक्ट से

བསོད་ནམས་བསྒྲུབ་པ་ཉམ་ང་དག་གིས་ཀྱང་། །
सोद् नम डुप प ञम ङ दग गीस् क्यङ
पुण्यार्जन संकटों में भी मैंने जो पाप किये हो

རྒྱལ་བ་ཡང་དག་མངོན་སུམ་མཆིས་ནས་ནི། །
ग्यल व यङ दग ङोन सुम छीस् नेस् नि
सम्यग् जिनों के सम्मुख प्रकट होकर

སྡིག་པ་དེ་ཀུན་སོ་སོར་བཤགས་པར་བགྱི། །ཞེས་དང་།
दिग प दे कुन सो सोर शग पर ग्यि
उन सभी पापों को एक-एक प्रायश्चित करता हूँ।21।

ཤིན་ཏུ་བསྡུས་ན།
ऐसा और अत्यन्त सारांश करें तो-

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་དབང་གིས་ནི། །
दोद् छग शे दङ ति मुग वङ गीस् नि
मूर्खता और बाल-बुद्धि के कारण

ལུས་དང་ངག་དང་དེ་བཞིན་ཡིད་ཀྱིས་ཀྱང་། །
लुस् दङ ङग दङ दे शिन यिद् क्यीस् क्यङ
राग-द्वैष और मोह के कारण।

སྡིག་པ་བདག་གིས་བགྱིས་པ་ཅི་མཆིས་པ། །
दिग प दग गीस् ग्यीस् प चि छीस् प
अहंकार और मान से आवृत होकर

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་གིས་སོ་སོར་བཤགས། །
दे दग थम चे दग गीस् सो सोर शग
जो भी पाप किया, उन सबको प्रायश्चित करता हूँ।

## 14. སེམས་བསྐྱེད་པའི་ཡན་ལག །
## 14. चित्तोत्पाद-अंग

གསེར་འོད་ལས།

सुवर्णप्रभा में-

བདག་གིས་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་དུ། །
दग गीस् छोग चुइ जिग तेन दु
मैं दश दिशाओं के लोक में

སྟོབས་བཅུ་རྣམས་ལ་མཆོད་པར་བགྱི། །
तोप चु नम ल छोद् पर ग्यि
उपस्थित दशबल जिनों की पूजा करूँगा।

བདག་གིས་ཕྱོགས་བཅུའི་སེམས་ཅན་རྣམས། །
दग गीस् छोग चुइ सेम चेन नम
मैं दश दिशाओं के समस्त सत्त्वों को

སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ལས་འདོན་པར་བགྱི། །
दुग ङल कुन लेस दोन पर ग्यि
सभी दुःखों से उद्धार करूँगा।1।

སེམས་ཅན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ཀུན། །
सेम चेन सम ग्यीस् मि ख्यप कुन
समस्त अचिन्तय सत्त्वों को

ས་བཅུ་ལ་ནི་དགོད་པར་བགྱི། །
स चु ल नि गोद् पर ग्यि
दश भूमि में स्थापित करूँगा।

ས་བཅུ་ལ་ནི་གནས་ནས་ཀྱང་། །
स चु ल नि नेस नेस् क्यङ
दश-भूमि में स्थित होकर फिर

ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་གཤེགས་གྱུར་ཅིག །
थम चे दे शिन शेग ग्युर चिग
वे सभी तथागत बनें।2।

ཇི་སྲིད་སྡུག་བསྔལ་རྒྱ་མཚོ་ལས། །
जि सिद् दुग ङल ग्य छ़ो लेस
जब तक दुःख सागर से

དེ་ཀུན་ཐར་བགྱི་ནུས་སྲིད་དུ། །
दे कुन थर ग्यि नुस् सिद् दु
उन सबको पार नहीं कर सकूँ।

སེམས་ཅན་རེ་རེའི་ཕྱིར་ཡང་ནི། །
सेम चेन रे रे छिर यङ नि
तब तक एक सत्त्व के लिये भी

བསྐལ་པ་བྱེ་བར་སྤྱོད་པར་བགྱི། །
कल प छे बर चे पर ग्यि
कोटि-करोड़ कल्पों तक चर्या करता रहूँगा।3।

གསེར་འོད་དམ་པ་ཞེས་བགྱི་བ། །
सेर ह़ोद् दम प शेस् ग्यि व
सुवर्णप्रभा नामक यह

ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བྱང་བགྱིད་པ། །
लेस नम थम चे छङ ग्यिद् प
सर्वकर्म क्षयकारी

ཟབ་མོ་དག་ནི་སྟོན་པ་འདི། །
ज़प मो दग नि तोन प दि
गम्भीरता को देशित करने वाली

སེམས་ཅན་དེ་དག་བསྟན་པར་བགྱི། །
सेम चेन दे दग तेन पर ग्यि
इसे सत्त्वों के देशित करूँगा।4।

གང་གིས་བསྐལ་པ་སྟོང་རྣམས་སུ། །
गङ गीस् कल प तोङ नम सु
जिसने हजारों कल्पों में

སྡིག་པ་ཤིན་ཏུ་མི་བཟད་བགྱིས། །
दिग प शिन तु मि ज़े ग्यीस्
अति घोर पाप किये हों।

ལན་གཅིག་རབ་ཏུ་བཤགས་པ་ཡིས། །
लेन चिग रप तु शग प यीस्
एक बार प्रायश्चित करने से

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བྱང་བར་འགྱུར། །
दे दग थम चे छङ बर ग्युर
वे सभी क्षय हो जाते हैं।5।

གང་གིས་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་རྣམས། །
गङ गीस् लेस क्यि डिप प नम
जिसके द्वारा कर्मावरण

མྱུར་དུ་ཡང་དག་ཟད་འགྱུར་བ། །
न्युर दु यङ दग ज़े ग्युर व
यथाशीघ्र क्षय होता है।

གསེར་འོད་དམ་པ་དགེ་བ་ཡིས། །
सेर ह़ोद् दम प गे व यीस्
अनुत्तर सुवर्णप्रभा के शुभ द्वारा

བཤགས་པ་འདི་དག་བཤགས་ནས་ནི། །
शग प दि दग शग नेस् नि
पापों का प्रायश्चित कर।6।

རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་མཆོག་བཅུ་པོ། །
रिन छेन छुङ नेस छोग चु पो
रत्नाकर दस श्रेष्ठ स्थान अर्थात्

ས་བཅུ་ལ་ནི་གནས་པར་བགྱི། །
स चु ल नि नेस पर ग्यि
दश भूमियों में स्थित होउँगा।

སངས་རྒྱས་ཡོན་ཏན་སྣང་བར་བགྱི། །
सङ ग्येस् योन तेन नङ वर ग्यि
बुद्ध गुणों को आभासित कर

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་བསྒྲལ་བར་བགྱི། །
सिद् पई छ़ो लेस डल बर ग्यि
भव सागर से पार करूँगा।7।

སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོ་ཆུ་བོ་དང་། །
सङ ग्येस् ग्य छ़ो छु बो दङ
बुद्ध समुद्रों से भरा सागर

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་ཟབ་མོ་དེ། །
योन तेन ग्य छ़ो ज़प मो दे
गम्भीर गुण सागर से तथा

སངས་རྒྱས་ཡོན་ཏན་བསམ་ཡས་ཀྱིས། །
सङ ग्येस् योन तेन सम येस् क्यीस्
अचिन्तय बुद्ध गुणों के द्वारा

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་དུ་རྫོགས་པར་བགྱི། །
थम चे ख्येन दु ज़ोग पर ग्यि
सर्वज्ञता को सम्पन्न करूँगा।8।

ཏིང་འཛིན་བརྒྱ་ཕྲག་སྟོང་རྣམས་དང་། །
तिङ ज़िन ग्य ठग तोङ नम दङ
शत-सहस्र समाधि

གཟུངས་རྣམ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་དང་། །
ज़ुङ नम सम ग्यीस् मि ख्यप दङ
अचिन्तय धारणी

དབང་སྟོབས་བྱང་ཆུབ་ཡན་ལག་གིས། །
वङ तोप छङ छुप येन लग गीस्
इन्द्रिय, बल और बोध्यंगों के द्वारा

སྟོབས་བཅུ་དམ་པར་འགྱུར་བར་བགྱི། །
तोप चु दम पर ग्युर बर ग्यि
दशबलोत्तम को प्राप्त करूँगा।9।

དགོངས་པའི་ཐུགས་ཀྱིས་སངས་རྒྱས་རྣམས། །
गोङ पई थुग क्यीस् सङ ग्येस् नम
कृपा पूर्वक ध्यान देने वाले बुद्ध

བདག་ལ་རྣམ་པར་གཟིགས་སུ་གསོལ། །
दग ल नम पर ज़िग सु सोल
कृपा कर मुझे अवलोकन करें, मेरी प्रार्थना है।

ཐུགས་རྗེ་ལྡན་པའི་ཐུགས་ཀྱིས་ནི། །
थुग जे देन पई थुग क्यीस् नि
करुणा भरी चित्त से

ནོངས་པ་རབ་ཏུ་གཟུང་དུ་གསོལ། །
नोङ प रप तु ज़ुङ दु सोल
दोष से मुझे परिगृहीत करें, मेरा अर्ज है।10।

བདག་གིས་བསྐལ་པ་བརྒྱ་རྣམས་སུ། །
दग गीस् कल प ग्य नम सु
मैने सैंकड़ों कल्पों में

སྔོན་ཆད་སྡིག་པ་གང་བགྱིས་པ། །
ङोन छे दिग प गङ ग्यीस् प
आज तक जो भी पाप किया।

དེ་ཕྱིར་བདག་ནི་མྱ་ངན་སེམས། །
दे छिर दग नि न्य ङेन सेम
अतः मैं शोकाकुल चित्त हूँ

ཕོངས་དང་མྱ་ངན་འཇིགས་པས་གཟིར། །
फोङ दङ न्य ङेन जिग पेस् ज़िर
विपदा, शोक और भय से पीडित हूँ।11।

སྡིག་པའི་ལས་ལ་འཇིགས་པར་བགྱི། །
दिग पई लेस ल जिग पर ग्यि
पाप कर्मों से मैं भयभीत हूँ

ཡིད་ནི་རྟག་ཏུ་དམན་པར་གྱུར། །
यिद् नि तग तु मेन पर ग्युर
सदैव मेरा मन हीनता से ग्रस्थ है

གང་དང་གང་དུ་སྤྱོད་བགྱིད་པ། །
गङ दङ गङ दु चोद् ग्यिद् प
जहाँ कहीं भी चर्या करता हूँ

བདག་ནི་གང་དུའང་དགའ་མ་མཆིས། །
दग नि गङ दुहङ गा म छीस्
कहीं भी में खुश नहीं हूँ।12।

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཐུགས་རྗེ་ལྡན། །
सङ ग्येस् थम चे थुग जे देन
बुद्ध आप सब कृपालु हैं

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་འཇིགས་སེལ་བས། །
डो व कुन ग्यि जिग सेल वे
जगत का समस्त भय को नष्ट करते हैं

ནོངས་པ་རབ་ཏུ་གཟུང་དུ་གསོལ། །
नोङ प रप तु ज़ुङ दु सोल
अतः मुझे दोष से परिगृहीत करें, मेरी प्रार्थना है

འཇིགས་པ་དག་ལས་བདག་ཐར་མཛོད། །
जिग प दग लेस दग थर ज़ोद्
समस्त भय से मुझे मुक्त करें।13।

བདག་གི་ཉོན་མོངས་ལས་རྣམས་ཀྱི། །
दग गि ञोन मोङ लेस नम क्यि
मेरे कर्म और क्लेशों का

དྲི་མ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་སོལ། །
डि म दे शिन शेग पेस् सोल
जो मल हैं तथागत उसे समाप्त करें।

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་བདག་ལ་ནི། །
सङ ग्येस् नम क्यीस् दग ल नि
बुद्ध आप सब मुझे अपने

སྙིང་རྗེའི་ཆུ་ཡིས་བཀྲུ་བར་གསོལ། །
ञिङ जे छु यीस् टु बर सोल
करुणा रूपी जल से प्रक्षालन करें।14।

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་བཤགས་པར་བགྱི། །
दिग प थम चे शग पर ग्यि
सभी पापों को प्रायश्चित करता हूँ

སྔོན་ཆད་བདག་གིས་གང་བགྱིས་དང་། །
ङोन छे दग गीस् गङ ग्यीस् दङ
पूर्व में मैंने जो भी पाप किये हों।

ད་ལྟར་བདག་གི་སྡིག་པ་གང་། །
द तर दग गि दिग प गङ
वर्तमान में जो भी पाप कर रहा हूँ

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
उन सभी का मैं प्रायश्चित करता हूँ।15।

ནོངས་པར་བགྱིས་པའི་ལས་རྣམས་ཀུན། །
नोङ पर ग्यीस् पई लेस नम कुन
उन सभी दुष्कृत कर्मों को

སླན་ཆད་མི་བགྱིད་བསྡམ་པར་བགྱི། །
लेन छे मि ग्यिद् बदम पर ग्यि
भविष्य में नहीं दोहराउँगा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।

བདག་གིས་ནོངས་པར་བགྱིས་པ་གང་། །
दग गीस् नोङ पर ग्यीस् प गङ
मेरे द्वारा जो भी दुष्कर्म हुये हैं

སྡིག་དེ་བཅབ་པར་མི་བགྱི་ལོ། །
दिग दे चप पर मि ग्यि ह़ो
उस पाप को नहीं छुपाउँगा।6।

ལུས་ཀྱི་ལས་ནི་རྣམ་གསུམ་དང་། །
लुस् क्यि लेस नि नम सुम दङ
त्रिविध कायिक कर्म

ངག་གི་རྣམ་པ་བཞི་དག་དང་། །
ङग गि नम प शि दग दङ
चतुर्विध वाचिक कर्म

ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་རྣམས། །
यिद् क्यि नम प सुम पो नम
त्रिविध चित्त के कर्म

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
उन सबको मैं प्रायश्चित करता हूँ।7।

ལུས་ཀྱིས་བགྱིས་དང་ངག་གི་ལས། །
लुस् क्यीस् ग्यीस् दङ ङग गि लेस
काय-कृत् तथा वाक्-कृत कर्म

ཡིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་བསམ་པ་དང་། །
यिद् क्यीस् नम पर सम प दङ
चित्त द्वारा विचिन्त्यन कर

ལས་རྣམ་བཅུ་པོ་བགྱིས་པ་དག །དེ་དག་ཐམས་ཅད་
लेस नम चु पो ग्यीस् प दग
दश-विध कर्मों का

བདག་འཆགས་སོ། །
दे दग थम चे दग छग सो
मैं प्रायश्चित करता हूँ।8।

མི་དགེའི་ལས་བཅུ་སྤངས་ནས་སུ། །
मि गे लेस चु पङ नेस् सु
दशाकुशल कर्मों को वर्जित कर

དགེ་བ་བཅུ་པོ་བསྟེན་བགྱི་སྟེ། །
गे व चु पो तेन ग्यि ते
दश कुशल कर्मों का सेवन कर।

ས་བཅུ་ལ་ནི་བདག་གནས་བགྱི། །
स चु ल नि दग नेस ग्यि
मैं दस भूमियों में स्थित होउँगा

སྟོབས་བཅུ་མཆོག་ཏུ་འགྱུར་བར་བགྱི། །
तोप चु छोग तु ग्युर बर ग्यि
श्रेष्ठ दशबल से युक्त बनुँगा।9।

བདག་གིས་སྡིག་པའི་ལས་གང་དག །
दग गीस् दिग पई लेस गङ दग
मैंने जिन पाप कर्मों को किया

མི་འདོད་འབྲས་བུ་ཐོབ་བགྱིད་པ། །
मि दोद् डेस् बु थोप ग्यिद् प
जो अनिष्ट फल को देने वाले हैं।

སངས་རྒྱས་སྤྱན་སྔར་མཆིས་ནས་ནི། །
सङ ग्येस् चेन ङर छीस् नेस् नि
बुद्ध के सम्मुख होकर

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཤགས་པར་བགྱི། །ཞེས་སོ།། །།
दे दग थम चे शग पर ग्यि
उन सबका प्रायश्चित करता हूँ।10। इति।

## 15. རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་ཡན་ལག །
## 15. अनुमोदन-अंग

ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་ཀུན་དང་སངས་རྒྱས་སྲས། །
छोग चुइ ग्यल व कुन दङ सङ ग्येस् सेस्
दश-दिशाओं के सभी जिन-बुद्ध-बोधिसत्त्व

རང་རྒྱལ་རྣམས་དང་སློབ་དང་མི་སློབ་དང་། །
रङ ग्यल नम दङ लोप दङ मि लोप दङ
प्रत्येक-बुद्ध और शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक और

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་བསོད་ནམས་གང་ལ་ཡང་། །
डो व कुन ग्यि सोद् नम गङ ल यङ
जगत में जो भी पुण्य हैं

དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་བདག་ཡི་རང་། །ཞེས་དང་།
दे दग कुन ग्यि जेस् सु दग यि रङ
उन सबका मैं अनुमोदन करता हूँ।1। इति,

གསེར་འོད་ལས་གསུངས་པའི།
और सुवर्णप्रभा में आये-

འཛམ་བུའི་གླིང་འདིར་གང་དག་དང་། །
ज़म बुइ लिङ दिर गङ दग दङ
इस जम्बुद्वीप में तथा

འཇིག་རྟེན་ཁམས་ནི་གཞན་དག་ཏུ། །
जिग तेन खम नि शेन दग तु
अन्य लोक में

གང་རྣམས་དགེ་བའི་ལས་བགྱིས་པ། །
गङ नम गे बई लेस ग्यीस् प
जो-जो कुशल कर्म किये हैं

དེ་དག་ཀུན་ལ་ཡི་རང་ངོ་། །ཞེས་སོ། །
दे दग कुन ल यि रङ ङो
उन सबका हार्दिक अनुमोदन करता हूँ।2। इति।

## 16. ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་ཡན་ལག །
## 16. धर्मचक्र प्रवर्त्तन प्रेरणा-अंग

གང་རྣམས་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་སྒྲོན་མེ་དག །
गङ नम छोग चुइ जिग तेन डोन मे दग
जितने भी दस-दिशाओं के लोक-ज्वाला हैं

བྱང་ཆུབ་རིམ་པར་སངས་རྒྱས་མ་ཆགས་བརྙེས། །
छङ छुप रिम पर सङ ग्येस् म छग ञेस्
बोधिक्रम में अनासक्त बुद्धत्व को प्राप्त किये हैं।

མགོན་པོ་དེ་དག་བདག་གིས་ཐམས་ཅད་ལ། །
गोन पो दे दग दग गीस् थम चे ल
उन सभी नाथों को मैं

འཁོར་ལོ་བླ་ན་མེད་པར་བསྐོར་བར་བསྐུལ། །ཞེས་སོ། །
खोर लो ल न मेद् पर कोर बर कुल
धर्मचक्र प्रवर्त्तन हेतु अध्येषणा करता हूँ।1।

## 17. མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བར་བཞུགས་པར་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་ཡན་ལག །
## 17. दीर्घकाल तक रहने के लिये अभ्यर्थना-अंग

མྱ་ངན་འདའ་སྟོན་གང་བཞེད་དེ་དག་ལ། །
न्य ङेन दा तोन गङ शेद् दे दग ल
परिनिर्वाण की कामना करने वालों को

འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཕན་ཞིང་བདེ་བའི་ཕྱིར། །
डो व कुन ल फेन शिङ दे वई छिर
समस्त जगत के कल्याण और सुख के लिये

བསྐལ་པ་ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་བཞུགས་པར་ཡང་། །
कल प शिङ गि दुल ञेद् शुग पर यङ
क्षेत्रों के कण प्रमाण कल्प रहें, तदर्थ

བདག་གིས་ཐལ་མོ་རབ་སྦྱར་གསོལ་བར་བགྱི། །ཞེས་སོ། །
दग गीस् थल मो रप छर सोल बर ग्यि
मैं प्राञ्जलिबद्ध अभ्यर्थना करता हूँ।1। इति।

# རྡོ་རྗེ་རྒྱལ་མཚན་གྱི་ཡོངས་བསྔོ་ལས་གསུངས་པ།
# वज्रध्वज परिणामना में कथित

## 18. བསྔོ་བའི་ཡན་ལག །
## 18. कुशल-मूल परिणामना-अंग

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་པ་ན། གཟུགས་ཡིད་དུ་འོང་བའམ། ཡིད་དུ་མི་འོང་བ་གང་ཞིག་སྣེད་
छङ छुप सेम पई चे प चोद् प न    ज़ुग यिद् दु ह़ोङ बह़म    यिद् दु मि ह़ोङ व गङ जि ञेद्
बोधिसत्त्वों के चर्या को करते समय जिस रूप को मैं देखूँ, वह चाहे मनोहर हो,

ཅིག་མཐོང་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སྒྲ་དང་། དྲི་དང་། རོ་དང་། རེག་བྱ་དང་། ཆོས་ཡིད་དུ་འོང་བའམ།
चिग थोङ व दङ    दे शिन दु ड दङ    डि दङ    रो दङ    रेग छ दङ    छोस् यिद् दु ह़ोङ बह़म
चाहे प्रतिकूल हो, उसी प्रकार शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श और धर्म- मनोहर

ཡིད་དུ་མི་འོང་བའམ་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པ་དག་ལ་བདེ་བ་རྒྱ་ཆེ་བ་འོད་གསལ་བའམ།
यिद् दु मि ह़ोङ बह़म ख न म थो व मेद् प दग ल दे व ग्य छे व ह़ोद् सल बह़म
यो प्रतिकूल, अनवद्य विशुद्धों को, कल्याणोदार, प्रभास्वर वो

གང་གིས་ཡིད་བདེ་བ་སྐྱེ་བ་དང་། བདེ་བ་བསྐྱུབ་པ་དང་། དད་པ་སྐྱེ་བ་དང་། དགའ་བ་འབྱུང་བ་དང་།
गङ गीस् यिद् दे व क्ये व दङ    दे व डुप प दङ    दे प क्ये व दङ    गा व छुङ व दङ
जो सौमनस करने वाली हो, प्रीति उत्पन्न करने वाली हो,

མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ལ་གནས་པ་དང་། མགུ་བ་འབྱུང་བ་དང་། ཡིད་མི་བདེ་བ་ལྡོག་པ་དང་། སེམས་དགེ་བ་འབྱུང་བ་
छोग तु गा व ल नेस प दङ    गु व छुङ व दङ    यिद् मि दे व दोग प दङ    सेम गे व छुङ व
उत्तम प्रीति में स्थित हो, दोर्मनस्य को निवृत करने वाली हो, कुशल-चित्त उत्पन्न करने वाली हो,

དང་། སེམས་ལས་སུ་རུང་བར་འགྱུར་བ་དང་། བསམ་པ་མཉེན་པར་འགྱུར་བ་དང་། དབང་པོ་རབ་ཏུ་ཚིམ་པར་
दङ    सेम लेस सु रुङ बर ग्युर व दङ    सम प ञेन पर ग्युर व दङ    वङ पो रप तु छ़िम पर
चित्त कर्म योग्य करने वाली हो, विचार मृदु करने वाली हो, इन्द्रियाँ प्रह्लाद करने वाली हो,

འགྱུར་བའི་བདེ་བ་དེ་སྤྱོད་པ་ན་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་འདི་ལྟར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་སྟེ། ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་འདིས་
ग्युर बई दे व दे न्योङ व न सङ ग्येस् थम चे ल दि तर योङ सु ङो ते  योङ सु ङो व दीस्
सुख का अनुभव करने वाली हो- वे सभी बुद्धों को इस प्रकार परिणामना करें- इस परिणामना के द्वारा,

སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་དེ་བས་ཀྱང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གནས་པའི་བདེ་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་
सङ ग्येस् चोम देन देस् दे दग दे वे क्यङ सङ ग्येस् क्यि नेस पई दे व सम ग्यीस् मि ख्यप प दङ
भगवान् बुद्ध, वे सभी (जो पहले से युक्त हैं) उससे अधिक बुद्धस्थ

ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་བདེ་བ་མཚུངས་པ་མེད་པས་ལེགས་པར་ཟིན་པར་
देन पर ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि तिङ ङे ज़िन ग्यि दे व छुङ प मेद् पेस् लेग पर ज़िन पर
अचिन्तय सुख से युक्त हों। बुद्धों के अतुलनीय समाधि सुख से सुसंगृहीत हों।

གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་བདེ་བ་མཐའ་ཡས་པས་རྒྱ་ཆེར་བརྟན་པར་གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་རྣམ་པར་
ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि दे व था येस् पेस् ग्य छेर तेन पर ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि नम पर
बुद्धों के अनन्त विपुल सुख सुदृढ हों।

ཐར་པའི་བདེ་བ་ཚད་མེད་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོ་འཕྲུལ་གྱི་བདེ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པས་
थर पई दे व छ़े मेद् प दङ देन पर ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि छो ठुल ग्यि दे व पग तु मेद् पेस्
बुद्धों के अपरिमित विमोक्ष सुख से युक्त हों।

ལེགས་པར་ཟིན་པར་གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་གནས་པ་ཆགས་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པས་
लेग पर ज़िन पर ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि नेस प छग प मेद् पई दे व सम ग्यीस् मि ख्यप पेस्
बुद्धों के अप्रमाण प्रतिहार-सुख से सुपरिगृहीत हों।

ལེགས་པར་ཡོངས་སུ་ཟིན་པར་གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཁྱུ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པའི་བདེ་བ་བསྙེན་པར་དཀའ་བ་
लेग पर योङ सु ज़िन पर ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि ख्यु छोग तु ग्युर पई दे व ञेन पर का व
बुद्धों के वृषभ-सुख जो प्राप्त होना दुर्लभ है, वह अविच्छिन्न बना रहे।

རྒྱུན་མི་འཆད་པར་གྱུར་ཅིག །སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱི་བདེ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པས་ཤིན་ཏུ་བདེ་བར་གྱུར་
ग्युन मि छे पर ग्युर चिग  सङ ग्येस् क्यि तोप क्यि दे व पग तु मेद् पेस् शिन तु दे वर ग्युर
बुद्धों के बल का अपरिमित सुख से अति सुखी हों।

ཅིག །ཚོར་བ་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་མི་སྐྱེ་བའི་བདེ་བས་འགྱུར་བ་མེད་པར་བདེ་བར་གྱུར་ཅིག །
चिग  छ़ोर व थम चे शि वर मि क्ये बई दे वे ग्युर व मेद् पर दे वर ग्युर चिग
सभी वेदना शान्त, अजात-सुख से अचल सुख बने।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བདེ་བའི་ཆགས་པ་མེད་པར་གནས་པར་རྟག་ཏུ་མཉམ་པར་གཞག་པ་གཉིས་སུ་ཀུན་ཏུ་མི་
दे शिन शेग पई दे वई छग प मेद् पर नेस पर तग तु ञम पर शग प ञीस् सु कुन तु मि
**तथागत सुख से असंगतस्थ हो सदैव अद्वैत समुदाचरण से अकुपित-सुख बने।**

སྤྱོད་པས་རྣམ་པར་མི་འཚུགས་པར་བདེ་བར་གྱུར་ཅིག །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལྟར་དགེ་བའི་རྩ་བ་དེ་དེ་བཞིན་
चोद् पेस् नम पर मि ठुग पर दे वर ग्युर चिग   छङ छुप सेम पा दे तर गे बई त्स व दे दे शिन
**बोधिसत्त्व इस तरह उन कुशल मूलों को,**

གཤེགས་པ་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་བསྔོས་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་སྟེ། གང་འདི་བསམ་པ་
शेग प नम ल योङ सु ङोस् नेस् छङ छुप सेम पा नम ल योङ सु ङो ते   गङ दि सम प
**तथागतों को परिणामना करके (पश्चात्) बोधिसत्त्वों को परिणामना करें।**

ཡོངས་སུ་མ་རྫོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་དང་། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ལྷག་པའི་བསམ་
योङ सु म ज़ोग प नम क्यि सम प योङ सु ज़ोग पर छ व दङ   थम चे ख्येन पई ल्हग पई सम
**जिनका आशय अभी अपूर्ण हैं वह पूर्ण हों। जिनका सर्वज्ञ-अध्याशय**

པ་ཡོངས་སུ་མ་དག་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་དག་པར་བྱ་བ་དང་། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་མ་རྫོགས་པ་
प योङ सु म दग प नम योङ सु दग पर छ व दङ   फ रोल तु छिन प थम चे योङ सु म ज़ोग प
**अपरिशुद्ध है, वह परिशुद्ध हों। समस्त पारमिता जिनका अभी अपरिनिष्पन्न है,**

ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པ་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་གནས་སུ་བྱ་བ་དང་།
योङ सु ज़ोग पर छ व दङ   छङ छुप क्यि सेम क्येद् प दोर जे त बुइ नेस सु छ व दङ
**वह परिनिष्पन्न हों। बोधिचित्तोत्पाद, वज्रोपमस्थ**

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ལས་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་གོ་ཆ་རྒྱུན་མི་གཅད་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྒོའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་བསྐྱེད་པ་
थम चे ख्येन प लेस छिर मि दोग पई गो छ ग्युन मि चे प दङ   छङ छुप क्यि गोइ गे बई त्स व
**सर्वज्ञता से अविनिवर्तन हेतु कवच निरन्तर रहे। बोधि-द्वार का कुशलमूल उत्पन्न हो।**

དང་། འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་གནས་པའི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་
क्येद् प दङ   डो व थम चे ल ञम प ञिद् दु नेस पई मोन लम छेन पो योङ सु ज़ोग पर छ व
**समस्त जगत समता स्थित हों- यह महाप्रणिधान परिपूर्ण हों।**

དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་པ་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པར་བྱ་བ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དབང་པོ་ཐམས་
दङ   छङ छुप सेम पई नेस प थम चे तोग पर छ व दङ   छङ छुप सेम पई वङ पो थम
**सभी सत्त्वों के समस्थ स्थित का अधिगम करे। सभी बोधिसत्त्वों का इन्द्रिय**

ཅན་མངོན་པར་ཤེས་པ་རྣོ་བར་བྱ་བ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་རེག་
चे ङोन पर शेस् प नो बर छ व दङ  छङ छुप सेम पई गे बई ट्स व थम चे ख्येन प ञिद् दु रेग
तीक्ष्ण अभिज्ञा युक्त हों। सभी बोधिसत्त्वों का कुशलमूल सर्वज्ञता को प्राप्त करे-

པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །དེ་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་དོན་དུ་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཡོངས་སུ་
पर छ बई छिर योङ सु ङो हो  दे दे तर छङ छुप सेम पा नम क्यि दोन दु गे बई ट्स व योङ सु
तदर्थ परिणामना करता हूँ। इस तरह बोधिसत्त्वों के लिये कुशलमूल-परिणामना कर

བསྔོས་ནས། སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་སྤྱོད་པ་དང་། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་དགེ་བའི་རྩ་བ་
ङोस् नेस्  सङ ग्येस् क्यि तेन प ल चोद् प दङ  ञेन थोस् दङ रङ सङ ग्येस् थम चे ल गे बई
अब बुद्धशासन का आचरण करने वाले श्रावक और प्रत्येक-बुद्धों के कुशलमूलों का

དེ་འདི་ལྟར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་སྟེ། སེམས་ཅན་གང་ལ་ལ་དག་སེ་གོལ་གཅིག་གཏོགས་པ་སྲིད་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྒྲ་ཉན་
ट्स व दे दि तर योङ सु ङो ते  सेम चेन गङ ल ल दग से गोल चिग तोग प सिद् दु सङ ग्येस्
वह इस तरह परिणामना करे-सत्त्व जो एक छटा संघात काल में बुद्ध का शब्द श्रवण करता हो, धर्म शब्द को

པའམ། ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་ཉན་པའམ། འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པ་དེ་དག་གི་དགེ་
क्यि ड ञेन पह़म  छोस् क्यि ड ञेन पह़म  फग पई गेन दुन ल ञेन कुर छेद् प दे दग गि गे
सुनता हो, आर्य संघ की उपासना करता हो- उनके उस कुशलमूल को

བའི་རྩ་བ་དེ། བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
बई ट्स व दे  ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप तु योङ सु ङो ह़ो
अनुत्तर सम्यग् सम्बोधि में परिणामना करें।

སངས་རྒྱས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सङ ग्येस् जेस् सु डेन प योङ सु ज़ोग पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
बुद्धानुस्मृति हो- तदर्थ परिणामना करे।

ཆོས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ལ་སྦྱོར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
छोस् जेस् सु डेन प ल छोर बर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
धर्मानुस्मृति प्रयोग के लिये परिणामना करें।

འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་ལ་གུས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
फग पई गेन दुन ल गुस् पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
आर्य संघ के प्रति श्रद्धा के लिये परिणामना करें।

སངས་རྒྱས་མཐོང་བ་དང་མི་འབྲལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सङ ग्येस् थोङ व दङ मि डल बर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
बुद्ध दर्शन से दूर न हों- तदर्थ परिणामना करें।

སེམས་ཡོངས་སུ་དག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सेम योङ सु दग पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सत्य परिशुद्धार्थ परिणामना करें।

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་རབ་ཏུ་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सङ ग्येस् क्यि छोस् रप तु तोग पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
बुद्ध-धर्म प्रतिवेद्य के लिये परिणामना करें।

ཡོན་ཏན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
योन तेन पग तु मेद् प ड्रुप पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
अप्रमेय गुण प्रतिपत्ति के लिये परिणामना करें।

མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དགེ་བ་ཡོངས་སུ་དག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
ङोन पर शेस् प थम चे क्यि गे व योङ सु दग पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
समस्त अभिज्ञा से कुशल परिशुद्ध हो- तदर्थ परिणामना करे।

ཆོས་ལ་ཡིད་གཉིས་བཟློག་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
छोस् ल यिद् ञीस् दोग पई छिर योङ सु ङो ह़ो
धर्म में विमति निरोध के लिये परिणामना करें।

ཇི་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་པ་རྣམས་དང་། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཡོངས་སུ་
जि तर सङ ग्येस् क्यि तेन प ल शुग प नम दङ   ञन थोस् दङ रङ सङ ग्येस् नम ल योङ सु ङो
जैसे बुद्ध-शासन में स्थित श्रावक, प्रत्येक-बुद्धों को परिणामना किया

བསྔོ་བ་དེ་བཞིན་དུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་དགེ་བའི་རྩ་བ་དེ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་སྟེ།
व दे शिन दु   छङ छुप सेम पा दे सेम चेन थम चे ल गे बई त्र व दे योङ सु ङो ते
वैसे ही वह बोधिसत्त्व सभी सत्त्वों के कुशल-पुण्य हेतु परिणामना करता है।

གང་འདི་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་པའི་ལམ་ལས་བཟློག་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
गङ दि सेम चेन न्यल व पई लम लेस दोग पई छिर योङ सु ङो ह़ो
ये सत्त्व नरक में जाने वाले कर्मों से विमुख हों- तदर्थ परिणामना करे।

དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་རྣམ་པར་གཅད་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
दुद् डोइ क्ये नेस नम पर चे पई छिर योङ सु ङो ह़ो
तिर्यक् गतिके उच्छेद् के लिये परिणामना करे।

གཤིན་རྗེའི་འཇིག་རྟེན་ཉེ་བར་གཅད་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
शिन जे जिग तेन ञे वर चे पई छिर योङ सु ङो ह़ो
यम लोक के उच्छेद् के लिये परिणामना करे।

ངན་སོང་མ་ལུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འགྲོ་བར་སྐྱེ་བ་རྣམ་པར་གཅད་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
ङेन सोङ म लुस् प थम चे क्यि डो बर क्ये व नम पर चे पई छिर योङ सु ङो ह़ो
अशेष दुर्गति में जाने के मार्ग को उच्छेद् करने के लिये परिणामना करे।

སེམས་ཅན་དེ་དག་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ལ་མོས་པ་རྣམ་པར་སྤེལ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सेम चेन दे दग ल न मेद् पई छङ छुप ल मोस् प नम पर पेल बई छिर योङ सु ङो ह़ो
उन सभी सत्त्वों में अनुत्तर बोधि की इच्छा में वृद्धि हो, परिणामना करे।

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ལྷག་པའི་བསམ་པ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
थम चे ख्येन प ञिद् क्यि ल्हग पई सम प थोप पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सर्वज्ञता के अध्याशय की प्राप्ति के लिये परिणामना करे।

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་སྤོང་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सङ ग्येस् क्यि छोस् थम चे मि पोङ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
बुद्ध के सभी धर्मों का परित्याग न करे- तदर्थ परिणामना करे।

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཤིན་ཏུ་བདེ་བ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
थम चे ख्येन प ञिद् क्यि शिन तु दे व डुप पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
अत्यन्त सर्वज्ञता की सिद्धिके लिये परिणामना करें।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सेम चेन थम चे शिन तु नम पर दग पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सर्वसत्त्वों के अत्यन्त विशुद्धि के लिये परिणामना करे।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡེ་ཤེས་མཐའ་ཡས་པ་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सेम चेन थम चे ये शेस् था येस् प तोग पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सभी सत्त्व अनन्त ज्ञान अधिगम हेतु परिणामना करें।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ལ་དམིགས་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
छङ छुप सेम पा थम चे ख्येन प ञिद् ल मिग प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
बोधिसत्त्व सर्वज्ञता के आलम्बनयुक्त होने  के लिये परिणामना करे।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བའི་སེམས་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
सेम चेन थम चे ल फेन प दङ दे वई सेम दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सभी सत्त्व कल्याण और सुख-चित्त से युक्त हों- परिणामना करें।

འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་ཡིད་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
डो व थम चे योङ सु क्यप पई यिद् दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सभी लोक परिरक्षा-चित्त से युक्त हों- परिणामना करें।

དགེ་བའི་རྩ་བ་ལ་རྟག་ཏུ་བརྩོན་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
गे बई त्ज़ व ल तग तु त्ज़ोन प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
कुशलमूल के प्रति सदैव उद्यम युक्त हों- परिणामना करें।

རྒྱགས་པ་དང་བག་མེད་པ་བཟློག་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
ग्यग प दङ बग मेद् प दोग प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
मान और अप्रमाद विनिवर्तन के लिये- परिणामना करें।

ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་རྒྱབ་ཀྱིས་ཕྱོགས་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
ञोन मोङ प थम चे ल ग्यप क्यीस् छोग प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
समस्त क्लेशों से विमुख होने के लिये परिणामना करें।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྗེས་སུ་སློབ་པའི་སེམས་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
छङ छुप सेम पा थम चे क्यि जेस् सु लोप पई सेम दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सभी बोधिसत्त्व शिक्षा का अनुकरण करने वाले चित्त से युक्त हों इस हेतु परिणामना करें।

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ལམ་དང་ཞེ་མ་འགྲུས་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
थम चे ख्येन प ञिद् क्यि लम दङ शे म डेस् प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो ह़ो
सर्वज्ञता के मार्ग के प्रति दौर्मनस्य न रखने के लिये परिणामना करें।

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ས་ལ་བརྟེན་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའ། །
ये शेस् क्यि स ल तेन प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङोह़ो
ज्ञान-भूमि पर आश्रित एवं युक्त होने के लिये परिणामना करें।

མཁས་པ་དང་འགྲོགས་པར་དགའ་བ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
खेस् प दङ डोग पर गा व दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङोहो
विद्वानों के साथ मित्रता करने में प्रीति अनुभव करे, इस हेतु परिणामना करें।

བུང་བ་ལྟར་དགེ་བའི་རྩ་བ་སོགས་པ་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་སྐྱོབ་པའི་རྒྱུ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
बुङ व तर गे बई त्र व सोग प डो व थम चे ल क्योप पई ग्यु दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो हो
मधुकर सदृश कुशलमूल सञ्चित कर समस्त जगत की रक्षा करने के हेतु से युक्त होने के लिये परिणामना करें।

འདུས་བྱས་ཐམས་ཅད་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་པ་དང་ལྡན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
दुस् छेस् थम चे ल ङोन पर शेन प मेद् प दङ देन पर छ बई छिर योङ सु ङो हो
सभी संस्कार धर्मों के प्रति अभिनिवेश न रहे तदर्थ परिणामना करें।

དེའི་གོས་དང་ཟས་དང་ན་བའི་གསོས་སྨན་དང་ཡོ་བྱད་དང་། འོང་བ་དང་འགྲོ་བ་དང་།
दे गोस् दङ ज़ेस् दङ न बई सोस् मेन दङ यो छे दङ   ह़ोङ व दङ डो व दङ
उनके वस्त्र, खाद्य, औषधि, उपकरण, आवागमन,

ལུས་ཀྱི་བསྙེན་བཀུར་དང་། འདུག་པ་ལ་སོགས་པ་རྟེན་པའི་གནས་ལ་འཇུག་པའི་ལས་དང་།
लुस् क्यि ञेन कुर दङ   दुग प ल सोग प तेन पई नेस ल जुग पई लेस दङ
शरीर सत्कार, बैठने आदि और निवास स्थान में प्रवेश कर्म,

སྤྱོད་ལམ་གྱི་གནས་དང་། སྤྱོད་ལམ་རྣམ་པར་མི་འཁྲུགས་པ་དང་། ལུས་ཀྱི་ལས་དང་། ངག་གི་ལས་དང་།
चोद् लम ग्यि नेस दङ   चोद् लम नम पर मि ठुग प दङ   लुस् क्यि लेस दङ   ङग गि लेस दङ
ईर्यापथ, अभ्रान्तचर्या, काय-वाक्-

ཡིད་ཀྱི་ལས་ལེགས་པར་སྤྱད་པ་དང་། དབང་པོ་དུག་སྡོམ་པ་དང་། རང་གི་ལུས་གཡོགས་པ་དང་།
यिद् क्यि लेस लेग पर चे प दङ   वङ पो डुग दोम प दङ   रङ गि लुस् योग प दङ
चित्-सुचरित, इन्द्रिय संयम, स्वशरीराच्छादित

མཉེ་བ་དང་བཀྲུ་བའི་ལས་དང་། ཟོས་པ་དང་། འཚོས་པ་དང་། སྨྱངས་པ་དང་། བསྐུམ་པ་དང་།
ञे व दङ टु बई लेस दङ   ज़ोस् प दङ   छोस् प दङ   न्यङ प दङ   कुम प दङ
मर्दन, स्नान कर्म, खाना, चूसना, रसपान, सिकौडना,

བརྐྱང་བ་དང་། ལྟ་བ་དང་། རྣམ་པར་ལྟ་བ་དང་། གཉིད་ཀྱིས་ལོག་པ་དང་། གཉིད་ཀྱིས་མ་ལོག་པ་དང་།
क्यङ व दङ   त व दङ   नम पर त व दङ   ञिद् क्यीस् लोग प दङ   ञिद् क्यीस् म लोग प दङ
फैलाना, अवलोकन, विलोकन, निद्रा, जाग्रति,

རང་གི་ལུས་སུ་གཏོགས་པའི་བསྙེན་བཀུར་ཅི་གང་ཡང་རུང་སྟེ། དེ་ཐམས་ཅད་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་
रङ गि लुस् सु तोग पई ञेन कुर चि गङ यङ रुङ ते   दे थम चे थम चे ख्येन प ञिद् दु योङ सु
अपने शरीर से सम्बन्धित सभी प्रकार के सत्कार आदि जो भी हों, कोई भी ऐसा नहीं है

མ་བསྔོས་པ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། །
म ङोस् प चुङ ज़े क्यङ मेद् दो
जो सर्वज्ञता हेतु परिणामना न हो।

རང་གི་བ་རྣམས་དང་དེ་ལས་གཞན་དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་སུ་སོང་བ་རྣམས་ལ། འབྲས་ཚན་པོ་ཆུམ་གང་ངམ་ཟན་
रङ गि व नम दङ दे लेस शेन दुद् डोइ क्ये नेस सु सोङ व नम ल   डेस् छेन फो छुम गङ ङम
स्वकीय सहित उनसे अतिरिक्त तिर्यक् योनि में जाने वालों के लिये थोड़ा-सा चावल अथवा एक कोर पिण्ड

ཆངས་གཅིག་ཙམ་ཡོངས་སུ་གཏོང་བ་ཡང་སྐྱེ་བ་དེ་དང་དེ་དག་ཏུ་དེ་དག་ཉིད་ལ་ཕན་པ་དང་།
ज़ेन छङ चिग त्सम योङ सु तोङ व यङ क्ये व दे दङ दे दग तु दे दग ञिद् ल फेन प दङ
मात्र दिये हों, वह भी जन्म-जन्मान्तरों में उनके हित हों

དེ་དག་ཉིད་ཡོངས་སུ་དགྲོལ་བའི་ཕྱིར་དེ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
दे दग ञिद् योङ सु डोल बई छिर दे थम चे योङ सु ङो ह़ो
तथा उनके परिनिवृत्ति के लिये उन सबको परिणामित करता हूँ।

སེམས་ཅན་དེ་དག་དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་དེ་དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྒྱ་མཚོ་དང་། སྡུག་བསྔལ་ཉེ་བར་ལེན་པ་དེ་
सेम चेन दे दग दुद् डोइ क्ये नेस दे दङ   दुग ङल ग्यि ग्य छ़ो दङ   दुग ङल ञे वर लेन प दे
वे सत्त्व तिर्यक् योनि, दुःख-सागर, दुःख-उपादान,

དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཕུང་པོ་དེ་དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཚོར་བ་དེ་དང་། སྡུག་བསྔལ་ཉེ་བར་བསགས་པ་དེ་དང་།
दङ   दुग ङल ग्यि फुङ पो दे दङ   दुग ङल ग्यि छ़ोर व दे दङ   दुग ङल ञे वर सग प दे दङ
दुःख-स्कन्ध, दुःख वेदना, दुःखों का उपसंग्रह,

སྡུག་བསྔལ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་གཞི་དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྩ་བ་དེ་དང་།
दुग ङल ङोन पर दु छेद् प दङ   दुग ङल ग्यि शि दङ   दुग ङल ग्यि त्स़ व दे दङ
दुःखाभिसंस्कृत, दुःखाश्रय, दुःख-मूल,

སྡུག་བསྔལ་གྱི་གནས་དེ་ལས་རྣམ་པར་བཟློག་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བསྔོའོ། །
दुग ङल ग्यि नेस दे लेस नम पर दोग पई छिर योङ सु ङो ह़ो
उस दुःख स्थान से विमुक्त होने हेतु परिणामित करता हूँ।

དེ་ལ་དམིགས་པས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་དམིགས་པར་བྱེད་དོ། །སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་མངོན་དུ་བྱེད་དོ། །
दे ल मिग पेस् सेम चेन थम चे ल मिग पर छेद् दो   सेम चेन नम ल ङोन दु छेद् दो
**उसका आलम्बन कर उसके द्वारा सभी प्राणियों का आलम्बन करें, सत्त्वों को अभिमुख करें,**

ཡིད་ལ་བྱེད་དོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་བྱེད་པས་དགེ་བའི་རྩ་བ་དེ་ལ་མངོན་
यिद् ल छेद् दो   दि त ते थम चे ख्येन प ञिद् दु योङ सु ङो बर छेद् पेस् गे बई ज़ा व दे ल ङोन
**मन में करें तथा सर्वज्ञता में परिणामना करने के कुशलमूलों को पूर्वगामी करें।**

དུ་འགྲོ་བར་བྱེད་དོ། །བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པས་རབ་ཏུ་འཛིན་ཏོ། །དགེ་བའི་རྩ་བ་དེ་ལ་སྦྱོར་རོ། །
दु डो बर छेद् दो   छङ छुप तु सेम क्येद् पेस् रप तु ज़िन तो   गे बई ज़ा व दे ल छोर रो
**बोधिचित्तोत्पाद से परिगृहीत करें, कुशल मूल में नियोग करें,**

འཁོར་བའི་དགོན་པ་ལས་རྣམ་པར་ཟློག་གོ །སངས་རྒྱས་ཀྱི་བདེ་བ་སྒྲིབ་པ་མེད་པ་མངོན་དུ་བྱེད་དོ། །
खोर बई गोन प लेस नम पर दोग गो   सङ ग्येस् क्यि दे व डिप प मेद् प ङोन दु छेद् दो
**संसार अरण्य से निवृत करें। बुद्ध के निरावृत सुख को अभिमुख करें।**

འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་ལས་འབྱིན་ནོ། །སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་དང་ལྡན་པའི་བྱམས་པས་ཁྱབ་པར་བྱེད་དོ། །
खोर बई ग्य छ़ो लेस छिन नो   सङ ग्येस् क्यि छोस् दङ देन पई छम पेस् ख्यप पर छेद् दो
**संसार सागर से उद्धार करें। बुद्ध-धर्म प्रयुक्त मैत्री से व्याप्त करें।**

ཞེས་བསླབ་བཏུས་ལས་བྱུང་བའོ། །
ऐसा शिक्षासमुच्चय में उद्धृत किया गया है।

# གསེར་འོད་དམ་པ་ལས་བྱུང་བ།
# सुवर्णप्रभा में वर्णित

གསེར་འོད་དམ་པ་ལས་གསུངས་པའི་བྱམས་པ་དང་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བསླབ་བཏུས་སུ་དྲངས་པ་འདི་དག་གུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བསམས་ཏེ་ཐ་ན་ཚིག་གིས་ཀྱང་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །

सुवर्णप्रभा में वर्णित मैत्री और महाकरुणा का श्लोक जो शिक्षासमुच्चय में उद्धृत है, इसका श्रद्धापूर्वक चिन्तन करें, अथवा कम से कम शब्दोच्चारण के द्वारा भी भावना करें।

གསེར་འོད་དམ་པའི་རྔ་ཆེན་སྒྲ་ཡིས་ནི། །
सेर ह़ोद् दम पई ङ छेन ड यीस् नि
**सुवर्णप्रभोत्तम महा दुन्दुभि के आवाज़ से**

སྟོང་གསུམ་འཇིག་རྟེན་འཇིག་རྟེན་གསུམ་འདི་ན། །
तोङ सुम जिग तेन जिग तेन सुम दि न
**इस त्रिलोक के त्रिसाहस्त्र लोक में**

ངན་སོང་སྡུག་བསྔལ་གཤིན་རྗེའི་སྡུག་བསྔལ་དང་། །
ङेन सोङ दुग ङल शिन जे दुग ङल दङ
**दुर्गति-दुःख, यमलोक दुःख और**

དབུལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་སྡུག་བསྔལ་ཞི་བར་ཤོག །
उल बई दुग ङल दुग ङल शि वर शोग
**दारिद्र-दुःख तथा सभी दुःख शान्त हो।1।**

རྔ་བོ་ཆེ་ཡི་སྒྲ་སྐད་འདི་ཡིས་ནི། །
ङ बो छे यि ड के दि यीस् नि
**महा दुन्दुभि के इस ध्वनि से**

འཇིག་རྟེན་ཕོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཞི་གྱུར་ཅིག །
जिग तेन फोङ प थम चे शि ग्युर चिग
**समस्त लोक का विपदा शान्त हो।**

ཇི་ལྟར་ཐུབ་དབང་འཇིགས་མེད་འཇིགས་ཞི་ལྟར། །
जि तर थुप वङ जिग मेद् जिग शि तर
**जैसे अभय मुनीन्द्र ने भय को शान्त किया**

སེམས་ཅན་འཇིགས་མེད་འཇིགས་དང་བྲལ་བར་ཤོག །
सेम चेन जिग मेद् जिग दङ डल बर शोग
**सत्त्व अभय हो भय से रहित हों।2।**

ཇི་ལྟར་འཁོར་བར་ཀུན་མཁྱེན་ཐུབ་དབང་པོ། །
जि तर खोर वर कुन ख्येन थुप वङ पो
**जैसे संसार में सर्वज्ञ मुनीन्द्र**

འཕགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཀུན་དང་ལྡན་པ་ལྟར། །
फग पई योन तेन कुन दङ देन प तर
**समस्त आर्य गुणों से सम्पन्न हैं।**

སྐྱེ་དགུ་ཏིང་འཛིན་བྱང་ཆུབ་ཡན་ལག་གི །
क्ये गु तिङ ज़िन छङ छुप येन लग गि
**वैसे ही प्राणी समाधि-अंग-**

ཡོན་ཏན་ལྡན་ཞིང་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོར་གྱུར། །
योन तेन देन शिङ योन तेन ग्य छ़ोर ग्युर
**गुणों से युक्त गुण-सागर हों।3।**

རྔ་བོ་ཆེ་ཡི་སྒྲ་སྐད་འདི་ཡིས་ནི། །
ङ बो छे यि ड के दि यीस् नि
महा दुन्दुभि के इस स्वर से

སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་དམ་པ་མཆོག་རེག་ཤོག །
सङ ग्येस् छङ छुप दम प छोग रेग शोग
बुद्धत्व परमोत्तर बोधि को स्पर्श करें

བསྐལ་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་བཞུགས་པར་ཤོག །
कल प सम ग्यीस् मि ख्यप शुग पर शोग
अचिन्त्य कल्पों तक रहें तथा

ཉོན་མོངས་འཇོམས་གྱུར་སྡུག་བསྔལ་སེལ་བར་ཤོག
ञोन मोङ जोम ग्युर दुग ङल सेल बर शोग
क्लेशों का नाश कर दुःख को दूर करें।

སེམས་ཅན་གང་དག་ངན་སོང་སར་གནས་ཏེ། །
सेम चेन गङ दग ङेन सोङ सर नेस ते
सत्त्व जो अपाय भूमि में स्थित हैं

དེ་དག་རྔ་ཆེན་བསྒྲགས་པ་ཐོས་གྱུར་ཅིག །
दे दग ङ छेन डग प थोस् ग्युर चिग
वे इस महा दुन्दुभि के स्वर को सुनें

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྐྱེ་བ་བརྒྱ་དག་དང་། །
सेम चेन कुन ग्यि क्ये व ग्य दग दङ
समस्त सत्त्व शत जन्मों और

ཐུབ་པའི་དབང་པོ་རྟག་ཏུ་དྲན་གྱུར་ཅིག །
थुप पई वङ पो तग तु डेन ग्युर चिग
सदैव मुनीन्द्र का स्मरण करें तथा

རྔ་བོ་ཆེ་ཡི་སྒྲ་སྐད་འདི་ཡིས་ནི། །
ङ बो छे यि ड के दि यीस् नि
महादुन्दुभि के इस नाद को सुनकर

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཚངས་པའི་དབྱངས་ལྡན་གྱུར། །
सेम चेन थम चे छ़ङ पई यङ देन ग्युर
सभी सत्त्व ब्रह्मघोष युक्त हों।

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་དགེ་བ་བསྐོར་གྱུར་ཅིག །
छोस् क्यि खोर लो गे व कोर ग्युर चिग
शुभ धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करें।4।

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་ཆོས་ཀྱང་སྟོན་གྱུར་ཅིག །
डो ल फेन छिर छोस् क्यङ तोन ग्युर चिग
जगत हित के लिये धर्म की देशना भी करें

།འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་ཞི་གྱུར་ཅིག །
दोद् छग शे दङ ति मुग शि ग्युर चिग
राग-द्वेष, मोह शान्त करें।5।

རུས་པའི་ལུས་ལ་མེ་ལྕེ་རབ་འབར་བ། །
रुस् पई लुस् ल मे चे रप बर व
अग्नि शरीर को जलाते हुये अस्थि तक पहुँचा है।

སངས་རྒྱས་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་ཚིག་ཐོས་ཤོག །
सङ ग्येस् छग छ़ल लो शेस् छ़िग थोस् शोग
जिससे बुद्ध-प्रणाम- ऐसा शब्द-घोष हो रहा है।6।

སྐྱེ་བ་སྟོང་ཕྲག་ཚེ་བར་སྐྱེ་དྲན་ཤོག །
क्ये व तोङ ठग छे बर क्ये डेन शोग
सहस्र जन्मों का स्मरण करें।

དེ་དག་གིས་ནི་རྒྱ་ཆེན་གསུང་ཐོས་ཤོག །
दे दग गीस् नि ग्य छेन सुङ थोस् शोग
उनसे उदार वचनों को सुनें।7।

སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་རྟག་ཏུ་འགྲོགས་རྙེད་འགྱུར། །
सङ ग्येस् नम दङ तग तु डोग ञेद् ग्युर
सदैव बुद्धों के साथ समागम हो।

སྡིག་པའི་ལས་རྣམས་རྣམ་པར་སྤོང་བར་ཤོག །
दिग पई लेस नम नम पर पोङ बर शोग
सभी पाप कर्म विवर्जित हों

བྱ་བ་དགེ་བ་རྣམས་ནི་སྤྱོད་གྱུར་ཅིག །
छ व गे व नम नि चोद् ग्युर चिग
कुशल क्रियाओं की चर्या करें।8।

ཞིང་རྣམས་ཀུན་ན་སོག་ཆགས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
शिङ नम कुन न सोग छग थम चे क्यङ
सर्व क्षेत्रों के समस्त प्राणियों के

འཇིག་རྟེན་དག་ན་སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ཞི་གྱུར། །
जिग तेन दग न दुग ङ्ल कुन शि ग्युर
जगत के सभी दुःख शान्त हों।

སེམས་ཅན་དབང་པོ་མ་ཚང་ཡན་ལག་ཉམས། །
सेम चेन वङ पो म छ़ङ येन लग ञम
प्राणी जो अपंग, विकलेन्द्रिय हैं

དེ་ཀུན་དེ་རིང་དབང་པོ་ཚང་བར་ཤོག །
दे कुन दे रिङ वङ पो छ़ङ बर शोग
वे सभी भी आज से सकलेन्द्रिय बनें।9।

གང་དག་ནད་བཏབ་ཉམ་ཆུང་ལུས་ཉམས་དང་། །
गङ दग ने तप ञम छुङ लुस् ञम दङ
जो रोग-ग्रस्त दुर्बल शरीर के साथ हैं

ཕྱོགས་བཅུ་དག་ན་སྐྱབས་མེད་གྱུར་པ་རྣམས། །
छोग चु दग न क्यप मेद् ग्युर प नम
दश दिशाओं में जो अनाथ हैं।

དེ་ཀུན་མྱུར་དུ་ནད་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིག །
दे कुन न्युर दु ने लेस थर ग्युर चिग
वे सभी रोग से मुक्त हो जाये

ནད་མེད་སྟོབས་དང་དབང་པོ་རྙེད་པར་ཤོག །
ने मेद् तोप दङ वङ पो ञेद् पर शोग
निरोग, बल और इन्द्रियों का लाभ करें।10।

གང་དག་རྒྱལ་པོ་ཆོམ་རྐུན་དགྲས་བརྡིགས་བསད་ཐུག་དང་། །
गङ दग ग्यल पो छोम कुन डेस् बदिग से थुग दङ
जो राजा, चोर, शत्रु ताडित या वध करने की स्थिति में पहँचा हो

སྡུག་བསྔལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བརྒྱ་ཡིས་ཕོངས་གྱུར་པ། །
दुग ङ्ल नम प न छ़ोग ग्य यीस् फोङ ग्युर प
विभिन्न सैंकड़ों विपदाओं से गिरा हो।

སེམས་ཅན་ཉམ་ཐག་གྱུར་ཅིང་སྡུག་བསྔལ་དེ་དག་ཀུན། །
सेम चेन ञम थग ग्युर चिङ दुग ङ्ल दे दग कुन
सत्त्व जो असह्य एवं दुःख भरी स्थिति में हो

འཇིགས་མཆོག་མི་བཟད་བརྒྱ་པོ་དག་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིག །
जिग छोग मि ज़े ग्य पो दग लेस थर ग्युर चिग
सैंकड़ों परम घोर भयों से वे मुक्त हों।11।

གང་དག་བརྡེགས་ཤིང་བཅིངས་པས་བཅིངས་གཟིར་བ།།
गङ दग देग शिङ चिङ पेस् चिङ ज़िर व
जो प्रताडित बन्धन से बन्धित होकर आक्रान्त हैं

ཕོངས་པ་སྣ་ཚོགས་དག་ན་གནས་གྱུར་ཅིང་། །
फोङ प न छ़ोग दग न नेस ग्युर चिङ
विभिन्न विपदाओं में स्थित हैं।

ཉོན་མོངས་སྟོང་ཕྲག་དུ་མས་དཀྲུགས་ནས་ཀྱང་། །
ञोन मोङ तोङ ठग दु मेस दटुग नेस् क्यङ
अनेक सहस्रों क्लेशों से व्याकुल हैं

འཇིགས་པ་མི་བཟད་མྱ་ངན་སྣ་ཚོགས་སྐྱེད། །
जिग प मि ज़े न्य ङेन न छ़ोग ञेद्
विचित्र घोर भय शोक प्राप्त है।12।

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཅིངས་ལས་གྲོལ་གྱུར་ཅིག །
दे दग थम चे चिङ लेस डोल ग्युर चिग
वे सभी बन्धन से मुक्त हों

བརྡེགས་པ་དག་ནི་བརྡེགས་ལས་ཐར་བར་ཤོག །
देग प दग नि देग लेस थर बर शोग
प्रताडित लोग ताडन से मुक्त हों।

བསད་པ་རྣམས་ཀྱང་སྲོག་དང་ལྡན་གྱུར་ཅིག །
से प नम क्यङ सोग दङ देन ग्युर चिग
वध हुये भी जीवित हो जायें

ཕོངས་གྱུར་ཐམས་ཅད་འཇིགས་པ་མེད་པར་ཤོག །
फोङ ग्युर थम चे जिग प मेद् पर शोग
विपाद् से गिरे भी सभी भय रहित हों।13।

སེམས་ཅན་གང་དག་བཀྲེས་སྐྱེད་སྐོམ་གྱིས་གཟིར། །
सेम चेन गङ दग टेस् सेद् कोम ग्यीस् ज़िर
सत्त्व जो भूख-प्यास प्रभावित हैं

དེ་དག་ཟས་སྐོམ་སྣ་ཚོགས་རྙེད་པར་ཤོག །
दे दग ज़ेस् कोम न छ़ोग ञेद् पर शोग
वे विविध खाद्य-पेय प्राप्त करें।

ལོང་བས་གཟུགས་རྣམས་སྣ་ཚོགས་མཐོང་གྱུར་ཅིག །
लोङ वे ज़ुग नम न छ़ोग थोङ ग्युर चिग
बधिर मनोहर शब्द सुनें

འོན་པས་ཡིད་འོང་སྒྲ་རྣམས་ཐོས་པར་ཤོག །
ह़ोन पेस् यिद् ह़ोङ ड नम थोस् पर शोग
अन्धे विश्व रूप को देखें।14।

གཅེར་བུ་རྣམས་ཀྱིས་སྣ་ཚོགས་གོས་རྙེད་གྱུར། །
चेर बु नम क्यीस् न छ़ोग गोस् ञेद् ग्युर
नंगे विभिन्न वस्त्रों को प्राप्त करें

སེམས་ཅན་དབུལ་པོས་གཏེར་རྣམས་རྙེད་པར་ཤོག །
सेम चेन उल पोस् तेर नम ञेद् पर शोग
दरिद्र निधि को प्राप्त करें।

ནོར་འབྲུ་རིན་ཆེན་སྣ་ཚོགས་མང་པོ་ཡིས། །
नोर डु रिन छेन न छ़ोग मङ पो यीस्
विभिन्न धन, अन्न और रत्न-समूहों से

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་དང་ལྡན་པར་ཤོག །
सेम चेन थम चे दे दङ देन पर शोग
समस्त सत्त्व सुखी हो जाये।15।

གང་ཡང་སྡུག་བསྔལ་ཚོར་བས་གནོད་མ་གྱུར། །
गङ यङ दुग ङल छ़ोर वे गनोद् म ग्युर
कोई भी दुःख-सन्ताप न हों

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བལྟ་ན་སྡུག་པ་དང་། །
सेम चेन थम चे त न दुग प दङ
सभी सत्त्व देखने में सुन्दर हों।

གཟུགས་བཟང་མཛེས་ཤིང་ཚུལ་དུ་ཤིས་པར་ཤོག །
ज़ुग ज़ङ ज़ेस् शिङ छुल दु शीस् पर शोग
सुरूप, सुन्दर विधिवत हों

ཡིད་ཀྱིས་ཟས་སྐོམ་རབ་འབྱོར་བསོད་ནམས་དག །
यिद् क्यीस् ज़ेस् कोम रप छोर सोद् नम दग
मन के द्वारा खान-पान समृद्धि-पुण्य आदि

རྫ་ཛ་ཅང་ཏེའུ་པི་ཝང་སྒྲ་སྙན་དང་། །
ज़ ङ चङ तेहु पि वङ ड ञेन दङ
पणव, मृदङ्ग, वीणा सुघोष

གསེར་གྱི་པདྨ་ཨུཏྤལ་འདབ་མ་ཅན། །
सेर ग्यि पेमा उत्पल दप म चेन
सुवर्ण-पद्म उत्पल-पद्मिनी

རྒྱན་གསེར་རིན་ཆེན་སྣ་ཚོགས་བཻཌཱུརྻ། །
ग्येन सेर रिन छेन न छोग बैदूर्य
अलंकार, सुवर्ण, विविध रत्न, वैडुर्य

འཇིག་རྟེན་གང་ནའང་སྡུག་བསྔལ་སྒྲ་མ་ཆུང་། །
जिग तेन गङ नहङ दुग ङल ड म छुङ
जगत के किसी कोने में भी दुःख शब्द न रहे

དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཁ་དོག་རྒྱ་ཆེན་དང་། །
दे दग थम चे ख दोग ग्य छेन दङ
वे सभी उदार वर्ण हो

མི་ཡི་འཇིག་རྟེན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་གང་ཡོད། །
मि यि जिग तेन फुन सुम छोग गङ योद्
मनुष्य लोक मे जो भी ऐश्वर्य श्री हो

བསམ་པ་ཐམས་ཅད་བསམ་མ་ཐག་ཏུ་ཡང་། །
सम प थम चे सम म थग तु यङ
सभी मनोकामनाये सोचने मात्र से ही

རྟག་ཏུ་བདེ་བ་དུ་མ་སོགས་གྱུར་ཅིག །
तग तु दे व दु म सोग ग्युर चिग
सदैव वे अनेक सुखों से सम्पन्न हो।16।

བསམ་མ་ཐག་ཏུ་དེ་དག་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
सम म थग तु दे दग डुप ग्युर चिग
विचार मात्र से सिद्ध हो जाये।

ཆུ་མིག་མཚེའུ་དང་རྫིང་བུ་ལྟེང་ཀ་དག །
छु मिग छेहु दङ ज़िङ बु तेङ क दग
उत्स, सरोवर पुष्करणी, तडाक।17।

ཟས་སྐོམ་གོས་ནོར་མུ་ཏིག་ནོར་བུ་དབྱིག །
ज़ेस् कोम गोस् नोर मु तिग नोर बु यिग
खाद्य, पान, वस्त्र, मणि, मोती, रत्न

དེ་དག་བསམ་པ་ཐག་ཏུ་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
दे दग सम प थग तु डुप ग्युर चिग
वे सभी विचार मात्र से सिद्ध हों।18।

སེམས་ཅན་གཅིག་ཀྱང་མི་འཐོད་མཐོང་མ་གྱུར། །
सेम चेन चिग क्यङ मि ठोद् थोङ म ग्युर
एक भी प्राणी प्रतिकूल न दिखे।

ཕན་ཚུན་དུ་ནི་འོད་འབྱེད་གྱུར་པར་ཤོག །
फेन छुन दु नि होद् छेद् ग्युर पर शोग
आपस में प्रकाशित करें।19।

དེ་དག་བསམ་པར་སྐྱེ་བ་དེ་དག་གྱུར། །
दे दग सम पर क्ये व दे दग ग्युर
वे सभी विचार मात्र से प्राप्त हों।

བསོད་ནམས་འབྲས་བུ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་ཤོག །
सोद् नम डेस् बु योङ सु ज़ोग पर शोग
पुण्य परिणाम सहित परिपूर्ण हों।20।

སྤོས་དང་ཕྲེང་བ་དག་དང་བྱུག་པ་དང་། །
पोस् दङ ठेङ व दग दङ छुग प दङ
गन्ध, माला, विलेपन और

གོས་དང་ཕྱེ་མ་མེ་ཏོག་སྣ་ཚོགས་དག །
गोस् दङ छे म मे तोग न ़छोग दग
वस्त्र, चूर्ण, विचित्र पुष्प।

ལྗོན་ཤིང་དག་ལས་དུས་གསུམ་འབབ་པར་ཤོག །
जोन शिङ दग लेस दुस् सुम बप पर शोग
वृक्षों से तीनों कालों में बरसते रहें

སེམས་ཅན་དེ་དག་ལེན་ཅིང་དགར་གྱུར་ཅིག །
सेम चेन दे दग लेन चिङ गर ग्युर चिग
सत्त्व उस ग्रहण कर आनन्दित होते रहें।21।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བསམ་ཡས་ཐམས་ཅད་དང་། །
दे शिन शेग प सम येस् थम चे दङ
समस्त अचिन्त्य तथागत और

རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཉན་ཐོས་དང་། །
जोग पई छङ छुप सेम पा ञेन थोस् दङ
सम्बोधि सत्त्व, श्रावक।

རྡུལ་བྲལ་དྲི་མེད་བརྟན་པའི་ཆོས་ལ་ཡང་། །
दुल डल डि मेद् तेन पई छोस् ल यङ
रज रहित निर्मल ध्रुव धर्म को भी

ཕྱོགས་བཅུ་རྣམས་སུ་མཆོད་པ་བྱེད་པར་ཤོག །
छोग चु नम सु छोद् प छेद् पर शोग
दश दिशाओं में पूजा होते रहे।22।

འགྲོ་བ་དམན་པ་ཐམས་ཅད་སྤོང་གྱུར་ཅིག །
डो व मेन प थम चे पोङ ग्युर चिग
सत्त्व अधो गति का त्याग करें

མི་ཁོམ་བརྒྱད་པོ་དག་ལས་འདས་པར་ཤོག །
मि खोम ग्ये पो दग लेस देस् पर शोग
अष्ट-क्षणों से अतीत हो जायें।

དལ་བའི་རྒྱལ་པོ་དམ་པ་ཐོབ་པར་ཤོག །
दल बई ग्यल पो दम प थोप पर शोग
उत्तर आठ-क्षण को प्राप्त करें

རྟག་ཏུ་སངས་རྒྱས་འགྲོགས་པ་ཐོབ་པར་ཤོག །
तग तु सङ ग्येस् डोग प थोप पर शोग
सदैव बुद्धों का समागम हों।23।

རྟག་ཏུ་མཐོན་པོའི་རིགས་སུ་སྐྱེ་བར་ཤོག །
तग तु थोन पोइ रिग सु क्ये बर शोग
सदा उच्च कुल में जन्म लेऊँ

ནོར་དང་འབྲུ་ཡི་མཛོད་རྣམས་འཕྱོར་གྱུར་ཅིག །
नोर दङ डु यि ज़ोद् नम छोर ग्युर चिग
सम्पत्ति व अन्न-भण्डार मिलते रहें।

སྙན་དང་གྲགས་དང་གཟུགས་དང་ཁ་དོག་གིས། །
ञेन दङ डग दङ ज़ुग दङ ख दोग गीस्
यश, प्रसिद्धि, रूप सुवर्ण आदि के द्वारा

བསྐལ་པ་དུ་མར་ལེགས་པར་བརྒྱན་པར་ཤོག །
कल प दु मर लेग पर ग्येन पर शोग
अनेक कल्पों तक सुशोभित होता रहूँ।24।

བུད་མེད་ཐམས་ཅད་རྟག་ཏུ་ཕོར་གྱུར་ཅིག །
बुद् मेद् थम चे तग तु फोर ग्युर चिग
सभी स्त्रियाँ सदैव पुरुष बने तथा

དཔའ་ཞིང་བརྟུལ་ཕོད་མཁས་ཤིང་གསལ་བར་ཤོག །
पा शिङ तुल फोद् खेस् शिङ सल वर शोग
शूरवीर, विद्वान् और पण्डित बनें।

དེ་ཀུན་རྟག་ཏུ་བྱང་ཆུབ་ཕྱིར་སྤྱོད་གྱུར། །
दे कुन तग तु छङ छुप छिर चोद् ग्युर
वे सदैव बोधि के लिये चर्या करें

ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
फ रोल छिन प डुग ल चोद् पर शोग
षट् पारमिताओं की चर्या करें।25।

ཕྱོགས་བཅུ་དག་ན་རིན་ཆེན་ཤིང་དབང་དྲུང་། །
छोग चु दग न रिन छेन शिङ वङ डुङ
दशों दिशाओं में मूल्यवान् वृक्षों के नीचे

སངས་རྒྱས་བདེ་བཞུགས་རིན་ཆེན་བཻ་ཌཱུརྱའི། །
सङ ग्येस् दे शुग रिन छेन बैदूर्यई
बुद्ध, सुखपूर्वक रत्न-वैडूर्याओं से निर्मित।

ཁྲི་ལ་བཞུགས་པ་དག་ནི་མཐོང་གྱུར་ཅིག །
ठि ल शुग प दग नि थोङ ग्युर चिग
आसन पर स्थित दर्शन कर तथा

ཆོས་བསྟན་པ་ཡང་དེ་དག་ཐོས་པར་ཤོག །
छोस् तेन प यङ दे दग थोस् पर शोग
उनके द्वारा देशित धर्मों को भी सुनूँ।26।

ཞེས་དང་། ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱིས་ཀྱང་། །
लुस् दङ ङग दङ यिद् क्यीस् क्यङ
ऐसा और-शरीर, वचन और मन के द्वारा

བདག་གིས་བསོད་ནམས་གང་བསྒྲུབ་པ། །
दग गीस् सोद् नम गङ डुप प
जो भी मैंने पुण्य अर्जित किया है।

བདག་ནི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དེས། །
दग नि गे बई त्स व देस्
मेरे उस मूल कुशल से

བྱང་ཆུབ་མཆོག་ལ་རེག་པར་བགྱི། །
छङ छुप छोग ल रेग पर ग्यि
उत्तम बोधि का स्पर्श करुँ।27।

རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་མཆོག་བཅུ་པོ། །
रिन छेन छुङ नेस छोग चु पो
रत्नाकर दस उत्तम स्थान अर्थात्

ས་བཅུ་ལ་ནི་གནས་པར་བགྱི། །
स चु ल नि नेस पर ग्यि
दस भूमियों में स्थित होऊँ।

སངས་རྒྱས་ཡོན་ཏན་སྣང་བར་བགྱི། །
सङ ग्येस् योन तेन नङ वर ग्यि
बुद्ध गुणों को आभासित कर

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་བསྒྲལ་བར་བགྱི། །
सिद् पई छो लेस डल बर ग्यि
भवसागर को पार करुँ।28।

སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོ་ཆུ་བོ་དང་། །
सङ ग्येस् ग्य छो छु बो दङ
बुद्ध समुद्र रूपी भरा सागर

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་ཟབ་མོ་དེ། །
योन तेन ग्य छो ज़प मो दे
गम्भीर गुण-सागर के द्वारा।

སངས་རྒྱས་ཡོན་ཏན་བསམ་ཡས་ཀྱིས། །
सङ ग्येस् योन तेन सम येस् क्यीस्
अचिन्त्य बुद्ध गुणों से

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་དུ་རྫོགས་པར་བགྱི། །
थम चे ख्येन दु ज़ोग पर ग्यि
सर्वज्ञता को सम्पन्न करुँ।29।

ཏིང་འཛིན་བརྒྱ་ཕྲག་སྟོང་རྣམས་དང་། །
तिङ ज़िन ग्य ठग तोङ नम दङ
**समाधि शत-सहस्र**

གཟུངས་རྣམ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་དང་། །
ज़ुङ नम सम ग्यीस् मि ख्यप दङ
**अचिन्त्य धारणियाँ।**

དབང་སྟོབས་བྱང་ཆུབ་ཡན་ལག་གིས། །
वङ तोप छङ छुप येन लग गीस्
**इन्द्रिय, बल और बोध्यंगों के द्वारा**

སྟོབས་བཅུ་དམ་པར་འགྱུར་བར་བགྱི། །
तोप चु दम पर ग्युर बर ग्यि
**दश बलोत्तम को प्राप्त करूँ।**30।

ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །
ऐसा आया है।

# དབུ་མ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་ལས་གསུངས་པ།
# रत्नमाला में आये प्रणिधान

འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས་ཀྱིས་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་ལས་གསུངས་པའི་སྨོན་ལམ་ནི།
रत्नमाला में आर्य नागार्जुन पाद द्वारा किया गया प्रणिधान

དེ་ལྟར་བགྱིས་པའི་བསོད་ནམས་དང་། །
दे तर ग्यीस् पई सोद् नम दङ
इस प्रकार किये इस पुण्य से तथा

བདག་གིས་བགྱིས་དང་མ་བགྱིས་གང་། །
दग गीस् ग्यीस् दङ म ग्यीस् गङ
मेरे द्वारा पूर्वकृत वैसे किये जाने वाले।

དེས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
देस् नि सेम चे थम चे क्यङ
उससे समस्त प्राणी

བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་སེམས་ལྡན་ཤོག །
ल मेद् छङ छुप सेम देन शोग
अनुत्तर बोधिचित्त से युक्त हों।1।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དྲི་མེད་དབང་། །
सेम चेन थम चे डि मेद् वङ
सभी प्राणियों के इन्द्रियाँ विमल हों

ཡོངས་རྫོགས་མི་ཁོམ་ཀུན་འདས་ཤིང་། །
योङ ज़ोग मि खोम कुन देस् शिङ
सभी अक्षणों से मुक्त हों।

སྤྱོད་པ་རང་དབང་ཡོད་པ་དང་། །
चोद् प रङ वङ योद् प दङ
चर्यायों में स्वतन्त्र हों

འཚོ་བ་བཟང་དང་ལྡན་པར་ཤོག །
छो व ज़ङ दङ देन पर शोग
शुभ जीविका से युक्त हों।2।

ལུས་ཅན་དག་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
लुस् चेन दग नि थम चे क्यङ
सभी शरीरधारियों के

ལག་ན་རིན་ཆེན་ཉིད་ལྡན་ཞིང་། །
लग न रिन छेन ञिद् देन शिङ
हाथों में रत्न रहे।

ཡོ་བྱད་ཐམས་ཅད་མཐའ་ཡས་པ། །
यो छे थम चे था येस् प
अनन्त उपकरण

འཁོར་བ་སྲིད་དུ་མི་ཟད་ཤོག །
खोर व सिद् दु मि ज़े शोग
जब तक संसार में हैं, अक्षय बना रहे।3।

བུད་མེད་ཐམས་ཅད་དུས་ཀུན་ཏུ། །
बुद् मेद् थम चे दुस् कुन तु
समस्त स्त्रियाँ सदैव

སྐྱེས་མཆོག་ཉིད་དུ་འགྱུར་བར་ཤོག །
क्येस् छोग ञिद् दु ग्युर बर शोग
उत्तम-पुरुष (बुद्ध) बनें।

ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་རིག་པ་དང་། །
लुस् चेन थम चे रिग प दङ
सभी शरीरधारी विद्या और

རྐང་པར་ལྡན་པ་ཉིད་དུ་ཤོག །
कङ पर देन प ञिद् दु शोग
आचरणशील बनें।4।

ལུས་ཅན་ཁ་དོག་ལྡན་པ་དང་། །
लुस् चेन ख दोग देन प दङ
शरीरधारी वर्ण युक्त हों

གཟུགས་བཟང་གཟི་བརྗིད་ཆེ་བ་དང་། །
ज़ुग ज़ङ ज़ि जिद् छे व दङ
सुरूपी महा तेजस्वी बनें।

བལྟ་ན་སྡུག་ཅིང་ནད་མེད་དང་། །
त न दुग चिङ ने मेद् दङ
शक्तिशाली,

སྟོབས་ཆེན་ཚེ་དང་ལྡན་པར་ཤོག །
तोप छेन छ़े दङ देन पर शोग
आयुष्मान् बनें।5।

ཐམས་ཅད་ཐབས་ལ་མཁས་གྱུར་ཏེ། །
थम चे थप ल खेस् ग्युर ते
सभी उपाय-कुशल बनें

སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ལས་ཐར་བ་དང་། །
दुग ङल कुन लेस थर व दङ
समस्त दुःखों से मुक्त हों।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་གཞོལ་བ་དང་། །
कोन छोग सुम ल शोल व दङ
त्रिरत्न में प्रवृत्त हों

སངས་རྒྱས་ཆོས་ནོར་ཆེ་ལྡན་ཤོག །
सङ ग्येस् छोस् नोर छे देन शोग
बुद्ध-धर्म का धनी हों।6।

བྱམས་དང་སྙིང་རྗེ་དགའ་བ་དང་། །
छम दङ ञिङ जे गा व दङ
मैत्री, करुणा, हर्ष और

ཉོན་མོངས་བཏང་སྙོམས་གནས་པ་དང་། །
ञोन मोङ तङ ञोम नेस प दङ
क्लेश में उपेक्षा-भाव रहे।

སྦྱིན་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་བཟོད་བརྩོན་འགྲུས། །
छिन दङ छ़ुल ठिम ज़ोद् त्सोन डुस्
दान, शील, क्षान्ति, वीर्य

བསམ་གཏན་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྒྱན་ཅིང་། །
सम तेन शेस् रप क्यीस् ग्येन चिङ
समाधि और प्रज्ञा-अलंकारों से अलंकृत हों।7।

ཚོགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་རྫོགས་ཏེ། །
छ़ोग नम थम चे योङ ज़ोग ते
सभी संभार सम्पूर्ण हों

མཚན་དང་དཔེ་བྱད་གསལ་བ་དང་། །
छ़ेन दङ पे छे सल व दङ
लक्षण एवं अनुव्यञ्जन स्पष्ट हों।

བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ས་བཅུ་དག །
सम ग्यीस् मि ख्यप स चु दग
अचिन्त्य दस भूमियाँ का

རྒྱུན་མི་འཆད་པར་བགྲོད་པར་ཤོག །
ग्युन मि छे पर डोद् पर शोग
सतत पारगमन हों।8।

བདག་ཀྱང་ཡོན་ཏན་དེ་དག་དང་། །
दग क्यङ योन तेन दे दग दङ
मै भी उन गुणों से तथा

གཞན་ཀུན་གྱིས་ཀྱང་བརྒྱན་ལྡན་ཏེ། །
शेन कुन ग्यीस् क्यङ ग्येन देन ते
अन्य सभी सत्त्व भी उससे अलंकृत हों।

ཉེས་པ་ཀུན་ལས་གྲོལ་བ་དང་། །
ञेस् प कुन लेस डोल व दङ
सभी दोषों से मुक्त हों

སེམས་ཅན་ཀུན་མཆོག་བྱམས་པ་དང་། །
सेम चेन कुन छोग छम प दङ
समस्त सत्त्वों के उत्तम मैत्री हो।9।

སེམས་ཅན་ཀུན་ཡིད་རེ་བ་ཡི། །
सेम चेन कुन यिद् रे व यि
सभी सत्त्वों की मनोकामनायें

བསམ་པ་ཐམས་ཅད་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། །
सम प थम चे ज़ोग ग्यिद् चिङ
इच्छानुसार पूर्ण कर।

རྟག་ཏུ་ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
तग तु लुस् चेन थम चे क्यि
मैं सदा शरीरधारियों का

སྡུག་བསྔལ་སེལ་བར་བྱེད་པར་ཤོག །
दुग ङल सेल बर ग्यिद् पर शोग
दुःख दूर करने वाला बनूँ।10।

འཇིག་རྟེན་ཀུན་ན་སྐྱེ་བོ་གང་། །
जिग तेन कुन न क्ये बो गङ
लोक में जितने भी प्राणी हैं

སུ་དག་འཇིགས་པས་སྐྱོ་བ་དེ། །
सु दग जिग पेस् क्यो व दे
जो भय से खिन्न हैं।

བདག་གི་མིང་ཙམ་ཐོས་པས་ཀྱང་། །
दग गि मिङ त्सम थोस् पेस् क्यङ
मेरे नाम मात्र के श्रवण से

ཤིན་ཏུ་འཇིགས་པ་མེད་པར་ཤོག །
शिन तु जिग प मेद् पर शोग
अत्यन्त भय रहित हो जायें।11।

བདག་ནི་མཐོང་དང་དྲན་པ་དང་། །
दग नि थोङ दङ डेन प दङ
मेरे दर्शन से, स्मरण से

མིང་ཙམ་ཐོས་པས་སྐྱེ་བོ་རྣམས། །
मिङ त्सम थोस् पेस् क्ये बो नम
नाम मात्र का श्रवण करने से।

རབ་དང་འཁྲུག་མེད་རྣལ་མ་དང་། །
रप दङ ठुग मेद् नल म दङ
प्रसन्न, अक्षुब्ध, शान्त

རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ངེས་པ་དང་། །
ज़ोग पई छङ छुप ङेस् प दङ
सम्बोधि में नियत।12।

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་རྗེས་འབྲང་བའི། །
छे रप कुन तु जेस् डङ बई
जन्म-जन्मान्तरों को स्मरण करने वाली

མངོན་ཤེས་ལྔ་པོ་ཐོབ་པར་ཤོག །
ङोन शेस् ङ पो थोप पर शोग
पंच अभिज्ञायें प्राप्त हों।

སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་རྣམ་ཀུན་ཏུ། །
सेम चेन कुन ल नम कुन तु
समस्त सत्त्वों के सदैव

རྟག་ཏུ་ཕན་བདེ་བགྱིད་པར་ཤོག །
तग तु फेन दे ग्यिद् पर शोग
कल्याण और सुख उपलब्ध कराऊँ।13।

འཇིག་རྟེན་ཀུན་ལ་སྐྱེ་བོ་གང་། །
जिग तेन कुन ल क्ये बो गङ
लोक में जो व्यक्ति

སྡིག་པ་བྱེད་པར་འདོད་གྱུར་པ། །
दिग प छेद् पर दोद् ग्युर प
पाप करने की इच्छा करे।

དེ་དག་ཐམས་ཅད་གནོད་མེད་པར། །
दे दग थम चे गनोद् मेद् पर
वे सभी शान्ति पहुँचाने के विचार से

རྟག་ཏུ་ཅིག་ཅར་ལྡོག་གྱུར་ཅིག །
तग तु चिग चर दोग ग्युर चिग
तुरन्त सदा के लिये निवृत्त हों।14।

ས་དང་ཆུ་དང་མེ་དང་རླུང་། །
स दङ छु दङ मे दङ लुङ
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु

སྨན་དང་དགོན་པའི་ཤིང་བཞིན་དུ། །
मेन दङ गोन पई शिङ शिन दु
औषधि, एकान्त में स्थित वृक्ष आदि।

རྟག་ཏུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
तग तु सेम चेन थम चे क्यीस्
सदैव सभी सत्त्वों द्वारा

རང་དགར་དགག་མེད་སྤྱོད་གྱུར་ཤོག །
रङ गर गग मेद् चोद् छर शोग
स्वेच्छा से विना बाधा उपभोग करेंष15।

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་སྲོག་བཞིན་ཕངས། །
सेम चेन नम ल सोग शिन फङ
सभी सत्त्वों को अपने प्राण सदृश प्यार करूँ

བདག་ལས་དེ་དག་ཆེས་ཕངས་ཤོག །
दग लेस दे दग छेस् फङ शोग
अपने से भी ज्यादा उनको दुलारुँ।

བདག་ལ་དེ་དག་སྡིག་སྨིན་ཅིང་། །
दग ल दे दग दिग मिन चिङ
उनके सभी पाप मेरे ऊपर फलें, पकें

བདག་དགེ་མ་ལུས་དེར་སྨིན་ཤོག །
दग गे म लुस् देर मिन शोग
मेरे अशेष कुशल उन पर पके, फलें।16।

ཇི་སྲིད་སེམས་ཅན་འགའ་ཞིག་ཀྱང་། །
जि सिद् सेम चेन गा शिग क्यङ
जब तक एक प्राणी भी

གང་དུ་མ་གྲོལ་དེ་སྲིད་དུ། །
गङ दु म डोल दे सिद् दु
मुक्त न हो अर्थात् बचे रहें।

དེ་ཕྱིར་བླ་ན་མེད་པ་ཡི། །
दे छिर ल न मेद् प यि
**इस हेतु अनुत्तर**

བྱང་ཆུབ་ཐོབ་ཀྱང་གནས་གྱུར་ཅིག །ཅེས་དང་།
छङ छुप थोप क्यङ नेस ग्युर चिग
**बोधि की प्राप्ति होने पर भी मैं बना रहूँ।** 17।

## 19. སྨོན་ལམ་གྱི་ཡན་ལག །

## 19. प्रणिधान-अंग

ཇི་སྙེད་སུ་དག་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་ན། །
जि ञेद् सु दग छ्योग चुइ जिग तेन न
जितने भी जो भी दश दिशाओं के लोक हैं

དུས་གསུམ་གཤེགས་པ་མི་ཡི་སེང་གེ་ཀུན། །
दुस् सुम शेग प मि यि सेङ गे कुन
त्रिकालगत समस्त नरसिंह हैं।

བདག་གིས་མ་ལུས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ། །
दग गीस् म लुस् दे दग थम चे ल
मैं अशेष उन समस्त लोगों को

ལུས་དང་ངག་ཡིད་དང་བས་ཕྱག་བགྱིའོ། །
लुस् दङ ङग यिद् दङ वे छ्ग ग्यि ह़ो
काय, वाक्, चित्त प्रफुल्लित होक वन्दना करता हूँ।1।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་སྟོབས་དག་གིས། །
ज़ङ पो चोद् पई मोन लम तोप दग गीस्
भद्रचर्या प्रणिधान के बल से

རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཡིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ། །
ग्यल व थम चे यिद् क्यीस् ङोन सुम दु
मन के द्वारा समस्त जिनों के अभिमुख होकर।

ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་ལུས་རབ་བཏུད་པ་ཡིས། །
शिङ गि दुल ञेद् लुस् रप तुद् प यीस्
क्षेत्र के कणों के बराबर शरीर (निर्माण कर) श्रद्धापूर्वक

རྒྱལ་བ་ཀུན་ལ་རབ་ཏུ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल व कुन ल रप तु छ्ग छ़ल लो
समस्त जिनों को प्रणाम करता हूँ।2।

རྡུལ་གཅིག་སྟེང་ན་རྡུལ་སྙེད་སངས་རྒྱས་རྣམས། །
दुल चिग तेङ न दुल ञेद् सङ ग्येस् नम
एक कण के ऊपर (सभी) क्षेत्र-कण प्रमाण बुद्ध हैं

སངས་རྒྱས་སྲས་ཀྱི་དབུས་ན་བཞུགས་པ་དག །
सङ ग्येस् सेस् क्यि उस् न शुग प दग
(वे) बुद्ध-पुत्रों के मध्य विराजमान हैं।

དེ་ལྟར་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྣམས་མ་ལུས་པར། །
दे तर छ्योस् क्यि यिङ नम म लुस् पर
इस प्रकार अशेष धर्मधातु

ཐམས་ཅད་རྒྱལ་བ་དག་གིས་གང་བར་མོས། །
थम चे ग्यल व दग गीस् गङ बर मोस्
समस्त बुद्धों से भरे हैं- ऐसा अधिष्ठान करें।3।

དེ་དག་བསྔགས་པ་མི་ཟད་རྒྱ་མཚོ་རྣམས། །
दे दग ङग प मि ज़े ग्य छो नम
उनका सागर रूपी अक्षय स्तुति

དབྱངས་ཀྱི་ཡན་ལག་རྒྱ་མཚོའི་སྒྲ་ཀུན་གྱིས། །
यङ क्यि येन लग ग्य छोइ ड कुन ग्यीस्
समस्त स्वरांग समुद्र (सदृश) से।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་ཡོན་ཏན་རབ་བརྗོད་ཅིང་། །
ग्यल व कुन ग्यि योन तेन रप जोद् चिङ
सभी जिनों के गुणों का गान कर

བདེ་བར་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་བདག་གིས་བསྟོད། །
दे वर शेग प थम चे दग गीस् तोद्
समस्त सुगतों को मैं स्तुति करता हूँ।4।

མེ་ཏོག་དམ་པ་ཕྲེང་བ་དམ་པ་དང་། །
मे तोग दम प ठेङ व दम प दङ
उत्तम पुष्प, उत्तम माला

སིལ་སྙན་རྣམས་དང་བྱུག་པ་གདུགས་མཆོག་དང་། །
सिल ञेन नम दङ छुग प दुग छोग दङ
उत्तम वाद्य, लेपन और छत्र।

མར་མེ་མཆོག་དང་བདུག་སྤོས་དམ་པ་ཡིས། །
मर मे छोग दङ दुग पोस् दम प यीस्
उत्तम दीप, धूप, गन्धों के द्वारा

རྒྱལ་བ་དེ་དག་ལ་ནི་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व दे दग ल नि छोद् पर ग्यि
उन समस्त जिनों का पूजा करता हूँ।5।

ན་བཟའ་དམ་པ་རྣམས་དང་དྲི་མཆོག་དང་། །
न ज़ा दम प नम दङ डि छोग दङ
उत्कृष्ट वस्त्र, उत्कृष्ट गन्ध

ཕྱེ་མའི་ཕུར་མ་རི་རབ་མཉམ་པ་དང་། །
छे मई फुर म रि रप ञम प दङ
चूर्ण राशि मेरु समान।

བཀོད་པ་ཁྱད་པར་འཕགས་པའི་མཆོག་ཀུན་གྱིས། །
कोद् प ख्ये पर फग पई छोग कुन ग्यीस्
सर्वोत्तम विशिष्ट एवं भव्य व्यूह द्वारा

རྒྱལ་བ་དེ་དག་ལ་ཡང་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व दे दग ल यङ छोद् पर ग्यि
उन सभी जिनों की पूजा करता हूँ।6।

མཆོད་པ་གང་རྣམས་བླ་མེད་རྒྱ་ཆེ་བ། །
छोद् प गङ नम ल मेद् ग्य छे व
जो अनुत्तर एवं उदार विपुल पूजा है

དེ་དག་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་མོས། །
दे दग ग्यल व थम चे ल यङ मोस्
उसे भी समस्त जिनों को, अधिमुक्ति

བཟང་པོ་སྤྱོད་ལ་དད་པའི་སྟོབས་དག་གིས། །
ज़ङ पो चोद् ल दे पई तोप दग गीस्
एवं भद्रचर्या में श्रद्धा के बल से

རྒྱལ་བ་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व कुन ल छग छ़ल छोद् पर ग्यि
समस्त जिनों को वन्दना कर पूजता हूँ।7।

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་དབང་གིས་ནི། །
दोद् छग शे दङ ति मुग वङ गीस् नि
राग-द्वेष और मोह के वश से

ལུས་དང་ངག་དང་དེ་བཞིན་ཡིད་ཀྱིས་ཀྱང་། །
लुस् दङ ङग दङ दे शिन यिद् क्यीस् क्यङ
काय, वाक् तथैव चित्त के द्वारा।

སྡིག་པ་བདག་གིས་བགྱིས་པ་ཅི་མཆིས་པ། །
दिग प दग गीस् ग्यीस् प चि छीस् प
मेरे द्वारा जो भी पाप किये हों

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་གིས་སོ་སོར་བཤགས། །
दे दग थम चे दग गीस् सो सोर शग
उन सबका मैं एक-एक कर प्रायश्चित करता हूँ।8।

ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་ཀུན་དང་སངས་རྒྱས་སྲས། །
छोग चुइ ग्यल व कुन दङ सङ ग्येस् सेस्
दश दिशाओं के समस्त जिन, बुद्ध-बोधिसत्त्व

རང་རྒྱལ་རྣམས་དང་སློབ་དང་མི་སློབ་དང་། །
रङ ग्यल नम दङ लोप दङ मि लोप दङ
प्रत्येक-बुद्ध, शैक्ष और अशैक्षों तथा

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་བསོད་ནམས་གང་ལ་ཡང་། །
डो व कुन ग्यि सोद् नम गङ ल यङ
समस्त जगत का जो भी पुण्य है

དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་བདག་ཡི་རང་། །
दे दग कुन ग्यि जेस् सु दग यि रङ
उन सबका मैं अनुमोदन करता हूँ।9।

གང་རྣམས་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་སྒྲོན་མ་དག །
गङ नम छोग चुइ जिग तेन डोन म दग
जितने भी दश दिशाओं के लोक-मशाल हैं

བྱང་ཆུབ་རིམ་པར་སངས་རྒྱས་མ་ཆགས་བརྙེས། །
छङ छुप रिम पर सङ ग्येस् म छग ञेस्
बोधिक्रम में अकाम बुद्धत्व को प्राप्त किये हैं

མགོན་པོ་དེ་དག་བདག་གིས་ཐམས་ཅད་ལ། །
गोन पो दे दग दग गीस् थम चे ल
उन सभी नाथों को मैं

འཁོར་ལོ་བླ་ན་མེད་པར་བསྐོར་བར་བསྐུལ། །
खोर लो ल न मेद् पर कोर बर कुल
धर्मचक्र प्रवर्त्तन के लिये अध्येषणा करता हूँ।10।

མྱ་ངན་འདའ་སྟོན་གང་བཞེད་དེ་དག་ལ། །
न्य ङेन दा तोन गङ शेद् दे दग ल
परिनिर्वाण की कामना करने वालों को

འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཕན་ཞིང་བདེ་བའི་ཕྱིར། །
डो व कुन ल फेन शिङ दे वई छिर
समस्त जगत के कल्याण और सुख के लिये।

བསྐལ་པ་ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་བཞུགས་པར་ཡང་། །
कल प शिङ गि दुल ञेद् शुग पर यङ
क्षेत्रों के कण प्रमाण कल्प जीयें तदर्थ

བདག་གིས་ཐལ་མོ་རབ་སྦྱར་གསོལ་བར་བགྱི། །
दग गीस् थल मो रप छर सोल बर ग्यि
मैं प्राञ्जलिबद्ध अभ्यर्थना करता हूँ।11।

ཕྱག་འཚལ་བ་དང་མཆོད་ཅིང་བཤགས་པ་དང་། །
छग छ़ल व दङ छोद् चिङ शग प दङ
वन्दना, पूजा, प्रायश्चित

རྗེས་སུ་ཡི་རང་བསྐུལ་ཞིང་གསོལ་བ་ཡི། །
जेस् सु यि रङ कुल शिङ सोल व यि
अनुमोदन, अध्येक्षणा, अभ्यर्थना

དགེ་བ་ཆུང་ཟད་བདག་གིས་ཅི་བསགས་པ། །
गे व चुङ ज़े दग गीस् चि सग प
अर्थात् अल्पकालिक जो भी मैंने कुशल का संचय किया

ཐམས་ཅད་བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་ཕྱིར་བསྔོའོ། །
थम चे दग गीस् छङ छुप छिर ङोह्रो
उन सबको मैं बोधि हेतु परिणामना करता हूँ।12।

འདས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་ཕྱོགས་བཅུ་ཡི། །
देस् पई सङ ग्येस् नम दङ छोग चु यि
अतीत बुद्धों एवं दश दिशाओं के

འཇིག་རྟེན་དག་ན་གང་བཞུགས་མཆོད་པར་གྱུར། །
जिग तेन दग न गङ शुग छोद् पर ग्युर
लोक में जो विराजमान हैं, पूजा करता हूँ।

གང་ཡང་མ་བྱོན་དེ་དག་རབ་མྱུར་བར། །
गङ यङ म छोन दे दग रप न्युर बर
वे जो अनागत हैं अतिशीघ्र

བསམ་རྫོགས་བྱང་ཆུབ་རིམ་པར་སངས་རྒྱས་སྤྱོན། །
सम ज़ोग छङ छुप रिम पर सङ ग्येस् चोन
मनोरथ पूर्ण होकर क्रमशः बोधि से बुद्धत्व को प्राप्त करें।13।

ཕྱོགས་བཅུ་ག་ལའི་ཞིང་རྣམས་ཇི་སྙེད་པ། །
छोग चु ग लई शिङ नम जि ञेद् प
दश दिशाओं में जितने भी लोक हैं

དེ་དག་རྒྱ་ཆེར་ཡོངས་སུ་དག་པར་གྱུར། །
दे दग ग्य छेर योङ सु दग पर ग्युर
वे विशाल एवं परिशुद्ध हों तथा

བྱང་ཆུབ་ཤིང་དབང་དྲུང་གཤེགས་རྒྱལ་བ་དང་། །
छङ छुप शिङ वङ डुङ शेग ग्यल व दङ
बोधि द्रुम जाने वाले जिनों अर्थात्

སངས་རྒྱས་སྲས་ཀྱིས་རབ་ཏུ་གང་བར་ཤོག །
सङ ग्येस् सेस् क्यीस् रप तु गङ बर शोग
बुद्ध और बोधिसत्त्वों से भरा रहे।14।

ཕྱོགས་བཅུའི་སེམས་ཅན་གང་རྣམས་ཇི་སྙེད་པ། །
छोग चुइ सेम चेन गङ नम जि ञेद् प
दश दिशाओं में जितने भी सत्त्व हैं

དེ་དག་རྟག་ཏུ་ནད་མེད་བདེ་བར་གྱུར། །
दे दग तग तु ने मेद् दे वर ग्युर
वे सदैव निरोगी और सुखमय हों।

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་ཆོས་ཀྱི་དོན་རྣམས་ནི། །
डो व कुन ग्यि छोस् क्यि दोन नम नि
सभी प्राणी धर्म के सम्बन्ध में

མཐུན་པར་གྱུར་ཅིང་རེ་བའང་འགྲུབ་པར་ཤོག །
थुन पर ग्युर चिङ रे बह़ङ डुप पर शोग
सुसंगठित हों तथा उनकी आशायें भी सिद्ध हों।15।

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་དག་ནི་བདག་སྤྱོད་ཅིང་། །
छङ छुप चोद् प दग नि दग चोद् चिङ
मैं जब बोधिसत्त्व के चर्याओं का आचरण करूँ

འགྲོ་བ་ཀུན་ཏུ་སྐྱེ་བ་དྲན་པར་གྱུར། །
डो व कुन तु क्ये व डेन पर ग्युर
सभी गतियों में जन्म-स्मृति होवें।

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་འཆི་འཕོ་སྐྱེ་བ་ན། །
छ़े रप कुन तु छि फो क्ये व न
जन्म-जन्मान्तरों के च्युति और उत्पत्ति में

རྟག་ཏུ་བདག་ནི་རབ་ཏུ་འབྱུང་བར་ཤོག །
तग तु दग नि रप तु छुङ बर शोग
सदैव मैं प्रव्रजित होता रहूँ।16।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་སློབ་གྱུར་ཏེ། །
ग्यल व कुन ग्यि जेस् सु लोप ग्युर ते
सभी जिनों के शिक्षाओं का अनुकरण कर

བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། །
ज़ङ पो चोद् प योङ सु ज़ोग छेद् चिङ
भद्रचर्या को परिपूर्ण करूँ तथा

ཚུལ་ཁྲིམས་སྤྱོད་པ་དྲི་མེད་ཡོངས་དག་པ། །
छुल ठिम चोद् प डि मेद् योङ दग प
शीलचर्या निर्मल परिशुद्ध होकर

རྟག་ཏུ་མ་ཉམས་སྐྱོན་མེད་སྤྱོད་པར་ཤོག །
तग तु म ञम क्योन मेद् चोद् पर शोग
सदैव अखण्डित और दोष रहित चर्या करूँ।7।

ལྷ་ཡི་སྐད་དང་ཀླུ་དང་གནོད་སྦྱིན་སྐད། །
ल्ह यि के दङ लु दङ गनोद् छिन के
देव-भाषा, नाग, यक्ष-भाषा

གྲུལ་བུམ་དག་དང་མི་ཡི་སྐད་རྣམས་དང་། །
डुल बुम दग दङ मि यि के नम दङ
कुम्भाण्ड, मनुष्य-भाषाओं अर्थात्

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་སྒྲ་སྐད་ཇི་ཙམ་པར། །
डो व कुन ग्यि ड के जि ञम पर
जगत में जितने भी भाषायें हैं

ཐམས་ཅད་སྐད་དུ་བདག་གིས་ཆོས་བསྟན་ཏོ། །
थम चे के दु दग गीस् छोस् तेन तो
उन सभी की भाषाओं में धर्म की देशना करूँ।18।

དེས་ཤིང་ཕ་རོལ་ཕྱིན་ལ་རབ་བརྩོན་ཏེ། །
देस् शिङ फ रोल छिन ल रप ञोन ते
प्रसन्नता के साथ पारमिताओं का प्रयास करते हुये

བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་ནམ་ཡང་བརྗེད་མ་གྱུར། །
छङ छुप सेम नि नम यङ जेद् म ग्युर
बोधिचित्त को कभी भी न भूलूँ।

སྡིག་པ་གང་རྣམས་སྒྲིབ་པར་གྱུར་པ་དག །
दिग प गङ नम डिप पर ग्युर प दग
पाप एवं जितने भी आवरण हैं

དེ་དག་མ་ལུས་ཡོངས་སུ་བྱང་བར་ཤོག །
दे दग म लुस् योङ सु छङ बर शोग
वे अशेष सभी परिशुद्ध हों।19।

ལས་དང་ཉོན་མོངས་བདུད་ཀྱི་ལས་རྣམས་ལས། །
लेस दङ ञोन मोङ दुद् क्यि लेस नम लेस
कर्म, क्लेश और मार के कर्मों से

གྲོལ་ཞིང་འཇིག་རྟེན་འགྲོ་བ་རྣམས་སུ་ཡང་། །
डोल शिङ जिग तेन डो व नम सु यङ
मुक्त होकर मैं जगत में गमन करते समय

ཇི་ལྟར་པདྨོ་ཆུས་མི་ཆགས་པ་བཞིན། །
जि तर पेमाो छुस् मि छग प शिन
जैसे पद्म जल से रहता है तथा

ཉི་ཟླ་ནམ་མཁར་ཐོགས་པ་མེད་ལྟར་སྤྱོད། །
ञि द नम खर थोग प मेद् तर चे
सूर्य-चन्द्र गगन में बिन बाधा चलती, वैसे करूँ।20।

ཞིང་གི་ཁྱོན་དང་ཕྱོགས་རྣམས་ཇི་ཙམ་པར། །
शिङ गि ख्योन दङ छोग नम जि ञम पर
क्षेत्र-पथ और सभी दिशाओं में

ངན་སོང་སྡུག་བསྔལ་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད། །
ङेन सोङ दुग ङल रप तु शि वर छेद्
दुर्गति का दुःख प्रशमन करूँ।

བདེ་བ་དག་ལ་འགྲོ་བ་ཀུན་འགོད་ཅིང་། །
दे व दग ल डो व कुन गोद् चिङ
सभी प्राणियों को सुख में स्थापित करूँ

འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ནི་ཕན་པར་སྤྱོད། །
डो व थम चे ल नि फेन पर चे
समस्त जगत का कल्याण करूँ।21।

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། །
छङ छुप चोद् प योङ सु ज़ोग छेद् चिङ
बोधिचर्या को परिपूर्ण करने के लिये

བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་དག་ནི་རབ་སྟོན་ཅིང་། །
ज़ङ पो चोद् प दग नि रप तोन चिङ
भद्रचर्या को प्रकाशित करूँ

བདག་གི་སྤྱོད་དང་མཚུངས་པ་གང་སྤྱོད་པ། །
दग गि चोद् दङ छुङ प गङ चोद् प
मेरे चर्याओं के अनुरूप जो चर्या करे

ལུས་དང་ངག་རྣམས་དང་ནི་སེམས་ཀྱིས་ཀྱང་། །
लुस् दङ ङग नम दङ नि सेम क्यीस् क्यङ
काय, वाक् और मन के द्वारा भी

བདག་ལ་ཕན་པར་འདོད་པའི་གྲོགས་པོ་དག །
दग ल फेन पर दोद् पई डोग पो दग
मेरे हितेषी मित्रों तथा

དེ་དག་དང་ཡང་རྟག་ཏུ་འཕྲད་པར་ཤོག །
दे दग दङ यङ तग तु ठे पर शोग
सदैव समागम होता रहे

སངས་རྒྱས་སྲས་ཀྱིས་བསྐོར་བའི་མགོན་པོ་རྣམས། །
सङ ग्येस् सेस् क्यीस् कोर बई गोन पो नम
बुद्ध-बोधिसत्त्वों से परिवृत नाथ को अर्थात्

མ་འོངས་བསྐལ་པ་ཀུན་ཏུ་མི་སྐྱོ་བར། །
म ह़ोङ कल प कुन तु मि क्यो वर
सभी अनागत कल्पों में भी खिन्न हुये विना

རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་དམ་པའི་ཆོས་འཛིན་ཅིང་། །
ग्यल व नम क्यि दम पई छोस् ज़िन चिङ
मैं जिनों के सद्धर्म को धारण करता हुआ

སེམས་ཅན་དག་གི་སྤྱོད་དང་མཐུན་པར་འཇུག །
सेम चेन दग गि चोद् दङ थुन पर जुग
सत्त्वों के चर्यानुसार प्रवृत्त होकर

མ་འོངས་བསྐལ་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པར་གྱུར། །
म ह़ोङ कल प कुन तु चोद् पर ग्युर
अनागत कल्पों में भी ऐसा ही चर्या करता रहूँ।22।

དེ་དག་དང་ནི་རྟག་ཏུ་འགྲོགས་པར་ཤོག །
दे दग दङ नि तग तु डोग पर शोग
उनके साथ सदैव समागम हों।

སྤྱོད་པ་དག་དང་སྨོན་ལམ་གཅིག་ཏུ་སྤྱད། །
चोद् प दग दङ मोन लम चिग तु चे
वही चर्या करूँ जो प्रणिधान अनुरूप हैं।23।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་རབ་ཏུ་སྟོན་པ་རྣམས། །
ज़ङ पो चोद् प रप तु तोन प नम
भद्रचर्या को प्रकट करने वालों से

དེ་དག་བདག་གིས་ནམ་ཡང་ཡིད་མི་དབྱུང་། །
दे दग दग गीस् नम यङ यिद् मि युङ
उन्हें कभी भी हतोत्साहित न करूँ।24।

མངོན་སུམ་རྟག་ཏུ་བདག་གིས་རྒྱལ་བ་ལྟ། །
ङोन सुम तग तु दग गीस् ग्यल व त
जिनों को सदैव मैं प्रत्यक्ष दर्शन कर।

དེ་དག་ལ་ཡང་མཆོད་པ་རྒྱ་ཆེར་བགྱི། །
दे दग ल यङ छोद् प ग्य छेर ग्यि
उन्हें उदारपूर्वक पूजा करता रहूँ।25।

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་ཀུན་ཏུ་སྣང་བར་བྱེད། །
छङ छुप चोद् प कुन तु नङ वर छेद्
बोधिचर्या को सदैव प्रकट करता रहूँ।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་སྦྱངས་པ་ཡང་། །
ज़ङ पो चोद् प नम पर छङ प यङ
भद्रचर्या के चर्याओं को भी

མ་འོངས་བསྐལ་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པར་བགྱི། །
म ह़ोङ कल प कुन तु चे पर ग्यि
अनागत सभी कल्पों में आचरण करता रहूँ।26।

སྲིད་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་འཁོར་བ་ན། །
सिद् प थम चे दु यङ खोर व न
सभी भवों में संसरण करते समय

བསོད་ནམས་ཡེ་ཤེས་དག་ནི་མི་ཟད་རྙེད། །
सोद् नम ये शेस् दग नि मि ज़े ञेद्
अक्षय पुण्य और ज्ञान-सम्भार को प्राप्त करूँ।

ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཏིང་འཛིན་རྣམ་ཐར་དང་། །
थप दङ शेस् रप तिङ ज़िन नम थर दङ
उपाय, प्रज्ञा, समाधि, विमोक्ष और

ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་མི་ཟད་མཛོད་དུ་གྱུར། །
योन तेन कुन ग्यि मि ज़े ज़ोद् दु ग्युर
सभी गुणों का मैं अक्षय कोष बनूँ।27।

རྡུལ་གཅིག་སྟེང་ན་རྡུལ་སྙེད་ཞིང་རྣམས་ཏེ། །
दुल चिग तेङ न दुल ञेद् शिङ नम ते
एक कण के ऊपर (सभी) क्षेत्रों के कण प्रमाण

ཞིང་དེར་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་སངས་རྒྱས་རྣམས། །
शिङ देर सम ग्यीस् मि ख्यप सङ ग्येस् नम
क्षेत्र, जहाँ अपरिमित बुद्ध, जो

སངས་རྒྱས་སྲས་ཀྱི་དབུས་ན་བཞུགས་པ་ལ། །
सङ ग्येस् सेस् क्यि उस् न शुग प ल
बुद्ध और बोधिसत्त्वों के मध्य विराजमान हैं

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་ཅིང་བལྟ་བར་བགྱི། །
छङ छुप चे प चोद् चिङ त बर ग्यि
मैं दर्शन कर बोधिचर्या का आचरण करूँ।28।

དེ་ལྟར་མ་ལུས་ཐམས་ཅད་ཕྱོགས་སུ་ཡང་། །
दे तर म लुस् थम चे छोग सु यङ
इसी प्रकार अशेष दिशाओं में भी अर्थात्

སྐྲ་ཙམ་ཁྱོན་ལ་དུས་གསུམ་ཚད་སྙེད་ཀྱི། །
ट त्स़म ख्योन ल दुस् सुम छ़े ञेद् क्यि
केशपथ (बालस्थान) मात्र पर त्रिकाल प्रमाण

སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོ་ཞིང་རྣམས་རྒྱ་མཚོ་དང་། །
सङ ग्येस् ग्य छ़ो शिङ नम ग्य छ़ो दङ
सागर (सदृश) बुद्ध हैं, उन समुद्र सदृश क्षेत्रों में भी तदनुरूप बुद्ध बैठे हैं

བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོར་སྤྱོད་ཅིང་རབ་ཏུ་འཇུག །
कल प ग्य छ़ोर चोद् चिङ रप तु जुग
उन सबमें सागर सदृश कल्पों तक चर्या करते हुये प्रवृत्त हुँगा।29।

གསུང་གཅིག་ཡན་ལག་རྒྱ་མཚོའི་སྒྲ་སྐད་ཀྱིས། །
सुङ चिग येन लग ग्य छ़ोइ ड के क्यीस्
बुद्ध का एक वचन भी सागर स्वरांग युक्त (सम्पूर्णता को प्रकट करती है)।

རྒྱལ་བ་ཀུན་དབྱངས་ཡན་ལག་རྣམ་དག་པ། །
ग्यल व कुन यङ येन लग नम दग प
अतः यह सभी जिनों का सर्व स्वरांग विशुद्ध भी हो जाता है

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་བསམ་པ་ཇི་བཞིན་དབྱངས། །
डो व कुन ग्यि सम प जि शिन यङ
सभी जगत के आशयानुरूप घोष करते हैं

སངས་རྒྱས་གསུང་ལ་རྟག་ཏུ་འཇུག་པར་བགྱི། །
सङ ग्येस् सुङ ल तग तु जुग पर ग्यि
ऐसे बुद्ध के वचनों में सदैव प्रवृत्त हूँगा।30।

དུས་གསུམ་གཤེགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་དག །
दुस् सुम शेग पई ग्यल व थम चे दग
त्रिकालगत सभी जिन

དེ་དག་གི་ཡང་གསུང་དབྱངས་མི་ཟད་ལ། །
दे दग गि यङ सुङ यङ मि ज़े ल
उनके वचन घोष अक्षय हैं

མ་འོངས་བསྐལ་པ་ཐམས་ཅད་འཇུག་པར་ཡང་། །
म ह्रोङ कल प थम चे जुग पर यङ
(बुद्धों का ज्ञान) अनागत कल्पों में एक क्षण में प्रवृत्त होता है

གང་ཡང་བསྐལ་པ་དུས་གསུམ་ཚད་དེ་དག །
गङ यङ कल प दुस् सुम छे दे दग
जो त्रिकाल प्रमाण कल्पों में

དུས་གསུམ་གཤེགས་པ་མི་ཡི་སེང་གེ་གང་། །
दुस् सुम शेग प मि यि सेङ गे गङ
जितने भी त्रिकालगत नरसिंह हैं

རྟག་ཏུ་དེ་དག་གི་ནི་སྤྱོད་ཡུལ་ལ། །
तग तु दे दग गि नि चोद् युल ल
सदैव उनके गोचर में

གང་ཡང་དུས་གསུམ་དག་གི་ཞིང་བཀོད་པ། །
गङ यङ दुस् सुम दग गि शिङ कोद् प
जो त्रिकाल शुद्ध क्षेत्र का व्यूह हैं

དེ་ལྟར་མ་ལུས་ཕྱོགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་དུ། །
दे तर म लुस् छोग नम थम चे दु
उसी प्रकार अशेष दिशाओं में (स्थित)

གང་ཡང་མ་བྱོན་འཇིག་རྟེན་སྒྲོན་མ་རྣམས། །
गङ यङ म छोन जिग तेन डोन म नम
जो अनागत जगत के मशाल हैं

འཁོར་ལོའི་ཚུལ་རྣམས་རབ་ཏུ་བསྐོར་བ་ཡིས། །
खोर लोइ छुल नम रप तु कोर व यीस्
चक्रनय का प्रवर्तन करते हैं।

བློ་ཡི་སྟོབས་ཀྱིས་བདག་ཀྱང་རབ་ཏུ་འཇུག །
लो यि तोप क्यीस् दग क्यङ रप तु जुग
मैं बुद्धि-बल से (उसमें) प्रवृत्त हूँगा।31।

སྐད་ཅིག་གཅིག་གིས་བདག་ཀྱང་འཇུག་པར་བགྱི། །
के चिग चिग गीस् दग क्यङ जुग पर ग्यि
उसी प्रकार मैं भी प्रवृत्त हूँगा।

སྐད་ཅིག་ཆ་ཤས་ཀྱིས་ནི་ཞུགས་པར་སྤྱད། །
के चिग छ शेस् क्यीस् नि शुग पर चे
एकक्षण में अखण्ड रूप से प्रवेश कर चर्या करूँगा।32।

དེ་དག་སྐད་ཅིག་གཅིག་ལ་བདག་གིས་བལྟ། །
दे दग के चिग चिग ल दग गीस् त
उन्हें मैं एकक्षण में दर्शन करूँ।

སྒྱུ་མར་གྱུར་པའི་རྣམ་ཐར་སྟོབས་ཀྱིས་འཇུག །
ग्यु मर ग्युर पई नम थर तोप क्यीस् जुग
मायागत विमोक्ष बल से प्रवृत्त हूँगा।33।

དེ་དག་རྡུལ་གཅིག་སྟེང་དུ་མངོན་པར་བསྒྲུབ། །
दे दग दुल चिग तेङ दु ङोन पर डुप
वे एक कण के ऊपर ही प्रकट करूँगा।

རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་ཞིང་གི་བཀོད་ལ་འཇུག །
ग्यल व नम क्यि शिङ गि कोद् ल जुग
जिन क्षेत्रों के व्यूह को (भी अन्यों को प्रकट करने हेतु) प्रवृत्त हूँगा।34।

དེ་དག་རིམ་པར་འཚང་རྒྱ་འཁོར་ལོ་བསྐོར། །
दे दग रिम पर छङ ग्य खोर लो कोर
वे क्रमशः बुद्धत्व प्राप्त कर धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करें।

མྱ་ངན་འདས་པ་རབ་ཏུ་ཞི་མཐའ་སྟོན། །
न्य ङेन देस् प रप तु शि था तोन
निर्वाण पर्यन्त शान्ति का प्रदर्शन करेंगे

ཀུན་ནས་མྱུར་བའི་རྫུ་འཕྲུལ་སྟོབས་རྣམས་དང་། །
कुन नेस् न्युर बई ज़ु ठुल तोप नम दङ
समस्त त्वरित ऋद्धि के बल से

ཀུན་ཏུ་ཡོན་ཏན་སྤྱོད་པའི་སྟོབས་རྣམས་དང་། །
कुन तु योन तेन चोद् पई तोप नम दङ
समस्त गुणचर्याओं के बल से

ཀུན་ཏུ་དགེ་བའི་བསོད་ནམས་སྟོབས་རྣམས་དང་། །
कुन तु गे बई सोद् नम तोप नम दङ
समस्त कुशल पुण्यों के बल से

ཤེས་རབ་ཐབས་དང་ཏིང་འཛིན་སྟོབས་དག་གིས། །
शेस् रप थप दङ तिङ ज़िन तोप दग गीस्
प्रज्ञा-उपाय और समाधि के बल से

ལས་ཀྱི་སྟོབས་རྣམས་ཡོངས་སུ་དག་བྱེད་ཅིང་། །
लेस क्यि तोप नम योङ सु दग छेद् चिङ
कर्म बलों को परिशुद्ध करूँ

བདུད་ཀྱི་སྟོབས་རྣམས་སྟོབས་མེད་རབ་བྱེད་ཅིང་། །
दुद् क्यि तोप नम तोप मेद् रप छेद् चिङ
मार बलों बलहीन करके

ཞིང་རྣམས་རྒྱ་མཚོ་རྣམ་པར་དག་བྱེད་ཅིང་། །
शिङ नम ग्य छ़ो नम पर दग छेद् चिङ
क्षेत्र सागर को विशुद्ध कर

ཆོས་རྣམས་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཏུ་མཐོང་བྱེད་ཅིང་། །
छोस् नम ग्य छ़ो रप तु थोङ छेद् चिङ
धर्म सागर को विदर्शन कर

མགོན་པོ་ཀུན་གྱི་དྲུང་དུ་བདག་མཆི་འོ། །
गोन पो कुन ग्यि डुङ दु दग छि ह़ो
उन सभी नाथों के सम्मुख मैं (पूजा, अभ्यर्थना आदि के लिये) जाऊँगा।35।

ཀུན་ནས་སྒོ་ཡི་ཐེག་པའི་སྟོབས་དག་དང་། །
कुन नेस् गो यि थेग पई तोप दग दङ
समस्त यान द्वारा (बोधिचित्त) के बल से

ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་བྱམས་པ་དག་གི་སྟོབས། །
कुन तु ख्यप प छम प दग गि तोप
सर्वव्यापी मैत्रेय के बल से।36।

ཆགས་པ་མེད་པར་འགྱུར་བའི་ཡེ་ཤེས་སྟོབས། །
छग प मेद् पर ग्युर पई ये शेस् तोप
राग रहित ज्ञान के बल से

བྱང་ཆུབ་སྟོབས་རྣམས་ཡང་དག་སྒྲུབ་པར་བྱེད། །
छङ छुप तोप नम यङ दग ड्रुप पर छेद्
बोधि बलों को सम्यग् सिद्ध करूँ।37।

ཉོན་མོངས་སྟོབས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་འཇོམས་པར་བྱེད། །
ञोन मोङ तोप नम कुन तु जोम पर छेद्
क्लेश बलों का पूर्ण नाश कर

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྟོབས་ནི་རྫོགས་པར་བགྱི། །
ज़ङ पो चोद् पई तोप नि ज़ोग पर ग्यि
भद्रचर्या के बल को सम्पन्न करूँ।38।

སེམས་ཅན་རྒྱ་མཚོ་དག་ནི་རྣམ་པར་དགྲོལ། །
सेम चेन ग्य छ़ो दग नि नम पर डोल
सत्त्व सागर को विमुक्त कर

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཏུ་གོམས་པར་བྱེད། །
ये शेस् ग्य छ़ो रप तु गोम पर छेद्
ज्ञान सागर का अधिगम कर।39।

སྤྱོད་པ་རྒྱ་མཚོ་རྣམ་པར་དག་བྱེད་ཅིང་། །
चोद् प ग्य छो नम पर दग छेद् चिङ
चर्या सागर विशुद्धि कर

སྨོན་ལམ་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཏུ་རྫོགས་པར་བྱེད། །
मोन लम ग्य छो रप तु ज़ोग पर छेद्
प्रणिधान सागर परिसम्पन्न कर

སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཏུ་མཆོད་བྱེད་ཅིང་། །
सङ ग्येस् ग्य छो रप तु छोद् छेद् चिङ
बुद्ध सागर प्रपूजित कर

བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོར་མི་སྐྱོ་སྤྱད་པར་བགྱི། །
कल प ग्य छोर मि क्यो चे पर ग्यि
कल्प सागर तक खिन्न हुये बिना चर्या करूँ।40।

གང་ཡང་དུས་གསུམ་གཤེགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཡི། །
गङ यङ दुस् सुम शेग पई ग्यल व यि
जो भी त्रिकालगत जिनों का

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་བྱེ་བྲག་རྣམས། །
छङ छुप चोद् पई मोन लम छे डग नम
बोधिचर्या प्रणिधान विशेष है

བཟང་པོ་སྤྱོད་པས་བྱང་ཆུབ་སངས་རྒྱས་ནས། །
ज़ङ पो चोद् पेस् छङ छुप सङ ग्येस् नेस्
भद्रचर्या को करके अवबोधन से बुद्ध बना

དེ་ཀུན་བདག་གིས་མ་ལུས་རྫོགས་པར་བགྱི། །
दे कुन दग गीस् म लुस् ज़ोग पर ग्यि
उन सभी अशेष को मैं सम्पन्न करूँगा।41।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་སྲས་ཀྱི་ཐུ་བོ་པ། །
ग्यल व कुन ग्यि सेस् क्यि थु बो प
सभी जिनों का ज्येष्ठ-पुत्र

གང་གི་མིང་ནི་ཀུན་ཏུ་བཟང་ཞེས་བྱ། །
गङ गि मिङ नि कुन तु ज़ङ शेस् छ
जिनका नाम समन्तभद्र है

མཁས་པ་དེ་དང་མཚུངས་པར་སྤྱད་པའི་ཕྱིར། །
खेस् प दे दङ छुङ पर चे पई छिर
विद्वान्, उनका सा मैं चर्या करूँ, तदर्थ

དགེ་བ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་བསྔོ། །
गे व दि दग थम चे रप तु ङो
इन सभी कुशलों का परिणामना करता हूँ।42।

ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱང་རྣམ་དག་ཅིང་། །
लुस् दङ ङग दङ यिद् क्यङ नम दग चिङ
काय, वाक्, चित्त विशुद्ध हों

སྤྱོད་པ་རྣམ་དག་ཞིང་རྣམས་ཡོངས་དག་དང་། །
चोद् प नम दग शिङ नम योङ दग दङ
चर्या विशुद्ध हों, क्षेत्र विशुद्ध हों

བསྔོ་བའང་བཟང་པོ་མཁས་པ་ཅི་འདྲ་བ། །
ङो बहङ ज़ङ पो खेस् प चि ड व
परिणामना भी समन्तभद्र विज्ञ जैसे करके

དེ་འདྲར་བདག་ཀྱང་དེ་དང་མཚུངས་པར་ཤོག །
दे डर दग क्यङ दे दङ छुङ पर शोग
मैं भी उनके सदृश बनूँ।43।

ཀུན་ནས་དགེ་བ་བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་ཕྱིར། །
कुन नेस् गे व ज़ङ पो चोद् पई छिर
समस्त कुशल भद्रचर्या को करने के लिये

འཇམ་དཔལ་གྱི་ནི་སྨོན་ལམ་སྤྱད་པར་བགྱི། །
जम पल ग्यि नि मोन लम चे पर ग्यि
मञ्जुश्री का प्रणिधान सदृश चर्या करूँगा

མ་འོངས་བསྐལ་པ་ཀུན་ཏུ་མི་སྐྱོ་བར། །
म ह़ोङ कल प कुन तु मि क्यो वर
अनागत कल्पों में विना खिन्न हुये

དེ་ཡི་བྱ་བ་མ་ལུས་རྫོགས་པར་བགྱི། །
दे यि छ व म लुस् ज़ोग पर ग्यि
उनके अशेष कृत्यों को सम्पन्न करुँगा।44।

སྤྱོད་པ་དག་ནི་ཚད་ཡོད་མ་གྱུར་ཅིག །
चोद् प दग नि छे योद् म ग्युर चिग
चर्यायें अप्रमाण्य करुँ

ཡོན་ཏན་རྣམས་ཀྱང་ཚད་གཟུང་མེད་པར་ཤོག །
योन तेन नम क्यङ छे ज़ुङ मेद् पर शोग
गुण भी अप्रमाण्य ग्रहण हों

སྤྱོད་པ་ཚད་མེད་པ་ལ་གནས་ནས་ཀྱང་། །
चोद् प छे मेद् प ल नेस नेस् क्यङ
अप्रमाण्य चर्याओं में स्थित होकर

དེ་དག་འཕྲུལ་པ་ཐམས་ཅད་འཚལ་བར་བགྱི། །
दे दग ठुल प थम चे छ़ल बर ग्यि
उनके द्वारा विकुर्वित (सभी गुणों) को जानँ।45।

ནམ་མཁའི་མཐར་ཐུག་གྱུར་པ་ཇི་ཙམ་པར། །
नम खई थर थुग ग्युर प जि त्सम पर
जितना आकाश विस्तृत है

སེམས་ཅན་མ་ལུས་མཐའ་ཡང་དེ་བཞིན་ཏེ། །
सेम चेन म लुस् था यङ दे शिन ते
अशेष सत्त्व भी उतना ही विस्तृत है।

ཇི་ཙམ་ལས་དང་ཉོན་མོངས་མཐར་གྱུར་པ། །
जि त्सम लेस दङ ञोन मोङ थर ग्युर प
जितना कर्म क्लेश विस्तृत है

བདག་གི་སྨོན་ལམ་མཐའ་ཡང་དེ་ཙམ་མོ། །
दग गि मोन लम था यङ दे त्सम मो
मेरा प्रणिधान भी उतना ही विस्तृत हों।46।

གང་ཡང་ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་རྣམས་མཐའ་ཡས་པ། །
गङ यङ छोग चुइ शिङ नम था येस् प
दश दिशाओं के अनन्त क्षेत्र में

རིན་ཆེན་བརྒྱན་ཏེ་རྒྱལ་བ་རྣམས་ལ་ཕུལ། །
रिन छेन ग्येन ते ग्यल व नम ल फुल
रत्न सुशोभित कर जिनों को अर्पित कर तथा

ལྷ་དང་མི་ཡི་བདེ་བའི་མཆོག་རྣམས་ཀྱང་། །
ल्ह दङ मि यि दे वई छोग नम क्यङ
देव, मनुष्य के उत्तम सुखों को

ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་བསྐལ་པར་ཕུལ་བ་བས། །
शिङ गि दुल ञेद् कल पर फुल व वे
क्षेत्र के कण प्रमाण कल्पों तक अर्पित करने की अपेक्षा।47।

གང་གིས་བསྔོ་བའི་རྒྱལ་པོ་འདི་ཐོས་ནས། །
गङ गीस् ङो बई ग्यल पो दि थोस् नेस्
जो परिणामनाराज इसे श्रवण कर

བྱང་ཆུབ་མཆོག་གི་རྗེས་སུ་རབ་མོས་ཤིང་། །
छङ छुप छोग गि जेस् सु रप मोस् शिङ
उत्तम बोधि के प्रति अधिमुक्ति होकर

ལན་གཅིག་ཙམ་ཡང་དད་པ་བསྐྱེད་པ་དེ། །
लेन चिग त्सम यङ दे प क्येद् प नि
एकक्षण मात्र के लिये भी श्रद्धा पैदा करें

བསོད་ནམས་དམ་པའི་མཆོག་ཏུ་འདི་འགྱུར་རོ། །
सोद् नम दम पई छोग तु दि ग्युर रो
वह श्रेष्ठ अनुत्तर पुण्य होगा।48।

གང་གིས་བཟང་སྤྱོད་སྨོན་ལམ་འདི་བཏབ་པས། །
गङ गीस् ज़ङ चोद् मोन लम दि तप पेस्
जो भद्रचर्या प्रणिधान का पाठ करेगा

དེས་ནི་ངན་སོང་ཐམས་ཅད་སྤོང་བར་འགྱུར། །
देस् नि ङेन सोङ थम चे पोङ बर ग्युर
वह सभी दुर्गतियों से मुक्त होगा।

དེས་ནི་གྲོགས་པོ་ངན་པ་སྤངས་པ་ཡིན། །
देस् नि डोग पो ङेन प पङ प यिन
वह कुमित्रों से वर्जित होगा

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དེ་ཡང་དེས་མྱུར་མཐོང་། །
नङ व था येस् दे यङ देस् न्युर थोङ
वह अमिताभ-बुद्ध को भी शीघ्र देखेगा।49।

དེ་དག་རྙེད་པ་རབ་རྙེད་བདེ་བར་འཚོ། །
दे दग ञेद् प रप ञेद् दे वर छ़ो
वह लाभ लब्ध और सुखी जीवन जीयेगा

མི་ཚེ་འདིར་ཡང་དེ་དག་ལེགས་པར་འོང་། །
मि छ़े दिर यङ दे दग लेग पर ह़ोङ
इस मनुष्य जीवन में भी उसे सुख का सु-आगमन होगा।

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་དེ་ཡང་ཅི་འདྲ་བར། །
कुन तु ज़ङ पो दे यङ चि ड बर
जैसे समन्दभद्र हैं वैसे ही

དེ་དག་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་འགྱུར། །
दे दग रिङ पोर मि थोग दे शिन ग्युर
अविलम्ब वैसा ही वह प्राप्त करेगा।50।

མཚམས་མེད་ལྔ་པོ་དག་གི་སྡིག་པ་རྣམས། །
छ़म मेद् ङ पो दग गि दिग प नम
पंच आनन्तर्य आदि सभी पाप

གང་གིས་མི་ཤེས་དབང་གིས་བྱས་པ་དག །
गङ गीस् मि शेस् वङ गीस् छेस् प दग
जो अज्ञानवश किये गये हैं

དེ་ཡིས་བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་འདི་བརྗོད་ན། །
दे यीस् ज़ङ पो चोद् प दि जोद् न
उसके द्वारा इस भद्रचर्या प्रणिधान के पाठ करने से

མྱུར་དུ་མ་ལུས་ཡོངས་སུ་བྱང་བར་འགྱུར། །
न्युर दु म लुस् योङ सु छङ बर ग्युर
शीघ्र वे सभी अशेष परिशुद्ध हो जायेंगे।51।

ཡེ་ཤེས་དང་ནི་གཟུགས་དང་མཚན་རྣམས་དང་། །
ये शेस् दङ नि ज़ुग दङ छ़ेन नम दङ
ज्ञान, रूप, लक्षण

རིགས་དང་ཁ་དོག་རྣམས་དང་ལྡན་པར་འགྱུར། །
रिग दङ ख दोग नम दङ देन पर ग्युर
गोत्र और वर्ण से युक्त होगा।

བདུད་དང་མུ་སྟེགས་མང་པོས་དེ་མི་ཐུབ། །
दुद् दङ मु तेग मङ पोस् दे मि थुप
मार, तैर्थिक समूह से वह अजित होगा

འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཀུན་ནའང་མཆོད་པར་འགྱུར། །
जिग तेन सुम पो कुन नह़ङ छोद् पर ग्युर
त्रिलोक में भी वह सदैव पूजनीय होगा।52।

བྱང་ཆུབ་ཤིང་དབང་དྲུང་དུ་དེ་མྱུར་འགྲོ། །
छङ छुप शिङ वङ डुङ दु दे न्युर डो
वह बोधि-द्रुम के समीप भी शीघ्र जायेगा

སོང་ནས་སེམས་ཅན་ཕན་ཕྱིར་དེར་འདུག་སྟེ། །
सोङ नेस् सेम चेन फेन छिर देर दुग ते
वहाँ जाकर सत्त्वहितार्थ वहाँ स्थित होगा।

བྱང་ཆུབ་སངས་རྒྱས་འཁོར་ལོ་རབ་ཏུ་བསྐོར། །
छङ छुप सङ ग्येस् खोर लो रप तु कोर
बुद्धत्व को प्राप्त कर धर्मचक्र प्रवर्त्तन करेगा

བདུད་རྣམས་སྡེ་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་བཏུལ། །
दुद् नम दे दङ चेस् प थम चे तुल
मार समूह सहित सबका दमन करेगा।53।

གང་ཡང་བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་འདི། །
गङ यङ ज़ङ पो चोद् पई मोन लम दि
जो भी भद्रचर्या प्रणिधान को

འཆང་བ་དང་ནི་སྟོན་ཏམ་ཀློག་པ་ཡི། །
छङ व दङ नि तोन तम लोग प यि
धारण करेगा, देशना करेगा, पाठ करेगा।

དེ་ཡི་རྣམ་པར་སྨིན་པའང་སངས་རྒྱས་མཁྱེན། །
दे यि नम पर मिन पह्ङ सङ ग्येस् ख्येन
उसका विपाक भी सिर्फ सर्वज्ञ बुद्ध जानेंगे

བྱང་ཆུབ་མཆོག་ལ་སོམ་ཉི་མ་བྱེད་ཅིག །
छङ छुप छोग ल सोम ञि म छेद् चिग
श्रेष्ठ बोधि के प्रति सन्देह न करें।54।

འཇམ་དཔལ་ཇི་ལྟར་མཁྱེན་ཅིང་དཔའ་བ་དང་། །
जम पल जि तर ख्येन चिङ पा व दङ
जैसे शूर मञ्जुश्री ने जाना

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་ཏེ། །
कुन तु ज़ङ पो दे यङ दे शिन ते
समन्तभद्र ने भी वैसा ही जाना।

དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་བདག་སློབ་ཅིང་། །
दे दग कुन ग्यि जेस् सु दग लोप चिङ
उन सभी का मैं अनुशिक्षण कर

དགེ་བ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་བསྔོ། །
गे व दि दग थम चे रप तु ङो
इन सभी पुण्यों की परिणामना करता हूँ।55।

དུས་གསུམ་གཤེགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
दुस् सुम शेग पई ग्यल व थम चे क्यीस्
समस्त त्रिकालगत जिनों द्वारा

བསྔོ་བ་གང་ལ་མཆོག་ཏུ་བསྔགས་པ་དེས། །
ङो व गङ ल छोग तु ङग प देस्
जिस परिणामना की श्रेष्ठता के लिये स्तुति की है

བདག་གི་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདི་ཀུན་ཀྱང་། །
दग गि गे बई ज़ा व दि कुन क्यङ
मैं अपने समस्त कुशलमूलों को

བཟང་པོ་སྤྱོད་ཕྱིར་རབ་ཏུ་བསྔོ་བར་བགྱི། །
ज़ङ पो चोद् छिर रप तु ङो बर ग्यि
भद्रचर्या हेतु परिणामना करता हूँ।56।

བདག་ནི་འཆི་བའི་དུས་བྱེད་གྱུར་པ་ན། །
दग नि छि बई दुस् छेद् ग्युर प न
मेरे मृत्यु-क्षण के आने पर

སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་དག་ནི་ཕྱིར་བསལ་ཏེ། །
डिप प थम चे दग नि छिर सल ते
समस्त आवरणों को मिटा कर

མངོན་སུམ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དེ་མཐོང་ནས། །
ङोन सुम नङ व था येस् दे थोङ नेस्
अमिताभ का साक्षात् दर्शन हों और

བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་དེར་རབ་ཏུ་འགྲོ། །
दे व चेन ग्यि शिङ देर रप तु डो
सुखावती क्षेत्र में जाऊँ।57।

དེར་སོང་ནས་ནི་སྨོན་ལམ་འདི་དག་ཀྱང་། །
देर सोङ नेस् नि मोन लम दि दग क्यङ
वहाँ पहुँच कर यह सभी प्रणिधान भी

ཐམས་ཅད་མ་ལུས་མངོན་དུ་འགྱུར་བར་ཤོག །
थम चे म लुस् ङोन दु ग्युर बर शोग
अशेष रूप से अभिमुख हों, प्रकट हों।

དེ་དག་མ་ལུས་བདག་གིས་ཡོངས་སུ་བཀང་། །
दे दग म लुस् दग गीस् योङ सु कङ
अशेष उससे मैं परिपूर्ण होकर

འཇིག་རྟེན་ཇི་སྲིད་སེམས་ཅན་ཕན་པར་བགྱི། །
जिग तेन जि सिद् सेम चेन फेन पर ग्यि
जब तक लोक हैं स्थित होकर (उनका) हित करूँ।58।

རྒྱལ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བཟང་ཞིང་དགའ་བ་དེར། །
ग्यल वई दक्यिल खोर ज़ङ शिङ गा व देर
जिन मण्डल (सुखावती) शुभ, रम्य वहाँ

པདྨོ་དམ་པ་ཤིན་ཏུ་མཛེས་ལས་སྐྱེས། །
पेमाो दम प शिन तु ज़ेस् लेस क्येस्
उत्तम अति सुन्दर पद्म से उत्पन्न होकर।

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་རྒྱལ་བས་མངོན་སུམ་དུ། །
नङ व था येस् ग्यल वे ङोन सुम दु
अमिताभ बुद्ध के सम्मुख होकर

ལུང་བསྟན་པ་ཡང་བདག་གིས་དེར་ཐོབ་ཤོག །
लुङ तेन प यङ दग गीस् देर थोप शोग
वहाँ उनसे मैं भविष्यवाणी भी सुनूँ।59।

དེར་ནི་བདག་གིས་ལུང་བསྟན་རབ་ཐོབ་ནས། །
देर नि दग गीस् लुङ तेन रप थोप नेस्
वहाँ मैं अपने भविष्यवाणी को सुनकर

སྤྲུལ་པ་མང་པོ་བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་ཡིས། །
टुल प मङ पो छे व ठग ग्य यीस्
अनेक कोटि-शत (निर्माणकाय) का निर्माण कर।

བློ་ཡི་སྟོབས་ཀྱིས་ཕྱོགས་བཅུ་རྣམས་སུ་ཡང་། །
लो यि तोप क्यीस् छोग चु नम सु यङ
बुद्धि के बल से दश दिशाओं में भी

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཕན་པ་མང་པོ་བགྱི། །
सेम चेन नम ल फेन प मङ पो ग्यि
सत्त्वों का अनेक हित सम्पन्न करूँ।60।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་བཏབ་པ་ཡི། །
ज़ङ पो चोद् पई मोन लम तप प यि
भद्रचर्या का प्रणिधान पाठ कर

དགེ་བ་ཅུང་ཟད་བདག་གིས་ཅི་བསགས་པ། །
गे व चुङ ज़े दग गीस् चि सग प
जो कुशल-पुण्य मैंने सञ्चित किये।

དེས་ནི་འགྲོ་བའི་སྨོན་ལམ་དགེ་བ་རྣམས། །
देस् नि डो बई मोन लम गे व नम
उससे प्राणियों के प्रति किया गया कुशल प्रणिधान

སྐད་ཅིག་གཅིག་གིས་ཐམས་ཅད་འབྱོར་བར་ཤོག །
के चिग चिग गीस् थम चे छोर बर शोग
एकक्षण में ही वे उन्हें प्राप्त हो जाये।61।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་བསྔོས་པ་ལས། །
ज़ङ पो चोद् प योङ सु ङोस् प लेस
भद्रचर्या प्रणिधान से

བསོད་ནམས་མཐའ་ཡས་དམ་པ་གང་ཐོབ་དེས། །
सोद् नम था येस् दम प गङ थोप देस्
अनन्त उत्तम पुण्य जो (मैंने) प्राप्त किये उससे

འགྲོ་བ་སྡུག་བསྔལ་ཆུ་བོར་བྱིང་བ་རྣམས། །
डो व दुग ङल छु बोर छिङ व नम
**जगत जो दुःख-सागर में फंसे हैं**

འོད་དཔག་མེད་པའི་གནས་རབ་ཐོབ་པར་ཤོག །
ह़ोद् पग मेद् पई नेस रप थोप पर शोग
**अमिताभ बुद्ध का श्रेष्ठ पद प्राप्त करें।62।**

ཤློ་ཀ་འདི་གཉིས་རྒྱ་འགྲེལ་མང་པོར་མི་སྣང་ཡང་བོད་འགྱུར་ཕལ་པོ་ཆེའི་མདོ་དང་ཤཱཀྱ་བཤེས་གཉེན་དང་ལོ་ཙཱ་བ་ཡེ་ཤེས་སྡེའི་འགྲེལ་པ་དག་ནས་འབྱུང་ངོ་། །
यह दो श्लोक भारतीय टीका में दृष्टिगोचर नहीं होने पर भी अधिकतर भोटानुवादित सूत्र तथा शाक्यमित्र एवं लोत्सावा ज्ञानसेन (येशे-दे) की टीका में प्राप्त होते हैं।

སྨོན་ལམ་རྒྱལ་པོ་འདི་དག་མཆོག་གི་གཙོ། །
मोन लम ग्यल पो दि दग छोग गि त्सो
**प्रणिधानराज य उत्तमों में प्रमुख है**

མཐའ་ཡས་འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཕན་བྱེད་ཅིང་། །
था येस् डो व कुन ल फेन छेद् चिङ
**अनन्त समस्त सत्त्वों के हितकारक है।**

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོས་བརྒྱན་པའི་གཞུང་གྲུབ་སྟེ། །
कुन तु ज़ङ पोस् ग्येन पई शुङ डुप ते
**समन्तभद्र द्वारा अलंकृत शास्त्र पूर्ण कर**

ངན་སོང་གནས་རྣམས་མ་ལུས་སྟོངས་པར་ཤོག །
ङेन सोङ नेस नम म लुस् तोङ पर शोग
**अशेष दुर्गति स्थान शून्य हो जाये।63।**

ཤློ་ཀ་འདི་མདོ་དང་རྒྱ་འགྲེལ་གང་ནའང་མེད་མོད། ལོ་ཙཱ་བ་དག་གིས་འགྱུར་གྱི་སྨོན་ལམ་དུ་མཛད་པར་གྲགས་སོ། །
यह श्लोक सूत्र एवं भारतीय टीका कहीं पर भी नहीं होने पर भी लोत्सावा के द्वारा अनुवादक के प्रणिधान के रूप में रचा गया है, ऐसा प्रसिद्ध है।

# བྱམས་པའི་སྨོན་ལམ།
# मैत्रेय-प्रणिधान

སངས་རྒྱས་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सङ ग्येस् कुन ल छग छ़ल लो
समस्त बुद्धों को वन्दना करता हूँ

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་དང་ཡང་། །
छङ छुप सेम पा नम दङ यङ
बोधिसत्त्वों और

དྲང་སྲོང་ལྷ་མིག་ལྡན་པ་ཡི། །
डङ सोङ ल्ह मिग देन प यि
दिव्य चक्षुवान ऋषि

ཉན་ཐོས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ञेन थोस् नम ल छग छ़ल लो
श्रावकों को भी वन्दना करता हूँ।1।

ངན་འགྲོ་ཐམས་ཅད་ཟློག་བྱེད་ཅིང་། །
ङेन डो थम चे दोग छेद् चिङ
समस्त दुर्गति का प्रतिकार करने वाला

རྒ་ཤི་མེད་པར་འདྲེན་བགྱིད་པ། །
ग शि मेद् पर डेन ग्यिद् प
जरा-मरण से रहित की ओर नेतृत्व करने वाला

མཐོ་རིས་ལམ་ནི་རབ་སྟོན་ལ། །
थो रीस् लम नि रप तोन ल
स्वर्ग-पथ का निर्देशन करने वाला

བྱང་ཆུབ་སེམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छङ छुप सेम ल छग छ़ल लो
बोधिचित्त को मैं वन्दना करता हूँ।2।

སེམས་ཀྱི་དབང་དུ་གྱུར་པས་ན། །
सेम क्यि वङ दु ग्युर पेस् न
चित्त (क्लेश) के वश में आकर

སངས་རྒྱས་སྤྱན་སྔར་མཆིས་ནས་སུ། །
सङ ग्येस् चेन ङर छीस् नेस् सु
बुद्ध के सम्मुख जाकर

བདག་གིས་སྡིག་པ་ཅི་བགྱིས་པ། །
दग गीस् दिग प चि ग्यीस् प
मैने जो भी पाप किये हों।

བདག་གིས་དེ་དག་བཤགས་པར་བགྱི། །
दग गीस् दे दग शग पर ग्यि
मै उन सबका प्रायश्चित करता हूँ।3।

བདག་ལས་རྣམ་པ་གསུམ་གང་གི །བསོད་ནམས་
दग लेस नम प सुम गङ गि
मैने त्रिविध कर्मों के द्वारा जो

ཚོགས་ནི་བསྐྱེད་པ་སྟེ། །
सोद् नम छ़ोग नि क्येद् प ते
पुण्यसम्भार समूह को पैदा किया है।

བདག་གི་ཀུན་མཁྱེན་ས་བོན་ཏེ། །
दग गि कुन ख्येन स बोन ते
वह मेरे सर्वज्ञता का बीज बने तथा

བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་མི་ཟད་ཤོག །
दग गीस् छङ छुप मि ज़े शोग
मेरा बोधि अक्षय बनें।4।

ཕྱོགས་བཅུ་དག་གི་ཞིང་རྣམས་སུ། །
छोग चु दग गि शिङ नम सु
दस दिशाओं के (शुद्ध) क्षेत्रों में

སངས་རྒྱས་མཆོད་པ་གང་བྱུང་བ། །
सङ ग्येस् छोद् प गङ छुङ व
जो बुद्ध पूजा सम्पन्न किया गया।

སངས་རྒྱས་མཁྱེན་པས་ཡི་རང་བ། །
सङ ग्येस् ख्येन पेस् यि रङ व
वे जो बुद्धों के ज्ञान द्वारा अनुमोदित हैं

དེ་ལ་བདག་ནི་ཡི་རང་ངོ་། །
दे ल दग नि यि रङ ङो
उनका मैं अनुमोदन करता हूँ।5।

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་བཤགས་པར་བགྱི། །
दिग प थम चे शग पर ग्यि
समस्त पापों को प्रायश्चित करता हूँ

བསོད་ནམས་ཀུན་ལ་ཡི་རང་ངོ་། །
सोद् नम कुन ल यि रङ ङो
समस्त पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ।

སངས་རྒྱས་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सङ ग्येस् कुन ल छग छ़ल लो
समस्त बुद्धों को वन्दना करता हूँ

བདག་ནི་ཡེ་ཤེས་མཆོག་ཐོབ་ཤོག །
दग नि ये शेस् छोग थोप शोग
मैं परम ज्ञान को प्राप्त करूँ।6।

ཕྱོགས་བཅུ་དག་གི་ཕྱོགས་རྣམས་སུ། །
छोग चु दग गि छोग नम सु
दशदिग् के दिशाओं में

ས་བཅུ་དག་ལ་གནས་པ་ཡི། །
स चु दग ल नेस प यि
दस भूमियों में स्थित

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བྱང་ཆུབ་མཆོག །
छङ छुप सेम पा छङ छुप छोग
बोधिसत्त्व उत्तम बोधि में

འཚང་རྒྱ་བགྱིད་པར་བསྐུལ་མ་འདེབས། །
छ़ङ ग्य ग्यिद् पर कुल म देप
बुद्ध बनने के लिये अभ्यर्थना करता हूँ।7।

བྱང་ཆུབ་དམ་པར་སངས་རྒྱས་ཤིང་། །
छङ छुप दम पर सङ ग्येस् शिङ
परम बोधि में बुद्धत्व प्राप्त कर

སྡེ་དང་བཅས་པའི་བདུད་བཏུལ་ནས། །
दे दङ चेस् पई दुद् तुल नेस्
मार समूह सहित दमन कर।

སྲོག་ཆགས་ཀུན་ལ་སྨན་སླད་དུ། །
सोग छग कुन ल मेन ले दु
प्राणी मात्र के कल्याणार्थ

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་གྱུར་ཅིག །
छोस् क्यि खोर लो कोर ग्युर चिग
धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करूँ।8।

ཆོས་རྔ་ཆེན་པོའི་སྒྲ་ཡིས་ནི། །
छोस् ङ छेन पोइ ड यीस् नि
महा धर्म-दुन्दुभि के नाद से

སྡུག་བསྔལ་སེམས་ཅན་ཐར་བྱེད་ཤོག །
दुग ङल सेम चेन थर ग्यिद् शोग
दुःखित प्राणी मुक्त हों।

བསྐལ་པ་བྱེ་བ་བསམ་ཡས་སུ། །
कल प छे व सम येस् सु
असंख्य कोटि कल्पों में

ཆོས་སྟོན་མཛད་ཅིང་བཞུགས་གྱུར་ཅིག །
छोस् तोन ज़े चिङ शुग ग्युर चिग
स्थित रहकर धर्मदेशना करता रहूँ।9।

འདོད་པའི་འདམ་དུ་བྱིང་གྱུར་ཅིང་། །
दोद् पई दम दु छिङ ग्युर चिङ
काम के पंक में धंसे

སྲིད་པའི་སྲད་བུས་དམ་བཅིངས་པ། །
सिद् पई से बुस् दम चिङ प
भव तन्तु से पक्का बन्धे

འཆིང་བ་ཀུན་གྱིས་བཅིངས་བདག་ལ། །
छिङ व कुन ग्यीस् चिङ दग ल
सभी बन्धनों से बन्धित मैं

རྐང་གཉིས་མཆོག་རྣམས་གཟིགས་སུ་གསོལ། །
कङ ञीस् छोग नम ज़िग सु सोल
द्विपादों में श्रेष्ठ मुझे अवलोकन करें।10।

སེམས་ཀྱིས་དྲི་མར་བགྱིས་པ་ལ། །
सेम क्यीस् डि मर ग्यीस् प ल
कलुषित चित्त वाले को

སངས་རྒྱས་རྣམས་ནི་སྨོད་མི་མཛད། །
सङ ग्येस् नम नि मोद् मि ज़े
बुद्ध निन्दा नहीं करते।

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་བྱམས་ཐུགས་ལྡན། །
सेम चेन नम ल छम थुग देन
सत्त्वों के प्रति मैत्री-चित्त रखते हैं

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་སྒྲོལ་བར་ཤོག །
सिद् पई छो लेस डोल वर शोग
भव-सागर से उत्तीर्ण करें।11।

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གང་བཞུགས་དང་། །
ज़ोग पई सङ ग्येस् गङ शुग दङ
वर्तमान में जो सम्यग् सम्बुद्ध हैं

གང་དག་འདས་དང་མ་བྱོན་པ། །
गङ दग देस् दङ म छोन प
आने वाले तथा आ चुके हैं।

དེ་དག་རྗེས་སུ་བདག་སློབ་ཅིང་། །
दे दग जेस् सु दग लोप चिङ
उन सबका मैं अनुशिक्षण कर

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་གྱུར་ཅིག །
छङ छुप चे प चोद् ग्युर चिग
बोधिचर्या का आचरण करूँ।12।

ཕ་རོལ་ཕྱིན་དྲུག་རྫོགས་བགྱིས་ནས། །
फ रोल छिन डुग ज़ोग ग्यीस् नेस्
षट् पारमिताओं को सम्पन्न कर

འགྲོ་དྲུག་སེམས་ཅན་ཐར་བྱེད་ཤོག །
डो डुग सेम चेन थर ग्यिद् शोग
षडगति सत्त्वों को मुक्त करूँ।

མངོན་ཤེས་དྲུག་པོ་མངོན་བགྱིས་ནས། །
ङोन शेस् डुग पो ङोन ग्यीस् नेस्
षड् अभिज्ञाओं को अभिमुख कर

མ་སྐྱེས་པ་དང་མི་འབྱུང་དང་། །
म क्येस् प दङ मि छुङ दङ
न उत्पन्न हुआ, न उत्पन्न होगा

རྣམ་རིག་མ་མཆིས་དངོས་མ་མཆིས། །
नम रिग म छीस् ङोस् म छीस्
न विज्ञान है, न वस्तु है

སངས་རྒྱས་དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་ལྟར། །
सङ ग्येस् डङ सोङ छेन पो तर
महा ऋषि बुद्ध सदृश (मैं भी)

གང་ཟག་མ་མཆིས་གསོ་མ་མཆིས། །
गङ ज़ग म छीस् सो म छीस्
न पुद्गल है, न जीव है (ऐसे)

བདག་འཛིན་བདག་གིར་འཛིན་པ་ཡི། །
दग ज़िन दग गिर ज़िन प यि
आत्मग्रह और आत्मीय

སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་སྨན་སླད་དུ། །
सेम चेन कुन ल मेन ले दु
समस्त सत्त्वों के कल्याण हेतु

དངོས་པོ་དངོས་པོར་མ་མཆིས་པས། །
ङोस् पो ङोस् पोर म छीस् पेस्
वस्तु वस्तुतः नहीं होने से

དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྣམ་འཇིག་པས། །
ङोस् पो थम चे नम जिग पेस्
समस्त वस्तुये विनाशी होने से

བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་རེག་གྱུར་ཅིག །
ल मेद् छङ छुप रेग ग्युर चिग
अनुत्तर बोधि का स्पर्श करूँ।13।

རང་བཞིན་མ་མཆིས་གནས་མ་མཆིས། །
रङ शिन म छीस् नेस म छीस्
न स्वभाव है, न स्थिति है।

སྟོང་པའི་ཆོས་ནི་རྟོགས་པར་ཤོག །
तोङ पई छोस् नि तोग पर शोग
(उन) धर्मों की शून्यता का साक्षात्कार करूँ।14।

སེམས་ཅན་མ་མཆིས་སྲོག་མ་མཆིས། །
सेम चेन म छीस् सोग म छीस्
न सत्त्व है, न प्राणी है।

བདག་མ་མཆིས་པའི་ཆོས་རྟོགས་ཤོག །
दग म छीस् पई छोस् तोग शोग
अनात्म धर्म का अधिगम करूँ।15।

དངོས་པོ་ཀུན་ལ་མི་གནས་པར། །
ङोस् पो कुन ल मि नेस पर
समस्त वस्तुओं में अप्रतिष्ठित होकर।

སེར་སྣ་མ་མཆིས་སྦྱིན་གཏོང་ཤོག །
सेर न म छीस् छिन तोङ शोग
लोभ रहित दान करूँ।16।

བདག་གི་ལོངས་སྤྱོད་ལྷུན་གྲུབ་ཤོག །
दग गि लोङ चोद् ल्हुन डुप शोग
मेरा सम्पत्ति सहजसिद्ध हों।

སྦྱིན་པའི་ཕ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
छिन पई फ रोल छिन ज़ोग शोग
दान पारमिता को सम्पन्न करूँ।17।

ཁྲིམས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་སྐྱོན་མེད་ཅིང་། །
ठिम क्यि छुल ठिम क्योन मेद् चिङ
नैतिक शील निर्दोष हों

ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་པར་དག་དང་ལྡན། །
छुल ठिम नम पर दग दङ देन
विशुद्ध शील से युक्त हों

རློམ་སེམས་མེད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱིས། །
लोम सेम मेद् पई छुल ठिम क्यीस्
मद रहित शील के द्वारा

ཚུལ་ཁྲིམས་པ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
छुल ठिम फ रोल छिन ज़ोग शोग
शीलपारमिता को सम्पन्न करूँ।18।

ས་འམ་ཡང་ན་ཆུ་འམ་མེ། །
स ह़म यङ न छु ह़म मे
पृथ्वी या जल वा अग्नि

རླུང་གི་ཁམས་ལྟར་མི་གནས་ཤིང་། །
लुङ गि खम तर मि नेस शिङ
या वायु-धातु सदृश अनवस्थित

བཟོད་པ་ཁྲོ་བ་མ་མཆིས་པས། །
ज़ोद् प ठो व म छीस् पेस्
क्षान्ति क्रोध रहित होकर

བཟོད་པའི་པ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
ज़ोद् पई फ रोल छिन ज़ोग शोग
क्षान्तिपारमिता को सम्पन्न करूँ।19।

བརྩོན་འགྲུས་བརྩམས་པའི་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱིས། །
त्ज़ोन डुस् त्ज़म पई त्ज़ोन डुस् क्यीस्
उद्यम से उद्यमी होकर

བརྟན་སྒྲོ་ལེ་ལོ་མ་མཆིས་ཤིང་། །
तेन टो ले लो म छीस् शिङ
दृढ़ उत्साह से आलस्य रहित होकर।

སྟོབས་དང་ལྡན་པའི་ལུས་སེམས་ཀྱིས། །
तोप दङ देन पई लुस् सेम क्यीस्
बल से युक्त शरीर और मन से

བརྩོན་འགྲུས་པ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
त्ज़ोन डुस् फ रोल छिन ज़ोग शोग
वीर्यपारमिता को सम्पन्न करूँ।20।

སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་དང་། །
ग्यु म त बुइ तिङ ज़िन दङ
माया सदृश समाधि और

དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་འཛིན་དང་། །
पा बर डो बई तिङ ज़िन दङ
शूरंगम समाधि तथा

རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གྱིས། །
दोर जे त बुइ तिङ ज़िन ग्यीस्
वज्रोपम समाधि के द्वारा

བསམ་གཏན་པ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
सम तेन फ रोल छिन ज़ोग शोग
समाधिपारमिता सम्पन्न हों।21।

རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་གསུམ་དང་། །
नम पर थर पई गो सुम दङ
त्रिमोक्ष द्वार

དུས་གསུམ་མཉམ་པ་ཉིད་དང་ནི། །
दुस् सुम ञम प ञिद् दङ नि
त्रिकाल समता

རིག་གསུམ་མངོན་སུམ་བགྱིས་པ་ཡིས། །
रिग सुम ङोन सुम ग्यीस् प यीस्
त्रिविध के प्रत्यक्षीकरण से

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་བསྔགས་པ་དང་། །
सङ ग्येस् कुन ग्यीस् ङग प दङ
समस्त बुद्धों के द्वारा स्तुति

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱིས། །
छङ छुप सेम पई त्सोन डुस् क्यीस्
बोधिसत्त्वों के वीर्य से

དེ་ལྟར་སྤྱད་པ་སྤྱོད་བྱེད་ཅིང་། །
दे तर चे प चोद् छेद् चिङ
ऐसे चर्याओं का आचरण करूँ

ཕ་རོལ་ཕྱིན་དྲུག་རྫོགས་བགྱིས་ནས། །
फ रोल छिन डुग ज़ोग ग्यीस् नेस्
षड् पारमिताओं को सम्पन्न कर

འདི་ལྟར་བགྱིས་པའི་བསོད་ནམས་དཔག་མེད་ཀྱིས། །
दि तर ग्यीस् पई सोद् नम पग मेद् क्यीस्
इस प्रकार किये अपरिमित पुण्यों से

གནས་ངན་ལེན་རྣམས་རྟག་ཏུ་སྤངས་བྱས་ནས། །
नेस ङेन लेन नम तग तु पङ छेस् नेस्
दौष्ठुल्य स्थानों से सदैव मुक्त होकर

རྒྱལ་བ་བྱམས་པ་དང་ནི་སེང་གེ་ཡིས། །
ग्यल व छम प दङ नि सेङ गे यीस्
जिन मैत्रेय और सिंह द्वारा

བདག་ཀྱང་བྱང་ཆུབ་མཆོག་ལ་གནས་གྱུར་ཏེ། །
दग क्यङ छङ छुप छोग ल नेस ग्युर ते
मैं भी उत्तम बोधि में स्थित होकर

ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་རྫོགས་ཤོག །
शेस् रप फ रोल छिन ज़ोग शोग
प्रज्ञापारमिता सम्पन्न हों।22।

འོད་དང་གཟི་བརྗིད་འབར་བ་དང་། །
ह़ोद् दङ ज़ि जिद् बर व दङ
प्रदीप्त प्रभा और तेज के द्वारा

བདག་གི་བསམ་པ་རྫོགས་གྱུར་ཅིག །
दग गि सम प ज़ोग ग्युर चिग
मेरी कामना पूर्ण हों।23।

བྱམས་པ་གྲགས་དང་ལྡན་པ་ཡིས། །
छम प डग दङ देन प यीस्
मैत्री-यश मुझे मिले और

ས་བཅུའི་སྒོ་ལ་རབ་གནས་ཤོག །ཅེས་དང་།
स चुइ पो ल रप नेस शोग
दश भूमियों की पराकाष्ठा में स्थित हों।24।

དམྱལ་བ་ཡི་དྭགས་དུད་འགྲོ་ལྷ་མ་ཡིན། །
न्यल व यि दग दुद् डो ल्ह म यिन
नरक, प्रेत, तिर्यक्, असुर आदि।

རྒྱལ་བ་བྱམས་པའི་གོ་འཕང་བརྙེས་གྱུར་ཅིག །
ग्यल व छम पई गो फङ ञेस् ग्युर चिग
जिन मैत्रेय-पद की प्राप्ति हों।25।

མ་འོངས་སངས་རྒྱས་མཛད་པ་སྟོན་པའི་ཚེ། །
म ह़ोङ सङ ग्येस् ज़े प तोन पई छ़े
भविष्य में बुद्ध-लीला का प्रदर्शन करते समय।

ལྷ་ན་མེད་པའི་ལུང་ཡང་སྟོན་པར་ཤོག །
ल न मेद् पई लुङ यङ तोन पर शोग
अनुत्तर भविष्यवाणी को प्राप्त करूँ।26।

དགེ་བ་འདི་ཡིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ། །
गे व दि यीस् छ़े रप थम चे दु
**इस पुण्य से इह जन्म तथा जन्मान्तरों में**

དལ་འབྱོར་བཞེས་གཉེན་བཟང་ལ་བསྟེན་པ་དང་། །
दल थोप शेस् ञेन ज़ङ ल तेन प दङ
**क्षणसम्पदा लब्ध कर कल्याणमित्र का सेवन कर**

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྡུག་བསྔལ་ཁུར་ཁྱེར་ནས། །
सेम चेन कुन ग्यि दुग ङल खुर ख्येर नेस्
**समस्त सत्त्वों के दुःख का दायित्व लेकर**

བྱམས་པའི་བསྟན་ལ་བྱ་བ་བྱེད་པར་ཤོག །ཅེས་སོ།། །
छम पई तेन ल छ व छेद् पर शोग
**मैत्रेय-शासन की सेवा करने वाला होऊँ।27।** इति।

སྤྱོད་འཇུག་སྨོན་ལམ།

# बोधिचर्या-प्रणिधान

བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་ལ། །
दग गीस् छङ छुप चोद् प ल
मेरे द्वारा बोधिचर्यावतार के

འཇུག་པ་རྣམ་པར་བརྩམས་པ་ཡི། །
जुग प नम पर ज़म प यि
रचना से जो

དགེ་བ་གང་དེས་འགྲོ་བ་ཀུན། །
गे व गङ देस् डो व कुन
कुशल (प्राप्त किया) उससे समस्त जगत

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་ལ་འཇུག་པར་ཤོག །
छङ छुप चोद् ल जुग पर शोग
बोधिचर्या में प्रवृत्त हों।1।

ཕྱོགས་རྣམས་ཀུན་ན་ལུས་དང་སེམས། །
छोग नम कुन न लुस् दङ सेम
सभी दिशाओं में शारीरिक एवं मानसिक

སྡུག་བསྔལ་ནད་པ་ཇི་སྙེད་པ། །
दुग ङल ने प जि ञेद् प
पीड़ाओं स जो भी पीड़ित हैं।

དེ་དག་བདག་གི་བསོད་ནམས་ཀྱིས། །
दे दग दग गि सोद् नम क्यीस्
वे सभी मेरे (इस) पुण्य से

བདེ་དགའ་རྒྱ་མཚོ་ཐོབ་པར་ཤོག །
दे गा ग्य छ़ो थोप पर शोग
समुद्र जैसे सुख और आनन्द को प्राप्त हों।2।

དེ་དག་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་དུ། །
दे दग खोर व जि सिद् दु
वे जब तक संसार में रहें

ནམ་ཡང་བདེ་ལས་ཉམས་མ་གྱུར། །
नम यङ दे लेस ञम म ग्युर
कभी भी सुख का ह्रास न हों।

འགྲོ་བས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡི། །
डो वे छङ छुप सेम पा यि
प्राणियों को, बोधिसत्त्वों को

བདེ་བ་རྒྱུན་མི་འཆད་ཐོབ་ཤོག །
दे व ग्युन मि छे थोप शोग
सुख निरन्तर प्राप्त होता रहे।3।

འཇིག་རྟེན་ཁམས་ན་དམྱལ་བ་དག །
जिग तेन खम न न्यल व दग
जगत धातु में नरक (लोक)

གང་དག་ཇི་སྙེད་ཡོད་པ་རྣམས། །
गङ दग जि ञेद् योद् प नम
जितने भी हैं।

དེ་དག་ཏུ་ནི་ལུས་ཅན་རྣམས། །
दे दग तु नि लुस् चेन नम
उसमें रहने वाले शरीरधारी

བདེ་ཅན་བདེ་བས་དགའ་བར་ཤོག །
दे चेन दे वे गा बर शोग
सुखावती सुख से आनन्दित हों।4।

གྲང་བས་ཉམ་ཐག་དྲོ་ཐོབ་ཤོག །
डङ वे ञम थग डो थोप शोग
शीत (दुःख) से पीड़ित उष्ण को प्राप्त करें

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྲིན་ཆེན་ལས། །
छङ छुप सेम पई टिन छेन लेस
बोधिसत्त्व सदृश महामेघ से।

བྱུང་བའི་ཆུ་བོ་མཐའ་ཡས་ཀྱིས། །
छुङ बई छु बो था येस् क्यीस्
उत्पन्न अनन्त जल-समुद्र

ཚ་བས་ཉམ་ཐག་བསིལ་བར་ཤོག །
छ़ वे ञम थग सिल बर शोग
उष्ण से व्यथित शीतलता को प्राप्त करें।5।

རལ་གྲི་ལོ་མའི་ནགས་ཚལ་ཡང་། །
रल डि लो मई नग छ़ल यङ
असिपत्रवन भी

དེ་ལ་ཙན་དན་ནགས་སྟུག་ཤོག །
दे ल त्सेन देन नग तुग शोग
घना चन्दन वन हो जायें।

ཤལ་མ་ལི་ཡི་སྡོང་པོ་ཡང་། །
शल म लि यि दोङ पो यङ
कूटशाल्मली वृक्ष भी

དཔག་བསམ་ཤིང་དུ་འཁྲུངས་པར་ཤོག །
पग सम शिङ दु ठुङ पर शोग
कल्पवृक्ष के रूप में पैदा हों।6।

མཐིང་རིལ་ཏུར་པ་དག་དང་ངང་པ་དང་། །
थिङ रिल ड्ुर प दग दङ ङङ प दङ
कादम्ब, कारण्ड़व, चक्रवाक् हंस

བཞད་སོགས་སྐད་སྙན་འབྱིན་པས་མཛེས་གྱུར་ཅིག །
शे सोग के ञेन छिन पेस् ज़ेस् ग्युर चिग
आदि के कोलाहल से सुरम्य हों तथा

པདྨ་དྲི་བསུང་ཆེ་ལྡན་མཚོ་དག་གིས། །
पेमा डि सुङ छे देन छ़ो दग गीस्
सुगन्धित कमलों के सरोवरों से

དམྱལ་བའི་ས་ཕྱོགས་དག་ནི་ཉམས་དགར་ཤོག །
न्यल बई स छोग दग नि ञम गर शोग
नरक प्रदेश मनोहर हो जायें।7।

སོལ་ཕུང་དེ་ཡང་རིན་ཆེན་ཕུང་པོར་གྱུར། །
सोल फुङ दे यङ रिन छेन फुङ पोर ग्युर
नारकीय अङ्गार-राशि रत्न-राशि हो जायें

ས་བསྲེགས་ཤེལ་གྱི་ས་གཞི་བསྟར་བར་ཤོག །
स सेग शेल ग्यि स शि तर बर शोग
तप्त भूमि सीसे सुन्दर भूमि बन जायें।

བསྡུས་འཇོམས་རི་བོ་རྣམས་ཀྱང་མཆོད་པ་ཡི། །
बदुस् जोम रि बो नम क्यङ छोद् प यि
सङ्घात नामक (नरक का) पर्वत पूजा का

གཞལ་མེད་ཁང་གྱུར་བདེ་གཤེགས་གང་བར་ཤོག །
शल मेद् खङ ग्युर दे शेग गङ बर शोग
विमान में परिवर्तित होकर सुगतों से भर जायें।8।

མདག་མ་རྡོ་བསྲེགས་མཚོན་གྱི་ཆར་པ་དག །
दग म दो सेग छ़ोन ग्यि छर प दग
अङ्गार जलते पत्थर शास्त्रों की वर्षा

དེང་ནས་བཟུང་སྟེ་མེ་ཏོག་ཆར་པར་གྱུར། །
देङ नेस् ज़ुङ ते मे तोग छर पर ग्युर
आज से लेकर फूलों की वर्षा में परिवर्तित हों।

ཕན་ཚུན་མཚོན་གྱིས་འདེབས་པ་དེ་ཡང་ནི། །
फेन छुन छ़ोन ग्यीस् देप प दे यङ नि
आपस में शस्त्र युद्ध भी

དེང་ནས་བརྩེ་ཕྱིར་མེ་ཏོག་འཕེན་པར་ཤོག །
देङ नेस् त़्से छिर मे तोग फेन पर शोग
आज से प्रेमपूर्वक पुष्प-क्रीड़ा हो जायें।9।

ཆུ་བོ་རབ་མེད་མེ་དོང་འདྲ་ནང་བྱིང་བ་དག །
छु बो रप मेद् मे दोङ ड नङ छिङ व दग
अग्नि के गड्ढे सदृश वैतरणी नदी में डूबे हुये

ཤ་ཀུན་ཞིག་གྱུར་རུས་གོང་མེ་ཏོག་ཀུནྡའི་མདོག །
श कुन शिग ग्युर रुस् गोङ मे तोग कुन्दई दोग
(जिसका) सारा मांस गल कर हड्डी कुन्द-पुष्प के सदृश हुआ है।

བདག་གི་དགེ་བའི་སྟོབས་ཀྱིས་ལྷ་ཡི་ལུས་ཐོབ་ནས། །
दग गि गे बई तोप क्यीस् ल्ह यि लुस् थोप नेस्
मेरे पुण्य के बल से देवताओं का शरीर प्राप्त कर

ལྷ་མོ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་དལ་གྱིས་འབབ་གནས་ཤོག །
ल्ह मो नम दङ ल्हेन चिग दल ग्यीस् बप नेस शोग
अपसराओं के साथ (मन्दाकिनी के) जल में विहार करें।10।

ཅི་ཕྱིར་འདིར་ནི་གཤིན་རྗེའི་མི་དང་ཁྭ་དང་བྱ་རྒོད་མི་བཟད་རྣམས་སྐྲག་བྱེད། །
चि छिर दिर नि शिन जे मि दङ ख दङ छ गोद् मि ज़े नम टग छेद्
क्यों यह नरक के भयंकर यमदूत, काक, गृध भयभीत हो गये

ཀུན་ནས་མུན་བསལ་བདེ་དགའ་བསྐྱེད་པའི་མཐུ་བཟང་འདི་གོ་སུ་ཡི་མཐུ་སྙམ་སྟེ། །
कुन नेस् मुन सल दे गा क्येद् पई थु ज़ङ दि को सु यि थु ञम ते
यहाँ का सारे अन्धकार नष्ट हो गये, सुख प्रीति देने वाली यह भद्र किसके बल से हुआ- ऐसा सोच

གྱེན་དུ་བལྟས་ན་ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་ན་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་འབར་བ་བཞུགས་མཐོང་ནས། །
ग्येन दु तेस् न नम खई दक्यिल न छग न दोर जे बर व शुग थोङ नेस्
ऊपर देखने पर आकाश के मध्य तेजस्वी वज्रपाणि को विराजमान देख

རབ་ཏུ་དགའ་བའི་ཤུགས་ཀྱིས་སྡིག་དང་བྲལ་ནས་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་འགྲོགས་པར་ཤོག །
रप तु गा बई शुग क्यीस् दिग दङ डल नेस् दे दङ ल्हेन चिग डोग पर शोग
अत्यन्त मुदिता के वेग से पाप रहित होकर उनके साथ विचरण करें।11।

མེ་ཏོག་ཚར་པ་སྤོས་ཆུ་དང་འདྲེས་འབབ་པ་ཡིས། །
मे तोग छर प पोस् छु दङ डेस् बप प यीस्
सुगन्धित गन्ध से मिश्रित पुष्पों की वृष्टि से

དམྱལ་བའི་མེ་མདག་ཆིལ་ཆིལ་གསོད་པ་མཐོང་གྱུར་ནས། །
न्यल बई मे दग छिल छिल सोद् प थोङ ग्युर नेस्
नरक का दहकता आग छिल-छिल का आवाज से बुझता देखकर।

གློ་བུར་བདེ་བས་ཚིམ་པ་འདི་ཅི་བསམ་པ་དང་། །
लो बुर दे वे छिम प दि चि सम प दङ
अकस्मात् सुख से प्रह्लाद य कैसे हो गया- ऐसा विचार करने पर

སེམས་དམྱལ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱག་ན་པདྨ་མཐོང་བར་ཤོག །
सेम न्यल नम क्यीस् छग न पेमा थोङ बर शोग
नारकीय प्राणी पद्मपाणि (अवलोकितेश्वर) को देखें।12।

གྲོགས་དག་འཇིགས་པ་བོར་ལ་རིངས་པར་ཚུར་ཤོག་ཨུ་བུའི་ཐད་དུ་ནི། །
डोग दग जिग प बोर ल रिङ पर छुर शोग हु बुइ थे दु नि
मित्रों, भय रहित हो जाओ और शीघ्र यहाँ आ जाओ हमारे सामने

གང་གི་མཐུ་ཡིས་སྡུག་བསྔལ་ཀུན་བྲལ་དགའ་བའི་ཤུགས་བྱིན་ལ། །
गङ गि थु यीस् दुग ङल कुन डल गा बई शुग छिन ल
किस के प्रताप से दुःख से रहित आनन्द के वेग उत्पन्न हुआ है और

འགྲོ་བ་ཀུན་ནས་ཡོངས་སྐྱོབ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དང་བརྩེ་བ་སྐྱེས་གྱུར་པ། །
डो व कुन नेस् योङ क्योप छङ छुप सेम दङ त्से व क्येस् ग्युर प
समस्त प्राणियों को परित्राण करने वाली बोधिचित्त और करुणा पैदा हुआ है

གཞོན་ནུ་ཟུར་ཕུད་ཅན་འབར་འཇིགས་པ་མེད་པར་བྱེད་པ་ཅི་ཞིག་བྱིན། །
शोन नु ज़ुर फुद् चेन बर जिग प मेद् पर छेद् प चि शिग छिन
ऐसा सोचते हुये वे कुमार चीरधारी तेजस्वी अभय देने वाले जो पधारे हैं- कहते हुए दर्शन करें।13।

ཁྱོད་ཀྱི་ལྷ་བརྒྱའི་ཅོད་པན་དག་གིས་ཞབས་ཀྱི་པདྨོ་ལ་མཆོད་ཅིང་། །
ख्योद् क्यि ल्ह ग्यई चोद् पेन दग गीस् शप क्यि पेमाो ल छोद् चिङ
आपके चरण कमलों का शत-शत मुकुटधारियों द्वारा पूजा हो रहा है

ཐུགས་རྗེས་བརླན་སྤྱན་དབུ་ལ་མེ་ཏོག་དུ་མའི་ཚོགས་ཀྱི་ཆར་འབབ་པ། །
थुग जेस् लेन चेन उ ल मे तोग दु मई छ़ोग क्यि छर बप प
आँखें करुणा से आर्द्र, सिर पर नाना प्रकार के फूलों की वृष्टि हो रही है।

ཁང་བཟེགས་ཡིད་འོང་ལྷ་མོ་སྟོང་ཕྲག་བསྟོད་དབྱངས་སྒྲོགས་ལྡན་འདི་ལྟོས་ཞེས། །
खङ ज़ेग यिद् ह़ोङ ल्ह मो तोङ ठग तोद् यङ डोग देन दि तोस् शेस्
मनोहर कूटागार में सहस्त्र देवियाँ गीतों गातीं

འཇམ་དབྱངས་དེ་འདྲ་མཐོང་ནས་ད་ནི་སེམས་དམྱལ་ཅ་ཅོ་འདོན་པར་ཤོག །
जम यङ दे ड थोङ नेस् द नि सेम न्यल च चो दोन पर शोग
मञ्जुश्री को इस प्रकार देख कर नारकीय प्राणी- ऐसा कल-कल करें।14।

དེ་ལྟར་བདག་གི་དགེ་རྩས་ཀུན་ཏུ་བཟང་ལ་སོགས། །
दे तर दग गि गे ज़ेस् कुन तु ज़ङ ल सोग
इस प्रकार मेरे कुशलमूल से समन्तभद्र आदि

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྒྲིབ་པ་མེད་སྤྲིན་བདེ་བ་དང་། །
छङ छुप सेम पा डिप प मेद् टिन दे व दङ
निरावरण बोधिसत्त्व रूपी मेघ सुखदायी।

བསིལ་ཞིང་དྲི་ཞིམ་དང་ལྡན་ཆར་པ་འབེབས་མཐོང་ནས། །
सिल शिङ डि शिम ङे देन छर प बेप थोङ नेस्
शीतल, सगन्धित वृष्टि होते देख कर

སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་དེ་དག་མངོན་པར་དགའ་གྱུར་ཅིག །
सेम चेन न्यल व दे दग ङोन पर गा ग्युर चिग
नरक के सत्त्व उनका अभिनन्दन करें।15।

དུད་འགྲོ་རྣམས་ནི་གཅིག་ལ་གཅིག །
दुद् डो नम नि चिग ल चिग
तिर्यकों में अन्योन्यों को

ཟ་བའི་འཇིགས་དང་བྲལ་བར་ཤོག །
ज़ बई जिग दङ डल बर शोग
भक्षण करने का जो भय है, उससे रहित हों

སྒྲ་མི་སྙན་པའི་མི་བཞིན་དུ། །
ड मि ञेन पई मि शिन दु
तथा उत्तरकुरु (के मनुष्यों) की तरह।

འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་གི །
फग प चेन रेस ज़िग वङ गि
आर्य अवलोकितेश्वर के

ཡི་དྭགས་རྣམས་ནི་ཚིམས་བྱས་ཤིང་། །
यि दग नम नि छ़िम छेस् शिङ
प्रेत अच्छी तरह तृप्त हों तथा

ལོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་གཟུགས་མཐོང་ཞིང་། །
लोङ व नम क्यीस् ज़ुग थोङ शिङ
अन्धे रूप को देखें

ལྷ་མོ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཇི་བཞིན་དུ། །
ल्ह मो ग्यु ठुल जि शिन दु
देवी महामाया सदृश

གཅེར་བུ་རྣམས་ཀྱིས་གོས་དག་དང་། །
चेर बु नम क्यीस् गोस् दग दङ
नंगे वस्त्रों को

སྐོམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཆུ་དག་དང་། །
कोम प नम क्यीस् छु दग दङ
प्यासे जल को तथा

བཀྲེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནོར་ཐོབ་ཤོག །
टेन प नम क्यीस् नोर थोप शोग
दरिद्र धन को प्राप्त करें

ཡི་ཆད་རྣམས་ཀྱང་ཡིད་གསོས་ཤིང་། །
यि छे नम क्यङ यिद् सोस् शिङ
निराश आशावान् बनें

ཡི་དྭགས་རྣམས་ནི་བདེ་བར་གྱུར། །
यि दग नम नि दे वर ग्युर
प्रेत (योनि के प्राणी) सुखी हों।16।

ཕྱག་ནས་འབབ་པའི་འོ་རྒྱུན་གྱིས། །
छग नेस् बप पई ह़ो ग्युन ग्यीस्
हाथों से बहे दुग्ध-धारा से।

ཁྲུས་བྱས་རྟག་ཏུ་བསིལ་བར་ཤོག །
ठुस् छेस् तग तु सिल बर शोग
स्नान द्वारा सदैव शीतलता का अनुभव करें।17।

འོན་པས་རྟག་ཏུ་སྒྲ་ཐོས་ཤོག །
ह़ोन पेस् तग तु ड थोस् शोग
बहरे सदैव शब्द को सुनें।

སྦྲུམ་མའང་གནོད་མེད་བཙའ་བར་ཤོག །
डुम मह़ङ गनोद् मेद् त्सा बर शोग
गर्भवती महिलायें बिना कष्ट जन्म दें।18।

བཀྲེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཟས་དང་ནི། །
टेस् प नम क्यीस् ज़ेस् दङ नि
भूखे खाद्य को

བཏུང་བ་ཞིམ་པོ་ཐོབ་པར་ཤོག །
तुङ व शिम पो थोप पर शोग
स्वादिष्ट-पेय को प्राप्त करें।19।

མྱ་ངན་ཉམ་ཐག་དགའ་ཐོབ་ཤོག །
न्य ङेन ञम थग गा थोप शोग
शोक से पीडित हर्ष को प्राप्त करें।

བརྟན་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
तेन प फुन सुम छ़ोग पर शोग
दृढ़ता से परिपूर्ण हों।20।

སེམས་ཅན་ནད་པ་ཇི་སྙེད་པ། །
सेम चेन ने प जि ञेद् प
जितने भी रोगी प्राणी हों

མྱུར་དུ་ནད་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིག །
न्युर दु ने लेस थर ग्युर चिग
शीघ्र वे रोग से मुक्त हों।

འགྲོ་བའི་ནད་ནི་མ་ལུས་པ། །
डो बई ने नि म लुस् प
जगत का अशेष रोग

རྟག་ཏུ་འབྱུང་བ་མེད་པར་ཤོག །
तग तु छुङ व मेद् पर शोग
सदा के लिये निर्भूत हों।21।

སྐྲག་པ་རྣམས་ནི་འཇིགས་མེད་ཤོག །
टग प नम नि जिग मेद् शोग
भयभीत निर्भय को प्राप्त करें

བཅིངས་པ་རྣམས་ནི་གྲོལ་བར་འགྱུར། །
चिङ प नम नि डोल वर ग्युर
बन्धन में पड़े बन्धन से मुक्त हों।

མཐུ་མེད་རྣམས་ནི་མཐུ་ལྡན་ཞིང་། །
थु मेद् नम नि थु देन शिङ
दुर्बल सबल हों

ཕན་ཚུན་སེམས་ནི་མཉེན་གྱུར་ཅིག །
फेन छुन सेम नि ञेन ग्युर चिग
सत्त्व परस्पर मित्रवत हों।22।

མགྲོན་པོ་དག་ནི་ཐམས་ཅད་ལ། །
डोन पो दग नि थम चे ल
सभी राहगीर

ཕྱོགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བདེ་བར་ཤོག །
छोग नम थम चे दे वर शोग
सभी दिशाओं में सुखी हों।

གང་གི་དོན་དུ་འགྲོ་བྱེད་པ། །
गङ गि दोन दु डो छेद् प
जिस कार्य के लिये जा रहें हों

དེ་འབད་མི་དགོས་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
दे वे मि गोस् डुप ग्युर चिग
वह भी अनायास सिद्ध हों।23।

གྲུ་དང་གྲུ་ཆེན་ཞུགས་པ་རྣམས། །
डु दङ डु छेन शुग प नम
नाव और बडे जहाजों पर बैठने वाले

ཡིད་ལ་བསམ་པ་གྲུབ་གྱུར་ཏེ། །
यिद् ल सम प डुप ग्युर ते
मनोकामनायें सिद्ध करके।

ཆུ་ཡི་ངོགས་སུ་བདེར་ཕྱིན་ནས། །
छु यि ङोग सु देर छिन नेस्
सुखपूर्वक समुद्र पार करें

གཉེན་དང་ལྷན་ཅིག་དགའ་བར་ཤོག །
ञेन दङ ल्हेन चिग गा बर शोग
पुनः अपने परिवार के साथ आनन्दित हों।24।

མྱ་ངམ་ལམ་གོལ་འཁྱམས་པ་རྣམས། །
न्य ङम लम गोल ख्यम प नम
कष्टप्रद मार्गों में भटके

མགྲོན་པོ་དག་དང་ཕྲད་གྱུར་ནས། །
डोन पो दग दङ ठे ग्युर नेस्
अपने साथ-संगी से मिलें

ཆོམ་རྐུན་སྟག་སོགས་འཇིགས་མེད་པར། །
छोम कुन तग सोग जिग मेद् पर
चौर, व्याघ्र आदि से भय रहित होकर

མི་ངལ་བདེ་བླག་འགྲོད་བར་ཤོག །
मि ङल दे लग दोङ बर शोग
विना कठिनाई आसानी से गन्तव्य तक पहुँचे।25।

དགོན་སོགས་ལམ་མེད་ཉམ་ང་བར། །
गोन सोग लम मेद् ञम ङ बर
निर्जन आदि में मार्ग रहित संकट में फंसे

བྱིས་པ་རྒན་པོ་མགོན་མེད་ཅིང་། །
छीस् प गेन पो गोन मेद् चिङ
बालक, वृद्ध और अनाथ

གཉིད་ལོག་མྱོས་ཤིང་རབ་མྱོས་རྣམས། །
ञिद् लोग न्योस् शिङ रप न्योस् नम
नींद में या नशे में प्रमत्त

ལྷ་དག་སྲུང་བ་བྱེད་པར་ཤོག །
ल्ह दग सुङ व छेद् पर शोग
(उन सबका) देवता रक्षा करें।26।

མི་དལ་ཀུན་ལས་ཐར་བ་དང་། །
मि दल कुन लेस थर व दङ
सभी अष्ट अक्षणों से मुक्त हों

དད་དང་ཤེས་རབ་བརྩེ་ལྡན་ཞིང་། །
दे दङ शेस् रप त्ज़े देन शिङ
श्रद्धा, प्रज्ञा और कृपा से युक्त बनें।

ཟས་དང་སྤྱོད་པ་ཕུན་ཚོགས་ནས། །
ज़ेस् दङ चोद् प फुन छोग नेस्
भोजन और आचरण सभ्य हों

རྟག་ཏུ་ཚེ་རབས་དྲན་པར་ཤོག །
तग तु छे रप डेन पर शोग
सदैव पूर्व जन्मों का स्मरण हों।27।

ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའ་མཛོད་བཞིན་དུ། །
थम चे नम खा ज़ोद् शिन दु
समस्त प्राणियों का गगन-गञ्ज सदृश

ལོངས་སྤྱོད་ཆད་པ་མེད་པར་ཤོག །
लोङ चोद् छे प मेद् पर शोग
सम्पत्ति अविरल आता रहे।

རྩོད་པ་མེད་ཅིང་འཚེ་མེད་པར། །
ज़ोद् प मेद् चिङ छे मेद् पर
बिना विवाद अहिंसा युक्त

རང་དབང་དུ་ནི་སྤྱོད་པར་ཤོག །
रङ वङ दु नि चोद् पर शोग
स्वतन्त्र होकर चर्या करें।28।

སེམས་ཅན་གཟི་བརྗིད་ཆུང་ངུ་གང་། །
सेम चेन ज़ि जिद् छुङ ङु गङ
जो सत्त्व अल्प ओजस्वी हैं

དེ་དག་གཟི་བརྗིད་ཆེན་པོར་ཤོག །
दे दग ज़ि जिद् छेन पोर शोग
वे महान् ओजस्वी बनें।

དཀའ་ཐུབ་ཅན་གང་གཟུགས་ངན་པ། །
का थुप चेन गङ ज़ुग ङेन प
तपस्वी जो कुरूपी हैं

གཟུགས་བཟང་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
ज़ुग ज़ङ फुन सुम छोग पर शोग
रूपवान्, श्री युक्त हों।29।

འཇིག་རྟེན་བུད་མེད་ཇི་སྙེད་པ། །
जिग तेन बुद् मेद् जि ञेद् प
जितने भी जगत में स्त्रियाँ हैं

དེ་དག་སྐྱེས་པ་ཉིད་གྱུར་ཅིག །
दे दग क्येस् प ञिद् ग्युर चिग
वे पुरुषत्व को प्राप्त करें।

མ་རབས་རྣམས་ནི་མཐོ་ཐོབ་ཅིང་། །
म रप नम नि थो थोप चिङ
जो नीच हैं वे उच्चता को प्राप्त करें

ང་རྒྱལ་དག་ཀྱང་བཅོམ་པར་ཤོག །
ङ ग्यल दग क्यङ चोम पर शोग
तथा अहंकार का भी नाश करें।30।

བདག་གི་བསོད་ནམས་འདི་ཡིས་ནི། །
दग गि सोद् नम दि यीस् नि
मेरे इस पुण्य से

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་མ་ལུས་པ། །
सेम चेन थम चे म लुस् प
समस्त अशेष सत्त्व

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ནས་ནི། །
दिग प थम चे पङ नेस् नि
समस्त पापों का परित्याग कर

རྟག་ཏུ་དགེ་བ་བྱེད་པར་ཤོག །
तग तु गे व छेद् पर शोग
सदैव कुशल कर्मों को करें।31।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དང་མི་འབྲལ་ཞིང་། །
छङ छुप सेम दङ मि डल शिङ
बोधिचित्त से रहित न हों

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་ལ་གཞོལ་བ་དང་། །
छङ छुप चोद् ल शोल व दङ
बोधिचर्या में प्रवृत्त हों।

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་གཟུང་ཞིང་། །
सङ ग्येस् नम क्यीस् योङ ज़ुङ शिङ
बुद्धों द्वारा परिग्रहण करें

བདུད་ཀྱི་ལས་ཀྱང་སྤོང་བར་ཤོག །
दुद् क्यि लेस क्यङ पोङ बर शोग
मार कर्मों से दूर रहें।32।

སེམས་ཅན་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི། །
सेम चेन दे दग थम चे नि
वे सभी प्राणी

ཚེ་ཡང་དཔག་མེད་རིང་བར་ཤོག །
छ़े यङ पग मेद् रिङ बर शोग
अपरिमित आयु हों।

རྟག་ཏུ་བདེ་བར་འཚོ་འགྱུར་ཞིང་། །
तग तु दे वर छ़ो ग्युर शिङ
सदैव सुखपूर्वक जीवन यापन करें

འཆི་བའི་སྒྲ་ཡང་གྲགས་མ་གྱུར། །
छि बई ड यङ डग म ग्युर
मृत्यु का शब्द भी न सुने।33।

དཔག་བསམ་ཤིང་གི་སྐྱེད་མོས་ཚལ། །
पग सम शिङ गि क्येद् मोस् छ़ल
कल्पवृक्ष का उद्यान

སངས་རྒྱས་དང་ནི་སངས་རྒྱས་སྲས། །
सङ ग्येस् दङ नि सङ ग्येस् सेस्
बुद्ध और बोधिसत्त्वों के

ཆོས་སྙན་སྒྲོགས་པས་གང་བ་ཡིས། །
छोस् ञेन डोग पेस् गङ व यीस्
मधुर धर्म-ध्वनियों से

ཕྱོགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་གང་བར་ཤོག །
छोग नम थम चे गङ बर शोग
दसों दिशायें भरा रहे।34।

ཐམས་ཅད་དུ་ནི་ས་གཞི་དག །
थम चे दु नि स शि दग
समस्त भूमि

གསེག་མ་ལ་སོགས་མེད་པ་དང་། །
सेग म ल सोग मेद् प दङ
कंकड़-पत्थर आदि से रहित।

ལག་མཐིལ་ལྟར་མཉམ་བཻཌཱུརྱའི། །
लग थिल तर ञम बैदूर्यई
हथेली के समान समतल वैडूर्यमय

རང་བཞིན་འཇམ་པོར་གནས་གྱུར་ཅིག །
रङ शिन जम पोर नेस ग्युर चिग
स्वभाव मृदु हो जाये।35।

འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཡོད་དགུར་ཡང་། །
खोर ग्यि दक्यिल खोर योद् गुर यङ
पार्षदों की मण्डलियाँ चारों ओर

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མང་པོ་དག །
छङ छुप सेम पा मङ पो दग
(जिनमें) बहुत से बोधिसत्त्व हैं।

རང་གི་ལེགས་པས་ས་སྟེང་དག །
रङ गि लेग पेस् स तेङ दग
अपनी शोभा से पृथ्वी (मण्डल) को

བརྒྱན་པར་མཛད་པས་བཞུགས་གྱུར་ཅིག །
ग्येन पर ज़े पेस् शुग ग्युर चिग
अलंकृत किये विराजमान हैं।36।

ལུས་ཅན་ཀུན་གྱིས་བྱ་དང་ནི། །
लुस् चेन कुन ग्यीस् छ दङ नि
सभी शरीरधारी- पक्षियों,

ཤིང་དང་འོད་ཟེར་ཐམས་ཅད་དང་། །
शिङ दङ ह्रोद् ज़ेर थम चे दङ
वृक्षों और प्रकाश से तथा।

ནམ་མཁའ་ལས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ། །
नम खा लेस क्यङ छोस् क्यि ड
समस्त आकाश से भी धर्म-ध्वनि को

རྒྱུན་མི་འཆད་པར་ཐོས་པར་ཤོག །
ग्युन मि छे पर थोस् पर शोग
निरन्तर सुनते रहें।37।

དེ་དག་རྟག་ཏུ་སངས་རྒྱས་དང་། །
दे दग तग तु सङ ग्येस् दङ
व सदैव बुद्ध तथा

སངས་རྒྱས་སྲས་དང་ཕྲད་གྱུར་ཅིག །
सङ ग्येस् सेस् दङ ठे ग्युर चिग
बोधिसत्त्वों से मिलते रहें।

མཆོད་པའི་སྤྲིན་ཕུང་མཐའ་ཡས་པས། །
छोद् पई टिन फुङ था येस् पेस्
अनन्त पूजा मेघों से

འགྲོ་བའི་བླ་མ་མཆོད་པར་ཤོག །
डो बई ल म छोद् पर शोग
जगत-गुरु को पूजा करते हैं।38।

ལྷ་ཡང་དུས་སུ་ཆར་འབེབས་ཤིང་། །
ल्ह यङ दुस् सु छर बेप शिङ
देवता भी समय-समय पर वृष्टि करते रहें

ལོ་ཏོག་ཕུན་སུམ་ཚོགས་གྱུར་ཅིག །
लो तोग फुन सुम छोग ग्युर चिग
फसल भी प्रचुर मात्रा में हों।

རྒྱལ་པོ་ཆོས་བཞིན་བྱེད་པ་དང་། །
ग्यल पो छोस् शिन छेद् प दङ
राजा धर्म के अनुसार चलें।

འཇིག་རྟེན་དག་ཀྱང་དར་བར་ཤོག །
जिग तेन दग क्यङ दर बर शोग
लोक में सुसमृद्धि हों।39।

སྨན་རྣམས་མཐུ་དང་ལྡན་པ་དང་། །
मेन नम थु दङ देन प दङ
औषधियाँ प्रभावशाली हों

གསང་སྔགས་བཟླས་བརྗོད་འགྲུབ་པར་ཤོག །
सङ ङग देस् जोद् डुप पर शोग
गुह्यमन्त्र-जप सिद्ध हों।

མཁའ་འགྲོ་སྲིན་པོ་ལ་སོགས་པ། །
खा डो सिन पो ल सोग प
ड़ाकिनी और राक्षस आदि

སྙིང་རྗེའི་སེམས་དང་ལྡན་གྱུར་ཅིག །
ञिङ जे सेम दङ देन ग्युर चिग
करुणा-चित्त युक्त हों।40।

སེམས་ཅན་འགའ་ཡང་སྡུག་མ་གྱུར། །
सेम चेन गा यङ दुग म ग्युर
कोई भी प्राणी दुःखी न हों

སྡིག་པར་མ་གྱུར་ན་མ་གྱུར། །
दिग पर म ग्युर न म ग्युर
न पापी हों. न दुःखी हों।

འཇིགས་དང་བརྙས་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། །
जिग दङ ञेस् पर मि ग्युर शिङ
न कोई भयभीत करे, न तिरस्कार

འགའ་ཡང་ཡིད་མི་བདེ་མ་གྱུར། །
गा यङ यिद् मि दे म ग्युर
कोई भी दुःखी मन न रहे।41।

གཙུག་ལག་ཁང་རྣམས་ཀློག་པ་དང་། །
त्सुग लग खङ नम लोग प दङ
विहारों में (बुद्ध वचन का) पाठ हों

ཁ་ཏོན་གྱིས་རྒྱས་ལེགས་གནས་ཤོག །
ख तोन ग्यीस् ग्येस् लेग नेस शोग
स्वाध्याय के द्वारा सुव्यस्थित हों।

རྟག་པར་དགེ་འདུན་མཐུན་པ་དང་། །
तग पर गेन दुन थुन प दङ
सदैव संघ सुसंगठित हों तथा

དགེ་འདུན་དོན་ཡང་འགྲུབ་པར་ཤོག །
गेन दुन दोन यङ डुप पर शोग
संघ का हित (सदा) सिद्ध होता रहे।42।

བསླབ་པ་འདོད་པའི་དགེ་སློང་དག །
लप प दोद् पई गे लोङ दग
अध्ययन इच्छुक भिक्षुओं को

དབེན་པ་དག་ཀྱང་ཐོབ་པར་ཤོག །
वेन प दग क्यङ थोप पर शोग
एकान्त का भी लाभ हो।

གཡེང་བ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ནས་ནི། །
गयेङ व थम चे पङ नेस् नि
सब प्रकार के ध्यान मार्ग का त्याग कर

དགེ་སློང་མ་རྣམས་རྙེད་ལྡན་ཞིང་། །
गे लोङ म नम ञेद् देन शिङ
भिक्षुणियाँ लाभ सत्कार को प्राप्त करें

དེ་བཞིན་རབ་ཏུ་བྱུང་བ་ཀུན། །
दे शिन रप तु छुङ व कुन
तथैव सभी प्रव्रजित

ཚུལ་ཁྲིམས་འཆལ་བས་ཡིད་བྱུང་ནས། །
छुल ठिम छल वे यिद् छुङ नेस्
दुःशील के प्रति पश्चाताप कर

བདེ་འགྲོ་དག་ནི་ཐོབ་གྱུར་ནས། །
दे डो दग नि थोप ग्युर नेस्
(परजन्म में) सुगति की प्राप्ति कर

མཁས་པ་རྣམས་ནི་བཀུར་བ་དང་། །
खेस् प नम नि कुर व दङ
विद्वानों की पूजा हो

རྒྱུད་ནི་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། །
ग्युद् नि योङ सु दग प दङ
चित्त सन्तति परिशुद्ध हों

ངན་སོང་སྡུག་བསྔལ་མི་མྱོང་ཞིང་། །
ङेन सोङ दुग ङल मि न्योङ शिङ
दुर्गति की दुःख को न भोगें

ལྷ་བས་ལྷག་པའི་ལུས་ཐོབ་ནས། །
ल्ह वे ल्हग पई लुस् थोप नेस्
देवताओं से विशिष्ट शरीर प्राप्त करें तथा

སེམས་ནི་ལས་རུང་སྒོམ་གྱུར་ཅིག །
सेम नि लेस रुङ गोम ग्युर चिग
चित्त प्रश्रब्धि से युक्त होकर भावना करें।43।

འཐབ་དང་གནོད་པ་སྤོང་བར་ཤོག །
थप दङ गनोद् प पोङ बर शोग
विवाद और दुर्भावनाओं का त्याग करें

ཚུལ་ཁྲིམས་ཉམས་པ་མེད་གྱུར་ཅིག །
छुल ठिम ञम प मेद् ग्युर चिग
शील खण्डित न हों।44।

རྟག་ཏུ་སྡིག་པ་ཟད་བྱེད་ཤོག །
तग तु दिग प ज़े छेद् शोग
सदैव पापों का क्षय करें।

དེར་ཡང་བརྟུལ་ཞུགས་མི་ཉམས་ཤོག །
देर यङ तुल शुग मि ञम शोग
वहाँ भी शीलव्रत खण्डित न हों।45।

བསོད་སྙོམས་དག་ཀྱང་རྙེད་པར་ཤོག །
सोद् ञोम दग क्यङ ञेद् पर शोग
भिक्षा आदि भी प्राप्त करें।

ཕྱོགས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་གྲགས་པར་ཤོག །
छोग नम कुन तु डग पर शोग
सारे दिशाओं में यश फैलें।46।

དཀའ་བ་སྤྱད་པ་མེད་པར་ཡང་། །
का व चे प मेद् पर यङ
बिना दुष्करचर्या के

དེ་དག་སངས་རྒྱས་མྱུར་ཐོབ་ཤོག །
दे दग सङ ग्येस् न्युर थोप शोग
वे सभी शीघ्र बुद्धत्व को प्राप्त करें।47।

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱིས་ལན་མང་དུ། །
सेम चेन कुन ग्यीस् लेन मङ दु
समस्त प्राणी अनेकों बार

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་མཆོད་བྱེད་ཅིང་། །
सङ ग्येस् थम चे छोद् छेद् चिङ
समस्त बुद्धों की पूजा करें और

སངས་རྒྱས་བདེ་བ་བསམ་ཡས་ཀྱིས། །
सङ ग्येस् दे व सम येस् क्यीस्
बुद्धों के अचिन्त्य सुख से

རྟག་ཏུ་བདེ་དང་ལྡན་གྱུར་ཅིག །
तग तु दे दङ देन ग्युर चिग
सदा युक्त रहें।48।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་ནི། །
छङ छुप सेम पा नम क्यीस् नि
बोधिसत्त्वों द्वारा

འགྲོ་དོན་ཐུགས་ལ་དགོངས་འགྲུབ་ཤོག །
डो दोन थुग ल गोङ डुप शोग
जगत कल्याणार्थ किये गये कामना सिद्ध हों

མགོན་པོ་ཡིས་ནི་གང་དགོངས་པ། །
गोन पो यीस् नि गङ गोङ प
नाथ के द्वारा किया गया जो कामना है

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་དེ་འབྱོར་ཤོག །
सेम चेन नम ल दे छोर शोग
वह सत्त्वों को मिलें, प्राप्त हों।49।

དེ་བཞིན་རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་། །
दे शिन रङ सङ ग्येस् नम दङ
तथैव प्रत्येक-बुद्धों और

ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱང་བདེ་གྱུར་ཅིག །
ञेन थोस् नम क्यङ दे ग्युर चिग
श्रावक भी सुखी हों।

བདག་ཀྱང་འཇམ་དབྱངས་བཀའ་དྲིན་གྱིས། །
दग क्यङ जम यङ का डिन ग्यीस्
मैं मञ्जुश्री की कृपा से

ས་རབ་དགའ་བ་ཐོབ་བར་དུ། །
स रप गा व थोप बर दु
(प्रथम) मुदिता की प्राप्ति तक।50।

རྟག་ཏུ་ཚེ་རབས་དྲན་པ་དང་། །
तग तु छ़े रप डेन प दङ
सदैव जन्म-जन्मान्तरों का स्मरण होता रहे तथा

རབ་ཏུ་བྱུང་བ་བྱེད་པར་ཤོག །
रप तु छुङ व छेद् पर शोग
प्रव्रजित की प्राप्ति होता रहे।

བདག་ནི་ཁ་ཟས་གྱི་ནས་ཀྱང་། །
दग नि ख ज़ेस् ग्यि नेस् क्यङ
मै सादारण भोजन के द्वारा भी

ཉམས་དང་ལྡན་ཞིང་འཚོ་བར་ཤོག །
ञम दङ देन शिङ छ़ो बर शोग
ओज से युक्त होकर जीवन यापन करूँ।51।

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་དབེན་གནས་པ། །
छ़े रप कुन तु वेन नेस प
सभी जन्मों में एकान्तवास

ཕུན་སུམ་ལྡན་པ་ཐོབ་པར་ཤོག །
फुन सुम देन प थोप पर शोग
प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो।

གང་ཚེ་བལྟ་བར་འདོད་པ་འམ། །
गङ छे त बर दोद् प ह़म
जब कभी भी दर्शन करना चाहूँ

ཅུང་ཟད་དྲི་བར་འདོད་ན་ཡང་། །
चुङ ज़े डि बर दोद् न यङ
या प्रश्न करना चाहूँ

མགོན་པོ་འཇམ་དབྱངས་དེ་ཉིད་ནི། །
गोन पो जम यङ दे ञिद् नि
नाथ मञ्जुश्री वे

གེགས་མེད་པར་ཡང་མཐོང་བར་ཤོག །
गेग मेद् पर यङ थोङ बर शोग
बिना विघ्न-बाधा के दर्शन हों।52।

ཕྱོགས་བཅུ་ནམ་མཁའི་མཐས་གཏུགས་པའི། །
छोग चु नम खई थेस् तुग पई
दश दिशाओं में आकाशवत

སེམས་ཅན་ཀུན་དོན་བསྒྲུབ་བྱའི་ཕྱིར། །
सेम चेन कुन दोन डुप छई छिर
सभी सत्त्वों के अर्थ सिद्धि के लिये।

ཇི་ལྟར་འཇམ་དབྱངས་སྤྱོད་མཛད་པ། །
जि तर जम यङ चोद् ज़े प
जैसे मञ्जुश्री चर्या करते हैं

བདག་གི་སྤྱོད་པའང་དེ་འདྲར་ཤོག །
दग गि चोद् पह़ङ दे डर शोग
मेरी चर्या भी तद् सदृश हों।53।

ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་གནས་པ་དང་། །
जि सिद् नम खा नेस प दङ
जब तक आकास रहे तथा

འགྲོ་བ་ཇི་སྲིད་གནས་གྱུར་པ། །
डो व जि सिद् नेस ग्युर प
जब तक जगत रहे

དེ་སྲིད་བདག་ནི་གནས་གྱུར་ནས། །
दे सिद् दग नि नेस ग्युर नेस्
तब तक मैं भी रहकर

འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་སེལ་བར་ཤོག །
डो बई दुग ङल सेल बर शोग
जगत का दुःख नाश करता रहूँ।54।

འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་གང་ཅིའང་རུང་། །
डो बई दुग ङल गङ चिह़ङ रुङ
जगत का जो कुछ भी दुःख है

དེ་ཀུན་བདག་ལ་སྨིན་གྱུར་ཅིག །
दे कुन दग ल मिन ग्युर चिग
वे भी मेरे ऊपर परिपक्व हों।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དགེ་འདུན་གྱིས། །
छङ छुप सेम पई गेन दुन ग्यीस्
बोधिसत्त्वों के पुण्य-राशि से

འགྲོ་བ་བདེ་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
डो व दे ल चोद् पर शोग
जगत सुख का उपभोग करें।55।

འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་སྨན་གཅིག་པུ། །
डो बई दुग ङल मेन चिग पु
जगत का मात्र एक औषधि

བདེ་བ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བའི་གནས། །
दे व थम चे छुङ बई नेस
समस्त सुखों का उत्स (स्थान)

བསྟན་པ་རྙེད་དང་བཀུར་སྟི་དང་། །
तेन प ञेद् दङ कुर ति दङ
शासन लाभ और सत्कार सहित

གང་གི་དྲིན་གྱིས་དགེ་བློ་བྱུང་། །
गङ गि डिन ग्यीस् गे लो छुङ
जिनके कृपा से कुशल बुद्धि पैदा हुआ

གང་གི་དྲིན་གྱིས་བདག་དར་བ། །
गङ गि डिन ग्यीस् दग दर व
जिनकी कृपा से मेरा विकास हुआ

བཅས་ཏེ་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཅིག །
चेस् ते युन रिङ नेस ग्युर चिग
दीर्घकाल तक बना रहे।56।

འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जम पई यङ ल छग छ़ल लो
मञ्जुश्री को मै वन्दना करता हूँ।

དགེ་བའི་བཤེས་ལའང་བདག་ཕྱག་འཚལ། །ཞེས་སོ། །
गे बई शेस् लह़ङ दग छग छ़ल
कल्याणमित्र को भी मै वन्दना करता हूँ।57।

བདེ་སྨོན་ཤེས་བྱ་མ།
# सुखावती-ज्ञेया-प्रणिधान

མངྒ་ལཾ་སྭསྟི་བྷ་ཝནྟུ།
मङ्गलं स्वस्ति भवन्तु
मङ्गलं स्वस्ति भवन्तु।

ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་མངོན་སུམ་གཟིགས་པ་པོ། །
शेस् छ थम चे ङोन सुम ज़िग प पो
समस्त ज्ञेयों के प्रत्यक्ष दर्शन-कर्त्ता,

མཆོག་གི་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་མཐར་ཕྱིན་པའི། །
छोग गि योन तेन म लुस् थर छिन पई
अशेष परम ज्ञान में पारंगत।

ཟླ་མེད་བརྙེས་པ་དེ་དང་དམ་པའི་ཆོས། །
द मेद् ञेस् प दे दङ दम पई छोस्
अप्रतिम-लब्ध वे तथा सद्धर्म,

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཚོགས་ལ་གུས་ཕྱག་འཚལ། །
छङ छुप सेम पई ज़्छोग ल गुस् छग ज़्छल
बोधिसत्त्व-गण का आदर सहित नमन है।1।

མཐའ་ཡས་ནམ་མཁའི་མཐའ་ཀླས་ཞིང་རྒྱ་མཚོ། །
था येस् नम खई था लेस् शिङ ग्य ज़्छो
अनन्त आकाशीय अनन्त क्षेत्र-सागर,

མཐའ་དག་སྐུ་ཡི་སྤྲུལ་པས་སྣང་བར་མཛད། །
था दग कु यि टुल पेस् नङ वर ज़े
अनन्त काय निर्मितों से आभासित होते।

མཐའ་ཡས་འོད་མདངས་ཐུབ་ཆེན་ཚེ་དཔག་མེད། །
था येस् ह़ोद् ङा थुप छेन ज़्छे पग मेद्
अनन्त प्रभा-युक्त महामुनि अमिताभ,

མཐའ་མེད་འཁོར་བའི་འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཁྱབ། །
था मेद् खोर बई डो व कुन ल ख्यप
समस्त अनन्त भव सत्त्वों में व्याप्त (हैं)।2।

ཀུན་མཁྱེན་རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་ཐུགས་རྗེའི་འོད། །
कुन ख्येन ग्यल व नम क्यि थुग जे ह़ोद्
सर्वज्ञ जिनों (बुद्धों) के कारुणिक प्रभा,

ཀུན་ནས་རབ་རྫོགས་ཡེ་ཤེས་འོད་འཕྲོ་བས། །
कुन नेस् रप ज़ोग ये शेस् ह़ोद् ठो वे
सर्वथा प्रपूरित ज्ञान-प्रभ के प्रस्फुटन से।

ཀུན་རྟོག་སྲིད་པའི་མུན་སྟུག་སྣ་ཚོགས་པ། །
कुन तोग सिद् पई मुन तुग न ज़्छोग प
नाना सर्वविकल्प भवीय घनान्धकार,

ཀུན་སེལ་རྣམ་འདྲེན་གཙོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कुन सेल नम डेन ज़्चो ल छग ज़्छल लो
सर्वनिवारक प्रमुख विनायक को नमन है।3।

འོད་ཕྲེང་གསལ་བས་ཞིང་ཀུན་ཁྱབ་མཛད་དེ། །
ह्योद् ठेङ सल वे शिङ कुन ख्यप ज़े दे
प्रभमाला के प्रकाशन से सर्वक्षेत्र व्याप्त कर,

ཡེ་ཤེས་སྤྱན་གྱིས་ཅུང་ཟད་གཟིགས་པས་ཀྱང་། །
ये शेस् चेन ग्यीस् चुङ ज़े ज़िग पेस् क्यङ
ज्ञानचक्षु द्वारा किञ्चिद् देखने पर भी।

བདུད་སྡེའི་དཔུང་ཚོགས་མ་ལུས་ཞི་མཛད་པ། །
दुद् दे पुङ छोग म लुस् शि ज़े प
अशेष मारसेना को शान्त करने वाले,

དཔག་མེད་སྐུ་ཡི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
पग मेद् कु यि ह्योद् ल छग छ़ल लो
अपरिमित कायप्रभ को नमन करता हूँ।4।

སྲིད་དང་ཞི་བ་རབ་སྤངས་རྣམ་གྲོལ་སྐུ། །
सिद् दङ शि व रप पङ नम डोल कु
भव एवं शान्त प्रहाणक विमुक्ति-काय,

ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་དབྱིངས་ལས་མ་གཡོས་ཀྱང་། །
ङो बो ञिद् क्यि यिङ लेस म योस् क्यङ
स्वभाव-धातु से अविचलित होने पर भी।

གང་གང་འདུལ་བ་དེ་ལ་དེར་སྟོན་པའི། །
गङ गङ दुल व दे ल देर तोन पई
यथा-तथा दमनकों को वैसे ही प्रदर्शित-कर्ता,

མཚན་དང་དཔེ་བྱད་ཀྱིས་འབར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छ़ेन दङ पे छे क्यीस् बर छग छ़ल लो
लक्षणानुव्यञ्जन विकसित को नमन करता हूँ।5।

ཆོས་ཀུན་རྣམ་འབྱེད་ཡན་ལག་དྲུག་ཅུ་ཡི། །
छोस् कुन नम छेद् येन लग डुग चु यि
सर्वधर्मविभंग षष्टि स्वरों में,

གསུང་གཅིག་གིས་ཀྱང་ཕྱོགས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ། །
सुङ चिग गीस् क्यङ छोग दुस् थम चे दु
एक से भी सर्वदिग्-कालों में।

སེམས་ཅན་དབང་པོའི་རིམ་པ་ཇི་བཞིན་འཇུག །
सेम चेन वङ पोइ रिम प जि शिन जुग
यथावत् सत्त्वेन्द्रिय-क्रमों से प्रवेश करते,

དཔག་མེད་གསུང་གི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
पग मेद् सुङ गि ह्योद् ल छग छ़ल लो
अपरिमित स्वरप्रभ को नमन करता हूँ।6।

སྨྲ་བསམ་བརྗོད་པའི་ཡུལ་ལས་རབ་འདས་ཀྱང་། །
म सम जोद् पई युल लेस रप देस् क्यङ
वाक्-चिन्तन-कथन के विषय से अत्यन्त पार होने पर भी,

འབད་མེད་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཡང་དག་ཚིག །
बे मेद् ल्हुन ग्यीस् डुप पई यङ दग छ़िग
यत्नहीन अनाभोग रूपी सम्यक् वचन।

གསུང་གི་གསང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པས། །
सुङ गि सङ व सम ग्यीस् मि ख्यप पेस्
वाक्गुह्य अचिन्त्य होने से,

ལེགས་པའི་ལམ་མཆོག་སྟོན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लेग पई लम छोग तोन ल छग छ़ल लो
परम सुभाषित मार्ग-प्रदर्शन को नमन करता हूँ।7।

རང་བཞིན་འོད་གསལ་མཁའ་ལྟར་མི་དམིགས་ཀྱང་། །
रङ शिन ह्योद् सल खा तर मि मिग क्यङ
प्रकृत प्रभास्वर आकाशवत् अनालम्ब होने पर भी,

རྣམ་པ་ཀུན་ལྡན་ཡེ་ཤེས་རོལ་པ་ཡིས། །
नम प कुन देन ये शेस् रोल प यीस्
सर्वाकारयुक्त ज्ञान-लीला के द्वारा।

ཤེས་བྱ་ཇི་སྙེད་མཁྱེན་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྒྱས། །
शेस् छ जि ञेद् ख्येन पई दक्यिल खोर ग्येस्
यावत् ज्ञेय-ज्ञान के मण्डल खिले हैं,

དཔག་མེད་ཐུགས་ཀྱི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
पग मेद् थुग क्यि ह़ोद् ल छग छ़ल लो
अपरिमित चित्त-प्रभ को नमन करता हूँ।8।

ཆོས་ཀུན་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཉེར་ཞི་ཞིང་། །
छोस् कुन ङो बो ञिद् क्यीस् ञेर शि शिङ
सर्वधर्म स्वभावतया उपशान्त होते हैं,

མ་འགགས་སྣང་བ་རབ་ཏུ་བཀྲ་བ་གང་། ཁྱོད་ཀྱིས་
म गग नङ व रप तु ट व गङ
अनिरुद्ध-आभास जो प्रकट हुये हैं।

གཟིགས་པའང་རྣམ་དག་ཞི་བ་དང་། །
ख्योद् क्यीस् ज़िग पह़ङ नम दग शि व दङ
आप द्वारा दर्शित भी विशुद्ध शान्त एवं,

དེ་བཞིན་ཀུན་ཏུ་གཟིགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दे शिन कुन तु ज़िग ल छग छ़ल लो
तथा-सर्वदर्शक को नमन करता हूँ।9।

གང་ཞིག་འགྲོ་བའི་ཡིད་བཞིན་ཉེར་འཚོའི་གནས། །
गङ शिग डो बई यिद् शिन ञेर छ़ोइ नेस
जो प्राणी-चित्तानुसार उपजीविका स्थान है,

སྐུ་གསུང་ཐུགས་དང་ཡེ་ཤེས་དཔག་མེད་སྟོབས། །
कु सुङ थुग दङ ये शेस् पग मेद् तोप
काय-वाक्-चित्त एवं अपरिमित ज्ञान-बल है।

ཐུགས་རྗེ་ཕྲིན་ལས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡི། །
थुग जे ठिन लेस पग तु मेद् प यि
अपरिमित करुणा के कर्म वाले,

འོད་དཔག་མེད་ལ་རྟག་པར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ह़ोद् पग मेद् ल तग पर छग छ़ल लो
अमिताभ को सदा नमन करता हूँ।10।

དངོས་དང་ཡིད་ཀྱིས་སྤྲུལ་པའི་ལུས་ལོངས་སྤྱོད། །
ङोस् दङ यिद् क्यीस् टुल पई लुस् लोङ चोद्
वास्तविक एवं चित्त द्वारा निर्मित काय-सम्पत्ति,

ཡོངས་སུ་མ་བཟུང་ནམ་མཁའི་མཐར་ཐུག་པ། །
योङ सु म ज़ुङ नम खई थर थुग प
अपरिगृहीत आकाश कोटि पर्यन्त।

བློ་ཡིས་བླངས་ཏེ་བདེ་བར་གཤེགས་རྣམས་མཆོད། །
लो यीस् लङ ते दे वर शेग नम छोद्
चित्त द्वारा गृहीत कर सुगतों की पूजा करता हूँ,

དམན་ལ་བརྩེར་དགོངས་བདག་གི་འདི་དག་བཞེས། །
मेन ल ज़ेर गोङ दग गि दि दग शेस्
हीन को करुणाभिप्राय वाले मेरे ये ग्रहण करें।11।

བདག་དང་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྡིག་པའི་ལས། །
दग दङ सेम चेन कुन ग्यि दिग पई लेस
मैं (स्वयं) सहित समस्त सत्त्वों के पापकर्म,

ཉེས་པར་གྱུར་གང་མཐོལ་ཞིང་བཤགས་པར་བགྱི། །
ञेस् पर ग्युर गङ थोल शिङ शग पर ग्यि
जो दूषित हैं देशना करता हूँ।

སླན་ཆད་ནམ་ཡང་བགྱིད་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
लेन छे नम यङ ग्यिद् पर म ग्युर चिग
दुबारा कदापि (मैं) नहीं करूँ,

ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པའང་གཏན་དུ་ཟད་བྱེད་ཤོག །
लेस क्यि डिप पह़ङ तेन तु ज़े छेद् शोग
कर्मावरण भी सम्पूर्णतया क्षय हो।12।

རྒྱལ་དང་རྒྱལ་སྲས་ཉན་ཐོས་རང་རྒྱལ་དང་། །
ग्यल दङ ग्यल सेस् ञेन थोस् रङ ग्यल दङ
जिन एवं जिनपुत्र, श्रावक-प्रत्येकबुद्ध तथा,

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་དགེ་ལ་རྗེས་ཡི་རང་། །
डो व कुन ग्यि गे ल जेस् यि रङ
समस्त प्राणियों के पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ।

གང་ཡང་ཕྱོགས་བཅུའི་བདེ་གཤེགས་ཐམས་ཅད་ལ། །
गङ यङ छोग चुइ दे शेग थम चे ल
जो भी दशदिग् समस्त सुगतों से,

ཐེག་མཆོག་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བར་བསྐུལ། །
थेग छोग छोस् क्यि खोर लो कोर बर कुल
परमयान धर्मचक्रप्रवर्तन हेतु प्रार्थना करता हूँ।13।

བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོ་དཔག་ཏུ་མེད་པར་ཡང་། །
कल प ग्य छ़ो पग तु मेद् पर यङ
अपरिमित कल्पसागर पर्यन्त भी,

མྱ་ངན་མི་འདའ་བཞུགས་པར་གསོལ་བ་འདེབས། །
न्य ङेन मि दा शुग पर सोल व देप
अध्येषणा करता हूँ कि परिनिर्वाण नहीं होकर
विराजमान हों।

དུས་གསུམ་བསགས་པའི་དགེ་བ་ཅི་ཡོད་པ། །
दुस् सुम सग पई गे व चि योद् प
त्रिकाल संचित जो भी पुण्य हैं,

གཞན་ཕན་དོན་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོར་བསྔོ། །
शेन फेन दोन छिर छङ छुप छेन पोर ङो
पर-हितार्थ महाबोधि हेतु परिणामना करता हूँ।14।

ཇི་སྲིད་བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོ་མ་ཐོབ་བར། །
जि सिद् छङ छुप ञिङ पो म थोप बर
यावत् बोधिगर्भ (बुद्धत्व) की प्राप्ति नहीं होने तक,

སྐྱེ་བ་འདི་དང་མ་འོངས་ཐམས་ཅད་དུ། །
क्ये व दि दङ म ह़ोङ थम चे दु
यह जन्म एवं समस्त अनागत (कालों) में।

བླ་མ་དམ་པས་རྗེས་སུ་འཛིན་གྱུར་ཅིག །
ल म दम पेस् जेस् सु ज़िन ग्युर चिग
सत्गुरु द्वारा (मैं) अनुगृहीत होऊँ,

བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་ནམ་དུའང་ཉམས་མ་གྱུར། །
छङ छुप सेम नि नम दुहङ ञम म ग्युर
बोधिचित्त की भी कदापि हानि नहीं हो।15।

རིགས་གཟུགས་ལོངས་སྤྱོད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཡི། །
रिग ज़ुग लोङ चोद् फुन सुम छ़ोग प यि
जाति-रूप-सम्पत्ति-सम्पन्न होकर,

དལ་འབྱོར་མཆོག་ཐོབ་ཆོས་ལྡན་གྲོགས་དང་བཅས། །
दल छोर छोग थोप छोस् देन डोग दङ चेस्
परम क्षणसम्पद्-लब्ध, धर्म-युक्त मित्र सहित।

སངས་རྒྱས་བསྟན་ལ་རིམ་བཞིན་སློབ་པ་དང་། །
सङ ग्येस् तेन ल रिम शिन लोप प दङ
बुद्धशासन का क्रमशः शिक्षा प्राप्त कर,

འདུན་དང་བརྩོན་འགྲུས་བག་ཡོད་ལྡན་གྱུར་ཅིག །
दुन दङ त्ज़ोन डुस् बग योद् देन ग्युर चिग
छन्द (श्रद्धा), वीर्य एवं अप्रमाद से युक्त हो।16।

ངན་སོང་གསུམ་སོགས་མི་བཟད་འཁོར་བ་ཡི། །
ङेन सोङ सुम सोग मि ज़े खोर व यि
तीन दुर्गति आदि असह्य भवों के,

མི་ཁོམ་འཇིག་རྟེན་རྣམས་སུ་སྐྱེ་འགྱུར་ལས། །
मि खोम जिग तेन नम सु क्ये ग्युर लेस
अक्षण लोकों में जन्म होने वाले।

གང་དེ་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་རབ་སྨིན་ནས། །
गङ दे छे दि ञिद् ल रप मिन नेस्
जो (कर्म) हैं वे इह जन्म में परिपाक होकर,

ལན་གྲངས་གཞན་དུ་མྱོང་བར་མ་གྱུར་ཅིག །
लेन डङ शेन दु न्योङ बर म ग्युर चिग
अपरपर्यायवेदनीय (दूसरे जन्मों में वेदनीय) न हो।17।

སྦྱིན་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་བཟོད་དང་བརྩོན་འགྲུས་དང་། །
छिन दङ छुल ठिम ज़ोद् दङ त्ज़ोन डुस् दङ
दान, शील, क्षान्ति तथा वीर्य,

བསམ་གཏན་ཤེས་རབ་ཐབས་མཁས་རྨད་བྱུང་དང་། །
सम तेन शेस् रप थप खेस् मे छुङ दङ
ध्यान, प्रज्ञा, और अद्भुत् उपायकौशल्य।

སྨོན་ལམ་སྟོབས་དང་ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་ཡི། །
मोन लम तोप दङ ये शेस् ग्य छो यि
प्रणिधान, बल तथा ज्ञानसागर के,

སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་གྱུར་ཅིག །
चोद् प थम चे योङ सु ज़ोग ग्युर चिग
समस्त चर्या परिपूर्ण हो जायें।18।

ལུས་དང་དེ་བཞིན་སྲོག་ལའང་ལྟོས་མེད་པར། །
लुस् दङ दे शिन सोग लहङ तोस् मेद् पर
काय एवं ऐसे ही प्राण का भी परवाह न करके,

སེམས་ལས་དབང་ཞིང་དབེན་པས་རང་རྒྱུད་དུལ། །
सेम लेस रुङ शिङ वेन पेस् रङ ग्युद् दुल
चित्त-कर्मवशीभूत कर एकान्त द्वारा स्वसन्तति दमित कर।

ལུང་དང་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ཆོས་ཀྱིས་འབྱོར། །
लुङ दङ ङोन पर तोग पई छोस् क्यीस् छोर
आगम एवं अभिसमय रूपी धर्मसम्पद् होकर,

བརྩེ་ལྡན་རྟག་ཏུ་ཤེས་བཞིན་ལྡན་གྱུར་ཅིག །
त्ज़े देन तग तु शेस् शिन देन ग्युर चिग
सकरुणा सदा सम्प्रजन्य से युक्त होऊँ।19।

འཁོར་བའི་དེ་བཞིན་ཉིད་གང་མྱ་ངན་འདས། །
खोर बई दे शिन ञिद् गङ न्य ङेन देस्
जो भव तथता है वह निर्वाण है,

ཀུན་རྟོག་དེ་བཞིན་ཉིད་གང་ཡེ་ཤེས་ཏེ། །
कुन तोग दे शिन ञिद् गङ ये शेस् ते
जो विकल्प की तथता है वह ज्ञान है।

གཅིག་དང་དུ་མའི་བདག་ཉིད་ལས་འདས་པའི། །
चिग दङ दु मई दग ञिद् लेस देस् पई
एक-अनेक-स्वभाव से पार,

ཆོས་ཉིད་རྟོགས་པའི་བློ་གྲོས་ལྡན་གྱུར་ཅིག །
छोस् ञिद् तोग पई लो डोस् देन ग्युर चिग
धर्मता ज्ञान रूपी बुद्धि से युक्त हो।20।

གང་ཡང་རྟེན་འབྱུང་ཟབ་མོའི་ཚུལ་གནས་པ། །
गङ यङ तेन छुङ ज़प मोइ छुल नेस प
जो भी है प्रतीत्यसमुत्पाद गम्भीर क्रमस्थ है,

ངེས་དོན་མཐར་ཐུག་སྤྲོས་བྲལ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ། །
ङेस् दोन थर थुग टोस् डल छोस् क्यि कु
नीतार्थ पराकाष्ठा निष्प्रपञ्च धर्मकाय।

སྟོབས་སོགས་ཡོན་ཏན་ཡེ་ཤེས་ཕྲིན་ལས་སོགས། །
तोप सोग योन तेन ये शेस् ठिन लेस सोग
बल-आदि गुण ज्ञान-कर्म-आदि,

བདེ་གཤེགས་ཆོས་ལ་ཐོགས་མེད་འཇུག་གྱུར་ཅིག །
दे शेग छोस् ल थोग मेद् जुग ग्युर चिग
सुगत धर्म में असंग प्रवेश करूँ।21।

གང་དུ་འགྲོ་བློ་མངོན་པར་དགའ་གྱུར་པའི། །
गङ दु डो लो ङोन पर गा ग्युर पई
जहाँ प्राणी-बुद्धि अभिनन्दित होती,

ཡིད་ལུས་སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། །
यिद् लुस् चोद् प नम पर दग प दङ
मनस्कायचर्या विशुद्ध होता है।

དབྱངས་སྙན་ངག་གིས་ཆོས་ཚུལ་རྒྱ་མཚོ་སྟོན། །
यङ ञेन ङग गीस् छोस् छुल ग्य छो तोन
मधुर स्वर (रूपी) वाक् से धर्मक्रमसागर का प्रदर्शन,

རྒྱལ་སྲས་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་དང་མཚུངས་པར་ཤོག །
ग्यल सेस् नम क्यि चोद् दङ छुङ पर शोग
जिनपुत्र- (बुद्धपुत्र)-चर्याओं के समान हो जाये।22।

ཇི་སྲིད་དེ་འདྲའི་ཡོན་ཏན་མ་ཐོབ་བར། །
जि सिद् दे तई योन तेन म थोप बर
यावत् वैसे गुणों की प्राप्ति नहीं होने तक,

མི་མཐུན་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཡི། །
मि थुन छोग लेस नम पर ग्यल व यि
विपक्ष से विजित होने वाले।

འཆི་མེད་ཚེ་དང་དཔལ་འབྱོར་རྒྱས་པ་དང་། །
छि मेद् छे दङ पल छोर ग्येस् प दङ
अमरायु एवं श्रीसम्पद् की विपुलता,

བསམ་པའི་དོན་ཀུན་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
सम पई दोन कुन यिद् शिन डुप ग्युर चिग
आशयार्थ सभी मनोरथ सिद्ध हों।23।

ཚེ་འདིའི་སྣང་བ་ནུབ་པར་ཉེ་བ་ན། །
छे दी नङ व नुप पर ञे व न
इस जन्म का आभास अस्त होने के समीप आने पर,

བདེ་གཤེགས་སྲས་དང་བཅས་པས་བྱིན་བརླབས་ཏེ། །
दे शेग सेस् दङ चेस् पेस् छिन लप ते
सुगत पुत्र सहित के अधिष्ठान द्वारा।

འོད་གསལ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དོན་རྟོགས་ནས། །
ह्रोद् सल ल्हेन चिग क्येस् पई दोन तोग नेस्
सहज प्रभास्वर के अर्थ को जानकर,

ལྷ་དང་ལྷ་མོ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡིས། །
ल्ह दङ ल्ह मो पग तु मेद् प यीस्
अपरिमित देव और देवियों के द्वारा।24।

སྣ་ཚོགས་མཆོད་པས་བདག་གི་སྤྱན་བསུ་ཞིང་། །
न छ़ोग छोद् पेस् दग गि ङुन सु शिङ
नाना पूजाओं से समक्ष स्वागत करके,

རང་སྣང་དྲི་མེད་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རང་བཞིན། །
रङ नङ डि मेद् छोस् क्यि यिङ रङ शिन
विमल स्वभासित धर्मधातु-स्वभाव।

རྣམ་དག་བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་ཁམས་དེར། །
नम दग दे व चेन ग्यि शिङ खम देर
विशुद्ध सुखावती के उस क्षेत्र में,

བདེ་ཆེན་སེམས་ཀྱིས་བདེ་བླག་བགྲོད་གྱུར་ཅིག །
दे छेन सेम क्यीस् दे लग डोद् ग्युर चिग
महासुख-चित्त द्वारा सरलता से जाऊँ।25।

ཞིང་དེར་དམར་སེར་འོད་ཀྱི་ཕུང་པོའི་དབུས། །
शिङ देर मर सेर ह्रोद् क्यि फुङ पोइ उस्
उस क्षेत्र में रक्त-पीत-प्रभ-राशि के मध्य,

རབ་མང་རིན་ཆེན་པདྨའི་ཟེའུ་འབྲུ་ལ། །
रप मङ रिन छेन पेमाई ज़ेहु डु ल
अत्यन्त बहुल रत्नपद्मों के केसरों में।

དགེ་སློང་བྱེ་བ་འབུམ་དང་ཐབས་གཅིག་པའི། །
गे लोङ छे व बुम दङ थप चिग पई
कोटि-लक्ष भिक्षुओं तथा एकमात्र,

རྒྱལ་སྲས་ཚོགས་ཀྱིས་ཡོངས་བསྐོར་བཅོམ་ལྡན་འདས།།
ग्यल सेस् छ़ोग क्यीस् योङ कोर चोम देन देस्
भगवान् जिनपुत्र-गण से परिवृत,

འོད་འབར་བལྟ་བས་མི་ངོམས་དེ་མཐོང་ནས། །
ह़ोद् बर त वे मि ङोम दे थोङ नेस्
प्रभा-प्रज्वलित के दर्शन से अतृप्त उसे देखकर,

དགེ་ཚོགས་ལེགས་བྱས་རྣམ་པར་དཀར་བའི་འབྲས། །
गे छ़ोग लेग छेस् नम पर कर बई डेस्
पुण्य-राशि सुकृत विशुद्ध,

དཔག་མེད་སྤྲུལ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ལ། །
पग मेद् टुल नेस् चोम देन देस् दे ल
अपरिमित निर्मित कर उस भगवान् को,

བྱམས་ཆེན་འཇམ་པའི་དབྱངས་དང་ཀུན་ཏུ་བཟང་། །
छम छेन जम पई यङ दङ कुन तु ज़ङ
महामैत्रेय, मञ्जुघोष तथा समन्तभद्र,

རྒྱལ་སྲས་རྣམས་དང་རྟག་ཏུ་མི་འབྲལ་ཞིང་། །
ग्यल सेस् नम दङ तग तु मि डल शिङ
जिनपुत्रों से सदा अलग न हो,

རྣམ་ཐར་རྒྱ་མཚོ་སྒྱུ་མ་ལྟར་སྤྱོད་པས། །
नम थर ग्य छ़ो ग्यु म तर चोद् पेस्
विमोक्ष-सागर के मायावत् चर्या से,

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོའི་རྟོགས་པ་རབ་ཐོབ་ནས། །
ये शेस् ग्य छ़ोइ तोग प रप थोप नेस्
ज्ञानसागर के (अभि-)समय को प्रलब्ध कर,

ཆོས་རྗེ་འོད་དཔག་མེད་པ་མཐོང་གྱུར་ཅིག །
छोस् जे ह़ोद् पग मेद् प थोङ ग्युर चिग
धर्मस्वामी अमिताभ का दर्शन हो।26।

ཐུན་མཚམས་འཆར་ཀའི་ཉིན་བྱེད་ལྟར་དམར་བ། །
थुन छ़म छर कई ञिन छेद् तर मर व
सूर्योदय काल के लाल सूर्य-सा।

བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་ལུང་བསྟན་ཐོབ་གྱུར་ཅིག །
छङ छुप छेन पोइ लुङ तेन थोप ग्युर चिग
महाबोधि का व्याकरण (भविष्यवाणी) प्राप्त हो।27।

ངོ་མཚར་ཡོངས་རྫོགས་དཔལ་དང་ལྡན་པའི་ལུས། །
ङो छ़र योङ ज़ोग पल दङ देन पई लुस्
अद्भुत् परिपूर्ण श्री से युक्त काय।

བསྟོད་དབྱངས་རྒྱ་མཚོས་ཤིས་པ་བརྗོད་གྱུར་ཅིག །
तोद् यङ ग्य छ़ोस् शीस् प जोद् ग्युर चिग
स्तुति-स्वर-सागर द्वारा मङ्गलाचरण करूँ।28।

སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་མཐུ་ཆེན་ཐོབ་ལ་སོགས། །
चेन रेस ज़िग वङ थु छेन थोप ल सोग
अवलोकितेश्वर-महास्थाम आदि।

རྣམ་ཐར་ཚུལ་ལ་མཉམ་པར་འཇུག་གྱུར་ཅིག །
नम थर छुल ल ञम पर जुग ग्युर चिग
विमोक्ष-(जीवनी)क्रम में समाहित हो जाऊँ।29।

ཐེག་མཆོག་རྒྱ་མཚོའི་ཐབས་རྣམས་ཀུན་བཟུང་སྟེ། །
थेग छोग ग्य छ़ोइ थप नम कुन ज़ुङ ते
परमयान-सागर के समस्त उपायों को ग्रहण कर।

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་འགྲོ་ཀུན་སྒྲོལ་གྱུར་ཅིག །
सिद् पई छ़ो लेस डो कुन डोल ग्युर चिग
भवसागर से समस्त प्राणियों को मुक्त करूँ।30।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོ་རྟག་ཏུ་སྦྱོང་བ་དང་། །
शिङ खम ग्य छ़ो तग तु छ्योङ व दङ
क्षेत्रधातु-सागर सदा शोधित कर,

སེམས་ཅན་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཏུ་སྨིན་བྱས་ཏེ། །
सेम चेन ग्य छ़ो रप तु मिन छेस् ते
सत्त्व-सागर पूरी तरह विपाक कर,

ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་བདེ་བར་གཤེགས་རྣམས་ཀྱིས། །
जि तर ङोन ग्यि दे वर शेग नम क्यीस्
जैसे पूर्व के सुगतों द्वारा,

དེ་ལྟར་བདག་གིས་སེམས་ཅན་མ་ལུས་ཚོགས། །
दे तर दग गीस् सेम चेन म लुस् छ़ोग
वैसे मैं अशेष सत्त्व-गण को,

ཚོགས་གཉིས་རྒྱ་མཚོ་དག་ནི་སྤེལ་བར་བྱེད། །
छ़ोग ञीस् ग्य छ़ो दग नि पेल बर छेद्
द्विसम्भार-सागर का विस्तार कर।

སྨོན་ལམ་རྒྱ་མཚོ་རྣམས་ནི་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
मोन लम ग्य छ़ो नम नि डुप ग्युर चिग
प्रणिधान सागरों को सिद्ध करूँ।31।

ཐུགས་བསྐྱེད་སྨོན་ལམ་མཛད་སྟོབས་ཅི་འདྲ་བ། །
थुग क्येद् मोन लम ज़े तोप चि ड व
चित्तोत्पाद-प्रणिधान-बल जैसे हों।

མྱུར་དུ་སངས་རྒྱས་ས་ལ་འགོད་པར་ཤོག །
न्युर दु सङ ग्येस् स ल गोद् पर शोग
शीघ्र बुद्ध-भूमि पर आरूँढ करूँ।32।

ཅེས་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་བསྟོད་པ་ཡན་ལག་བདུན་པ་སྨོན་ལམ་དང་བཅས་པ་འདི། ཀརྨ་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་མདོ་སྨད་ཀྱི་སའི་ཆ་རྨ་ཆུའི་འགྲམ་དུ་སྦྱར་བའོ། །

इस सप्ताङ्ग(-पूजा)प्रणिधान सहित अमिताभ की स्तुति को कर्मापा देशिन-शेग्स्पा ने दो-मद् का क्षेत्र म-छु के तट पर निबद्ध किया है।

དེ་ནས་འདི་སྐད་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་རབ་འབྱམས་མཐའ་དང་དབུས་མེད་པ་ཇི་སྙེད་པ་རྣམས་ན།
तत्पश्चात् इस प्रकार पाठ करें-**अनन्त दशदिग्-क्षेत्र आद्यान्त रहित जितने भी हैं,**

**དུས་གསུམ་ན་གཤེགས་ཤིང་གཤེགས་པ་དང་གཤེགས་པར་འགྱུར་བའི་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་**
**उनमें त्रिकालगत गमन करने वाले, जो गमन करेंगे, वे सभी बुद्ध-बोधिसत्त्व,**

**དང་། ཉན་ཐོས་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། ལྷ་དང་། དྲང་སྲོང་དང་། རིག་སྔགས་འཆང་བ་ལ་སོགས་པ། བདེན་པ་**
**श्रावक प्रत्येक-बुद्ध, ऋषि, विद्याधर आदि अशेष सत्य सिद्ध**

**གྲུབ་པ་མ་ལུས་ཤིང་ལུས་པ་མེད་པ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། བདག་གིས་ཐོག་མ་མ་མཆིས་པ་ནས།**
**समस्त अशेष, मुझे ध्यान दें। मेंरे द्वारा अनादि से**

**མཐའ་མ་མ་མཆིས་པའི་བར་དུ། དགེ་བའི་རྩ་བ་བགྱིས་པ་དང་། བགྱིད་དུ་སྩལ་བ་དང་། བགྱིས་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་**
**अनन्त तक किये गये कुशल कर्म, करने दिये गये या (अन्य द्वारा)**

**བ་ཐམས་ཅད་དང་། ཁྱད་པར་དུ་རྒྱལ་བ་ཉིད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་གནས་རྡོ་རྗེའི་གདན་འདི་ཉིད་དུ་**
**करने पर उसका अनुमोदन किया हो वे सभी तथा विशेषतया जिन स्वयं का अभिसम्बोधि-स्थल वज्रासन।**

ཞེས་སམ་འདོན་པ་བསྒྱུར། **ཡིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་གཞལ་མེད་ཀྱི་ཁང་པ་བཀོད་པ་རྔ་མཚར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར།**
ऐसा सोच यहाँ समयानुसार पाठ परिवर्तन करें। **मन से विकुर्वित अद्भुत विमान व्यूह एवं श्री से युक्त,**

རྒྱལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ཆོ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་བསྟན་པའི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་དུས་ཁྱད་པར་ཅན་ལ། རྒྱལ་བ་སྐུ་བལྟམས་པ་དང་། མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་
जिन स्वयं द्वारा महाप्रातिहार्य प्रदर्शन से अधिष्ठित विशिष्ट अवसर जैसे- जिन-जन्म-दिवस, अभिसम्बोधि और महापरिनिर्वाण

པའི་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དུས་ཁྱད་པར་ཅན་དུ། ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བའི་དུས་ཁྱད་པར་ཅན་དུ། རྒྱལ་བ་ལྷ་ལས་བབས་པའི་བྱིན་གྱིས་
के विशिष्ट अवसर, धर्मचक्र प्रवर्त्तन के विशिष्ट-अवसर, जिन के देवलोक से अवतरण आदि विशिष्ट अवसर-

བརླབས་པའི་དུས་ཁྱད་པར་ཅན་ཞེས་སམ། སྤྱི་ཙམ་ལ་**རང་གཞན་གྱི་དགེ་ཚོགས་རྒྱ་མཚོ་སྒྲུབ་པའི་དུས་ཁྱད་པར་ཅན་འདིར།**
ऐसा विचार कर तथा सामान्य अवसरों में-**स्व-पर द्वारा पुण्यसंभार सागर सदृश सम्पन्न करने के विशिष्ट अवसर पर**

ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དང་། ཉན་ཐོས་ཀྱི་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་
यहाँ दश दिशाओं के समस्त बुद्ध और बोधिसत्त्व, श्रावक पार्षद सहित सभी को

སྤྱན་དྲངས་ནས། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ལ་
आमन्त्रण कर बोधिसत्त्वों के चर्या के अनुरूप समस्त जगत के हित,

སྨན་པ་དང་། ཕན་བདེ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་འབྱུང་བའི་སླད་དུ་ཕྱག་འཚལ་བ་དང་། མཆོད་པ་དང་། སྡིག་པ་བཤགས་
कल्याण और प्रचुर सुख के लिये वन्दना, पूजा, प्रायश्चित,

པ་དང་། དགེ་བ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་དང་། ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བར་བསྐུལ་བ་དང་། མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བར་
पुण्य का अनुमोदन, धर्मचक्र प्रवर्त्तन, परिनिर्वाण न होने के लिये

གསོལ་བ་འདེབས་པ་དང་། དགེ་བ་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོར་བསྔོ་བ་ལ་སོགས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། གཞན་
अभ्यर्थना, पुण्य का सम्बोधि के लिये परिणामना आदि कुशलमूल तथा दूसरे अतीत, अनागत और वर्तमान

ཡང་འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་། ཉན་ཐོས་དང་།
बुद्ध, बोधिसत्त्व, श्रावक, समस्त प्रत्येक-बुद्ध और हम सभी जितने

རང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་། བདག་ཅག་སེམས་ཅན་ཇི་སྙེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་དགེ་བའི་རྩ་བ་བགྱིས་པ་དང་། བགྱིད་
भी सत्त्व, कुशलमूल को किये हैं, अन्य द्वारा करवाये हैं,

པར་འགྱུར་བ་དང་། བགྱིད་བཞིན་པ་དང་། གཞན་ལ་བགྱིད་དུ་སྩལ་བ་དང་། བགྱིད་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་དགེ་བའི་
(अन्यों द्वारा) किये जाने पर उसका अनुमोदन किया है-

རྩ་བ་ཅི་ཡོད་པ་རྣམས་ཀྱི་མཐུ་དང་སྟོབས་ལས། སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མ་དག་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་ཞིང་།
ऐसे जो भी कुशलमूल हैं, उनके प्रभाव एवं बल से समस्त भाजन-लोक

རྣམ་པར་དག་པའི་ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
अशुचिता से रहित हो, विशुद्ध होकर प्रचुर गुणों से युक्त हों।

དམྱལ་བའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དང་། གཤིན་རྗེའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དང་། དུད་འགྲོའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སྔར་
नरक लोक-धातु, यमलोक-धातु, तिर्यक लोक-धातु (जो)

ཆགས་པ་ཐམས་ཅད་ཞིག་ཅིང་སྟོངས་པར་གྱུར་ཅིག །ཕྱིན་ཆད་ཆགས་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
पूर्व में अस्तित्व में आये हैं वे नष्ट होकर शून्य हो जायें।

གལ་ཏེ་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་ཞིག་པར་མ་གྱུར་ན་ཡང་ལྕགས་སྲེག་གི་ས་གཞི་དང་ཁང་པ་དང་ར་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིད་དུ་
यदि कर्मवश क्षय न भी हों लो ज्वलनशील भूमि (फर्श) गृह और प्राचीर आदि मनोहर शीतल-उष्ण सम

འོང་ཞིང་བསིལ་དྲོད་སྙོམས་ལ་བདེ་བ་བསྐྱེད་ནུས་པའི་རང་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །
होकर सुख उत्पन्न करने वाला स्वभाव बनें।

ཆུ་ཚན་ཁོལ་མ་ཐམས་ཅད་ནི་ཁྲུས་ཀྱི་རྫིང་བུ་ཡན་ལག་བརྒྱད་དང་ལྡན་པ་པདྨོ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་ཁེབས་ཤིང་ངང་པ་ལ་
समस्त (नरक के) उबलते पानी आठ गुणों से युक्त स्नान-तालाब होकर विश्व पद्मों से आवृत हंस आदि के

སོགས་པ་སྒྲ་སྙན་པར་སྒྲོག་པར་གྱུར་ཅིག །
मधुर ध्वनियों से युक्त हो जायें।

ལྕགས་སྲེག་གི་གཏུན་དང་རི་བོ་འཐབ་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་མེ་ཏོག་གི་ཆར་དུ་གྱུར་ཅིག །
जलते लोह-मुसल और पर्वत का वार आदि पुष्प-वृष्टि में परिवर्तित हों।

ཐལ་ཚན་ཆུ་བོ་རབ་མེད་དང་། རོ་མྱགས་ཀྱི་འདམ་དང་། སྤུ་གྲིའི་ཚལ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་ལྗོན་ཤིང་དང་། མེ་ཏོག་
गर्म राख, वैतरणी, सड़े-गले कीचड, असिपत्रवन आदि वृक्ष, फूल,

དང་། འབྲས་བུ་དང་། སྨན་གྱི་རིགས་ལ་སོགས་པས་མཛེས་པའི་སྐྱེད་མོས་ཚལ་དུ་གྱུར་ཅིག །
फल और विभिन्न औषधि आदि से सुशोभित उद्यान बन जायें।

ཤལ་མ་རི་ཡང་རིན་པོ་ཆེའི་རི་བོ་ལྗོན་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བ་དུ་མ་དང་། ས་གཞི་ཤིན་ཏུ་འཇམ་པའི་རྩྭ་སྔོན་པོ་དང་མེ་ཏོག་
शाल्माली पर्वत भी रत्न-पर्वत अनेक मनोहर वृक्षों तथा जमीन अत्यन्त

ལ་སོགས་པས་ཁེབས་པ་དག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
मृदु हरे घासों और फूलों से आवृत हों।

དམྱལ་སྲུང་འཇིགས་སུ་རུང་བ་དང་སེང་གེ་དང་ཁྱི་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ལྷའི་བུ་དང་བུ་མོ་ལ་སོགས་པ་དང་རྟ་མཆོག་
नरक के भयंकर रक्षक सिंह और श्वान आदि समस्त देवपुत्र और

རིན་པོ་ཆེ་དང་གླང་པོ་རིན་པོ་ཆེ་ལྟ་བུ་ཤ་སྟག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
पुत्रियाँ तथा उत्तम अश्व-रत्न गज-रत्न मात्र हो जाये।

དམྱལ་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས་སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་སེ་གོལ་གཏོགས་པའི་ཡུན་ཙམ་དུའང་དེར་མི་གནས་པར་ཆེ་འཕོས་ནས་
नरक के समस्त प्राणी जन्मान्तर के एकाच्छटा काल में वहाँ अवस्थित नहीं होकर, उत्क्रमण कर, सुगति स्वर्ग

བདེ་འགྲོ་མཐོ་རིས་ཀྱི་གནས་མཆོག་ཏུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
के उत्तम स्थान में जन्म लें।

སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་ཆེ་འཕོས་པར་མ་གྱུར་ནའང་གཤིན་རྗེའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ས་གཞི་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་
(प्रेत भी) जन्म लेने के पश्चात् तुरन्त मृत्यु को प्राप्त न होने पर भी समस्त यमलोक का जमीन विविध रत्नों के

ལས་གྲུབ་ཅིང་། མནན་ན་ནེམ་བྱེད་པ་བཏེག་ན་སྤྱར་བྱེད་པ། ཡིད་དུ་འོང་བའི་ཡོ་བྱད་དུ་མས་གང་བར་གྱུར་ཅིག །
बन जायें तथा कदम रखने पर नीचे और उठाने पर ऊपर उठे, मनोहर अनेक उपकरणों से युक्त हो जायें।

གཞན་ཡང་ས་གཞི་ལ་བཟར་རུང་བའི་འབྲས་བུ་ལོ་མ་ལ་སོགས་སྣ་ཚོགས་པའི་བཟའ་བཏུང་སྣ་ཚོགས་པས་གང་བར་
उसके अतिरिक्त जमीन विविध खाने योग्य फल, पत्र आदि विविध खाद्य-पेयों से पूर्ण हों, गगन से भी विभिन्न

འགྱུར་ཞིང་ནམ་མཁའ་ནས་ཀྱང་བཟའ་བཏུང་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཆར་འབབ་པར་གྱུར་ཅིག །
भोजन और पेयों की वृष्टि हों

ཉི་མ་དང་ཟླ་བའི་འོད་རྟག་ཏུ་འབྱུང་ཞིང་སོས་ཀའི་དུས་བསིལ་ཞིང་དགུན་གྱི་ཚེ་དྲོ་བར་གྱུར་ཅིག །
सदैव सूर्य और चन्द्र का प्रकाश आये तथा ग्रीष्म-ऋतु में शीतल और शरद्-ऋतु में उष्ण हो जाये।

ས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཆུ་གཙང་བ་ཡན་ལག་བརྒྱད་དང་ལྡན་པ་ཀླུ་གྱུར་འབབ་ཅིང་ལྗོན་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བའི་གྲིབ་
समस्त दिशाओं में पवित्र अष्ट गुणों से युक्त जल स्रोत बहें, मनोहर वृक्षों की शीतल छाया

བསིལ་དག་ཉམས་པ་མེད་པར་སྣང་བར་གྱུར་ཅིག །
बिना कम हुये प्रकट होते रहें।

དུད་འགྲོ་སོང་གི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བའི་ལས་གང་གིས་བྱས་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་ནས་དེར་མི་སྐྱེ་བར་
तिर्यक् लोकधातु में उत्पन्न होने के जो कर्म हैं, उनका क्षय होकर वहाँ

གྱུར་ཅིག །
जन्म ने लें।

གལ་ཏེ་སྐྱེས་པར་གྱུར་ནའང་དེ་མ་ཐག་ཏུ་ཚེ་འཕོས་ནས་བདེ་འགྲོ་མཐོ་རིས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
यदि उत्पन्न भी हों तो जन्मोपरान्त तुरन्त मृत्यु को प्राप्त कर सुगति, स्वर्ग के उत्तम (स्थान) में जन्म लें।

སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་ཚེ་འཕོས་པར་མ་གྱུར་ནའང་གླེན་ཞིང་ལྐུགས་པ་མ་ཡིན་པར་མིའི་མཆོག་ལྟར་བློ་གསལ་ཞིང་རྣོངས་པ་
जन्मोपरान्त तुरन्त संक्रान्ति न होने पर भी मूर्ख, तामसी न होकर नर श्रेष्ठ सदृश प्रखर बुद्धि वाला समस्त

ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
मूर्खता से रहित हों।

གཞན་གྱི་དབང་དུ་མི་འགྱུར་བར་ཐམས་ཅད་དུ་རང་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
परतन्त्र न होकर सर्वदा स्वतन्त्रता को प्राप्त हो।

བལ་ལ་སོགས་པ་འབྲེག་པ་དང་། འདེད་པ་དང་། བཀལ་བ་དང་། བསད་པ་དང་། གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་གནོད་པ་
ऊन आदि काटना, वाहन बनाना, बोझा लादना, मारना, एक दूसरे को

བསྐྱལ་བ་སོགས་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་དང་བྲལ་ཞིང་། ཐམས་ཅད་བག་ཡངས་སུ་རྒྱུ་བ་དང་བཟའ་བ་དང་བཏུང་བ་ལ་སོགས་
(शिकार) नुकसान पहुँचाना आदि दुःखों से रहित हों, समस्त सहजतापूर्व आराम से विचरण करें।

པ་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་རྙེད་པ་སོགས་མཐོ་རིས་ཀྱི་མཆོག་ལྟར་བདེ་བ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
भक्ष्य एवं पेय इत्यादि जैसी इच्छा हो वैसा प्राप्त कर उत्तम स्वर्ग सदृश सुख से युक्त हों।

ཀླུ་རྣམས་ཀྱང་ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་གནོད་པ་མེད་ཅིང་། བྱེ་ཚན་གྱི་ཆར་རྣམས་ཀྱང་རིན་པོ་ཆེ་དང་མེ་ཏོག་གི་ཆར་དུ་
नाग भी गरुढ़-हिंसा से नुकसान से विहीन हों। गर्म रेत की वृष्टि भी फूलों की बारिश में

གྱུར་ཅིག །
परिवर्तित हों।

མིའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་རྣམས་སུ་ཡང་གླིང་བཞི་ལ་དབང་བའི་འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་རྒྱལ་ཡང་དང་ཡང་དུ་འབྱུང་བར་
मनुष्य लोकधातुओं में भी बार-बार चार द्वीपों के अधिपति चक्रवर्तीराजा के रूप

གྱུར་ཅིག །
में आयें।

དུས་ཐམས་ཅད་དུ་རྫོགས་ལྡན་གྱི་དུས་དང་མཚུངས་པར་གྱུར་ཅིག །
सदा सतयुग सदृश बना रहे।

སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་དུ་ཡང་གཙོང་རོང་དང་། རི་བྲག་ཚང་ཚིང་། མི་གཙང་བའི་གྲོན་པ་དང་ཚེར་མ་ཅན་གྱི་ཤིང་ལ་
भाजन लोक में भी उबड़-खाबड़, पहाड़-चट्टान, अशुचि गड्ढा, काँटेदार वृक्ष आदि से

སོགས་པ་མེད་ཅིང་ལག་མཐིལ་ལྟར་མཉམ་པ་དང་ཡ་ཡངས་ཆེ་ཞིང་། མནན་ན་ནེམ་བཏེག་ན་སྤར་བྱེད་པ། ཐམས་ཅད་དུ་
रहित हथेली सदृश समतल विस्तृत (जमीन) कदम रखने पर दबता है और उठाने पर उठता है,

ནེའུ་གསིང་དང་མེ་ཏོག་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་གང་ཞིང་བཟར་རུང་བའི་ལོ་ཏོག་མ་རྨོས་པར་འཁྲུངས་པ་དང་ལོ་ཏོག་ཐམས་
सर्वत्र हरी शाद्वल विभिन्न पुष्पों से भरे, भक्षण योग्य अनाज, बिना बोये

ཅད་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་ཞིང་། འབྲས་བུ་ཅན་གྱི་ཤིང་དང་སྨན་གྱི་རིགས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཇི་
उत्पन्न फसल, सभी प्रतिकूल पक्षों से रहित, फलवान् वृक्ष, विभिन्न जाति के औषधि,

ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
जैसी कामना करें वैसी उत्पन्न हो।

དུག་གི་རིགས་ལ་སོགས་པ་ལུས་ལ་ནད་བསྐྱེད་པར་བྱེད་པ་གང་ཡང་འབྱུང་བར་མ་གྱུར་ཅིག །
विष जाति आदि ऐसा कुछ भी पैदा न हो जो शरीर में रोग उत्पन्न करता हो।

གཞན་ཡང་རིན་པོ་ཆེ་དང་གོས་ལ་སོགས་པ་མཁོ་བའི་ཡོ་བྱད་ཐམས་ཅད་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་ཐོགས་པ་མེད་པར་
अन्य महारत्न, वस्त्र आदि सभी आवश्यक उपकरण कामना मात्र से बिना

འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
बाधा का आता रहे।

ནམ་མཁའ་ལས་ཀྱང་རིན་པོ་ཆེ་དང་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་མཁོ་བའི་ཡོ་བྱད་ཐམས་ཅད་རྫོགས་ལྡན་གྱི་དུས་ལྟར་ཆར་
आकाश से रत्न और फल आदि समस्त आवश्यक उपकरण सतयुग की तरह

དུ་འབབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सदैव बरसते रहें

མི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མངལ་དུ་བདེ་བར་གནས་ཤིང་བདེ་བར་བཙའ་བ་དང་།
सभी बच्चे गर्भ में सुखमय रहें और सुखमय उत्पन्न हों।

ལུས་ལ་ནད་ཀྱི་རིགས་གང་ཡང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
शरीर में किसी भी प्रकार का वेदना न हो।

གལ་ཏེ་ན་ན་ཡང་སྨན་པ་དང་སྨན་གྱིས་འཚོར་ཞིང་མྱུར་དུ་སོས་པར་གྱུར་ཅིག །
यदि अस्वस्थ भी हों तो भैषज्य और औषधि प्राप्त कर तुरन्त उपचार प्राप्त करें।

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་འོན་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལྷའི་རྣ་བ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सभी लोकधातुओं में बहरे लोग देवश्रोत्र को प्राप्त करें।

ལོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་ལྷའི་མིག་རྣམ་པར་དག་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
अन्धे विशुद्ध दिव्य-चक्षु को प्राप्त करें,

ལྐུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྨྲ་མཁས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
बहरे वाकपटुता को प्राप्त करें।

སྨྱོན་པ་རྣམས་ཀྱིས་དྲན་པ་སྐྱེད་པར་གྱུར་ཅིག །
पागल स्मृति को प्राप्त करें।

མི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་གཟུགས་བཟང་ཞིང་སྨྲ་མཁས་པ་དང་། ཡིད་གཞུངས་བློ་གྲོས་དང་ལྡན་པ་ལ་སོགས་པ་བསྔགས་པར་
सभी मनुष्य सुरूप, वाक्-पटु, ऋजुमन, प्रतिभाशाली और समस्त

འོས་པའི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འབྱོར་བར་གྱུར་ཅིག །
प्रशंसनीय गुणों से युक्त हों।

བཙོན་དུ་གནས་པ་དང་གསད་པར་བྱ་བ་རྣམས་བདེ་བར་ཐར་པར་གྱུར་ཅིག །
कारागृह में रहने वाले और मृत्यु-दण्ड प्राप्त सभी सुखपूर्वक मुक्त हो

འཇིགས་པ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་དང་བཅུ་དྲུག་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
आठ महाभय और सोलह (उपभय) से मुक्त हों।

སྡུག་པ་ཡིད་དུ་འོང་བ་རྣམས་དང་མི་འབྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
प्रियों से वियोग न हों।

མི་སྡུག་པ་ཡིད་དུ་མི་འོང་བ་རྣམས་དང་འཕྲད་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
अप्रियों से संयोग न हों।

ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཕན་ཚུན་འཐབ་པ་དང་རྩོད་པ་མེད་པར་གཅིག་ལ་གཅིག་བརྩེ་བས་རྟག་ཏུ་གནས་པར་གྱུར་ཅིག །
सभी आपस में युद्ध और विवाद रहित होकर सदैव आपस में मैत्री पूर्वक रहें।

ཐམས་ཅད་ཀྱང་དུས་མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་མེད་པར་གྱུར་ཅིག །
सभी अकाल मृत्यु से रहित हों।

ཚེ་རིང་བར་གྱུར་ཅིག །
दीर्घायु हों।

བསམ་པའི་དོན་ཐམས་ཅད་དམ་པའི་ཆོས་དང་མཐུན་པར་ཡིད་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सभी कामनायें सद्धर्म के अनुरूप तथा इच्छानुरूप सिद्ध हों।

ཐམས་ཅད་དུ་མཐའ་འཁོབ་དང་ཀླ་ཀློ་མེད་པར་དལ་བ་དང་འབྱོར་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
सदैव प्रत्यन्त (धर्म रहित प्रान्त) म्लेच्छ (मे पैदा न होकर) क्षण और सम्पत्ति वान रत्नसदृश पुरुष श्रीयुक्त हों।

དལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའི་ལུས་ཐོབ་ནས་འཁོར་བ་མེ་འབར་བ་ལྟ་བུའི་གློང་དུ་མཐོང་སྟེ། དེ་ལས་ཐར་བར་འདོད་པའི་བློ་
क्षण-सम्पद् युक्त शरीर को प्राप्तकर संसार को जलते आग सदृश देखकर उससे मुक्त होने की तीव्र उत्कण्ठा

སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
पैदा हों।

ཐར་པ་དོན་གཉེར་གྱི་བློ་སྐྱེས་ནས་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པའི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་རྙེད་ཅིང་གུས་
मोक्षाभिलाषी होकर यथा वर्णित लक्षणों से युक्त कल्याणमित्र की प्राप्ति कर

པ་ཆེན་པོས་ཚུལ་བཞིན་དུ་བསྟེན་པར་གྱུར་ཅིག །
महाश्रद्धापूर्वक सेवन करें।

མ་གུས་པ་སོགས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ལ་བསྟེན་པའི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འབྱུང་བར་མ་གྱུར་ཅིག །
श्रद्धा-विहीन आदि कल्याणमित्र सेवन से सम्बन्धित अवद्य (पाप) कभी भी नहीं आये।

དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ལས་མཐོ་རིས་དང་ཐར་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ལམ་ཚང་ལ་མ་ནོར་བ་ཉན་ཞིང་། གསུང་
कल्याणमित्र से स्वर्ग मोक्ष और सर्वज्ञता का सम्पूर्ण मार्ग बिना गलती का श्रवण कर,

རབ་ཀྱི་དོན་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་མྱུར་དུ་རྟོགས་པར་ནུས་པའི་བློ་གྲོས་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
प्रवचनार्थ अविपर्यास शीघ्र अधिगम करने की प्रतिभा से युक्त हों।

ཇི་ལྟར་ཐོས་པའི་དོན་རྣམས་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཉམས་སུ་ལེན་པ་ལ་བརྩོན་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
यथा श्रवण-अर्थ का विधिवत आचरण करने के लिये वीर्य से युक्त हों।

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཕན་བདེ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ནུབ་པ་
लोक के समस्त कल्याण और सुख के श्री का स्रोत जिन-शासन सभी दिशाओं में बिना अस्त हुये विस्तार एवं

མེད་པར་དར་ཞིང་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
वृद्धि को प्राप्त करें।

དགེ་འདུན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཆོས་སྤྱོད་བཅུ་དང་། འཁོར་ལོ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་སྒོ་གསུམ་དགེ་བའི་བྱ་བ་ཁོ་ན་ལ་ཉིན་
सभी संघ भी दसविध धर्मचर्याओं और चक्रद्वय आदि त्रिद्वार मात्र कुशल कृत्यों में

མཚན་ཐམས་ཅད་དུ་བརྩོན་པར་གྱུར་ཅིག །
अहोरात्र वीर्यरत रहें।

དགེ་འདུན་མཐུན་ཅིང་དགེ་འདུན་གྱི་དོན་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
संघ सुसंगठित हों और संघ के सभी अर्थ सिद्ध होते रहें।

རྒྱལ་པོ་དང་བློན་པོ་དང་འབངས་དང་ཁྱིམ་བདག་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དཀོན་མཆོག་ལ་ཤིན་ཏུ་དད་ཅིང་གུས་པའི་
राजा, मन्त्रि, प्रजा, गृहस्थ आदि सभी त्रिरत्न में अटूट श्रद्धा और भक्तिपूर्वक

སེམས་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
चित्त से युक्त हों।

སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དགེ་བའི་བྱ་བ་ལ་དགའ་ཞིང་བརྩོན་པར་གྱུར་ཅིག །
सम्पूर्ण जीवन कुशल कृत्यों के प्रति प्रीति और उद्यम युक्त हों।

ལྷ་མ་ཡིན་རྣམས་ཀྱིས་ལྷའི་དཔལ་འབྱོར་ལ་ཕྲག་དོག་གི་སེམས་ཉེ་བར་ཞི་བར་གྱུར་ཅིག །
असुर लोग देवताओं के समृद्धि से ईर्ष्या-चित्त उपशम हों।

གལ་ཏེ་འཐབ་པའི་ཚེ་ཡང་ལུས་ལ་རྨས་པ་དང་། འཆི་བ་ལ་སོགས་པའི་སྡུག་བསྔལ་མྱོང་བར་མ་གྱུར་ཅིག །
यदि युद्ध भी हों शरीर में घाव, हानि और मृत्यु आदि दुःख का अनुभव न करें।

ཐམས་ཅད་ཀྱང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་སྒྲ་ཐོས་ཤིང་གུས་པ་དང་། དགེ་བ་ལ་གཅིག་ཏུ་དགའ་ཞིང་བརྩོན་པར་གྱུར་ཅིག །
वे सभी त्रिरत्न का शब्द सुनकर भक्ति और कुशल में हर्षित हो उद्यम करें।

ལྷ་རྣམས་ཀྱང་ལྷ་མ་ཡིན་དང་འཐབ་པ་དང་རྨས་པ་དང་ཤི་བ་ལ་སོགས་པའི་སྡུག་བསྔལ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
देवता भी असुरों से युद्ध में घाव, हानि, मृत्यु आदि दुःख से रहित हों।

གཞན་ཡང་སྤྱུགས་པ་དང་། ཆེ་བས་ཆུང་བ་ཟིལ་གྱིས་གནོན་པ་དང་། འཆི་འཕོ་བའི་ལྟས་མི་འབྱུང་ཞིང་སྡུག་བསྔལ་
उसके अतिरिक्त निर्वासन, बड़ो के द्वारा छोटों का शोषण, मृत्यु और संक्रान्ति का लक्षण न दिखें तथा

ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་ནས་རྟག་ཏུ་བདེ་བ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
सभी दुःखों से रहित होकर सदैव सुख से युक्त हों।

བག་མེད་པ་ལས་བསྐུལ་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྔ་བོ་ཆེ་ལྷ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཐོས་པར་རྟག་ཏུ་གྲགས་ཤིང་། རོལ་མོ་གཞན་ལས་
प्रमाद से सावधान करने वाली महा धर्म-दुन्दुभि समस्त देवों के कान में सदा गूँजते रहें। अन्य वाद्यों से भी

ཀྱང་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
सद्धर्म का ध्वनि प्रकट होता रहे।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་རིན་པོ་ཆེ་བསྐྱེད་ཅིང་ཉམས་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
समस्त सत्त्व सम्बोधिचित्त-रत्न को उत्पन्न करें तथा उस उत्पन्न चित्त का कभी क्षय न हो।

ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རིགས་ཅན་རྣམས་རང་གི་མྱང་འདས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་མངོན་དུ་བྱས་ནས།
श्रावक और प्रत्येक-बुद्ध के कुल वाले अपने-अपने निर्वाण बोधि के अभिमुख हों।

རིང་པོར་མི་ཐོགས་པར་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོར་སེམས་བསྐྱེད་ནས་ཐེག་པ་ཆེན་པོར་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
अविलम्ब महाबोधि में चित्तोत्पाद कर महायान में प्रवृत्त हों।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱང་འགྲོ་བའི་དོན་ཇི་ལྟར་དགོངས་པ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
बोधिसत्त्व भी जगदार्थ यथा-आशय सम्पन्न करें।

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱོད་པ་རླབས་པོ་ཆེ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྨོན་ལམ་ཐམས་ཅད་མྱུར་དུ་འགྲུབ་ཅིང་
उदार बोधिचर्या और बोधिसत्त्वों का समस्त प्रणिधान शीघ्र सिद्ध

རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
होकर सम्पन्न हों।

རང་རང་གི་གདུལ་བྱ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མྱུར་དུ་སྨིན་པར་བྱེད་ཅིང༌། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམ་པར་དག་པར་སྦྱོང་ནས་
अपने-अपने अपरिमित विनेयजनों को शीघ्र परिपक्व करें। बुद्ध-क्षेत्र का परिशोधन कर

མྱུར་དུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་མངོན་དུ་མཛད་པར་གྱུར་ཅིག །
शीघ्र सम्यग् संबोधि-पद के अभिमुख हों।

སངས་རྒྱས་ནས་སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱབ་ཅིང་རྒྱུན་མི་འཆད་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྐུས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་
बुद्धत्व प्राप्त कर सत्त्वों के समस्त धातुओं में व्याप्त होकर अविच्छिन्न निर्माणकाय के द्वारा शीघ्र धर्मचक्र का

མྱུར་དུ་བསྐོར་ནས་གདུལ་བྱ་རིགས་ཅན་གསུམ་གྱི་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རིགས་ཅན་རྣམས། གནས་
प्रवर्त्तन कर त्रिकुल विनेयजनों में श्रावक और प्रत्येक-बुद्ध के गोत्रों को पहले अपने बोधि में तथा क्रमशः सभी

སྐབས་རང་གི་བྱང་ཆུབ་དང༌། ཐམས་ཅད་ཀྱང་མཐར་ཐུག་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་ས་ལ་འགོད་པར་གྱུར་ཅིག །
को महाबोधि भूमि में प्रतिष्ठित करें।

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་དྲི་མ་མེད་པར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱབ་པ་དང༌། དར་ཞིང་རྒྱས་པ་དང༌། ནམ་ཡང་
विमल जिन-शास्ता समस्त जगत में व्याप्त हों, समृद्ध हों, विस्तार को प्राप्त करें, कभी भी

ནུབ་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
अस्त न हों।

དེ་ལྟ་བུ་ལ་བདུད་ཀྱི་རིགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གླགས་འཚོལ་བར་མི་བྱེད་ཅིང༌། གལ་ཏེ་བྱས་ཀྱང་དེའི་དབང་དུ་མི་འགྲོ་
इसमें समस्त मार-कुल (विघ्न पैदा करने के लिये) अवसर अन्वेषी न हों। यदि प्रयास करें भी उसके वश में न

བར་གྱུར་ཅིག །
आयें।

མདོར་ན་འདས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྨོན་ལམ་བཏབ་པ་དང༌། ད་ལྟར་གྱི་བྱང་ཆུབ་སེམས་
सारांश में, अतीत बोधिसत्त्वों द्वारा प्रणिधान किया, वर्तमान बोधिसत्त्व भी

དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་སྨོན་ལམ་འདེབས་བཞིན་པ་དང༌། མ་འོངས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་སྨོན་ལམ་
प्रणिधान करते हैं, अनागत बोधिसत्त्व भी प्रणिधान करेंगे, अतः जितना प्रणिधान होगा

གདབ་པར་འགྱུར་བ་ཇི་སྙེད་པ་དེ་སྙེད་དུ་བདག་གིས་ཀྱང་སྨོན་ལམ་འདེབས་སོ། །
उतना मैं भी प्रणिधान करता हूँ।

སེམས་ཅན་རེ་རེའི་དྲུང་དུ་གང་ལ་གང་འདུལ་གྱི་སྤྲུལ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་སྟོན་ཏེ། དེ་དག་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བ་དང་
प्रत्येक सत्त्व के सामने जैसे विनेयजन हैं वैसे विविध निर्माणकाय का प्रदर्शन कर उनके समस्त कल्याण, सुख

ལེགས་པ་ཐམས་ཅད་བསྒྲུབ་ཅིང་། སྐྱོན་དང་། སྡུག་བསྔལ་དང་། མྱ་ངན་དང་། འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་བསལ་ནས།
और अच्छाई सम्पन्न कर दोष, दुःख, शोक, समस्त भय नष्ट कर

ཐར་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་གོ་འཕང་ལ་བདག་གིས་འཛོག་པར་གྱུར་ཅིག །
मोक्ष और सर्वज्ञता की पद में मैं प्रविष्ट कराऊँ।

སེམས་ཅན་གཅིག་ལ་ཇི་ལྟ་བར་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་ལ་དེ་ལྟ་བུར་བགྱིད་པར་གྱུར་ཅིག །
एक प्राणी को जैसे किया तथैव समस्त प्राणियों को करने वाला बनूँ।

བདག་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕ་དང་། མ་དང་། མཛའ་བོ་དང་། གཉེན་དང་རྒྱལ་པོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
मैं समस्त सत्त्वों का पिता, माता, मित्र, परिवार और राजा सदृश बनूँ।

སྨན་དང་། ཟས་དང་གོས་ལ་སོགས་པ་དང་། ས་དང་། ཆུ་དང་། མེ་དང་། རླུང་དང་། ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་བདག་སེམས་
औषधि, खाद्य, वस्त्र इत्यादि और पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश सदृश मैं

ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉེར་འཚོའི་གཞིར་གྱུར་ཅིག །
सभी सत्त्वों के जीविका का आधार बनूँ।

མདོར་ན་བདག་གིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་གང་ལ་གང་ཕན་པ་དང་། ཇི་ལྟར་འདོད་པའི་རེ་བ་ཐམས་ཅད་ཡིད་
सारांश में, मेरे द्वारा समस्त सत्त्वों में जो हितकारी है, जैसी इच्छा एवं आशायें हैं समस्त

བཞིན་དང་མཐུན་པར་སྐོང་བར་གྱུར་ཅིག །
मनोकामनानुरूप पूर्ति करुँ।

བདག་གིས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ལུས་ཐོབ་ནའང་སེམས་ཅན་སྡིག་ཆེན་སྒྲིབ་པ་ཤིན་ཏུ་འཐུག་པོ་དག་སྒྲིབ་པ་ཉུང་ཟད་ཀྱང་སྦྱང་
मेरे द्वारा ज्ञानकाय को प्राप्त करने पर भी सत्त्व जो महापापी अति मोटे आवरण वाले अर्थात् अल्प भी क्षय न

པར་མ་བྱས་པས་ཀྱང་མཐོང་བར་གྱུར་ཅིག །
किये गये हों, ऐसे प्राणी भी मेरा दर्शन कर सके।

ཁྱད་པར་དུ་དཔལ་ལྡན་དུས་གསུམ་མཁྱེན་པའི་འདས་པའི་དུས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ནས་དུས་གསུམ་གྱི་སངས་རྒྱས་
विशेषतया श्रीयुत त्रिकालज्ञ (प्रथम कर्मापा) ने अतीत के अपरिमित काल से, त्रैकालिक समस्त बुद्धों के कर्मों

ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཕྲིན་ལས་པར་སྨོན་ལམ་བཏབ་པར་མཛད་པ་དེ་བཞིན་དུ། བདག་མིང་ཆོས་གྲགས་རྒྱ་མཚོ་ཞེས་བགྱི་
को करने के लिये प्रणिधान किया था, तथैव अमुक ....धर्मकीर्तिसागर (आठवें कर्मापा) मैं भी

བས་ཀྱང་ཕྱོགས་བཅུའི་མཐའ་ཀླས་པའི་དུས་གསུམ་གྱི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཕྲིན་ལས་མ་ལུས་པ་མཐའ་དག་
दश-दिशा पर्यन्त त्रैकालिक समस्त बुद्धों के अशेष कर्मों का अधिपति बन उनका

ལ་དབང་བསྒྱུར་ཞིང་སྐྱབ་པ་པོར་གྱུར་ཅིག །
सम्पन्न-कर्ता बनूँ।

རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསྟན་པ་མ་ལུས་པ་ཡང་བདག་གིར་འཛིན་ཅིང་། ནམ་མཁའ་གནས་ཀྱི་བར་དུ་ནུབ་པ་མེད་པར་
समस्त जिनों के अशेष शासन को सम्यग् रूप से आत्मसात कर आकाश की स्थिति तक बिना अस्त हुये

ནམ་མཁའི་མཐའ་ཀླས་པར་སྤེལ་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
आकाश पर्यन्त विस्तार कर सकने वाला बनूँ।

ཁྱད་པར་སྟོན་མཆོག་མི་ཡི་སེང་གེ་མངོན་སངས་རྒྱས་པའི་གནས་མཆོག་ཆོས་ཀྱི་པོ་བྲང་ཆེན་པོ་འོག་མིན་རབ་
विशेषतया उत्तम शास्ता नरसिंह अभिसम्बोधि का पवित्र स्थल महाधर्म-प्रासाद् अनन्त अकनिष्ठ,

འབྲུམས་རྡོ་རྗེ་གདན་གྱི་བདག་ཉིད། འཇིག་འདས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་འདུ་བའི་གནས་ཆེན་ཤེས་བྱ་ཡོངས་ཀྱི་རྒྱན་
वज्रासनात्मक, लौकिक-अलौकिकों के परिसंगम महास्थल, सम्पूर्ण ज्ञेय का अलंकार यहाँ तथा इसके

འདི་དང་། གཞན་ཡང་ཤེས་བྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྒྱ་ཡོངས་སུ་མ་ཆད་པའི་ཁོངས་འདིར་དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་བདེ་
अतिरिक्त ज्ञेय-मण्डल जिसमें सम्पूर्ण अशेष निहित हैं- ऐसे यहाँ त्रिरत्न और सुगतों

བར་གཤེགས་པའི་བསྟན་པ་དམ་པའི་ཆོས་ནི་དར་ཞིང་རྒྱས། བརྟན་ཞིང་མི་ནུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
का शासन सद्धर्म की वृद्धि को, विस्तार हो, दृढ हों. अस्त न हों।

བསྟན་པ་དེ་འཛིན་གྱི་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་ཆེ་གེས་དབུས་གང་ན་སུ་བཞུགས་པ་ཐམས་ཅད་སྐུ་དཔལ་ནི་ཟླ་བ་ཚེས་པ་
शासनधारी महापुरुष अमुक....के नेतृत्व में जहाँ कहीं भी जो भी हों, समस्त काय-श्री चन्द्रमा सदृश

བཞིན་དུ་འཕེལ་ཤིང་རྒྱས། ཐྲིན་ལས་ཀྱི་ཁ་ལོ་བསྒྱུར་བའི་ལས་འཛིན་རྣམས་ནི་རི་རབ་ལྟར་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ།
विकास और वृद्धि को प्राप्त करें। कर्माधिपतियों के कर्मधारी लोग सुमेरु सदृश निराभोग रहें।

འཁོར་གྱི་ཚོགས་རྣམས་ནི་དགུང་གི་སྐར་མ་ལྟར་འཕེན་ཞིང་རྒྱས། འབངས་ཞབས་སུ་གཏོགས་སོ་ཅོག་ཐམས་ཅད་
पार्षद समूह रात्रि के नक्षत्र सदृश वृद्धि को प्राप्त करें। अधीनस्थ प्रजा एवं प्रान्तों का विगठन न हों।

མཐའ་ནས་གྲ་མི་གཡོས། དབུས་ནས་ཡུལ་མི་འཁྲུགས། ཆམ་མེ་ལྷན་ནེ་བཀྲ་ཤིས་བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་
मध्य-देश उपद्रव विहीन रहें। चारों ओर मंगल, सुख, शान्ति और सम्पूर्ण श्री से युक्त विरोचन गौरवमय हों।

ལམ་དང་ལྡན་ནས། སྐྱིད་པའི་བཀའ་དྲིན་མི་རབས་ཁྲི་ཚོའི་བར་དུ་ཐོབ།
सुखी और अमन के लिये जनता द्वारा कृपापात्र की भावना हजारों पुश्तों तक रहे।

སྙན་པའི་སྒྲ་སྐད་ནི་ཉི་ཟླས་སྣང་བས་སོ་ཅོག་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सुयश सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश जहाँ तक व्याप्त हों, वहाँ तक फैले।

ཕྱོགས་བཅུའི་དུས་གསུམ་གྱི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་། ལྷ་དང་དྲང་
दश-दिशाओं के त्रैकालिक बुद्ध-बोधिसत्त्व, श्रावक, प्रत्येक-बुद्ध, देवता, ऋषि,

སྲོང་དང་། གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པའི་བདེན་པ་གྲུབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདེན་ཚིག་གི་མཐུ་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རང་
सिद्ध आदि समस्त सत्य-सिद्धियों के सत्य वचन के बल से,

བཞིན་རྣམ་པར་དག་པའི་བདེན་པ་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱུ་འབྲས་བསླུ་བ་མེད་པའི་བདེན་པ་དང་། སྔགས་དང་
विशुद्ध धर्मधातुस्वभाव रूपी सत्य, सर्वधर्मों के हेतुफल के अवञ्चन रूपी सत्य,

སྨན་དང་རྫས་ཀྱི་མཐུ་དང་། དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བདེན་པ་ཆེན་པོའི་མཐུ་ལས། བདག་ཅག་དཔོན་སློབ་འཁོར་དང་
मन्त्र, औषधि और द्रव्यों के बल से, त्रिरत्न के महा-सत्यता के बल से, हम गुरु-शिष्य परिवार सहित सभी की

བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡིད་ལ་བསམ་པའི་དོན་ཐམས་ཅད་དང་། སྨོན་ལམ་ཇི་ལྟར་བཏབ་པ་ཐམས་ཅད་ཡིད་བཞིན་དུ་
मनोकामना और प्रणिधान, जैसे अभ्यर्थना किया है तथैव अभिलाषानुरूप

འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सिद्ध हों।

མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ལས་རྒྱལ་ཞིང་རྣམ་པར་རྒྱལ་ནས། བཀྲ་ཤིས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་མ་
समस्त प्रतिकूल पक्ष से विजित हो विजयी हों। समस्त मंगल-श्री अशेष रूप से

ཚང་བ་མེད་པས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱབ་ཅིང་འགྱུར་པར་གྱུར་ཅིག །
सदा व्याप्त रहें तथा प्राप्त होते रहें।

ཅེས་པ་རྗེ་བདུན་པའི་གསུང་ལ་རྗེ་བརྒྱད་པས་བླང་དོར་སྔོན་འཕྲི་མཛད་པ་ལྟར་ཅུང་ཟད་བགྱིས་པའོ།། །།
इस सातवें कर्मापा की रचना को आठवें कर्मापा ने संशोधन किये, वैसे ही मैंने भी कुछ संशोधन किये हैं।

## སྨོན་ལམ་བསྡུས་པ།
## संक्षिप्त प्रणिधान

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ།
दश दिशाओं में विराजमान समस्त बुद्ध एवं बोधिसत्त्व मुझे ध्यान दें।

དུས་གསུམ་གྱི་སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་རྣམ་ཐར་སྒོ་གསུམ་གྱི་ཐུགས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་རང་གཞན་གྱི་ཟག་བཅས་ཟག་
त्रैकालिक बुद्ध-बोधिसत्त्व, जो तीन विमोक्ष-द्वारों से युक्त हैं, के द्वारा स्व-पर के सास्रव तथा अनास्रव के

མེད་ཀྱི་དགེ་རྩ་ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་ཏུ་བསྔོས་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བདག་ཅག་ལ་སོགས་ཏེ་མཁའ་མཉམ་སེམས་ཅན་
समस्त कुशलमूलों को बोधि में परिणामित किये थे, मेरे साथ आकाशसम सर्वसत्त्व भी वैसे ही परिणामित

ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་དེ་དག་གིས་ཐུགས་བསྐྱེད་པ་དང་། སྨོན་
करते हैं। (जैसे) उन बुद्ध-बोधिसत्त्वों द्वारा (बोधि-)चित्तोत्पाद किया गया तथा जितने प्रणिधान किये गये,

ལམ་ཇི་ཙམ་དུ་སྨོན་པར་མཛད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་སོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་ལྟར་དུ་སེམས་བསྐྱེད་
वैसे ही मेरे सहित सर्वसत्त्व भी वैसे ही (बोधि-)चित्तोत्पाद करते हैं तथा प्रणिधान करते हैं।

པ་དང་སྨོན་པར་བགྱིའོ། །དེ་བཞིན་དུ་བདག་སོགས་སེམས་ཅན་གྱིས། བླ་མ་ལ་ཞབས་ཏོག །དགེ་འདུན་ལ་བསྙེན་
इसी प्रकार मेरे सहित सत्त्वों के द्वारा गुरु की सेवा, संघ का सत्कार, सत्त्वों को दान, भूत को बलि,

བཀུར། སྐྱེ་བོ་ལ་སྦྱིན་གཏོང་། འབྱུང་པོ་ལ་གཏོར་མ། སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་བཞེངས་པ། བསླབ་པ་གསུམ། ཐོས་
(बुद्ध-बोधिसत्त्वों के) काय-वाक्-चित्त रूपी अधिष्ठान का निर्माण, त्रि-शिक्षा, श्रवण-चिन्तन एवं मनन–(ये)

བསམ་སྒོམ་གསུམ། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བཅུའི་དགེ་རྩ། མདོ་རྒྱུད་མན་ངག་དང་བཅས་པ་ཉམས་སུ་བླངས་པའི་དགེ་རྩ་
तीन, छह पारमिताओं के कुशलमूल, सूत्र-तन्त्रोपदेश के अभ्यास से प्राप्त कुशलमूल रूपी उस सागर के द्वारा

རྒྱ་མཚོ་དེས་སེམས་ཅན་རྒྱ་མཚོས་སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོའི་གོ་འཕང་བརྙེས་ནས། བྱང་ཆུབ་རྒྱ་མཚོ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ་ཡེ་
(जो) सत्त्व-सागर (हैं, वे), बुद्ध-सागर के पद को प्राप्त कर बोधि-सागर का साक्षात्कार कर ज्ञानसागर तथा

ཤེས་རྒྱ་མཚོ་དང་སྐུ་རྒྱ་མཚོས་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་སྐེམ་པའི་རྒྱུར་བསྔོའོ། །
(बुद्धों के)कायसागर (की सम्प्राप्ति) द्वारा संसारसागर के शोषित होने के हेतु-स्वरूप परिणामित करते हैं।

## གསོན་གཤིན་བསྔོ་བ།

# जीवित आयुष्मान् और मृतक के लिये परिणामना

དེ་ནས་གསོན་པོ་དང་གཤིན་པོར་ཆེད་དུ་བསྔོ་བ་བྱེད་ན། ཆོས་ཀྱི་རྗེ་བླ་མ་རིན་པོ་ཆེ་དུས་གསུམ་མཁྱེན་པའི་ཞལ་སྔ་ནས། སྤྱིར་དགེ་བའི་རྩ་བ་བསྔོ་བ་འདི་གལ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཡིན་གསུངས། དེ་ལ་དགེ་བའི་རྩ་བ་བྱས་ནས་མ་བསྔོས་ན་འཛད། དམན་པར་བསྔོས་ན་འཛད། འགྱོད་པ་སྐྱེས་ན་འཛད། བསྒྲགས་ན་འཛད། མི་འཛད་པ་གོང་ནས་གོང་དུ་འཕེལ་བའི་ཐབས་ལ། དགེ་བའི་རྩ་བ་བསྔོ་བ་དགོས། དེ་ཡང་བསྔོ་བའི་ཡུལ། དཀོན་མཆོག་གི་རྟེན་གྱི་སྤྱན་སྔར་བསྔོས་ན་འགྲུབ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་ལྡན་པའི་སྤྱན་སྔར་བསྔོས་ན་འགྲུབ། རང་གི་བླ་མའི་སྤྱན་སྔར་བསྔོས་ན་འགྲུབ་པོ། །

དེ་ལ་བསྔོ་བའི་རྒྱུ་དེ་དུས་གསུམ་གྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཐམས་ཅད་བསྔོ་བ་ཡིན། དེ་ཡང་འདས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། མ་འོངས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། ད་ལྟར་གྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཐམས་ཅད་བསྔོའོ། །

དེ་ཡང་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་བསྡུས་ན། སྦྱིན་པ་ལས་བྱུང་བ་དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་ལས་བྱུང་བ་དང་། བསྒོམ་པ་ལས་བྱུང་བ་གསུམ་དུ་འདུས་པ་ཡིན། བསྔོ་ལུགས་བདག་ཉིད་གཅིག་པུའི་ཆེད་དུ་ཡང་མི་བསྔོ། ཚེ་འདིའི་ཆེད་དུ་ཡང་མི་བསྔོ། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ་ཡང་མི་བསྔོ་བར་བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ་བསྔོས་ན་བསྔོ་བ་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱ་བ་ཡིན། སངས་རྒྱས་མ་ཐོབ་ཀྱི་བར་དུ་འབྲས་བུ་མི་འཛད་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་དཔེར་ན་མཆིལ་མ་ཐིགས་པ་གཅིག་རྡོ་ཐོག་ཏུ་བོར་ན་འཐུལ་སྐམ་ལ། རྒྱ་མཚོར་མཆིལ་མ་གཅིག་བོར་ན་རྒྱ་མཚོ་མ་བསྐམས་ཀྱི་བར་དུ་མཆིལ་མ་མི་སྐམ། དེ་བཞིན་དུ་རང་གི་བླ་མ་ལ་སོགས་པའི་སྤྱན་སྔར་དུས་གསུམ་དུ་བསགས་པའི་དགེ་བ་ཐམས་ཅད་བདག་དང་མཐའ་ཡས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ་བསྔོ་བསམ་པའི་བསམ་པས་བསྔོས་ན་ཇི་ལྟར་བསྔོས་པ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པ་ཡིན་པས། ལོངས་སྤྱོད་སྙིང་པོ་མེད་པ་ལ་སྙིང་པོ་ཆེན་པོ་དམ་པ་བླངས་པས་དོན་ཆེན་པོ་འགྲུབ་ཅིང་གཏེར་དུ་སྦས་པ་ཡིན་པས། མདུན་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བཞུགས་པར་བསམ། བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་བྱ། དེའི་ཆེད་དུ་བདག་གིས་དུས་གསུམ་དུ་བསགས་པའི་དགེ་རྩ་ཐམས་ཅད་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་བསྔོ་སྙམ་དུ་བསམ་ལ་བསྔོ་བ་མཁན་གྱི་རྗེས་ཟློས་བྱ་བ་ནི།

इसके उपरान्त जीवित और मृतक के लिये परिणामना करना चाहें तो धर्मस्वामी गुरु रत्न दुस्-सुम्-खेन्-पा ने कहा है- सामान्य कुशलमूल का परिणामना करना अत्यन्त आवश्यक है। कुशलमूल संचय होने पर भी परिणामना के अभाव में वह क्षय हो जायेगा। क्षुद्र के लिये परिणामना करें वह खर्च हो जायेगा। पश्चाताप पैदा करने पर नष्ट होगा। प्रचार करने पर क्षय होगा। अतः अक्षय होने, उत्तरोत्तर वृद्धि के लिये उपाय के रूप में कुशलमूल का परिणामना करनी चाहिये।

इसलिये परिणामना-विषय- त्रिरत्न रूपी आश्रय के सम्मुख परिणामना सिद्ध होता है। बोधिचित्तोत्पाद किये के सम्मुख परिणामना करने पर भी सिद्ध होता है। अपने गुरु के सम्मुख परिणामना करने पर भी वह पूर्ण होता है।

परिणामना हेतु (सामग्री)- समस्त त्रैकालिक कुशलमूलों की परिणामना होती है। समस्त अतीत कुशलमूल, अनागत कुशलमूल तथा वर्तमानकालिक कुशलमूलों की परिणामना करनी चाहिये।

यदि समस्त कुशलमूलों का संग्रह करें तो दान से प्राप्त, शील से प्राप्त और भावना से प्राप्त- वे इन तीनों में संगृहीत होते हैं।

परिणामना-विधि- मात्र स्वयं अपने लिये परिणामना नहीं करनी चाहिये। इस जन्म मात्र के लिये भी परियणामना नहीं करनी चाहिये। श्रावक, प्रत्येक-बुद्ध की प्राप्ति के लिये भी परिणामना न कर स्वयं सहित अनन्त समस्त सत्त्व अनुत्तर सम्यग् सम्बोधि प्राप्त करने के लिये परिणामना करें। वह परिणामना महान् कहलाती है। वह बुद्धत्व की प्राप्ति तक क्षय नहीं होगा। जैसे एक बूँद जल पत्थर पर पड़ने पर तुरन्त सूख जाता है, वही सागर में गिरने पर सागर की अवस्थिति तक बना रहता है। उसी प्रकार स्वयं के गुरु आदि के सम्मुख तीनों कालों में सञ्चित समस्त कुशलमूलों को अपने तथा अनन्त सत्त्वों के लिये सर्वज्ञ बुद्धत्व की प्राप्ति के लिये परिणामना करता हूँ- ऐसा सोचकर परिणामना करे तो जैसे परिणामना किया जायेगा वैसे ही सिद्ध होगा।

(सामान्य) सम्पत्ति सारहीन है। उस असार से परम सार को निकाल कर महा सिद्ध करने से एक प्रकार से वह गुप्त निधि के सदृश होगा। अतः अपने समक्ष आकाश में समस्त बुद्ध एवं बोधिसत्त्व विराजमान हैं- ऐसा सोचकर स्वयं और अनन्त सत्त्व सर्वज्ञ बुद्धत्व को प्राप्त करें। तदर्थ मेरे द्वारा तीनों कालों में सञ्चित समस्त कुशलमूलों को अनुत्तर बोधि हेतु परिणामना करूँगा- ऐसा सोचकर निम्न परिणामना-पाठ का आवृत्ति करें-

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ།
दश दिशाओं में विराजमान बुद्ध-बोधिसत्त्व मुझे ध्यान दें।

དགེ་འདུན་བཙུན་པ་རྣམས་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བས་ཚེ་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཐ་མ་ད་
श्रद्धेय संघ मुझे ध्यान दें। मैं अमुक...नामक आद्यान्त से

ལྟ་ལ་ཐུག་གི་བར་དུ་སྦྱིན་པ་ལས་བྱུང་བ་དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་ལས་བྱུང་བ་དང་། བསྒོམ་པ་ལས་བྱུང་བའི་དགེ་བའི་རྩ་
वर्तमान पर्यन्त दानगत, शीलगत तथा भावनागत कुशलमूल किया गया,

བ་བགྱིས་པ་དང་། བགྱིད་དུ་སྩལ་པ་དང་། བགྱིས་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། ཁྱད་པར་དུ་དེ་ཙིག་གི་
करवाया गया तथा (अन्यों द्वारा) किये जाने पर उसके अनुमोदन से उत्पन्न कुशलमूल

ལོ་ལ་དཀོན་མཆོག་ལ་མཆོད་པ་ཕུལ་བ་དང་། དགེ་འདུན་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱས་པ་དང་། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་བཀའ་
तथा विशेषतया इस वर्ष त्रिरत्न-पूजा, संघदान एवं उनके सत्कार,

བསྒྲགས་པ་དང་། ཆོས་སྐྱོང་ལ་གཏོར་མ་ཕུལ་བ་དང་། འབྱུང་པོ་ལ་གཏོར་མ་བཏང་བ་དང་། ཡུལ་མི་ཉེ་རིང་ལ་སྔོན་མོ་
पारमिता-वचनों का पाठ, धर्मपालों को बलि-भेंट, भूतों को बलि-अर्पण, अपने क्षेत्र के निकट-दूर

དྲངས་པ་ལ་སོགས་པ་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས། སྦྱིན་པ་དམ་པ་སེམས་ཀྱི་རྒྱན། སེམས་ཀྱི་ཡོ་བྱད། རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཚོགས་
के लोगों को (धार्मिक) उत्सवों में बुलाने आदि से जो कुशलमूल सम्पन्न हुआ,

དོན་གྱི་མཆོག་དེས། མཁན་པོ་དང་སློབ་དཔོན་དང་ཕ་དང་མས་སྔོན་དུ་འགྲོ་བར་བྱས་པའི་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་
अर्थात् उत्तम दान चित्त-अलंकार, चित्त-उपकरण योगी के उत्तम सम्भारार्थ से उपाध्याय, आचार्य, माता-

ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་དུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
पिता प्रमुख, अग्रवर्ती समस्त अनन्त सत्त्वार्थ सर्वज्ञ बुद्धत्व को प्राप्त हों।

ཅེས་ལན་གསུམ་བརྗོད་པའི་ཐ་མ་ལ། དེ་མ་ཐོབ་ཀྱི་བར་དུ་ཚེ་རབས་ནས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ། དལ་འབྱོར་ཕུན་སུམ་
ऐसा तीन बार आवृत्ति करें और अन्त मे-उसकी अप्राप्ति तक समस्त जन्म-जन्मान्तरों में क्षणसम्पद् रत्न

ཚོགས་པའི་མི་ལུས་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सदृश पुरुष शरीर प्राप्त हों।

མི་ལུས་ཐོབ་ནས་ཀྱང་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་འཕྲད་པར་གྱུར་ཅིག །
मनुष्य शरीर प्राप्त कर महायान के कल्याणमित्र से सम्पर्क हों।

དེས་གདམས་ངག་དང་རྗེས་སུ་བསྟན་པ་གནང་ནས་དེ་བསྒྲུབ་པ་ལ་ཕྱི་དང་ནང་གི་བར་ཆད་ཐམས་ཅད་མེད་ཅིང་མི་
वे अववाद और अनुदेशित करें। तदनुसार साधना करने पर बाह्याभ्यन्तर किसी भी प्रकार का विघ्न उत्पन्न न

འབྱུང་བ་དང་། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
हों और उत्तम महामुद्रा की सिद्धि हों। उसी प्रकार तदनुसार हों।

དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །
तथा भवतु।

ཅེས་ལན་གསུམ་བྱའོ། །

ऐसा तीन बार पाठ करें।

གཤིན་པོའི་བསྔོ་བ་བྱེད་པར་འདོད་ན། ཁོས་དུས་གསུམ་དུ་བསགས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། ཁོའི་ཞུལ་ན་འདུག་པའི་ཉེ་དུ་འབྲེལ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཁོའི་དོན་དུ་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་བྱས་པ་དེས། ཁོས་ཐོག་དྲངས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་ནས་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བསྔོ་བསམ་དུ་མཛོད་ལ་བསྔོ་མཁན་གྱི་རྗེས་ཟློས་བྱ་བ་ནི།
मृतक के लिये परिणामना करना चाहें तो उस (मृतक) के तीनों कालों में सञ्चित कुशलमूल तथा उसके परिवार, रिश्तेदारों द्वारा मृतक के लिये किये गये कुशलमूल, वे सभी मृतक प्रमुख अग्रवर्ती बना समस्त प्राणी सांसारिक दुःखों से रहित होकर अनुत्तर बोधि की प्राप्ति के लिये परिणामना करुँगा- ऐसा सोचकर परिणामना करने वाले को निम्न पदों का तीन बार आवृत्ति करनी चाहिये।

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་གཤིན་ཚེ་ལས་འདས་པ་མིང་འདི་
दश-दिशाओं में विराजमान समस्त बुद्ध-बोधिसत्त्व मृतक अमुक...इत्यादि

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། དགེ་འདུན་བཙུན་པ་རྣམས་ཚེ་ལས་འདས་པ་མིང་འདི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
की ओर ध्यान दें। श्रद्धेय भिक्षु संघ मृतक अमुक....इत्यादि की ओर ध्यान दें।

དགོངས་སུ་གསོལ། གཤིན་ཚེ་ལས་འདས་པ་མིང་འདི་ཞེས་བྱ་བས་དུས་གསུམ་དུ་བསགས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་སྦྱིན་
मृतक अमुक...इसके तीनों कालों में सञ्चित कुशलमूल जो ध्यानभूत हों,

པ་ལས་བྱུང་བ་དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་ལས་བྱུང་བ་དང་། བསྒོམ་པ་ལས་བྱུང་བའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་བགྱིས་པ་དང་། བགྱིད་
शीलभूत हों, भावनाभूत हों तथा किये गये, कराये गये और

དུ་སྩལ་པ་དང་། བགྱིས་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། ཞུལ་ན་མཆིས་པ་བདག་ཅག་ཉེ་དུ་འབྲེལ་པ་
किसी के द्वारा करने पर उसका अनुमोदन करने से प्राप्त कुशलमूल। खेद-सम्बन्धित परिवार जनों द्वारा मृतक

རྣམས་ཀྱིས་ཚེ་ལས་འདས་པ་མིང་འདི་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དུ་དཀོན་མཆོག་ལ་མཆོད་པ་དང་། དགེ་འདུན་ལ་བསྙེན་བཀུར་
अमुक...नामक के लिये त्रिरत्न-पूजा, भिक्षु-संघ को दान और सत्कार,

བྱས་པ་དང་། བཀའ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བསྒྲགས་པ་དང་། ཆོས་སྐྱོང་ལ་གཏོར་མ་ཕུལ་བ་དང་། འབྱུང་
प्रज्ञापारमिता का पाठ, धर्मपालों को बलि-भेंट, भूतों को

པོ་ལ་གཏོར་མ་བཏང་བ་དང་། ཡུལ་མི་ཉེ་རིང་ལ་སྟོན་མོ་དྲངས་པ་ལ་སོགས་པ་དགེ་བའི་རྩ་བ་དེས། གཤིན་ཚེ་ལས་
बलि अर्पण, क्षेत्र के दूर-पास के निकट लोगों को (धार्मिक) उत्सव में आमन्त्रण करने के जो कुशलमूल

འདས་པ་གལ་ཏེ་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་འགྲོ་བ་རིགས་དྲུག་གང་དང་གང་དུ་སྐྱེས་ཀྱང་། དགེ་བའི་རྩ་བ་དེ་དང་དེའི་ཕྱི་
सम्पन्न किये गये हों उससे मृतक यदि कर्मवश षड्योनियों में जहाँ कहीं भी पैदा हुआ हो, यह कुशलमूल

བཞིན་དུ་ཞུགས་ཤིང་ཕྱི་བཞིན་དུ་འབྲང་ནས་འགྲོ་བ་རིགས་དྲུག་གི་སྡུག་བསྔལ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་ནས་དལ་འབྱོར་
वहाँ-वहाँ उसका अनुगमन कर, उसका पीछा कर षड्योनियों के समस्त दुःखों से रहित होकर रत्न सदृश

མི་ལུས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
क्षणसम्पद् मनुष्य का जन्म प्राप्त करें।

མི་ལུས་ཐོབ་ནས་ཀྱང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་སྒྲ་ཐོས་པར་གྱུར་ཅིག །
पुरुष का जन्म लेकर भी त्रिरत्न का वचन श्रवण करें।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་སྒྲ་ཐོས་ནས་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་དད་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
त्रिरत्न का वचन सुनकर उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करें।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་དད་པ་ཐོབ་ནས་ཀྱང་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བ་དང་སེམས་བསྐྱེད་བྱས་ནས་བསླབ་པའི་གཞི་མཐའ་
त्रिरत्न में श्रद्धा प्राप्त कर शरणगमन करके बोधिचित्तोत्पाद कर समस्त

དག་ལ་བསླབས་ཏེ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
शिक्षाओं का शिक्षण कर सर्वज्ञ बुद्धत्व को प्राप्त करें।

ཅེས་ལན་གསུམ་བརྗོད། །

ऐसा तीन बार आवृत्ति करें।

དགེ་འདུན་བཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་ དེ་ལྟར་ན་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །ཅེས་ལན་གསུམ་བརྗོད། །
विराजमान भिक्षु-संघ द्वारा भी- **तथा अस्तु। तथा अस्तु। तथा अस्तु-** ऐसा तीन बार कहें।

དེ་ལྟར་ཤིའི་ཆེད་དུ་དགེ་བའི་རྩ་བ་བྱས་ནས་ཤིའི་དོན་དུ་བསྔོས་པ་དེ་རང་གི་དགེ་བའི་རྩ་བ་རྒྱ་ཆེན་པོར་འགྱུར་བ་ཡིན་པས་གསོན་པོའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཡང་བསྔོ་བར་བྱ་གསུངས། །
इस प्रकार मृतक के लिये किया गया कुशलमूल के परिणाम से अपना कुशलमूल भी विस्तार को प्राप्त होता है। अतः जीवित के कुशलमूल का भी परिणामना करें- ऐसा कहा है।

## སྨོན་ལམ་འགྲུབ་པའི་གཟུངས།
# प्रणिधानसिद्धि-धारणी

དེ་སྐད་སྨོན་ལམ་བྱས་ནས།
इस प्रकार प्रणिधान करने के पश्चात्

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कोन छोग सुम ल छग ठ़्ल लो
**त्रिरत्न की वन्दना करता हूँ।**

ཏདྱ་ཐཱ། པཉྩེནྡྲི་ཡ་ཨ་བ་བོ་དྷ་ན་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། སྨོན་ལམ་འགྲུབ་པའི་གཟུངས་སོ། །
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अबबोधनाये स्वाहा।
**तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अवबोधनये स्वाहा।** यह प्रणिधानसिद्धि-धारणी है।

ཏདྱ་ཐཱ། ནཀྵ་ཏྲ། སརྦ་ཏི་ཐཱ་ན། ཤ་ཏྲི་ན། མེ་ས་མེ་ཏ་དྷ་ནི་བྱ་བནྟུ་སྭཱ་ཧཱ། དོན་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་བོ། །
तद्यथा। नक्षत्र। सर्बतिथान। शत्रिन। मेसमेतधनिब्यबन्तु स्वाहा
**तद्यथा। नक्षत्र, सर्वतिथान, शत्रिन मे समेतधनिभ्य बन्तु स्वाहा।** इससे सभी अर्थों की सिद्धि होती है।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कोन छोग सुम ल छग ठ़्ल लो
**त्रिरत्न की वन्दना करता हूँ।**

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् नम पर नङ ज़े ल छग छ़ल लो
**तथागत अर्हत् सम्यग् सम्बुद्ध वैरोचन की वन्दना करता हूँ।**

འཕགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
फग प छङ छुप सेम पा छेन पो थुग जे छेन पो दङ देन प नम खई ञिङ पो ल छग छ़ल लो
**आर्य महावोधिसत्त्व महाकारुणिक आकाशगर्भ की वन्दना करता हूँ।**

ཏདྱ་ཐཱ། པཉྩེནྡྲི་ཡ་ཨ་བ་བོ་དྷ་ན་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ།
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अबबोधनाये स्वाहा
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अवबोधनये स्वाहा।

ཚིག་འདི་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ན། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །
छो ग दि देस् जोद् छेस् न    फग प शेस् रप क्यि फ रोल तु छिन प ल नेस पर ग्युर रो
इस पाठ की आवृत्ति करने से आर्यप्रज्ञापारमिता में स्थित होगा।

བདུད་ཐམས་ཅད་དང་བགེགས་དང་ལོག་འདྲེན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མི་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །
दुद् थम चे दङ गेग दङ लोग डेन थम चे क्यीस् मि थोङ बर ग्युर रो
समस्त मार-विघ्न और समस्त विपरीत नायक नहीं देख सकेंगे।

འཆི་བའི་དུས་བྱེད་ན་འཕགས་པ་ཚེ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །
छि बई दुस् छेद् न फग प छ़े पग तु मेद् प थोङ बर ग्युर रो
मृत्युकाल में आर्य अपरिमितायु का दर्शन होगा।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །
दे शिन शेग प नम दङ छङ छुप सेम पा थम चे थोङ बर ग्युर रो
समस्त तथागतों और बोधिसत्त्वों के दर्शन होंगे।

སྨོན་ལམ་ཅི་ལྟར་བཏབ་པ་བཞིན་དུ་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །
मोन लम चि तर तप प शिन दु थोङ बर ग्युर रो
जैसे प्रणिधान करेंगें वैसे दर्शन होगा।

སྨོན་ལམ་ཅི་ལྟར་བཏབ་པ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པའི་གཟུངས་རྫོགས་སོ། །
यथा प्रणिधान तथा-सिद्धि-धारणी समाप्त हुआ।

བསྟན་འབར་མ།

# शासन-उज्जवलार्थ-प्रणिधान

ཟླ་བ་སྙིང་པོའི་མདོ་ལས་གསུངས་པའི་བསྟན་པ་རྒྱས་པའི་བདེན་ཚིག་ཇོ་བོ་རྗེའི་མདོ་ཀུན་ལས་བཏུས་སུ་དྲངས་པ་ནི།
चन्द्रगर्भसूत्र में वर्णित शासन विस्तार का सत्य-वचन अतीश ने अपने सूत्र-समुच्चय में उद्धृत किया है।

སེམས་ཅན་དོན་དུ་བདག་གིས་སྔོན། །
सेम चेन दोन दु दग गीस् ङोन
बुद्ध विपश्यी, शिखी, विश्वभुक

དཀའ་བ་གང་ཞིག་བྱས་གྱུར་དང་། །
का व गङ शिग छेस् ग्युर दङ
क्रकुत-सुन्द, कनकमुनि, काश्यप,

བདག་གི་བདེ་བ་བཏང་བ་ཡིས། །
दग गि दे व तङ व यीस्
शाक्यमुनि गौतम देवों के देव

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
सप्तशूर बुद्धों को मैं वन्दना करता हूँ।1।

ངས་སྔོན་ནད་པའི་དོན་ཆེད་དུ། །
ङेस ङोन ने पई दोन छेद् दु
सत्त्वार्थ मैंने अतीत में

རང་གི་འཚོ་བ་ཡོངས་བཏང་བས། །
रङ गि छ़ो व योङ तङ वे
जो भी तपचर्याओं को किया।

སེམས་ཅན་ཕོངས་པ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར། །
सेम चेन फोङ प क्यप पई छिर
मैंने सुख का त्याग किया, उससे

ཡུན་རིང་བདག་བསྟན་འབར་གྱུར་ཅིག །
युन रिङ दग तेन बर ग्युर चिग
शासन दार्घकाल तक उज्जवल रहे।2।

བུ་དང་བུ་མོ་ཆུང་མ་དང་། །
बु दङ बु मो छुङ म दङ
पुत्र, पुत्री, पत्नी और

ནོར་དང་གླང་ཆེན་ཤིང་རྟ་དང་། །
नोर दङ लङ छेन शिङ त दङ
मणि, गज, रथ तथा

རིན་ཆེན་བྱང་ཆུབ་ཕྱིར་བཏང་བས། །
रिन छेन छङ छुप छिर तङ वे
रत्न, बोधि के लिये त्यागा, उससे

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन दार्घकाल तक उज्जवल रहे।3।

བདག་གིས་སངས་རྒྱས་རང་རྒྱལ་དང་། །
दग गीस् सङ ग्येस् रङ ग्यल दङ
मैने बुद्धों, प्रत्येक-बुद्धों,

ཉན་ཐོས་ཕ་དང་མ་དང་ནི། །
ञेन थोस् फ दङ म दङ नि
श्रावकों, पिताओं और माताओं को तथा

དྲང་སྲོང་དག་ལ་མཆོད་བྱས་པས། །
डङ सोङ दग ल छोद् छेस् पेस्
ऋषियों की पूजी की, उससे

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन दार्घकाल तक उज्जवल रहे।4।

བསྐལ་པ་བྱེ་བ་དུ་མར་བདག །
कल प छे व दु मर दग
मैने अनेक कोटि-कल्पों में

སྡུག་བསྔལ་སྣ་ཚོགས་སྤྱོད་གྱུར་ཅིང་། །
दुग ङल न छोग न्योङ ग्युर चिङ
विभिन्न कष्टों को भोग कर

བྱང་ཆུབ་དོན་དུ་ཐོས་བཙལ་བས། །
छङ छुप दोन दु थोस् त्सल वे
बोधि के लिये श्रुति की खोज की, उससे

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन दार्घकाल तक उज्जवल रहे।5।

བདག་གིས་བརྟུལ་ཞུགས་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་། །
दग गीस् तुल शुग छुल ठिम दङ
मेरे द्वारा शीलव्रत और

དཀའ་ཐུབ་ཡུན་རིང་བྱས་གྱུར་ཅིང་། །
का थुप युन रिङ छेस् ग्युर चिङ
दार्घकालिक तपस्या सेवन से तथा

ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་ངས་མཆོད་པས། །
छोग चुइ सङ ग्येस् ङेस थोङ वे
दश-दिग् बुद्धों को मैने पूजा किया, उससे

ཡུན་རིང་བསྟན་པ་འབར་གྱུར་ཅིག །
युन रिङ तेन प बर ग्युर चिग
शासन दार्घकाल तक उज्जवल रहे।6।

བདག་སྔོན་བརྩོན་འགྲུས་དང་ལྡན་པ། །
दग ङोन त्सोन डुस् दङ देन प
अतीत में मेरे उद्यम से

རྟག་ཏུ་བརྟན་ཅིང་ཕ་རོལ་གནོན། །
तग तु तेन चिङ फ रोल गनोन
सदैव दृढता पूर्वक दूसरों को अभिभूत किया

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་གྲོལ་དོན་དུ། །
सेम चेन थम चे डोल दोन दु
(उससे) समस्त सत्त्वों के मुक्ति के उत्तीर्णार्थ

བདག་བསྟན་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
दग तेन युन रिङ बर ग्युर चिग
मेरा शासन दार्घकाल तक उज्जवल रहे।7।

བཟོད་བརྟུལ་རྟག་ཏུ་གནས་གྱུར་ཅིང་། །
ज़ोद् तुल तग तु नेस ग्युर चिङ
क्षान्तिव्रत के सदैव सेवन से

སེམས་ཅན་ཉོན་མོངས་སྙིགས་མ་ཡི། །
सेम चेन ञोन मोङ ञिग म यि
सत्त्व-क्लेश-कषाय के चलते

སེམས་ཅན་ངན་བྱས་བཟོད་གྱུར་པས། །
सेम चेन ङेन छेस् ज़ोद् ग्युर पेस्
सत्त्वों ने मेरे क्षान्ति के साथ दुर्व्यवहार किया

བདག་བསྟན་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཅིག །
दग तेन युन रिङ नेस ग्युर चिग
(उस क्षान्ति के बल से) शासन दीर्घकाल तक उज्ज्वल रहे।8।

བསམ་གཏན་རྣམ་ཐར་གཟུགས་མེད་དང་། །
सम तेन नम थर ज़ुग मेद् दङ
समाधि, विमोक्ष, अरूपी आदि

ཏིང་འཛིན་གངྒཱའི་བྱེ་སྙེད་པ། །
तिङ ज़िन गङ्गाई छे ञेद् प
गङ्गा के बालु सदृश ध्यान से

བསྒོམས་པས་དེ་མཐུས་བདག་གི་ནི། །
गोम पेस् दे थुस् दग गि नि
भावना के बल से मेरा

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन दीर्घकाल तक उज्ज्वल रहे।9।

ཡེ་ཤེས་དོན་དུ་བདག་གིས་སྔོན། །
ये शेस् दोन दु दग गीस् ङोन
ज्ञानार्थ अतीत में मैंने

དཀའ་ཐུབ་ནགས་དག་བསྟེན་བྱས་ཤིང་། །
का थुप नग दग तेन छेस् शिङ
वनों में तपस्या का सेवन किया

བསྟན་བཅོས་དུ་མ་ཉེར་བསྟན་པས། །
तेन चोस् दु म ञेर तेन पेस्
अनेक शास्त्रों का उपाश्रय लिया, उससे

བདག་གི་བསྟན་པ་འབར་གྱུར་ཅིག །
दग गि तेन प बर ग्युर चिग
शासन दीर्घकाल तक उज्ज्वल रहे।10।

བརྩེ་བའི་རྒྱུ་ཡིས་ཤ་ཁྲག་དང་། །
त्ज़े बई ग्यु यीस् श ठग दङ
दया पूर्वक मैंने माँस और रूधिर

འཚོ་བ་ཡོངས་སུ་བཏང་གྱུར་ཅིང་། །
छ़ो व योङ सु तङ ग्युर चिङ
जीवनोपयोगी वस्तुओं का परित्याग किया तथा

ཡན་ལག་ཉིང་ལག་བཏང་བ་ཡིས། །
येन लग ञिङ लग तङ व यीस्
अंग-प्रत्यंग के परित्याग से

ཆོས་ཚུལ་རྣམ་པར་འཕེལ་གྱུར་ཅིག །
छोस् छ़ुल नम पर फेल ग्युर चिग
धर्म-नय का विस्तार हो।11।

བདག་སྔོན་སྡིག་པའི་སེམས་ཅན་དག །
दग ङोन दिग पई सेम चेन दग
अतीत में पापी सत्त्वों को

བྱམས་པས་གསལ་བར་སྨིན་བྱས་ཤིང་། །
छम पेस् सल वर मिन छेस् शिङ
मैत्रीपूर्वक परिपक्व किया।

ཐེག་པ་གསུམ་ལ་རབ་བཀོད་པས། །
थेग प सुम ल रप कोद् पेस्
त्रियान में प्रवेश कराया, उससे

ཆོས་ཀྱི་མཆོད་སྦྱིན་རྒྱས་གྱུར་ཅིག །
छोस् क्यि छोद् छिन ग्येस् ग्युर चिग
उत्तम धर्मदान की वृद्धि हो।12।

བདག་སྔོན་ཐབས་ཤེས་གྱུར་པ་ན། །
दग ङोन थप शेस् ग्युर प न
अतीत में मुझमें प्रज्ञोपाय होने से

སེམས་ཅན་ལྟ་ངན་ལས་གྲོལ་བྱས། །
सेम चेन त ङेन लेस डोल छेस्
सत्त्वों को कुदृष्टि से तार कर

ཡང་དག་ལྟ་ལ་རབ་བཀོད་པས། །
यङ दग त ल रप कोद् पेस्
सम्यग् दर्शन में प्रवेश कराया, उससे

ཆོས་ནི་རྣམ་པར་འཕེལ་གྱུར་ཅིག །
छोस् नि नम पर फेल ग्युर चिग
धर्म का विकास हो. विस्तार हो।13।

བདག་གིས་སེམས་ཅན་བསྡུ་དངོས་བཞིས། །
दग गीस् सेम चेन बदु ङोस् शीस्
मेरे द्वारा चार संग्रह-वस्तुओं से सत्त्वों को

ཉོན་མོངས་མེ་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིང་། །
ञोन मोङ मे लेस थर ग्युर चिङ
क्लेश रूपी अग्नि से मुक्त किया।

བདག་གིས་འཕེལ་སྡིག་ཕམ་བྱས་པས། །
दग गीस् फेल दिग फम छेस् पेस्
मैने पाप के वृद्धि से जीत प्राप्त किया, उससे

བདག་འཁོར་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཅིག །
दग खोर युन रिङ नेस ग्युर चिग
मेरे पार्षद् दीर्घकाल तक स्थित हों।14।

བདག་གིས་མུ་སྟེགས་ཅན་གཞན་དག །
दग गीस् मु तेग चेन शेन दग
मेरे द्वारा अन्य तैर्थिकों को

ལྟ་བའི་ཆུ་ལས་བསྒྲལ་བྱས་ཤིང་། །
त बई छु लेस डल छेस् शिङ
कुदृष्टि के सागर से पार किया तथा

ཡང་དག་ཉིད་ལ་བཀོད་གྱུར་པས། །
यङ दग ञिद् ल कोद् ग्युर पेस्
सम्यग् दृष्टि में प्रवेश कराया, उससे

བདག་འཁོར་རྟག་ཏུ་གུས་གྱུར་ཅིག །
दग खोर तग तु गुस् ग्युर चिग
मेरे अनुयायी सदैव श्रद्धावान् बने।15।

རིས་མེད་བསྟན་འཛིན་ཞབས་བརྟན།

# सभी परम्पराओं के शासनधरों के दीर्घायु हेतु प्रणिधान

འཇམ་མགོན་བློ་གྲོས་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་མཛད་པའི་རིས་མེད་པའི་བསྟན་འཛིན་གྱི་ཞབས་བརྟན་སྨོན་ཚིག་མི་ཤིགས་རྡོ་རྗེའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

जम्-गोन् लो-ड़ोस् था-यस् द्वारा विरचित सभी परम्परा-पादों के दीर्घायु हेतु प्रणिधान अभेद्य-वज्रमाला-नाम विहरति स्म।

ཨོཾ་སྭསྟི་སིདྡྷིརྦྷ་བ་ཏུ།
ओं स्वस्ति सिद्धिर्भबतु
ओं स्वस्ति सिद्धिर्भवतु।

འོད་མི་འགྱུར་བ་ཚེ་དཔག་མེད་མགོན་སོགས། །
ह़ोद् मि ग्युर व छ़े पग मेद् गोन सोग
अपरिवर्तित प्रभावान अपरिमितायु-नाथ आदि

ཕྱོགས་བཅུ་དུས་གསུམ་རྒྱལ་བའི་བདེན་པ་ཡིས། །
छोग चु दुस् सुम ग्यल वई देन प यीस्
दश-दिशाओं के त्रैकालिक जिनों के सत्यता से

སངས་རྒྱས་བསྟན་འཛིན་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་རྣམས། །
सङ ग्येस् तेन ज़िन पल देन ल म नम
बुद्धशासनधर श्रीमत गुरुवरों का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।1।

སྡེ་སྣོད་གསུམ་དང་ཐེག་པ་རིམ་དགུ་ཡི། །
दे नोद् सुम दङ थेग प रिम गु यि
त्रिपिटक और नौ यानक्रम

དམ་ཆོས་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་བདེན་པ་ཡིས། །
दम छोस् छग दङ डल बई देन प यीस्
सद्धर्म विरागता की सत्यता से

ཆོས་མཆོག་འབྱུང་གནས་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་རྣམས། །
छोस् छोग छुङ नेस पल देन ल म नम
उत्तम धर्मोत्स श्रीमत गुरुओं का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।2।

རྒྱལ་སྲས་བྱང་སེམས་ཉན་རང་འཕགས་པའི་ཚོགས། །
ग्यल सेस् छङ सेम ञेन रङ फग पई छ़ोग
जिनपुत्र बोधिसत्त्व, श्रावक, प्रत्येक-बुद्ध, आर्यगण

དགེ་འདུན་མི་ཕྱེད་འདུན་པའི་བདེན་པ་ཡིས། །
गेन दुन मि छेद् दुन पई देन प यीस्
संघ की अभेद्य संगठन की सत्यता के बल से

ཚོགས་མཆོག་འདྲེན་པ་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་རྣམས། །
छ़ोग छोग डेन प पल देन ल म नम
उत्तम गण के नायक गुरुजनों का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।3।

མཚོ་སྐྱེས་རྡོ་རྗེ་བི་མ་མི་ཏྲ་སོགས། །
छ़ो क्येस् दोर जे बि म मि त्र सोग
पद्मसम्भववज्र, विमलमित्र आदि

རིག་འཛིན་རྩ་བརྒྱུད་བླ་མའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
रिग ज़िन ज़्च ग्युद् ल मई छिन लप क्यीस्
विद्याधर मूल परम्परागत गुरुओं के आनुभाव से

འགྲོ་བའི་འདྲེན་མཆོག་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་རྣམས། །
डो बई डेन छोग पल देन ल म नम
जगत को उत्तम नेतृत्व देने वाले गुरुओं का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।4।

འཆི་བདག་བདུད་འཇོམས་རིགས་ལྔའི་དཀྱིལ་འཁོར་སོགས།།
छि दग दुद् जोम रिग ङई दक्यिल खोर सोग
मृत्युपति रूपी मारों के नाशक पंचकुल मण्डल आदि अर्थात्

ཡི་དམ་རྒྱུད་སྡེ་བཞི་དྲུག་ཐུགས་རྗེ་ཡིས། །
यि दम ग्युद् दे शि डुग थुग जे यीस्
चार और षड् तन्त्रेष्टदेवों की कृपा से

དཀྱིལ་འཁོར་དབང་ཕྱུག་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་རྣམས། །
दक्यिल खोर वङ छुग पल देन ल म नम
मण्डलेश्वर रूपी श्रीयुत गुरुओं का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।5।

ཡིད་བཞིན་འཁོར་ལོ་གྲུབ་པའི་རྒྱལ་མོ་སོགས། །
यिद् शिन खोर लो डुप पई ग्यल मो सोग
चिन्तामणिचक्र रानी (सित तारा) आदि

གནས་གསུམ་མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་ནུས་མཐུ་ཡིས། །
नेस सुम खा डो छोस् क्योङ नुस् थु यीस्
तीनों स्थानों (पीठों) के ड़ाकिनी, धर्मपालों के प्रभाव से

བདེ་ཆེན་དགྱེས་རོལ་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་རྣམས། །
दे छेन ग्येस् रोल पल देन ल म नम
महसुखानन्द पूर्वक क्रीड़ा करने वाले गुरुओं का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।6।

སྐྱེས་ཐོབ་སྦྱོར་བྱུང་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཡིས། །
क्येस् थोप छोर छुङ फुन सुम छ़ोग प यीस्
जन्मजात, प्रायोगिक उत्कर्ष गुणों से अर्थात्

རྒྱལ་བསྟན་གསལ་མཛད་འཆད་རྩོད་རྩོམ་པའི་བདག །
ग्यल तेन सल ज़े छे ज़्चोद् ज़्चोम पई दग
जिन-शासन को व्याख्यान, वाद, रचना से प्रकाशित करने वाले

ལུང་གི་བསྟན་འཛིན་མཁས་པའི་ཁྱུ་མཆོག་རྣམས། །
लुङ गि तेन ज़िन खेस् पई ख्यु छोग नम
आगम-शासनधर विद्वानों के वृषभ गुरुओं का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।7।

དམ་ཚིག་གཙང་ཞིང་སྒྲུབ་པ་སྙིང་པོར་མཛད། །
दम छ़िग त्ज़ङ शिङ डुप प ञिङ पोर ज़े
पवित्र समय के साथ गूढ साधना कर

ཆོས་ཉིད་དོན་གཟིགས་ལྷར་བཅས་གཙུག་གི་རྒྱན། །
छोस् ञिद् दोन ज़िग ल्हर चेस् त्ज़ुग गि ग्येन
धर्मधातु का दर्शन कर देवों सहित के उषणीष-अलंकार अर्थात्

རྟོགས་པའི་བསྟན་འཛིན་རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་རྣམས། །
तोग पई तेन ज़िन नल छोर वङ छुग नम
अधिगम शासनधर योगेश्वरों का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।8।

ཚུལ་ཁྲིམས་གཞི་བརྟན་ཏིང་འཛིན་སྣང་བ་གསལ། །
छुल ठिम शि तेन तिङ ज़िन नङ व सल
दृढ शीलाधार, स्पष्ट ध्यानाभास

ཤེས་རབ་རྩལ་ལྡན་འཕགས་པའི་ནོར་གྱིས་འབྱོར། །
शेस् रप त्ज़ल देन फग पई नोर ग्यीस् छोर
प्रज्ञा प्रवीण आर्य सम्पत्ति से सम्पन्न

ཐུབ་བསྟན་སྒྲོན་མེ་འགྲོ་བའི་སྐྱབས་གནས་རྣམས། །
थुप तेन डोन मे डो बई क्यप नेस नम
मुनि-शासन के मशाल, जगत के शरण दाता (गुरुओं) का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।9।

ཐོས་པས་རྒྱུད་གྲོལ་བསམ་པས་ཕྱེ་བྲག་ཕྱེད། །
थोस् पेस् ग्युद् डोल सम पेस् छे डग छेद्
श्रवण के द्वारा सन्तति मुक्त, विचारों से विभेद कर

སྒོམ་པས་དོན་རྟོགས་གཞན་དོན་ལྷུར་མཛད་པ། །
गोम पेस् दोन तोग शेन दोन ल्हुर ज़े प
भावन से अर्थ का अधिगम कर परार्थ में संलग्न

མཁྱེན་བརྩེ་ནུས་ལྡན་རྒྱལ་བའི་བསྟན་འཛིན་རྣམས། །
ख्येन त्ज़े नुस् देन ग्यल वई तेन ज़िन नम
ज्ञान, करुणा, बल युक्त शासनधर गुरु जनों का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।10।

དབང་པོར་འཚམས་པའི་ཐེག་རིམ་སྣ་ཚོགས་ལ། །
वङ पोर छ़म पई थेग रिम न छ़ोग ल
इन्द्रियों के अनुरूप विविध यानों में

ལེགས་པར་ཞུགས་ནས་ཚུལ་བཞིན་སྤྱོད་པ་ཡི། །
लेग पर शुग नेस् छुल शिन चोद् प यि
सुप्रतिष्ठित हो, विधिवत चर्या कर

རིས་མེད་སྐྱེས་ཆེན་ཕྱོགས་ཀུན་བཞུགས་པ་རྣམས། །
रीस् मेद् क्येस् छेन छोग कुन शुग प नम
सभी परम्पराओं के महापुरुष सभी दिशाओं में वास करने वालों का

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।11।

བསྟན་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཕན་ཚུན་ཐུགས་མཐུན་ཞིང་། །
तेन ज़िन थम चे फेन छुन थुग थुन शिङ
सभी शासनधर आपस में सद्भावपूर्ण तथा

ཐུབ་པའི་བསྟན་ལ་ཕྱོགས་ཁྱེར་སེལ་མེད་པར། །
थुप पई तेन ल छोग ख्येर सेल मेद् पर
मुनिशासन के प्रति बिना भेदभाव और दुर्भावना से

དག་སྣང་ཡངས་པོས་རང་བསྟན་སྐྱོང་བཞིན་དུ། །
दग नङ यङ पोस् रङ तेन क्योङ शिन दु
उदार शुद्धाभास युक्त तथा अपने शासन को पालन करते हुए

ཞབས་པད་བརྟན་ཅིང་མཛད་ཕྲིན་རབ་འཕེལ་ཤོག །
शप पे तेन चिङ ज़े ठिन रप फेल शोग
चरणपाद दृढ हो, कर्म समृद्ध हों।12।

བདག་ཅག་འབྲེལ་བཅས་ཡང་སྲིད་ཐམས་ཅད་དུ། །
दग चग डेल चेस् यङ सिद् थम चे दु
सम्बन्धित हम सब भी समस्त जन्मों में

ནད་མེད་རྡོ་རྗེའི་ཚེ་དང་གཟུགས་བཟང་སོགས། །
ने मेद् दोर जेई छे दङ ज़ुग ज़ङ सोग
निरोग, वज्रायु, रूपवान, भद्रशीलता आदि

མཐོ་རིས་ཡོན་ཏན་བདུན་ལ་དབང་འབྱོར་ནས། །
थो रीस् योन तेन दुन ल वङ छोर नेस्
स्वर्ग के सात गुणों से अधिकृत सम्पन्न होकर

ཐུབ་བསྟན་ཡོངས་ཀྱི་སྣང་བྱེད་ཉིད་གྱུར་ཅིག །
थुप तेन योङ क्यि नङ छेद्ञिद् ग्युर चिग
समस्त मुनि-शासन के प्रकाशक बनें।13।

ཚེ་དང་ཐར་པའི་བར་ཆད་ཀུན་ཞི་ཞིང་། །
छे दङ थर पई बर छे कुन शि शिङ
जीवन और मोक्ष के सभी बाधायें शान्त हों

ལོ་བརྒྱ་འཚོ་ཞིང་སྟོན་བརྒྱ་མཐོང་བ་དང་། །
लो ग्य छो शिङ तोन ग्य थोङ व दङ
शत वर्ष जीकर शत शरद ऋतु को देखें

ལྷག་པའི་བསླབ་པའི་རྒྱལ་བསྟན་རིན་པོ་ཆེ། །
ल्हग पई लप पई ग्यल तेन रिन पो छे
अधि-शिक्षाओं के द्वारा जिन-शासन महारत्न को

ནམ་མཁའ་ཇི་སྲིད་གཞན་ཕྱིར་འཛིན་པར་ཤོག །
नम खा जि सिद् शेन छिर ज़िन पर शोग
आकाश की स्थिति तक परार्थ हेतु धारण करूँ।14।

རྒྱལ་ཀུན་འདུས་ཞལ་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་དང་། །
ग्यल कुन दुस् शल पल देन ल म दङ
समस्त जिनों का साकार रूप श्रीमत गुरुओं और

རིས་མེད་བསྟན་པ་འཛིན་ཀུན་འཚོ་གཞེས་ཤིང་། །
रीस् मेद् तेन प ज़िन कुन छो शेस् शिङ
सभी परम्पराओं के शासनधर दार्घायु होकर

ཆོས་འཁོར་རྒྱུན་ཆད་མེད་པར་བསྐོར་བ་ཡིས། །
छोस् खोर ग्युन छे मेद् पर कोर व यीस्
निरन्तर धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करते हुये

འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་རྟག་ཏུ་སྣང་བྱེད་ཤོག །ཅེས་སོ། །
जिग तेन सुम पो तग तु नङ छेद् शोग
त्रिलोक को सदैव प्रकाशित करते रहें।15। इति।

# འདུལ་བ་སྨན་གྱི་གཞིའི་ཤིས་བརྗོད།
# आगम-वस्तु में आये मंगलकारी प्रार्थना

## ༢༠. ཤིས་བརྗོད་ཀྱི་ཡན་ལག །
## 20. मंगलवचनांग

ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་མངའ་བ་གསེར་གྱི་རི་བོ་འདྲ། །
फुन सुम छ़ोग प ङा व सेर ग्यि रि बो ड
विपुल श्री से युक्त सुवर्णगिरि सदृश

འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མགོན་པོ་དྲི་མ་གསུམ་སྤངས་པ། །
जिग तेन सुम ग्यि गोन पो डि म सुम पङ प
त्रिलोकनाथ त्रिमल त्यागी

སངས་རྒྱས་པདྨོ་རྒྱས་པ་འདབ་འདྲའི་སྤྱན་མངའ་བ། །
सङ ग्येस् पेमाो ग्येस् प दप डई चेन ङा व
खिले पद्म सदृश चक्षु वाले बुद्ध

འདི་ནི་འཇིག་རྟེན་དགེ་བའི་བཀྲ་ཤིས་དང་པོ་ཧོ། །
दि नि जिग तेन गे बई ट शीस् दङ पो ह़ो
यह जगत-कुशल का प्रथम मंगल है।1।

དེ་ཡིས་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་མཆོག་རབ་མི་གཡོ་བ། །
दे यीस् ञे वर तेन पई छोग रप मि यो व
उनके द्वारा उपदिष्ट, उत्तम भ्रान्ति अतीत रहित

འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་གྲགས་ཤིང་ལྷ་དང་མིས་མཆོད་པ། །
जिग तेन सुम न डग शिङ ल्ह दङ मीस् छोद् प
त्रिलोक में प्रसिद्ध देव और मनुष्यों द्वारा पूजित

ཆོས་ཀྱི་དམ་པ་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་པ། །
छोस् क्यि दम प क्ये गु नम ल शि छेद् प
सद्धर्म समस्त सत्त्वों को शान्त करने वाली

འདི་ནི་འཇིག་རྟེན་དགེ་བའི་བཀྲ་ཤིས་གཉིས་པ་ཧོ། །
दि नि जिग तेन गे बई ट शीस् ञीस् प ह़ो
यह जगत का कुशल द्वितीय मंगल है।2।

དགེ་འདུན་དམ་པ་ཆོས་ལྡན་ཐོས་པའི་བཀྲ་ཤིས་ཕྱུག །
गेन दुन दम प छोस् देन थोस् पई ट शीस् छुग
पवित्र भिक्षु-संघ धार्मिक मंगल श्रवण के धनी

ལྷ་དང་མི་དང་ལྷ་མ་ཡིན་གྱིས་མཆོད་པའི་གནས། །
ल्ह दङ मि दङ ल्ह म यिन ग्यीस् छोद् पई नेस
देव, असुर और मनष्यों के पूजा का स्थल

ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་རབ་ངོ་ཚ་ཤེས་དང་དཔལ་གྱི་གཞི། །
छ़ोग क्यि छोग रप ङो छ़ शेस् दङ पल ग्यि शि
उत्तम संघ, लज्जावान, श्री का आधार

འདི་ནི་འཇིག་རྟེན་དགེ་བའི་བཀྲ་ཤིས་གསུམ་པ་ཧོ། །ཞེས་དང་།
दि नि जिग तेन गे बई ट शीस् सुम प ह़ो
यह जगत के कुशल का तीसरा मंगल है।3। ऐसा और-

སྟོན་མཆོག་དམ་པ་ལྷ་མིས་མཆོད་འོས་པ། །
तोन छोग दम प ल्ह मीस् छोद् ह़ोस् प
महान् परम शास्ता, देव मनुष्यों द्वारा पूजनीय

སངས་རྒྱས་ཕྱག་འཚལ་དེང་འདིར་བདེ་ལེགས་ཤོག །
सङ ग्येस् छग छ़ल देङ दिर दे लेग शोग
बुद्ध का वन्दना करता हूँ, यहाँ अभी सभी सुखी और अच्छे हों

སེམས་ཅན་གང་དག་འགྲོ་དང་མི་འགྲོ་བ། །
सेम चेन गङ दग डो दङ मि डो व
चल और अचल तथा जितने भी सत्त्व हैं

དེ་དག་ཐམས་ཅད་དེང་འདིར་བདེ་ལེགས་ཤོག །
दे दग थम चे देङ दिर दे लेग शोग
वे सभी यहाँ अभी सुखी और अच्छे हों।4।

ཞི་བ་ཆགས་བྲལ་ལྷ་མིས་མཆོད་འོས་པ། །
शि व छग डल ल्ह मीस् छोद् ह़ोस् प
शान्त, विराग, देव मनुष्यों के पूजनीय

ཆོས་ལ་ཕྱག་འཚལ་དེང་འདིར་བདེ་ལེགས་ཤོག །
छोस् ल छग छ़ल देङ दिर दे लेग शोग
धर्म का वन्दना करता हूँ यहाँ अभी सुखी और अच्छे हों

སེམས་ཅན་གང་དག་འགྲོ་དང་མི་འགྲོ་བ། །
सेम चेन गङ दग डो दङ मि डो व
चल और अचल तथा जितने भी सत्त्व हैं

དེ་དག་ཐམས་ཅད་དེང་འདིར་བདེ་ལེགས་ཤོག །
दे दग थम चे देङ दिर दे लेग शोग
वे सभी यहाँ अभी सुखी और अच्छे हों।5।

ཚོགས་མཆོག་དམ་པ་ལྷ་མིས་མཆོད་འོས་པ། །
छ़ोग छोग दम प ल्ह मीस् छोद् ह़ोस् प
संघों में श्रेष्ठ देव और मनुष्यों द्वारा पूजनीय

དགེ་འདུན་ཕྱག་འཚལ་དེང་འདིར་བདེ་ལེགས་ཤོག །
गेन दुन छग छ़ल देङ दिर दे लेग शोग
भिक्षुसंघ की वन्दना करता हूँ, यहाँ अभी सभी सुखी और खुश हों

སེམས་ཅན་གང་དག་འགྲོ་དང་མི་འགྲོ་བ། །
सेम चेन गङ दग डो दङ मि डो व
चल और अचल तथा जितने भी सत्त्व हैं

དེ་དག་ཐམས་ཅད་དེང་འདིར་བདེ་ལེགས་ཤོག །
दे दग थम चे देङ दिर दे लेग शोग
वे सभी यहाँ अभी सुखी और अच्छे हों।6।

ཉིན་མོ་བདེ་ལེགས་མཚན་བདེ་ལེགས། །
ञिन मो दे लेग छ़ेन दे लेग
दिन में सुख-मंगल और रात्रि में भी सुख और मंगल हो

ཉི་མའི་གུང་ལ་བདེ་ལེགས་ཤིང་། །
ञि मई गुङ ल दे लेग शिङ
दिन में मंगल हो, रात में मंगल हो

ཉིན་མཚན་རྟག་ཏུ་བདེ་ལེགས་པ། །
ञिन छ़ेन तग तु दे लेग प
दोपहर में मंगल हो रात-दिन सदैव मंगल हो

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱིས་བདེ་ལེགས་ཤོག །
कोन छोग सुम ग्यीस् दे लेग शोग
त्रिरत्न द्वारा मंगलमयी हो।7।

འབྱུང་པོ་གང་དག་འདིར་ནི་ལྷགས་གྱུར་ཏམ། །
छुङ पो गङ दग दिर नि ल्हग ग्युर तम
भूत जो यहाँ पधारें हैं

སའམ་འོན་ཏེ་བར་སྣང་འཁོད་ཀྱང་རུང་། །
सह़म ह़ोन ते बर नङ खोद् क्यङ रुङ
भूमि पर और आकाश में निवास करते हों

སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་རྟག་ཏུ་བྱམས་བྱེད་ཅིང་། །
क्ये गु नम ल तग तु छम छेद् चिङ
सदैव सत्त्वों को मैत्री कर

ཉིན་དང་མཚན་དུ་ཆོས་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
ञिन दङ छ़ेन दु छोस् ल चोद् पर शोग
अहोरात्र धर्म का आचरण करें।8।

ཅེས་པ་དང་། འདུལ་བ་སྨན་གྱི་གཞི་ལས།
विनयागम में आये

གང་ལ་སེར་སྣ་རྣམ་ཆགས་པ། །
गङ ल सेर न नम छग प
जिसने लालच और राग को

རྣམ་འཇོམས་དྲི་མ་མེད་མཛད་ཅིང་། །
नम जोम डि म मेद् ज़े चिङ
पूर्ण नष्ट कर विमल किया

ཐུགས་ཞི་གནོད་པ་མི་མངའ་དེས། །
थुग शि गनोद् प मि ङा देस्
शान्त-चित्त, हिंसा अतीत वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।9।

འདྲེན་པ་གང་ཞིག་འགྲོ་བ་རྣམས། །
डेन प गङ शिग डो व नम
नायक जो समस्त जगत को

ཐར་པའི་ལམ་དུ་འཇུག་མཛད་ཅིང་། །
थर पई लम दु जुग ज़े चिङ
मोक्ष-मार्ग में प्रविष्ट कराते हैं

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་སྟོན་པ་དེས། །
छोस् नम थम चे तोन प देस्
समस्त धर्मों की देशना करने वाले हैं, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।10।

སྟོན་པ་འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་རྟེན། །
तोन प डो व नम क्यि तेन
शास्ता जगत के आश्रय हैं

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་དོན་གྱི་ཕྱིར། །
सेम चेन कुन ग्यि दोन ग्यि छ्यिर
समस्त सत्त्वार्थ

གང་ཞིག་བདེ་བ་མངའ་མཛད་དེས། །
गङ शिग दे व ङा ज़े देस्
जो सुख से सम्पन्न हैं, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।11।

སྐྱོབ་པ་གང་ཞིག་བྱམས་པ་ཡི། །
क्योप प गङ शिग छम प यि
शरणदाता जो मैत्री-

ཐུགས་ཀྱིས་འགྲོ་བ་འདི་དག་ཀུན། །
थुग क्यीस् डो व दि दग कुन
चित्त के द्वारा समस्त इस जगत को

བུ་གཅིག་བཞིན་དུ་རྟག་བསྐྱངས་དེས། །
बु चिग शिन दु तग क्यङ देस्
सदैव इकलौते पुत्र सदृश पालते हैं, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।12।

གང་ཞིག་འཁོར་བར་འགྲོ་བ་ཡི། །
गङ शिग खोर वर डो व यि
जो सासांरिक जगत के

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་རྟེན་གྱུར་ཅིང་། །
सेम चेन कुन ग्यि तेन ग्युर चिङ
समस्त सत्त्वों के आश्रय हैं

གླིང་དང་དཔུང་གཉེན་གྱུར་པ་དེས། །
लिङ दङ पुङ ञेन ग्युर प देस्
द्वीप और उद्धारक हैं, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।13।

གང་ཞིག་ཆོས་ཀུན་མངོན་སུམ་གྱུར། །
गङ शिग छोस् कुन ङोन सुम ग्युर
जिसने सभी धर्मों को प्रत्यक्ष किया है

གཙང་ཞིང་བཀྲུ་བ་མི་མངའ་ལ། །
त्सङ शिङ ट्रु व मि ङा ल
शुद्ध और साफ करने से अतीत हुये हैं

གསུམ་གཙང་གཙང་མར་མཛད་པ་དེས། །
सुम त्सङ त्सङ मर ज़े प देस्
त्रिविध शुद्ध होकर शुद्ध कराने वाले वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।14।

དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་གང་སྐྱེས་པས། །
पा बो छेन पो गङ क्येस् पेस्
महावीर, जो जन्म से ही

ཕུན་སུམ་ཚོགས་དོན་འབྱོར་གྱུར་ཅིང་། །
फुन सुम छ़ोग दोन छोर ग्युर चिङ
प्रचुर लक्ष्मी से सम्पन्न हैं

དོན་གྲུབ་ཚོགས་ཀྱང་གྲུབ་པ་དེས། །
दोन डुप छ़ोग क्यङ डुप प देस्
सिद्धार्थ, संभार सम्पन्न वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।15।

གང་ཞིག་སྐྱེས་པས་ས་རྣམས་ནི། །
गङ शिग क्येस् पेस् स नम नि
जिनके जन्म पर भूमि और

ནགས་ཚལ་བཅས་པ་རབ་གཡོས་ཤིང་། །
नग छ़ल चेस् प रप योस् शिङ
वन, उद्यान प्रकम्पित हुये

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རབ་དགའ་དེས། །
सेम चेन थम चे रप गा देस्
समस्त सत्त्वों को मुदिता देने वाले

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।16।

བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོར་གཤེགས་པ་ན། །
छङ छुपञिङ पोर शेग प न
बोधगर्भ की ओर गमन करने पर

ས་དག་རྣམ་དྲུག་གཡོས་གྱུར་ཅིང་། །
स दग नम डुग योस् ग्युर चिङ
भूमि छह बार कम्पित हुआ

བདུད་ཡིད་མི་བདེར་གྱུར་པ་དེས། །
दुद् यिद् मि देर ग्युर प देस्
मार को संत्रस्त करने वाले, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।17।

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ན། །
छोस् क्यि खोर लो कोर व न
धर्मचक्र प्रवर्त्तन करते समय

འཕགས་པའི་བདེན་པ་རྣམ་གསུངས་ཤིང་། །
फग पई देन प नम सुङ शिङ
चार आर्यसत्यों को कहकर

ཐུབ་པའི་སྙན་པ་གང་བྱུང་དེས། །
थुप पई ञेन प गङ छुङ देस्
मुनि जो विख्यात हुये, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।18।

ཡིད་འཕྲོག་གང་ཞིག་མུ་སྟེགས་བྱེད། །
यिद् ठोग गङ शिग मु तेग छेद्
समस्त मोहित करने वाले तैर्थिकों को

ཐམས་ཅད་ཆོས་ཀྱིས་ཕམ་མཛད་ཅིང་། །
थम चे छोस् क्यीस् फम ज़े चिङ
धर्म के द्वारा पराजित कर

ཚོགས་ཀུན་དབང་དུ་མཛད་པ་དེས། །
छोग कुन वङ दु ज़े प देस्
समस्त समूहों को वश करने वाले, वे

ཁྱེད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད་པར་གྱུར། །
ख्येद् ल दे लेग ज़े पर ग्युर
तुम्हें सुख और मंगल लायें।19।

སངས་རྒྱས་ཁྱོད་ལ་བདེ་ལེགས་མཛད། །
सङ ग्येस् ख्योद् ल दे लेग ज़े
बुद्ध तुम्हें शुभ और मंगल लायें

བརྒྱ་བྱིན་ཚངས་པའི་ལྷ་རྣམས་དང་། །
ग्य छिन छङ पई ल्ह नम दङ
इन्द्र, ब्रह्मा आदि देवता और

འབྱུང་པོ་ཀུན་གྱི་བདེ་ལེགས་ནི། །
छुङ पो कुन ग्यि दे लेग नि
सभी भूतों का सुख और कल्याण

ཁྱེད་ལ་རྟག་ཏུ་སྦྱིན་གྱུར་ཅིག །
ख्येद् ल तग तु छिन ग्युर चिग
सदैव तुम्हें देते रहें।20।

སངས་རྒྱས་བསོད་ནམས་མཐུ་དག་དང་། །
सङ ग्येस् सोद् नम थु दग दङ
बुद्ध के पुण्य-बल और

ལྷ་རྣམས་ཀུན་གྱི་བསམ་པ་ཡིས། །
ल्ह नम कुन ग्यि सम प यीस्
समस्त देवताओं के कामनाओं से

ཁྱེད་ཀྱི་འདོད་དོན་གང་ཡིན་པ། །
ख्येद् क्यि दोद् दोन गङ यिन प
तुम्हारे जो भी अभिलाषायें हैं

ཀང་གཉིས་ཁྱེད་ཅག་བདེ་ལེགས་ཤོག །
कङ ञीस् ख्येद् चग दे लेग शोग
द्विपादी तुम सभी सुखमय और कल्याणमय हों

ཁྱེད་ཅག་ལམ་འགྲོ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
ख्येद् चग लम डो दे लेग शोग
तुम्हारे मार्गगमन सुखमय और कल्याणमय हों

དོན་དེ་དེ་རིང་གྲུབ་གྱུར་ཅིག །
दोन दे दे रिङ डुप ग्युर चिग
वे सभी कामनायें आज ही सिद्ध हों।21।

ཀང་བཞི་ཁྱེད་ཅག་བདེ་ལེགས་ཤོག །
कङ शि ख्येद् चग दे लेग शोग
चतुर्पादी सभी सुखमय और कल्याणमय हों

ཕྱིར་འོང་དག་ཀྱང་བདེ་ལེགས་ཤོག །ཅེས་སོ། །
छिर ह्रोङ दग क्यङ दे लेग शोग
तुम्हारे वापस यात्रा भी सुखमय और कल्याणमय हों।22। इति।

མཛད་བཅུའི་བཀྲ་ཤིས།

# बारह लीलाओं का मंगलाचरण

མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བཀྲ་ཤིས་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པ་ནི།

आचार्य नागार्जुन कृत बारह लीलाओं का मंगलाचरण

སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་ཕན་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་མངའ་བ་པོ། །
सेम चेन कुन ल फेन छिर छङ छुप ङा व पो
समस्त सत्त्वों के कल्याणार्थ बोधि-प्राप्ति वाले

དོན་རྣམས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་བརྟུལ་བ་ཡོངས་ལྡན་པ།།
दोन नम थम चे डुप पर तुल व योङ देन प
सभी अर्थों की सिद्धि हेतु व्रत परिपूर्ण कर्ता

ཚོགས་ཀྱི་ལམ་དགྱེས་ཐུབ་པའི་བཀྲ་ཤིས་གང་འབྱུང་བ།།
छ़ोग क्यि लम ग्येस् थुप पई ट शीस् गङ छुङ व
संभारमार्ग की प्रीति से मुनि को जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।1।

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགའ་ལྡན་ལྷའི།།
डो ल फेन छिर दे शिन शेग प गा देन ल्हई
जगत कल्याणार्थ तथागत तुषित-देव के

གཞལ་མེད་ཁང་གི་སྙིང་པོ་ནས་ནི་འདིར་གཤེགས་ཏེ། །
शल मेद् खङ गि ञिङ पो नेस् नि दिर शेग ते
विमान गर्भ से इस लोक में अवतरित करते समय

དབང་བཅས་ལྷ་ཡིས་བསྐོར་བའི་བཀྲ་ཤིས་གང་འབྱུང་བ།།
वङ चेस् ल्ह यीस् कोर बई ट शीस् गङ छुङ व
इन्द्र सहित देवों के पार्षद् से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।2।

ལོ་མ་མེ་ཏོག་འོད་འབར་ཉམས་དགའ་ལུམྦིའི་ཚལ། །
लो म मे तोग ह़ोद् बर ञम गा लुम्बी छ़ल
फूल-पत्तियों से प्रकाशित मनोहर लुम्बिनी उद्यान में

ལྷ་མང་དག་གིས་བསྟེན་པ་མགོན་པོ་བལྟམས་པ་ན། །
ल्ह मङ दग गीस् तेन प गोन पो तम प न
बहु देवताओं सहित नाथ जन्म लेते समय

སྲིད་པ་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡི་བཀྲ་ཤིས་གང་འབྱུང་བ། །
सिद् प थर छिन प यि ट शीस् गङ छुङ व
भव समाप्ति से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।3।

གྲོང་ཁྱེར་སེར་སྐྱའི་གནས་ནས་རྒྱལ་པོའི་ཕོ་བྲང་དུ། །
डोङ ख्येर सेर क्यई नेस नेस् ग्यल पोइ फो डङ दु
कपिलवस्तु नगर के राजदरबार में

ལྷུམས་ནས་བལྟམས་པ་སྟོན་པ་བདེ་གཤེགས་ཟས་གཙང་སྲས།།
ल्हुम नेस् तम प तोन प दे शेग ज़ेस् ज़ङ सेस्
गर्भ से जन्म प्रदर्शन करने वाले तथागत शुद्धोधन पुत्र

སྒྱུར་བསྐྱུན་བདུད་རྩིའི་ཆུས་གཏོར་བ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་གང་།།
न्युर टुन दुद् ज़ी छुस् तोर व यीस् ट शीस् गङ
त्वरित अमृत-जल के छिडकाव से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।4।

གྲོང་ཁྱེར་དམ་པ་སེར་སྐྱའི་གནས་ཞེས་བྱ་བར་ནི། །
डोङ ख्येर दम प सेर क्यई नेस शेस् छ बर नि
पवित्र कपिलवस्तु नामक नगर

རྨད་དུ་གྲགས་པ་ཆེ་བའི་ལྷ་ཡིས་མངོན་བསྟོད་པ། །
मे दु डग प छे बई ल्ह यीस् ङोन तोद् प
अद्भुत महाप्रसिद्ध देवों द्वारा प्रशंसित

བསམ་ཡས་དགེ་སྒྲུབ་བསོད་ནམས་ཕུང་པོའི་བཀྲ་ཤིས་གང་།།
सम येस् गे डुप सोद् नम फुङ पोइ ट शीस् गङ
अचिन्त्य कुशल-राशि की सम्पन्नता से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।5।

དགྱེས་ཤིང་ནམ་ཕྱེད་གྲོང་ཁྱེར་མཆོག་ནས་མངོན་བྱུང་སྟེ། །
ग्येस् शिङ नम छेद् डोङ ख्येर छोग नेस् ङोन छुङ ते
सहर्ष अर्ध-रात्रि में उत्तम नगर से अभिनिष्क्रमण कर

དཀའ་ཐུབ་ཚལ་དུ་མངོན་པར་གཤེགས་ཤིང་ཚངས་ལ་སོགས། །
का थुप छ़ल दु ङोन पर शेग शिङ छ़ङ ल सोग
तपोवन की ओर प्रस्थान करने पर ब्रह्मा आदि

ལྷ་ཡི་ཚོགས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བའི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
ल्ह यि छ़ोग क्यीस् योङ सु कोर बई ट शीस् गङ
देवगणों के समूह से परिवृत्त होने से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।6।

རབ་ཏུ་འོད་འབར་གསེར་དང་འདྲ་བའི་སྐུ་མདངས་ཞིང་། །
रप तु ह़ोद् बर सेर दङ ड बई कु ङा शिङ
अतिप्रकाशमय उज्जवल सुवर्ण सदृश कायवान

བཻ་ཌཱུརྻ་ལྟར་སྔོ་བའི་རྩྭ་བཏིང་སྟེང་བཞུགས་ཏེ། །
बैदूर्य तर ङो बई ज़्व तिङ तेङ शुग ते
वैडुर्य सदृश हरे घास के बिछोने पर

སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་བཅས་མི་གཡོ་མཆོག་གི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
क्यिल मो टुङ चेस् मि यो छोग गि ट शीस् गङ
अचल वज्रासन लगाने से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।7।

ཆུ་བོའི་འགྲམ་ན་ཙ་ཤའི་ཕྲེང་གིས་ཡོངས་བསྐོར་བ། །
छु बोइ डम न ज़्व शई ठेङ गीस् योङ कोर व
नदी किनारे नीलकण्ठ माला सदृश परिवृत्त करते

ཤིན་ཏུ་མདངས་སུ་བྱུང་བའི་སྲེད་པ་སེལ་མཛད་པ། །
शिन तु मे दु छुङ बई सेद् प सेल ज़े प
परम अद्भुत वातावरण था उस समय अपने तृष्णा का नाश किया तथा

ཀླུ་ཡི་རྒྱལ་པོས་ཕྱག་བྱས་པ་ཡི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
लु यि ग्यल पोस् छग छेस् प यि ट शीस् गङ
नागराज द्वारा वन्दना करने से जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।8।

ཤིང་རྒྱལ་དྲུང་གཤེགས་བྱམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་བདུད་ཀྱི་ཕྱོགས། །
शिङ ग्यल डुङ शेग छम पई तोप क्यीस् दुद् क्यि छोग
वृक्षराज के सम्मुख मैत्री-बल से मार पक्ष

མང་པོ་བཏུལ་ཏེ་ས་སྟེང་དང་ནི་ནམ་མཁའ་ལ། །
मङ पो तुल ते स तेङ दङ नि नम खा ल
के समूह का दमन कर भूमि और आकाश में

བཅོམ་ལྡན་བཀྲ་ཤིས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གང་འབྱུང་བ། །
चोम देन ट शीस् नम प न छ़ोग गङ छुङ व
भगवान् का जो मंगलोदय उत्पन्न हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।9।

སྡུག་བསྔལ་མཐའ་དག་གཞིག་ཕྱིར་རྡོ་རྗེའི་གདན་བཞུགས་ཏེ། །
दुग ङल था दग शिग छिर दोर जेई देन शुग ते
समस्त दुःखों को नष्ट करने के लिये वज्रासन पर विराजमान हो

ནམ་གྱི་ཐོ་རངས་བདུད་བཞི་པོ་དག་རྣམ་བཏུལ་བ། །
नम ग्यि थो रङ दुद् शि पो दग नम तुल व
उषाकाल में चारों मारों को दमन कर

སྟོན་པ་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་བཀྲ་ཤིས་གང་ཡིན་པ། །
तोन प दे वर शेग पई ट शीस् गङ यिन प
शास्ता सुगत का जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।10।

གྲོང་ཁྱེར་ཝཱ་ར་ཎཱ་སཱི་དྲང་སྲོང་མཆོག་བཞུགས་ནས། །
डोङ ख्येर वा र णा सारि डङ सोङ छोग शुग नेस्
वाराणसी नगर में महाऋषि विहार कर

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་མཆོག་བསྟན་པ་ཡི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
छोस् क्यि खोर लो छोग तेन प यि ट शीस् गङ
धर्मचक्र प्रवर्त्तन से जो मंगल हुआ

ལྷ་ཡུལ་དང་འདིར་ཤིན་ཏུ་རྨད་དུ་བྱུང་གྱུར་པ། །
ल्ह युल दङ दिर शिन तु मे दु छुङ ग्युर प
देवस्थान और यहाँ परम अद्भुत जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।11।

བཀྲ་ཤིས་གང་ཞིག་ཕན་བྱེད་དམ་པ་དག་བྱེད་པ། །
ट शीस् गङ शिग फेन छेद् दम प दग छेद् प
मंगलकारी कल्याणकारी परमशुद्धीकारी

བསོད་ནམས་དག་བྱེད་འཕགས་པའི་སྐྱེ་བོས་མངོན་བསྟོད་པ། །
सोद् नम दग छेद् फग पई क्ये बोस् ङोन तोद् प
पुण्यशुद्धि कर्ता, आर्य पुरुषों द्वारा अभिप्रशंसनीय

བཅོམ་ལྡན་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་སེང་གེས་གང་གསུངས་པ། །
चोम देन शाक्य थुप पई सेङ गेस् गङ सुङ प
भगवान् शाक्य-सिंह ने जो उपदेश दिया

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।12।

མུ་སྟེགས་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱི་ང་རྒྱལ་གཞོམ་པ་དང་། །
मु तेग छेद् प नम क्यि ङ ग्यल शोम प दङ
तैर्थिकों का अहंकार नष्ट कर

འགྲོ་ལ་བདེ་བ་བསྐྱེད་ཕྱིར་ཆོ་འཕྲུལ་དམ་པ་དག །
डो ल दे व क्येद् छिर छो ठुल दम प दग
जगत में सुख पैदा करने के लिये उत्तम प्रातिहार्य का

ཉེ་བར་སྟོན་པའི་རྒྱལ་བའི་བཀྲ་ཤིས་གང་ཡིན་པ། །
ञे वर तोन पई ग्यल वई ट शीस् गङ यिन प
प्रदर्शन कर जिन ने जो मंगलोदय उत्पन्न किया

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।113।

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་མཐོ་རིས་གནས་ནས་འདིར་གཤེགས་ཏེ། །
डो ल फेन छिर थो रीस् नेस नेस् दिर शेग ते
जगत हितार्थ स्वर्ग से यहाँ अवतरित हुए

ཚངས་པ་ལ་སོགས་ལྷ་ཚོགས་ལག་ན་རྔ་ཡབ་གདུགས། །
छङ प ल सोग ल्ह छोग लग न ङ यप दुग
ब्रह्मा आदि देव समूह हाथ में चामर-छत्र आदि

སྣ་ཚོགས་ཐོགས་པས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བའི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
न छोग थोग पेस् योङ सु कोर बई ट शीस् गङ
विविध धारण किये चारों तरफ घिर उससे जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।14।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཞི་བ་མཆོག་ཏུ་ཉེར་གཤེགས་པ། །
दे शिन शेग प शि व छोग तु ञेर शेग प
तथागत परम शान्त परिनिर्वाण को प्राप्त हुये

མནྡཱ་ར་བའི་མེ་ཏོག་མང་པོས་མངོན་མཆོད་པ། །
मन्दा र बई मे तोग मङ पोस् ङोन छोद् प
मन्दार आदि अनेक पुष्पों से अभ्यर्चित

ལྷ་མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་མངོན་པར་བསྟོད་པའི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
ल्ह छोग नम क्यीस् ङोन पर तोद् पई ट शीस् गङ
उत्तम देवों द्वारा अभिस्तुति कर जो मंगलोदय हुआ

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।15।

ལྷ་དབང་ཀླུ་དང་མི་ཡི་དབང་པོས་ཕྱག་བྱས་པ། །
ल्ह वङ लु दङ मि यि वङ पोस् छग छेस् प
**देवेन्द्र, नाग, नरेन्द्रों द्वारा वन्दना कर**

མཁའ་ལྡིང་གནོད་སྦྱིན་དྲི་ཟའི་དབང་པོས་མཆོད་གྱུར་པ། །
खा दिङ गनोद् छिन डि ज़ई वङ पोस् छोद् ग्युर प
**गरुढ़, यक्ष, गन्धर्वेन्द्रों द्वारा पूजा कर**

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྟོབས་བཅུ་ལྡན་པའི་བཀྲ་ཤིས་གང་། །
दे शिन शेग प तोप चु देन पई ट शीस् गङ
**तथागत दशबल युक्त से जो मंगलोदय हुआ**

བཀྲ་ཤིས་དེས་ནི་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་ཤོག །ཅེས་སོ། །
ट शीस् देस् नि क्ये गु नम ल शि छेद् शोग
**उस मंगल से समस्त सत्त्व शान्त हों।**16।

### ལྷས་ཞུས་པའི་བདེ་ལེགས་ཚིགས་བཅད།

# देव परिपृच्छा मंगल श्लोक

འཇིག་རྟེན་འདི་དང་གཞན་དང་མཐོ་རིས་ན། །
जिग तेन दि दङ शेन दङ थो रीस् न
इस जगत तथा अन्य स्वर्ग में

རིན་ཆེན་རྨད་བྱུང་རྒྱ་ཆེན་གང་ཡོད་པ། །
रिन छेन मे छुङ ग्य छेन गङ योद् प
महा अद्भुत जो भी रत्न हों।

དེ་ནི་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་ལ། །
दे नि ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन छेन ल
वह सम्बुद्ध रत्न से

ཅིས་ཀྱང་གྲངས་དང་བགྲང་བ་ཆར་མི་ཕོད། །
चीस् क्यङ डङ दङ डङ व छर मि फोद्
संख्या-मूल्य किसी से भी बराबरी नहीं है।1।

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अनमोल अपरिमित

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन छेन जिग तेन छोग
सम्बुद्ध-रत्न लोक में अन्यतम है।

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि वह परम सत्य हों

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।2।

ཞི་འགོག་བདུད་རྩི་ཤིན་ཏུ་གྱ་ནོམ་གང་། །
शि गोग दुद् त्ज़ि शिन तु ग्य नोम गङ
शान्त, निरोध, अमृत, अति प्रणीत जिन्हें

ཤཱཀྱ་ཐུབ་པས་མཉམ་གཞག་ཐུགས་ཆུད་པ། །
शाक्य थुप पेस् ञम शग थुग छुद् प
शाक्यमुनि ने समाधि में उनका अधिगम किया।

ཆོས་དེ་དང་ནི་མཚུངས་པ་ཡོད་མིན་ཏེ། །
छोस् दे दङ नि छुङ प योद् मिन ते
तद् सदृश दूसरा धर्म नहीं है

དེ་མངོན་བྱས་ན་ཕྱིན་ཆད་མྱ་ངན་མེད། །
दे ङोन छेस् न छिन छे न्य ङेन मेद्
उसके अभिमुख होने के बाद शोक नहीं रहता।3।

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
दम पई छोस् क्यि रिन छेन जिग तेन छोग
सद्धर्म जगत का सर्वश्रेष्ठ रत्न है।

ཇི་སྐད་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।4।

རྒྱལ་བས་གང་དག་གང་ཟག་བརྒྱད་གསུངས་པ། །
ग्यल वे गङ दग गङ ज़ग ग्ये सुङ प
जिन ने जिस आठ पुद्गलों को कहा

དེ་དག་རྣམས་ནི་སྐྱེས་བུ་ཟུང་བཞི་སྟེ། །
दे दग नम नि क्येस् बु ज़ुङ शि ते
वे चार युगल पुरुष (स्रोतापत्ति आदि) हैं।

སྦྱིན་གནས་དེ་དག་ས་སྟེང་ཤིན་ཏུ་དཀོན། །
छिन नेस दे दग स तेङ शिन तु कोन
इस भूमि पर दान के अत्यन्त दुर्लभ पात्र हैं

དེ་དག་རྣམས་ལ་བྱིན་ན་དཔག་མེད་འགྱུར། །
दे दग नम ल छिन न पग मेद् ग्युर
उन्हें दान करने पर (दान) अपरिमित होता है।5।

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དགེ་འདུན་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
गेन दुन रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
संघ-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ठ रत्न है।

ཇི་སྐད་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा. यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।6।

དམ་པའི་གཙོ་བོ་མཆོག་སྦྱིན་གྱི་ནོམ་པ། །
दम पई ज़ो वो छोग छिन ग्य नोम प
पुण्यों में प्रमुख अभयदान प्रणीत है

འོད་མཆོག་དཔའ་བོ་དམ་པ་མཆོག་གི་གནས། །
ह़ोद् छोग पा बो दम प छोग गि नेस
उत्तम प्रभा, परम वीरता, श्रेष्ठ-पद है।

ཤེས་རབ་དམ་པ་མཆོག་གི་དམ་པ་མཆོག །
शेस् रप दम प छोग गि दम प छोग
परम प्रज्ञा श्रेष्ठों में अन्यतम है

མཆོག་མིན་མཆོག་མཁྱེན་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་གཅིག །
छोग मिन छोग ख्येन दि नि चोम देन चिग
श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ को जानने वाले मात्र भगवान हैं।7।

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन छेन जिग तेन छोग
सम्बुद्ध रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་སྐད་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।8।

ཏིང་འཛིན་དམ་པ་བར་ཆད་མེད་པ་གང་། །
तिङ ज़िन दम प बर छे मेद् प गङ
विघ्न रहित जो समाधि है वह परम है

མཐའ་ཡས་བློ་ལྡན་དེ་བཞིན་གཤེགས་གསུངས་པ། །
था येस् लो देन दे शिन शेग सुङ प
अनन्त बुद्धिमान तथागत ने कहा है

ཏིང་འཛིན་དེ་བརྟན་རྡོ་རྗེ་དཔེར་བྱས་ཏེ། །
तिङ ज़िन दे तेन दोर जे पेर छेस् ते
उस दृढ समाधि को वज्र का उपमा दिया है

ཏིང་འཛིན་དེ་དང་མཚུངས་པའི་ཏིང་འཛིན་མེད། །
तिङ ज़िन दे दङ छुङ पई तिङ ज़िन मेद्
तद् समाधि सदृश दूसरा समाधि नहीं है

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
तिङ ङे ज़िन ग्यि रिन छेन जिग तेन छोग
समाधि-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་སྐད་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।9।

ཇི་སྐད་སྒོ་གཏན་དམ་ཞིང་རབ་དམ་སྟེ། །
जि तर गो तेन दम शिङ रप दम ते
जिस प्रकार सुदृढ दरवाजा पक्का बन्द किया हो

སྟོབས་ཆེན་རླུང་བཞི་དག་གིས་མི་བསྐྱོད་པ། །
तोप छेन लुङ शि दग गीस् मि क्योद् प
शक्तिशाली चतुर्विध वायु भी उसे हिला नहीं सकता।

བདེན་བཞི་མཐོང་བའི་མཁས་པ་དེ་སྐད་གནས། །
देन शि थोङ बई खेस् प दे तर नेस
चार सत्यों को जानने वाला विज्ञ भी उसी तरह स्थित होते हैं

འཇིག་རྟེན་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་འདིར་མི་གཡོ། །
जिग तेन म व नम क्यीस् दिर मि यो
जगत का कोई भी वादी उसे विचलित नहीं कर सकता

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དགེ་འདུན་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
गेन दुन रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
संघ-रत्न जो है वह जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་སྐད་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।10।

ཐམས་ཅད་ཟིལ་གནོན་ཀུན་མཁྱེན་ཐམས་ཅད་གཟིགས།།
थम चे ज़िल गनोन कुन ख्येन थम चे ज़िग
सर्व पराभव कर्ता सर्वज्ञ, सबको देखने वाले

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་སྟོབས་རྣམས་ཀུན་དང་ལྡན། །
थम चे ख्येन प तोप नम कुन दङ देन
सर्वज्ञ समस्त बलों से युक्त हैं

ཀུན་གྱི་དམ་པ་འཛིན་པ་ཀུན་དང་བྲལ། །
कुन ग्यि दम प ज़िन प कुन दङ डल
सर्वश्रेष्ठ समस्त धारणाओं से विमुक्त

བསམ་པ་ཀུན་མཁྱེན་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་གཅིག །
सम प कुन ख्येन दि नि चोम देन चिग
सभी के विचारों को जानने वाले एकमात्र भगवान ही हैं

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन छेन जिग तेन छोग
सम्बुद्ध रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।11।

སྲིད་པ་འགོག་ཅིང་མི་གཡོ་འགྱུར་བ་མེད། །
सिद् प गोग चिङ मि यो ग्युर व मेद्
भव को निरोध कर, अचल, अपरिवर्तन,

སྐྱོན་མེད་འཇིགས་པ་ཀུན་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །
क्योन मेद् जिग प कुन लेस नम पर डोल
दोष रहित, समस्त भयों से विमुक्त

ཤིན་ཏུ་འགོག་ཅིང་གྱ་ནོམ་ངེས་པར་འབྱུང་། །
शिन तु गोग चिङ ग्य नोम ङेस् पर छुङ
अत्यन्त निरोध, प्रणीत, निःसरण

ཤིན་ཏུ་དྲི་མེད་ཞི་བ་བློས་མི་འཁྲོག །
शिन तु डि मेद् शि व लोस् मि ठोग
अति निर्मल, शान्त, कोई दूसरा बुद्धि से प्रभावित नहीं कर सकता

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
दम पई छोस् क्यि रिन छेन जिग तेन छोग
सद्धर्म-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।12।

ཤིན་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་སྟོན་ཞིང་བདེ་བྱེད་ཅིང་། །
शिन तु दुग ङल तोन शिङ दे छेद् चिङ
अति दुःख को उद्घाटित कर, सुख की खोज करने वाले

བདེན་རྣམས་མཐོང་སྟེ་གང་དག་བག་ཡོད་པ། །
देन नम थोङ ते गङ दग बग योद् प
(चार) सत्य का दर्शन कर, जो अप्रमादवश

བདེན་པ་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་དོགས་མེད་པ། །
देन प रिन छेन नम ल दोग मेद् प
सत्य-रत्न में सन्देह रहित होकर

དེ་དག་སྐྱེ་བ་བརྒྱད་པ་ཕྱིས་མི་ལེན། །
दे दग क्ये व ग्ये प छीस् मि लेन
वे आठवाँ जन्म नहीं लेते

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

དམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་དམ་པ་དོན་དམ་མཁྱེན། །
दम प नम क्यीस् दम प दोन दम ख्येन
महा (पुरुषों) द्वारा परमार्थ जाना जाता है

གཞན་གྱིས་མི་འཕྲོག་དམ་པ་ཐུགས་ཆུད་ལྟར། །
शेन ग्यीस् मि ठोग दम प थुग छुद् तर
अन्यों द्वारा अप्रभावित परम का अवबोध करते हैं

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

འདུན་པ་བསྐྱེད་ནས་རྣལ་འབྱོར་ལྡན་གྱུར་ཅིང་། །
दुन प क्येद् नेस् नल छोर देन ग्युर चिङ
संकल्प कर, योग युक्त होकर

གཞན་གྱིས་མི་བཀྲི་བ་དག་ཞིང་དེར་རེག །
शेन ग्यीस् मि टि व दग शिङ देर रेग
अन्योन्य शुद्ध क्षेत्र का स्पर्श करते हैं

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छर शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དགེ་འདུན་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
गेन दुन रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
संघ-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।13।

མཆོག་དང་མཆོག་མིན་མཁྱེན་ཞིང་དོན་དམ་བརྩོན། །
छोग दङ छोग मिन ख्येन शिङ दोन दम त्सोन
श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ को जान कर परमार्थ हेतु उद्यम करते हैं

ཤིན་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་རྣམས་ཀྱི་དཔུང་གཉེན་མཆོག །
शिन तु दुग ङल नम क्यि पुङ ञेन छोग
अति दुःखियारों के श्रेष्ठ बल और मित्र (उद्धारकर्ता)

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन छेन जिग तेन छोग
सम्बुद्ध रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।14।

གཽ་ཏམ་བསྟན་ལ་རྟག་བརྩོན་རབ་གྲོལ་བ། །
गौ तम तेन ल तग त्सोन रप डोल व
गौतम के शासन का सदैव उद्यम कर, विमुक्त

འདི་ལ་དེ་རེག་གྲངས་སུ་ཕྱིན་མི་འགྱུར། །
दि ल दे रेग डङ सु छिन मि ग्युर
और यह यहाँ के (सांसारिक) नहीं रह जाते

དགེ་འདུན་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
गेन दुन रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
संघ-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।15।

བདེན་པ་མཐོང་བ་བརྗོད་པས་བརྒྱ་ལམ་ན། །
देन प थोङ व जोद् पेस् ग्य लम न
सत्य का दर्शन करने वाले, कदाचित बोलने वाले,

གལ་ཏེ་སྡིག་པ་འགའ་ཞིག་བྱས་གྱུར་ཀྱང་། །
गल ते दिग प गा शिग छेस् ग्युर क्यङ
पाप को करते नहीं, यदि कभी हो भी जाये

དེ་ནི་དེ་བཅབ་པ་ཡི་འོས་མིན་ཏེ། །
दे नि दे चप प यि ह्रोस् मिन ते
वे उसे गुप्त रखना उचित नहीं समझते

ཆོས་ཉིད་འདི་ནི་མི་གཡོ་གནས་ཕྱིར་རོ། །
छोस् ञिद् दि नि मि यो नेस छिर रो
(वे जानते हैं) धर्मधातु (सत्यता) अटल होती हैं

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དགེ་འདུན་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
गेन दुन रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
संघ-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।16।

ལྷ་དང་བཅས་པའི་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ན། །
ल्ह दङ चेस् पई जिग तेन थम चे न
देव सहित समस्त जगत में

སངས་རྒྱས་དང་ནི་ལྷག་པའམ་མཚུངས་པ་མེད། །
सङ ग्येस् दङ नि ल्हग पह़म छुङ प मेद्
बुद्ध सदृश या उनसे श्रेष्ठ (दूसरा) नहीं है

ལྷ་དང་མི་ཡི་སྟོན་པ་བླ་ན་མེད། །
ल्ह दङ मि यि तोन प ल न मेद्
देव और मनुष्यों का शास्ता अनुत्तर हैं

སྟོན་པ་དེད་དཔོན་སྨན་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག །
तोन प देद् पोन मेन प नम क्यि छोग
शास्ता, सार्थवाह और भैषज्यों में उत्तम हैं

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन छेन जिग तेन छोग
सम्बुद्ध रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों।17।

ས་གའི་ཟླ་བ་དང་པོར་ཐུབ་པ་ཡིས། །
स गई द व दङ पोर थुप प यीस्
ग्रीष्म-ऋतु के प्रथम माह में मुनि ने

ནགས་ཁྲོད་ཆོས་ཀྱི་དམ་པ་རབ་བརྙེས་ནས། །
नग ठोद् छोस् क्यि दम प रप ञेस् नेस्
वनखण्ड में श्रेष्ठ धर्म को प्राप्त किया

ཆོས་དེ་དང་ནི་ལྷག་པའམ་མཚུངས་པ་མེད། །
छोस् दे दङ नि ल्हग पह़म छुङ प मेद्
उस धर्म के सदृश या उससे अच्छा (दूसरा) नहीं है

འདི་ལ་དེ་རེག་གྲངས་སུ་ཕྱིན་མི་འགྱུར། །
दि ल दे रेग डङ सु छिन मि ग्युर
जो इसके सम्पर्क में आते हैं, वे यहाँ के (सांसारिक) नहीं रह जाते

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དམ་ཆོས་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
दम छोस् रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
सद्धर्म-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों। 18।

སྡིག་པ་རྙིང་ཟད་གསར་དུ་བྱས་མེད་ལ། །
दिग प ञिङ ज़े सर दु छेस् मेद् ल
पुराने पाप का क्षय और नये के नहीं करने से

རིམས་ནད་མེད་པས་འཇིགས་མེད་སྨྱ་ངན་བྲལ། །
रिम ने मेद् पेस् जिग मेद् न्य ङेन डल
निर्ज्वर, निर्भय, शोक रहित

རྩ་བ་འགགས་པས་སྲིད་པ་མི་སྐྱེད་པ། །
ज़ व गग पेस् सिद् प मि क्येद् प
मूल (क्लेश) के निरोध से भव नहीं होगा

བསྟན་པ་མར་མེ་བཞིན་དུ་འབར་བར་འགྱུར། །
तेन प मर मे शिन दु बर बर ग्युर
शासन-दीप सदृश उज्जवल हों

ངོ་མཚར་ཤིན་ཏུ་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་དེ། །
ङो छ़र शिन तु मे छुङ पग मेद् दे
आश्चर्यजनक अद्भुत अपरिमित यह

དགེ་འདུན་རིན་ཆེན་གང་ཞིག་འཇིག་རྟེན་མཆོག །
गेन दुन रिन छेन गङ शिग जिग तेन छोग
संघ-रत्न जगत का सर्वश्रेष्ट रत्न है

ཇི་ལྟར་ངའི་འདི་དེ་བཞིན་བདེན་མཆོག་ན། །
जि तर ङई दि दे शिन देन छोग न
जैसे मैने कहा, यदि यह परम सत्य हो

བདེན་པས་འདིར་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་ལེགས་ཤོག །
देन पेस् दिर नि शिन तु दे लेग शोग
उस सत्यता से यहाँ अति मंगलमय हों। 19।

ཅེས་བརྗོད། །

ऐसा पाठ करें।

རྫས་བརྒྱད་ཤིས་བརྗོད།
# अष्ट मंगल-द्रव्य भेंट

མངྒ་ལཾ་སྭསྟི་བྷ་ཝནྟུ།
मङ्गलं स्वस्ति भवन्तु।
मंगलं स्वस्ति भवतु।

དེང་འདིར་འཛམ་བུ་གླིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱན། འཇིག་རྟེན་ཀུན་གྱི་འདོད་དགུའི་འབྱུང་གནས།
देङ दिर ज़म बु लिङ थम चे क्यि ग्येन    जिग तेन कुन ग्यि दोद् गुइ छुङ नेस
आज यहाँ सम्पूर्ण जम्बुद्वीप के अलंकार, समस्त जगत के इच्छाओ के स्रोतोत्स,

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ལྗོན་པ་རྣམས་ཀྱི་བརྟེན་པའི་གཞི། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལྗོན་པ་བཟང་པོས་བརྒྱན་པ།
ज़ोग पई सङ ग्येस् क्यि जोन प नम क्यि तेन पई शि    छङ छुप क्यि जोन प ज़ङ पोस् ग्येन
सम्बुद्ध रूपी वृक्षों के आश्रित होने का आधार, बोधिवृक्ष- भद्र गुणों से अलंकृत,

ལྷ་མི་ཀུན་གྱི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཞིང་དང་མཆོད་སྡོང་གཅིག་པུར་གྲུབ་པའི་གནས་རྡོ་རྗེའི་གདན་ཞེས་སམ་འདོན་པ་བསྒྱུར།
प    ल्ह मि कुन ग्यि सोद् नम क्यि शिङ दङ छोद् दोङ चिग पुर डुप पई नेस दोर जेई देन
समस्त देव-मनुष्यों के एकमात्र पुण्य का क्षेत्र, सर्वश्रेष्ठ पूजा-वृक्ष वज्रासन। ऐसा पाठ परिवर्तन करें

འདི་ཉིད་དུ་རྒྱལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་རྣམས་ཀྱི་མཐུས་བཀྲ་ཤིས་
दि ञिद् दु ग्यल व ञिद् क्यीस् ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप प नम क्यि थुस् ट शीस् जोद्
यहाँ जिन बुद्ध स्वयं द्वारा (जिन) मंगल द्रव्यों को अधिष्ठित किया उसके प्रभाव से (मैं यहाँ) मंगल-पाठ

བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། གསང་བའི་བདག་པོ་ཕྱག་
पर छ ते    ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल    सङ बई दग पो छग न दोर
करता हूँ। अतीत में सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को गुह्याधिपति

ན་རྡོ་རྗེས་ཡུངས་ཀར་ཕུལ་ནས་བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལ་བརྟེན་ནས་དེང་
जेस् युङ कर फुल नेस् ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु ल तेन नेस्
वज्रपाणि ने श्वेत सरसों भेंट किया, उसे बुद्ध ने मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया उसी के बल और प्रभाव से

འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་ཡུངས་ཀར་གྱི་རྫས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु युङ कर ग्यि ज़ेस् क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
आज यहाँ विशालोत्सव में (इस मंगल-द्रव्य) श्वेत सरसों द्वारा मंगल हों।

ཡུངས་ཀར་རྡོ་རྗེའི་རིགས་ཏེ་ཐམས་ཅད་དུ། །
युङ कर दोर जेई रिग ते थम चे दु
श्वेत सरसों वज्रकुल है, यह सर्वत्र

བགེགས་རྣམས་མ་ལུས་རབ་ཏུ་འཇོམས་བྱེད་ཅིང་། །
गेग नम म लुस् रप तु जोम छेद् चिङ
अशेष विघ्नों का नाश करता है।

མཐུ་སྟོབས་ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་གྱུར་པ། །
थु तोप योन तेन फुन सुम छोग ग्युर प
बल-प्रताप, गुण की पराकाष्ठा वाला

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བགེགས་རྣམས་ཞི་བར་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ गेग नम शि वर शोग
उस मंगल-द्रव्य से सभी विघ्न शान्त हों।1।

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། བྲམ་ཟེ་ཀུཎྜ་ལིས་རྩྭ་དཱུར་ཕུལ་ནས།
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल डम ज़े कुन्द्ह लीस् त्र्व दुब फुल नेस्
अतीत में सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को ब्रहाण कुन्धाली ने धुर्वा घास को भेंट करने पर

བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་དཱུར་བའི་རྫས་
ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु दुर्वई ज़ेस्
उस मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उसी के प्रभाव से आज यहाँ इस विशालोत्सव में

ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
धुर्व-द्रव्य द्वारा मंगल हो।

དཱུར་བ་ཚེ་ནི་འཕེལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ། །
दुर्वेस् छे नि फेल बर छेद् प ते
धुर्वा आयु की वृद्धि कराता है

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཚེ་ནི་རབ་བསྒྲུབས་ནས། །
दोर जे सेम पई छे नि रप डुप नेस्
वज्रसत्त्व का आयु सिद्ध कर

ཉོན་མོངས་སྐྱེ་ཤི་རྒྱུན་ཆད་གྱུར་པ་ཡི། །
ञोन मोङ क्ये शि ग्युन छे ग्युर प यि
क्लेश (वश) जन्म-मरण की श्रृंखला उच्छेदक

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་ཚེ་ནི་འཕེལ་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् देस् क्यङ छे नि फेल ग्युर चिग
उस मंगल द्वारा हमारे आयु की भी वृद्धि हो।2।

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ལྷ་མོ་བརྟན་མས་ལི་ཁྲི་ཕུལ་ནས།
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल ल्ह मो तेन मेस लि ठि फुल नेस्
अतीत में सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को पृथ्वी-देवी ने सिन्दूर भेंट करने पर

བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་ལི་ཁྲིའི་རྫས་
ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस  देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु लि ठी ज़ेस्
**उसे मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उसके प्रभाव से आज यहाँ इस विशालोत्सव में**

ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
**सिन्दूर-द्रव्य के द्वारा मंगल हो।**

ལི་ཁྲི་དམར་པོ་དབང་གི་རང་བཞིན་ཏེ། །
लि ठि मर पो वङ गि रङ शिन ते
**रक्त सिन्दूर वशीकृत स्वभाव वाला है**

ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་དབང་དུ་འདུས་ནས་ཀྱང་། །
छोस् नम म लुस् वङ दु दुस् नेस् क्यङ
**अशेष धर्मों को वश में करके**

ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་སྲིད་རབ་ཏུ་བརྟན་གྱུར་པའི། །
छोस् क्यि ग्यल सिद् रप तु तेन ग्युर पई
**धर्मराज अति सुदृढ**

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་རྒྱལ་སྲིད་བརྟན་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् देस् क्यङ ग्यल सिद् तेन ग्युर चिग
**इसके द्वारा यहाँ भी राज्य स्थिर हों।3।**

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། གླང་པོ་ཆེ་ས་སྲུང་གིས་གི་ཝཾ་ཕུལ་ནས།
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल  लङ पो छे स सुङ गीस् गि वं फुल नेस्
**अतीत ने सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को ऐरावत (गज) का गोरचना भेंट करने पर**

བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་གི་ཝཾ་གི་
ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस  देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु गि वं गि
**उसे मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उसके प्रभाव से आज यहाँ विशालोत्सव में**

རྫས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ेस् क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
**गोरचना-द्रव्य के द्वारा मंगल हो।**

གི་ཝཾ་དུག་གསུམ་འཇོམས་པ་ནད་ཀྱི་སྨན། །
गि वं दुग सुम जोम प ने क्यि मेन
**गोरचना त्रिविष नाशक रोग का औषधि है**

སྨན་མཆོག་ཆོས་ཉིད་རབ་ཏུ་རྟོགས་གྱུར་ནས། །
मेन छोग छोस् ञिद् रप तु तोग ग्युर नेस्
**उत्तम औषधि धर्मधातु का अधिगम कर**

ཉོན་མོངས་ཟུག་རྔུ་མེད་པར་གྱུར་པ་ཡི། །
ञोन मोङ ज़ुग ङु मेद् पर ग्युर प यि
**क्लेश पीड़ा मिटा देने वाली**

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་ཞི་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् देस् क्यङ दुग ङल शि ग्युर चिग
**इसके द्वारा (यहाँ भी) दुःख शान्त हो।4।**

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། ཁྱིམ་བདག་བཟང་སྐྱོང་གིས་ཞོ་ཕུལ་ནས།
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल    ख्यिम दग ज़ङ क्योङ गीस् शो फुल नेस्
**अतीत में संबुद्ध शाक्यमुनि को गृहाधिपति भद्रपाल ने दही भेंट करने पर**

བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་ཡང་ཞོའི་
ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस    देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु यङ शोइ
**उसे मंगलकारी द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उस प्रभाव से आज यहाँ विशालोत्सव में**

རྫས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ेस् क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
**दही-द्रव्य द्वारा मंगल हो।**

ཞོ་ནི་ཀུན་གྱི་སྙིང་པོར་གྱུར་པ་སྟེ། །
शो नि कुन ग्यि ञिङ पोर ग्युर प ते
**दही सबका सार है**

སྙིང་པོ་རྣམ་དག་ཡེ་ཤེས་མཆོག་རྟོགས་ནས། །
ञिङ पो नम दग ये शेस् छोग तोग नेस्
**विशुद्ध सार उत्तम ज्ञान का अधिगम कर**

ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་དབྱིངས་སུ་གྱུར་པ་ཡི། །
योन तेन कुन ग्यि यिङ सु ग्युर प यि
**समस्त गुण आकाशवती**

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་དུག་གསུམ་ཞི་བར་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ दुग सुम शि वर शोग
**उसके द्वारा यहाँ भी त्रिविष शान्त हो।5।**

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། གཟུགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་འོད་འཆང་མས་མེ་ལོང་
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल    ज़ुग क्यि ल्ह मो ह़ोद् छङ मेस मे लोङ
**अतीत में सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को रूप की देवी प्रभाधारी ने आदर्श भेंट करने पर**

ཕུལ་ནས་བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་
फुल नेस् ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस    देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु
**उसे मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उसके बल-प्रभाव से आज यहाँ इस विशालोत्सव में**

ཡང་མེ་ལོང་གི་རྫས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
यङ मे लोङ गि ज़ेस् क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
**आदर्श-द्रव्य द्वारा मंगल हो।**

མེ་ལོང་ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ཡིས། །
मे लोङ ये शेस् ग्य छ़ो छेन पो यीस्
**आदर्श-ज्ञान महासागर द्वारा**

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་མཆོག་ཏུ་དག་གྱུར་ཏེ། །
ये शेस् ग्य छ़ो छोग तु दग ग्युर ते
**ज्ञानसागर श्रेष्ठ में विशुद्ध होकर**

རྣམ་དག་ཆོས་ལ་ཐོགས་མེད་ལོངས་སྤྱོད་པའི། །
नम दग छोस् ल थोग मेद् लोङ चोद् पई
विशुद्ध धर्मों का अप्रतिघ उपभोगी

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་སྒྲིབ་པ་དག་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् देस् क्यङ डिप प दग ग्युर चिग
उसके द्वारा यहाँ भी आवरण शोधित हो।6।

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། ཤིང་གི་ལྷ་མོས་ཤིང་ཐོག་བིལ་བ་
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल शिङ गि ल्ह मोस् शिङ थोग बिल व
अतीत में सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को वृक्ष-देवी ने बिल्व फल भेंट करने पर

ཕུལ་ནས། བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་
फुल नेस् ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस देङ दिर नेस छेन दि ञिद् दु
उसे मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उसके प्रभाव से आज यहाँ विशालोत्सव में

བིལ་བའི་རྫས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
बिल बई ज़ेस् क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
बिल्व-फल द्वारा मंगल हो।

བིལ་བ་རྒྱུ་རྐྱེན་འབྲས་བུར་བཅས་པའི་ཆོས། །
बिल व ग्यु क्येन डेस् बुर चेस् पई छोस्
बिल्व-फल हेतु-फल सहित धर्म है

འཇིག་རྟེན་འཇིག་རྟེན་འདས་པའི་སྤྱོད་པ་ཀུན། །
जिग तेन जिग तेन देस् पई चोद् प कुन
समस्त लोक और लोकोत्तर चर्यायें

བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་ཡི། །
छङ छुप ञिङ पो छोग तु ग्युर प यि
श्रेष्ठ बोधिगर्भ होकर

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་དོན་ཀུན་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् देस् क्यङ दोन कुन डुप ग्युर चिग
उस मंगल द्वारा सर्वार्थ सिद्ध हों।7।

སྔོན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ། ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་གྱིས་དུང་དཀར་པོ་
ङोन यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् शाक्य थुप प ल ल्हई वङ पो ग्य छिन ग्यीस् दुङ कर पो
अतीत में सम्यग् सम्बुद्ध शाक्यमुनि को देवपति इन्द्र ने श्वेत दक्षिणावर्त शंख भेंट करने पर

གཡས་སུ་འཁྱིལ་བ་ཕུལ་ནས། བཀྲ་ཤིས་པའི་རྫས་སུ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་མཛད་པའི་མཐུ་ལས། དེང་འདིར་
येस् सु ख्यिल व फुल नेस् ट शीस् पई ज़ेस् सु छिन ग्यीस् लप पर ज़े पई थु लेस देङ दिर
उसे मंगल-द्रव्य में अधिष्ठित किया था, उसके प्रभाव से आज यहाँ विशालोत्सव में

གནས་ཆེན་འདི་ཉིད་དུ་དུང་དཀར་གྱི་རྫས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་པར་གྱུར་ཅིག །
नेस छेन दि ञिद् दु दुङ कर ग्यि ज़ेस् क्यीस् ट शीस् पर ग्युर चिग
श्वेत शंख-द्रव्य द्वारा मंगल हो।

དུང་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་རྣམས་སྒྲོགས་པའི་ཚུལ། །
दुङ नि छ्योस् क्यि ड नम डोग पई छ़ुल
**शंख धर्म-नाद को ध्वनित कर**

ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་ཡོངས་སུ་སྟོན་པ་ཡི། །
छ्योस् नम म लुस् योङ सु तोन प यि
**अशेष धर्मों के प्रदर्शक**

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་ཉིད་དུ་དག་གྱུར་ཏེ། །
ये शेस् ग्य छ़ो ञिद् दु दग ग्युर ते
**ज्ञानसागर में शोधित कर**

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་ཚིག་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ छ़िग वङ थोप पर शोग
**उस मंगल के द्वारा शब्दाभिषेक प्राप्त हो।8।**

## སྣ་བདུན་རིན་ཆེན་བཟོད།

# सात राजशाही वस्तुयें।

འཁོར་ལོ་ལག་ཏུ་ཐོགས་ལ།
चक्र हाथ में ग्रहण कर-

ལྷ་རྫས་ལས་གྲུབ་ལྟེ་བ་ཤིན་ཏུ་ཟླུམ། །
ल्ह ज़ेस् लेस छेस् ते व शिन तु दुम
दिव्य द्रव्य द्वारा निर्मित केन्द्र अति वर्तुल

སྟོང་ཕྲག་རྩིབས་ལྡན་ཞིང་སྣ་ཚུལ་རབ་མཉམ་བཟང་། །
ज़्रिप तोङ देन शिङ मु ख्युद् रप ञम ज़ङ
सहस्र अरे युक्त अति सुन्दर सम नेमी

སྡང་བའི་དགྲ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་གྱུར་པའི། །
दङ बई ड लेस नम पर ग्यल ग्युर पई
विद्वेषी शत्रुओं से विजय दिलाने वाली

འཁོར་ལོ་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
खोर लो रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
चक्ररत्न आज यहाँ मंगल बरसायें।1।

བདུད་ཐམས་ཅད་ལས་རྒྱལ་བའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ནམ་མཁའི་མཐས་གཏུགས་པར་བསྐོར་ནུས་པའི་དབང་དང་ལྡན་
दुद् थम चे लेस ग्यल वई छोस् क्यि खोर लो नम खई थेस् तुग पर कोर नुस् पई वङ दङ देन पर
समस्त मारों पर विजय प्राप्त कर आकाश पर्यन्त धर्मचक्र प्रवर्त्तन करने की

པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युर चिग
शक्ति से सम्पन्न हों।

ནོར་བུ་རིན་ཆེན་ཐོགས་ཏེ།
मणिरत्न हाथ में लेकर-

རིན་ཆེན་ངོ་བོ་ལྷ་རྫས་བཻཌཱུརྱ། །
रिन छेन ङो बो ल्ह ज़ेस् बैदूर्य
रत्न स्वभाव दिव्य द्रव्य वैडुर्य

ཀུན་ཏུ་དཔག་ཚད་ཅམ་དུ་སྣང་བྱེད་ཅིང་། །
कुन तु पग छे ज़्रम दु नङ छेद् चिङ
योजनों तक को प्रकाशित करने वाली

དྲི་མེད་ཉིན་མོ་ཇི་བཞིན་མཚན་དེ་བཞིན། །
डि मेद् ञिन मो जि शिन छेन दे शिन
निर्मल दिन में जैसा, रात में भी वैसा

ནོར་བུ་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
नोर बु रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
मणिरत्न आज यहाँ मंगल बरसायें।2।

ཚེ་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོད་དང་ལྡན་ཞིང་ལྷ་དང་བཅས་པའི་འཇིག་རྟེན་པ་ཐམས་ཅད་རང་རང་གི་གཟི་བརྗིད་
छे पग तु मेद् पई ह़ोद् दङ देन शिङ ल्ह दङ चेस् पई जिग तेन प थम चे रङ रङ गि ज़ि जिद्
अमितायु के प्रभा से युक्त, देव सहित समस्त लोक अपने-अपने ओज से अभिभूत करने की क्षमता वाले

ཀྱི་ཟིལ་གྱིས་གནོན་པའི་དབང་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
क्यि ज़िल ग्यीस् गनोन पई वङ दङ देन पर ग्युर चिग
अधिकारी बनें।

བཙུན་མོ་རིན་ཆེན་ཐོགས་ཏེ།
रानी-रत्न हाथ में लेकर-

གཟུགས་མཛེས་ལྟ་ན་སྡུག་ཅིང་ཚུལ་བཟང་བ། །
ज़ुग ज़ेस् त न दुग चिङ छुल ज़ङ व
रूपवती देखने में मनोहर भद्रचारिणी

པགས་པའི་མདོག་ལེགས་འཇམ་ཞིང་དྲི་མཆོག་ལྡན། །
पग पई दोग लेग जम शिङ डि छोग देन
सुवर्ण-छवि मृदु सुगन्धित

ཡིད་འོང་འདོད་དགུའི་རེག་བྱ་དང་ལྡན་པ། །
यिद् ह़ोङ दोद् गुइ रेग छ दङ देन प
रमणीय, सर्वकामगुणी स्पर्शशील

བཙུན་མོ་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
त्सुन मो रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
रानीरत्न, आज यहाँ मंगल बरसायें।3।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞི་བའི་ཚུལ་གྱིས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་
सेम चेन थम चे तिङ ङे ज़िन शि बई छुल ग्यीस् जिग तेन लेस देस् पई दग दङ शेन ग्यि दोन
समस्त सत्त्व शान्तमयी समाधि से अलौकिक स्व-परार्थ सुख सम्पन्न करने में अभिलाषा अनुरूप योग करने

བདེ་བས་བསྒྲུབ་པ་ལ་ཡིད་བཞིན་དུ་འགྱུར་བའི་དབང་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
दे वे डुप प ल यिद् शिन दु ग्योर बई वङ दङ देन पर ग्युर चिग
में, अधिकारी बनें।

བློན་པོ་རིན་ཆེན་ཐོགས་ཏེ།
मन्त्रिरत्न हाथ में लेकर-

གང་ཡང་རྒྱལ་བའི་མུ་ཏིག་མདངས་ལྡན་པ། །
गङ यङ ग्यल वई मु तिग दङ देन प
अजय मोती सदृश जिसका रूप-रंग है

གསེར་སོགས་མང་པོ་ཐུབ་ལ་ཕུལ་བ་ལྟར། །
सेर सोग मङ पो थुप ल फुल व तर
सुवर्ण आदि प्रचुर मात्रा में मुनि को भेंट किये सदृश

བཟོད་ལྡན་མཚུངས་པའི་ཁྱིམ་བདག་ནོར་ལྡན་ཏེ། །
ज़ोद् देन छुङ पई ख्यिम दग नोर देन ते
क्षान्तिवान् सदृश सम्पन्न गृहपति

བློན་པོ་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
लोन पो रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
मन्त्रिरत्न आज यहाँ मंगल बरसायें।

ལྷའི་མིག་རྣམ་པར་དག་པ་ཐོབ་སྟེ་འཕགས་པའི་ནོར་བདུན་དང་ལྡན་ཞིང་རང་དང་གཞན་གྱི་དོན། དགོངས་
ल्हई मिग नम पर दग प थोप ते फग पई नोर दुन दङ देन शिङ रङ दङ शेन ग्यि दोन   गोङ प
विशुद्ध दिव्य-चक्षु प्राप्त कर आर्य सप्त सम्पत्ति से युक्त होकर स्व-परार्थ, अशेष आशय पारंगत होकर समस्त

པ་མ་ལུས་པ་ཐམས་ཅད་མཐར་ཕྱིན་ནས་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ལ་ཐོགས་པ་མེད་པའི་དབང་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
म लुस् प थम चे थर छिन नेस् शेस् छ थम चे ल थोग प मेद् पई वङ दङ देन पर ग्युर चिग
ज्ञेयों में अप्रतिघ प्रवेश का अधिकारी बनें।

གླང་པོ་རིན་ཆེན་ཐོགས་ཏེ།
गजरत्न हाथ में लेकर-

ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ལེགས་སྐྱེས་ས་ལ་གནས། །
येन लग थम चे लेग क्येस् स ल नि
सभी अंग सुडोल तथा भूमि पर

རབ་གནས་གངས་ཅན་རི་འདྲ་གླང་པོ་ཆེ། །
रप नेस गङ चेन रि ड लङ पो छे
सुप्रतिष्ठित, गिरि सदृश महाश्वेत गज

རྒྱལ་པོ་ལ་འོས་མཁའ་ལ་རབ་འགྲོ་བའི། །
ग्यल पो ल ह़ोस् खा ल रप डो बई
राजा के लिये उचित, जो आकाश में भी गति करता है

གླང་པོ་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
लङ पो रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
गजरत्न आज यहाँ मंगल बरसायें।5।

སྟོབས་བཅུ་དང་ལྡན་ཞིང་བདུད་བཞིའི་སྟོབས་ཚར་བཅད་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་འཇུག་ནུས་
तोप चु दङ देन शिङ दुद् शी तोप छ़र चे नेस् सेम चेन थम चे थेग प छेन पो ल जुग नुस्
दश बल से युक्त चारों मारों के बल को विध्वंस कर समस्त सत्त्वों को महायान में प्रविष्ट कराने की क्षमतावान्

པའི་དབང་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
पई वङ दङ देन पर ग्युर चिग
अधिकारी बनें।

རྟ་མཆོག་རིན་ཆེན་ཐོགས་ཏེ།
अश्वरत्न हाथ में लेकर-

ཐོ་རངས་དུས་སུ་ཕྱོགས་རྣམས་མ་ལུས་པའི། །
थो रङ दुस् सु छोग नम म लुस् पई
ऊषाकाल में अशेष दिशाओं के

ས་རྣམས་བསྐོར་ཏེ་སླར་ཡང་ལྡོག་གྱུར་པ། །
स नम कोर ते लर यङ दोग ग्युर प
भूमि का परिक्रमा कर पुनः वापस वहीं पहुँचने वाला

རྨ་བྱའི་མགྲིན་པའི་སྤུ་ལྟར་ཡིད་འོང་བའི། །
म छई डिन पई पु तर यिद् ह़ोङ बई
मयूर के कण्ठ के बाल सदृश मनोहर

རྟ་མཆོག་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
त छोग रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
श्रेष्ठ अश्वरत्न आज यहाँ मंगल बरसायें।6।

སོ་སོར་ཡང་དག་པར་རིག་པ་བཞིས་འགྲོ་བ་རྣམས་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་སུ་ཐོགས་པ་མེད་
सो सोर यङ दग पर रिग प शीस् डो व नम मि नेस पई न्य ङेन लेस देस् पई यिङ सु थोग प
चार वैशारद्य द्वारा जगत को अप्रतिष्ठित निर्वाणधातु में अप्रतिघ पहुँचाने की क्षमतावान्

པར་བསྐྱལ་ནུས་པའི་དབང་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག ། དམག་དཔོན་རིན་ཆེན་ཐོགས་ཏེ།
मेद् पर क्यल नुस् पई वङ दङ देन पर ग्युर चिग
अधिकारी बनें। सेनापतिरत्न हाथ में लेकर-

འགྲོ་དང་ལྡོག་དང་ཀུན་ནས་འོང་གྱུར་པ། །
डो दङ दोग दङ कुन नेस् ह़ोङ ग्युर प
प्रवृत्त-निवृत्त और तैयारी के साथ समीप आ रहा हो

མ་ལུས་བདུད་དཔུང་འཇོམས་པར་བྱེད་པ་ཡི། །
म लुस् दुद् पुङ जोम पर छेद् प यि
अशेष मार के समूह को नष्ट करने वाले

དཔལ་ལྡན་འཁོར་པའི་དཔུང་ཚོགས་དང་བཅས་པ། །
पल देन छोर पई पुङ छ़ोग दङ चेस् प
श्रीमत सभी साज-सामानों और सैनिकों से युक्त

དམག་དཔོན་རིན་ཆེན་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
मग पोन रिन छेन देङ दिर ट शीस् शोग
सेनापतिरत्न आज यहाँ मंगल बरसायें।7।

ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་དགོངས་པ་མཐར་ཕྱིན་ནས། འཇིག་ཚོགས་ལ་ལྟ་བའི་རི་བོ་མཐོན་པོ་ཉི་
थप दङ शेस् रप ञीस् सु मेद् पई गोङ प थर छिन नेस्   जिग छ़ोग ल त बई रि बो थोन पो ञि
प्रज्ञोपाय अद्वय आशय में पारंगत होकर आत्मदृष्टि के बीस पर्वत चोटियों को नष्ट कर ज्ञान-लक्ष्मी का

ཤུ་འཇོམས་ཤིང་ཡེ་ཤེས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་དབང་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
शु जोम शिङ ये शेस् फुन सुम छ़ोग पई वङ दङ देन पर ग्युर चिग
अधिकारी बनें।

## རྟགས་བརྒྱད་ཤིས་བརྗོད།

# आठ मंगल-लक्षण भेंट

འོད་འབར་རིན་ཆེན་ཏོག་གི་ཁྱོན་ཡངས་ཞིང་། །
ह़ोद् बर रिन छेन तोग गि ख्योन यङ शिङ
विशाल प्रदीप्त रत्न-कूट

ཁོར་ཡུག་ནོར་བུའི་དྲ་བས་རྣམ་པར་མཛེས། །
खोर युग नोर बुइ ड वे नम पर ज़ेस्
चारों तरफ मणि, मणिजाल से सुशोभित

གསེར་བཟང་མཆོག་གི་ཡུ་བས་བརྟེན་པ་ཅན། །
सेर ज़ङ छोग गि यु वे तेन प चेन
परिष्कृत सुवर्ण निर्मित बेंट पर आश्रित

རིན་ཆེན་གདུགས་མཛེས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
रिन छेन दुग ज़ेस् देङ दिर ट शीस् शोग
रत्न निर्मित सुन्दर छाता आज यहाँ मंगल बरसायें।1।

དྲི་མེད་རབ་གསལ་མངོན་པར་འཁྱུད་པ་ཅན། །
डि मेद् रप सल ङोन पर ख्युद् प चेन
निर्मल स्पष्ट आलिंगित (मत्स्य द्वय)

རྫུ་འཕྲུལ་དང་བཅས་ཆུ་གཏེར་རབ་བསྐོར་ཞིང་། །
ज़ु ठुल दङ चेस् छु तेर रप कोर शिङ
ऋद्धि से युक्त जलाशय में चंक्रमन करते हुए

དགོས་འདོད་ཀུན་སྩོལ་དེ་དང་གནས་གཅིག་པའི། །
गोस् दोद् कुन ज़ोल दे दङ नेस चिग पई
सभी अभीष्टों को देने वाली से अभिन्नस्थ

བཀྲ་ཤིས་ཉ་ཡིས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् ञ यीस् देङ दिर ट शीस् शोग
मंगल मत्स्य आज यहाँ मंगल बरसायें।2।

རིན་ཆེན་བཟང་ལས་མངོན་པར་གྲུབ་པའི་ཕུལ། །
रिन छेन ज़ङ लेस ङोन पर डुप पई फुल
उत्कृष्ट रत्नों से निर्मित आश्चर्यजनक

འདོད་དགུ་མ་ལུས་འབྱུང་བའི་རིན་ཆེན་གཏེར། །
दोद् गु म लुस् छुङ बई रिन छेन तेर
सभी इच्छाओं की पूर्ति का उत्स अथवा रत्ननिधि

ལྷ་རྫས་གོས་ཀྱིས་མཛེས་པར་བརྒྱན་པ་ཡི། །
ल्ह ज़ेस् गोस् क्यीस् ज़ेस् पर ग्येन प यि
दिव्य वस्त्र से अच्छी तरह अलंकृत

བུམ་བཟང་མཆོག་གིས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
बुम ज़ङ छोग गीस् देङ दिर ट शीस् शोग
उत्तम भद्रकलश आज यहाँ मंगल बरसायें।3।

དཔག་བསམ་ཤིང་དང་སྐྱེད་ཚལ་བཟང་རྣམས་ལས། །
पग सम शिङ दङ क्येद् छ़ल ज़ङ नम लेस
कल्पवृक्ष एवं भद्र उद्यान में

མངོན་པར་བྱུང་བའི་པདྨོ་གསར་པ་རྣམས། །
ङोन पर छुङ बई पेमाो सर प नम
प्रादूर्भूत नव पद्म-पुष्प

ཡིད་འཕྲོག་དྲི་དང་ཟེའུ་འབྲུ་འདབ་འཕྲེང་ལྡན། །
यिद् ठोग डि दङ ज़ेहु डु दप ठेङ देन
मनोहर सुगन्धित पराग और पंखिडियों से युक्त

པདྨོ་མཆོག་གིས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
पेमाो छोग गीस् देङ दिर ट शीस् शोग
उत्तम पद्म आज यहाँ मंगल को बरसायें।4।

རབ་མཛེས་གཡས་སུ་ལེགས་པར་འཁྱིལ་བ་ཡི། །
रप ज़ेस् येस् सु लेग पर छ्युङ व यि
अति सुन्दर दक्षिणावर्त कुशल से उद्भूत

གངས་རི་དང་འདྲ་མ་ལུས་ཕྱོགས་རྣམས་སུ། །
गङ रि दङ ड म लुस् छोग नम सु
हिमालय पर्वत के सदृश अशेष दिशाओं में

ཡིད་འཕྲོག་སྒྲ་སྒྲོགས་རྒྱལ་བ་མཉེས་བྱེད་པའི། །
यिद् ठोग ड डोग ग्यल व ञेस् छेद् पई
मनोहर ध्वनि से जिनों को प्रसन्न करने वाली

དུང་མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
दुङ छोग नम क्यीस् देङ दिर ट शीस् शोग
श्रेष्ठ शंख आज यहाँ मंगल बरसायें।5।

རབ་མཛེས་གཟུགས་མཆོག་ཡིད་ཀྱིས་བྲིས་པ་བཞིན། །
रप ज़ेस् ज़ुग छोग यिद् क्यीस् डीस् प शिन
अति सुन्दर उत्कृष्ट रूप, मन में चित्रित किये सदृश

རྣམ་པར་རབ་བཀྲ་ཐུགས་མཚན་འདོད་དགུ་སྩོལ། །
नम पर रप ट थुग छ़ेन दोद् गु ज़ोल
विचित्र द्युतिमान् चित्त का प्रतीक, इच्छाओं को देने वाली

ལྷ་ཡི་གཉེན་གྱུར་རྒྱན་རྣམས་ཀུན་གྱིས་མཛེས། །
ल्ह यि ञेन ग्युर ग्येन नम कुन ग्यीस् ज़ेस्
देव बन्धु सभी अलंकारों से सुशोभित

དཔལ་གྱི་བེའུས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
पल ग्यि बेहुस् देङ दिर ट शीस् शोग
श्रीवत्स आज यहाँ मंगल बरसायें।6।

ཕྱོགས་ལས་རྣམ་རྒྱལ་རིན་ཆེན་རྒྱལ་མཚན་བཟང་། །
छोग लेस नम ग्यल रिन छेन ग्यल छ़ेन ज़ङ
दिग्-विजय रत्न-ध्वज-वज्र

སྣ་ཚོགས་དར་དང་ནོར་བུའི་དྲྭ་བས་སྤྲས། །
न छ़ोग दर दङ नोर बुइ ड◌ वे टेस्
विविध वस्त्र और मणियों के जाल से विभूषित

དགོས་འདོད་ཀུན་སྩོལ་རིན་ཆེན་ཏོག་གིས་མཛེས། །
गोस् दोद् कुन ज़ोल रिन छेन तोग गीस् ज़ेस्
समस्त कामनाओं को देने वाली रत्नकूट से सुशोभित

རྒྱལ་མཚན་མཆོག་གིས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ग्यल छ़ेन छोग गीस् देङ दिर ट शीस् शोग
उत्तम ध्वज आज यहाँ मंगल बरसायें।7।

གསེར་ལས་ལེགས་གྲུབ་ལྟེ་བ་ཤིན་ཏུ་ཟླུམ། །
सेर लेस लेग छ्रुस् ते व शिन तु दुम
सुवर्ण से सुनिर्मित, केन्द्र अत्यन्त वर्तुल

རྩིབས་སྟོང་ལྡན་ཞིང་མུ་ཁྱུད་མ་ཉམས་མཛེས། །
ज़िप तोङ देन शिङ मु ख्युद् म ञम ज़ेस्
सहस्र अरों से युक्त, बिना टूटे नेमी वाला

དང་པོའི་ས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་གྱུར་པའི། །
दङ पोइ स लेस नम पर ग्यल ग्युर पई
प्रथम भूमि से उत्तरोत्तर विजयी दिलाने वाली

རིན་ཆེན་འཁོར་ལོས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །ཅེས་སོ།།
रिन छेन खोर लोस् देङ दिर ट शीस् शोग
रत्नचक्र आज यहाँ मंगल को बरसायें।8। इति।

## མར་པའི་བཀྲ་ཤིས།

# मरपा के मुख से कहे मंगल-वचन

མར་པའི་ཞལ་གསུང་བཀྲ་ཤིས། དེ་ནས་ལྷོ་བྲག་ལུང་པའི་མི་མང་པོ་བསགས་ཏེ། སློབ་ཀྱི་ཆེ་འདོན། གཟིམས་ཁང་གི་རབ་གནས་སྟོན་མོ་བཟང་པོ་དང་བཅས་པ་མཛད་པའི་སྟོན་གྲལ་དུ། བླ་མ་མར་པས་བཀྲ་ཤིས་མངའ་གསོལ་གྱི་མགུར་འདི་གསུངས་སོ། །

उसके पश्चात् लोडग् इलाके के बहुत से लोग एकत्रित हुये। शिष्यों की महान्ता का बखान करते हुये, शयन-कक्ष के भद्र प्रतिष्ठानोत्सव के अवसर पर समूह में गुरु मरपा ने इस मंगल-दोहा को कहा-

བླ་མ་བཀའ་དྲིན་ཅན་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། །
ल म का डिन चेन ल सोल व देप
मैं गुरु कृपालुओं से प्रार्थना करता हूँ

ང་ཡི་བརྒྱུད་པ་རིན་ཆེན་འདི་ཉིད་ལ། །
ङ यि ग्युद् प रिन छेन दि ञिद् ल
मेरी इस रत्न (सदृश) परम्परा में

ཉེས་ལྟུང་མེད་པའི་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
ञेस् तुङ मेद् पई ट शीस् योद्
दोष, आपत्ति विहीन मंगल है

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।1।

གདམས་ངག་ཟབ་མོའི་ཉེ་ལམ་ལ། །
दम ङग ज़प मोइ ञे लम ल
मेरे गम्भीर अववाद युक्त निकट मार्ग में

ནོར་འཁྲུལ་མེད་པའི་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
नोर ठुल मेद् पई ट शीस् योद्
अशुद्धि और निर्भ्रान्ति का मंगल है

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।2।

ང་རང་མར་པ་ལོ་ཙཱ་ལ། །
ङ रङ मर प लो त्सा ल
मरपा लोकचक्षु मेरे में

ཟབ་མོ་གནད་ཀྱི་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
ज़प मो गने क्यि ट शीस् योद्
गम्भीर मर्म का मंगल है

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।3।

བླ་མ་ཡི་དམ་མཁའ་འགྲོ་ལ། །
ल म यि दम खा डो ल
गुरु, इष्टदेव डाकिनियों में

བྱིན་རླབས་དངོས་གྲུབ་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
छिन लप ङोस् डुप ट शीस् योद्
आशीर्वाद और सिद्धी का मंगल है

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।4।

དད་པ་དམ་ཚིག་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
दे प दम छ़िग ट शीस् योद्
श्रद्धा और संवर-पालन का मंगल है

ཡོན་བདག་ཡུལ་མི་ཉེ་རིང་ལ། །
योन दग युल मि ञे रिङ ल
यजपति, क्षेत्र के निकट और दूर के सगे सम्बन्धी

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।6।

འགྲོ་དོན་བྱང་ཆུབ་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
डो दोन छङ छुप ट शीस् योद्
जगत-हित बोधिचित्त का मंगल है

སྣང་ཞིང་སྲིད་པའི་ལྷ་འདྲེ་ལ། །
नङ शिङ सिद् पई ल्ह डे ल
आभासित भव देव और दानवों में

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।8।

བདེ་སྐྱིད་སྨོན་ལམ་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
दे क्यिद् मोन लम ट शीस् योद्
आनन्द सुख-चैन का मंगल प्रणिधान है

བུ་ཆེན་སློབ་མའི་འཁོར་ཚོགས་ལ། །
बु छेन लोप मई खोर छ़ोग ल
महापुत्र और शिष्य परिवार समूह में

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।5।

མཐུན་རྐྱེན་ཚོགས་གསོག་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
थुन क्येन छ़ोग सोग ट शीस् योद्
अनुकूल संभार संचय का मंगल है

ལས་དང་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ལ། །
लेस दङ छ व थम चे ल
समस्त कर्म और कृत्यों में

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।7।

ཆད་མདོ་བཙན་པའི་བཀྲ་ཤིས་ཡོད། །
छे दो च़ेन पई ट शीस् योद्
कठोर आज्ञा पालन का मंगल है

འདིར་ཚོགས་ཁྲོམ་གྱི་ལྷ་མི་ལ། །
दिर छ़ोग ठोम ग्यि ल्ह मि ल
यहाँ उत्सव में एकत्रित देव और मनुष्यों के लिये

བཀྲ་ཤིས་དེས་ཀྱང་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །ཅེས་གསུངས་སོ། །
ट शीस् देस् क्यङ ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो।19। ऐसा कहा।

# སྒར་ཆེན་བཀྲ་ཤིས།
# विशाल मेलाप-स्थल मंगलाचरण

བཀྲ་ཤིས་ཀྱི་དང་པོ་བཀྲ་ཤིས་པ། །
ट शीस् क्यि दङ पो ट शीस् प
मंगलों में प्रथम मंगल

སངས་རྒྱས་འཇིག་རྟེན་དུ་བྱོན་པ་ཡིན། །
सङ ग्येस् जिग तेन दु छोन प यिन
बुद्ध का जगत में आगमन है

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से मंगल व्याप्त हो

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख अमन चैन की लक्ष्मी बरसें।1।

བཀྲ་ཤིས་ཀྱི་གཉིས་པ་བཀྲ་ཤིས་པ། །
ट शीस् क्यि ञीस् प ट शीस् प
मंगलों में द्वितीय मंगल

དམ་ཆོས་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ཡིན། །
दम छोस् खोर लो कोर व यिन
सद्धर्म का चक्र प्रवर्त्तन है

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख अमन चैन की लक्ष्मी बरसें।2।

བཀྲ་ཤིས་ཀྱི་གསུམ་པ་བཀྲ་ཤིས་པ། །
ट शीस् क्यि सुम प ट शीस् प
मंगलों में तृतीय मंगल

ཞིང་མཆོག་དགེ་འདུན་ཚོགས་རྣམས་ཡིན། །
शिङ छोग गेन दुन छ़ोग नम यिन
उत्तम क्षेत्र भिक्षुसंघ है

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख अमन चैन की लक्ष्मी बरसें।3।

བཀྲ་ཤིས་ཀུན་གྱི་བཀྲ་ཤིས་པ། །
ट शीस् कुन ग्यि ट शीस् प
समस्त मंगलों में मंगल

བཀའ་བརྒྱུད་ངོ་མཚར་ ཅན་རྣམས་ཡིན། །
का ग्युद् ङो छ़र चेन नम यिन
कग्र्युद् का यह अद्भुत परम्परा है

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो

གཟུགས་མེད་གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ལྷ། །
ज़ुग मेद् ज़ुग क्यि खम क्यि ल्ह
अरूप और रूपधातु के देव

དེ་བཞིན་བདག་ཅག་བདེ་སྐྱིད་ཤོག །
दे शिन दग चग दे क्यिद् शोग
तथैव हम लोग भी सुखी और आनन्दित हों

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख अमन चैन की लक्ष्मी बरसें।5।

འདོད་ཡོན་སྣ་ཚོགས་རྣམས་ཀྱིས་རྩེ། །
दोद् योन न छ़ोग नम क्यीस् त्से
विविध कामगुणों के क्रीड़ा से

དེ་བཞིན་བདག་ཅག་བདེ་སྐྱིད་ཤོག །
दे शिन दग चग दे क्यिद् शोग
वैसे ही हम सब भी सुखी एवं आनन्दित हों

རྒྱལ་སྲིད་བདུན་ལ་སོགས་པ་ཡིས། །
ग्यल सिद् दुन ल सोग प यीस्
सप्त राजशाही रत्न आदि से

རྟག་ཏུ་བདེ་ཞིང་སྐྱིད་པར་སྤྱོད། །
तग तु दे शिङ क्यिद् पर चोद्
सदैव आनन्द और सुखपूर्वक उपभोग करते हैं

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख अमन चैन की लक्ष्मी बरसें।4।

བསམ་གཏན་ནང་གི་དགའ་བདེར་ལྡན། །
सम तेन नङ गि गा देर देन
ध्यान के अभयन्तर प्रीति-सुख युक्त हों

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हो

འདོད་ཁམས་འདོད་ལྷ་རིགས་དྲུག་རྣམས། །
दोद् खम दोद् ल्ह रिग डुग नम
कामधातु के षड्-कुल कामदेव

རྟག་ཏུ་དགའ་དང་བདེ་བར་ལྡན། །
तग तु गा दङ दे वर देन
सदैव आनन्दित एवं सुखी होते हैं

མི་མཆོག་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་རྒྱལ་ནི། །
मि छोग खोर लोस् ग्युर ग्यल नि
नरश्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा

གླིང་བཞིར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ། །
लिङ शिर फुन सुम छ़ोग प ल
चारों द्वीपों के लक्ष्मी को

དེ་བཞིན་བདག་ཅག་བདེ་སྐྱིད་ཤོག །
दे शिन दग चग दे क्यिद् शोग
वैसे ही हम सब भी आनन्दित एवं सुखी हों

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख अमन चैन की लक्ष्मी बरसें।7।

སྐར་ཆེན་གནས་མཆོག་འཛམ་གླིང་རྒྱན་འདིར་ནི། །
गर छेन ज़म लिङ ग्येन दिर नि
विपुल मेलाप-स्थल जम्बुद्वीप का आभूषण है यहाँ

བསྟན་པ་ཕྱོགས་བཅུར་ཁྱབ་པར་ཤོག །
तेन प छोग चुर ख्यप पर शोग
शासन दशों दिशाओं में व्याप्त हों

མང་པོས་བཀུར་བ་ཤཱཀྱའི་རྒྱལ་པོའི་རིགས། །
मङ पोस् कुर व शाक्यई ग्यल पोइ रिग
महासामन्तों शाक्यराजकुल

མེས་དབོན་རྣམ་གསུམ་སོགས་ཀྱིས་རྒྱལ་བའི་བསྟན། །
मेस् वोन नम सुम सोग क्यीस् ग्यल वई तेन
त्रिविध पितामाह आदि ने जिन शासन को

བདེན་པ་ཆེན་པོས་དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
देन प छेन पोस् देङ दिर ट शीस् शोग
उस महासत्य से आज यहाँ मंगल बरसायें, लायें।8।

རྒྱ་ནག་རྒྱལ་པོའི་དཔལ་འབྱོར་དང་། །
ग्य नग ग्यल पोइ पल छोर दङ
चीनी राजा का धन-सम्पत्ति

འཛམ་གླིང་ཀུན་གྱི་ཕུན་ཚོགས་བཅུད། །
ज़म लिङ कुन ग्यि फुन छ़ोग चुद्
समस्त जम्बुद्वीप का लक्ष्मी एवं रसायन

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुख आनन्द की लक्ष्मी बरसें

སྐར་ཆེན་གནས་མཆོག་འཛམ་གླིང་ཀུན་གྱི་རྒྱན་འདིར་ནི། །
गर छेन ज़म लिङ कुन ग्यि ग्येन दिर नि
विपुल मेलाप-स्थल समस्त जम्बुद्वीप का आभुषण है यहाँ

ཆོས་རྒྱལ་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པར་ཤོག །
छोस् ग्यल कु छ़े तेन पर शोग
धर्मराज चिरंजीव हों

འཕྲིན་ལས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་ཤོག །
ठिन लेस थम चे डुप पर शोग
सभी कृत्य सिद्ध हों, सम्पन्न हों

རྒྱལ་བས་ལུང་བསྟན་བོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ། །
ग्यल वे लुङ तेन बोद् क्यि छोस् क्यि ग्यल
जिन द्वारा व्याकर्णित भोट के धर्मराज

བོད་དུ་སྤྱན་དྲངས་རྒྱལ་སྲིད་གཉིས་བསྐྱངས་པའི། །
बोद् दु चेन डङ ग्यल सिद् ञीस् क्यङ पई
भोटदेश में आमन्त्रित कर शासन द्वय को चलाया

རྒྱ་གར་རྒྱལ་པོའི་རྒྱལ་སྲིད་དང་། །
ग्य गर ग्यल पोइ ग्यल सिद् दङ
आर्यदेश का राजशासन

ཧོར་གྱི་རྒྱལ་པོའི་མཐུ་སྟོབས་སོགས། །
होर ग्यि ग्यल पोइ थु तोप सोग
मंगोल राजा का शक्ति एवं बल आदि

ཐམས་ཅད་སྐར་གནས་འདིར་འདུ་བར་ཤོག །
थम चे गर दिर दु बर शोग
समस्त विपुल मेलापस्थल यहाँ संगृहीत हो ढेर लग जायें, जमा हो जायें

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल व्याप्त हों।9।

བདག་ཅག་བསམ་པ་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་པར་ཤོག །
दग चग सम प यिद् शिन डुप पर शोग
हम लोगों की मनोकामन जैसे किया वैसा सिद्ध हो, सम्पन्न हों।

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
आनन्द, खुशी की लक्ष्मी बरसें

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
आनन्द खुशी चैन की लक्ष्मी बरसें।10।

མི་རིགས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ། །
मि रिग नम प न छ़ोग प
विभिन्न प्रकार के विविध जाति लोग

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से मंगल व्याप्त हों

འཕྲལ་སྐྱིད་པ་འཇིག་རྟེན་མི་ཡི་ཆོས། །
ठल क्यिद् प जिग तेन मि यि छोस्
तात्कालिक सुख लोकधर्म द्वारा होता रहे

ཕུགས་སྐྱིད་པ་དམ་པའི་ལྷ་ཆོས་ལ། །
फुग क्यिद् प दम पई ल्ह छोस् ल
परमार्थ सुख परम दिव्य धर्म से होता है

བཀྲ་ཤིས་ཀྱི་རབ་མ་འཛམ་གླིང་རྒྱན། །
ट शीस् क्यि रप म ज़म लिङ ग्येन
मंगल के परम जम्बुद्वीप अलंकार

བསམ་པ་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་པར་ཤོག །
सम प यिद् शिन डुप पर शोग
अभीष्ट मनोकामना सदृश सिद्ध हों

བཀྲ་ཤིས་དེ་ཡིས་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ट शीस् दे यीस् ट शीस् शोग
उस मंगल से यहाँ मंगल बरसें

ཡུལ་དང་སྐད་རིགས་མི་གཅིག་པ། །
युल दङ के रिग मि चिग प
विभिन्न देश और भाषाओं के

བདེ་སྐྱིད་ཡང་ཡང་འདིར་འཚོགས་ཤོག །
दे क्यिद् यङ यङ दिर छ़ोग शोग
सुखानन्द के साथ पुनः पुनः यहाँ एकत्रित हों

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
आनन्द सुख की लक्ष्मी बरसें।11।

དགའ་བདེ་སྨོན་བཞིན་ཐོབ་པར་ཤོག །
गा दे मोन शिन थोप पर शोग
आनन्द सुख कामना सदृश प्राप्त हों

དུས་རྟག་ཏུ་འབྲལ་མེད་འཁོར་བར་ཤོག །
दुस् तग तु डल मेद् छ़ोर बर शोग
वियोग हुये बिना सदैव संयोग होता रहे।12।

འཛམ་གླིང་རྒྱན་གྱི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ज़म लिङ ग्येन ग्यि ट शीस् शोग
जम्बुद्वीप अलंकार मंगल बरसायें

བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
दे क्यिद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
सुखानन्द की लक्ष्मी बरसें।13।

ཅེས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་རིན་པོ་ཆེ་སྙིང་གི་དཀྱིལ་དུ་མི་འབྲལ་བར་འཛིན་པ་ཀརྨ་པ་ཆོས་གྲགས་རྒྱ་མཚོས་སྦྱར་བའོ། །
इसे बोधिचित्तरत्न हृदय के मध्य में स्थापित कर कर्मापा छोस्-डग्स ग्याछ़ो द्वारा निबद्ध किया गया है।

# བདེན་པ་གྲུབ་མ།
# सत्यसिद्धक

བདེན་པ་གྲུབ་ཅིང་བདེན་པར་གསུངས་པ་གང་། །
देन प डुप चिङ देन पर सुङ प गङ
जो सत्यसिद्ध कर सत्य को कहे हैं।

མཚུངས་མེད་སྟོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་རང་གི་བསྟན། ། འཇིག་
छुङ मेद् तोन प ञिद् क्यीस् रङ गि तेन
अनुपम शास्ता के द्वारा स्वयं का शासन।

རྟེན་ཁམས་འདིར་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་པར། །
जिग तेन खम दिर युन रिङ बर ग्युर पर
इस लोकधातु में दीर्घकाल तक प्रज्वलित होने का।

སྨོན་ལམ་མཛད་པ་དེ་བཞིན་ཆེར་འབར་ཤོག །
मोन लम ज़े प दे शिन छेर बर शोग
प्रणिधान किये थे, वैसे ही और अधिक प्रज्वलित हो।।

འོག་མིན་གནས་སུ་སྐུ་ནི་རབ་གྲུབ་ནས། །
ह़ोग मिन गनेस् सु कु नि रप डुप नेस्
अकनिष्ठ स्थल में काय को सुसिद्ध कर।

དགའ་ལྡན་དུ་ནི་རྒྱལ་ཚབ་ས་བཅུའི་མགོན། །
गा देन दु नि ग्यल छ़प स चुइ गोन
तुषित में तो राजप्रतिनिधि, दश-भूमियों के नाथ।

མ་འོངས་འཛམ་གླིང་འདི་རུ་སྤྲུལ་པའི་སྐུར། །
म ह़ोङ ज़म लिङ दि रु टुल पई कुर
अनागत इस जम्बूद्वीप में निर्मितकाय में।

སྣང་མཛད་དེ་ཡི་སྨོན་ལམ་བདག་འགྲུབ་ཤོག །
नङ ज़े दे यि मोन लम दग डुप शोग
आभासित, उनका प्रणिधान मेरे (द्वारा) सिद्ध हो।।

རྒྱལ་བ་བྱམས་པས་རྒྱལ་ཚབ་ཉིད་མཛད་ནས། །
ग्यल व छ्यम पेस् ग्यल छ़प ञिद् ज़े नेस्
जिन (बुद्ध) मैत्रेय द्वारा राजप्रतिनिधि बन कर।

བསྐལ་བཟང་སངས་རྒྱས་དྲུག་པ་ནས་བཟུང་སྟེ། །
कल ज़ङ सङ ग्येस् डुग प नेस् ज़ुङ ते
भद्रकल्प के छठे बुद्ध से लेकर।

སྣང་མཛད་བར་གྱིས་སྤྲུལ་པའི་རྫུ་འཕྲུལ་སྟོན། །
नङ ज़े बर ग्यीस् टुल पई ज़ु ठुल तोन
वैरोचन तक के द्वारा निर्मित ऋद्धि को दिखाते।

ཀརྨ་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་བདག་འགྲུབ་ཤོག །
कर्म प यि मोन लम दग डुप शोग
कर्मापा का प्रणिधान मेरे द्वारा सिद्ध हो।।

ཅེས་པ་འདི་རྒྱལ་དབང་ཆོས་གྲགས་རྒྱ་མཚོས་ཆོས་གྲྭ་རྩེས་ཐང་དུ་སྩལ་བའོ། །

यह जिनेन्द्र छोस्-डग्स ग्या-छ़ो (धर्मकीर्तिसागर) के द्वारा धर्मपीठ ऱ्चे-थङ में प्रदत्त किया गया।

དགེ་འདུན་སྡེ་རྒྱས་འཆད་རྩོད་རྩོམ་པ་དང་། །
गेन दुन दे ग्येस् छे ज़ोद् ज़ोम प दङ
संघ वर्ग की वृद्धि तथा वाचन, वाद और लेखन।

འདུས་པ་མཐུན་དང་ཚེ་རིང་ནད་མེད་སོགས། །
दुस् प थुन दङ छ़े रिङ ने मेद् सोग
संघ में मेलजोल तथा दीर्घायु, निरोग आदि।

འབྱོར་བ་རྣམ་ཐོས་བུས་ཀྱང་འགྲན་མེད་ཅིང་། །
छोर व नम थोस् बुस् क्यङ डेन मेद् चिङ
सम्पन्नता वैश्रवण की स्पर्द्धा से भी ऊपर हो।

གཞན་དོན་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་ཕྲིན་ལས་བཞིན། །
शेन दोन चेन रेस ज़िग क्यि ठिन लेस शिन
परार्थ अवलोकितेश्वर के कर्म जैसा हो।

ཅེས་པ་འདི་མི་བསྐྱོད་པས་སོ། །
चेस् प दि मि क्योद् पेस् सो
यह (8वें कर्मापा) मि-क्योद्(-दोर्जे) द्वारा की गई (प्रार्थना) है।

ཕྲིན་ལས་མ་ལུས་སྒྲུབ་པའི་ཀརྨ་པ། །
ठिन लेस म लुस् डुप पई कर्म प
अशेष कर्मों से साधित कर्मापा (हैं)।

དེང་འདིར་བཀྲ་ཤིས་བདེ་ལེགས་འབྱུང་གྱུར་ཅིག །
देङ दिर बट शीस् दे लेग छुङ ग्युर चिग
आज यहाँ मङ्गल स्वस्ति हो जाएँ।।

ཀརྨ་པ་བསྟན་བསྟན་པའི་སྙིང་པོ་ནི། །
कर्म प तेन तेन पई ञिङ पो नि
कर्मापा-शासन, शासन का सार तो।

རྟག་པར་རབ་འཕེལ་འཕེལ་བའི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
तग पर रप फेल फेल बई बट शीस् शोग
सदा प्रवर्द्धित हों, वृद्धि का मङ्गल हो।।

ཐོས་བསམ་སྒོམ་པའི་བྱ་བ་ཀུན་འཕེལ་ཞིང་། །
थोस् सम गोम पई छ व कुन फेल शिङ
समस्त श्रवण-चिन्तन और मनन कार्यों में विस्तार हो।

འདོད་དགུ་དུ་མས་ཕོངས་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
दोद् गु दु मेस फोङ पर म ग्युर चिग
नानाविध आकांक्षाओं से विपन्नता नहीं हों।।

བཙུན་ཚུལ་ཉེ་བ་འཁོར་ལྟར་བག་ཡོད་པར། །
ज़ुन छुल ञे व खोर तर बग योद् पर
भदन्त-नय उपालि के समान अप्रमादी।

ཀརྨ་པ་ཡི་བསྟན་པ་རྒྱས་བྱེད་ཤོག །
कर्म प यि तेन प ग्येस् छेद् शोग
कर्मापा के शासन का विस्तार हो।।

ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་དུ་དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་ཀྱི། །
छ्योग चुइ शिङ दु दुस् सुम सङ ग्येस् क्यि
दशदिग् क्षेत्रों में त्रिकाल बुद्धों के।

ཆོས་གྲགས་རྒྱ་མཚོ་ཞེས་བྱར་གྲགས་དེ་ཡི། །
छोस् डग ग्य छ़ो शेस् छर डग दे यि
धर्मकीर्ति नाम से प्रसिद्ध हैं, उनका।

བདུད་བཞི་ལས་རྒྱལ་རྒྱལ་བའི་ཕྲིན་ལས་པ། །
दुद् शि लेस ग्यल ग्यल वई ठिन लेस प
चतुर्मार से विजित जिन (बुद्ध) कर्म वाले।

ཕྱོགས་མཐར་ཀུན་ཁྱབ་ཁྱབ་ཅིང་རྒྱུན་མི་འཆད། །
छ्योग थर कुन ख्यप ख्यप चिङ ग्युन मि छे
दिगन्त सर्वव्याप्त, व्याप्ति की निरन्तरता है।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བདེན་པ་དང་། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱིན་གྱི་རླབས་དང་།
कोन छोग सुम ग्यि देन प दङ सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे क्यि छिन ग्यि लप दङ
**त्रिरत्न के सत्य तथा समस्त बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों के अधिष्ठान एवं**

ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་མངའ་ཐང་ཆེན་པོ་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྣམ་པར་དག་ཅིང་བསམ་གྱིས་
छोग ञीस् योङ सु ज़ोग पई ङा थङ छेन पो दङ छोस् क्यि यिङ नम पर दग चिङ सम ग्यीस्
**दो सम्भारों के परिपूर्णता रूपी महान् समृद्धि और धर्मधातु की विशुद्धता के कारण**

མི་ཁྱབ་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
मि ख्यप पई तोप क्यीस् दे शिन दु डुप पर ग्युर चिग
**अचिन्त्य बल के द्वारा तथा सिद्ध हो जाएँ।**

བཀྲ་ཤིས་དཔལ་འབར་འཛམ་གླིང་རྒྱན། །
बट शीस् पल बर ज़म लिङ ग्येन
**मङ्गलश्रीज्वाला जम्बूद्वीप के अलङ्कार।**

ཁ་བ་ཅན་གྱི་བྱང་ཕྱོགས་སུ། །
ख व चेन ग्यि छङ छ्योग सु
**हिमवन्त के उत्तर दिशा में।**

འཛམ་གླིང་བདེ་བའི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
ज़म लिङ दे वई बट शीस् शोग
**जम्बूद्वीप में सुख का मङ्गल हो।**

མངའ་རིས་རྒྱལ་ཁམས་བོད་ཀྱི་ཡུལ། །
ङा रीस् ग्यल खम बोद् क्यि युल
**ङा-रीस् राज्य भोट का देश है।**

ཆོས་སྒྲུབ་བརྒྱུད་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་བ་དང་། །
छोस् डुप ग्युद् क्यि तेन प दर व दङ
**धर्मसाधनपरम्परा के शासन की वृद्धि हो।**

འཛམ་བུ་གླིང་བདེ་བར་མཛད་དུ་གསོལ། །
ज़म बु लिङ दे वर ज़े दु सोल
**प्रार्थना है, जम्बूद्वीप सुखी हों।**

# बुद्ध-बोधिसत्त्वों की स्तुति का संग्रह

བཅོམ་ལྡན་འདས་མགོན་པོ་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་ལ་མཆོད་པར་བརྗོད་པའི་ཚུལ་གྱིས་བསྟོད་པ་བཞུགས།

# भगवान् नाथ मञ्जुवज्र का मंगलाचरणकारी स्तुति विहरति स्म।

ༀ་སྭསྟི་སིདྡྷཾ།
ओं स्वस्ति सिद्धं।
ओं स्वस्ति सिद्धम्।

བླ་མ་དང་རྗེ་བཙུན་འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल म दङ जे त्सुन जम पई यङ ल छग छ़ल लो
गुरु और स्वामी भट्टारक मञ्जुश्री की मैं वन्दना करता हूँ।

དཔལ་ལྡན་བློ་གྲོས་དྷཱིཿལས་བྱུང་བ་གཞོན་ནུའི་ཚུལ་འཆང་མཛེས་པའི་སྐུ། །
पल देन लो डोस् धाःलेस् छुङ व शोन नुइ छुल छङ ज़ेस् पई कु
श्रीयुत बुद्धिमान धीः से उद्भूत, कुमारावस्थाधारी एवं सुरूपवान्

ཆུ་སྐྱེས་བསིལ་ཟེར་ཅན་དབུས་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་བཅས་རོལ་པའི་འགྱིང་བག་ཅན། །
छु क्येस् सिल ज़ेर चेन उस् क्यिल मो टुङ चेस् रोल पई ग्यिङ बग चेन
अम्बुज और हिमांशु के ऊपर वज्रासनस्थ लीला-मुद्रा में

གུར་གུམ་མདོག་ཅན་ཟུར་ཕུད་ལྔ་པ་སྙན་གོང་ཨུཏྤལ་གྱིས་མཛེས་ཤིང་། །
गुर गुम दोग चेन ज़ुर फुद् ङ प ञेन गोङ उत्पल ग्यीस् ज़ेस् शिङ
केसर वर्ण, पंचतीर, कर्ण कुण्डल उत्पल सदृश सुन्दर

སྣ་ཚོགས་རིན་ཆེན་རབ་སྤྲས་ལྷ་ཡི་ན་བཟའི་སྨད་གཡོགས་ལེགས་པར་བགོས། །
न छ़ोग रिन छेन रप टेस् ल्ह यि न ज़ई मे योग लेग पर गोस्
विविध रत्नों से अलंकृत, दिव्य अधोवस्त्र से आच्छादित

ཕྱག་གཡས་མཁའ་ལྟར་སྔོ་བའི་རལ་གྲི་ཚ་ཟེར་ཅན་འོད་རབ་འཕྲོས་པས། །
छग येस् खा तर ङो बई रल डि छ़ ज़ेर चेन ह़ोद् रप ठोस् पेस्
दक्षिण हाथ में गगन सदृश नील असि उष्ण और प्रभा को विकिरण करते

མུན་པའི་འཐིབས་པོ་དྲལ་ཞིང་བདུད་བཅོམ་དེ་བཞིན་ཉིད་དོན་ཐུགས་ཆུད་ཅིང་། །
मुन पई थिप पो डल शिङ दुद् चोम दे शिन ञिद् दोन थुग छुद् चिङ
घनघोर अन्धकार का हटा कर, मार का नाशकर तत्त्व का अधिगम करा रहे है।1।

གཡོན་གྱི་ཨུཏྤལ་འདབ་བརྒྱད་རྣམ་རྒྱས་མགུལ་པའི་ངོས་སུ་རབ་རྒྱས་པ། །
योन ग्यि उत्पल दप ग्ये नम ग्येस् गुल पई ङोस् सु रप ग्येस् प
वाम ओर आठ पंखुडियों वाला उत्पल, कण्ठ के सामने पूर्ण खिले हुये

གེ་སར་སྙིང་པོ་དྲི་མེད་སྟེང་ན་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་གླེགས་བམ་བསྣམས། །
गे सर ञिङ पो डि मेद् तेङ न ग्यल वई सुङ रप लेग बम नम
उसके निर्मल पराग के मध्य में जिन वचन का पुस्तक धारण किये हैं।

ཁྱོད་གཙུག་མི་བསྐྱོད་སྐྱོབ་པས་རབ་མཚན་རྡོ་རྗེ་རྣོན་པོ་ཡི་གེ་དྲུག །
ख्योद् ज़ुग मि क्योद् क्योप पेस् रप छ़ेन दोर जे नोन पो यि गे डुग
आपका शीर्ष अक्षोभ्य से असंकृत है,

བཞད་པའི་གད་རྒྱངས་ཅན་གྱི་ཞབས་རྡུལ་ཡིད་འོང་ཁོ་བོའི་སྤྱི་བོར་ཞོག །
शे पई गे ग्यङ चेन ग्यि शप दुल यिद् ह़ोङ खो बोइ चि बोर शोग
वज्रतीक्ष्ण षडाक्षरी का अट्टहास करने वाले आप अपने मनोहर चरणधूलि मेरे शीर्ष पर रखें।

ཁྱོད་སྐུ་བདག་ལུས་སྙིང་གི་འཁོར་ལོར་རྣམ་བསམ་གང་གིས་ཆགས་སྡང་སོགས། །
ख्योद् कु दग लुस् ञिङ गि खोर लोर नम सम गङ गीस् छग दङ सोग
आपको मैं अपने शरीर के हृदयचक्र में सोच कर ध्यान करुँगा।

ཉན་སེམས་ཐ་ཆད་དམ་པས་སྨད་པ་དེ་ཀུན་མགོན་པོས་བཟོད་མཛོད་ཅིག །
ङेन सेम थ छे दम पेस् मे प दे कुन गोन पोस् ज़ोद् ज़ोद् चिग
अतः मेरे राग-द्वेष आदि कलुषित, तुच्छ, सज्जनों द्वारा निन्दनीय कार्यों को नाथ मुझे क्षमा करें।2।

རྒྱལ་སྲས་ཐུ་བོའི་རྣམ་ཐར་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བདག་ལ་ཉེར་སྩོལ་མཛོད། །
ग्यल सेस् थु बोइ नम थर ज़प चिङ ग्य छे दग ल ञेर ज़ोल ज़ोद्
ज्येष्ठ जिनपुत्रों के विमोक्ष गम्भीरोदार गुणों को मुझे प्रदान करें

ཡབ་གཅིག་ཉིད་ལས་ལྷ་གཞན་བདག་ལ་རེ་བ་མ་མཆིས་སྐལ་ངན་བདག །
यप चिग ञिद् लेस ल्ह शेन दग ल रे व म छीस् कल ङेन दग
आप ही मेरे आशा और पिता मात्र हैं, अभिभावक हैं, दूसरा नहीं।

ཉིན་མཚན་ཀུན་ཏུ་འཇམ་དབྱངས་གུས་པས་བསམས་ཀྱང་ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེའི་ཤུགས། །
ञिन छ़ेन कुन तु जम यङ गुस् पेस् सम क्यङ ख्येद् क्यि थुग जे शुग
**इस अभागे द्वारा रात-दिन सदैव मञ्जुघोष आपको ही श्रद्धापूर्वक सोचने पर भी**

ཅུང་ཟད་མེད་སྙམ་འོན་ཀྱང་ཕྱུར་ངན་རང་གི་ཉེས་པས་བསླད་པར་ཟད། །
चुङ ज़े मेद् ञम ह़ोन क्यङ छुर ङेन रङ गि ञेस् पेस् ले पर ज़े
**अल्प मात्र भी न दिखना क्या मेरे घोर दोष के कारण है।**

ད་དུང་ཁྱོད་མཉེས་མ་གྱུར་བར་དུ་སྐྱབས་གཞན་འཚོལ་བར་མ་གྱུར་ཅིག །
द दुङ ख्योद् ञेस् म ग्युर बर दु क्यप शेन छ़ोल बर म ग्युर चिग
**जब तक आपको प्रसन्न नहीं करूँगा तब तक अन्यत्र शरण नहीं खोजूँगा।**

ཅེས་པ་འདི་ས་སྐྱ་པཎྜི་ཏས་སྦྱར་བའོ། །
इति। यह साक्य पण्डित द्वारा कृत है।

དཔལ་མོའི་འཕགས་བསྟོད།

# भिक्षुणी लक्ष्मी द्वारा रचित आर्य (अवलोकितेश्वर) स्तुति

ༀ་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ओं जिग तेन गोन पो ल छग छ़ल लो
ओं।

འཇིག་རྟེན་བླ་མ་སྲིད་པ་གསུམ་གྱིས་བསྟོད་པ་པོ། །
जिग तेन ल म सिद् प सुम ग्यीस् तोद् प पो
त्रिलोकनाथ को मैं वन्दना करता हूँ

ལྷ་ཡི་གཙོ་བོ་བདུད་དང་ཚངས་པས་བསྟོད་པ་པོ། །
ल्ह यि त्ज़ो वो दुद् दङ छ़ङ पेस् तोद् प पो
जगतगुरु, त्रिभुवन द्वारा प्रशंसित

ཐུབ་པའི་རྒྱལ་མཆོག་བསྟོད་པས་གྲུབ་པར་མཛད་པ་པོ། །
थुप पई ग्यल छोग तोद् पेस् ड्रुप पर ज़े प पो
देव प्रमुख, मार और ब्रह्मा द्वारा प्रशंसित

འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མགོན་པོ་མཆོག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जिग तेन सुम ग्यि गोन पो छोग ल छग छ़ल लो
मुनि का जिन श्रेष्ठ स्तुति (मात्र) से सिद्धि प्रदान करने वाले

བདེ་གཤེགས་དཔག་མེད་སྐུ་སྟེ་སྐུ་བཟང་འཛིན་པ་པོ། །
दे शेग पग मेद् कु ते कु ज़ङ ज़िन प पो
त्रि-जगत के श्रेष्ठ नाथ की मैं वन्दना करता हूँ।1।

བདེ་གཤེགས་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དབུ་རྒྱན་འཛིན་པ་པོ། །
दे शेग नङ व था येस् उ ग्येन ज़िन प पो
अपरिमित सुगत-मूर्ति, भद्रकायधारी

ཕྱག་གཡས་མཆོག་སྦྱིན་ཡི་དྭགས་བཀྲེས་སྐོམ་སེལ་བ་པོ། །
छग येस् छोग छिन यि दग टेस् कोम सेल व पो
सिर पर सुगत अमिताभ का अंलकार धारण किये तथा

ཕྱག་གཡོན་གསེར་གྱི་པད་མས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་པོ། །
छग योन सेर ग्यि पे मेस नम पर ग्येन प पो
दायें हाथ वरदान मुद्रा में प्रेतों का भूख-प्यास मिटाते हुए

དྲི་ཞིམ་རལ་པའི་འཕྲེང་བ་དམར་སེར་འཕྱུག་པ་པོ། །
डि शिम रल पई ठेङ व मर सेर ख्युग प पो
बायाँ हाथ सुवर्ण-पद्म से विभूषित है।2।

ཞལ་རས་རྒྱས་པ་ཟླ་བ་ལྟ་བུར་མཛེས་པ་པོ། །
शल रेस ग्येस् प द व त बुर ज़ेस् प पो
रक्त-पीत सुगन्धित चमकते केश वाले

སྤྱན་གྱི་པད་མ་མཆོག་ཏུ་བཟང་ཞིང་ཡངས་པ་པོ།
चेन ग्यि पे म छोग तु ज़ङ शिङ यङ प पो
विशाल मुख-मण्डल, चन्द्रमा सदृश सुन्दर

ཁ་བ་དུང་ལྟར་རྣམ་དཀར་དྲི་དང་ལྡན་པ་པོ། །
ख व दुङ तर नम कर डि डे देन प पो
विशालोत्तम पद्म सदृश भद्र चक्षु वाले

དྲི་མེད་འོད་ཆགས་མུ་ཏིག་ཚོམ་བུ་འཛིན་པ་པོ། །
डि मेद् ह़ोद् छग मु तिग छ़ोम बु ज़िन प पो
वर्ण शंख सदृश, अति श्वेत सुगन्धित।3।

མཛེས་པའི་འོད་ཟེར་སྐྱ་རེངས་དམར་པོས་བརྒྱན་པ་པོ། །
ज़ेस् पई ह़ोद् ज़ेर क्य रेङ मर पोस् ग्येन प पो
निर्मल चमकीले मोतियों की गुच्छा धारण करने वाले

པད་མའི་མཚོ་ལྟར་ཕྱག་ནི་དངར་བར་བྱས་པ་པོ། །
पे मई छ़ो तर छग नि ङर बर छेस् प पो
सुन्दर प्रभा रक्त-उषा से अलंकृत

སྟོན་ཀའི་སྤྲིན་གྱི་མདོག་དང་ལྡན་ཞིང་གཞོན་པ་པོ། །
तोन कई टिन ग्यि दोग दङ देन शिङ शोन प पो
तालाब में पद्म पंक्ति सदृश हाथ वाले

རིན་ཆེན་མང་པོས་དཔུང་པ་གཉིས་ནི་བརྒྱན་པ་པོ། །
रिन छेन मङ पोस् पुङ प ञीस् नि ग्येन प पो
शरद् कालीन मेघ सदृश वर्ण युक्त कुमार।4।

ལོ་མའི་མཆོག་ལྟར་ཕྱག་མཐིལ་འཇམ་ཞིང་གཞོན་པ་པོ། །
लो मई छोग तर छग थिल जम शिङ शोन प पो
विभिन्न रत्नों से बाजु द्वय अलंकृत वाले

རི་དྭགས་པགས་པས་ནུ་མ་གཡོན་པ་བཀབ་པ་པོ། །
रि दग पग पेस् नु म योन प कप प पो
हथेली मृदु, कोमलोत्तम पर्ण सदृश

སྙན་ཆ་གདུ་བུས་སྒེག་ཅིང་རྒྱན་རྣམས་འཆང་བ་པོ། །
ञेन छ दु बुस् गेग चिङ ग्येन नम छङ व पो
मृग-चर्म से बायाँ स्तन को आवृत्त करने वाले

དྲི་མ་མེད་པ་པདྨའི་མཆོག་ལ་གནས་པ་པོ། །
डि म मेद् प पेमाई छोग ल नेस् प पो
कर्ण-कुण्डल आदि श्रृंगार अंलकारों से अलंकृत।5।

ལྟེ་བའི་ངོས་ནི་པདྨའི་འདབ་ལྟར་འཇམ་པ་པོ། །
ते बई ङोस् नि पेमाई दप तर जम प पो
मल रहित उत्तम, कमल पर स्थित

གསེར་གྱི་སྐ་རགས་མཆོག་ལ་ནོར་བུས་སྤྲས་པ་པོ། །
सेर ग्यि क रग छोग ल नोर बुस् टेस् प पो
नाभि क्षेत्र पद्म-पंखुडी सदृश कोमल

སྟ་ཟུར་དཀྲིས་པའི་རས་བཟང་ཤམ་ཐབས་འཛིན་པ་པོ། །
त ज़ुर दटीस् पई रेस ज़ङ शम थप ज़िन प पो
उत्तम सुवर्ण कटिबन्ध मणि से सुशोभित

ཐུབ་པའི་མཁྱེན་མཆོག་མཚོ་ཆེན་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་པོ། །
थुप पई ख्येन छोग छ़ो छेन फ रोल छिन प पो
कुक्षि पर अत्यन्त उत्कृष्ट वस्त्र से बने चीवर धारण करने वाले।6।

མཆོག་བརྙེས་བསོད་ནམས་མང་པོ་ཉེ་བར་བསགས་པ་པོ། །
छोग ञेस् सोद् नम मङ पो ञे वर सग प पो
महासागर को पार कर, मुनि का उत्तम ज्ञान धारण करने वाले

རྟག་ཏུ་བདེ་བའི་འབྱུང་གནས་རྒ་ནད་སེལ་བ་པོ། །
तग तु दे वई छुङ नेस् ग ने सेल व पो
श्रेष्ठ (पद की ) प्राप्ति के लिये विपुल पुण्यों का संचय करने वाले

གསུམ་མཐར་མཛད་ཅིང་མཁའ་སྤྱོད་སྤྱོད་པ་སྟོན་པ་པོ། །
सुम थर ज़े चिङ खा चोद् चोद् प तोन प पो
स्थायी सुख के स्रोत, रोग और वृद्धत्व को नाश करने वाले

ལུས་ཅན་མཆོག་ནི་བདུད་དཔུང་འཐྲུག་ལས་རྒྱལ་བ་པོ། །
लुस् चेन छोग नि दुद् पुङ ठुग लेस ग्यल व पो
त्रिकोटि मुक्त खेचर चर्या का आचरण करने वाले।7।

གསེར་གྱི་རྐང་གདུབ་སྒྲ་ཡིས་ཞབས་ཡིད་འོང་བ་པོ། །
सेर ग्यि कङ दुप ड यीस् शप यिद् ह़ोङ व पो
उत्तम शरीर वाले, मार सेना के वार से विजय होने वाले

ཚངས་པའི་གནས་པ་བཞི་ཡིས་དཔེན་པར་མཛད་པ་པོ། །
छ़ङ पई नेस् प शि यीस् पेन पर ज़े प पो
सुवर्णपाद कंगन के मधुर ध्वनि द्वारा मनोहर पाद वाले

ངང་པའི་འགྲོས་འདྲ་གླང་ཆེན་རྡེགས་ལྟར་གཤེགས་པ་པོ། །
ङङ पई डोस् ड लङ छेन डेग तर शेग प पो
चार ब्रह्म-विहारों के अलंकार युक्त वाले

ཡོངས་རྫོགས་ཉེ་བར་བསགས་ཤིང་བསྟན་པ་གཉེར་བ་པོ། །
योङ ज़ोग ञे वर सग शिङ तेन प ञेर व पो
हंसचाल सदृश अभिमानी, महागज सदृश गमन करने वाले

ཚོ་མའི་མཚོ་དང་ཆུ་ཡི་མཚོ་ལས་སྒྲོལ་བ་པོ། །
ह़ो मई छ़ो दङ छु यि छ़ो लेस डोल व पो
संभार पूरी तरह उपार्जित कर शासन का अभिरक्षा करने वाले

གང་ཞིག་ཏག་ཏུ་ཐོ་རངས་ལངས་ནས་གུས་པ་ཡིས། །
गङ शिग तग तु थो रङ लङ नेस् गुस् प यीस्
दुग्ध और जल सागर से पार होने वाले।8।

སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་པོ་ཡིད་ལ་སེམས་བྱེད་ཅིང་། །
चेन रेस ज़िग क्यि वङ पो यिद् ल सेम छेद् चिङ
जो उषाकाल में उठकर श्रद्धापूर्वक

བསྟོད་པའི་མཆོག་འདི་དག་ཅིང་གསལ་བར་འདོན་བྱེད་ན། །
तोद् पई छोग दि दग चिङ सल वर दोन छेद् न
उत्तम स्तुति का स्पष्ट पाठ करे

དེ་ནི་སྐྱེས་པ་འམ་ནི་བུད་མེད་ཡིན་ཡང་རུང་། །
दे नि क्येस् प ह़म नि बुद् मेद् यिन यङ रुङ
वह पुरुष हो या स्त्री हों

སྐྱེ་བ་འདི་འམ་མ་འོངས་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ། །
क्ये व दि ह़म म ह़ोङ क्ये व थम चे दु
इस जन्म या भविष्य के सभी जन्मों में

འཇིག་རྟེན་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་དགོས་པ་ཀུན་འགྲུབ་འགྱུར། །
जिग तेन जिग तेन लेस देस् गोस् प कुन डुप ग्युर
लौकिक-अलौकिक सभी अभीष्ट को सिद्ध करेगा।9।

འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་དགེ་སློང་མ་དཔལ་མོས་ལི་ཁར་ཤིང་འཕེལ་དུ་བསྟོད་པ་མཛད་པ་རྫོགས་སོ། །
आर्य अवलोकितेश्वर को भिक्षुणी ने लिखर् शिङ्-फेल में स्तुति किया, वह सम्पन्न हुआ।

རྒྱལ་བ་བྱམས་པ་མགོན་པོ་ལ་སྨྲེ་སྔགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་ཚངས་པའི་ཅོད་པན།

# ब्रह्म-पटल नामक जिन मैत्रेयनाथ का विलापपूर्ण स्तुति

ན་མཿཤྲཱི་གུ་རུ་མཉྫུ་གྷོ་ཥཱ་ཡ།
नमःश्रीगुरुमञ्जुघोषाय।
श्रीगुरुमञ्जुघोषाय नमः।

མཉེས་གཤིན་བྱམས་པས་རྟག་ཏུ་བརླན་ཡང་ནག་པོའི་རྒྱ་ལག་སྲེག །
ञेस् शिन छम पेस् तग तु लेन यङ नग पोइ ऩ्न लग सेग
सदैव वत्सल, मैत्रीपूर्वक होने पर भी कृष्ण-बन्धुओं (बुराईयों) को जलाने वाले

ཤིན་ཏུ་བཅད་དཀའི་འཆིང་བ་བཅད་ཀྱང་སྙིང་རྗེས་དམ་དུ་བཅིངས། །
शिन तु चे कई छिङ व चे क्यङ ञिङ जेस् दम दु चिङ
अति कठिन बन्धन का छेदन कर भी करुणा से अति बन्धित

ཞི་བའི་བཏང་སྙོམས་རྒྱུན་དུ་ལྡན་ཡང་བདག་པས་གཞན་ལ་གཅེས། །
शि बई तङ ञोम ग्युन दु देन यङ दग पेस् शेन ल चेस्
सदैव शान्त एवं उपेक्षा होने पर भी स्व की अपेक्षा पर-प्रिय

འཇམ་དབྱངས་ཞབས་ལ་གུས་པས་བཏུད་ནས་མི་ཕམ་མགོན་ལ་བསྟོད། །
जम यङ शप ल गुस् पेस् तुद् नेस् मि फम गोन ल तोद्
मञ्जुघोष के चरणों को भक्तिपूर्वक नमन कर अजितनाथ का स्तुति करूँगा।1।

གདོང་བཞི་མེས་པོའི་ཞལ་ནས་རབ་ཏུ་བསྔགས། །
दोङ शि मेस् पोइ शल नेस् रप तु ङग
चतुर्मुख पितामह के मुख से प्रशंसित

སྤྱན་སྟོང་ལྡན་པས་དང་བས་རྒྱུན་དུ་བལྟ། །
चेन तोङ देन पेस् दङ वे ग्युन दु त
सहस्त्र चक्षु द्वारा प्रीति पूर्वक सदैव अवलोकित

དགའ་མའི་བདག་པོས་དྲེགས་པ་བཏང་ནས་བཏུད། །
गा मई दग पोस् डेग प तङ नेस् तुद्
रतिपति अभिमान त्याग श्रद्धापूर्वक वन्दित

རྒྱལ་ཚབ་ཞབས་ལ་གུས་པས་ཕྱག་བགྱི་འོ། །
ग्यल छ़प शप ल गुस् पेस् छग ग्यि ह़ो
जिनप्रतिनिधि के चरणों को श्रद्धापूर्वक मैं वन्दना करता हूँ।2।

དྭངས་པའི་མཚོ་ལ་འདབ་བརྒྱ་པ་སྟེ་དེ་ཉིད་ལ་ཡང་ཉིན་བྱེད་འོད། །
दङ पई छ़ो ल दप ग्य प ते दे ञिद् ल यङ ञिन छेद् ह़ोद्
आप साफ तालाब में शत पंखुड़ियों वाले पद्म जो दिनकर प्रभा (युक्त सा है)

དག་པའི་མཁའ་ལ་རྒྱུ་སྐར་མགོན་ཏེ་དེས་ཀྱང་ཀུན་དའི་ཚལ་ལ་བཞིན། །
दग पई खा ल ग्यु कर गोन ते देस् क्यङ कुन दई छ़ल ल शिन
आप निर्मल आकाश में नक्षत्रेश्वर जो कुन्दवन को सुशोभित करती है

མཚན་དཔེའི་ཕྲེང་བས་གང་སྐུ་མཐོང་མ་ཐག་ཏུ་འགྲོ་བའི་ཡིད་འཕྲོག་པ། །
छ़ेन पे ठेङ वे गङ कु थोङ म थग तु डो बई यिद् ठोग प
लक्षण और अनुव्यञ्जन माला से युक्त दर्शन मात्र से मन को हरने वाला

བྱམས་མགོན་ཞབས་པད་སྐྱེ་ཞིང་སྐྱེ་བར་བདག་གི་གཙུག་ན་མཛེས་གྱུར་ཅིག །
छ्अम गोन शप पे क्ये शिङ क्ये बर दग गि त्सुग न ज़ेस् ग्युर चिग
मैत्रेयनाथ के चरण-कमलवृन्द जन्म-जन्मान्तरों में मेरे उष्णीष को सुशोभित करते रहें।3।

བདུད་འཇོམས་འཁོར་དུ་འཇིགས་པ་ཀུན་དང་བྲལ། །
दुद् जोम खोर दु जिग प कुन दङ डल
मार-नाश से पार्षद में सभी भयों से विमुक्त

མཚུངས་མེད་དཔའ་བོ་སྲིད་གསུམ་སྟོན་པ་མཆོག །
छुङ मेद् पा बो सिद् सुम तोन प छोग
अतुलनीय वीर त्रिलोक के उत्तम शास्ता

ཉམ་ངར་ལྷུང་བའི་འགྲོ་ལ་རྟག་ཏུ་གཟིགས། །
ञम ङर ल्हुङ बई डो ल तग तु ज़िग
विपत्ति में पतित जगत का सदैव अवलोकन करने वाले

རྣམ་འདྲེན་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नम डेन ख्योद् क्यि शप ल छग छ़ल लो
नायक आपके चरणों की मैं वन्दना करता हूँ।4।

མཐའ་ཡས་ཤེས་བྱར་ཐོགས་པ་མེད་འཇུག་པའི། །
था येस् शेस् छर थोग प मेद् जुग पई
अनन्त ज्ञेय में अप्रतिघ प्रवेश करने वाले

མཁྱེན་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་མ་རུངས་བདུད་ཀྱི་སྡེ། །
ख्येन पई तोप क्यीस् म रुङ दुद् क्यि दे
ज्ञान-बल से धूर्त मार समूह पर जैसे

གནམ་ལྕགས་བབས་པའི་མེ་ཏོག་གཞོན་ནུ་བཞིན། །
नम चग बप पई मे तोग शोन नु शिन
वज्र-आकाश-लोह कोमल फूलों पर बरसते हुये

ཕམ་མཛད་སྟོབས་བཅུའི་དཔལ་གྱིས་བརྗིད་པ་ཁྱོད། །
फम ज़े तोप चुइ पल ग्यीस् जिद् प ख्योद्
ऐसे हराने वाले, दस बलश्री से ओज युक्त आप।5।

ཕས་རྒོལ་གླང་པོ་དྲེགས་པའི་ཀླད་འགེམས་ཤིང་། །
फेस् गोल लङ पो डेग पई ले गेम शिङ
पर-पक्ष के अभिमान रूपी मस्तिष्क पर प्रहार करने वाले

ལེགས་བཤད་སྒྲ་ཆེན་འཁོར་དབུས་བསྒྲགས་པ་ཡིས། །
लेग शे ड छेन खोर उस् डग प यीस्
सुभाषित महानाद का पार्षद के मध्य गुंजन से

སྨྲ་བ་ངན་པའི་ཝ་སྐྱེས་མཐར་མཛད་པའི། །
म व ङेन पई व क्येस् थर ज़े पई
कुतार्किक लोमड़ी सदृश लोगों को विध्वंस करने वाले

མི་འཇིགས་བཞི་ལྡན་མི་ཡི་སེང་གེ་ཁྱོད། །
मि जिग शि देन मि यि सेङ गे ख्योद्
चतुर्विध अभय युक्त नरसिंह आप।6।

ཁེངས་པས་མཐོ་བའི་འཇིག་རྟེན་མེས་པོ་དང་། །
खेङ पेस् थो बई जिग तेन मेस् पो दङ
अहंकार से उद्दण्ड जगत पितामह

ཉག་ཐན་བདག་པོ་དགེ་སྦྱོང་བྲམ་ཟེ་སོགས། །
ञग ठेन दग पो गे छोङ डम ज़े सोग
कामाधिपति, श्रमण, ब्राह्मण आदि

གཞན་གྱིས་སླ་བར་མ་ནུས་འཁོར་ལོ་མཆོག །
गङ गीस् म बर म नुस् खोर लो छोग
अन्यों द्वारा अशक्य उत्तम धर्मचक्र

བསྐོར་བས་འགྲོ་ལ་བྱམས་པའི་མགོན་པོ་ཁྱོད། །
कोर वे डो ल छम पई गोन पो ख्योद्
प्रवर्त्तन करने वाले मैत्रेयनाथ आप।7।

སྐུ་དང་གསུང་ལ་འཁྲུལ་པའི་མིང་ཡང་མེད། །
कु दङ सुङ ल ठुल पई मिङ यङ मेद्
काय, वाक्, चित्त भ्रान्त होने पर भी

དྲན་པ་མ་ཉམས་རྟག་ཏུ་མཉམ་པར་བཞག །
डेन प म ञम तग तु ञम पर शग
विस्मृति रहित सदा समाहित

ཐ་དད་འཛིན་པ་མ་བཏགས་བཏང་སྙོམས་ཀྱིས། །
थ दे ज़िन प म तग तङ ञोम क्यीस्
द्वैत ग्रहण या उपेक्षा भाव से

དབེན་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་དག །
वेन छिर ख्योद् क्यि चोद् प योङ सु दग
रहित होने से आपका आचरण परिशुद्ध है।8।

འདུན་པ་དང་ནི་བརྩོན་འགྲུས་དྲན་པ་དང་། །
दुन प दङ नि त्सोन डुस् डेन प दङ
छन्द, वीर्य, स्मृति

ཏིང་འཛིན་ཤེས་རབ་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ལ། །
तिङ ज़िन शेस् रप नम पर डोल व ल
ध्यान, प्रज्ञा विमुक्ति के लिये

ཉམས་པའི་གོ་སྐབས་མ་ལུས་རིང་དུ་མཛད། །
ञम पई गो कप म लुस् रिङ दु ज़े
खण्डित होने के अवसर सुदूर करने से

དེ་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱི་རྟོགས་པ་བླ་ན་མེད། །
दे छिर ख्योद् क्यि तोग प ल न मेद्
आपका अधिगम अनुत्तर है।9।

དུས་གསུམ་ཐམས་ཅད་ཆགས་ཐོགས་མེད་པར་མཁྱེན། །
दुस् सुम थम चे छग थोग मेद् पर ख्येन
समस्त त्रिकाल विराग, अप्रतिघ रूप से जानते हैं

སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་འཕྲིན་ལས་རྣམ་པར་དག །
कु सुङ थुग क्यि ठिन लेस नम पर दग
काय, वाक्, चित्त कृत्य विशुद्ध है

སྲིད་པའི་ཕྱི་མཐའ་ཇི་སྲིད་འགྲོ་བའི་དོན། །
सिद् पई छि था जि सिद् डो बई दोन
भवान्त तक जगतार्थ करने का

མཛད་པའི་ཁུར་གྱིས་དགྱེས་བཞིན་འཇུག་པ་ཁྱོད། །
ज़े पई खुर ग्यीस् ग्येस् शिन जुग प ख्योद्
दायित्व अपने कन्धे पर उठाये आप।10।

རྒྱ་ཆེའི་ཡོན་ཏན་ཕུང་པོ་རབ་རྫོགས་པས། །
ग्य छे योन तेन फुङ पो रप ज़ोग पेस्
विपुल गुण राशि को सम्पन्न कर

ཁྱོད་ཀྱི་བརྩེ་བའི་ཡུལ་དུ་གྱུར་པ་བདག །
ख्योद् क्यि ज़े बई युल दु ग्युर प दग
आपके कृपा का पात्र मैं

སྡུག་བསྔལ་རྒྱ་མཚོ་ཆེ་ལས་སྒྲོལ་བའི་གྲུ། །
दुग ङल ग्य छो छे लेस डोल बई डु
महासागर से पार होने वाला नाव

བག་མེད་ལེ་ལོ་གཉིད་དང་བྲེ་མོའི་གཏམ། །
बग मेद् ले लो ञिद् दङ डे मोइ तम
अप्रमाद, आलस्य, नींद और प्रेत कहानी

དོན་མེད་ཕྱོགས་སུ་བཀོལ་བས་དོན་ཆེན་པོ། །
दोन मेद् छोग सु कोल वे दोन छेन पो
व्यर्थ की ओर लगाकर महान् अर्थ

མི་ཡི་ཤ་ཚུགས་ཕྱུགས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་ཅན། །
मि यि श छुग छुग क्यि दु शेस् चेन
आदमी रूपी पशु संज्ञान

ཉེད་དཀའ་དོན་ཆེའི་དལ་འབྱོར་ཐོབ་པ་ཡང་། །
ञेद् का दोन छे दल छोर थोप प यङ
सुदुर्लभ महर्थि क्षणसम्पद् लब्ध यह शरीर भी

སྟོབས་ལྡན་འཆི་བདག་ཕོ་ཉ་བཀྱེ་བ་དང་། །
तोप देन छि दग फो ञ बक्ये व दङ
बलवान् मृत्यु-अधिपति के संदेश वाहक भेजने पर और

ནམ་འཆི་ངེས་མེད་འཆི་བའི་དུས་ཀྱི་ཚེ། །
नम छि ङेस् मेद् छि बई दुस् क्यि छे
कब मरुँ, अनिश्चित मृत्यु-काल में

ཕྲ་མོའི་སྐྱོན་ཡང་འཇུག་པའི་སྐབས་བཅོམ་པ། །
ठ मोइ क्योन यङ जुग पई कप चोम प
क्षुद्र दोष प्रवृत्ति का अवसर नष्ट कर

སྨྲེ་སྔགས་སྒོ་ནས་སྨྲ་ལ་ཡུད་ཙམ་དགོངས། །
मे ङग गो नेस् म ल युद् ज़म गोङ
विलाप पूर्ण कह रहा हूँ, क्षण भर के लिये ध्यान दें।11।

དལ་འབྱོར་ཚང་བའི་རྟེན་འདི་ཡིན་ན་ཡང་། །
दल छोर छ़ङ बई तेन दि यिन न यङ
क्षणसम्पद् से युक्त यह आश्रय भी

ཉེད་བཀུར་འདོད་པའི་སྐྱོན་གྱིས་སྦགས་པ་ཡིས། །
ञेद् कुर दोद् पई क्योन ग्यीस् बग प यीस्
लाभ-सत्कार कामगुणों के दोष स लिप्त होकर।12।

བདེ་བླག་བསྒྲུབ་པའི་ལུས་བཟང་ཆུད་གསོན་པ། །
दे लग डुप पई लुस् ज़ङ छुद् सोन प
सुगमता पूर्वक सिद्ध करने वाले इस भद्र शरीर को विनाश कर

བདག་ལ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེས་གཟིགས་སུ་གསོལ། །
दग ल ख्योद् क्यि थुग जेस् ज़िग सु सोल
मुझे कृपा आप करुणा पूर्वक देखें।13।

སྟོབས་ཀྱིས་མི་བཟློག་འབྲོས་པར་མི་ནུས་པའི། །
तोप क्यीस् मि दोग डोस् पर मि नुस् पई
बल से विनिवृत, भाग कर नहीं बच सकने वाले

ན་དང་རྒ་བས་ཟིན་པར་མཐོང་ན་ཡང་། །
न दङ ग वे ज़िन पर थोङ न यङ
अस्वस्थ, जरा से ग्रसित देखने पर भी।14।

ཐམས་ཅད་བོར་ནས་འགྲོ་བ་མ་དྲན་པར། །
थम चे बोर नेस् डो व म डेन पर
समस्त त्याग कर जाना होगा- ऐसा स्मरण न कर

ལོ་ཟླ་ཞག་རྣམས་དོན་མེད་འདའ་བྱེད་པའི། །
लो द शग नम दोन मेद् दा छेद् पई
वर्ष, माह, दिन व्यर्थ में गंवा कर

རབ་རྨོངས་བདག་ལ་བརྩེ་བའི་དུས་ལ་བབ། །
रप मोङ दग ल त्ज़े बई दुस् ल बप
अति मूर्ख मुझ पर कृपा करने का समय आया है।15।

ངེས་པར་ལེགས་པའི་གོ་འཕང་སྨོས་ཅི་དགོས། །
ङेस् पर लेग पई गो फङ मोस् चि गोस्
निश्रेयस-पद का तो कहना ही क्या

ལམ་གྱི་རྟེན་དུ་ཐུབ་པས་བསྔགས་པ་ཡི། །
लम ग्यि तेन दु थुप पेस् ङग प यि
मनि द्वारा प्रशंसित मार्गों का आधार

མཐོ་རིས་ཙམ་ཡང་ཐོབ་པའི་གདེང་མེད་པ། །
थो रीस् त्ज़म यङ थोप पई देङ मेद् प
सुगति मात्र प्राप्ति का भी मुझमें विश्वास नहीं

བདག་ལ་ཁྱེད་ཀྱིས་བཏང་སྙོམས་མཛད་ལགས་སམ། །
दग ल ख्येद् क्यीस् तङ ञोम ज़े लग सम
ऐसे में क्या आप मुझ पर अपेक्षा भाव रख सकते हैं।16।

མཐོ་རིས་དཔལ་དང་ལྡན་པའི་ལུས་ཐོབ་ཀྱང་། །
थो रीस् पल दङ देन पई लुस् थोप क्यङ
सुगति के श्री से युक्त शरीर को प्राप्त कर भी

གསུང་རབ་ཚུལ་བཞིན་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །
सुङ रप छुल शिन छेद् पई शेस् रप क्यीस्
बुद्ध वचनों को प्रज्ञा द्वार विधिवत विभाजन नहीं जाना

མ་ནོར་ལམ་བཟང་རྙེད་པར་མ་གྱུར་ན། །
म नोर लम ज़ङ ञेद् पर म ग्युर न
अभ्रान्त भद्र मार्ग को प्राप्त न कर सका

སླར་ཡང་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་ཉིད་དུ་ལྟུང་། །
लर यङ खोर बई ग्य छ़ो ञिद् दु तुङ
पुनः संसार चक्र में पतन को प्राप्त हूँगा।17।

དེ་ཕྱིར་གཏི་མུག་མུན་པའི་སྨག་ཆེན་གྱིས། །
दे छिर ति मुग मुन पई मग छेन ग्यीस्
अतः घनघोर अज्ञान रूपी अन्धकार से

ཡུན་རིང་དུས་སུ་བསྒྲིབས་པས་བླང་དོར་གནས། །
युन रिङ दुस् सु डिप पेस् लङ दोर नेस्
दीर्घकाल तक आवृत्त होकर हेय-उपादेय का

ཇི་བཞིན་འབྱེད་ལ་ཀུན་ནས་འཐོམས་གྱུར་པ། །
जि शिन छेद् ल कुन नेस् थोम ग्युर प
यथावत ज्ञान से पूर्ण वञ्चित रहा

བདག་ལ་ཤེས་རབ་སྒྲོན་མེ་སྩོལ་ཏུ་གསོལ། །
दग ल शेस् रप डोन मे त्ज़ल तु सोल
ऐसे, मुझे प्रज्ञा का मशाल प्रदान करें, मेरी प्रार्थना है।18।

རབ་འབར་ལྕགས་ཀྱི་ས་གཞིར་མེ་ལྕེས་སྲེག་ཅིང་ལུས་ལ་མཚོན་ཆའི་ཆར་པ་འབབ། །
रप बर चग क्यि स शिर मे चेस् सेग चिङ लुस् ल छ़ोन छई छर प बप
स्व जलित लोह-फर्श अग्नि ज्वाला से जला तथा शरीर पर अस्त्रों की वृष्टि

གཤིན་རྗེའི་སྐྱེས་བུས་གསལ་ཤིང་ལ་བསྐྱོན་ཟངས་ཞུན་ལྡུད་ཅིང་ཕུར་བུས་ལྕེ་ལ་འདེབས། །
शिन जे क्येस् बुस् सल शिङ ल क्योन ज़ङ शुन दुद् चिङ फुर बुस् चे ल देप
यमदूतों द्वारा शूल पर चढ़ा, पिगले ताम्र उडेल नुकीले कील गाढ,

གངས་རིས་བསྐོར་བའི་འཁྱག་པའི་སྦུབས་ཆུད་བུ་ཡུག་འཚུབས་པའི་རླུང་གིས་བཏབ་པ་ཡིས། །
गङ रीस् कोर बई ख्यग पई बुप छुद् बु युग छुप पई लुङ गीस् तप प यीस्
हिमालय से गिरे बर्फ के वीच, बर्फीले तुफानों के अन्दर

ལ་ལར་ཆུ་བུར་བརྒྱ་བྱུང་ལ་ལར་རྡོལ་ཞིང་ལུས་ནི་ཚལ་པ་དུ་མར་གས། །
ल लर छु बुर ग्य छुङ ल लर दोल शिङ लुस् नि छ़ल प दु मर घेस
किसी-किसी को सैंकडों फोडे निकल तथा किसी-किसी का शरीर अनेक अंगों में फटकर।19।

གདོང་ནི་སྐྲས་ཁེབས་ཁ་ནི་སྐམ་ཞིང་ཆུ་ཀླུང་མཐོང་སྟེ་བཏུང་ཕྱིར་རྒྱུགས་པ་ན། །
दोङ नि टेस् खेप ख नि कम शिङ छु लुङ थोङ ते तुङ छिर ग्युग प न
मुँह बाल से आवृत्त, मुँह सूखा, नदी देख पीने के लिये उस ओर दौड़ने पर

རལ་གྲི་མདུང་ཐུང་རྣམས་ཐོགས་པའི་སྐྱེས་བུས་འགོགས་ཤིང་ཆུ་ཡང་རྣག་ཁྲག་ཉིད་དུ་མཐོང་།
रल डि दुङ नम थोग पई क्येस् बुस् गेग शिङ छु यङ नग ठग ञिद् दु थोङ
असि, भाला, धारण किये पुरुषों द्वारा रोकने तथा पानी रक्त-पीब में परिवर्तित दिख

ཁ་ནི་ཁབ་ཀྱི་མིག་ཙམ་ལྟ་བས་མགྲིན་འགགས་ཟས་སྐོམ་རྙེད་ཀྱང་སྤྱོད་མི་ནུས། །
ख नि खप क्यि मिग ज़म ब वे डिन गग ज़ेस् कोम ञेद् क्यङ चोद् मि नुस्
मुख सुई के नोक भर, कण्ठ गलगण्ड भरे भोजन-पानी मिलने पर भी उपभोग नहीं कर सकते

ཟོས་ཤིང་འཐུང་རྣམས་འབར་ནས་ཚིག་ཅིང་བཤང་གཅིས་འཚོ་ལ་རང་ཤ་བཅད་དེ་ཟ། །
ज़ोस् शिङ थुङ नम बर नेस् छ़िग चिङ शङ चीस् छ़ो ल रङ श चे दे ज़
खाद्य-पेय जलते हैं, विष्ठा, मूत्र, अपना मांस स्वयं काट खाते हैं।20।

རྨོངས་པའི་མུན་ཆེན་འཐིབས་པས་ལམ་དང་ལམ་མིན་འབྱེད་ལ་བློ་ཡི་ནུས་པ་བྲལ། །
मोङ पई मुन छेन थिप पेस् लम दङ लम मिन छेद् ल लो यि नुस् प डल
मूढ, महान्धकार से आवृत्त होकर मार्ग-कुमार्ग का प्रभेद बुद्धि की क्षणता रहित हो

གཅིག་ལ་གཅིག་གསོད་ལྷ་མིའི་གཞན་དབང་གྱུར་པས་བརྡེག་དང་བཀོལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་འབབ། །
चिग ल चिग सोद् ल्ह मी शेन वङ ग्युर पेस् देग दङ कोल बई दुग ङल बप
एक-दूसरे को मारते, देव-मनुष्यों के अधिकार में होकर मारने तथा दासता आदि दुःख

ལྷ་རྣམས་དཔལ་ལ་འཁྲུག་པའི་ཕྲག་དོག་མེ་ཆེན་འབར་བས་ཡིད་བདེའི་གོ་སྐབས་བཅོམ། །
ल्ह नम पल ल ठुग पई ठग दोग मे छेन बर वे यिद् दे गो कप चोम
देवों के श्री से कुपित इर्ष्या का महाग्नि जलते रहने से मन में प्रीति का असर नहीं

འཐབ་རྩོད་ལས་བྱུང་ལུས་བཅད་དྲལ་ཞིང་གཡོ་སྒྱུས་བསླད་པས་བདེན་མཐོང་སྐལ་བ་མེད། །
थप ज़ोद् लेस छुङ लुस् चे डल शिङ यो ग्युस् ले पेस् देन थोङ कल व मेद्
**युद्ध के कारण शरीर का अंग कट कर अलग होने तथा शठ्-शाठ्य के चलते सत्य दर्शन का भाग्य नहीं।21।**

དེ་ལྟར་མཐོང་བ་ལྟ་ཞོག་ཐོས་ན་ཡང་། །
दे तर थोङ व त शोग थोस् न यङ
**ऐसा देख दूरतः सुनने मात्र से**

སྙིང་ལ་འཇིགས་བསྐྱེད་སྐྱི་ནི་གཡའ་བ་ཡི། །
ञिङ ल जिग क्येद् क्यि नि या व यि
**हृदय में भय से संत्रस्त**

དམྱལ་བ་ཡི་དྭགས་དུད་འགྲོ་ལྷ་མིན་གྱི། །
न्यल व यि दग दुद् डो ल्ह मिन ग्यि
**नरक, प्रेत, तिर्यक्, असुरों के**

གཡང་ས་ཆེན་པོ་དག་ཏུ་ལྟུང་འགྱུར་བའི། །
यङ स छेन पो दग तु तुङ ग्युर बई
**महागर्त में पतित होने का।22।**

དམ་པས་སྨད་པའི་མི་བཟད་སྡིག་པའི་ལས། །
दम पेस् मे पई मि ज़े दिग पई लेस
**सज्जनों द्वारा निन्दनीय घोर पाप कर्म को**

ཐོག་མེད་དུས་ནས་བསགས་ཤིང་གསོག་འགྱུར་བ། །
थोग मेद् दुस् नेस् सग शिङ सोग ग्युर व
**आदि काल से संचित कर जमा किया**

གཡང་ས་ཆེན་པོར་མངོན་ཕྱོགས་ཉམ་ཐག་བདག །
यङ स छेन पोर ङोन छोग ञम थग दग
**महागर्त में अभिमुख अति दुर्बल मुझे**

ངན་འགྲོའི་འཇིགས་ལས་སྒྲོལ་བའི་དུས་ལ་བབ། །
ङेन डोइ जिग लेस डोल बई दुस् ल बप
**दुर्गति भय से तारने का समय आया है।23।**

མི་ཡི་གནས་ནའང་ལོངས་སྤྱོད་དབང་ཕྱུག་གིས། །
मि यि नेस् नहृङ लोङ चोद् वङ छुग गीस्
**मनुष्य लोक में भी ऐश्वर्य के**

མངོན་པར་མཐོ་ན་ཉམས་ཀྱི་དོགས་པ་དང་། །
ङोन पर थो न ञम क्यि दोग प दङ
**अभ्युदय के बाद क्षय का भय**

མཐོ་རིས་ཡོན་ཏན་འབྱོར་པས་ཕོངས་པ་ན། །
थो रीस् योन तेन छोर पेस् फोङ प न
**सुगति सम्पत्ति गुण प्राप्ति के बाद पुनः संकट में**

འདོད་བདེ་འཚོལ་བར་འགྱུར་བས་ཤ་ཐང་ངོ་། །
दोद् दे छ़ोल बर ग्युर वे श थङ ङो
**काम सुख की खोज मं परिश्रान्त।24।**

བདེ་བར་འདོད་ནས་དེ་ཡི་ཐབས་སྒྲུབ་པས། །
दे वर दोद् नेस् दे यि थप डुप पेस्
**सुख की कामना से उसके उपाय व्यवस्था में**

བདེ་བ་ཐོབ་པ་དེ་ལས་ཆེས་ལྷག་པའི། །
दे व थोप प दे लेस छेस् ल्हग पई
**सुख की प्राप्ति पर उससे ज्यादा सुख की चाह में**

ལུས་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་སེམས་ཀྱི་ཡིད་མི་བདེ། །
लुस् क्यि दुग ङल सेम क्यि यिद् मि दे
**शरीर में कष्ट-पीडा मन अशान्त**

རྣམ་པ་དུ་མས་ཀུན་ནས་མནར་བར་འགྱུར། །
नम प दु मेस कुन नेस् मनर बर ग्युर
**अनेक प्रकार से सन्तप्त।25।**

ལུས་མཛེས་རིན་ཆེན་རྒྱན་གྱིས་རབ་བརྒྱན་ནས། །
लुस् ज़ेस् रिन छेन ग्येन ग्यीस् रप ग्येन नेस्
रूपवान् रत्नों से सु-अलंकृत

ཁང་བཟང་དགའ་བའི་ཚལ་དུ་གནས་བཅས་ཤིང་། །
खङ ज़ङ गा बई छ़ल दु नेस् चेस् शिङ
भद्र प्रसाद, मनोहर उद्यान से युक्त

ཡུན་རིང་འདོད་པའི་བདེ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་པ། །
युन रिङ दोद् पई दे ल लोङ चोद् प
दीर्घकाल तक काम-सुख का उपभोग कर

མཐོ་རིས་དཔལ་ལ་རོལ་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱང་། །
थो रीस् पल ल रोल पई ल्ह नम क्यङ
स्वर्ग के श्री से विलासित देव भी।26।

མི་འདོད་འཆི་བའི་ལྟས་ཀྱིས་ཟིན་པ་ན། །
मि दोद् छि बई तेस् क्यीस् ज़िन प न
अनभीष्ट मृत्यु लक्षण से गृहीत होने पर

ཡིད་འཕྲོག་སྙིང་ལ་གཙགས་པར་གྱུར་པ་ཡི། །
यिद् ठोगञिङ ल चग पर ग्युर प यि
मनोहर हृदय स्पर्शी

ལྷ་ཡི་མཛེས་མ་ཡིད་འོང་སྐྱེད་མོས་ཚལ། །
ल्ह यि ज़ेस् म यिद् ह़ोङ क्येद् मोस् छ़ल
अपसरायें मनोहर उद्यान

བདུད་རྩི་ཁ་ཟས་གོས་བཟང་མཛེས་པའི་རྒྱན། །
दुद् त्ज़ि ख ज़ेस् गोस् ज़ङ ज़ेस् पई ग्येन
अमृत-पेय, दिव्य वस्त्र सुन्दर अलंकार।27।

ལྷ་བུ་གཞོན་ནུ་རྣམས་དང་མྱུར་དུ་བདག །
ल्ह बु शोन नु नम दङ न्युर दु दग
देवपुत्र, पुत्रियों से शीघ्र ही मैं अपने को

མི་འདོད་བཞིན་དུ་འབྲལ་བར་མཐོང་བའི་ཚེ། །
मि दोद् शिन दु डल बर थोङ बई छ़े
इच्छा विपरीत वियोग को देखने पर

གནས་དེར་སྐྱེས་པའི་ལུས་ཀྱི་བདེ་བ་ལས། །
नेस् देर क्येस् पई लुस् क्यि दे व लेस
वहाँ उत्पन्न होने पर शारीरिक सुख से

ཆེས་ཆེར་ལྷག་པའི་ཡིད་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་གྱིས། །
छेस् छेर ल्हग पई यिद् क्यि दुग ङल ग्यीस्
कहीं ज्यादा मानसिक दुःख से।28।

བསྐྱེད་པའི་མྱ་ངན་མེ་ལྕེ་འབར་བས་བསྲེག །
क्येद् पई न्य ङेन मे चे बर वे सेग
उत्पन्न अग्नि ज्वाला रूपी शोक से सन्तप्त

ཚེ་རབས་མང་པོར་ལེགས་པར་སྤྱད་པའི་ལས། །
छ़े रप मङ पोर लेग पर चे पई लेस
अनेक जन्मों में सदाचरण कर्मों को

འབད་པས་བསྒྲུབས་པའི་འབྲས་བུ་སྤྱད་པས་ཟད། །
बे पेस् डुप पई डेस् बु चे पेस् ज़े
उद्यान से सम्पन्न किया फल भोग कर क्षय हो तथा

བག་མེད་དབང་གིས་ངན་འགྲོའི་རྒྱུ་བསྒྲུབས་པས། །
बग मेद् वङ गीस् ङेन डोइ ग्यु डुप पेस्
प्रमादवश दुर्गति का हेतु संचित कर।29।

སླར་ཡང་ངན་སོང་གནས་སུ་ལྷུང་བར་འགྱུར། །
लर यङ ङेन सोङ नेस् सु ल्हुङ बर ग्युर
पुनः दुर्गति में पतित होगा

འདོད་ལ་འདུན་པའི་རྣམ་རྟོག་གནོད་སེམས་མེད། །
दोद् ल दुन पई नम तोग नोद् सेम मेद्
काम इच्छा का विकल्प तथा हिंसा वृत्ति अभाव

གཉིད་དང་ཡིད་ལ་གདུང་བའི་སྤྱོད་པ་སྤང་། །
ञिद् दङ यिद् ल दुङ बई चोद् प पङ
निद्रा, क्लिष्ट मानसिक चर्या का त्याग

ལུས་དང་སེམས་ལ་གནོད་པའི་སྡུག་བསྔལ་བྲལ། །
लुस् दङ सेम ल नोद् पई दुग ङल डल
शरीर और मन के नुकसान से दुःख पीडा का अभाव।30।

ཏིང་འཛིན་སྟོབས་ཀྱིས་ཡུན་རིང་བདེར་གནས་པ། །
तिङ ज़िन तोप क्यीस् युन रिङ देर नेस् प
ध्यान के बल से दीर्घकाल तक सुखमय स्थित हो

གཟུགས་དང་གཟུགས་མེད་ལྷ་ཡི་གནས་ཐོབ་ཀྱང་། །
ज़ुग दङ ज़ुग मेद् ल्ह यि नेस् थोप क्यङ
रूप, अरूपी देव-स्थान की प्राप्ति करने पर भी

འདུ་བྱེད་སྡུག་བསྔལ་འཆིང་ལས་མ་གྲོལ་བས། །
दु छेद् दुग ङल छिङ लेस म डोल वे
संस्कार दुःख के बन्धन से मुक्त नहीं होने से

སྔོན་གྱི་ཏིང་འཛིན་འཕེན་པ་ཟད་པ་ན། །
ङोन ग्यि तिङ ज़िन फेन प ज़े प न
पूर्व संचित ध्यान का परिणाम क्षय होने से

ཕྱིར་ཡང་འོག་ཏུ་ལྷུང་ནས་བརྒྱུད་མར་འཁོར། །
छिर यङ ह़ोग तु ल्हुङ नेस् ग्युद् मर खोर
पुनः नीचे पतित होकर निरन्तर संसार में भ्रमण करेगा।31।

དེ་ལྟར་འཁོར་བའི་གཙོ་བོ་ལྷ་མི་ཡང་། །
दे तर खोर बई त्सो वो ल्ह मि यङ
इस प्रकार सांसारिक प्रमुख देव भी

སྐྱེ་འཆི་ན་དང་རྒ་ལ་སོགས་པ་ཡི། །
क्ये छि न दङ ग ल सोग प यि
जन्म, मरण, रोग, जरा आदि

སྡུག་བསྔལ་ཆུ་བོས་སྲིད་པའི་མཚོར་ཁྱེར་ན། །
दुग ङल छु बोस् सिद् पई छ़ोर ख्येर न
दुःख-सागर भव सागर में ले जायें तो

སྲིད་པའི་བདེ་ལ་ཆགས་པར་མི་རིགས་མོད། །
सिद् पई दे ल छग पर मि रिग मोद्
तृष्णा के सुख में आसक्ति उचित नहीं।32।

འོན་ཀྱང་སྲེད་པས་བློ་མིག་བསྒྲིབས་པ་ཡིས། །
ह़ोन क्यङ सेद् पेस् लो मिग डिप प यीस्
लेकिन तृष्णा द्वारा बुद्धि-चक्षु को आवृत्त करने से

སྡུག་བསྔལ་བདེ་བར་འཛིན་པའི་ལོག་ཤེས་ཅན། །
दुग ङल दे वर ज़िन पई लोग शेस् चेन
दुःख को सुख समझने वाले मिथ्या-दृष्टि वाले

ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་རྟོག་པས་བསྒྲིབས་པ་བདག །
छिन चि लोग गि तोग पेस् डिप प दग
विपरीत बुद्धि से आवृत्त मुझे

སྲིད་པའི་ཆུ་བོ་ཆེ་ལས་བསྒྲལ་དུ་གསོལ། །
सिद् पई छु बो छे लेस डल तु सोल
महाभव सागर से पार करें, ऐसी मेरी प्रार्थना है।33।

འདོད་པའི་འདམ་དུ་བྱིང་བས་ཐར་པའི་ལམ་ལས་གོལ། །
दोद् पई दम दु छिङ वे थर पई लम लेस गोल
काम-पंक में धंसे मोक्ष-मार्ग स भटके

མ་རིག་འཐིབས་པོར་ཞུགས་པས་ཤེས་རབ་མིག་དང་བྲལ། །
म रिग थिप पोर शुग पेस् शेस् रप मिग दङ डल
घोर अन्धकार में बैठे प्रज्ञाचक्षु से रहित

སྤྲོས་པའི་གཟེབ་ཏུ་ཚུད་པས་འཁོར་བའི་བཙོན་རར་བཅིངས། །
टोस् पई ज़ेप तु छ़ुद् पेस् खोर बई त्ज़ोन रर चिङ
प्रपञ्च रूपी जाल में पड़कर संसार रूपी जेल में बन्धा

ལས་ཀྱིས་མནར་བ་བདག་ནི་ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེའི་གནས། །
लेस क्यीस् मनर व दग नि ख्येद् क्यि थुग जे नेस्
कर्म का मारा में आपके कृपा का विषय हूँ।34।

འཇིགས་རུང་འཁོར་བའི་གཡང་ས་འགེགས་པ་ལ། །
जिग रुङ खोर बई यङ स गेग प ल
भयावह सांसारिक दर्रा का पाटने के लिये

དྲི་མེད་མང་དུ་ཐོས་ལ་བརྟེན་པ་ཡི། །
डि मेद् मङ दु थोस् ल तेन प यि
निर्मल बहुश्रुत का सेवन कर

ཚུལ་བཞིན་དཔྱོད་པའི་རྣམ་དག་རིགས་སྟོབས་ཀྱིས། །
छ़ुल शिन चोद् पई नम दग रिग तोप क्यीस्
विधिवत विश्लेषण और विशुद्ध युक्ति बल से

མཐའ་ཡས་གསུང་རབ་རྣམས་ཀྱི་དྲང་ངེས་ཚུལ། །
था येस् सुङ रप नम क्यि डङ ङेस् छ़ुल
अनन्त वचनों के नेयार्थ-नीतार्थ विधि का।35।

ཇི་བཞིན་ཕྱེད་པས་གཞན་དྲིང་མི་འཇོག་པའི། །
जि शिन छेद् पेस् शेन डिङ मि जोग पई
यथावत भेदकर बिना किसी का आश्रय लिये

མཁས་པའི་གོ་འཕང་ངེས་པར་རྙེད་དགོས་ཀྱང་། །
खेस् पई गो फङ ङेस् पर ञेद् गोस् क्यङ
विज्ञ-पद को निश्चित रूप से प्राप्त करना आवश्यक होने पर भी

རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་ཕྲ་མོ་སྨོས་ཅི་དགོས། །
ग्यल वई गोङ प ठ मो मोस् चि गोस्
जिनके अति सूक्ष्म आशयों का कहना ही क्या

འཇུག་ལྡོག་གནས་ནི་ཤིན་ཏུ་རགས་པ་ལའང་། །
जुग दोग नेस् नि शिन तु रग प लह़ङ
प्रवृत्ति-निवृत्ति सम्बन्धित अति स्थूल विषयों का भी।36।

བདག་གི་བློ་མིག་ཆེས་ཆེར་གསལ་མ་གྱུར། །
दग गि लो मिग छेस् छेर सल म ग्युर
मेरा बुद्धि-चक्षु यदि स्पष्ट नहीं हों

ད་དུང་རབ་རྨོངས་དགྲ་འདིས་བདག་གི་སྙིང་། །
द दुङ रप मोङ ड दीस् दग गि ञिङ
उसके ऊपर अति मूढ़ रूपी शत्रू द्वारा मेरे हृदय मन को

རིང་དུ་བསྒྲིབས་ན་གྲོལ་བའི་སྐབས་མེད་པ། །
रिङ दु डिप न डोल बई कप मेद् प
चिरकाल से आवृत्त कर मोक्ष का अवसर ही न दिया हो

ཚུལ་འདི་དགོངས་ལ་སྙིང་གི་མུན་པ་སོལ། །
छ़ुल दि गोङ ल ञिङ गि मुन प सोल
इस स्थिति को विचार कर मेरे हृदयान्धकार को नष्ट करें।37।

རྒྱལ་བ་རྒྱལ་སྲས་སྤྱན་སྔར་རིག་གནས་ལ། །
ग्यल व ग्यल सेस् चेन ङर रिग नेस् ल
जिन और जिन पुत्रों के आँखों के सम्मुख विद्या का

མང་ཐོས་རྒྱ་མཚོས་སྐྱེ་བ་དུ་མ་རུ། །
मङ थोस् ग्य छ़ोस् क्ये व दु म रु
बहुश्रुत सागर सदृश इस अनेक जन्मों में

ཡང་ཡང་སྦྱངས་པའི་བག་ཆགས་ལེགས་སད་པ། །
यङ यङ छङ पई बग छग लेग से प
पुनः पुनः अभ्यास से सुसंस्कार जागृत हों

སྔོན་གྱི་དམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཡལ་བར་དོར། །
ङोन ग्यि दम प नम क्यीस् यल बर दोर
पूर्व के यह पुरुषों द्वारा उपेक्षित

ཕྱོགས་རྣམས་བརླད་པའི་འགྲོན་པོ་བཞིན་གྱུར་པས། །
छोग नम ले पई डोन पो शिन ग्युर पेस्
दिग् भ्रमित यात्री सदृश हुये को

ཡང་དང་ཡང་དུ་གུས་པས་བསྟེན་པའི་སྐྱབས། །
यङ दङ यङ दु गुस् पेस् तेन पई क्यप
पुनः पुनः श्रद्धा पूर्वक सेवन करणीय शरण

མྱུར་བ་མྱུར་བར་ཕྱོན་ནས་བདག་གི་ནི། །
न्युर व न्युर बर छोन नेस् दग गि नि
शीघ्र-शीघ्र आकर मेरे

རྟག་ཏུ་བརྩེ་བས་ལུས་ཅན་མཐའ་དག་ལ། །
तग तु त्ज़े वे लुस् चेन था दग ल
सदैव कृपा पूर्वक सम्पूर्ण प्राणियों को

ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་དྲན་པས་དྭང་བའི་ཡིད། །
ख्योद् क्यि योन तेन डेन पेस् दङ बई यिद्
आपके गुणों का स्मरण करने पर प्रसन्नचित्त का

གནས་ཀྱིས་བསྐལ་ཞིང་སླར་ཡང་དབེན་པའི་རོ། །
नेस् क्यीस् कल शिङ लर यङ वेन पई रो
स्थान अतिदूरी के चलते पुनः विवेक-रस के

འཇུག་པར་འདོད་པས་ལུས་ཀྱིས་བགྲོད་མ་ནུས། །
जुग पर दोद् पेस् लुस् क्यीस् डोद् म नुस्
प्रवेश होने की इच्छा होने पर भी गमन में असमर्थ

འགྲོ་ལ་ལམ་བཟང་མཚོན་པའི་མིག་གཅིག་པུ། །
डो ल लम ज़ङ छोन पई मिग चिग पु
जगत को भद्रमार्ग लक्षित करने वाले मात्र एक लोकचक्षु।38।

དེ་ཕྱིར་མགོན་དང་བྲལ་བའི་ཕོངས་པ་བདག །
दे छिर गोन दङ डल बई फोङ प दग
अतः अनाथ संकट में गिरे मुझे

བརྩེ་ཆེན་ཁྱོད་ཀྱིས་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་དུས། །
त्ज़े छेन ख्योद् क्यीस् जेस् सु ज़ुङ बई दुस्
महाकृपालु आपके द्वारा अनुगृहीत करने का समय आया है।39।

བྱམས་པ་བྱམས་པས་འགྲོ་བ་སྒྲོལ་བ་ཁྱོད། །
छम प छम पेस् डो व डोल व ख्योद्
मैत्री द्वारा जगत को तारने वाले आप

སྐྱེ་བ་སྐྱེ་བར་ཐེག་མཆོག་བཤེས་གཉེན་མཛོད། །
क्ये व क्ये बर थेग छोग शेस् ञेन ज़ोद्
जन्म-जन्मान्तरों का उत्तम यान कल्याणमित्र बनें।40।

རྒྱུན་མི་འཆད་པར་གཟིགས་པ་ཁྱོད་དྲུང་དུ། །
ग्युन मि छे पर ज़िग प ख्योद् डुङ दु
निरन्तर अवलोकन करने वाले आपके सम्मुख

ཉིན་རེ་བཞིན་དུ་སླེབ་པར་བགྱིས་ན་ཡང་། །
ञिन रे शिन दु लेप पर ग्यीस् न यङ
प्रत्येक दिन अनुभूति करने पर भी।41।

རབ་ཏུ་མྱང་ཕྱིར་ཐག་རིང་གནས་སུ་ནི། །
रप तु न्यङ छिर थग रिङ नेस् सु नि
अतिस्वाद को (अनुभव हेतु) अतिदूर स्थान में

དེས་ན་བསོད་ནམས་ཞིང་གི་དམ་པ་ཁྱོད། །
देस् न सोद् नम शिङ गि दम प ख्योद्
अतः पुण्य का उत्तम क्षेत्र आप।42।

མཉེས་པར་བགྱི་སླད་ལྷག་བསམ་དག་པ་ཡིས། །
ञेस् पर ग्यि ले ल्हग सम दग प यीस्
प्रसन्न करने हेतु शुद्ध अध्याशय द्वारा

དགེ་སློང་རྣམས་ལ་ཐུབ་པས་བསྔགས་པ་ཡི། །
गे लोङ नम ल थुप पेस् ङग प यि
भिक्षुओं को मुनि द्वारा प्रशंसित

གཞན་ཡང་ཏིང་འཛིན་སྨོན་ལམ་གྱིས་སྤྲུལ་པའི། །
शेन यङ तिङ ज़िन मोन लम ग्यीस् टुल पई
अन्य ध्यान प्रणिधान द्वारा विकुर्वित

ཡོངས་སུ་བཀང་སྟེ་རྐང་གཉིས་གཙོ་བོ་ལ། །
योङ सु कङ ते कङ ञीस् त्सो वो ल
आकाश पूर्ण भरकर द्विपादों के प्रमुख

དེ་ལས་འོངས་པའི་རབ་དཀར་དགེ་བའི་ཚོགས། །
दे लेस ह़ोङ पई रप कर गे बई छ़ोग
उससे उपार्जित शुक्ल कुशल संभार

སྡུག་བསྔལ་བྱེ་བས་མནར་ཞིང་བདེ་བས་ཕོངས། །
दुग ङल छे वे मनर शिङ दे वे फोङ
कोटि दुःखों से सन्तप्त सुख से रहित

འཇིག་རྟེན་འདྲེན་པའི་གོ་འཕང་དམ་པ་ལ། །
जिग तेन डेन पई गो फङ दम प ल
जगत नायक के परम पद को

ཚངས་སྤྱོད་ཡོངས་སུ་དག་པའི་རབ་བྱུང་རྟེན། །
छ़ङ चोद् योङ सु दग पई रप छुङ तेन
परिशुद्ध ब्रह्मचर्या का आश्रय प्रव्रजित

བཟོད་ལྡན་དྲང་ཞིང་གྱ་གྱུ་མེད་པ་དང་། །
ज़ोद् देन डङ शिङ ग्य ग्यु मेद् प दङ
क्षान्ति युक्त ऋजु, अविचल और

རིན་ཆེན་ས་ལེ་སྦྲམ་དང་ལྷ་ཡི་དར། །
रिन छेन स ले डम दङ ल्ह यि दर
कनक-रत्न और दिव्य वस्त्र

ཆོས་གོས་གསུམ་དང་གསིལ་བྱེད་དྲང་སྲོང་སྣོད། །
छोस् गोस् सुम दङ सिल छेद् डङ सोङ नोद्
त्रिचीवर, पंखा और भिक्षापात्र।43।

བཀོད་ལེགས་ཡིད་འཕྲོག་མཆོད་པ་ནམ་མཁའི་ཁྱོན། །
कोद् लेग यिद् ठोग छोद् प नम खई ख्योन
सुवियूह मनोहर पूजा सामग्री

ཞེན་མེད་མ་ཆགས་བློ་ཡིས་དབུལ་བར་བགྱི། །
शेन मेद् म छग लो यीस् उल बर ग्यि
अभिनिवेश और राग-हीन बुद्धि से भेंट करूँगा।44।

གང་དེས་སྲིད་པར་ཡུན་རིང་འཁྱམས་པ་ན། །
गङ देस् सिद् पर युन रिङ ख्यम प न
जो हो, उससे भव में चिरकाल तक भ्रमण करते समय

མ་ལུས་འགྲོ་བའི་སྐྱབས་སུ་བདག་གྱུར་ཅིག །
म लुस् डो बई क्यप सु दग ग्युर चिग
अशेष जगत का मैं शरणदाता बनूँ।45।

རིག་པར་མ་གྱུར་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ། །
रेग पर म ग्युर क्ये व थम चे दु
स्पर्श न करने तक समस्त जन्मों में

རྙེད་ནས་ཐེག་མཆོག་རིགས་ནི་སད་པར་ཤོག །
ञेद् नेस् थेग छोग रिग नि से पर शोग
प्राप्त कर उत्तम यान का गोत्र जागृत हो।46।

མ་ཞུམ་སྙིང་སྟོབས་ཤུགས་དྲག་དད་པ་དང་། །
म शुम ञिङ तोप शुग डग दे प दङ
निसंकोच, धैर्यवान, अति श्रद्धावान

གུས་དང་རྟག་ཏུ་སྦྱོར་བའི་བརྩོན་འགྲུས་དང་། །
गुस् दङ तग तु छोर बई त्सोन डुस् दङ
आदर और निरन्तर प्रयोग-वीर्य तथा

རྣམ་དཔྱོད་ཤེས་རབ་ཕུལ་བྱུང་ཐོབ་པར་ཤོག །
नम चोद् शेस् रप फुल छुङ थोप पर शोग
विवेक अतिशय प्रज्ञा की प्राप्ति हो।47।

རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་རྣམ་དག་རིགས་སྟོབས་ཀྱིས། །
ग्यल वई गोङ प नम दग रिग तोप क्यीस्
विशुद्ध जिन-आशय के युक्त बल से

ཇི་བཞིན་ཉེད་ནས་རང་གིས་དགོངས་པ་ལྟར། །
जि शिन ञेद् नेस् रङ गीस् गोङ प तर
यथावत् ज्ञान (प्राप्त) कर स्व-आशय अनुसार

བརྩེ་བས་དྲངས་པའི་ཐབས་མཁས་སྤྱོད་པ་ཡིས། །
त्से वे डङ पई थप खेस् चोद् प यीस्
कृपा पूर्वक उपाय-कौशल चर्या से

གཞན་ལ་སྟོན་ལ་མཁས་པའི་མཐར་སོན་པའི། །
शेन ल तोन ल खेस् पई थर सोन पई
दूसरों को देशना करने में पारंगत होकर।48।

བཤེས་གཉེན་བསྟེན་ནས་མང་ཐོས་རྒྱ་མཚོ་ལ། །
शेस् ञेन तेन नेस् मङ थोस् ग्य छो ल
कल्याणमित्र सेवन से बहुश्रुत सागर को

རིང་དུ་སྦྱངས་པས་ཐེ་ཚོམ་ཀུན་བཅད་ནས། །
रिङ दु छङ पेस् थे छोम कुन चे नेस्
दीर्घकाल तक अभ्यास कर समस्त सन्देहों का उच्छेद कर

ཐོས་པའི་དོན་རྣམས་ཚུལ་བཞིན་བསྒྲུབས་པ་ཡིས། །
थोस् पई दोन नम छुल शिन डुप प यीस्
श्रुतार्थ विधिवत साधना कर

བདེ་བར་གཤེགས་རྣམས་མཉེས་པར་བྱེད་པར་ཤོག །
दे वर शेग नम ञेस् पर छेद् पर शोग
सुगतों को प्रसन्न करने वाला होउँ।49।

ཐུབ་པས་བཅས་པའི་མཚམས་ལས་མི་འདའ་ཞིང་། །
थुप पेस् चेस् पई छम लेस मि दा शिङ
मुनि के नियम सीमा का उल्लंघन न कर

རྒྱལ་བའི་གདུང་འཚོབ་དགེ་བའི་བཤེས་ལ་གུས། །
ग्यल वई दुङ छोप गे बई शेस् ल गुस्
जिन वंशज कल्याणमित्रों को भक्ति से

དབང་པོ་རབ་རྣོ་ལོག་སྒྲུབ་སྐྱོན་དང་བྲལ། །
वङ पो रप नो लोग डुप क्योन दङ डल
तीव्रेन्द्रिय विपरीत साधना के दोष से रहित

ཡོངས་སུ་དག་པའི་འཁོར་དང་ལྡན་པར་ཤོག །
योङ सु दग पई खोर दङ देन पर शोग
परिशुद्ध पार्षद से युक्त हो।50।

ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱིས་ཡིད་ནི་བསྐྱོད་པ་ཡིས། །
नग पोइ छोग क्यीस् यिद् नि क्योद् प यीस्
कृष्ण-पक्ष के द्वारा चित्त संचालित कर

ཚོགས་པའི་ཆོས་སྤྱོད་དགའ་སྟོན་སྤྱོང་བའི་གེགས། །
छ़ोग पई छोस् चोद् गा तोन न्योङ बई गेग
गण का धर्मचर्या, उत्सव के अनभव का विघ्न

བདུད་ཀྱི་གཉེན་དུ་གྱུར་པའི་སྡིག་གྲོགས་དང་། །
दुद् क्यि ञेन दु ग्युर पई दिग डोग दङ
मार-बन्धु रूपी पापी मित्र के साथ

སྐད་ཅིག་ཙམ་ཡང་ཐད་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
के चिग त्सम यङ ठे पर म ग्युर चिग
एक क्षण के लिये भी संगत न हों।51।

ཐུབ་དབང་རྗེས་སུ་གུས་པས་སློབ་པའི་ཚེ། །
थुप वङ जेस् सु गुस् पेस् लोप पई छे
मुनेश्वर का श्रद्धा पूर्वक अनुशिक्षण करन पर

སྐལ་བ་ངན་པའི་རྗེས་འགྲོ་བདུད་ཀྱི་ལས། །
कल व ङेन पई जेस् डो दुद् क्यि लेस
दुर्भाग्य का अनुकरण मार-कर्म है, अतः

རླབས་ཆེན་སྤྱོད་པ་རྫོགས་པར་བྱེད་པའི་གེགས། །
लप छेन चोद् प ज़ोग पर छेद् पई गेग
उदार चर्या को सम्पन्न करने वाला बाधक

བར་དུ་གཅོད་པའི་མིང་ཡང་མེད་པར་ཤོག །
बर दु चोद् पई मिङ यङ मेद् पर शोग
ऐसे विघ्नों का नाम तक नहीं रहे।52।

གང་དང་ལྡན་ན་དམ་པ་དགའ་བྱེད་པ། །
गङ दङ देन न दम प गा छेद् प
जो भी, जिससे भी, सज्जन हर्षित होते हों

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པའི་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་རྐྱེན། །
छङ छुप चोद् पई जेस् सु थुन पई क्येन
बोधिचर्या के अनुरूप प्रत्यय

དགེ་སྦྱོང་རྒྱན་དུ་འདྲེན་པས་བསྔགས་པ་ཡི། །
गे छोङ ग्येन दु डेन पेस् ङग प यि
श्रमण का अलंकार, नायक द्वारा स्तुत्य

མ་ལུས་ཐོགས་པ་མེད་པར་འགྲུབ་པར་ཤོག །
म लुस् थोग प मेद् पर डुप पर शोग
अशेष, अप्रतिघ सिद्ध हों।53।

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་ཚེ་གདུལ་བྱའི་གནས་ཀུན་ཀྱང་། །
छङ छुप चोद् छे दुल छई नेस् कुन क्यङ
बोधिचर्या के समय विनयजनों का स्थान भी

འགོད་ཅིང་དེ་ལ་འོས་པའི་ཡོ་བྱད་རྣམས། །
गोद् चिङ दे ल ह्रोस् पई यो छे नम
प्रवृत्त कर उनको उचित उपकरण

རྣམ་དག་བསླབ་པས་བསྡམས་པའི་རབ་བྱུང་ལ། །
नम दग लप पेस् बदम पई रप छुङ ल
विशुद्ध शिक्षाओं से संयमित प्रव्रजितों को

བསམ་པ་ཙམ་གྱིས་མ་ལུས་སྩོལ་བར་ཤོག །
सम प ज़म ग्यीस् म लुस् ज़ोल बर शोग
इच्छा मात्र से अशेष प्रदान करूँ।54।

དེང་ནས་བཟུང་སྟེ་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ། །
देङ नेस् ज़ुम ते छे रप थम चे दु
आज से प्रारम्भ कर समस्त जन्मों में

དེ་དག་ཐམས་ཅད་མཐའ་ཡས་འགྲོ་བ་ལ། །
दे दग थम चे था येस् डो व ल
वे सभी अनन्त जगत को

ལུས་ངག་ཡིད་ཀྱིས་རྩོམ་པ་གང་བགྱིས་པ། །
लुस् ङग यिद् क्यीस् ज़ोम प गङ ग्यीस् प
शरीर, वचन, मन के द्वारा जो प्रयत्न करें

གནས་སྐབས་ཀུན་ཏུ་ཕན་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །
नेस् कप कुन तु फेन पई ग्युर ग्युर चिग
तात्कालिक सभी कल्याण कारक बनें।55।

བུ་སྡུག་ཤི་བའི་དུས་ཀྱི་མ་བཞིན་དུ། །
बु दुग शि बई दुस् क्यि म शिन दु
इकलौते पुत्र के मरने पर माँ सदृश

སྡུག་བསྔལ་ཀུན་གྱིས་མནར་བའི་འགྲོ་བ་ཀུན། །
दुग ङल कुन ग्यीस् मनर बई डो व कुन
सभी दुःखों से पीडित समस्त प्राणियों को

རྟག་ཏུ་ཡིད་ལ་གཅགས་པའི་བརྩེ་བ་ཡིས། །
तग तु यिद् ल चग पई ॼे व यीस्
सदैव हृदय में बिठाये प्रेम से

འདོད་པ་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་གཏོང་བར་ཤོག །
दोद् प थम चे दे ल तोङ बर शोग
समस्त ऐच्छिक उन्हें उत्सर्ग करूँ।56।

མོས་སྤྱོད་ས་ཡི་དྲི་མ་སྦྱོང་བ་ན། །
मोस् चोद् स यि डि म छोङ व न
अध्याशयचर्या (प्रयोगमार्ग) भूमि के मल शोधन पर

འདས་དང་མ་འོངས་ད་ལྟར་བྱུང་བ་ཡི། །
देस् दङ म ह़ोङ द तर छुङ व यि
अतीत, अनागत, वर्तमान में आये

ཚུ་རོལ་མཐོང་བའི་རྒྱལ་སྲས་ནང་ན་བདག །
छु रोल थोङ बई ग्यल सेस् नङ न दग
लोक को देखने वाले जिनपुत्रों के मैं

གསེར་གྱི་ས་འཛིན་དབུས་ན་ལྷུན་པོ་བཞིན། །
सेर ग्यि स ज़िन उस् न ल्हुन पो शिन
सुवर्ण-भूमि मध्य सुमेरु पर्वत सदृश।57।

སྤྱན་དང་མངོན་ཤེས་མང་དུ་ཐོས་པ་སོགས། །
चेन दङ ङोन शेस् मङ दु थोस् प सोग
चक्षु, अभिज्ञा बहुश्रुत इत्यादि

ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱིས་རབ་ཏུ་མཐོ་བ་དང་། །
योन तेन कुन ग्यीस् रप तु थो व दङ
समस्त गुणों में सबसे ऊपर और

བྱིས་པའི་རྒུད་པ་ཀུན་ལས་འདས་གྱུར་ཏེ། །
छीस् पई गुद् प कुन लेस देस् ग्युर ते
समस्त बाल संकट से अतीत

གཞན་དྲིང་མི་འཇོག་སྤོབས་པ་ཐོབ་པར་ཤོག །
शेन डिङ मि जोग पोप प थोप पर शोग
अपर प्रत्यय न हो, प्रतिभाशील बनूँ।58।

རྒྱལ་སྲས་འཕགས་པའི་ས་ལ་སློབ་པ་ན། །
ग्यल सेस् फग पई स ल लोप प न
जिनपुत्र आर्यभूमि का अभ्यास करते समय

སར་གནས་དཔའ་བོ་དུས་གསུམ་ཐམས་ཅད་དུ། །
सर नेस् पा बो दुस् सुम थम चे दु
समस्त त्रिकालों में भूमि स्थित अर्थात्

ཡོངས་སུ་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཁྲོད་ན་བདག །
योङ सु शेग प नम क्यि ठोद् न दग
आगत वीरों के मध्य में

བྱ་ལམ་བགྲོད་ལ་འདབ་བཟང་དབང་པོ་བཞིན། །
छ लम डोद् ल दप ज़ङ वङ पो शिन
पक्षी मार्ग पर चलते समय गरुढ सदृश।59।

རྒྱལ་སྲས་གཞན་གྱིས་དཔག་པར་དཀའ་བ་ཡི། །ཤིན་ཏུ་
ग्यल सेस् शेन ग्यीस् पग पर का व यि
अन्य जिनपुत्रों द्वारा मापना कठिन है, ऐसा

རྒྱ་ཆེའི་ཤེས་བྱའི་གནས་རྣམས་ལ། །
शिन तु ग्य छे शेस् छई नेस् नम ल
अति विस्तृत ज्ञेयों में

དྲི་མེད་མཁྱེན་པ་ཐོགས་པ་མེད་འཇུག་ཅིང་། །
डि मेद् ख्येन प थोग प मेद् जुग चिङ
निर्मल ज्ञान अप्रतिघ प्रवृत्त होकर

རླབས་ཆེན་སྤྱོད་པའི་གཏེར་དུ་འགྱུར་བར་ཤོག །
लप छेन चोद् पई तेर दु ग्युर बर शोग
उदार चर्या का निधि बनूँ।60।

དེ་ལྟར་སྤྱོད་པའི་འབྲས་བུ་གྲུབ་པ་ན། །དུས་གསུམ་རྒྱལ་
दे तर चे पई डेस् बु डुप प न
इस प्रकार के चर्या स फल सम्पन्न होने पर

བ་རྣམས་ཀྱི་སྐུ་དང་ཞིང་། །
दुस् सुम ग्यल व नम क्यि कु दङ शिङ
त्रैकालिक जिनों के काय और क्षेत्र

འཁོར་དང་མཛད་པ་སྐུ་ཚེ་སྨོན་ལམ་རྣམས། །
खोर दङ ज़े प कु छे मोन लम नम
पार्षद, कृत्य, आयु, प्रणिधान

གང་ཡིན་གཅིག་ཏུ་བསྡོམས་པ་དེ་དག་ཀུན། །
गङ यिन चिग तु बदोम प दे दग कुन
जो भी हो, एक में जमा कर, वे सभी।61।

ཐབས་མཁས་སྤྱོད་པས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་གྱུར་ནས། །
थप खेस् चोद् पेस् योङ सु ज़ोग ग्युर नेस्
उपाय कौशलचर्या से परिपूर्ण कर

རིང་ནས་ཡིད་ལ་བརྟགས་པའི་འགྲོ་བ་འདི། །
रिङ नेस् यिद् ल नग पई डो व दि
चिरकाल से मन में बिठाये इस जगत को

དམ་ཆོས་བདུད་རྩིའི་ཆར་ཆེན་ཕབ་པ་ཡིས། །
दम छोस् दुद् त्सी छर छेन फप प यीस्
सद्धर्म के अमृत से

སྐད་ཅིག་གཅིག་ལ་བདག་གིས་སྒྲོལ་བར་ཤོག །
के चिग चिग ल दग गीस् डोल वर शोग
एकक्षण में मैं उन्हें तारूँ।62।

ལྷ་དང་བཅས་པའི་འཇིག་རྟེན་ཀུན་གྱི་སྐྱབས་གཅིག་པུ་རྒྱལ་བ་བྱམས་པ་མགོན་པོ་ལ་སྨྲེ་སྔགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་ཚངས་པའི་ཐོད་པན་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི། མང་དུ་ཐོས་པའི་རྒྱལ་ཁམས་པ་བློ་བཟང་གྲགས་པའི་དཔལ་གྱིས་ལྷོ་བྲག་སྟོད་རི་ཉི་ཤར་གྱི་དབེན་གནས་སུ་སྦྱར་བ་དགེ་ལེགས་སུ་གྱུར་ཅིག །

देव सहित सभी जगत के एक मात्र शरण जिन मैत्रेयनाथ को विलाप पूर्ण स्तुति ब्रह्म-पटल नामक यह, बहुश्रुत घुमक्कड श्री लोजङ् डगपा द्वारा लो-डग् तोद्-री ञि-शर् के एकान्त में रचना किया।

इससे कुशल शुभ हों।

## བསྟོད་པ་ས་གཞིའི་མཛེས་རྒྱན་བཞུགས།
# भूमि सु-अलंकार स्तुति

སྭོ། ས་ཡི་སྙིང་པོས་འགྲོ་ཀུན་རྗེས་སུ་འཛིན། །
सो स यि ञिङ पोस् डो कुन जेस् सु ज़िन
क्षितिगर्भ द्वारा समस्त जगत अनुगृहीत है

ས་གཞི་བཞིན་དུ་རྣམ་མང་ཡོན་ཏན་རྟེན། །
स शि शिन दु नम मङ योन तेन तेन
भूमि सदृश विविध गुणाश्रय हैं

ས་གསུམ་རེ་སྐོང་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུའི་ཚུལ། །
स सुम रे कोङ यिद् शिन नोर बुइ छुल
त्रिभुवन की आशा, चिन्तामणि सदृश पूर्ण करते हैं

ས་བཅུའི་དབང་ཕྱུག་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
स चुइ वङ छुग ख्योद् ल छग छ़ल तोद्
दस भूमेश्वर, आपको मैं वन्दना एवं स्तुति करता हूँ।1।

ས་ནས་སར་འདྲེན་རྒྱལ་བའི་ས་ལ་འགོད། །
स नेस् सर डेन ग्यल वई स ल गोद्
भूमितः भूमि नेतृत्व कर जिन-भूमि में प्रवेश कराते हैं

ས་བཅུད་རྩི་སྨན་ལོ་ཏོག་རྒྱུན་སྤེལ་ཞིང་། །
स चुद् ज़्चि मेन लो तोग ग्युन पेल शिङ
भूमि-रस औषधि, फसल को आप निरन्तर वृद्धि करते हैं

ས་འདི་རྣམ་མང་འབྱོར་པས་ཡོངས་བཀང་བའི། །
स दि नम मङ छोर पेस् योङ कङ बई
भूमि इसे विविध समृद्धि से परिपूर्ण करते हैं

ས་ཡི་ལྷ་མཆོག་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
स यि ल्ह छोग ख्योद् ल छग छ़ल तोद्
भूमि-देव श्रेष्ठ, आपको मैं वन्दना एवं स्तुति करता हूँ।2।

བུམ་བཟང་དཔག་བསམ་ཤིང་དང་རྫོགས་ལྡན་སྤྲིན། །
बुम ज़ङ पग सम शिङ दङ ज़ोग देन टिन
भद्र-कलश, कल्पवृक्ष, सद्-युग मेघ

བདུད་རྩིའི་རྒྱ་མཚོ་ཇི་བཞིན་གང་གིས་ཁྱོད། །
दुद् ज़्ची छु छ़ो जि शिन गङ गीस् ख्योद्
अमृत-सागर जैसा, आपके द्वारा

དྲན་པ་དེ་ལ་དཔལ་དུ་ལེགས་གནས་པ། །
डेन प दे ल पल दु लेग नेस् प
स्मरण करने वालों को श्री और स्वस्ति प्रदान करते हैं

ཐུགས་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
थुग जे दग ञिद् ख्योद् ल छग छ़ल तोद्
महाकारुणिक आपको मै वन्दना एवं स्तुति करता हूँ।3।

རབ་འབྱམས་སྲས་བཅས་རྒྱལ་བའི་ཡོན་ཏན་མཆོག །
रप छम सेस् चेस् ग्यल वई योन तेन छोग
अनन्त पुत्रों सहित जिनोत्तमगुण रूपी

ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་མངའ་བདག་ཁྱོད་གཅིག་པུ། །
नम खा ज़ोद् क्यि ङा दग ख्योद् चिग पु
गगन कोष के अधिपति एकमात्र आप हैं

རྒྱལ་སྲས་ཚུལ་གྱི་མཐའ་ཡས་ཞིང་རྣམས་སུ། །
ग्यल सेस् छुल ग्यि था येस् शिङ नम सु
जिनपुत्र के रूप में अनन्त क्षेत्रों में

རྒྱལ་བའི་མཛད་པ་མཐའ་དག་སྐྱོང་ལ་འདུད། །
ग्यल वई ज़े प था दग क्योङ ल दुद्
अनन्त जिनों के कृत्यों की रक्षक आपको नमन है।4।

དཔག་མེད་ཡོན་ཏན་ནོར་བུའི་འོད་ཟེར་གྱིས། །
पग मेद् योन तेन नोर बुइ ह्रोद् ज़ेर ग्यीस्
अपरिमित मणि रूपी गुणों के प्रभा से

སྙིགས་མའི་རྒུད་པ་མཐའ་དག་གཏན་དུ་བསྙིལ། །
ञिग मई गुद् प था दग तेन दु ञिल
कषाय के समस्त संकटों को सदा के लिये नष्ट करने वाले

ཕུན་ཚོགས་སྡེ་བཞིའི་དཔལ་གྱིས་མངོན་མཐོ་བའི། །
फुन छ़ोग दे शी पल ग्यीस् ङोन थो बई
चतुर्विध सम्पत्ति-श्री के अभ्युदय का

རླབས་ཆེན་ཕྲིན་ལས་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
लप छेन ठिन लेस ज़े ल छग छ़ल तोद्
उदार कृत्य-कर्ता की मैं वन्दना एंव स्तुति करता हूँ।5।

འཇམ་དབྱངས་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་ཀུན་ཏུ་བཟང་། །
जम यङ जिग तेन वङ छुग कुन तु ज़ङ
मञ्जुघोष, लोकेश्वर, समन्तभद्र

མི་ཕམ་པ་སོགས་རྒྱལ་སྲས་སེམས་དཔའ་མཆོག །
मि फम प सोग ग्यल सेस् सेम पा छोग
अजित इत्यादि उत्तम महाजिनपुत्रों को

རྣམ་མང་བསྐལ་པར་མཆོད་ཅིང་གསོལ་བཏབ་ལས། །
नम मङ कल पर छोद् चिङ सोल तप लेस
अनेक कल्पों में पूजा-अभ्यर्थना करने की अपेक्षा

ཁྱོད་གཅིག་ཡུད་ཙམ་དྲན་པས་རེ་འདོད་རྣམས། །
ख्योद् चिग युद् त्रम डेन पेस् रे दोद् नम
आपकी एकक्षण स्मरण से आशा एवं इच्छायें।6।

ཡིད་བཞིན་སྩོལ་ལ་ཁྱད་པར་འཕགས་ཞེས་སུ། །
यिद् शिन त्ज़ोल ल ख्ये पर फग शेस् सु
मनोकामना सदृश प्रदान करने में विशिष्ट हैं, ऐसा

རྒྱལ་བས་བསྔགས་པ་རྒྱལ་སྲས་ཐུ་བོ་མཆོག །
ग्यल वे ङग प ग्यल सेस् थु बो छोग
जिन द्वारा प्रशंसित जिन का ज्येष्ठ पुत्र

རྒྱལ་བ་རྣམས་དང་དབྱེར་མེད་ཁྱོད་བསྟོད་པས། །
ग्यल व नम दङ येर मेद् ख्योद् तोद् पेस्
जिनों से अभिन्न, आपकी स्तुति से

བདག་ལ་ཇི་འདོད་དཔལ་རྣམས་ལེགས་སྩོལ་མཛད། །
दग ल जि दोद् पल नम लेग त्ज़ोल ज़े
मेरी जो कामना है, उस श्री को अच्छी तरह प्रदान करें।7।

ས་གསུམ་འགྲོ་འདིས་དད་པའི་སྟོབས་རྙེད་ཅིང་། །
स सुम डो दीस् दे पई तोप ञेद् चिङ
त्रिभुवन जगत यह श्रद्धा-बल प्राप्त कर

ས་ཡི་དབང་ཕྱུག་ཁྱེད་ཀྱིས་རྗེས་སུ་འཛིན། །
स यि वङ छुग ख्येद् क्यीस् जेस् सु ज़िन
भूमीश्वर, आपके द्वारा अनुगृहीत कर

ས་བཅུད་དཔལ་འཕེལ་ས་སྟེང་བདེ་བས་ཁྱབ། །
स चुद् पल फेल स तेङ दे वे ख्यप
भूमि-रस, श्री की वृद्धि हो समस्त पृथ्वी पर सुख व्याप्त हों।

ས་ནས་སར་བགྲོད་ས་མཆོག་འགྲུབ་པར་ཤོག །
स नेस् सर डोद् स छोग डुप पर शोग
भमितः भूमि गमन कर उत्तम भूमि सिद्ध हों।8।

ཅེས་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བཀྲ་ཤིས་རྫས་བརྒྱད་ཀྱི་གྲངས་སུ་སོན་པ་འདི་ནི་མི་ཕམ་འཇམ་དཔལ་དགྱེས་པས་མེ་རྟ་ཁྲུམས་ཟླ་འཕོར་ལོའི་ཚེས་ཉེར་བདུན་ལ་བཀོད་པ་དགེ་ལེགས་འཕེལ། །

ये श्लोक अष्ट मंगल-द्रव्य के रूप में परिगणित होने वाले मि-फम जङ्-गेस्-पा ने अग्नि-अश्व भाद्रचक्र के 27 को लिखा गया। कुशाल-शुभ वृद्धि हों।

དཔལ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ལ་བསྟོད་ཅིང་སྨོན་ལམ་བཏབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་པ་ལགས་སོ་ཡང་།

# श्रीसमन्तभद्र-स्तुति एवं प्रणिधान

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གསང་བའི་མངའ་བདག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དཔལ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ལ་
दे शिन शेग प थम चे क्यि सङ बई ङा दग छङ छुप सेम पा छेन पो पल कुन तु ज़ङ पो ल छग
**सर्वतथागत-गुह्याधिपति महाबोधिसत्त्व श्रीसमन्तभद्र**

ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छ़ल लो
**को प्रणाम।**

དཔལ་ལྡན་གསང་བ་ཀུན་བདག་དཔལ། །
पल देन सङ व कुन दग पल
**श्रीमान् गुह्य सर्वात्मश्री।**

མཁྱེན་པའི་སྐད་ཅིག་ཤེས་བྱ་མཁྱེན། །
ख्येन पई के चिग शेस् छ ख्येन
**ज्ञान रूपी क्षण में ज्ञेय के ज्ञाता।**

མཐའ་མེད་ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ཆུད་མཐའ། །
था मेद् ये शेस् थुग छुद् था
**अनन्त ज्ञान के अन्तज्ञ।**

མཆོག་སྦྱིན་རྡོ་རྗེ་མཆོག་ཁྱོད་འདུད། །
छोग छिन दोर जे छोग ख्योद् दुद्
**परम (सिद्धि) दाता परमवज्र तुमको नमन (है)।।1।।**

ཞི་བའི་རང་བཞིན་སྣ་ཚོགས་རབ་ཏུ་སྣང་། །
शि बई रङ शिन न छ़ोग रप तु नङ
**शान्त स्वभाव नाना (रूप में) आभासित।**

དཔག་ཡས་མཁྱེན་ལྡན་ཅིར་ཡང་གཟིགས་མི་མཛད། །
पग येस् ख्येन देन चिर यङ ज़िग मि ज़े
**अपरिमित ज्ञानवान्, (संवृति में) कुछ भी नहीं देखते।**

རྒྱལ་སྲས་གཞོན་ནུ་རྒྱལ་བ་ཀུན་པས་རྒན། །
ग्यल सेस् शोन नु ग्यल व कुन पेस् गेन
**कुमार जिनपुत्र सभी जिनों में वृद्ध।**

ཀུན་དང་མི་མཐུན་ཀུན་བཟང་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །
कुन दङ मि थुन कुन ज़ङ ख्योद् छग छ़ल
**सभी से भिन्न रूप समन्तभद्र तुमको नमन (है)।।2।।**

འདས་པའི་མཐའ་བཞིན་རྣམ་རྟོག་སྙ་ངན་འདས། །
देस् पई था शिन नम तोग न्य ङेन देस्
**अतीतान्तवत् विकल्प विनिर्मुक्त।**

མ་འོངས་མཐའ་བཞིན་རྒྱལ་སྲས་ཀུན་གྱི་མ། །
म ह़ोङ था शिन ग्यल सेस् कुन ग्यि म
**अनागतान्तवत् समस्त जिनों की माता।**

གནས་པའི་མཐའ་བཞིན་མཁའ་དབྱིངས་ཀུན་ན་གནས།།
नेस् पई था शिन खा यिङ कुन न नेस्
स्थितान्तवत् सर्वाकाश धातुओं में स्थित।

རྨད་བྱུང་ཁྱོད་ཀྱི་རྣམ་ཐར་རྒྱ་མཚོ་རྨད། །
मे छुङ ख्योद् क्यि नम थर ग्य छ़ो मे
अद्भुत् तुम्हारे विमोक्ष-सागर (है) अद्भुत्।।3।।

ནམ་མཁའི་མཐའ་ནི་དཔག་མེད་གཅིག་པུ་ཀུན་སྟོང་པ། །
नम खई था नि पग मेद् चिग पु कुन तोङ प
आकाशान्त तो अपरिमित-एक सर्वशून्य (हैं)।

ཆོས་དབྱིངས་མཐའ་ནི་དཔག་མེད་གཅིག་པུ་རབ་དག་པ། །
छोस् यिङ था नि पग मेद् चिग पु रप दग प
धर्मधात्वान्त तो अपरिमित-एक विशुद्ध (है)।

སེམས་ཅན་ཁམས་ནི་དཔག་མེད་གཅིག་ཏུ་སྒྱུ་འདྲ་བ། །
सेम चेन खम नि पग मेद् चिग तु ग्यु ड व
सत्त्वधातु तो अपरिमित-एक मायोपम (है)।

ཁྱོད་ཀྱི་མཛད་པ་དཔག་མེད་གཅིག་ཏུ་མ་འཚལ་ཏོ། །
ख्योद् क्यि ज़े प पग मेद् चिग तु म छ़ल तो
तुम्हारा कार्य अपरिमित-एक नहीं हो सकता।।4।।

འོན་ཀྱང་ཐུབ་དབང་རྨད་བྱུང་བྱང་ཆུབ་ཤིང་དྲུང་དུ། །
ह़ोन क्यङ थुप वङ मे छुङ छङ छुप शिङ डुङ दु
परन्तु अद्भुत् मुनीश्वर बोधिवृक्ष के नीचे।

བདུད་ཀྱི་མཐུ་བཅོམ་རྨད་བྱུང་མངོན་པར་སངས་རྒྱས་བསྟན། །
दुद् क्यि थु चोम मे छुङ ङोन पर सङ ग्येस् तेन
मार-बल नष्ट कर अद्भुत् अभिसम्बोधि दिखाया।

དཔག་མེད་རྒྱལ་སྲས་རྨད་བྱུང་འདུས་པར་གྱུར་པའི་ཚེ། །
पग मेद् ग्यल सेस् मे छुङ दुस् पर ग्युर पई छ़े
अपरिमित अद्भुत् जिनपुत्रों के एकत्रित होने पर।

ཁྱོད་ཀྱི་རྣམ་ཐར་རྨད་བྱུང་དཔག་མེད་གསལ་བར་གྲགས། །
ख्योद् क्यि नम थर मे छुङ पग मेद् सल वर डग
आपका विमोक्ष (जीवनी) अपरिमित (है) प्रसिद्ध प्रकाशित।

དེ་སྐད་བདག་གིས་ཁྱོད་ལ་ཐེ་ཚོམ་སྐྱེས་གྱུར་པས། །
दे ले दग गीस् ख्योद् ल थे छ़ोम क्येस् ग्युर पेस्
तब (पश्चात्) मेरे द्वारा आपके प्रति सन्देह होने से।

རབ་དང་སེམས་ཀྱིས་རྣམ་ཐར་ཆ་ལ་བསྟོད་པར་བགྱི། །
रप दङ सेम क्यीस् नम थर छ ल तोद् पर ग्यि
स्वच्छ चित्त से विमोक्ष भाग की स्तुति करूँगा।।5।।

རང་བྱུང་དཔའ་བོ་བདུད་ཀྱི་དགྲ་གཅིག་རྒྱལ་བའི་སྲས་པོ་ཀུན་གྱི་དཔལ། །
रङ छुङ पा बो दुद् क्यि ड चिग ग्यल वई सेस् पो कुन ग्यि पल
स्वयंभू वीर एकमात्र मार-शत्रु समस्त जिनपुत्रों के श्री।

སྔོན་གྱི་བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་རྒྱ་མཚོར་སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོ་བསྟེན་གྱུར་ཀྱང་། །
ङोन ग्यि कल प डङ मेद् ग्य छ़ोर सङ ग्येस् ग्य छ़ो तेन ग्युर क्यङ
असंख्य पूर्वकल्पसमुद्र में जिनसमुद्र के सेवन पर भी।

ཕྱི་མའི་མཐར་ཐུག་རྒྱ་མཚོར་འབྱུང་བའི་རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོ་ཀུན་མཆོད་ཅིང་། །
छि मई थर थुग ग्य छ़ोर छुङ बई ग्यल व ग्य छ़ो कुन छोद् चिङ
परान्त समुद्र में उद्भूत समस्त जिनों की पूजा कर।

ཐུབ་པའི་གསང་འཛིན་རྒྱ་མཚོ་ལྟར་ཟབ་ཕྱོགས་བཅུ་རྒྱ་མཚོའི་མཐར་ཐུག་བར། །
थुप पई सङ ज़िन ग्य छ़ो तर ज़प छोग चु ग्य छ़ोइ थर थुग बर
मुनिगुह्यधर समुद्रोपम गम्भीर दशदिग् समुद्र पर्यन्त।।6।।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་དྲུང་ན་ཁྱོད་སྣང་ཁྱོད་ནི་གར་ཡང་འགྲོ་འོང་བྲལ། །
ग्यल व कुन ग्यि डुङ न ख्योद् नङ ख्योद् नि गर यङ डो ह़ोङ डल
समस्त जिनों के समक्ष आप आभासित, आप कहीं भी गमनागमन रहित।

དུས་གསུམ་གཤེགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཀུན་དང་ཐུགས་ཀྱི་དགོངས་པ་རབ་མཉམ་ཞིང་། །
दुस् सुम शेग पई ग्यल व कुन दङ थुग क्यि गोङ प रप ञम शिङ
त्रिकालागत समस्त जिनों से चित्त-सन्धि (ज्ञान) पूर्णतः समान हैं।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་གསུང་དབྱངས་ཇི་སྙེད་ཁྱོད་ཀྱི་གསུང་དང་དབྱེར་མེད་འདྲེས། །
ग्यल व कुन ग्यि सुङ यङ जि ञेद् ख्योद् क्यि सुङ दङ येर मेद् डेस्
समस्त जिनों के यावत् वाक्घोष आपके वाक् से अभिन्न मिले हैं।

དེ་རྣམས་སྐུ་ཡི་སྤྲུལ་པ་ཇི་སྙེད་ཁྱོད་ཀྱི་སྤྲུལ་པའང་དེ་སྙེད་དེ།
दे नम कु यि टुल प जि ञेद् ख्योद् क्यि टुल पह्ङ दे ञेद् दे
उनके काय-निर्माण यावत् (हैं) आपका निर्माण भी (है) तावत् ।।7।।

འོན་ཀྱང་བདག་ནི་ལམ་ལ་སློབ་ཅེས་རྒྱལ་སྲས་འདུས་པ་ཀུན་ལ་སྟོན། །
ह्रोन क्यङ दग नि लम ल लोप चेस् ग्यल सेस् दुस् प कुन ल तोन
परन्तु मैं तो मार्ग को सीखता हूँ–ऐसा समस्त जिनपुत्र समूह को दिखाते (हैं)।

ཁྱོད་ཀྱི་སྒྱུ་མ་རབ་ཏུ་འཇིག་མེད་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་བས་སྲ་བ་འདི། །
ख्योद् क्यि ग्यु म रप तु जिग मेद् नम खई यिङ वे स व दि
आपकी माया प्रनष्ट नहीं है, आकाश धातु से भी कठोर (है) यह।

རྡོ་རྗེ་རིན་ཆེན་དཔལ་ལྡན་དབང་པོའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཀུན་ལས་འདས། །
दोर जे रिन छेन पल देन वङ पोइ चोद् युल कुन लेस देस्
वज्ररत्न (तो) श्रीयुत् इन्द्र के समस्त गोचरों से अतीत।

སྐད་ཅིག་དབང་བསྐུར་འོད་ཟེར་ཆེན་པོ་དུས་གསུམ་རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱིས་མཛད། །
के चिग वङ कुर ह्रोद् ज़ेर छेन पो दुस् सुम ग्यल व कुन ग्यीस् ज़े
क्षणाभिषेक महारश्मि त्रिकाल समस्त जिनों (बुद्धों) ने किया।।8।।

སེམས་ཅན་ཁམས་ཀུན་མཐུན་པར་འཇུག་ཅིང་རྒྱལ་བ་རྣམས་དང་གཅིག་པའི་འཕྲུལ། །
सेम चेन खम कुन थुन पर जुग चिङ ग्यल व नम दङ चिग पई ठुल
प्रवृत्ति (है) सर्वसत्त्वधातुओं के अनुरूप, ऋद्धि (समस्त) जिनों के समान है।

དེ་ཡིས་ཚུར་མཐོང་སེམས་འདི་སྐྲག་ནས་ཞིག་པར་མ་གྱུར་ཁྱོད་ཀྱི་མཐུ། །
दे यीस् छुर थोङ सेम दि टग नेस् शिग पर म ग्युर ख्योद् क्यि थु
अतः आर(संसार)-दर्शक यह चित्त भयभीत हो नष्ट नहीं होता (यह) आपका बल है।

ཁྱོད་ཀྱི་མཛད་པ་འདི་ཤོང་གྱུར་པའི་ནམ་མཁའ་འདི་མ་རལ་བ་འཇིགས། །
ख्योद् क्यि ज़े प दि शोङ ग्युर पई नम खा दि म रल व जिग
आपका कर्म समाहित (भरा) हुआ है, यह आकाश नष्ट न हो भय करता हूँ।

ཉན་རང་རྒྱལ་སྲས་དཔའ་བོ་སྟོབས་ལྡན་ཀུན་ཀྱང་འདི་ཡིས་སྐྲག་མིན་ནམ། །
ञेन रङ ग्यल सेस् पा बो तोप देन कुन क्यङ दि यीस् टग मिन नम
श्रावक-प्रत्येकबुद्ध समस्त वीर बलवान् भी क्या इससे भयभीत नहीं होते? ।।9।।

ཨེ་མ་ངོ་མཚར་བ་སྤུའི་ཁུང་བུ་གཅིག་ནས་སེམས་ཀྱི་སྐད་ཅིག་གཅིག་ལ་ནམ་མཁའི་ཁྱོན། །
ए म ङो छ़र व पुइ खुङ बु चिग नेस् सेम क्यि के चिग चिग ल नम खई ख्योन
हे माँ! अद्भुत् एक रोम छिद्र से चित्तैकक्षण में आकाश पर्यन्त।

མེ་ཏོག་བདུག་པ་སྒྲོན་མེའི་ཚོགས་དང་དྲི་ཆབ་ཞལ་ཟས་རོ་མཆོག་སིལ་སྙན་དཔག་མེད་སྤྲིན། །
मे तोग दुग प डोन मे छ़ोग दङ डि छप शल ज़ेस् रो छोग सिल ञेन पग मेद् टिन
पुष्प-धूप-दीप समूह सहित गन्ध-द्रव्य नैवेद्य परम रस (और) अपरिमित वाद्य मेघ।

གདུགས་དང་བླ་རེ་ན་བཟའ་ལྡ་ལྡི་རབ་བཀྲ་དྲི་མེད་རིན་ཆེན་སྣ་ཚོགས་དཔག་མེད་སྤྲིན། །
दुग दङ ल रे न ज़ा द दि रप ट डि मेद् रिन छेन न छ़ोग पग मेद् टिन
छत्र वितान वस्त्र पदुदाम विचित्र विमल रत्न नानाविध अपरिमित मेघ।

རིན་ཆེན་རྒྱན་མཆོག་དབུ་རྒྱན་དཔུང་རྒྱན་སྣང་བྱེད་དོ་ཤལ་ཡན་ལག་སྤྲས་པའི་སྤྲིན། །
रिन छेन ग्येन छोग उ ग्येन पुङ ग्येन नङ छेद् दो शल येन लग टेस् पई टिन
रत्न परमाभरण मुकुट केयूर भास्कर हार अङ्गालंकरणक मेघ।।10।।

ལྷ་དང་ལྷ་མོས་མཛེས་པའི་གར་བྱེད་དབྱངས་ཀྱི་ཡན་ལག་རྒྱ་མཚོ་བསྟོད་པའི་སྒྲ་དབྱངས་སྤྲིན། །
ल्ह दङ ल्ह मोस् ज़ेस् पई गर छेद् यङ क्यि येन लग ग्य छ़ो तोद् पई ड यङ टिन
देव और देवियाँ सुन्दर नृत्य करतीं, स्वरांग समुद्र स्तुति शब्द-घोष समुद्र।

རབ་ཏུ་སྤྲོ་བྱེད་རྒྱལ་བ་གཅིག་ལ་མཆོད་པར་བྱེད་ལྟར་དུས་གསུམ་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་མཆོད། །
रप तु टो छेद् ग्यल व चिग ल छोद् पर छेद् तर दुस् सुम ग्यल व थम चे छोद्
प्रसन्न करते एक जिन (बुद्ध) की पूजा करने जैसा, समस्त त्रिकाल जिनों की पूजा करता हूँ।

སེམས་ཅན་ཁམས་དང་མཉམ་པའི་སྤྲུལ་པ་སྣ་ཚོགས་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་སྤྲིན། །
सेम चेन खम दङ ञम पई टुल प न छ़ोग पग तु मेद् पई टिन
सत्त्वधातु के समान नाना अपरिमित मेघ निर्माण(-काय)।

ལྷ་དབང་ཚངས་པ་འཕྲོག་བྱེད་ཞི་བ་ལུས་ངན་འཇིག་རྟེན་སྐྱོང་བ་དང་། །
ल्ह वङ छ़ङ प ठोग छेद् शि व लुस् ङेन जिग तेन क्योङ व दङ
देवेन्द्र, ब्रह्मा, हरि, शिव, वैश्रवण, लोकपाल तथा।।11।।

ཉི་མ་ཟླ་བ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ལྷ་མིན་དབང་པོ་ནམ་མཁའ་ལྡིང་། །
ञि म द व वङ छुग छेन पो ल्ह मिन वङ पो नम खा दिङ
सूर्य-चन्द्र, महेश्वर, असुरेश्वर, गरुड।

འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་དང་མཛེས་པའི་མི་མོ་སྣ་ཚོགས་ཚུལ་ལྡན་ཡིད་གཡོ་དང་། །
खोर लोस् ग्युर दङ ज़ेस् पई मि मो न छ़ोग छ़ुल देन यिद् यो दङ
चक्रवर्ती तथा सुन्दरी नारी नाना शीलवती (तथा) मनोहारी।

ལ་ལར་གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་ཁྲོ་ཚོགས་རབ་འབར་བཟོད་པར་དཀའ་བའི་སྤྲིན། །
ल लर शिन जे थर छेद् ठो छ़ोग रप बर ज़ोद् पर का बई टिन
किन्हीं में यमान्तक क्रोधीगण प्रज्वलित असह्य मेघ।

ལ་ལར་ཉན་ཐོས་རྣམ་ཐར་ཞི་བ་རང་རྒྱལ་ལྟ་བུ་དང་། །
ल लर ञेन थोस् नम थर शि व रङ ग्यल त बु दङ
किन्हीं में श्रावक विमोक्ष शान्त प्रत्येकबुद्ध के समान।।12।।

ལ་ལར་ས་བཅུའི་དབང་ཕྱུག་སྣ་ཚོགས་ཕྱིན་བཅུ་སྤྱོད་མཛད་ཅིང་། །
ल लर स चुइ वङ छुग न छ़ोग छिन चु चोद् ज़े चिङ
किन्हीं में दश भूमीश्वर नाना पारमिता का आचरण करते।

ལ་ལར་མཆོག་གི་སྤྲུལ་པ་ཆེན་པོ་མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་མཛད་པའི་སྤྲིན། །
ल लर छोग गि टुल प छेन पो ज़े प चु ञीस् ज़े पई टिन
किन्हीं में महापरम निर्माण(-काय) द्वादश कर्म के कर्ममेघ दिखाते।

སེམས་ཀྱི་སྐད་ཅིག་རེ་རེ་ལ་ཡང་ཆོས་དབྱིངས་ནམ་མཁའི་མཐར་ཁྱབ་སྟོན། །
सेम क्यि के चिग रे रे ल यङ छोस् यिङ नम खई थर ख्यप तोन
चित्त के प्रत्येक क्षण में भी धर्मधातु आकाश पर्यन्त व्याप्त दिखाते।

དུས་གསུམ་གཤེགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཞིང་དང་འཁོར་དུ་བཅས་པ་ཡང་། །
दुस् सुम शेग पई सङ ग्येस् थम चे शिङ दङ खोर दु चेस् प यङ
त्रिकालागत समस्त बुद्धक्षेत्र और सपरिवार भी।।13।।

རང་གི་བ་སྤུའི་ཁུང་བུ་གཅིག་ཏུ་སྟོན་པའི་རྫུ་འཕྲུལ་སྟོབས་མངའ་བ། །
रङ गि व पुइ खुङ बु चिग तु तोन पई ज़ु ठुल तोप ङा व
स्वरोम के मात्र एक छिद्र में दिखाने वाले ऋद्धिमान्।

གསུང་གཅིག་ལ་ཡང་དེ་སྙེད་ཆོས་ཀུན་ཚིག་གཅིག་མ་ལུས་སྒྲ་དབྱངས་སྟོན། །
सुङ चिग ल यङ दे ञेद् छोस् कुन छ़िग चिग म लुस् ड यङ तोन
एक वाक् में भी तावत् सर्वधर्म पदैक अशेष शब्दघोष दिखाते।

ཏིང་འཛིན་གཅིག་གིས་ཤེས་བྱའི་གནས་རྣམས་ཀུན་དང་མཉམ་པའི་ཏིང་འཛིན་འཇུག །
तिङ ज़िन चिग गीस् शेस् छई नेस् नम कुन दङ ञम पई तिङ ज़िन जुग
एक ध्यान से सर्वज्ञेय-स्थान पर्यन्त समाधियों में प्रवृत्त।

རྟོག་པ་མི་མངའ་སེམས་ཅན་ཁམས་ཀྱི་རྣམ་རྟོག་ཀུན་དང་དུས་གཅིག་མཁྱེན། །
तोग प मि ङा सेम चेन खम क्यि नम तोग कुन दङ दुस् चिग ख्येन
विकल्पवान् नहीं, सत्त्वधातुओं के सर्वविकल्प सहित एक कालज्ञ।।14।।

སྨོན་ལམ་རྣམ་ཐར་ཚུལ་འདི་མཐོང་བའི་རྒྱལ་སྲས་དཔའ་བོ་མ་ལུས་པ། །
मोन लम नम थर छुल दि थोङ बई ग्यल सेस् पा बो म लुस् प
इस प्रणिधान विमोक्ष-नय के दर्शक जिनपुत्र सब वीर अशेष।

ཀུན་བཟང་སྤྱོད་ལ་གནས་པར་ཤོག་ཅེས་དུས་གསུམ་ཀུན་ཏུ་དར་དིར་སྒྲོགས། །
कुन ज़ङ चोद् ल नेस् पर शोग चेस् दुस् सुम कुन तु दर दिर डोग
समन्तभद्रचर्या में स्थित हों–ऐसा समस्त तीनों कालों में प्रघोषित।

ཁྱོད་ཀྱི་མཚན་ཐོས་སྐད་ཅིག་ཞག་དང་ཟླ་བ་ལོ་དང་བསྐལ་པ་དང་། །
ख्योद् क्यि छ़ेन थोस् के चिग शग दङ द व लो दङ कल प दङ
आपका नाम श्रवण–क्षण, दिवस, मास, वर्ष और कल्प तथा।

བསྐལ་པ་བརྒྱ་སྟོང་གྲངས་མེད་དཔག་མེད་ཡོངས་སུ་སྨིན་པའི་སེམས་ཅན་ཁམས། །
कल प ग्य तोङ डङ मेद् पग मेद् योङ सु मिन पई सेम चेन खम
कल्प शत-सहस्र असंख्य अपरिमित परिपाक वाले सत्त्वधातु।

སྐད་ཅིག་རེ་རེར་སྟོང་གསུམ་རྡུལ་ཕྲན་གྲངས་བས་མང་བ་རྣམ་པར་གྲོལ། །
के चिग रे रेर तोङ सुम दुल ठेन डङ वे मङ व नम पर डोल
प्रत्येक क्षण में त्रिसहस्र-(लोकधातुओं के)अणु संख्या से भी अधिक विमुक्त होते हैं।।15।।

མཆོག་གི་སྤྲུལ་པ་རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་མཛད་མི་སྤྱོད་པ་སྐད་ཅིག་མཛད། །
छोग गि टुल प ग्यल व कुन ग्यि ज़े मि चोद् प के चिग ज़े
उत्तम निर्माण(-काय) समस्त जिनों के कर्म-अगोचर क्षण में किया।

འོན་ཀྱང་མོས་དང་ཚོག་ཤེས་མི་མངའ་འདོད་ཆགས་འདི་འདྲ་ཀྱེ་མ་མཚར། །
ह़ोन क्यङ मोस् दङ छोग शेस् मि ङा दोद् छग दि ड क्ये म छ़र
परन्तु छन्द तथा असन्तुष्ट ऐसा, राग का होना अद्भुत् माँ!

བདུད་དང་ལོག་འདྲེན་མཐུ་ཆེན་འཇོམས་པའི་ཞེ་སྡང་འདི་འདྲ་ཀྱེ་མ་འཇིགས། །
दुद् दङ लोग डेन थु छेन जोम पई शे दङ दि ड क्ये म जिग
मार तथा विनायक महाबली नाशक ऐसे द्वेष का होना भयानक माँ!

རྟོག་པའི་མཚན་མ་རྡུལ་ཙམ་མི་གཡོ་གཏི་མུག་ཆེན་པོར་ཞུགས་པ་དམད། །
तोग पई छ़ेन म दुल ज़म मि यो ति मुग छेन पोर शुग प मे
विकल्प लक्षण अणुमात्र भी चलित नहीं, महामोह में प्रवेश है अद्भुत्।।16।।

དུས་གསུམ་རྒྱལ་དང་འཕྲིན་ལས་མཉམ་ཞེས་ང་རྒྱལ་འདི་འདྲ་གསུངས་པ་ཐོས། །
दुस् सुम ग्यल दङ ठिन लेस ञम शेस् ङ ग्यल दि ड सुङ प थोस्
त्रिकाल जिनों से कर्म सम हैं–ऐसा (अभि-)मान का वचन सुना।

རྣམ་ཐར་འདི་འདྲ་བདག་གིས་སྟོན་ཅེས་ཕྲག་དོག་ཆེན་པོ་བྱེད་པ་སྲིད། །
नम थर दि ड दग गीस् तोन चेस् ठग दोग छेन पो छेद् प सिद्
विमोक्ष ऐसा मैंने दिखाया–ऐसा महा-ईर्ष्या कर सकते हैं।

འདི་འདྲའི་ཡེ་ཤེས་ཉོན་མོངས་མིང་ཅན་མཉམ་པར་འཛིན་པ་གསང་བདག་ཅེས། །
दि डई ये शेस् ञोन मोङ मिङ चेन ञम पर ज़िन प सङ दग चेस्
ऐसा ज्ञान जो क्लेश नाम वाला (है) समग्राहक गुह्यपति–ऐसा।

རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་བསྡུས་པར་བྱེད་པ་རྡོ་རྗེ་ཟླ་བ་དྲི་མེད་ཅན། །
दोर जे थेग प बदुस् पर छेद् प दोर जे द व डि मेद् चेन
वज्रयान के संग्रह-कर्त्ता वज्र-चन्द्र मल रहित।।17।।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་སྙན་དུ་གྱུར་པ་གསུང་གི་དབང་ཕྱུག་རྡོ་རྗེ་ཆོས། །
ग्यल व कुन ग्यि ञेन दु ग्युर प सुङ गि वङ छुग दोर जे छोस्
समस्त जिनों के कर्णभूत (हैं) वागीश्वर वज्रधर्म।

དྲུག་པ་ཡིད་རྣམ་ཀུན་དང་འདྲེས་གྱུར་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་རྒྱལ་བའི་ཐུགས། །
डुग प यिद् नम कुन दङ डेस् ग्युर कुन तु ज़ङ पो ग्यल वई थुग
सभी षष्ठ मनःआकार से मिश्रित समन्तभद्र जिन (बुद्ध) का चित्त।

དེ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་གྱི་རྣམ་གྲངས་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་མིང་བས་མང་། །
दे ल सोग पई छ़ेन ग्यि नम डङ सेम चेन कुन ग्यि मिङ वे मङ
ऐसे ही नाम-पर्याय समस्त सत्त्वों के नाम से अधिक हैं।

རྣམ་ཐར་ཚུལ་འདི་ཐུབ་པའི་དབང་པོས་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པའི་མདོ་ལས་གསུངས། །
नम थर छुल दि थुप पई वङ पोस् शिन तु ग्येस् पई दो लेस सुङ
यह विमोक्ष-नय मुनीन्द्र ने विपुलसूत्र में वाचन किया है।

དེ་ཡི་སླད་དུ་མོས་པའི་རྡུལ་ཕྲན་འཐོར་བའི་ཚིག་འདི་ཆ་ཤས་ཙམ། །
दे यि ले दु मोस् पई दुल ठेन थोर बई छ़िग दि छ शेस् ज़म
अतः छन्द (श्रद्धा) रूपी परमाणुओं के प्रस्फुटनक पद यह अंश मात्र (है)।।18।।

ཨེ་མཧོ་རྒྱལ་སྲས་ཀུན་ཏུ་བཟང་། །
ए मह़ो ग्यल सेस् कुन तु ज़ङ
हे माँ! जिनपुत्र समन्तभद्र।

སྔོན་གྱི་བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོ་ནས། །
ङोन ग्यि कल प ग्य छ़ो नेस्
पूर्व के कल्पसमुद्र से।

དུས་རིང་རྗེས་སུ་བསྐྱངས་གྱུར་ཀྱང་། །
दुस् रिङ जेस् सु क्यङ ग्युर क्यङ
दीर्घकाल (पर्यन्त) पालन करने पर भी।

ད་དུང་ཁྱོད་རྗེས་མི་འཇུག་པའི། །
द दुङ ख्योद् जेस् मि जुग पई
फिर भी आपका अनुगामी नहीं।

འགྲོ་བའི་ཀུན་རྟོག་མཐུ་དང་ལྡན། །
डो बई कुन तोग थु दङ देन
जगत् संकल्प बलवान् है।।19।।

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་ཁྱོད་བསྔགས་ཀྱང་། །
सङ ग्येस् कुन ग्यीस् ख्योद् ङग क्यङ
समस्त बुद्धों द्वारा आपकी प्रशंसा करने पर भी।

བསྟོད་པའི་ཚིག་གཅིག་མ་བརྗོད་པའི། །
तोद् पई छ़िग चिग म जोद् पई
एक पद स्तुति का (मेरे द्वारा) वाचन नहीं हुआ।

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་ཤིན་ཏུ་རྨོངས། །
दग चग सेम चेन शिन तु मोङ
हम सत्त्व लोग अत्यन्त मोहित हैं।।20।।

འཇམ་དབྱངས་སྤྱན་རས་གཟིགས་སོགས་ཀྱང་། །
जम यङ चेन रेस ज़िग सोग क्यङ
मञ्जुघोष अवलोकितेश्वर इत्यादि भी।

ཁྱོད་ཀྱི་རྣམ་ཐར་རྗེས་སློབ་ན། །
ख्योद् क्यि नम थर जेस् लोप न
आपकी विमोक्ष का अनुसरण करते।

ཆ་ཤས་ཙམ་ཡང་མི་འཇུག་པའི། །
छ शेस् ज़म यङ मि जुग पई
अंश मात्र भी प्रवेश नहीं करने वाले।

ཁམས་གསུམ་འགྲོ་བ་འདི་ཅི་ཞིག །
खम सुम डो व दि चि शिग
त्रिधातु प्राणी ये कैसे हैं? ।।21।।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་སྲས་ཀྱི་ཐུ་བོ་པ། །
ग्यल व कुन ग्यि सेस् क्यि थु बो प
समस्त जिनपुत्रों में ज्येष्ठ।

གང་གི་མིང་ནི་ཀུན་ཏུ་བཟང་ཞེས་བྱ། །
गङ गि मिङ नि कुन तु ज़ङ शेस् छ
जिनका नाम समन्तभद्र–ऐसा है।

མཁས་པ་དེ་དང་མཚུངས་པ་ཡོད་མིན་ཞེས། །
खेस् प दे दङ छुङ प योद् मिन शेस्
इन विद्वान् के समान कोई नहीं–ऐसा।

ཐུབ་དབང་གིས་གསུངས་རྗེས་སུ་ཡི་རང་སེད། །
थुप वङ गीस् सुङ जेस् सु यि रङ से
मुनीन्द्र द्वारा कहा गया था, अनुमोदन उठा है।।22।।

དེ་ཕྱིར་ཞིང་ཀུན་རྒྱ་མཚོའི་མཆོད་སྤྲིན་དང་། །
दे छिर शिङ कुन ग्य छोइ छोद् टिन दङ
अतः समस्त क्षेत्र समुद्रों के पूजा मेघ तथा।

ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཀུན་གྱིས་ཁྱོད་རབ་མཆོད། །
लुस् दङ लोङ चोद् कुन ग्यीस् ख्योद् रप छोद्
काय एवं समस्त सम्पत्तियों द्वारा आपका प्रपूजन है।

སྔོན་གྱི་སྡིག་པ་མི་དགེ་ཅི་ཡོད་དང་། །
ङोन ग्यि दिग प मि गे चि योद् दङ
पूर्व के पाप-अकुशल जो भी हों।

ལྟུང་བའི་ཉེས་པ་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཀུན། །
तुङ बई ञेस् प लेस क्यि डिप प कुन
आपत्ति-दोष (और) कर्मावरण सभी।

ཤིན་ཏུ་འགྱོད་པས་ཁྱོད་དྲུང་བཤགས་པར་བགྱི། །
शिन तु ग्योद् पेस् ख्योद् डुङ शग पर ग्यि
अत्यन्त पश्चात्ताप द्वारा आपके समक्ष देशना करूँगा।

སླན་ཆད་ནམ་ཡང་བགྱིད་པར་མ་གྱུར་ཅིག །
लेन छे नम यङ ग्यिद् पर म ग्युर चिग
(वे) पुनः कदापि मेरे द्वारा न हों।।23।।

ཕྱོགས་དུས་རྒྱ་མཚོར་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ལ། །
छोग दुस् ग्य छ़ोर शुग पई ग्यल व ल
दिग्-काल समुद्र में विराजमान जिनों से।

འགྲོ་བའི་བློ་མུན་སེལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར། །
डो बई लो मुन सेल बर छ बई छिर
जगत् के चित्तान्धकार निवारण के हेतु।

ཆོས་ཚུལ་རྒྱ་མཚོའི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བར་བསྐུལ། །
छोस् छुल ग्य छ़ोइ खोर लो कोर बर कुल
धर्मनयसमुद्र के प्रवर्तन हेतु अध्येषणा है।।24।।

བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་རུ། །
कल प ग्य छ़ो पग तु मेद् प रु
कल्पसमुद्र अपरिमित में।

མྱ་ངན་མི་འདའ་བཞུགས་པར་གསོལ་བ་འདེབས། །
न्य ङेन मि दा शुग पर सोल व देप
निर्वाण (प्राप्त) न कर विराजमान (करने) हेतु प्रार्थना है।।25।।

སྦྱིན་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་བཟོད་དང་བརྩོན་འགྲུས་དང་། །
छिन दङ छुल ठिम ज़ोद् दङ ज़ोन डुस् दङ
दान, शील, क्षान्ति और वीर्य।

བསམ་གཏན་ཤེས་རབ་ཐབས་མཁས་རྨད་བྱུང་དང་། །
सम तेन शेस् रप थप खेस् मे छुङ दङ
समाधि, प्रज्ञा, उपाय-कौशल्य अद्भुत्।

སྨོན་ལམ་སྟོབས་དང་ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་ཡི། །
मोन लम तोप दङ ये शेस् ग्य छ़ो यि
प्रणि-धानबल और ज्ञानसमुद्र रूपी।

སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་གྱུར་ཅིག །
चोद् प थम चे योङ सु ज़ोग ग्युर चिग
समस्त चर्याएँ परिपूर्ण हो जाएँ।।26।।

བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་ནམ་ཡང་བརྗེད་མ་གྱུར། །
छङ छुप सेम नि नम यङ जेद् म ग्युर
बोधिचित्त को कदापि न भूलूँ।

སངས་རྒྱས་རྒྱ་མཚོ་རྟག་ཏུ་མཐོང་བར་ཤོག །
सङ ग्येस् ग्य छ़ो तग तु थोङ बर शोग
बुद्धसमुद्र का सदा दर्शन हों।

ཚུལ་ཁྲིམས་རྒྱ་མཚོའི་དྲི་བསུང་སྣོམ་པ་དང་། །
छ़ुल ठिम ग्य छ़ोइ डि सुङ नोम प दङ
शीलसमुद्र सुगन्ध को सूघूँ।

ཏིང་འཛིན་རྒྱ་མཚོའི་རེག་བྱ་ཀུན་སྤྱོད་ནས། །
तिङ ज़िन ग्य छ़ोइ रेग छ कुन न्योङ नेस्
समाधिसमुद्र रूपी समस्त स्प्रष्टव्यों को भोग कर।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོ་རྟག་ཏུ་སྦྱོང་བ་དང་། །
शिङ खम ग्य छ़ो तग तु छोङ व दङ
क्षेत्रधातुसमुद्र सदा शोधित करूँ।

སེམས་ཅན་རྒྱ་མཚོའི་སྡུག་བསྔལ་སེལ་བ་དང་། །
सेम चेन ग्य छ़ोइ दुग ङ्ल सेल व दङ
सत्त्वसमुद्र के दुःखों का निवारण करूँ।

རྒྱལ་སྲས་རྒྱ་མཚོ་ཀུན་དང་འགྲོགས་པ་དང་། །
ग्यल सेस् ग्य छ़ो कुन दङ डोग प दङ
समस्त जिनपुत्र-समुद्र के साथ रहूँ।

ཉོན་མོངས་རྒྱ་མཚོ་ཤིན་ཏུ་དག་བྱེད་ཅིང་། །
ञोन मोङ ग्य छ़ो शिन तु दग छेद् चिङ
क्लेशसमुद्र (को) अत्यन्त विशुद्ध करूँ।

ཚེ་རབས་རྒྱ་མཚོ་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ། །
छ़े रप ग्य छ़ो क्ये व थम चे दु
जन्मान्तरसमुद्र सभी जन्मों में।

དལ་འབྱོར་རྒྱ་མཚོའི་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པ། །
दल छ्योर ग्य छ़ोइ योन तेन म लुस् प
क्षणसम्पद्समुद्रों के अशेष गुणों को।

ཆོས་ཚུལ་རྒྱ་མཚོ་རྟག་ཏུ་ཉན་པ་དང་། །
छ़ोस् छ़ुल ग्य छ़ो तग तु ञेन प दङ
धर्मनयसमुद्र (मैं) सदा सुनूँ।

ཐེག་ཆེན་རྒྱ་མཚོའི་རོ་རྣམས་མྱོང་བ་དང་། །
थेग छेन ग्य छ़ोइ रो नम न्योङ व दङ
महायान-समुद्र रूपी रसों को (मैं) चखूँ।

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོའི་རྟོགས་པ་ཐོབ་གྱུར་ཅིག །
ये शेस् ग्य छ़ोइ तोग प थोप ग्युर चिग
ज्ञान-सागर रूपी (अभि-)समय को प्राप्त करूँ।

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོ་ཐམས་ཅད་མཉེས་བགྱིད་ཅིང་། །
ग्यल व ग्य छ़ो थम चे ञेस् ग्यिद् चिङ
समस्त जिनों को प्रसन्न करूँ (मैं)।

བདེ་མཆོག་རྒྱ་མཚོ་རྟག་ཏུ་སྦྱིན་གྱུར་ཅིག །
दे छोग ग्य छ़ो तग तु छिन ग्युर चिग
परम सुखसमुद्र सदा दान करूँ।

ཐེག་མཆོག་རྒྱ་མཚོའི་ཐབས་རྣམས་ཀུན་བཟུང་ནས། །
थेग छोग ग्य छ़ोइ थप नम कुन ज़ुङ नेस्
परम यानसमुद्र के समस्त उपायों को ग्रहण कर।

རྣམ་ཐར་རྒྱ་མཚོ་སྒྱུ་མ་ལྟར་སྦྱོང་ཤོག །
नम थर ग्य छ़ो ग्यु म तर छोङ शोग
विमोक्षसमुद्र मायोपम शोधित हों।

མི་ཁོམ་རྒྱ་མཚོ་ཐམས་ཅད་རབ་སྤངས་ནས། །
मि खोम ग्य छ़ो थम चे रप पङ नेस्
अक्षणसमुद्र सभी का परित्याग कर।

སེམས་ཅན་རྒྱ་མཚོས་རྟག་ཏུ་ཐོབ་པར་ཤོག །
सेम चेन ग्य छ़ोस् तग तु थोप पर शोग
सत्त्वसमुद्रों को सदा प्राप्त हों।

བདག་ནི་རྟག་ཏུ་མ་ཕམ་སྲས་པོ་དང་། །
दग नि तग तु म फम सेस् पो दङ
मैं सदा अजितपुत्र और।

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཁྱོད་དང་མི་འབྲལ་ཞིང་། །
कुन तु ज़ङ पो ख्योद् दङ मिडल शिङ
समन्तभद्र आपसे विलग नहीं होकर।

བདག་གིས་ཅུང་ཟད་དྭང་བས་གསོལ་བ་ཡིས། །
दग गीस् चुङ ज़े दङ वे सोल व यीस्
मेरे किञ्चिद् प्रसादित अध्येषणा से।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱིས་སྤངས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས། །
ग्यल व कुन ग्यीस् पङ पई सेम चेन नम
समस्त जिनों द्वारा छोड़े गये सत्त्वों को।

སེམས་ཅན་གང་དག་བདག་ལ་སྡང་བ་དང་། །
सेम चेन गङ दग दग ल दङ व दङ
जो सत्त्व मेरे प्रति द्वेषी हैं।

མཐོང་དང་ཐོས་དང་རེག་དང་དྲན་རྣམས་ཀྱང་། །
थोङ दङ थोस् दङ रेग दङ डेन नम क्यङ
दर्शन-श्रवण और स्पर्श-स्मृतिवान् भी।

བདག་གི་སྨོན་ལམ་ཤིན་ཏུ་འགྲུབ་པར་ཤོག །
दग गि मोन लम शिन तु डुप पर शोग
मेरा प्रणिधान अत्यन्त सिद्ध हों।।

སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་མགོན་པོ་འཇམ་དཔལ་དབྱངས།།
चेन रेस ज़िग वङ गोन पो जम पल यङ
अवलोकितेश्वर नाथ-मञ्जुश्रीघोष।

རྣམ་ཐར་ཚུལ་ལ་མཉམ་པར་འཇུག་པར་ཤོག །
नम थर छुल ल ञम पर जुग पर शोग
विमोक्ष-नय में सम प्रवेश कर जाऊँ।।

སྨོན་ལམ་འདི་ལ་དགེ་བ་ཅི་ཡོད་པས། །
मोन लम दि ल गे व चि योद् पेस्
इस प्रणिधान में जो भी कुशल हों।

བདག་གིས་ལམ་ལ་འགོད་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །
दग गीस् लम ल गोद् पई ग्युर ग्युर चिग
मेरे द्वारा मार्गारूढ के हेतुभूत हो जाएँ।।

ཆགས་པའི་རྣམ་རྟོག་ཚུལ་མིན་སྐྱེས་པ་དང་། །
छग पई नम तोग छुल मिन क्येस् प दङ
राग-विकल्प अयोनिश उत्पन्न हुए हैं।

མྱུར་དུ་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པ་ཐོབ་གྱུར་ཅིག །
न्युर दु छिर मि दोग प थोप ग्युर चिग
शीघ्र अवैवर्तिक(-पद) की प्राप्ति करें।

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ལ་བསྟོད་ཅིང་སྨོན་ལམ་བཏབ་པ་ཞེས་བྱ་བ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་ལ་མོས་པ་ལམ་དུ་བྱེད་པའི་རང་བྱུང་རྡོ་རྗེས། སྙན་ངག་གི་སྡེབ་སྦྱོར་མེད་པར་གོ་བདེ་བའི་ངག་ཏུ། ནགས་ཕུ་དཔལ་གྱི་རི་ཁྲོད་དུ་སྦྱར་བའོ། །རྗེས་འཇུག་ཀུན་གྱིས་འདོན་པ་ལ་བརྩོན་པར་མཛད་པར་ཞུ། །

भगवान् समन्तभद्र-स्तुति प्रणिधान–नामक समन्तभद्र-विमोक्ष के प्रति छन्द मार्गीकरण करने वाले स्वयंभू वज्र द्वारा काव्य छन्द से रहित सरल वाक् में नग्स-फु-पल के एकान्त में लिखा गया। समस्त अनुयायियों से पाठ हेतु प्रयत्न करने की प्रार्थना करता हूँ।।

རྒྱན་དྲུག་མཆོག་གཉིས་བསྟོད་པ།

# षड्-अलंकार श्रेष्ठ-द्वय की स्तुति

ཨོཾ་བདེ་ལེགས་སུ་གྱུར་ཅིག །
ओं स्वस्ति।

ཚོགས་གཉིས་ཆུ་གཏེར་གཏིང་མཐའ་ཡས། །
छ़ोग ञीस् छु तेर तिङ था येस्
अनन्त गम्भीर गहरा सागर रूपी संभार-द्वय

རྣམ་དག་ཡོན་ཏན་ནོར་བུས་གང་། །
नम दग योन तेन नोर बुस् गङ
विशुद्ध मणि रूपी गुणों से पूर्ण

རྨད་བྱུང་འཕྲིན་ལས་ཕྱོགས་བཅུར་འགྲོ། །
मे छुङ ठिन लेस छोग चुर ठो
अद्भुत कर्म दश दिशाओं में प्रसारित

ཀུན་མཁྱེན་ཐུབ་པའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
कुन ख्येन थुप पई शप ल दुद्
सर्वज्ञ मुनिपाद को मैं नमन करता हूँ।1।

མཐའ་བྲལ་ཟབ་མོའི་མཚོ་ལ་གནས། །
था डल ज़प मोइ छ़ो ल नेस्
अन्त रहित गम्भीर सागर में स्थित

གཞན་སྡེ་འདབ་བཟང་བྱེ་བ་ཡིས། །
शेन दे दप ज़ङ छे व यीस्
करोडों अन्य पक्ष के पक्षियों द्वारा

ལྟ་ཟེར་འགོག་པར་མ་ནུས་པའི། །
त ज़ेर गोग पर म नुस् पई
दर्शन के किरण को अवरुद्ध नहीं कर सकते

འཕགས་མཆོག་ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས་ལ་འདུད། །
फग छोग लु डुप शप ल दुद्
ऐसे आर्य श्रेष्ठ नागार्जुन पाद को नमन करता हूँ।2।

མངལ་གྱི་དྲི་མ་རིང་དུ་སྤངས། །
ङल ग्यि डि म रिङ दु पङ
गर्भ-मल को अति दूर त्याग कर

མདོ་རྒྱུད་ཀུན་གྱི་ཕ་རོལ་སོན། །
दो ग्युद् कुन ग्यि फ रोल सोन
समस्त सूत्र-तन्त्रों में पारंगत होकर

མུ་སྟེགས་རྒོལ་བ་བཟློག་མཛད་པ། །
मु तेग गोल व दोग ज़े प
तैर्थिकों के विवाद को हटाने वाले

ཨཱརྱ་དེ་བའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
आर्य दे वई शप ल दुद्
आर्यदेव पाद को नमन करता हूँ।3।

རྒྱལ་བ་ཉིད་ལས་གསུང་རབ་ཀུན། །
ग्यल व ञिद् लेस सुङ रप कुन
जिन स्वयं से समस्त वचनों को

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་རྒྱས་མཛད་པའི། །
ग्यल वई तेन प ग्येस् ज़े पई
जिन शासन को विस्तार करने वाले

སོ་སོ་སྐྱེ་བོའི་ཚུལ་བཟུང་ནས། །
सो सो क्ये बोइ छुल ज़ुङ नेस्
पृथक् जन का रूप धारण कर

གསུང་རབ་རྣམས་ལ་གཟུངས་སྤོབས་ཅན། །
सुङ रप नम ल ज़ुङ पोप चेन
वचनों में धारणी प्रतिभा-लब्ध

རྨད་བྱུང་སྤོབས་པའི་ཚིག་གཅིག་གིས། །
मे छुङ पोप पई छिग चिग गीस्
अद्भुत प्रतिभा के ध्वनि, एकवचन से ही

རྒོལ་ངན་སྤོབས་པ་རྒྱུན་གཅོད་པ། །
गोल ङेन पोप प ग्युन चोद् प
कुवादियों के मान को उन्मूलन करने वाले

ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཡི། །
छोग लेस नम पर ग्यल व यि
दिशाओं को जीतने वाले

མཉམ་དུ་གྲགས་པའི་པད་དཀར་བྱེ། །
ञम दु डग पई पे कर छे
कीर्ति का पुण्डरीक खिल उठा

ལུགས་བཟང་གསེར་གྱི་རི་བོ་ལ། །
लुग ज़ङ सेर ग्यि रि बो ल
भद्र परम्परा के सुवर्णगिरि पर

གསན་ནས་རྒྱལ་བ་ཇི་བཞིན་དུ། །
सेन नेस् ग्यल व जि शिन दु
श्रवण करके जिन सदृश

འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ཞབས་ལ་འདུད། །
फग प थोग मेद् शप ल दुद्
आर्यदेव पाद असंगपाद को नमन करता हूँ।4।

དགུ་བཅུ་གོ་དགུ་འབུམ་སྡེ་ཡི། །
गु चु गो गु बुम दे यि
नैनानवें लाख निकाय

མཁས་མཆོག་དབྱིག་གཉེན་ཞབས་ལ་འདུད། །
खेस् छोग यिग ञेन शप ल दुद्
उत्कृष्ट विद्वान् वसुबन्धुपाद को मैं नमन करता हूँ।5।

ས་ཆེན་རྣམ་པ་དྲུག་གཡོས་ནས། །
स छेन नम प डुग योस् नेस्
पृथ्वी छह बार कम्पित होकर

ཕྱོགས་ཀྱི་གླང་པོའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
छोग क्यि लङ पोइ शप ल दुद्
दिग्नागपाद को मैं नमन करता हूँ।6।

འོད་ཀྱིས་འཛམ་གླིང་གང་བ་དང་། །
ह़ोद् क्यीस् ज़म लिङ गङ व दङ
प्रभा से जम्बुद्वीप व्याप्त

ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
छोस् क्यि डग पई शप ल दुद्
ऐसे धर्मकीर्तिपाद को मैं नमन करता हूँ।7।

ཐུབ་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཉི་མ་ཤར། །
थुप पई तुल शुग ञि म शर
मुनिव्रत के सूर्योदय द्वारा

ངུར་སྨིག་འཛིན་པའི་པད་ཚལ་རྒྱས། །
ङुर मिग ज़िन पई पे छ़ल ग्येस्
काषाय-धारी पद्मोद्यान खिल उठा

ཡོན་ཏན་འོད་ཀྱི་ཞབས་ལ་འདུད། །
योन तेन ह़ोद् क्यि शप ल दुद्
गुणप्रभ-पाद को मैं नमन करता हूँ।8।

ལེགས་པར་གསུང་བའི་ནམ་མཁའ་ལ། །
लेग पर सुङ बई नम खा ल
सुभाषित वचनों के गगन में

བློ་གྲོས་ཟླ་བ་ཤར་བ་ཡིས། །
लो डोस् द व शर व यीस्
धीः रूपी चन्द्रमा का उदय हुआ

གདུལ་བྱའི་ཀུ་མུད་འཛུམ་བྱེད་པ། །
दुल छई कु मुद् ज़ुम छेद् प
कुमुद रूपी विनयजन खिल उठे

ཤཱཀྱ་འོད་ཀྱི་ཞབས་ལ་འདུད། །
शाक्य ह़ोद् क्यि शप ल दुद्
शाक्यप्रभ-पाद को मैं नमन करता हूँ।9।

བདག་ནི་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ། །
दग नि क्ये व थम चे दु
मैं समस्त जन्मान्तरों में

ཐུབ་བསྟན་མཛེས་པའི་རྒྱན་གྱུར་ཏེ༔ །བསླབ་སྦྱངས་ཡོན་
थुप तेन ज़ेस् पई ग्येन ग्युर ते
मुनि-शासन का सु-अलंकार बनूँ

ཏན་ཀུན་ལྡན་པའི། །
लप छङ योन तेन कुन देन पई
शिक्षा-अभ्यास समस्त गुणों से युक्त होकर

མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་ཐོབ་པར་ཤོག །
छोग तु ग्युर प थोप पर शोग
परम श्रेष्ठता को प्राप्त करूँ।10।

ཅེས་འདི་རྒྱན་དྲུག་མཆོག་གཉིས་ལ། །བཀའ་དྲིན་དྲན་པའི་སྒོ་ནས་ནི། །དགེ་སློང་སྤོང་བ་ལྷུར་ལེན་པས། །ཡུད་ཙམ་ཞིག་གིས་བསྟོད་པ་ཡིན། །
यह, षडालंकार और श्रेष्ठ-द्वय के कृपा का स्मरण करते हुए वैराग्यरत भिक्षु ने क्षणमात्र में स्तुति किया है।

འཛམ་གླིང་གསལ་བྱེད་རྒྱན་དུ་ཡོངས་གྲགས་དྲུག །
ज़़म लिङ सल छेद् ग्येन दु योङ डग डुग
जम्बुद्वीप के छह प्रसिद्ध षडालंकार हैं

ཁྱད་པར་རྒྱལ་བས་ཡང་ཡང་ལུང་བསྟན་པ། །
ख्ये पर ग्यल वे यङ यङ लुङ तेन प
विशेष जिन द्वारा पुनः-पुनः व्याकर्णित

ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཐོགས་མེད་ནས། །
शिङ त छेन पो लु डुप थोग मेद् नेस्
महारथी नागार्जुन, और असंग से

བརྒྱུད་པའི་གསུང་རབ་ཆུ་བོ་ཀུན་འདུས་ཏེ། །
ग्युद् पई सुङ रप छु बो कुन दुस् ते
परम्परा सम्प्रेषित जलधारा

གཅིག་ཏུ་འབབ་པ་བཀའ་བརྒྱུད་ཅེས་གྲགས་པ། །
चिग तु बप प का ग्युद् चेस् डग प
विखण्डितः प्रवाहित कर्ग्युद् परम्परा, ऐसा प्रसिद्ध

སྐྱེ་དགུའི་མགོན་དུ་གྱུར་པ་ཐམས་ཅད་ལ། །
क्ये गुइ गोन दु ग्युर प थम चे ल
समस्त प्राणियों के नाथों को

ལུས་ངག་ཡིད་ཀྱིས་རྟག་ཏུ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །
लुस् ङग यिद् क्यीस् तग तु छग छ़ल दुद्
**सदैव काय-वाक्-चित्त से मैं वन्दना-नमन करता हूँ**

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་རྗེས་སུ་འཛིན་གྱུར་ཅིག །
छ़े रप कुन तु जेस् सु ज़िन ग्युर चिग
**जन्म-जन्मान्तरों में अनुगृहीत करें।** इति।

ཅེས་པ་འདི་ཡང་། ཆོས་ཁྲི་ཐང་དུ། གྲྭ་ཚང་གི་དགེ་འདུན་པ་རྣམས་ཀྱིས་དགོས་ཞེས་བྲིས་པའོ། །འདི་གཉིས་ཀ་རྗེ་བདུན་པའི་གསུང་ཡིན་ནོ། །

## ཤིང་རྟ་ཉེར་ལྔའི་གསོལ་འདེབས།
# पञ्चविंशति-रथ की अभ्यर्थना

རྩ་གསུམ་ཀུན་འདུས་སློབ་དཔོན་པདྨ་འབྱུང་། །
ज़्र सुम कुन दुस् लोप पोन पेमा छुङ
त्रिमूलों के साकार आचार्य पद्मसम्भव

མཁན་ཆེན་ཞི་འཚོ་ཆོས་རྒྱལ་ཁྲི་སྲོང་ཞབས། །
खेन छेन शि छ़ो छोस् ग्यल ठि सोङ शप
महोपाध्याय शान्तरक्षित, धर्मराज ठिस्रोङ-पाद्

གནུབས་ཆེན་སངས་རྒྱས་ཉང་སྟོན་ཉི་མ་འོད། །
नुप छेन सङ ग्येस् ञङ तोन ञि म ह़ोद्
नुब-छेन संझे-य़ेशे, ञङ्-तोन् ञिमा-होजेर

བཀའ་གཏེར་ཤིང་རྟ་ལྔ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། །
का तेर शिङ त ङ ल सोल व देप
आगम-निधियों के महारथियों से मैं अभ्यर्थना करता हूँ।1।

རྡོ་རྗེ་འཆང་དངོས་བླ་ཆེན་སྙིང་པོའི་ཞབས། །
दोर जे छङ ङोस् ल छेन ञिङ पोइ शप
वज्रधर का साकार रूप महागुरु कुनगा ञिङ्पो

བསོད་ནམས་རྩེ་མོ་གྲགས་པ་རྒྱལ་མཚན་དང་། །
सोद् नम ज़्रे मो डग प ग्यल छ़ेन दङ
सोनम चेमो, डगपा ग्यलछन और

ས་སྐྱ་པཎ་ཆེན་འཕགས་པ་རིན་པོ་ཆེ། །
स क्य पण छेन फग प रिन पो छे
साक्य-पण्डित, फगपा रिनपोछे

རྗེ་བཙུན་གོང་མ་ལྔ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། །
जे ज़्रुन गोङ म ङ ल सोल व देप
पंचोत्तर स्वामी भट्टारक गुरुओं से मैं अभ्यर्थना करता हूँ।2।

དགྱེས་མཛད་རྡོ་རྗེ་མར་སྟོན་བློ་གྲོས་ཞབས། །
ग्येस् ज़े दोर जे मर तोन लो डोस् शप
साक्षात् हेवज्र मरपा लोडो-पाद्

མི་ལ་རས་ཆེན་མཉམ་མེད་སྒམ་པོ་པ། །
मि ल रेस छेन ञम मेद् गम पो प
मिलारेपा, अतुलनीय गम्पो-पाद्

དུས་གསུམ་མཁྱེན་པ་འགྲོ་མགོན་ཕག་མོ་གྲུབ། །
दुस् सुम ख्येन प डो गोन फग मो डुप
दुसुम खेनपा, डोगोन फगमो-डुब

བཀའ་བརྒྱུད་གོང་མ་ལྔ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། །
का ग्युद् गोङ म ङ ल सोल व देप
काग्युद् पंचोत्तर गुरुओं से मैं अभ्यर्थना करता हूँ।3।

འོད་དཔག་མེད་མགོན་དཔལ་ལྡན་མར་མེ་མཛད། །
ह़ोद् पग मेद् गोन पल देन मर मे ज़े
नाथ अमिताभ के साक्षात् रूप श्रीदीपंकर

རྒྱལ་བའི་འབྱུང་གནས་སྤྱན་སྔ་ཚུལ་ཁྲིམས་འབར། །
ग्यल वई छुङ नेस् चेन ङ छुल ठिम बर
ग्यलवई जुङ्ने, चनङा छुलठिम-बर

རིན་ཆེན་གསལ་དང་གཞོན་ནུ་རྒྱལ་མཚན་ཞབས། །
रिन छेन सल दङ शोन नु ग्यल छ़ेन शप
**रिनछेन-पल और शोन्नु ग्यल्छन-पाद्**

བཀའ་གདམས་བཤེས་གཉེན་ལྔ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས།།
का दम शेस् ञेन ङ ल सोल व देप
**कादम पाँच कल्याणमित्रों को मैं वन्दना करता हूँ।4।**

བརྟན་པའི་འཁོར་ལོ་རྗེ་བཙུན་ཙོང་ཁ་པ། །
तेन पई खोर लो जे ज़ुन ज़ोङ ख प
**मञ्जुश्री के साक्षात् रूप स्वामी भट्टारक चोंखापा**

རྒྱལ་ཚབ་ཆོས་རྗེ་མཁས་གྲུབ་དགེ་ལེགས་དཔལ། །
ग्यल छ़प छोस् जे खेस् डुप गे लेग पल
**ग्यलछब-छोजे, खेडुब गेलेग-पल**

དགེ་འདུན་གྲུབ་པ་པཎ་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ། །
गेन दुन डुप प पण छेन छोस् क्यि ग्यल
**गेदुन-डुब, पनछेन छोकी ग्यल्छन**

འཇམ་མགོན་ཡབ་སྲས་ལྔ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། །
जम गोन यप सेस् ङ ल सोल व देप
**मञ्जुनाथ के पंच पिता-पुत्र को मैं वन्दना करता हूँ।5।**

དེ་ལྟར་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
दे तर सोल व तप पई छिन लप क्यीस्
**इस अभ्यर्थना के अनुप्रभाव से**

བདག་སོགས་ཚེ་རིང་ནད་མེད་ཆོས་བཞིན་སྤྱོད། །
दग सोग छ़े रिङ ने मेद् छोस् शिन चोद्
**हम सभी दीर्घकाल, निरोग हो धर्मानुरूप चर्या करें**

ཡོངས་འཛིན་བཤེས་གཉེན་མཆོག་གིས་རྗེས་བཟུང་ནས།།
योङ ज़िन शेस् ञेन छोग गीस् जेस् ज़ुङ नेस्
**उत्तम कल्याणमित्रों द्वारा अनुगृहीत कर**

མྱུར་དུ་བྱང་ཆུབ་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་ཤོག །
न्युर दु छङ छुप गो फङ थोप पर शोग
**शीघ्र बोधिपथ की प्राप्ति हों।6।**

རིས་མེད་ཐུབ་བསྟན་འཛིན་པའི་དམ་པ་རྣམས། །
रीस् मेद् थुप तेन ज़िन पई दम प नम
**परम्परातीत सभी मनि-शासनधर**

བསྐལ་བརྒྱར་ཞབས་བརྟན་འཕྲིན་ལས་ཕྱོགས་བཅུར་འཕེལ།།
कल ग्यर शप तेन ठिन लेस छोग चुर फेल
**शत कल्प रहेंऔर कार्य चारों दिशाओं में फैले**

དགེ་འདུན་སྡེ་དང་བཤད་སྒྲུབ་བསྟན་པ་རྒྱས། །
गेन दुन दे दङ शे डुप तेन प ग्येस्
**भिक्षुसंघ निकाय और अध्ययन-साधना शासन फलें-फूलें**

ས་གསུམ་བཀྲ་ཤིས་སྣང་བས་ཁྱབ་གྱུར་ཅིག །
स सुम ट शीस् नङ वे ख्यप ग्युर चिग
**त्रिभुवन में मंगल प्रभा व्याप्त हों।7।**

ཅེས་རྨི་ལམ་གྱི་སྣང་ཚུལ་ཅུང་ཟད་ཅིག་ལ་བརྟེན་ནས་ཐུབ་བསྟན་རིས་སུ་མ་ཆད་པ་ལ་གུས་པའི་བྱ་བྲལ་མཉྫུ་གྷོ་ཥས་བྲིས་པ་དགེ །

यह स्वप्न का आश्रय लेकर समस्त गुणेश्वर के परम्परा में श्रद्धा रखने वाला कृत-कृत्य मञ्जुघोष ने लिखा। शुभमस्तु।

གསོལ་འདེབས་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཐུང་མ།

# संक्षिप्त वज्रधर अभ्यर्थना

རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་ཏཻ་ལོ་ན་རོ་དང་། །
दोर जे छङ छेन तै लो ना रो दङ
महावज्रधर, तैलो, नरोपाद

མར་པ་མི་ལ་ཆོས་རྗེ་སྒམ་པོ་པ། །
मर प मि ल छोस् जे गम पो प
मरपा, मिला, धर्मस्वामी गम्पोपाद

དུས་གསུམ་ཤེས་བྱ་ཀུན་མཁྱེན་ཀརྨ་པ། །
दुस् सुम शेस् छ कुन ख्येन कर्म प
त्रैकालिक ज्ञेय-ज्ञाता कर्मापाद

ཆེ་བཞི་ཆུང་བརྒྱད་བརྒྱུད་པར་འཛིན་རྣམས་དང་། །
छे शि छुङ ग्ये ग्युद् पर ज़िन नम दङ
चार अग्र और आठ अनुज परम्पराधर

འབྲི་སྟག་ཚལ་གསུམ་དཔལ་ལྡན་འབྲུག་པ་སོགས། །
डि तग छ़ल सुम पल देन डुग प सोग
डी, तग, छल तथा डुगपा इत्यादि

ཟབ་ལམ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེ་ལ་མངའ་བརྙེས་པའི། །
ज़प लम छग ग्य छे ल ङा ञेस् पई
गम्भीर मार्ग महामुद्रा पर प्रभुत्व लब्ध

མཉམ་མེད་འགྲོ་མགོན་དྭགས་པོ་བཀའ་བརྒྱུད་ལ། །
ञम मेद् डो गोन दग पो का ग्युद् ल
अतुलनीय जगन्नाथ द्वगपो परम्परा से

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བཀའ་བརྒྱུད་བླ་མ་རྣམས། །
सोल व देप सो का ग्युद् ल म नम
अभ्यर्थना करता हूँ, काग्युद परम्परा के गुरु-

བརྒྱུད་པ་འཛིན་ནོ་རྣམ་ཐར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
ग्युद् प ज़िन नो नम थर छिन ग्यीस् लोप
परम्परा को मैं धारण कर विमोक्ष हेतु अधिष्ठित करें।1।

ཞེན་ལོག་སྒོམ་གྱི་རྐང་པར་གསུངས་པ་བཞིན། །
शेन लोग गोम ग्यि कङ पर सुङ प शिन
वैराग्य, भावना का चरण है- ऐसे वचन सदृश

ཟས་ནོར་ཀུན་ལ་ཆགས་ཞེན་མེད་པ་དང་། །
ज़ेस् नोर कुन ल छग शेन मेद् प दङ
समस्त द्रव्य-सम्पत्ति के प्रति वीतराग अर्थात्

ཚེ་འདིའི་གདོས་ཐག་ཆོད་པའི་སྒོམ་ཆེན་ལ། །
छ़े दी दोस् थग छोद् पई गोम छेन ल
ऐहिक तृष्णा के रस्सी को काटने वाला साधक

སྙེད་བཀུར་ཞེན་པ་མེད་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
ञेद् कुर शेन प मेद् पर छिन ग्यीस् लोप
लाभ-सत्कार अभिनिवेश रहित होने के लिये अधिष्ठित करें।2।

མོས་གུས་སྒོམ་གྱི་མགོ་བོར་གསུངས་པ་བཞིན། །
मोस् गुस् गोम ग्यि गो बोर सुङ प शिन
श्रद्धा-भक्ति भावना का शीर्ष कहे सदृश

མན་ངག་གཏེར་སྒོ་འབྱེད་པའི་བླ་མ་ལ། །རྒྱུན་དུ་གསོལ་
मेन ङग तेर गो छेद् पई ल म ल
अववाद-निधि द्वार को खोलने वाले गुरुओं को

བ་འདེབས་པའི་སྒོམ་ཆེན་ལ། །
ग्युन दु सोल व देप पई गोम छेन ल
निरन्तर अभ्यर्थना करने वाला महासाधक, मैं

བཅོས་མིན་མོས་གུས་སྐྱེ་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
चोस् मिन मोस् गुस् क्ये बर छिन ग्यीस् लोप
अकृत्रिम श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न होने के लिये अधिष्ठित करें।3।

ཡེངས་མེད་སྒོམ་གྱི་དངོས་གཞིར་གསུངས་པ་བཞིན། །
येङ मेद् गोम ग्यि ङोस् शिर सुङ प शिन
अविक्षिप्त भावना का मौल कहे अनुरूप

གང་ཤར་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་སོ་མ་དེ། །
गङ शर तोग पई ङो बो सो म दे
जो भी नवोदित विकल्प हैं

མ་བཅོས་དེ་ཀར་འཇོག་པའི་སྒོམ་ཆེན་ལ། །
म चोस् दे कर जोग पई गोम छेन ल
उसमें कृत्रिम रहित समाहित रहने वाले महासाधक को

བསྒོམ་བྱ་བློ་དང་བྲལ་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
गोम छ लो दङ डल बर छिन ग्यीस् लोप
भावना बुद्धि अतीत होने के लिये अधिष्ठित करें।4।

རྣམ་རྟོག་ངོ་བོ་ཆོས་སྐུར་གསུངས་པ་བཞིན། །
नम तोग ङो बो छोस् कुर सुङ प शिन
विकल्प का स्वभाव धर्मकाय कहे सदृश

ཅི་ཡང་མ་ཡིན་ཅིར་ཡང་འཆར་བ་ལ། །མ་འགགས་རོལ་
चि यङ म यिन चिर यङ छर व ल
अनस्तित्व में सभी अस्तित्वों का उदय

པར་འཆར་བའི་སྒོམ་ཆེན་ལ། །
म गग रोल पर छर बई गोम छेन ल
विना अवरुद्ध क्रीडा रूप में उदित होने वाले साधकों को

འཁོར་འདས་དབྱེར་མེད་རྟོགས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
खोर देस् येर मेद् तोग पर छिन ग्यीस् लोप
संसार-निर्वाण अभिन्न रूप में अधिगम करने के लिये अधिष्ठित करें।5।

སྐྱེ་བ་ཀུན་ཏུ་ཡང་དག་བླ་མ་དང་། །
क्ये व कुन तु यङ दग ल म दङ
समस्त जन्मों में सम्यग् गुरु के साथ

འབྲལ་མེད་ཆོས་ཀྱི་དཔལ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་། །
डल मेद् छोस् क्यि पल ल लोङ चोद् चिङ
अभिन्न हो धर्म-श्री का उपभोग कर

ས་དང་ལམ་གྱི་ཡོན་ཏན་རབ་རྫོགས་ནས། །
स दङ लम ग्यि योन तेन रप ज़ोग नेस्
भूमि और मार्गों के गुणों को परिपूर्ण कर

རྡོ་རྗེ་འཆང་གི་གོ་འཕང་མྱུར་ཐོབ་ཤོག །
दोर जे छङ गि गो फङ न्युर थोप शोग
वज्रधर का पद शीघ्र प्राप्त हों।6।

ཅེས་པའང་བན་སྒར་བ་འཇམ་དཔལ་བཟང་པོས་མཛད་པའོ། །

यह बेन-गरवा जमयङ जङ्पो द्वारा लिखा गया।

བྱང་སྡོམ་བརྒྱུད་འདེབས།

# संक्षिप्त हेतु-यान-परम्परा अध्येषणा (बोधिसत्त्वसंवर-परम्परा-अध्येषणा)

རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་མངོན་མཐོ་དང་ངེས་ལེགས་ཐེག་པ་གསུམ་གྱིས་ལམ། རྒྱུའི་ཐེག་པ་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་བརྒྱུད་པའི་རིམ་པ་རྣམས་ལ་མདོར་བསྡུས་ཏེ་གསོལ་བ་འདེབས་པ་ནི། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

जिन-वाङ्मय अभ्युदय-निश्रेयस् (अर्थात्) त्रियान का मार्ग है। प्रधानभूत हेतुयान रूपी पारम्परिक क्रमों को संक्षेप रूप में अध्येषणा तो। समस्त बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों को प्रणाम करता हूँ।।

སྟོན་པ་མཚུངས་མེད་བཅོམ་ལྡན་ཤཱཀྱ་ཐུབ། །
तोन प छुङ मेद् चोम देन शाक्य थुप
शास्ता अनुपम (हैं) भगवान् शाक्यमुनि।

མཁས་པའི་གཙུག་རྒྱན་དབྱིག་གཉེན་རྣམ་གྲོལ་སྡེ། །
खेस् पई त्सुग ग्येन यिग ञेन नम डोल दे
विद्वत् चूडामणि वसुबन्धु, विमुक्तिसेन।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

བྱམས་པ་མགོན་པོས་རྗེས་བཟུང་སེང་གེ་བཟང་། །
छम प गोन पोस् जेस् ज़ुङ सेङ गे ज़ङ
मैत्रेयनाथ द्वारा अनुगृहीत (आचार्य) हरिभद्र।

རྒྱ་ཆེན་སྤྱོད་པའི་ཤིང་རྟ་ཆེ་རྣམས་ལ། །
ग्य छेन चोद् पई शिङ त छे नम ल
विस्तृत चर्यावान् महारथियों से।

རྒྱལ་སྲས་ཐུ་བོ་འཇམ་དབྱངས་དཔལ་ལྡན་མཚན། །
ग्यल सेस् थु बो जम यङ पल देन छेन
जिनपुत्र ज्येष्ठ मञ्जुघोष श्रीयुत नाम।

རྒྱལ་ཚབ་དམ་པ་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་སྐྱོབ། །
ग्यल छप दम प फग प थोग मेद् क्योप
परम जिन-प्रतिनिधि आर्य असंग त्राता।

དད་པའི་སར་གནས་གྲོལ་སྡེ་མཆོག་གི་སྡེ། །
दे पई सर नेस् डोल दे छोग गि दे
श्रद्धा भूमिस्थ मुक्तिसेन परमसेन।

མཁས་མཆོག་འདུལ་བའི་སྡེ་དང་རྣམ་སྣང་མཛད། །
खेस् छोग दुल बई दे दङ नम नङ ज़े
परम विद्वान् विनयसेन तथा वैरोचन।

ཀུ་སུ་ལུ་གཉིས་བྱང་སེམས་གསེར་གླིང་པ། །
कु सु लु ञीस् छङ सेम सेर लिङ प
द्विविध कुसुलि (तथा) बोधिसत्त्व सुवर्णद्वीप।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

འཕགས་པ་ལྷ་དང་དཔལ་ལྡན་ཟླ་བ་གྲགས། །
फग प ल्ह दङ पल देन द व डग
आर्यदेव तथा श्रीमान् चन्द्रकीर्ति।

རིག་པའི་ཁུ་བྱུག་གཉིས་ལ་སོགས་པ་ཡི། །
रिग पई खु छुग ञीस् ल सोग प यि
द्विविध विद्याकोकिल इत्यादि।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

དེ་སྲས་བྱ་ཡུལ་བ་དང་ཡེ་ཤེས་འབར། །
दे सेस् छ युल व दङ ये शेस् बर
उनका पुत्र ज-युल-वा और येशेस्-बर्।

དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ཆེན་པོ་དུ་མ་ལ། །
गे बई शेस् ञेन छेन पो दु म ल
अनेक महान् कल्याणमित्रों से।

ཤིང་རྟ་གཉིས་ཀྱི་ལམ་སྲོལ་ལས་བྱུང་བའི། །
शिङ त ञीस् क्यि लम सोल लेस छुङ बई
द्विविध (महा-)रथियों की परम्परा से उद्भूत।

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཟླ་འོད་གཞོན་ནུ་དང་། །
दग ञिद् छेन पो द ह़ोद् शोन नु दङ
महात्मा चन्द्रप्रभ कुमार तथा।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

མ་དག་གདུལ་བྱའི་སྣང་ངོར་སྤྲུལ་པའི་སྐུ། །
म दग दुल छई नङ ङोर टुल पई कु
अशुद्ध विनेयजनों के आभास में निर्माणकाय (स्वरूप) हैं।

ཡབ་སྲས་བརྒྱུད་པར་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ལ། །
यप सेस् ग्युद् पर चेस् प थम चे ल
पिता-पुत्र समस्त परम्परा सहितों की।

ཐེག་ཆེན་ལམ་སྲོལ་གཉིས་འཛིན་མར་མེ་མཛད། །
थेग छेन लम सोल ञीस् ज़िन मर मे ज़े
महायान परम्परा के द्विविध ग्राहक दीपङ्कर(-श्रीज्ञान)।

བཤེས་གཉེན་ཆེན་པོ་སྟོན་པ་ཚུལ་ཁྲིམས་འབར། །
शेस् ञेन छेन पो तोन प छुल ठिम बर
महा(कल्याण)मित्र शास्ता छुल्-ठिम्स-बर।

ལྕགས་རི་བ་དང་སྣེ་ཟུར་པ་ལ་སོགས། །
चग रि व दङ ने ज़ुर प ल सोग
चग्स-री-वा तथा ने-ज़ुर-पा इत्यादि।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

གསུང་རབ་ཆུ་བོ་ཀུན་གྱི་འཇུག་པའི་ངོགས། །
सुङ रप छु बो कुन ग्यि जुग पई ङोग
तीर्थ समस्त वाङ्मय नदियों के।

རྒྱལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཁའ་བདག་དུས་གསུམ་མཁྱེན། །
ग्यल वई ठिन लेस ङा दग दुस् सुम ख्येन
जिन (बुद्ध) कर्म के अधिपति दुस्-सुम-खेन (त्रिकालज्ञ)।

གྲངས་མེད་གོང་ནས་མངོན་པར་སངས་རྒྱས་ཀྱང་། །
ङङ मेद् गोङ नेस् ङोन पर सङ ग्येस् क्यङ
असंख्य (कल्प) पहले से ही अभि-सम्बुद्धत्व को प्राप्त करने पर भी।

གང་ལ་གང་འདུལ་ཚུལ་གྱིས་སྟོན་མཛད་པ། །
गङ ल गङ दुल छुल ग्यीस् तोन ज़े प
जिसको जैसे (अर्थात् योग्यतानुसार) दमित करने के क्रम को दिखाने वाले।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

ཤོ་ལོ་ཀ་འདི་བརྒྱུད་འདེབས་དངོས་ལ་མེད་མོད་འདིར་སྤྲོས་པ་བསྡུས་པའི་དབང་གིས་བཙུགས་པ་ཡིན་ནོ། །
यह श्लोक वास्तविक पारम्परिक अध्येषणा(-पाठ) में नहीं होने पर भी यहाँ प्रपञ्च संग्रहवश जोड़ा गया है।

ཐུབ་དབང་མ་དྲོས་ལས་བྱུང་གསུང་རབ་ཀྱི། །
थुप वङ म डोस् लेस छुङ सुङ रप क्यि
मुनीन्द्र (रूपी) अनवतप्त से उद्भूत वाङ्मय रूपी।

ཆུ་བོ་དགེ་ལེགས་པད་ཚལ་སྐྱེད་བྱེད་པ། །
छु बो गे लेग पे छ़ल क्येद् छेद् प
नदी, स्वस्ति (रूपी) पद्मवन उत्पन्न करता।

གང་ལ་བརྒྱུད་པའི་རིམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ། །
गङ ल ग्युद् पई रिम प थम चे ल
जहाँ भी परम्परा-क्रम है, सभी से।

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठान हेतु अध्येषणा करता हूँ।।

དེ་ལྟར་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱི། །
दे तर सोल व तप पई छिन लप क्यि
इस प्रकार अध्येषणा करने के अधिष्ठान से।

མི་བཟད་ངན་འགྲོའི་སྡུག་བསྔལ་འཇིགས་རུང་གིས། །
मि ज़े ङेन डोइ दुग ङल जिग रुङ गीस्
अक्षय दुर्गति रूपी भयानक दुःख से।

ཤིན་ཏུ་སྔངས་ཏེ་མཐོ་རིས་བསྙེན་སླད་དུ། །
शिन तु ङङ ते थो रीस् तेन ले दु
अत्यन्त भयभीत होकर स्वर्गाश्रय हेतु।

སྲོག་ལ་བབ་ཀྱང་ཉེས་པ་མི་སྤྱོད་ཅིང་། །
सोग ल बप क्यङ ञेस् प मि चोद् चिङ
प्राण पर आ पड़ने पर भी दोष का आचरण नहीं कर।

སྔར་བསགས་ལས་རྣམས་བྱང་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
ङर सग लेस नम छङ बर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें कि पूर्व संचित कर्म शोधित हों।।

རབ་དཀར་དགེ་བའི་ཚོགས་རྣམས་བསྒྲུབ་བརྩོན་ཏེ། །
रप कर गे बई छ़ोग नम डुप ज़ोन ते
प्रश्वेत कुशल-सम्भार साधने हेतु प्रयत्न कर।

དལ་བ་བརྒྱད་དང་འབྱོར་པ་བཅུ་ལྡན་པའི། །
दल व ग्ये दङ छोर प चु देन पई
आठ क्षण(-सम्पद्) तथा दश सम्पद् से युक्त हों।

མི་ཡི་རྟེན་མཆོག་ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་ཡང་། །
मि यि तेन छोग छ़े रप कुन तु यङ
परम नराश्रय समस्त जन्मान्तरों में भी।

ཡང་ནས་ཡང་དུ་ཐོབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
यङ नेस् यङ दु थोप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें कि बार-बार प्राप्त हों।।

སྡུག་བསྔལ་མེ་ལྕེའི་ཕྲེང་བས་བསྐོར་བའི་འོབས། །
दुग ङल मे चे ठेङ वे कोर बई ह़ोप
दुःख (रूपी) अग्निज्वाला-माला से परिवृत्त कुण्ड।

སྲིད་པའི་བཙོན་ར་ཐར་བར་དཀའ་བ་ལས། །
सिद् पई ज़ोन र थर बर का व लेस
मुक्ति हेतु कठिन भवकारागार से।

ཐར་བར་འདོད་པའི་དྲི་མེད་བསླབ་པ་གསུམ། །
थर बर दोद् पई डि मेद् लप प सुम
मुमुक्षुओं की विमल त्रिशिक्षा।

དོན་གཉེར་ཆེན་པོ་སྐྱེ་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
दोन ञेर छेन पो क्ये बर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें महान् ध्यानी बनूँ।।

དེ་དག་ཉེར་ཞི་གཉིས་ལ་ངལ་བསོས་ནས། །
दे दग ञेर शि ञीस् ल ङल सोस् नेस्
वे द्विविध उपशान्त में विश्राम करके।

སྙིང་སྟོབས་ཆེན་པོ་སྐྱེ་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
ञिङ तोप छेन पो क्ये बर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें परमोत्साह उत्पन्न हो।।

དེ་དག་རྣམས་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་མེ་འབར་བའི། །
दे दग नम क्यि दुग ङल मे बर बई
उन (सत्त्वों) की दुःखाग्नि प्रज्वलित रूपी।

གང་དེ་ཉམས་པ་མེད་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
गङ दे ञम प मेद् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, वह नष्ट न हो जाए।।

དོན་རྣམས་བསྒྲུབ་སླད་རྨད་བྱུང་བྱང་ཆུབ་སྤྱོད། །
दोन नम डुप ले मे छुङ छङ छुप चोद्
करूँ।

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྒྱ་ཆེར་སྟོན་གྱུར་ཅིག །
सेम चेन नम ल ग्य छेर तोन ग्युर चिग
समस्त सत्त्वों में विस्तृत रूप से प्रदर्शन करूँ।।

སྒྲིབ་གཉིས་བྲལ་བའི་ཡེ་ཤེས་བླ་མེད་ཀྱིས། །
डिप ञीस् डल बई ये शेस् ल मेद् क्यीस्
दो आवरणों से रहित अनुत्तर ज्ञान के द्वारा।

གསལ་བྱེད་འཇིག་རྟེན་སྒྲོན་མ་ཉིད་གྱུར་ཅིག །
सल छेद् जिग तेन डोन म ञिद् ग्युर चिग
हो जाऊँ (मैं) लोक-दीप प्रकाशक।।

གང་ཞིག་ཞི་བ་དམན་པ་དོན་གཉེར་བ། །
गङ शिग शि व मेन प दोन ञेर व
जो हीन शान्त (निर्वाण) के ध्यानी हैं।

རིམ་གྱིས་བྱང་ཆུབ་མཆོག་ལ་འཇུག་པ་ཡི། །
रिम ग्यीस् छङ छुप छोग ल जुग प यि
क्रमशः परम बोधि में प्रवेश हेतु।

ཐེག་མཆོག་རིགས་ཀྱི་ནུས་པ་མི་དམན་པས། །
थेग छोग रिग क्यि नुस् प मि मेन पेस्
परम यान गोत्र के अहीन (श्रेष्ठ) शक्ति द्वारा।

འགྲོ་ལ་སྙིང་བརྩེས་བྱང་ཆུབ་སེམས་བསྐྱེད་ནས། །
डो ल ञिङ ज़्चेस् छङ छुप सेम क्येद् नेस्
करुणा-दया द्वारा प्राणियों के प्रति बोधिचित्तोत्पाद कर।

བྱང་ཆུབ་སེམས་བསྐྱེད་གྱུར་ནས་འགྲོ་རྣམས་ཀྱི། །
छङ छुप सेम क्येद् ग्युर नेस् डो नम क्यि
बोधिचित्तोत्पादित कर (समस्त) प्राणियों के) अर्थों के साधन हेतु अद्भुत बोधि(सत्त्वचर्या) का आचरण

ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་དུ་དུས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་ཡང་། །
छोग चुइ शिङ दु दुस् नम कुन तु यङ
दशदिग् क्षेत्र के समस्त कालों में भी।

ཟབ་དང་རྒྱ་ཆེའི་ལམ་གཉིས་རབ་བགྲོད་ནས། །
ज़प दङ ग्य छे लम ञीस् रप डोद् नेस्
गम्भीर तथा विस्तृत द्विविध मार्ग से चल कर।

གང་ལ་གང་འདུལ་དེ་ལ་མ་ནོར་ལམ། །
गङ ल गङ दुल दे ल म नोर लम
यथा दमित उन (सत्त्वों) में (वह) त्रुटिरहित मार्ग।

ཅེས་མངོན་མཐོ་དང་ངེས་ལེགས་ཐེག་པ་གསུམ་གྱིས་ལམ་སྟོན་པའི་གསུང་རབ་མ་ལུས་པའི་ལམ་གྱིས་རིམ་པ་རྣམས་གང་ལས་བརྒྱུད་པ་རྣམས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དོན་གཉེར་མང་པོས་བསྐུལ་ཏེ། ཆོས་གྲགས་རྒྱ་མཚོས་གུས་པའི་ཡིད་ཀྱིས་མགྱོགས་པར་སྦྱར་བའོ། །

इस प्रकार अभ्युदय-निःश्रेयस् (रूपी) त्रियान-मार्ग को प्रदर्शित करने वाले अशेष वाङ्मयों के मार्गक्रम, जिनसे परम्परा स्वरूप आये हैं, (यह) श्लोक रूपी अध्येषणा अनेक ध्यानवानों की प्रेरणा से छोस्-डग्स ग्या-छो (धर्मकीर्ति) द्वारा आदरपूर्वक आशु रूप से निबद्ध किया गया।

# शासन एवं सत्त्वों की बाधा-निवारक-विधि

འཕགས་མའི་ཡན་ལག་བདུན་པ།

# आर्या की सप्तांग पूजा

པོ་ཏ་ལ་ཡི་གནས་མཆོག་ནས། །
पो ट ल यि नेस् छोग नेस्
पोतल (नामक) सर्वश्रेष्ठ स्थान से

ཏཱཾ་ཡིག་ལྗང་གུ་ལས་འཁྲུངས་ཤིང་། །
तां यिग जङ गु लेस ठुङ शिङ
हरे ‘तां’ अक्षर से उत्पन्न हो

ཏཱཾ་ཡིག་འོད་ཀྱིས་འགྲོ་བ་སྒྲོལ། །
तां यिग ह़ोद् क्यीस् डो व डोल
‘तां’ अक्षर के प्रभा से सत्त्वों को तारने वाली

སྒྲོལ་མ་འཁོར་བཅས་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
डोल म खोर चेस् शेग सु सोल
तारा (आप) सपरिवार चली आयें।1।

ལྷ་དང་ལྷ་མིན་ཅོད་པན་གྱིས། །
ल्ह दङ ल्ह मिन चोद् पेन ग्यीस्
सुर और असुरों के मुकुटों द्वारा

ཞབས་ཀྱི་པདྨོ་ལ་བཏུད་དེ། །
शप क्यि पेमाो ल तुद् दे
(आपकी) चरण-कमलों का सत्कार कर

ཕོངས་པ་ཀུན་ལས་སྒྲོལ་མཛད་མ། །
फोङ प कुन लेस डोल ज़े म
समस्त विपत्तियों को हटाने वाली

སྒྲོལ་མ་ཡུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
डोल म युम ल छग छ़ल लो
माँ तारा को प्रणाम करता हूँ।2।

རྗེ་བཙུན་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་དང་། །
जे ज़ुन फग म डोल म दङ
भट्टारिका आर्या तारा तथा

ཕྱོགས་བཅུ་དུས་གསུམ་བཞུགས་པ་ཡི། །
छोग चु दुस् सुम शुग प यि
दश दिशाओं में विराजमान

རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་ཐམས་ཅད་ལ། །
ग्यल व सेस् चेस् थम चे ल
पुत्र सहित समस्त जिनों को

ཀུན་ནས་དྭང་བས་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कुन नेस् दङ वे छग छ़ल लो
परमादर सहित प्रणाम करता हूँ।3।

མེ་ཏོག་བདུག་སྤོས་མར་མེ་དྲི། །
मे तोग दुग पोस् मर मे डि
पुष्प, धूप, दीप, गन्ध,

ཞལ་ཟས་རོལ་མོ་ལ་སོགས་པ། །
शल ज़ेस् रोल मो ल सोग प
नैवेद्य और वाद्य आदि

དངོས་འབྱོར་ཡིད་ཀྱིས་སྤྲུལ་ནས་འབུལ། །
ङोस् ज्योर यिद् क्यीस् ट्रुल नेस् बुल
प्रत्यक्ष प्राप्त तथा मनोनिर्मित को भेंट करता हूँ

འཕགས་མའི་ཚོགས་ཀྱིས་བཞེས་སུ་གསོལ། །
फग मई छोग क्यीस् शेस् सु सोल
आर्या-गण (आप इन्हें) स्वीकार करें।4।

ཐོག་མ་མེད་ནས་ད་ལྟའི་བར། །
थोग म मेद् नेस् द तई बर
अनादि से वर्तमान पर्यन्त

སེམས་ནི་ཉོན་མོངས་དབང་གྱུར་པའི། །
सेम नि ञोन मोङ वङ ग्युर पई
क्लेश वशीभूत चित्तों के

མི་དགེ་བཅུ་དང་མཚམས་མེད་ལྔ། །
मि गे चु दङ छम मेद् ङ
दश अकुशल और पाँच आनन्तर्य

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་བཤགས་པར་བགྱི། །
दिग प थम चे शग पर ग्यि
समस्त पापों की देशना करता हूँ।5।

ཉན་ཐོས་རང་རྒྱལ་བྱང་ཆུབ་སེམས། །
ञेन थोस् रङ ग्यल छङ छुप सेम
श्रावक, प्रत्येक-बुद्ध और बोधिचित्त,

དུས་གསུམ་དགེ་བ་ཅི་བསགས་པའི། །
दुस् सुम गे व चि सग पई
तीनों कालों में जो कुशल संग्रह किये गये

སོ་སོ་སྐྱེ་བོ་ལ་སོགས་པས། །
सो सो क्ये बो ल सोग पेस्
पृथग्जन आदि के द्वारा

བསོད་ནམས་ལ་ནི་བདག་ཡི་རང་། །
सोद् नम ल नि दग यि रङ
मैं (उन) पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ।6।

སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་དང་། །
सेम चेन नम क्यि सम प दङ
सत्त्वों के, आशय और

ཆེ་ཆུང་ཐུན་མོང་ཐེག་པ་ཡི། །
छे छुङ थुन मोङ थेग प यि
महायान, हीनयान, सामान्य यानों के

བློ་ཡི་བྱེ་བྲག་ཇི་ལྟ་བར། །
लो यि छे डग जि त बर
यथा बुद्धि प्रभेद हैं।

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་དུ་གསོལ། །
छोस् क्यि खोर लो कोर दु सोल
धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करें।7।

འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་མ་སྟོང་བར། །
खोर व जि सिद् म तोङ बर
यावत् संसार के शून्य नहीं होने तक

སྡུག་བསྔལ་རྒྱ་མཚོར་བྱིང་བ་ཡི། །
दुग ङल ग्य छ़ोर छिङ व यि
दुःख-सागर में फंसे हुये

མྱ་ངན་མི་འདའ་ཐུགས་རྗེ་ཡིས། །
न्य ङेन मि दा थुग जे यीस्
(आप) निर्वाण को प्राप्त न कर, करुणा से

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་གཟིགས་སུ་གསོལ། །
सेम चेन नम ल ज़िग सु सोल
सत्त्वों पर कृपा-दृष्टि रखें।8।

བདག་གིས་བསོད་ནམས་ཅི་བསགས་པ། །ཐམས་ཅད་
दग गीस् सोद् नम चि सग प
मैने जो भी पुण्य संचय किये

བྱང་ཆུབ་རྒྱུར་གྱུར་ནས། །
थम चे छङ छुप ग्युर ग्युर नेस्
समस्त बोधि-हेतु में परिणत कर

རིང་པོར་མི་ཐོགས་འགྲོ་བ་ཡི། །
रिङ पोर मि थोग डो व यि
मैं अति शीघ्र सत्त्वों के

འདྲེན་པའི་དཔལ་དུ་བདག་གྱུར་ཅིག །
डेन पई पल दु दग ग्युर चिग
नायक-श्री बनूँ।9।

ཅེས་པ་དགེ་སློང་མ་དཔལ་མོས་མཛད་པར་གྲགས་སོ། །

यह भिक्षुणी लक्ष्मी द्वारा लिखा गया।

## སྒྲོལ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་གི་བསྟོད་པ་ཕན་ཡོན་དང་བཅས་པ།

# एकविंशिति तारा-स्तुति (अनुशंसा सहित)

ཨོཾ། རྗེ་བཙུན་མ་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ओं जे त्सुन म फग म डोल म ल छग छ़ल लो
ओं। भट्टारिका आर्या-तारा को प्रणाम।

ཕྱག་འཚལ་སྒྲོལ་མ་མྱུར་མ་དཔའ་མོ། །
छग छ़ल डोल म न्युर म पा मो
त्वरितगामिनी वीरांगना तारा को प्रणाम

སྤྱན་ནི་སྐད་ཅིག་གློག་དང་འདྲ་མ། །
चेन नि के चिग लोग दङ ड म
(जिनकी) आँख क्षणिक विद्युत् के समान है।

འཇིག་རྟེན་གསུམ་མགོན་ཆུ་སྐྱེས་ཞལ་གྱི། །
जिग तेन सुम गोन छु क्येस् शल ग्यि
त्रिलोकनाथ के, जलज (रूपी) मुख के

གེ་སར་བྱེ་བ་ལས་ནི་བྱུང་མ། །
गे सर छे व लेस नि छुङ म
कोटि केसर से उत्पन्न हुई हैं।1।

ཕྱག་འཚལ་སྟོན་ཀའི་ཟླ་བ་ཀུན་ཏུ། །
छग छ़ल तोन कई द व कुन तु
सौ चन्द्र सदृश

གང་བ་བརྒྱ་ནི་བརྩེགས་པའི་ཞལ་མ། །
गङ व ग्य नि त्सेग पई शल म
सम्पूर्ण मुखवाली को नमस्कार।

སྐར་མ་སྟོང་ཕྲག་ཚོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས། །
कर म तोङ ठग छ़ोग प नम क्यीस्
सहस्त्र-गण ताराओं के

རབ་ཏུ་ཕྱེ་བའི་འོད་རབ་འབར་མ། །
रप तु छे बई ह़ोद् रप बर म
किरणों से प्रज्जवलित हैं।2।

ཕྱག་འཚལ་གསེར་སྔོ་ཆུ་ནས་སྐྱེས་ཀྱི། །
छग छ़ल सेर ङो छु नेस् क्येस् क्यि
नील-कनक से उत्पन्न को प्रणाम

པདྨས་ཕྱག་ནི་རྣམ་པར་བརྒྱན་མ། །
पेमोस् छग नि नम पर ग्येन म
(आपका) हस्त पद्म से विभूषित है।

སྦྱིན་པ་བརྩོན་འགྲུས་དཀའ་ཐུབ་ཞི་བ། །
छिन प त्सोन डुस् का थुप शि व
दान, वीर्य, तप, शान्ति,

བཟོད་པ་བསམ་གཏན་སྤྱོད་ཡུལ་ཉིད་མ། །
ज़ोद् प सम तेन चोद् युल ञिद् म
क्षमा और ध्यान के गोचर वाली हैं।3।

ཕྱག་འཚལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གཙུག་ཏོར། །
छग छ़ल दे शिन शेग पई त्सुग तोर
तथागत-उष्णीष (से उत्पन्न) को नमस्कार

མཐའ་ཡས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་སྤྱོད་མ། །
था येस् नम पर ग्यल वर चोद् म
विजया, अनन्त आचरण वाली।

མ་ལུས་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ཐོབ་པའི། །
म लुस् फ रोल छिन प थोप पई
अशेष पारमिताओं को प्राप्त किये हैं

རྒྱལ་བའི་སྲས་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་བསྟེན་མ། །
ग्यल वई सेस् क्यीस् शिन तु तेन म
जिनपुत्रों द्वारा सदा आसेवन किये गये हैं।4।

ཕྱག་འཚལ་ཏུཏྟཱ་ར་ཧཱུྃ་ཡི་གེས། །
छग छ़ल तुत्तार हूँ यि गेस्
तुत्तार हूँ, अक्षरों के द्वारा

འདོད་དང་ཕྱོགས་དང་ནམ་མཁའ་གང་མ། །
दोद् दङ छोग दङ नम खा गङ म
कामलोक, दिग् और आकाश परिपूर्ण-कर्त्री को नमस्कार।

འཇིག་རྟེན་བདུན་པོ་ཞབས་ཀྱིས་མནན་ཏེ། །
जिग तेन दुन पो शप क्यीस् मनेन ते
सप्तलोक (आपके) चरणों से आक्रान्त हैं

ལུས་པ་མེད་པར་འགུགས་པར་ནུས་མ། །
लुस् प मेद् पर गुग पर नुस् म
अशेष को आकृष्ट करने की शक्तिवाली हैं।5।

ཕྱག་འཚལ་བརྒྱ་བྱིན་མེ་ལྷ་ཚངས་པ། །
छग छ़ल ग्य छिन मे ल्ह छ़ङ प
शक्र, अनल, ब्रह्मा, मरुत,

རླུང་ལྷ་སྣ་ཚོགས་དབང་ཕྱུག་མཆོད་མ། །
लुङ ल्ह न छ़ोग वङ छुग छोद् म
विश्वेश्वर आदि द्वारा पूजिता को नमस्कार।

འབྱུང་པོ་རོ་ལངས་དྲི་ཟ་རྣམས་དང་། །
छुङ पो रो लङ डि ज़ नम दङ
भूत, वेताल, गन्धर्व और

གནོད་སྦྱིན་ཚོགས་ཀྱིས་མདུན་ནས་བསྟོད་མ། །
नोद् छिन छ़ोग क्यीस् दुन नेस् तोद् म
य़क्ष-गण उनके समक्ष स्तुति करते हैं।6।

ཕྱག་འཚལ་ཏྲཊ་ཅེས་བྱ་དང་ཕཊ་ཀྱིས། །
छग छ़ल त्रड चेस् छ दङ फट क्यीस्
त्रद एवं फटकार के द्वारा

ཕ་རོལ་འཁྲུལ་འཁོར་རབ་ཏུ་འཇོམས་མ། །
फ रोल ठुल खोर रप तु जोम म
दूसरों के यन्त्रों को प्रमर्दन करने वाली को प्रणाम।

གཡས་བསྐུམ་གཡོན་བརྐྱང་ཞབས་ཀྱིས་མནན་ཏེ། །
येस् कुम योन क्यङ शप क्यीस् मनेन ते
प्रत्यलीढ़ पदन्यास से आक्रान्त

མེ་འབར་འཁྲུགས་པ་ཤིན་ཏུ་འབར་མ། །
मे बर ठुग प शिन तु बर म
अग्नि-ज्वाला से प्रज्वलित हैं।7।

ཕྱག་འཚལ་ཏུ་རེ་འཇིགས་པ་ཆེན་མོས། །
छग छ़ल तु रे जिग प छेन मोस्
तुरे एवं महाघोरी द्वारा

བདུད་ཀྱི་དཔའ་བོ་རྣམ་པར་འཇོམས་མ། །
दुद् क्यि पा बो नम पर जोम म
मार-वीरों को विनाश करने वाली को नमस्कार।

ཆུ་སྐྱེས་ཞལ་ནི་ཁྲོ་གཉེར་ལྡན་མཛད། །
छु क्येस् शल नि ठो ञेर देन ज़े
जलज मुख पर भृकुटि वाली हैं

དགྲ་བོ་ཐམས་ཅད་མ་ལུས་གསོད་མ། །
ड बो थम चे म लुस् सोद् म
समस्त शत्रुओँ को मारने वाली हैं।8।

ཕྱག་འཚལ་དཀོན་མཆོག་གསུམ་མཚོན་ཕྱག་རྒྱའི། །
छग छ़ल कोन छोग सुम छ़ोन छग ग्यई
त्रिरत्न लक्षित हृदय पर

སོར་མོས་ཐུགས་ཀར་རྣམ་པར་བརྒྱན་མ། །
सोर मोस् थुग कर नम पर ग्येन म
अंगुलिमुद्रा से विभूषित को नमस्कार।

མ་ལུས་ཕྱོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོས་བརྒྱན་པའི། །
म लुस् छोग क्यि खोर लोस् ग्येन पई
अशेष दिक्-चक्र से अलंकृत

རང་གི་འོད་ཀྱིས་ཚོགས་རྣམས་འཁྲུགས་མ། །
रङ गि ह़ोद् क्यीस् छ़ोग नम ठुग म
स्वप्रकाश गणों से आप्लावित हैं।9।

ཕྱག་འཚལ་རབ་ཏུ་དགའ་བས་བརྗིད་པའི། །
छग छ़ल रप तु गा वे जिद् पई
प्रमुदिता से भार-युक्त

དབུ་རྒྱན་འོད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་སྤེལ་མ། །
उ ग्येन ह़ोद् क्यि ठेङ व पेल म
मुकुट-प्रभा फैलाने वाली को नमस्कार।

བཞད་པ་རབ་བཞད་ཏུཏྟ་ར་ཡིས། །
शे प रप शे तुत्तार यीस्
हास-परिहास तुत्तार के द्वारा

བདུད་དང་འཇིག་རྟེན་དབང་དུ་མཛད་མ། །
दुद् दङ जिग तेन वङ दु ज़े म
मार और लोक को वशीभूत करने वाली हैं।10।

ཕྱག་འཚལ་ས་གཞི་སྐྱོང་བའི་ཚོགས་རྣམས། །
छग छ़ल स शि क्योङ बई छ़ोग नम
समस्त भूपाल-गणों को

ཐམས་ཅད་འགུགས་པར་ནུས་པ་ཉིད་མ། །
थम चे गुग पर नुस् प ञिद् म
आकर्षण करने में सामर्थ्यवाली को नमस्कार।

ཁྲོ་གཉེར་གཡོ་བའི་ཡི་གེ་ཧཱུྃ་གིས། །
ठो ञेर यो बई यि गे हूँ गीस्
भृकुटि चलन के हूँकार द्वारा

ཕོངས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྒྲོལ་མ། །
फोङ प थम चे नम पर डोल म
समस्त आपदाओं को विमोचित करने वाली हैं।11।

ཕྱག་འཚལ་ཟླ་བའི་དུམ་བུས་དབུ་བརྒྱན། །
छग छ़ल द बई दुम बुस् उ ग्येन
शिर चन्द्र-खण्ड से अलंकृत है

བརྒྱན་པ་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་འབར་མ། །
ग्येन प थम चे शिन तु बर म
समस्त अलंकार सुशोभित को प्रणाम करता हूँ।

རལ་པའི་ཁྲོད་ན་འོད་དཔག་མེད་ལས། །
रल पई ठोद् न ह़ोद् पग मेद् लेस
जटा मध्य अमिताभ से

རྟག་པར་ཤིན་ཏུ་འོད་ནི་མཛད་མ། །
तग पर शिन तु ह़ोद् नि ज़े म
सदा बहुत प्रभा का प्रस्फुटन होता है।12।

ཕྱག་འཚལ་བསྐལ་པ་མཐའ་མའི་མེ་ལྟར། །
छग छ़ल कल प था मई मे तर
कल्पान्त-अग्नि के समान

འབར་བའི་ཕྲེང་བའི་དབུས་ན་གནས་མ། །
बर बई ठेङ बई उस् न नेस् म
प्रज्वलित माला-मध्य में स्थित को प्रणाम।

གཡས་བརྐྱང་གཡོན་བསྐུམ་ཀུན་ནས་བསྐོར་དགའ། །
येस् क्यङ योन कुम कुन नेस् कोर गा
आलीढ़ मुदिता आबद्ध हैं

དགྲ་ཡི་དཔུང་ནི་རྣམ་པར་འཇོམས་མ། །
ड यि पुङ नि नम पर जोम म
रिपु-चक्र को विनाश करने वाली हैं।13।

ཕྱག་འཚལ་ས་གཞིའི་ངོས་ལ་ཕྱག་གི །
छग छ़ल स शी ङोस् ल छग गि
भूतल को हथेली से आघात कर

མཐིལ་གྱིས་བསྣུན་ཅིང་ཞབས་ཀྱིས་བརྡུང་མ། །
थिल ग्यीस् नुन चिङ शप क्यीस् दुङ म
चरणों से आहत करने वाली को नमस्कार।

ཁྲོ་གཉེར་ཅན་མཛད་ཡི་གེ་ཧཱུྃ་གིས། །
ठो ञेर चेन ज़े यि गे हूँ गीस्
भृकुटी तानकर हूँकार के द्वारा

རིམ་པ་བདུན་པོ་རྣམས་ནི་འགེམས་མ། །
रिम प दुन पो नम नि गेम म
सप्त पाताल का भेदन करने वाली हैं।14।

ཕྱག་འཚལ་བདེ་མ་དགེ་མ་ཞི་མ། །
छग छ़ल दे म गे म शि म
शिव, शुभ, शान्त और

མྱ་ངན་འདས་ཞི་སྤྱོད་ཡུལ་ཉིད་མ། །
न्य ङेन देस् शि चोद् युल ञिद् म
शान्त-निर्वाण गोचर वाली को प्रणाम करता हूँ।

སྭཱ་ཧཱ་ཨོཾ་དང་ཡང་དག་ལྡན་པས། །
स्वाहाओंदङ यङ दग देन पेस्
स्वाहा ‘ओं’ से सम्यक्-युक्तता होने से

སྡིག་པ་ཆེན་པོ་འཇོམས་པ་ཉིད་མ། །
दिग प छेन पो जोम प ञिद् म
महापाप को नाश करने वाली हैं।15।

ཕྱག་འཚལ་ཀུན་ནས་བསྐོར་རབ་དགའ་བའི། །
छग छ़ल कुन नेस् कोर रप गा बई
प्रमुदिता आबद्ध, अरि-गात्र को

དགྲ་ཡི་ལུས་ནི་རབ་ཏུ་འགེམས་མ། །
ड यि लुस् नि रप तु गेम म
प्रभेद करने वाली को प्रणाम।

ཡི་གེ་བཅུ་པའི་ངག་ནི་བཀོད་པའི། །
यि गे चु पई ङग नि कोद् पई
दस अक्षरों के पद-न्यास द्वारा

རིག་པ་ཧཱུྃ་ལས་སྒྲོལ་མ་ཉིད་མ། །
रिग प हूँ लेस डोल म ञिद् म
विद्या ‘हूँ’कार से तारने वाली हैं।16।

ཕྱག་འཚལ་ཏུ་རེའི་ཞབས་ནི་བརྡབས་པས། །
छग छ़ल तु रे शप नि दप पेस्
‘तुरे’ के पाद-आघात द्वारा

ཧཱུྃ་གི་རྣམ་པའི་ས་བོན་ཉིད་མ། །
हूँ गि नम पई स बोन ञिद् म
‘हूँ’कार बीज वाली को नमस्कार।

རི་རབ་མནྡ་ར་དང་འབིགས་བྱེད། །
रि रप मन्दा र दङ बिग छेद्
सुमेरु, मन्दार और विन्ध्याचल सहित

འཇིག་རྟེན་གསུམ་རྣམས་གཡོ་བ་ཉིད་མ། །
जिग तेन सुम नम यो व ञिद् म
तीनों लोकों को विचलित करने वाली हैं।17।

ཕྱག་འཚལ་ལྷ་ཡི་མཚོ་ཡི་རྣམ་པའི། །
छग छ़ल ल्ह यि छ़ो यि नम पई
देव-सागर के आकार वाली

རི་དྭགས་རྟགས་ཅན་ཕྱག་ན་བསྣམས་མ། །
रि दग तग चेन छग न नम म
हरिणाङ्क हस्त में लिये हुये को नमस्कार।

ཏཱ་ར་གཉིས་བརྗོད་ཕཊ་ཀྱི་ཡི་གེས། །
तार ञीस् जोद् फट क्यि यि गेस्
तार के दो बार कहने तथा फटकार द्वारा

དུག་རྣམས་མ་ལུས་པ་ནི་སེལ་མ། །
दुग नम म लुस् प नि सेल म
अशेष विषों को नाश करने वाली हैं।18।

ཕྱག་འཚལ་ལྷ་ཡི་ཚོགས་རྣམས་རྒྱལ་པོ། །
छग छ़ल ल्ह यि छ़ोग नम ग्यल पो
देव-गणों के राजा, देव एवं

ལྷ་དང་མི་འམ་ཅི་ཡིས་བསྟེན་མ། །
ल्ह दङ मि ह़म चि यीस् तेन म
किन्नर द्वारा सेवित को नमस्कार करता हूँ।

ཀུན་ནས་གོ་ཆ་དགའ་བའི་བརྗིད་ཀྱིས། །
कुन नेस् गो छ गा बई जिद् क्यीस्
आबद्ध मुदिता कवच के भार से

རྩོད་དང་རྨི་ལམ་ངན་པ་སེལ་མ། །
त्सोद् दङ मि लम ङेन प सेल म
विवाद एवं दुःस्वपनों को नाश करने वाली हैं।19।

ཕྱག་འཚལ་ཉི་མ་ཟླ་བ་རྒྱས་པའི། །
छग छ़ल ञि म द व ग्येस् पई
सूर्य-चन्द्र सा सम्पूर्ण

སྤྱན་གཉིས་པོ་ལ་འོད་རབ་གསལ་མ། །
चेन ञीस् पो ल ह़ोद् रप सल म
प्रभासित नयन-द्युति वाली को प्रणाम करता हूँ।

ཧ་ར་གཉིས་བརྗོད་ཏུཏྟཱ་ར་ཡིས། །
ह र ञीस् जोद् तुत्तार यीस्
'हर' के दो बार कहने तथा 'तुत्तार' के द्वारा

ཤིན་ཏུ་དྲག་པོའི་རིམས་ནད་སེལ་མ། །
शिन तु डग पोइ रिम ने सेल म
विषम ज्वर को नाश करने वाली हैं।20।

ཕྱག་འཚལ་དེ་ཉིད་གསུམ་རྣམས་བཀོད་པའི། །
छग छ़ल दे ञिद् सुम नम कोद् पई
त्रितत्त्वों के विन्यास से

ཞི་བའི་མཐུ་དང་ཡང་དག་ལྡན་མ། །
शि बई थु दङ यङ दग देन म
शिव-शक्ति से समन्वित को नमस्कार करता हूँ।

གདོན་དང་རོ་ལངས་གནོད་སྦྱིན་ཚོགས་རྣམས། །
दोन दङ रो लङ नोद् छिन छ़ोग नम
ग्रह, वेताल, यक्ष गणों को

འཇོམས་པ་ཏུ་རེ་རབ་མཆོག་ཉིད་མ། །
जोम प तु रे रप छ़ोग ञिद् म
विनाश करने वाली 'प्रवर' और 'तुरे' स्वभाव वाली हैं।21।

ཙ་བའི་སྔགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་འདི་དང་། །
त्स़ बई ङग क्यि तोद् प दि दङ
यह मूलमन्त्र स्तुति है और

ཕྱག་འཚལ་བ་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག །
छग छ़ल व नि ञि शु त्स़ चिग
एकविंशित नमस्कार है।21 क,ख।

པན་ཡོན་ནི།

अनुशंसा

ལྷ་མོ་ལ་གུས་ཡང་དག་ལྡན་པའི། །
ल्ह मो ल गुस् यङ दग देन पई
देवी के प्रति भक्ति से समन्वित होकर

བློ་ལྡན་གང་གིས་རབ་དང་བརྗོད་པས། །
लो देन गङ गीस् रप दङ जोद् पेस्
जिस धीमान् द्वारा प्रसन्न मन से वाचन करने और।21।

སྲོད་དང་ཐོ་རངས་ལངས་པར་བྱས་ཏེ། །
सोद् दङ थो रङ लङ पर छेस् ते
प्रातः एवं सायं उठकर

དྲན་པས་མི་འཇིགས་ཐམས་ཅད་རབ་སྟེར། །
डेन पेस् मि जिग थम चे रप तेर
स्मरण करने से समस्त अभय प्रदान करती हैं।

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བ། །
दिग प थम चे रप तु शि व
समस्त पाप प्रशान्त हो जायेंगे

ངན་འགྲོ་ཐམས་ཅད་འཇོམས་པ་ཉིད་དོ། །
ङेन डो थम चे जोम प ञिद् दो
सभी दुर्गति नष्ट हो जाते हैं।22।

རྒྱལ་བ་བྱེ་བ་ཕྲག་བདུན་རྣམས་ཀྱིས། །
ग्यल व छे व ठग दुन नम क्यीस्
सप्त कोटि जिनों के द्वारा

མྱུར་དུ་དབང་ནི་བསྐུར་བར་འགྱུར་ལ། །
न्युर दु वङ नि कुर बर ग्युर ल
शीघ्र अभिषेक प्राप्त होगा।

འདི་ལས་ཆེ་བ་ཉིད་ནི་འཐོབ་ཅིང་། །
दि लेस छे व ञिद् नि थोप चिङ
इससे महान्ता को प्राप्त कर

སངས་རྒྱས་གོ་འཕང་མཐར་ཐུག་དེར་འགྲོ། །
सङ ग्येस् गो फङ थर थुग देर डो
अन्तिम बुद्ध-पद की प्राप्ति होगी।23।

དེ་ཡི་དུག་ནི་དྲག་པོ་ཆེན་པོ། །
दे यि दुग नि डग पो छेन पो
उसका, महाघोर विष

བརྟན་ལ་གནས་པའམ་གཞན་ཡང་འགྲོ་བ། །
तेन ल नेस् पह़म शेन यङ डो व
स्थावर एवं जङ्गम।

ཟོས་པ་དང་ནི་འཐུངས་པ་ཉིད་ཀྱང་། །
ज़ोस् प दङ नि थुङ प ञिद् क्यङ
खाने अथवा पीने पर भी

དྲན་པས་རབ་ཏུ་སེལ་བ་ཉིད་འཐོབ། །
डेन पेस् रप तु सेल व ञिद् थोप
स्मरण से प्रशमित हो जायेगा।24।

གདོན་དང་རིམས་དང་དུག་གིས་གཟིར་བའི། །
दोन दङ रिम दङ दुग गीस् ज़िर बई
ग्रह, ज्वर और विष से ग्रसित

སེམས་ཅན་གཞན་པ་རྣམས་ལ་ཡང་ངོ། །
सेम चेन शेन प नम ल यङ ङो
अन्य सत्त्वों के प्रति भी

སྡུག་བསྔལ་ཚོགས་ནི་རྣམ་པར་སྤོང་སྟེ། །
दुग ङल छ़ोग नि नम पर पोङ ते
दुःख समूह विनष्ट हो जाते हैं।

གཉིས་གསུམ་བདུན་དུ་མངོན་པར་བརྗོད་ན། །
ञीस् सुम दुन दु ङोन पर जोद् न
दो, तीन और सात बार वाचन करने पर।25।

བུ་འདོད་པས་ནི་བུ་ཐོབ་འགྱུར་ཞིང་། །
बु दोद् पेस् नि बु थोप ग्युर शिङ
पुत्रकामी को पुत्र प्राप्त होंगे

འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཏེ། །
दोद् प थम चे थोप पर ग्युर ते
समस्त इच्छाओं की प्राप्ति होगी

ནོར་འདོད་པས་ནི་ནོར་རྣམས་ཉིད་འཐོབ། །
नोर दोद् पेस् नि नोर नम ञिद् थोप
धनकामी को धन की प्राप्ति होगी।

བགེགས་རྣམས་མེད་ཅིང་སོ་སོར་འཇོམས་འགྱུར། །
गेग नम मेद् चिङ सो सोर जोम ग्युर
विघ्नों का प्रतिहनन होगा।26।

ཕྱག་འཚལ་ཉེར་གཅིག་གི་བསྟོད་པ་འདི་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཆེན་པོས་གསུངས་པ་སྟེ་རྒྱུད་ལས་བྱུང་བའོ། །
यह एक विंशति-स्तुति महावैरोचन द्वारा कहा गया है तथा तन्त्र से उद्धृत किया गया है।।

## སྐྱབས་བདུན་མ།
# सप्त-शरण

མ་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཆོས་དབྱིངས་ན། །
म क्ये व मेद् पई छोस् यिङ न
माँ (रूपी) अनुत्पन्न धातु में

ཡུམ་རྗེ་བཙུན་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་བཞུགས། །
युम जे त्सुन ल्ह मो डोल म शुग
माता भट्टारिका देवी विराजमान हैं।

དེ་སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་བདེ་སྟེར་མ། །
दे सेम चेन कुन ल दे तेर म
वह समस्त सत्त्वों को सुख देने वाली हैं

བདག་འཇིགས་པ་ཀུན་ལས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
दग जिग प कुन लेस क्यप तु सोल
मुझे सभी भयों में शरण दें।1।

རང་ཆོས་སྐུ་ཡིན་པར་མ་ཤེས་པར། །
रङ छोस् कु यिन पर म शेस् पर
स्वयं धर्मधातु है- ऐसा नहीं जान

སེམས་ཉོན་མོངས་དབང་དུ་གྱུར་པ་ཡི། །
सेम ञोन मोङ वङ दु ग्युर प यि
चित्त क्लेशवशीभूत होकर।

མ་འཁོར་བར་འཁྱམས་པའི་སེམས་ཅན་ལ། །
म खोर वर ख्यम पई सेम चेन ल
संसार में भ्रमण करने वाले माँ-सत्त्वों को

ཡུམ་ལྷ་མོ་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
युम ल्ह मो ख्योद् क्यीस् क्यप तु सोल
माँ-देवी, आप शरण प्रदान करें।2।

ཆོས་སྙིང་ནས་རྒྱུད་ལ་མ་སྐྱེས་པར། །
छोस् ञिङ नेस् ग्युद् ल म क्येस् पर
हार्दिक धार्मिक चित्त पैदा नहीं हुआ

ཐ་སྙད་ཚིག་གི་རྗེས་འབྲངས་ནས། །
थ ञे छिग गि जेस् डङ नेस्
संवृति-पद का अनुसरण करके।

གྲུབ་མཐའ་ངན་པས་བསླུས་པ་ལ། །
डुप था ङेन पेस् लुस् प ल
बुरे-सिद्धान्त द्वारा वञ्चितों को

ཡུམ་ཡང་དག་གི་ལྷ་མོས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
युम यङ दग गि ल्ह मोस् क्यप तु सोल
माँ सम्यक् देवी, शरण प्रदान करें।3।

རྟོགས་པར་དཀའ་བ་རང་གི་སེམས། །
तोग पर का व रङ गि सेम
दुर्बोध स्व-चित्त का दर्शन हुआ

མཐོང་ནས་གོམས་པར་མི་བྱེད་པར། །
थोङ नेस् गोम पर मि छेद् पर
लेकिन कु-कृत्यों से विक्षिप्त होकर

བྱ་བ་ངན་པས་གཡེངས་པ་ལ། །
छ व ङेन पेस् येङ प ल
अभ्यास नहीं करता

ཡུམ་དྲན་པའི་ལྷ་མོས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
युम डेन पई ल्ह मोस् क्यप तु सोल
माँ स्मृति देवी, शरण प्रदान करें।4।

སེམས་རང་བྱུང་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་ལ། །
सेम रङ छुङ ञीस् मेद् ये शेस् ल
स्वयंभू अद्वय-चित्त रूपी ज्ञान में

གཉིས་སུ་འཛིན་པའི་བག་ཆགས་ཀྱིས། །
ञीस् सु ज़िन पई बग छग क्यीस्
द्वैत-ग्रहण रूपी वासना के द्वारा।

ཇི་ལྟར་བྱས་ཀྱང་བཅིངས་པ་རྣམས། །
जि तर छेस् क्यङ चिङ प नम
जैसे भी करें बन्धन-युक्तों को

ཐུགས་གཉིས་མེད་ཀྱི་ལྷ་མོས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
थुग ञीस् मेद् क्यि ल्ह मोस् क्यप तु सोल
अद्वयचित्तवती देवी, शरण प्रदान करें।5।

ཡང་དག་གི་དོན་ལ་གནས་བྱས་ཀྱང་། །
यङ दग गि दोन ल नेस् छेस् क्यङ
सम्यक् अर्थ में स्थित होने पर भी

རྒྱུ་འབྲས་ཀྱི་རྟེན་འབྲེལ་མི་ཤེས་པས། །
ग्यु डेस् क्यि तेन डेल मि शेस् पेस्
हेतु-फल प्रतीत्य को नहीं जानने से।

ཤེས་བྱའི་དོན་ལ་རྨོངས་པ་ལ། །
शेस् छई दोन ल मोङ प ल
ज्ञेयार्थ में अज्ञान युक्तों को

ཡུམ་ཀུན་མཁྱེན་གྱི་ལྷ་མོས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
युम कुन ख्येन ग्यि ल्ह मोस् क्यप तु सोल
माँ सर्वज्ञ देवी, शरण प्रदान करें।6।

སྤྲོས་བྲལ་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་ཅན། །
टोस् डल नम खई छ़ेन ञिद् चेन
निष्प्रपञ्च, आकाश लक्षण वाली है

ཐམས་ཅད་དེ་དང་དབྱེར་མེད་ཀྱིས། །
थम चे दे दङ येर मेद् क्यीस्
समस्त (धर्म) इससे भिन्न नहीं।

ད་དུང་སློབ་མའི་གང་ཟག་ལ། །
द दुङ लोप मई गङ ज़ग ल
और सीखने वाले पुद्गलों को

ཡུམ་རྫོགས་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
युम ज़ोग सङ ग्येस् क्यीस् क्यप तु सोल
माँ सम्बुद्ध देवी, शरण प्रदान करें।7।

ཞེས་པ་ཨེ་ཚུང་ཕུག་ཏུ་ཁམས་གསུམ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་བ་འབྲི་གུང་པ་སྐྱོབ་པ་རྗེ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མགོན་པོས་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་བདུན་ཞལ་གཟིགས་དུས་གསོལ་བ་བཏབ་པ་སྐྱབས་བདུན་མར་གྲགས་པ་བྱིན་རླབས་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བར་གྲགས་སོ། །

यह ए-छुङ् गुफा में त्रिधातु-धर्मराज ग्यल्-वा डि-गुङ्-पा क्योब्-पा जे जिग्-तेन् सुम्-गी गोन्-पो द्वारा सप्त आर्या-ताराओं के मुख-दर्शन के समय अध्येषणा किया गया। यह सप्त-शरण नाम से प्रसिद्ध है और महा-अधिष्ठान युक्त है- ऐसा सुप्रसिद्ध है।

# སྒྲོལ་བསྟོད་ལེགས་བྲིས་མ།
# सुचित्रण

ན་མོ་ཨཱརྱ་ཏཱ་རཱ་ཡེ། རྗེ་བཙུན་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་སེང་ལྡེང་ནགས་ཀྱི་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་མཁས་པའི་གཙུག་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ།

འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ཐུགས་རྗེའི་གཏེར་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
फग प चेन रेस ज़िग वङ छुग थुग जे तेर ल छग छ़ल लो
आर्य अवलोकितेश्वर करुणानिधि को नमस्कार।

ལེགས་བྲིས་དཔལ་གྱི་བདག་པོ་གསེར་གྱི་མངལ། །
लेग डीस् पल ग्यि दग पो सेर ग्यि ङल
सुलिखित लक्ष्मीपति, सुवर्णगर्भ,

ལྷ་ཡི་བླ་མ་གླང་གདོང་དཔལ་གྱི་མགྲིན། །
ल्ह यि ल म लङ दोङ पल ग्यि डिन
देवगुरु, हस्तिमुख, श्रीकण्ठ।

པདྨའི་གཉེན་སོགས་ལྷ་བརྒྱའི་གཙུག་རྒྱན་གྱིས། །
पेमाेइ ञेन सोग ल्ह ग्यई त्सुग ग्येन ग्यीस्
आदित्य आदि के शत मुकुटों द्वारा

ཞབས་པད་ཀུན་མཆོད་སྒྲོལ་མའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
शप पे गुस् छोद् डोल मई शप ल दुद्
सादर चरण-कमल पूजित तारा-चरणों को नमन है।1।

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་ཐུགས་རྗེའི་རྣམ་འཕྲུལ་གྱིས། །
थुग जे छेन पोइ थुग जे नम ठुल ग्यीस्
महाकारुणिक के करुणा-प्रातिहार्य के द्वारा

དུས་གསུམ་རྒྱལ་བའི་མཁྱེན་བརྩེ་ནུས་པ་རྣམས། །
दुस् सुम ग्यल वई ख्येन त्से नुस् प नम
त्रिकाल जिनों के ज्ञान, प्यार और शक्तियों से।

རབ་མཛེས་འཕྲིན་ལས་ལྷ་མོའི་སྐུར་བསྟན་ནས། །
रप ज़ेस् ठिन लेस ल्ह मोइ कुर तेन नेस्
अति सुन्दर कर्म रूपी देवी-काय के प्रदर्शन के द्वारा

ཕོངས་པ་ཀུན་སྐྱོབ་སྒྲོལ་མའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
फोङ प कुन क्योप डोल मई शप ल दुद्
सर्वापदाओं में शरण-दात्री, तारा चरणों को नमन है।2।

དབྱིངས་རིག་རྣམ་དག་པདྨའི་གདན་སྟེང་ན། །
यिङ रिग नम दग पेमाई देन तेङ न
विशुद्ध विद्या-धातु, पद्मासन पर स्थित

མར་གད་མདོག་ཅན་ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་མ། །
मर गे दोग चेन शल चिग छग ञीस् म
मरकत वर्ण वाली, एक मुख और दो हस्त।

ལང་ཚོ་རབ་རྒྱས་གཡས་བརྐྱང་གཡོན་བསྐུམས་ཞབས།
लङ छ़ो रप ग्येस् येस् क्यङ योन कुम शप
यौवन प्रवर्द्धित प्रत्यालीढ़

།ཐབས་ཤེས་ཟུང་འབྲེལ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
थप शेस् ज़ुङ डेल म ल छग छ़ल लो
युगनद्ध उपाय-प्रज्ञावती को प्रणाम है।3।

ནུ་འབུར་རབ་རྒྱས་ཟག་མེད་བདེ་བའི་གཏེར། །
नु बुर रप ग्येस् ज़ग मेद् दे वई तेर
प्रवर्द्धित स्तन वाली, अनास्रव सुख-निधि

ཞལ་རས་ཟླ་བ་རྒྱས་པའི་འཛུམ་དཀར་ཅན། །
शल रेस द व ग्येस् पई ज़ुम कर चेन
पूर्ण चन्द्रमुखी, श्वेत स्मितमुखी।

ཞི་བའི་ཉམས་ལྡན་ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན་ཡངས་མ། །
शि बई ञम देन थुग जे चेन यङ म
शान्त स्वभाव वाली, करुणायत अक्षिणी

སེང་ལྡེང་ནགས་ཀྱི་མཛེས་མ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
सेङ देङ नग क्यि ज़ेस् म ख्योद् ल दुद्
खदिरवणी सुन्दरी, आपको नमन है।4।

གཡུ་ཡི་ལྗོན་ཤིང་ཡལ་ག་བརྐྱངས་འདྲ་བའི། །
यु यि जोन शिङ यल ग क्यङ ड बई
फिरोजा-वृक्ष-शाखाओँ के फैलाव सा

འཇམ་མཉེན་ཕྱག་གཡས་མཆོག་སྦྱིན་ཕྱག་རྒྱ་ནི། །
जम ञेन छग येस् छोग छिन छग ग्य नि
मञ्जु-कोमल दक्षिण-हस्त वरद-मुद्रा।

མཁས་རྣམས་དངོས་གྲུབ་མཆོག་གི་དགའ་སྟོན་ལ། །
खेस् नम ङोस् डुप छोग गि गा तोन ल
विद्वानों के प्रधान सिद्धि-उत्सव में

མགྲོན་དུ་འབོད་འདྲ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
डोन दु बोद् ड ख्योद् ल छग छ़ल लो
आमन्त्रण सा, नमन है आपको।5।

ཕྱག་གཡོན་དཀོན་མཆོག་གསུམ་མཚོན་སྐྱབས་སྦྱིན་གྱིས།
छग योन कोन छोग सुम छ़ोन क्यप छिन ग्यीस्
वाम-हस्त त्रिरत्न लक्षित, शरण-दाता द्वारा

།འཇིགས་པ་བརྒྱ་ཕྲག་མཐོང་བའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས། །
जिग प ग्य ठग थोङ बई क्ये बो नम
सैंकड़ों भयों को देखने वाले पुरुषों को।

མ་འཇིགས་ང་ཡིས་མྱུར་དུ་བསྐྱབ་བོ་ཞེས། །
म जिग ङ यीस् न्युर दु क्यप बो शेस्
'डरें नहीं, मैं शीघ्र शरण देता हूँ-' ऐसे

གསལ་བར་མཚོན་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सल वर छ़ोन प ख्योद् ल छग छ़ल लो
स्पष्ट लक्षण वाले, आपको नमन है।6।

ཕྱག་གཉིས་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོས་མཚན་པ་ནི། །
छग ञीस् उत्पल ङोन पोस् छ़ेन प नि
हस्त-द्वय नीले उत्पल से लक्षित

འགྲོ་ཀུན་སྲིད་པའི་བདེ་ལ་མ་ཆགས་པར། །
डो कुन सिद् पई दे ल म छग पर
सभी प्राणी भव-सुख में आसक्त न होकर,

ཐར་པ་ཆེན་པོའི་གྲོང་དུ་ཞུགས་ཤིག་ཅེས། །
थर प छेन पोइ डोङ दु शुग शिग चेस्
महामोक्ष-नगर में प्रवेश करें- ऐसा

བརྩོན་པའི་ལྕག་གིས་བསྐུལ་འདྲ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
ज़्ोन पई चग गीस् कुल ड ख्योद् ल दुद्
वीर्य रूपी चाबुक द्वारा प्रेरक, नमन है आपको।7।

པདྨ་རཱ་གའི་མདངས་ལྡན་འོད་དཔག་མེད། །
पेमा रा गई दङ देन ह़ोद् पग मेद्
अमिताभ पद्मराग-वर्णी

མཉམ་གཞག་བདུད་རྩིས་གང་བའི་ལྷུང་བཟེད་བསྣམས།།
ञम शग दुद् च़ीस् गङ बई ल्हुङ ज़ेद् नम
समाधि अमृतापूर्ण भिक्षापात्र धारण किये।

འཆི་མེད་དངོས་གྲུབ་སྩོལ་བས་སྤྱི་བོར་བརྒྱན། །
छि मेद् ङोस् डुप च़ोल वे चि बोर ग्येन
अमृत-सिद्धि-दान द्वारा मुर्द्धा-अलंकृत

བདག་གི་འཆི་བདག་འཇོམས་པ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
दग गि छि दग जोम प ख्योद् ल दुद्
मेरे मृत्युपति-नाशक, आपको नमन है।8।

ཚོགས་གཉིས་མཐོ་རིས་བཟོ་བོའི་འདུ་བྱེད་ཀྱིས། །
छ़ोग ञीस् थो रीस् ज़ो बोइ दु छेद् क्यीस्
द्वि-सम्भार स्वर्ग-शिल्पी के संस्कार द्वारा

གཞལ་མེད་ལྷ་ཡི་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་རྣམས། །
शल मेद् ल्ह यि यिद् शिन नोर बु नम
अप्रमेय देव-चिन्तामणियाँ।

མཛེས་མཛེས་གཅིག་ཏུ་བསྡུས་པའི་ཡིད་འཕྲོག་རྒྱན། །
ज़ेस् ज़ेस् चिग तु बदुस् पई यिद् ठोग ग्येन
एकीकृत चारु-कान्त मनोहर अलंकरण

ཀུན་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कुन ग्यीस् ग्येन प ख्योद् ल छग छ़ल लो
सभी से अलंकृत, आपको नमन है।9।

མར་གད་རི་བོས་འཇའ་ཚོན་གྱོན་པ་བཞིན། །
मर गे रि बोस् जा छ़ोन ग्योन प शिन
मरकत-गिरि द्वारा इन्द्र-धनुष पहनने सा

སྐུ་སྟོད་ལྷ་རྫས་གོས་ཀྱི་ག་ཤ་ཅན། །
कु तोद् ल्ह ज़ेस् गोस् क्यि ग श चेन
ऊपरी काय दिव्य उत्तरीय-वस्त्र वाली।

ཐ་ཤིང་ལྡེམ་ལ་མཛེས་པའི་སྐེད་སྐབས་ནི། །
ठ शिङ देम ल ज़ेस् पई केद् कप नि
कोमल और पतली, चारु कमर पर

པཉྩ་ལི་ཀའི་ཤམ་ཐབས་འཛིན་ལ་འདུད། །
पञ्चालिकई शम थप ज़िन ल दुद्
मञ्चालिक अन्तर्वास-धारण-कर्त्री को नमन है।10।

གཡས་ན་མྱ་ངན་མེད་པའི་འོད་ཟེར་ཅན། །
येस् न न्य ङेन मेद् पई ह़ोद् ज़ेर चेन
दायीं ओर नैर्वाणिक मरीचि

ཞི་བའི་ཉམས་ལྡན་གསེར་མདོག་ཉི་འོད་འཕྲོ། །
शि बई ञम देन सेर दोग ञि ह़ोद् ठो
शान्त स्वभाव वाली, सुवर्ण-वर्ण सूर्य-रश्मि फैलाते।

གཡོན་ན་རལ་གཅིག་ནམ་མཁའི་མཛེས་པ་འཕྲོག །
योन न रल चिग नम खई ज़ेस् प ठोग
बायीं ओर एकजटी, आकाश-ललित को हरते

ཁྲོ་ཆགས་བརྗིད་པའི་མཛེས་མ་དེ་ལ་འདུད། །
ठो छग जिद् पई ज़ेस् म दे ल दुद्
क्रोध-राग से भारी, उस सुन्दरी को नमन है।11।

དྲུག་ལྡན་གླུ་དང་མཛེས་པའི་གར་ལ་མཁས། །
डुग देन लु दङ ज़ेस् पई गर ल खेस्
षट्-विध गीत एवं चारु-नाट्य में कुशल

གདུགས་དཀར་རྔ་ཡབ་པི་ཝང་གླིང་བུ་སོགས། །
दुग कर ङ यप पि वङ लिङ बु सोग
श्वेत-छत्र, चामर, वीणा, बांसुरी आदि।

རབ་འབྱམས་མཆོད་རྫས་འཛིན་པའི་ལྷ་མོའི་ཚོགས། །
रप छम छोद् ज़ेस् ज़िन पई ल्ह मोइ छ़ोग
अपरिमित पूजा-द्रव्य-धारिणी

ནམ་མཁའ་གང་བས་མཆོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नम खा गङ वे छोद् ल छग छ़ल लो
आकाश-पूर्ण देवी गणों द्वारा पूजित को नमन है।12।

དཔལ་མོ་ལེགས་བརྗོད་མ་དང་རི་སྐྱེས་སོགས། །
पल मो लेग जोद् म दङ रि क्येस् सोग
लक्ष्मी, इन्द्राणी, उमा आदि

ཡིད་འོང་འཆི་མེད་བུ་མོ་སྟོང་དག་གིས། །
यिद् ह़ोङ छि मेद् बु मो तोङ दग गीस्
मनोहर अमर सहस्र दुहिताओं द्वारा।

ཁྱོད་དྲུང་བྲན་མོ་ཙམ་ཡང་ཐོབ་དཀའ་བ། །
ख्योद् डुङ डेन मो त्स़म यङ थोप का व
आपके समक्ष सेविका मात्र की प्राप्ति करना भी कठिन है

མཛེས་སྡུག་ལྷ་མོའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़ेस् दुग ल्ह मोइ कु ल छग छ़ल लो
लावण्यवती देवी-काय को प्रणाम है।13।

ཐུགས་རྗེའི་ཆུ་འཛིན་རྒྱས་པའི་གློང་ཡངས་ནས། །
थुग जे छु ज़िन ग्येस् पई लोङ यङ नेस्
करुणा-मेघ प्रवर्द्धित धातु से

གསུང་སྙན་ཚངས་དབྱངས་སྤྲིན་གྱི་རྔ་སྒྲ་ཅན། །
सुङ ञेन छ़ङ यङ टिन ग्यि ङ ड चेन
मधुर-वाक् ब्रह्मघोष मेघ-दुन्दुभि।

གདུལ་བྱའི་འཛིན་མར་ཡན་ལག་བརྒྱད་ཆོས་ཆར། །
दुल छई ज़िन मर येन लग ग्ये छोस् छर
विनेयजन मध्य, अष्ट अवयवी धर्म-वर्षा

ཀུན་ཏུ་འབེབས་མཁས་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कुन तु बेप खेस् म ल छग छ़ल लो
सदा करने में कुशल, को नमस्कार है।14।

ཤེས་བྱ་ཀུན་གཟིགས་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་གཏེར། །
शेस् छ कुन ज़िग योन तेन ग्य छ़ोइ तेर
समस्त ज्ञेय-दर्शक, गुणसागर-निधि

ཇི་བཞིན་མ་ལུས་བརྗོད་པར་སུ་ཡིས་ནུས། །
जि शिन म लुस् जोद् पर सु यीस् नुस्
यथावत, अशेष, कौन कह सकता है।

བློ་གྲོས་ཐོགས་མེད་སྟོབས་བཅུ་མངའ་བའི་ཐུགས། །
लो डोस् थोग मेद् तोप चु ङा बई थुग
अप्रतिहत-बुद्धि, चित्त दशबली

མཁྱེན་རབ་མཐར་ཕྱིན་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ख्येन रप थर छिन म ल छग छ़ल लो
ज्ञान पारंगती को प्रणाम करता हूँ।15।

ཞི་བ་བརྙེས་ཀྱང་ཐུགས་རྗེའི་གཞན་དབང་གིས། །
शि व ञेस् क्यङ थुग जे शेन वङ गीस्
शान्ति प्राप्त होने पर भी, करुणा वश

སྡུག་བསྔལ་རྒྱ་མཚོར་བྱིང་བའི་འགྲོ་བ་རྣམས། །
दुग ङ्ल ग्य छ़ोर छिङ बई डो व नम
दुःख-सागर में फंसे प्राणियों को।

ཐུགས་རྗེའི་ཕྱག་གིས་མྱུར་དུ་འདྲེན་མཛད་མ། །
थुग जे छग गीस् न्युर दु डेन ज़े म
करुण-हस्त से शीघ्र तारने वाली

བརྩེ་བ་མཐར་ཕྱིན་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
त्स़े व थर छिन म ल छग छ़ल लो
दया पारंगत को प्रणाम करता हूँ।16।

ཞི་རྒྱས་དབང་དང་དྲག་པོའི་འཕྲིན་ལས་རྣམས། །
शि ग्येस् वङ दङ डग पोइ ठिन लेस नम
शान्त, विपुल, वशिता और रौद्र-कर्म

ལྷུན་གྲུབ་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་འཇུག་མཛད་མ། །
ल्हुन डुप ग्युन मि छे पर जुग ज़े म
अनाभोग निरन्तर लगी हुई

འཇིགས་ཆེན་སྡུག་བསྔལ་བརྒྱད་དང་འབྱུང་པོའི་གདོན།།
जिग छेन दुग ङल ग्ये दङ छुङ पोइ दोन
महाभय अष्ट-दुःख और भूत-ग्रह

ཁྱེད་ཞབས་དྲན་པའི་མོད་ལ་སྐྱོབ་མཛད་མ། །
ख्येद् शप डेन पई मोद् ल क्योप ज़े म
आपके चरण-स्मृति मात्र से शरण मिलता

དེ་ལྟར་སྐྱབས་འོས་ཁྱོད་ཀྱིས་ལུས་ཅན་རྣམས། །
दे तर क्यप ह्रोस् ख्योद् क्यीस् लुस् चेन नम
ऐसे शरण योग्य, प्राणियों को आप

རྨི་ལམ་ངན་དང་མཚན་མ་ངན་པ་སོགས། །
मि लम ङेन दङ छेन म ङेन प सोग
दुःस्वपन और अपशकुन आदि

འཇིག་ཚོགས་ལྟ་བའི་རི་སུལ་གནས་བཅས་ཏེ། །
जिग छोग त बई रि सुल नेस् चेस् ते
सत्काय-दृष्टि रूपी गिरि-कन्दरा में स्थित होकर

ཕ་རོལ་ཁྱད་དུ་གསོད་པའི་སྦར་ཁྱིམ་ཅན། །
फ रोल ख्ये दु सोद् पई बर ख्यिम चेन
दूसरों की उपेक्षा करने वाले पंजा युक्त

དྲན་ཤེས་ལྕགས་ཀྱུ་རྣོན་པོས་མ་བཏུལ་ཞིང་། །
डेन शेस् चग क्यु नोन पोस् म तुल शिङ
स्मृति-सम्प्रजन्य रूपी नुकीले अंकुश से दमित न हो

རྒྱ་མཚོའི་རླབས་བཞིན་དུས་ལས་མི་འདའ་བར། །
ग्य छ़ोइ लप शिन दुस् लेस मि दा बर
सागरोर्मि-सा समय का उल्लंघन न कर।

མཛད་པ་མཐར་ཕྱིན་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़े प थर छिन म ल छग छ़ल लो
कर्म-पारंगत को प्रणाम करता हूँ।17।

ཉོན་མོངས་ཤེས་བྱའི་སྒྲིབ་པའི་འཇིགས་པ་རྣམས། །
ञोन मोङ शेस् छई डिप पई जिग प नम
क्लेश और ज्ञेयावरण-भयों में।

ནུས་པ་མཐར་ཕྱིན་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नुस् प थर छिन म ल छग छ़ल लो
शक्ति पारंगत को नमस्कार करता हूँ।18।

ནད་རིམས་གདོན་བགེགས་དུས་མིན་འཆི་བ་དང་། །
ने रिम दोन गेग दुस् मिन छि व दङ
रोग, ज्वर, ग्रह-बाधा, असमय-मृत्यु,

འཇིགས་པ་ཀུན་ལས་མྱུར་དུ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
जिग प कुन लेस न्युर दु क्यप तु सोल
समस्त भयों से शीघ्र शरण प्रदान करें।19।

གཞན་ལས་མཆོག་ཏུ་འཛིན་པས་སེམས་ཁེངས་ཤིང་། །
शेन लेस छोग तु ज़िन पेस् सेम खेङ शिङ
परतः श्रेष्ठ ग्रहण के कारण, चित्त अभिमानी बन।

ང་རྒྱལ་སེང་གེའི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
ङ ग्यल सेङ गे जिग प क्यप तु सोल
अभिमान रूपी सिंह भय से शरण प्रदान करें।20।

འདོད་ཡོན་སྨྱོས་ཆུ་འཐུངས་པས་འཐོམས་པའི་མཐུས། །
दोद् योन न्योस् छु थुङ पेस् थोम पई थुस्
कामगुण रूपी मद्य-जल के पीने से भ्रमित होने के
कारण।

ལོག་པའི་ལམ་ཞུགས་གནོད་འཚེའི་མཆེ་བ་གཙིགས། །
लोग पई लम शुग नोद् छ़े छे व त्सिग
विपरीत मार्ग में प्रविष्ट हो, हत-हिंसा-दन्त को रगड़ते

གཏི་མུག་གླང་པོའི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
ति मुग लङ पोइ जिग प क्यप तु सोल
मोह रूपी हस्तिभय से शरण प्रदान करें।21।

ཚུལ་མིན་ཡིད་བྱེད་རླུང་གིས་བསྐུལ་བ་ལས། །
छ़ुल मिन यिद् छेद् लुङ गीस् कुल व लेस
अयोनिशोमनस्कार रूपी वायु की प्रेरणा से

ཉེས་སྤྱོད་དུད་སྤྲིན་འཁྲིགས་པའི་གློང་དཀྱིལ་ན། །
ञेस् चोद् दुद् टिन ठिग पई लोङ दक्यिल न
दुश्चर्या रूपी धुएं और मेघाच्छादन के मध्य।

དགེ་བའི་ནགས་ཚལ་བསྲེག་པའི་ནུས་པ་ཅན། །
गे बई नग छ़ल सेग पई नुस् प चेन
कुशल-वन को जलाने में समर्थ

ཞེ་སྡང་མེ་ཡི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
शे दङ मे यि जिग प क्यप तु सोल
द्वेष रूपी अग्नि-भय से शरण प्रदान करें।22।

མ་རིག་འཐིབས་པོའི་ཁུང་དུ་མངོན་ཞེན་ཅིང་། །
म रिग थिप पोइ खुङ दु ङोन शेन चिङ
अज्ञानाच्छादित छिद्र में अभिनिवेशित होकर

གཞན་འབྱོར་ཕུན་ཚོགས་མཐོང་ཚེ་མི་བཟོད་པར། །
शेन छोर फुन छ़ोग थोङ छ़े मि ज़ोद् पर
पर-सम्पत्ति सम्पन्न के दर्शन पर अशान्त हो।

གདུག་པའི་དུག་གིས་མྱུར་དུ་ཁྱབ་བྱེད་པའི། །
दुग पई दुग गीस् न्युर दु ख्यप छेद् पई
क्रूर-विष से शीघ्र व्याप्त होने वाले

ཕྲག་དོག་སྦྲུལ་གྱི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
ठग दोग डुल ग्यि जिग प क्यप तु सोल
ईर्ष्या रूपी सर्प-भय से शरण प्रदान करें।23।

བརྟུལ་ཞུགས་དམན་པའི་འབྲོག་དགོན་འཇིགས་རུང་དང་། །
तुल शुग मेन पई डोग गोन जिग रुङ दङ
हीन-व्रत रूपी भयानक कान्तार और

རྟག་ཆད་མྱ་ངམ་ཐང་ལ་རབ་རྒྱུ་ཞིང་། །
तग छे न्य ङम थङ ल रप ग्यु शिङ
नित्योच्छेद मरुस्थल में दौड़ लगाते।

ཕན་བདེའི་གྲོང་དང་དགོན་པ་ཀུན་འཇོམས་པའི། །
फेन दे डोङ दङ गोन प कुन जोम पई
हित-सुख रूपी नगर तथा समस्त अरण्यों के नाशक

ལྟ་ངན་རྐུན་པོའི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
त ङेन कुन पोइ जिग प क्यप तु सोल
कु-दर्शन रूपी चोर-भय से शरण प्रदान करें।24।

མི་བཟད་སྲིད་པའི་བཙོན་ཁང་རྭ་བ་རུ། །
मि ज़े सिद् पई त्सोन खङ र व रु
निष्करुण भव-सागर के बाड़-मध्य

ལུས་ཅན་རང་དབང་མེད་པར་འཆིང་བྱེད་ཅིང་། །
लुस् चेन रङ वङ मेद् पर छिङ छेद् चिङ
प्राणी परतन्त्र होकर बन्धित होते हैं।

སྲེད་པའི་སྒོ་ལྕགས་དབྱེ་དཀའ་འཁྱུད་པ་ཡི། །
सेद् पई गो चग ये केस् ख्युद् प यि
खोलने में कठिन, तृष्णा रूपी ताले से आलिङ्गित

སེར་སྣའི་ལྕགས་སྒྲོག་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
सेर नई चग डोग जिग प क्यप तु सोल
मात्सर्य रूपी श्रृखला-भय से शरण प्रदान करें।25।

ཤིན་ཏུ་བརྒལ་དཀའ་སྲིད་པའི་རྒྱུན་ཕྱོགས་ཁྱེར། །
शिन तु गल का सिद् पई ग्युन छोग ख्येर
अत्यन्त दुर्लंघ्य, भव-सन्तति की ओर ले जाता

སྐྱེ་རྒ་ན་འཆིའི་རྦ་ཀློང་རབ་འཐུག་པའི། །
क्ये ग न छी ब लोङ रप ठुग पई
जाति, जरा, रोग, मरणोर्मि से उद्वेवलित

ཀུན་ཏུ་རྨོངས་པའི་མཁའ་ལ་རབ་རྒྱུ་ཞིང་། །
कुन तु मोङ पई खा ल रप ग्यु शिङ
संमोहित-आकाश में खूब दौड़ते

ཐར་པའི་སྲོག་ལ་འགོལ་བའི་གདུག་པ་ཅན། །
थर पई सोग ल गोल बई दुग प चेन
मोक्ष रूपी प्राण को रोकने वाला क्रूर

ཁྱོད་ལ་བསྟོད་ཅིང་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་མཐུས། །
ख्योद् ल तोद् चिङ सोल व तप पई थुस्
आपकी स्तुति और अध्येषणा-बल से

ཚེ་དང་བསོད་ནམས་དཔལ་དང་འབྱོར་པ་སོགས། །
छे दङ सोद् नम पल दङ छोर प सोग
आयु, पुण्य-श्री और सम्पन्नता आदि

ཞིང་མཆོག་བདེ་བ་ཅན་དེར་འགྲོ་བ་ཀུན། །
शिङ छोग दे व चेन देर डो व कुन
उस परम क्षेत्र, सुखावती में समस्त प्राणी

དཀའ་བ་བརྒྱ་ཕྲག་སྤྱད་པ་མེད་པར་ཡང་། །
का व ग्य ठग चे प मेद् पर यङ
सैंकड़ों तपश्चर्या के बिना भी

བདག་ཀྱང་རྟག་ཏུ་ཚེ་རབས་དྲན་པ་དང་། །
दग क्यङ तग तु छे रप डेन प दङ
मैं भी सदा जन्म-जन्मान्तरों का स्मरण करूँ

ལས་རླུང་དྲག་པོའི་རྐྱེན་དང་ཉེ་བ་ལས། །
लेस लुङ डग पोइ क्येन दङ ञे व लेस
उग्र-कर्म-वायु-प्रत्यय के समीप होने से।

འདོད་ཆགས་ཆུ་བོའི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
दोद् छग छु बोइ जिग प क्यप तु सोल
राग रूपी ओघ-भय से शरण प्रदान करें।26।

ངེས་པ་དོན་དུ་གཉེར་ལ་ལྷག་པར་འཚེ། །
ङेस् प दोन दु ञेर ल ल्हग पर छे
नीतार्थ साधन में अत्यन्त बाधित।

ཐེ་ཚོམ་ཤ་ཟའི་འཇིགས་པ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ།
थे छोम श ज़ई जिग प क्यप तु सोल
विचिकित्सा रूपी पिशाच-भय से शरण प्रदान करें।27।

དམ་ཆོས་སྒྲུབ་པའི་འགལ་རྐྱེན་ཞི་བ་དང་། །
दम छोस् डुप पई गल क्येन शि व दङ
सद्धर्म साधन के विरुद्ध-प्रत्यय शान्त हों।

མཐུན་པའི་རྐྱེན་རྣམས་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་པར་མཛོད། །
थुन पई क्येन नम यिद् शिन डुप पर ज़ोद्
आवश्यक सामग्रियाँ इच्छावत सिद्ध हों।28।

འདྲེན་པ་འོད་དཔག་མེད་པས་རྗེས་བཟུང་ནས། །
डेन प होद् पग मेद् पेस् जेस् ज़ुङ नेस्
नायक अमिताभ द्वारा अनुगृहीत होकर।

མྱུར་དུ་སངས་རྒྱས་ས་ལ་རེག་གྱུར་ཅིག །
न्युर दु सङ ग्येस् स ल रेग ग्युर चिग
शीघ्र बुद्ध-भूमि से स्पर्श हों।29।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དང་ནམ་ཡང་མི་འབྲལ་ཞིང་། །
छङ छुप सेम दङ नम यङ मि डल शिङ
बोधिचित्त से कदापि सम्बन्ध विच्छेद नहीं हो।

རྒྱལ་སྲས་སྤྱོད་པ་རླབས་ཆེན་འཚོལ་བ་ལ། །
ग्यल सेस् चोद् प लप छेन छ़ोल व ल
अपार जिनपुत्र-चर्या के अन्वेषण में

བརྩོན་འགྲུས་ཆུ་བོའི་རྒྱུན་བཞིན་བསྟེན་པར་ཤོག །
ज़ोन डुस् छु बोइ ग्युन शिन तेन पर शोग
ओघ-सन्ततिवत वीर्य का सेवन करूँ।30।

རང་དོན་སྒྲུབ་ལ་ནམ་ཡང་མི་རེ་ཞིང༌། །
रङ दोन डुप ल नम यङ मि रे शिङ
स्वार्थ-साधन में कदापि आशा नहीं कर

གཞན་དོན་འབའ་ཞིག་སྒྲུབ་ལ་གཞོལ་བ་དང༌། །
शेन दोन बा शिग डुप ल शोल व दङ
केवल परार्थ साधन में प्रवेश करूँ।

སྤྱན་དང་མངོན་ཤེས་སྨྲ་མཁས་བཟོད་པ་སོགས། །
चेन दङ ङोन शेस् म खेस् ज़ोद् प सोग
(प्रज्ञा) चक्षु, अभिज्ञा, कुशल-वक्ता और क्षान्ति आदि

གཞན་དོན་བྱེད་པའི་རྐྱེན་རྣམས་ཚང་བར་ཤོག །
शेन दोन छेद् पई क्येन नम छ़ङ बर शोग
परार्थ करने वाले प्रत्ययों की पूर्ति हो।31।

རབ་འབྱམས་ཞིང་དུ་རྒྱལ་བའི་དམ་ཆོས་ཀུན། །
रप छम शिङ दु ग्यल वई दम छोस् कुन
अपरिमित क्षेत्रों में, जिन का समस्त सद्धर्म

རྒྱས་པར་བྱེད་ལ་ནམ་ཡང་མི་ཞུམ་ཞིང༌། །
ग्येस् पर छेद् ल नम यङ मि शुम शिङ
विस्तार हेतु कदापि अनुत्साहित न होकर।

རྟག་ཏུ་སེམས་ཅན་ཀུན་དོན་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར། །
तग तु सेम चेन कुन दोन डुप पई छिर
सदा सत्त्वों के सर्वार्थ साधन हेतु

རྒྱལ་བའི་གོ་འཕང་བདེ་བླག་ཐོབ་གྱུར་ཅིག །
ग्यल वई गो फङ दे लग थोप ग्युर चिग
सुख-पूर्वक जिन-पद की प्राप्ति हो।32।

རྗེ་བཙུན་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་སེང་ལྡེང་ནགས་ཀྱི་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་མཁས་པའི་གཙུག་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི། ཤཱཀྱའི་དགེ་སློང་དགེ་འདུན་གྲུབ་པ་དཔལ་བཟང་པོས་ཡུན་རིང་དུ་གསོལ་བ་བཏབ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་དབེན་གནས་ཐེག་ཆེན་ཕོ་བྲང་དུ་ལེགས་པར་སྦྱར་བའོ། །

विद्वत् चूढ़ामणि नामक यह भट्टारिका भगवती खदिरवणी-तारा-स्तुति, शाक्य भिक्षु गे-दुन् ड्रुब् पल्-जङ्पो द्वारा दीर्घकाल तक अध्येषणा करने के पश्चात् महाबोधि-विहार महायान-प्रासाद में सुबद्ध किया गया।

# སྒྲོལ་དཀར་བསྟོད་པ།
# शुक्ल-तारा स्तुति

རྗེ་བཙུན་སྒྲོལ་མ་དཀར་མོའི་བསྟོད་པ་ཀུན་མཁྱེན་པདྨ་དཀར་པོས་མཛད་པ་བཞུགས།
कुन्-खेन पद्मा करपो द्वारा रचित भट्टारिका शुक्ल-तारा स्तुति

འཇིག་རྟེན་མགོན་པོའི་ཐུགས་རྗེའི་བདུད་རྩི་ཡི། །
जिग तेन गोन पोइ थुग जे दुद् ज़ि यि
लोकेश्वर के करुणामृत रूपी

ཆུ་གཏེར་གྱིས་སྤྲོས་ཟླ་བ་རྒྱལ་བའི་ཡུམ། །
छु तेर ग्यीस् टोस् द व ग्यल वई युम
अब्धि से बने चन्द्र, जिन-माता।

རྨོངས་པའི་མུན་འཕྲོག་སྙིང་སྟོབས་ཀུ་མུ་ཏ། །
मोङ पई मुन ठोग ञिङ तोप कु मु त
अज्ञानान्धकार हर्ता, उत्साह कुमुद

མ་ལུས་འབྱེད་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
म लुस् छेद् प ख्योद् ल छग छ़ल लो
अशेष उद्घाटक, आपको नमन है।1।

དྲི་མེད་ཆུ་ཤེལ་ནོར་བུའི་འཁྲི་ཤིང་ནི། །
डि मेद् छु शेल नोर बुइ ठि शिङ नि
विमल चन्द्रकान्तमणि लता

ཧ་རི་ཙན་དན་དོག་པས་འཁྱུད་འདྲ་བའི། །
ह रि ज़ेन देन दोग पेस् ख्युद् ड बई
हरिचन्दन-खण्ड से आलिङ्गित सा।

རབ་དཀར་ཡིད་འཕྲོག་སྒེག་མོའི་གཟུགས་འཛིན་མ། །
रप कर यिद् ठोग गेग मोइ ज़ुग ज़िन म
प्रश्वेत मनोहारी, लावण्य रूपधात्री

བཅུ་དྲུག་ལང་ཚོ་རྒྱས་པར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चु डुग लङ छ़ो ग्येस् पर छग छ़ल लो
षोड़षी यौवन-विपुल को नमन है।2।

ནུ་འབུར་རྒྱས་པའི་དཔལ་འབྲས་ཀྱིས་དུད་པའི། །
नु बुर ग्येस् पई पल डेस् क्यीस् दुद् पई
विस्तृत स्तन-श्रीफल से झुके

ལུས་ཕྲ་མཛེས་སྡུག་གསར་པའི་འཁྲི་ཤིང་ནི། །ཕྱག་
लुस् ठ ज़ेस् दुग सर पई ठि शिङ नि
तन्वंगी, लावण्य-युक्त नवीन लता।

ཞབས་ཆུ་སྐྱེས་རྒོད་པའི་གེ་སར་ལ། །
छग शप छु क्येस् गोद् पई गे सर ल
हस्ति-पाद-जलज हसित केसर में

མིག་གི་བུང་བ་གཡོ་བར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मिग गि बुङ व यो वर छग छ़ल लो
अक्षि-भ्रमर विक्षेपित को नमन है।3।

རིན་ཆེན་མཐིང་གི་མུ་ཏིག་དོ་ཤལ་ཁོངས། །
रिन छेन थिङ गि मु तिग दो शल खोङ
नील-रत्न मुक्ति-माला के मध्य

བའི་འགྲོས་ཀྱིས་གླང་པོ་དམན་བྱེད་པ། །
ग्यिङ बई डोस् क्यीस् लङ पो मेन छेद् प
सलील गमन से गज हीन होते

རྟག་པར་འཛུམ་པས་མཆུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ལ། །
तग पर ज़ुम पेस् छु यि यल दप ल
सदा स्मित से ओष्ठ शाखा-पत्र पर

མཛེས་པར་འགོད་ལ་ཤངས་རྒྱུད་ཡིད་རིས་ཀྱིས། །
ज़ेस् पर गोद् ल शङ ग्युद् यिद् रीस् क्यीस्
सुन्दर बना नासिका तन्त्र, मन द्वारा

རིན་ཆེན་རྣམས་དང་མེ་ཏོག་གིས་བརྒྱན་པའི། །
रिन छेन नम दङ मे तोग गीस् ग्येन पई
रत्न एवं पुष्पों से अलंकृत

སྤྲིན་གསར་ཚོགས་ལ་གདེངས་པ་རྨ་བྱ་ཡི། །
टिन सर छ़ोग ल देङ प म छ यि
नव मेघाच्छादन पर मयूर के उठे

ཉི་མའི་འོད་ཟེར་ལྡན་པའི་ཅོད་པན་གྱིས། །
जि मई ह़ोद् ज़ेर देन पई चोद् पेन ग्यीस्
सुर्य-रश्मि-युक्त मुकुट से

ཆུ་ཤེལ་ལྗོན་པའི་ཡལ་ག་ཁུ་བྱུག་གི །
छु शेल जोन पई यल ग खु छुग गि
चन्द्रकान्त-वृक्ष-शाखा पर कोयल के

རྣ་རྒྱན་རིན་ཆེན་རབ་འབར་འགྲམ་པ་ལ། །
न ग्येन रिन छेन रप बर डम प ल
कर्णालंकार रत्न-प्रज्वलित, गाल पर

སྤྲས་འདྲའི་འོད་ཅན་སྤྱན་གསུམ་རི་དྭགས་མོ། །འགྱིང་
टेस् डई ह़ोद् चेन चेन सुम रि दग मो
गुंथा सा, त्रिनयन सशोभित मृगी।

ཡིད་འོང་མཛེས་པའི་སྙིང་པོར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
यिद् ह़ोङ ज़ेस् पई ञिङ पोर छग छ़ल लो
मनोहारी हृदय को नमन करता हूँ।4।

མུ་ཏིག་འབྲས་བུ་ཆགས་པའི་བྱུ་རུའི་འོད། །
मु तिग डेस् बु छग पई छु रुइ ह़ोद्
मुक्ति-फल बन कर प्रवाल-रश्मियाँ।

འབད་པས་བཟོས་འདྲ་གང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
बे पेस् ज़ोस् ड गङ ल छग छ़ल लो
यत्न से निर्मित जिनका, (उनको) नमन है।5।

ལན་བུ་གཅིག་པའི་ཟུར་ཕུད་མཐོན་མཐིང་གིས། །
लेन बु चिग पई ज़ुर फुद् थोन थिङ गीस्
एक वेणी रूपी उन्नत-नील चीरी द्वारा।

མཛུག་མའི་མཛེས་སྡུག་འཛིན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जुग मई ज़ेस् दुग ज़िन ल छग छ़ल लो
सुन्दर पक्ष-धात्री को नमन करता हूँ।6।

ལེགས་སྤྲས་སྙན་གོང་ཨུཏྤལ་མཐིང་ཁའི་རྒྱན། །
लेग टेस् ञेन गोङ उत्पल थिङ खई ग्येन
सुशोभित, कर्णोपरि नीलोत्पल अलंकृत।

གཤོག་པ་བརྒྱངས་པས་མཛེས་འདྲར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
शोग प क्यङ पेस् ज़ेस् डर छग छ़ल लो
पंख-प्रसारण-सा सुन्दर को नमन है।7।

ཡ་མཚན་འོད་རིས་ཅི་ཡང་བྲི་བ་ནི། །
य छ़ेन ह़ोद् रीस् चि यङ डि व नि
अद्भुत रश्मि किञ्चित चित्र-सा।

མཁུར་ཚོས་དཀར་དམར་མདངས་ཀྱིས་ཡིད་འོང་ལ། །
खुर छ़ोस् कर मर दङ क्यीस् यिद् ह़ोङ ल
कपोल श्वेत-रक्त वर्ण से मनोहर

ངལ་བས་འགྲན་པར་བགྱིད་དེར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ङल वे डेन पर ग्यिद् देर छग छ़ल लो
उस प्रतिस्पर्द्धा से कृष को नमन है।8।

མགུལ་ན་མུ་ཏིག་ཆུན་པོའི་རྒྱུན་དག་ནི། །
गुल न मु तिग छुन पोइ ग्युन दग नि
कण्ठ में मुक्ति-मालाओं की शृंखलायें

ཤིན་ཏུ་རགས་པས་མཚན་མོའི་དཔལ་གྱུར་པའི། །
शिन तु रग पेस् छ़ेन मोइ पल ग्युर पई
अत्यन्त स्थूल होने से रात्रि में श्री-युक्त।

ཟླ་བའི་དཀར་བ་མ་ལུས་འཕྲོག་པ་ལྟས། །
द बई कर व म लुस् ठोग प तेस्
अशेष चन्द्र-श्वेत को हरता दिखता

བརྒྱན་ཅིང་བརྒྱན་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्येन चिङ ग्येन प ख्योद् ल छग छ़ल लो
अलंकार-अलंकृत तुम्हें नमन है।9।

དཔུང་རྒྱན་གདུ་བུ་ངུར་བའི་འཕྲེང་རྒྱུ་བ། །
पुङ ग्येन दु बु ङुर बई ठेङ ग्यु व
केयूर-वलय चक्रवाक्-झुण्ड़ गमन सा

དོ་ཤལ་གངྒཱའི་ལྦུ་བ་རབ་གསལ་གྱིས། །
दो शल गङ्गाई बु व रप सल ग्यीस्
हार गङ्गा नदी के बुद्बुदे से प्रकृष्ट होने से।

མཛེས་ཤིང་རྒོད་པ་ལྷ་ཡི་རི་བོ་ནི། །
ज़ेस् शिङ गोद् प ल्ह यि रि बो नि
सुन्दर स्मित देव-गिरि जैसा

གཟི་བྱིན་མཚུངས་མེད་པ་དེར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़ि छिन छुङ मेद् प देर छग छ़ल लो
अद्वितीय ओजस्विनी, नमन है उनको।10।

ཛམྦུ་ན་དའི་དྲིལ་ཆུང་སྒྲ་འབྱིན་པའི། །
जम्बुनदाई डिल छुङ ड छिन पई
जम्बुनद् लघु घण्टाओं के शब्द वाले

འོད་ཟེར་རབ་རྒྱས་ནོར་བུའི་སྐ་རགས་དང་། །
ह़ोद् ज़ेर रप ग्येस् नोर बुइ क रग दङ
रश्मि प्रस्फुटित माणिक-मेखला।

མཛེས་འཛུམ་རླབས་ཀྱི་གཟུགས་བརྙན་གོས་བཟང་གིས།།
ज़ेस् ज़ुम लप क्यि ज़ुग ञेन गोस् ज़ङ गीस्
सुन्दर स्मितोर्मि-प्रतिच्छाया, सुवस्त्र

རྣམ་མཛེས་སྒྲོལ་མ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नम ज़ेस् डोल म दे ल छग छ़ल लो
सुशोभित, उस तारा को नमन है।11।

ཕྱག་གཡས་མཆོག་སྦྱིན་གཡོན་པ་ཨུཏྤ་ལའི། །
छग येस् छोग छिन योन प उत्प लई
वरद् दक्षिण हस्त, वाम में उत्पल-

སྡོང་བུ་འཛིན་ཅིང་སྐྱིལ་ཀྲུང་ངང་མོ་ནི། །
दोङ बु ज़िन चिङ क्यिल टुङ ङङ मो नि
नाल ग्रहण किये, वज्रपर्यङ्क, हंसी

པད་དཀར་སྙུ་གུས་མཚན་པའི་ཟླ་བ་མཚོར། །
पे कर न्यु गुस् छ़ेन पई द व छ़ोर
पुण्डरीक लता-लक्षित चन्द्र-सागर में

མཛེས་པས་རྣམ་པར་རོལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ज़ेस् पेस् नम पर रोल ल छग छ़ल लो
लालित्य क्रीड़ा-कर्त्री को नमन है।12।

དུས་མིན་འཆི་བ་ནད་དང་འཇིགས་པ་བརྒྱད། །
दुस् मिन छि व ने दङ जिग प ग्ये
असमय-मृत्यु और अष्ट-भय

ཡིད་བཞིན་འཁོར་ལོས་ཐུགས་ཀ་རྣམ་མཛེས་པའི། །
यिद् शिन खोर लोस् थुग क नम ज़ेस् पई
चिन्तामणि-चक्र से हृदय विभूषित

ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོངས་རྣམས་དྲི་མེད་འོད་ཟེར་གྱི། །
छोग क्यि खोङ नम डि मेद् ह़ोद् ज़ेर ग्यि
दिशा उपदिशायें विमल रश्मियों के

ཁྱོད་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་དག་གིས་བདག་ཅག་གི །
ख्योद् क्यि का डिन दग गीस् दग चग गि
आपके परिग्रह से हम लोगों के

དད་པའི་ཐལ་སྦྱར་མཆི་མས་མིག་བརླན་ཅིང་། །
दे पई थल छर छि मेस मिग लेन चिङ
भक्ति-अंजलिबद्ध, अक्षि आँसुओं से भीगते

ཀུ་ར་རི་བཞིན་སྒྲོག་ལ་ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན། །
कु र रि शिन डोग ल थुग जे चेन
कुररिवत ध्वनि-कर्ता को करुण-चक्षु

དྲན་པས་ཡུད་ཙམ་ཉིད་ལ་སེལ་བགྱིད་པའི། །
डेन पेस् युद् त्सम ञिद् ल सेल ग्यिद् पई
स्मरण मात्र से निवारण करने वाली।

དུས་གསུམ་རྒྱལ་བའི་ཡུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दुस् सुम ग्यल वई युम ल छग छ़ल लो
त्रिकाल जिन-माता को नमन है।13।

བདུད་རྩིའི་ཆ་རླབས་ཀྱིས་འགེངས་བཅོམ་ལྡན་མ། །
दुद् त्सी ब लप क्यीस् गेङ चोम देन म
अमृत लहरियों से पूर्ण, हे भगवती !

ཡིད་ལ་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་མཛོད། །
यिद् ल दोद् प थम चे डुप पर ज़ोद्
समस्त इच्छाओं की सिद्धि हों।14।

གདུང་བས་ཡིད་བསྐུལ་གསོལ་འདེབས་ང་རོ་ནི། །
दुङ वे यिद् कुल सोल देप ङ रो नि
उद्वेग से चित्त-प्रेरित, अध्येषणा-गर्जन।

གཟིགས་ལ་ལེ་ལོ་མ་མཛད་བཅོམ་ལྡན་མ། །
ज़िग ल ले लो म ज़े चोम देन म
देखें, हे भगवती ! आलस नहीं करें।15।

ཞེས་ཆོ་འཕྲུལ་གྱི་དུས་ཆེན་ལ་དད་པའི་བློས་སྦྱར་བའོ། །
यह (बुद्ध के) प्रातिहार्य महोत्सव पर भक्ति-चित्त से लिखा गया।

## དབྱངས་ཅན་ལྷ་མོའི་བསྟོད་པ་བྱིན་རླབས་ཀྱི་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ།

# अधिष्ठान-आभास नामक सरस्वती देवी-स्तुति

མཁྱེན་བཟང་རབ་ཏུ་རྒྱས་པའི་པདྨ་དང་། །
ख्येन ज़ङ रप तु ग्येस् पई पेमा दङ
सुज्ञान प्रवर्द्धित पद्म तथा

ཐུགས་རྗེ་དྲི་མེད་ཟླ་བའི་གདན་ལ་འགྱིང་། །
थुग जे डि मेद् द बई देन ल ग्यिङ
विमल करुणा चन्द्रासन पर बैठे।

སྒྲ་དབྱངས་རྒྱ་མཚོའི་པི་ཝང་གསུང་སྙན་གྱིས། །
ड यङ ग्य छ़ोइ पि वङ सुङ ञेन ग्यीस्
शब्दघोष-समुद्र वीणा मधुर-वाक् द्वारा

ཁམས་གསུམ་དབུགས་ཕྱིན་ལྷ་མོ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
खम सुम उग छिन ल्ह मो ख्योद् ल दुद्
त्रिधातु उच्छवास-दात्री देवी, तुम्हें नमन है।1।

རབ་མཛེས་བུ་མོ་གངས་རིའི་མདངས་འཕྲོག་མ། །
रप ज़ेस् बु मो गङ री दङ ठोग म
अत्यन्त सुन्दर दुहिता, हिमगिरि ओज हरती

ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་དྲི་ཟའི་པི་ཝང་སྒྲེང་། །
शल चिग छग ञीस् डि ज़ई पि वङ डेङ
दो हस्त, एक मुख, गन्धर्व वीणा बजाती।

བུང་བ་གཞོན་ནུ་གཡོ་བའི་པད་ཚལ་གྱི། །
बुङ व शोन नु यो बई पे छ़ल ग्यि
भ्रमर-कुमार भ्रमण करते, पद्म-वन के

ངང་པའི་བུ་མོ་དང་འདྲ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
ङङ पई बु मो दङ ड ख्योद् ल दुद्
हंस-पुत्री सा, तुम्हें नमन है।2।

ཤེལ་གྱི་འཁྲི་ཤིང་རླུང་གིས་བསྐྱོད་འདྲ་མ། །
शेल ग्यि ठि शिङ लुङ गीस् क्योद् ड म
चन्द्रकान्त लता के वायु प्रकम्पन सा

མཐོ་རིས་མཛེས་མ་སྟོང་ཕྲག་འཚོགས་ན་ཡང་། །
थो रीस् ज़ेस् म तोङ ठग छ़ोग न यङ
शत स्वर्ग-सुन्दरियों के एकत्रित होने पर भी।

གང་གི་མདུན་ན་བྲན་མོ་ལྟར་སྤྱོད་པའི། །
गङ गि दुन न डेन मो तर चोद् पई
जिनके समीप सेविकाओं सा आचरण करते

ཡིད་འོང་མིག་གི་བདུད་རྩི་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
यिद् ह़ोङ मिग गि दुद् त्सि ख्योद् ल दुद्
मनोहर लोचनामृत, तुम्हें नमन है।3।

དྲི་མེད་ཟླ་ཞལ་འཛུམ་པའི་མདངས་དཀར་ཅན། །
डि मेद् द शल ज़ुम पई दङ कर चेन
विमल चन्द्रमुखी, स्मित श्वेत ओज वाली

མཁུར་ཚོས་ཉི་མ་འཆར་བའི་མདངས་དམར་ཞིང་། །
खुर छ़ोस् ञि म छर बई दङ मर शिङ
गाल आदित्योदय सा, रक्त ओज वाली।

མཐོན་མཐིང་མིག་གི་ཨུཏྤལ་དཀྱུས་རིང་མ། །
थोन थिङ मिग गि उत्पल दक्युस् रिङ म
उन्नत-नीलोत्पल आयत-अक्षि

རབ་བཀྲའི་ཟུར་མིག་གཡོ་མཛད་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
रप टई ज़ुर मिग यो ज़े ख्योद् ल दुद्
सुचित्रित कटाक्ष करती, तुम्हें नमन है।4।

རིན་ཆེན་ཟུར་ཕུད་རྣ་རྒྱན་རབ་འབར་ཞིང་། །
रिन छेन ज़ुर फुद् न ग्येन रप बर शिङ
रत्न-चोटी, कर्णालंकार सुशोभित

དྲི་ཞིམ་མེ་ཏོག་ཕྲེང་བས་མཛེས་བྱས་པས། །
डि शिम मे तोग ठेङ वे ज़ेस् छेस् पेस्
सुगन्धित पुष्प-माला से सुसज्जित।

ཡིད་འོང་མིག་སྨན་མདོག་ཅན་ལྷས་མ་ནི། །
यिद् ह़ोङ मिग मेन दोग चेन ल्हेस् म नि
मनोहर अंजन-वर्ण वेणी

འོད་གསལ་རྨ་བྱའི་མདོག་མཛེས་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
ह़ोद् सल म छ्ई दोग ज़ेस् ख्योद् ल दुद्
आभासित मयूर-वर्ण सा सुन्दर, तुम्हें नमन है।5।

ཡོངས་འདུའི་ཚལ་ནས་དེ་རིང་འོངས་གྱུར་པའི། །
योङ दुइ छ्ल नेस् दे रिङ ह़ोङ ग्युर पई
आज पारिजात-वन से आई

ཨུཏྤལ་སྔོན་པོས་སྙན་གོང་བརྒྱན་པ་ནི། །
उत्पल ङोन पोस् ञेन गोङ ग्येन प नि
कर्णोपरि नीलोत्पल अलंकृत।

ཆུ་ཤེལ་ལྗོན་པའི་ཡལ་འདབ་ཁུ་བྱུག་གི །
छु शेल जोन पई यल दप खु छुग गि
चन्द्रकान्त-द्रुम-शाखा पर कोयल के

གཤོག་པ་བརྐྱངས་པས་མཛེས་འདྲ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
शोग प क्यङ पेस् ज़ेस् ड ख्योद् ल दुद्
पक्ष-प्रसारण सा सुन्दर, तुम्हें नमन है।6।

རིན་ཆེན་རྣ་ཆ་མ་ལུས་གྲོལ་བྱས་ནས། །
रिन छेन न छ म लुस् डोल छेस् नेस्
अशेष कर्णाभूषण के धारण पर

ཁྱོད་ཀྱི་སྙན་གྱི་དྲུང་དུ་འཁོད་པ་ན། །
ख्योद् क्यि ञेन ग्यि डुङ दु खोद् प न
आपके कर्ण समीप लटकते समय।

མགུལ་བ་དང་ནི་མགྲིན་པའི་རྒྱན་རྣམས་ཀྱི། །
गुल व दङ नि डिन पई ग्येन नम क्यि
कण्ठ और ग्रीवा-आभूषण

ལག་སྙེལ་ཕྲེང་བས་རབ་བསྐོར་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
लग ञेल ठेङ वे रप कोर ख्योद् ल दुद्
हस्त-संलग्न माला-परिवृत्त, तुम्हें नमन है।7।

ནུ་འབུར་ཟླུམ་རྒྱས་གངས་རི་རྣམ་གཉིས་ཀྱི། །
नु बुर दुम ग्येस् गङ रि नम ञीस् क्यि
स्तन गोल विस्तृत, द्विविध हिमगिरि के

སྟེང་ནས་སྟོད་གཡོགས་རབ་དཀར་ཆུ་འཛིན་གཡོ། །
तेङ नेस् तोद् योग रप कर छु ज़िन यो
ऊपर से ऊर्ध्व-वस्त्र प्रश्वेत मेघ लहराते।

ངོས་ནས་མུ་ཏིག་དོ་ཤལ་ཆུན་པོ་འབབ། །
ङोस् नेस् मु तिग दो शल छुन पो बप
उसके समक्ष मुक्ति-माला बरसती

ཛ་ཡབ་དང་བས་རབ་བརྟེན་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
ङ यप दङ वे रप तेन ख्योद् ल दुद्
प्रकृष्ट चामर सुवासित, तुम्हें नमन है।8।

ཨུཏྤལ་དྲི་ལྡན་ལྟེ་བའི་རྫིང་བུའི་འགྲམ། །
उत्पल डि देन ते बई ज़िङ बुइ डम
सुगन्धित उत्पल (रूपी) नाभि वापि के तट पर

གསེར་གྱི་སྐ་རགས་ནོར་བུའི་ཕྲེང་བས་མཛེས། །
सेर ग्यि क रग नोर बुइ ठेङ वे ज़ेस्
कनक-कटिबन्ध मणि-माला से शोभित।

རབ་བཀྲ་ནོར་བུས་མཚན་པའི་ཤམ་ཐབས་ནི། །
रप ट नोर बुस् छेन पई शम थप नि
सुचित्र मणि-लक्षित अन्तर्वास-

དལ་བར་འཛིན་མཛད་མཛེས་མ་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
दल बर ज़िन ज़े ज़ेस् म ख्योद् ल दुद्
मन्द ग्रहण-कर्त्री सुन्दरी, तुम्हें नमन है।9।

འོག་ནས་ཀླུ་མོས་ཆབ་ཀྱི་རྒྱ་མཚོས་མཆོད། །
ह्योग नेस् लु मोस् छप क्यि ग्य छोस् छोद्
नीचे नागिन, समुद्र-जल से पूजते

ངོས་ནས་གྲུབ་པས་མཛེས་པའི་རྔ་ཡབ་གཡོབ། །
ङोस् नेस् डुप पेस् ज़ेस् पई ङ यप योप
पार्श्व में सिद्ध, सुन्दर चामर हिलाते।

མདུན་ནས་རིག་འཛིན་བུ་མོས་སིལ་སྙན་འཁྲོལ། །
दुन नेस् रिग ज़िन बु मोस् सिल ञेन ठोल
सामने विद्याधर कन्यायें वाद्य बजातीं

སྨིན་ལེགས་ཀུན་གྱི་གཙོ་མོ་ཁྱོད་ལ་བསྟོད། །
मिन लेग कुन ग्यि त्सो मो ख्योद् ल तोद्
सु-भ्रू, सभी में परम, तुम्हें नमन है।10।

གཡས་ནས་མི་འམ་ཅི་ཡིས་གླུ་དབྱངས་ལེན། །
येस् नेस् मि ह्म चि यीस् लु यङ लेन
दक्षिण में किन्नर, गीत-घोष गाते

གཡོན་ནས་དྲི་ཟའི་དགའ་མས་པི་ཝང་སྒྲེང་། །
योन नेस् डि ज़ई गा मेस पि वङ डेङ
बायें गन्धर्व-प्रियायें, वीणा बजातीं।

རྒྱབ་ནས་འཆི་མེད་བུ་མོས་གདུགས་དཀར་འཛིན། །
ग्यप नेस् छि मेद् बु मोस् दुग कर ज़िन
पीछे अमर बालायें श्वेत-छत्र धारण करतीं

ནུས་ལྡན་ཀུན་གྱི་གཙོ་མོ་ཁྱོད་ལ་བསྟོད། །
नुस् देन कुन ग्यि त्सो मो ख्योद् ल तोद्
शक्तिमान्, सभी में परम, तुम्हें नमन है।11।

བཅུ་དྲུག་ལང་ཚོ་ཆགས་པའི་ཉམས་ལྡན་མ། །
चु डुग लङ छो छग पई ञम देन म
षोड़षी लावण्यमयी, राग स्वभाव वाली

ལྟ་བས་མི་ངོམས་ཡེ་ཤེས་སྒྱུ་མའི་སྐུ། །
त वे मि ङोम ये शेस् ग्यु मई कु
देखने पर अतृप्त, ज्ञान माया-काय।

དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་བདེ་བ་ཀུན་སྟེར་མ། །
डेन प त्सम ग्यीस् दे व कुन तेर म
स्मृति मात्र पर सब सुख-दात्री

ལྷག་པའི་ལྷ་མོ་དབྱངས་ཅན་མ་ལ་འདུད། །
ल्हग पई ल्ह मो यङ चेन म ल दुद्
अधि-देवी सरस्वती को नमन है।12।

འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་གསུང་རབ་མ་ལུས་པ། །
डो व कुन ल सुङ रप म लुस् प
समस्त सत्त्वों में अशेष प्रवचनों का

གསལ་བར་འཆད་པའི་སྤོབས་པ་བདག་ལ་སྩོལ། །
सल वर छे पई पोप प दग ल त्सोल
स्पष्ट भाषणोत्साह मुझे प्रदान करें।

མཁས་པའི་མདུན་སར་ཕྱིར་རྒོལ་ཕམ་བྱེད་པའི། །
खेस् पई दुन सर छ्यिर गोल फम छेद् पई
**विद्वत् मध्य पर-वादी को हराने की**

རྣམ་རྒྱལ་རྩོད་པའི་སྤོབས་པ་བདག་ལ་སྩོལ། །
नम ग्यल ज़ोद् पई पोप प दग ल ज़ोल
**विजयी शास्त्रार्थोत्साह मुझे प्रदान करें।** 13।

ཚིག་དང་ངག་གི་སྦྱོར་བ་དྲི་མེད་པའི། །
छ़िग दङ ङग गि ज्योर व डि मेद् पई
**विमल पद और वाक् संयोजन वाली**

གཞུང་བརྒྱ་རྩོམ་པའི་སྤོབས་པ་བདག་ལ་སྩོལ། །
शुङ ग्य ज़ोम पई पोप प दग ल ज़ोल
**शत शास्त्र रचने की उत्साह मुझे प्रदान करें।**

དེ་ལྟར་བསྟོད་པའི་དགེ་བ་གང་ཡིན་པས། །
दे तर तोद् पई गे व गङ यिन पेस्
**ऐसे स्तुति का जो पुण्य मुझे मिले**

བདག་ནི་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བར་ཤོག །
दग नि छ्योग लेस नम पर ग्यल वर शोग
**उससे सभी दिशाओं में, मैं विजित होऊँ।** 14।

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་ཁྱེད་ཀྱིས་རྗེས་བཟུང་ནས། །
छ़े रप कुन तु ख्येद् क्यीस् जेस् ज़ुङ नेस्
**जन्म-जन्मान्तर आपका अनुसरण कर**

འཇམ་དཔལ་དབྱངས་ཀྱི་གོ་འཕང་མྱུར་ཐོབ་ཤོག །
जम पल यङ क्यि गो फङ न्युर थोप शोग
**मञ्जुश्री-पद शीघ्र प्राप्त हों।**

འདི་ནི་འཛིན་ནམ་འཆང་ངམ་ཀློག་ཀྱང་རུང་། །
दि नि ज़िन नम छङ ङम लोग क्यङ रुङ
**इसके ग्रहण, धारण अथवा पढने पर**

དགེ་ལེགས་ཡར་ངོའི་ཟླ་ལྟར་རྒྱས་བྱེད་ཤོག །
गे लेग यर ङोइ द तर ग्येस् छेद् शोग
**स्वस्ति शुक्ल-पक्ष चन्द्रमा से फैले।** 15।

ཅེས་པ་འདིའང་དཔལ་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་པཎྜི་ཏ་དབྱངས་ཅན་དགའ་བས་མཛད་པའོ། །
यह भी समस्त दिशाओं में विजित पण्डित यङ्ग-चन् गाह्-वा द्वारा रचा गया।

# གུ་རུ་པདྨའི་ཚིག་བདུན་གསོལ་འདེབས།
# गुरु की सप्तपदी अध्येषणा

ཧཱུྃ༔ ཨོ་རྒྱན་ཡུལ་གྱི་ནུབ་བྱང་མཚམས༔
हूं   उर्ग्येन युल ग्यि नुप छङ छ़म
**उड्डियान देश के पश्चिमोत्तर सीमा में**

ཡ་མཚན་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་བརྙེས༔
य छ़ेन छोग गि ङोस् डुप ञेस्
**अद्भूत अनुत्तर सिद्धिलब्ध**

འཁོར་དུ་མཁའ་འགྲོ་མང་པོས་བསྐོར༔
खोर दु खा डो मङ पोस् कोर
**अनेक डाक-डाकिनियों परिपदों से घिरे**

བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཕྱིར་གཤེགས་སུ་གསོལ༔
छ्विन ग्यीस् लप छ्विर शेग सु सोल
**अतः अधिष्ठित करने हेतु यहाँ पाधारे**

པདྨ་གེ་སར་སྡོང་པོ་ལ༔
पेमा गे सर दोङ पो ल
**पद्मपराग के पंखुड़ियों पर**

པདྨ་འབྱུང་གནས་ཞེས་སུ་གྲགས༔
पेमा छुङ नेस् शेस् सु डग
**पद्मकर नाम से प्रसिद्ध**

ཁྱེད་ཀྱི་རྗེས་སུ་བདག་བསྒྲུབ་ཀྱིས༔
ख्येद् क्यि जेस् सु दग डुप क्यि
**आपका अनुसरण कर साधना करुँगा**

གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
गु रु पेमा सिद्दिह हा हूं
**गुरु पद्म सिद्धि हूं**

## གསོལ་འདེབས་བར་ཆད་ལམ་སེལ།

# बाधा-निवारक अध्येषणा

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।1।

ཆོས་སྐུ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
छोस् कु नङ व था येस् ल सोल व देप
धर्मकाय अमिताभ से अध्येषणा करता हूँ।

ལོངས་སྐུ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
लोङ कु थुग जे छेन पो ल सोल व देप
सम्भोगकाय महाकारुणिक से अध्येषणा करता हूँ।

སྤྲུལ་སྐུ་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
टुल कु पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
निर्माणकाय पद्माकर से अध्येषणा करता हूँ।2।

བདག་གི་བླ་མ་ངོ་མཚར་སྤྲུལ་པའི་སྐུ༔
दग गि ल म ङो छ़र टुल पई कु
मेरे गुरु अद्भुत् निर्माणकाय

རྒྱ་གར་ཡུལ་དུ་སྐུ་འཁྲུངས་ཐོས་བསམ་མཛད༔
ग्य गर युल दु कु ठुङ थोस् सम ज़े
भारत-देश पैदा हुये, चिन्तन और मनन किये

བོད་ཡུལ་དབུས་སུ་ཞལ་བྱོན་དྲེགས་པ་བཏུལ༔
बोद् युल उस् सु शल छोन डेग प तुल
मध्य भोट-देश पधारे, दर्पों को विनीत किया

ཨོ་རྒྱན་ཡུལ་དུ་སྐུ་བཞུགས་འགྲོ་དོན་མཛད༔
उर्ग्येन युल दु कु शुग डो दोन ज़े
ओडियान-देश में विराजमान, सत्त्वार्थ करते।

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त़्से वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་རྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप त़्सोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।3।

གཡས་པས་རལ་གྲིའི་ཕྱག་རྒྱ་མཛད༔
येस् पेस् रल डी छग ग्य ज़े
दायाँ खड्ग-मुद्रा बनाये

ཞལ་བགྲད་མཆེ་གཙིགས་གྱེན་ལ་གཟིགས༔
शल डे छे त्सिग ग्येन ल ज़िग
मुख-खोले, दंष्ट्र रगड़ते, उर्ध्व को देखे

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप त्सोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।4।

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

སྐུ་ཡི་ངོ་མཚར་མཐོང་བའི་ཚེ༔
कु यि ङो छ़र थोङ बई छ़े
अद्भुत-काय के दर्शन पर

གཡོན་པས་འགུགས་པའི་ཕྱག་རྒྱ་མཛད༔
योन पेस् गुग पई छग ग्य ज़े
बायाँ आकृष्ट-मुद्रा बनाये

རྒྱལ་བའི་གདུང་འཛིན་འགྲོ་བའི་མགོན༔
ग्यल वई दुङ ज़िन डो बई गोन
जिन-वंश-धारी, जगन्नाथ हैं।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त्से वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

དམ་ཆོས་རིན་ཆེན་གསན་པའི་ཚེ༔
दम छोस् रिन छेन सेन पई छ़े
सद्धर्म-रत्न के श्रवण के समय

སྐུ་གསལ་འོད་ཟེར་མདངས་དང་ལྡན༔
कु सल ह़ोद् ज़ेर दङ दङ देन
प्रकृष्ट-काय प्रकाश-ओज से युक्त

གཡོན་པས་ཕུར་པའི་པུསྟི་བསྣམས༔
योन पेस् फुर पई पुस्ति नम
बायाँ कील-पुस्तक लिये हुये

ཡང་ལེ་ཤོད་ཀྱི་པཎྜི་ཏ༔
यङ ले शोद् क्यि पण◌ ◌ि त
यङ्-ले-शोद् के पण्डित हैं।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त्ऱे वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

དམ་ཅན་དམ་ལ་བཏགས་པའི་ཚེ༔
दम चेन दम ल तग पई छ़े
'समयक' के समय-बन्धन पर

རྒྱ་གར་བོད་ཡུལ་ས་མཚམས་སུ༔
ग्य गर बोद् युल स छ़म सु
भारत-भोट देश की सीमा पर

ཕྱག་གཡས་སྡེ་སྣོད་གླེགས་བམ་བསྣམས༔
छग येस् दे नोद् लेग बम नम
दायाँ-हस्त पिटक-पुस्तक धारण किये

ཟབ་མོའི་ཆོས་རྣམས་ཐུགས་སུ་ཆུད༔
ज़प मोइ छोस् नम थुग सु छुद्
गम्भीर धर्मों का अवबोध किये

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् ड़ुप त्ऱोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।5।

དྲི་མེད་གནས་མཆོག་ཉམས་རེ་དགའ༔
डि मेद् नेस् छोग ञम रे गा
विमल श्रेष्ठ-स्थल आनन्दित

བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་བྱོན་པའི་ཚེ༔
छिन ग्यीस् लप नेस् छोन पई छ़े
अधिष्ठित कर, आगमन काल में

དྲི་བསུང་སྤོས་ངད་ལྡན་པའི་རིཿ
डि सुङ पोस् ङे देन पई रि
गन्ध सुगन्ध से युक्त पर्वत

ཆུ་མིག་བྱང་ཆུབ་བདུད་རྩིའི་ཆུཿ
छु मिग छङ छुप दुद् त्सी छु
जलस्रोत बोधि-अमृत का जल

སྐྱེས་མཆོག་ཚུལ་བཟང་ཆོས་གོས་གསོལཿ
क्येस् छोग छुल ज़ङ छोस् गोस् सोल
उत्तम पुरुष, सुशील, चीवर-धारी

གཡོན་པས་རིན་ཆེན་ཟ་མ་ཏོགཿ
योन पेस् रिन छेन ज़ म तोग
वाम में है, रत्न-कारण्डक

མཁའ་འགྲོ་དམ་ཅན་དམ་ལ་བཏགསཿ
खा डो दम चेन दम ल तग
ड़ाकिनी समयकों को समय में बाँधते

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབསཿ
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལཿ
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप त्सोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལཿ
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལཿ
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

མེ་ཏོག་པདྨ་དགུན་ཡང་སྐྱེཿ
मे तोग पेमा गुन यङ क्ये
पद्म-पुष्प हेमन्त में पैदा होते

བདེ་ལྡན་དེ་ཡི་གནས་མཆོག་ཏུཿ
दे देन दे यि नेस् छोग तु
सुख-सम्पन्न उस श्रेष्ठ-स्थल में

ཕྱག་གཡས་རྡོ་རྗེ་རྩེ་དགུ་བསྣམསཿ
छग येस् दोर जे त्से गु नम
दक्षिण-हस्त नवाग्र-वज्र धारण किये

རཀྟ་བདུད་རྩིས་ནང་དུ་གཏམསཿ
रक्त दुद् त्सीस् नङ दु तम
रक्तामृत से अभ्यन्तर आपूरित

ཡི་དམ་ཞལ་གཟིགས་དངོས་གྲུབ་བརྙེསཿ
यि दम शल ज़िग ङोस् डुप ञेस्
इष्ट का साक्षात्कार कर, सिद्धि प्राप्त किये।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངསཿ
त्से वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལཿ
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལཿ
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆིཿ
गुस् पेस् छग छल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।6।

གཡའ་རིའི་ནགས་ལ་སྒྲུབ་པ་མཛད༔
या री नग ल डुप प ज़े
स्लेट-गिरि-वन में साधना किये

རྡོ་རྗེའི་ཕྱག་རྒྱས་བླངས་ཞིང་བསྒྲིལ༔
दोर जेई छग ग्येस् लङ शिङ डिल
वज्रमुद्रा द्वारा लेकर, गोल किया

མེ་འབར་འཁྱུགས་ཞིང་མཚོ་ཡང་སྐེམས༔
मे बर ठुग शिङ छो यङ केम
अग्नि प्रज्वलित कर सागर सुखाया

ཡཀྵ་ནག་པོ་རྡུལ་དུ་བརླག༔
यक्ष नग पो दुल दु लग
कृष्ण-यक्ष को धूल चटाया

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप ज़ोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་བཙུགས་པའི་ཚེ༔
ग्यल वई तेन प ज़ुग पई छे
जिन-शासन के प्रारम्भ करने पर

བསྙེན་ཕུར་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་འཕང༔
ञेन फुर नम खई यिङ सु फङ
मन्त्र-कील को आकाश-धातु में फेंका

བསྒྲིལ་ཞིང་ཙནྡན་ནགས་སུ་འཕང༔
डिल शिङ ज़न्देन नग सु फङ
गोलकर चन्दन-वन में फेंका

སྐྱིབ་ཀྱི་མུ་སྟེགས་ས་གང་བསྲེགས༔
सिप क्यि मु तेग स गङ सेग
क्षण-भर में सर्व तैर्थिक-भूमि जलाया

འགྲན་གྱི་ཟླ་མེད་བདུད་ཀྱི་གཤེད༔
डेन ग्यि दो मेद् दुद् क्यि शेद्
प्रतिस्पर्द्धा रहित, मार-वधक।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
ज़े वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।7।

ཁྱེའུ་ཆུང་སྤྲུལ་སྐུའི་ཆ་ལུགས་ཅན༔
ख्येहु छुङ टुल कुइ छ लुग चेन
लघु-बालक, निर्माणकाय वेश वाले

ཚེམས་འགྲིགས་དབུ་སྐྲ་སེར་ལ་མཛེས༔
छेम डिग उ ट सेर ल ज़ेस्
अविरल दन्त, पीत-केश और सुन्दर

རིན་ཆེན་རྒྱན་ཆ་སྣ་ཚོགས་གསོལ༔
रिन छेन ग्येन छ न छोग सोल
नाना रत्न-अलंकार धारण किये

བདུད་དང་སྲིན་པོའི་ཁ་གནོན་མཛད༔
दुद् दङ सिन पोइ ख नोन ज़े
मार और राक्षसों को वशीभूत करते

མོས་པའི་བུ་ལ་སྲུང་སྐྱོབས་མཛད༔
मोस् पई बु ल सुङ क्योप ज़े
भक्त पुत्र की रक्षा करें

ཡི་དམ་ལྷ་དང་གཉིས་སུ་མེད༔
यि दम ल्ह दङ ञीस् सु मेद्
हैं अभिन्न इष्टदेव से

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप ज़ोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

སྲིན་པོའི་ཁ་གནོན་མཛད་པའི་ཚེ༔
सिन पोइ ख नोन ज़े पई छे
राक्षसों को वशीभूत करते समय

ཡ་མཚན་གཟུགས་བཟང་ཁ་དོག་ལེགས༔
य छेन ज़ुग ज़ङ ख दोग लेग
अद्भुत सु-काय, अच्छा वर्ण

དགུང་ལོ་བཅུ་དྲུག་ལོན་པའི་ཚུལ༔
गुङ लो चु डुग लोन पई छुल
अवस्था है सोलह वर्ष का

ཕྱག་གཡས་འཁར་བའི་ཕུར་པ་བསྣམས༔
छग येस् खर बई फुर प नम
दक्षिण-हस्त में कांस्य-कील धारण किये

གཡོན་པས་སེང་ལྡེང་ཕུར་པ་བསྣམས༔
योन पेस् सेङ देङ फुर प नम
वाम द्वारा खदिर-कील धारण किये

མགུལ་ན་ལྕགས་ཀྱི་ཕུར་པ་བསྣམས༔
गुल न चग क्यि फुर प नम
ग्रीवा पर लोहकील धारण किये

གཉིས་མེད་སྤྲུལ་སྐུ་འཛམ་གླིང་རྒྱན༔
ञीस् मेद् टुल कु ज़म लिङ ग्येन
अद्वय निर्माणकाय, जम्बुद्वीप अलंकार।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त्से वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

गསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।8।

མེ་དཔུང་འོད་ཀྱི་ས་གཞི་ལ༔
मे पुङ शोद् क्यि स शि ल
अंगार के नीचे की भूमि में

པདྨའི་སྟེང་དུ་བསིལ་བསིལ་འདྲ༔
पेमाई तेङ दु सिल सिल ड
पद्मोपरि अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में

མཚན་ཡང་པདྨ་འབྱུང་གནས་ཞེས༔
छ़ेन यङ पेमा छुङ नेस् शेस्
नाम भी ‘पद्माकर’- ऐसा

དེ་འདྲའི་སྤྲུལ་སྐུ་ཡ་མཚན་ཅན༔
दे डई टुल कु य छ़ेन चेन
अद्भुत ऐसे निर्माणकाय

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त़्से वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

འདྲེ་ཡི་ཡུལ་དུ་དགོངས་པའི་ཚེ༔
डे यि युल दु गोङ पई छ़े
पिशाच-क्षेत्र में ध्यान-काल पर

མདའ་རྒྱང་གང་གི་མཚོ་ནང་དུ༔
दा ग्यङ गङ गि छ़ो नङ दु
शर-बराबर दूरी के समुद्र भीतर

པདྨའི་ནང་ན་དགོངས་པ་མཛད༔
पेमाई नङ न गोङ प ज़े
पद्म के भीतर ध्यान लगाये

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དངོས་སུ་བྱོན༔
ज़ोग पई सङ ग्येस् ङोस् सु छोन
सम्बुद्ध का प्रत्यक्ष आगमन

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप त़्सोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

བོད་ཀྱི་ཉི་མ་མཛད་པའི་ཚེ༔
बोद् क्यि ञि म ज़े पई छ़े
भोट (देश) का आदित्य बनने पर

གང་ལ་གང་འདུལ་སྐུར་བསྟན་ནས༔
गङ ल गङ दुल कुर तेन नेस्
जिनका जैसा दमन वैसा काय प्रदर्शन कर

དགྲ་ལྷའི་དགེ་བསྙེན་དམ་ལ་བཏགས༔
ड ल्हई गे ञेन दम ल तग
शत्रु देव-उपासक को समय-आबद्ध किया

ལྷ་ཡི་དགེ་བསྙེན་དྲེགས་པ་ཅན༔
ल्ह यि गे ञेन डेग प चेन
अहङ्कारी देव-उपासक

མང་ཡུལ་དེ་ཡི་བྱམས་སྤྲིན་དུ༔
मङ युल दे यि छम टिन दु
उस मङ् प्रदेश के जम्स-टिन् में

ཁྱད་པར་འཕགས་པའི་རིག་འཛིན་མཆོག༔
ख्ये पर फग पई रिग ज़िन छोग
विशिष्ट, विद्याधर श्रेष्ठ।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त्ज़े वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।9।

དད་ལྡན་འགྲོ་བ་འདྲེན་པའི་དཔལ༔
दे देन डो व डेन पई पल
भक्त सत्त्वों के नायक श्रीमान्

གཙང་ཁ་ལ་ཡི་ལ་ཐོག་ཏུ༔
त्ज़ङ ख ल यि ल थोग तु
चङ्-खा पहाड़ की चोटी पर

ཡུལ་ནི་ཚ་བའི་ཚ་ཤོད་དུ༔
युल नि छ़ बई छ़ शोद् दु
छ़-शोद् नामक ऊष्म प्रदेश में

ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་དམ་ལ་བཏགས༔
ञि शु त्ज़ चिग दम ल तग
इक्कीस को समयाबद्ध किया

དགེ་སློང་བཞི་ལ་དངོས་གྲུབ་གནང༔
गे लोङ शि ल ङोस् डुप नङ
चार भिक्षुओं को सिद्धि प्रदान किया

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप त्ज़ोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

དཔལ་མོ་ཐང་གི་དཔལ་ཐང་དུ༔
पल मो थङ गि पल थङ दु
पल्-मो-थङ् के पल्-थङ् में

བོད་ཡུལ་ཁ་ལའི་ལ་ཐོག་ཏུ༔
बोद् युल ख लई ल थोग तु
भोट-देश ख-ला के पर्वत पर

འདམ་ཤོད་ལྷ་བུའི་སྙིང་དྲུང་དུ༔
दम शोद् ल्ह बुइ ञिङ डुङ दु
दम्-शोद् ल्हा-बु के समीप

ཧས་པོ་རི་ཡི་ཡང་གོང་དུ༔
हेस् पो रि यि यङ गोङ दु
हस्-पो पर्वत के ऊपर

ཆེ་བའི་ལྷ་འདྲེ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས༔
छे बई ल्ह डे थम चे क्यीस्
सभी बड़े देव और राक्षसों ने

ལ་ལས་བསྟན་པ་བསྲུང་བར་བྱས༔
ल लेस तेन प सुङ बर छेस्
किन्हीं ने शासन की रक्षा की

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।10।

བརྟན་མ་བཅུ་གཉིས་དམ་ལ་བཏགས༔
तेन म चु ञीस् दम ल तग
बारह तन्-माओं को समयाबद्ध किया

གངས་དཀར་ཤ་མེད་དམ་ལ་བཏགས༔
गङ कर श मेद् दम ल तग
गङ्ग-कर् श-मेद् को समयाबद्ध किया

ཐང་ལྷ་ཡར་བཞུད་དམ་ལ་བཏགས༔
थङ ल्ह यर शुद् दम ल तग
थङ्-ल्हा यर्-शुद् को किया समयाबद्ध

ལྷ་སྲིན་ཐམས་ཅད་དམ་ལ་བཏགས༔
ल्ह सिन थम चे दम ल तग
समस्त देव-राक्षसों को किया समयाबद्ध

ལ་ལས་སྲོག་གི་སྙིང་པོ་ཕུལ༔
ल लेस सोग गि ञिङ पो फुल
किन्हीं ने प्राण-सार अर्पित किया

ལ་ལས་བྲན་དུ་ཁས་བླངས་བྱས༔
ल लेस डेन दु खेस् लङ छेस्
किसी ने सेवक रूप में बैठने की प्रतिज्ञा की

མཐུ་དང་རྫུ་འཕྲུལ་སྟོབས་པོ་ཆེ༔
थु दङ ज़ु ठुल तोप पो छे
शक्तिमान्, प्रातिहार्य सम्पन्न, महा-बलवान्।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
त़्से वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

དམ་པ་ཆོས་ཀྱི་བསྟན་པ་ནི༔
दम प छोस् क्यि तेन प नि
सद्धर्म के शासन को

བསམ་ཡས་མ་བཞེངས་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ༔
सम येस् म शेङ ल्हुन ग्यीस् डुप
सम्-यस् बनाया नहीं, सहज-सिद्ध

སྐྱེས་མཆོག་གསུམ་གྱི་མཚན་ཡང་གསོལ༔
क्येस् छोग सुम ग्यि छ़ेन यङ सोल
त्रि-उत्तम-पुरुष का नाम दिया गया

གཅིག་ནི་པདྨ་སམྦྷ་ཝ༔
चिग नि पेमा सम्भ्ह व
एक तो है- ‘पद्मसम्भव’

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप त़्सोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུཾ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུཾ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।11।

རྒྱལ་མཚན་ལྟ་བུར་བཙུགས་པའི་ཚེ༔
ग्यल छ़ेन त बुर त़्सुग पई छ़े
ध्वज समान स्थापित करते समय

རྒྱལ་པོའི་དགོངས་པ་མཐར་ཕྱིན་མཛད༔
ग्यल पोइ गोङ प थर छिन ज़े
राज-अभिप्राय को पूर्ण किया

གཅིག་ནི་པདྨ་འབྱུང་གནས་ཞེས༔
चिग नि पेमा छुङ नेस् शेस्
एक तो है- ‘पद्माकर’

གཅིག་ནི་མཚོ་སྐྱེས་རྡོ་རྗེ་ཞེས༔
चिग नि छ़ो क्येस् दोर जे शेस्
एक तो है- ‘सरोरुहवज्र’

གསང་མཚན་རྡོ་རྗེ་དྲག་པོ་རྩལ༔
सङ छ़ेन दोर जे डग पो ज़्रल
गुह्यनाम- 'वज्रोग्राक्रम'

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
ज़्रे वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

བསམ་ཡས་མཆིམས་ཕུར་སྒྲུབ་པ་མཛད༔
सम येस् छिम फुर डुप प ज़े
सम्-यस् छिम्स-फु में साधना किया

རྗེ་བློན་ཐར་པའི་ལམ་ལ་བཀོད༔
जे लोन थर पई लम ल कोद्
राज-मन्त्रियों को मोक्ष-मार्ग में स्थापित किया

ཆོས་སྐུ་དྲི་མེད་རིན་ཆེན་བསྟན༔
छोस् कु डि मेद् रिन छेन तेन
विमल धर्मकाय-रत्न का प्रदर्शन कर

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप ज़्रोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।12।

རྐྱེན་ངན་ཟློག་ཅིང་དངོས་གྲུབ་གནང་༔
क्येन ङेन दोग चिङ ङोस् डुप नङ
कु-प्रत्यय निवर्तन कर सिद्धि प्रदान किया

གདོན་གཟུགས་བོན་གྱི་བསྟན་པ་བསྣུབས༔
दोन ज़ुग बोन ग्यि तेन प नुप
ग्रह रूपी बोन् शासन को समाप्त किया

སྐལ་ལྡན་སངས་རྒྱས་ས་ལ་བཀོད༔
कल देन सङ ग्येस् स ल कोद्
भाग्यवानों को बुद्ध-भूमि पर आरूढ़ किया

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
ज़्रे वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् ड्रुप ज़ोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।13।

དེ་ནས་ཨོ་རྒྱན་ཡུལ་དུ་བྱོན༔
दे नेस् उर्ग्येन युल दु छोन
तत्पश्चात् उड्डियान क्षेत्र चले आये

ད་ལྟ་སྲིན་པོའི་ཁ་གནོན་མཛད༔
द त सिन पोइ ख नोन ज़े
अभी राक्षसों को वशीभूत कर रहे हैं

མི་ལས་ལྷག་གྱུར་ཡ་མཚན་ཆེ༔
मि लेस ल्हग ग्युर य छ़ेन छे
नर से ऊपर हैं, महान् अद्भुत

སྤྱོད་པ་རྨད་བྱུང་ངོ་མཚར་ཆེ༔
चोद् प मे छुङ ङो छ़र छे
अद्भुत-चर्या, महान् आश्चर्य

མཐུ་དང་རྫུ་འཕྲུལ་སྟོབས་པོ་ཆེ༔
थु दङ ज़ु ठुल तोप पो छे
शक्तिमान्, प्रातिहार्य सम्पन्न, महाबलवान्।

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
ज़े वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् ड्रुप ज़ोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।14।

སྒྲིབ་པ་ཀུན་སྤངས་ཁམས་གསུམ་ས་ལེར་མཁྱེན༔
डिप प कुन पङ खम सुम स लेर ख्येन
सर्व-आवरण त्यागी, त्रि-धातु स्पष्ट ज्ञाता

བྱང་ཆུབ་སྒྲུབ་པའི་བར་ཆད་ངེས་པར་སེལ༔
छङ छुप डुप पई बर छे ङेस् पर सेल
नियततया बोधि-साधन-बाधा हटाते।

བརྩེ་བས་བདག་སོགས་ལམ་སྣ་དྲོངས༔
ज़े वे दग सोग लम न डोङ
दयापूर्वक मुझे मार्गदर्शन करें

ནུས་པས་བདག་སོགས་བར་ཆད་སོལ༔
नुस् पेस् दग सोग बर छे सोल
शक्तिपूर्वक मेरा बाधा निवारण करें

ནང་གི་བར་ཆད་ནང་དུ་སོལ༔
नङ गि बर छे नङ दु सोल
अभ्यन्तर-बाधा को अन्दर निवारण करें

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छ़ल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་སྐྱབས་སུ་མཆི༔
गुस् पेस् छग छल क्यप सु छि
भक्तिपूर्वक नमन कर शरण जाता हूँ।

སྐུ་གསུང་ཐུགས་ལྡན་འགྲོ་བ་འདྲེན་པའི་དཔལ༔
कु सुङ थुग देन डो व डेन पई पल
काय-वाक्-चित्त युक्त, सत्त्व नायक श्रीमान्

དངོས་གྲུབ་མཆོག་བརྙེས་བདེ་ཆེན་མཆོག་གི་སྐུ༔
ङोस् डुप छोग ञेस् दे छेन छोग गि कु
परमसिद्धि प्राप्त, महासुख परम-काय

ཐུགས་རྗེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
थुग जेस् दग ल छिन ग्यीस् लोप
करुणापूर्वक मुझे अधिष्ठित करें

དགོངས་པས་བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་སྩོལ༔
गोङ पेस् दग ल ङोस् डुप ज़ोल
ध्यानपूर्वक मुझे सिद्धि प्रदान करें

ཕྱི་ཡི་བར་ཆད་ཕྱི་རུ་སོལ༔
छि यि बर छे छि रु सोल
बाह्य-बाधा को बाहर निवारण करें

གསང་བའི་བར་ཆད་དབྱིངས་སུ་སོལ༔
सङ बई बर छे यिङ सु सोल
गुह्य-बाधा को धातु में निवारण करें

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་སིདྡྷི་ཧཱུྃ༔
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ
ओं आः हूँ वज्र गुरु पद्म सिद्धि हूँ।15।

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་གུ་རུ་པདྨ་ཐོད་ཕྲེང་རྩལ་བཛྲ་ས་མ་ཡ་ཛཿ སིདྡྷི་ཕ་ལ་ཧཱུྃ་ཨཱཿ
ओं आः हूँ वज्र गुरुपद्म थोद् ठेङ ज़ल वज्र समयजः सिद्धि फल हूँ आः
ओं आः हूँ वज्र गुरुपद्म थोद् ठेङ ज़ल वज्र समयजः सिद्धि फल हूँ आः

སྤྲུལ་པའི་གཏེར་སྟོན་ཆེན་པོ་མཆོག་གྱུར་བདེ་ཆེན་གླིང་པས་ཟླ་ཉེན་ཁ་ལ་རོང་སྒོའི་དཔལ་ཆེན་པོའི་ཞབས་འོག་ལས་སྤྱན་དྲངས་པའི་བླ་མའི་ཐུགས་སྒྲུབ་བར་ཆད་ཀུན་སེལ་གྱི་ཞལ་གདམས་སྙིང་བྱང་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ལས། ཕྱི་གསོལ་འདེབས་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་ལས་ཁོལ་དུ་བྱུང་བའོ། །

निर्मित परम महान् निधि आकर्षक 'दे-छेन् लिङ्-पा' द्वारा द-ञिन् ख-ला रोङ्-गो के महान्-श्री के नीचे से आमन्त्रित- 'गुरु चित्त-साधन, सर्व बाधा निवारक उपदेश-सार-पत्र चिन्तामणि' के 'बाह्य अध्येषणा-साधन' से उद्धृत किया गया।

གསོལ་འདེབས་བསམ་པ་ལྷུན་གྲུབ།

# अध्येषणा : आशय-सहजसिद्धक

ཨེ་མ་ཧོ༔ ནུབ་ཕྱོགས་བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་ཁམས་སུ༔
ए म हो   नुप छोग दे व चेन ग्यि शिङ खम सु
हे माँ। पश्चिम दिशा के सुखावती क्षेत्र में

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཐུགས་རྗེའི་བྱིན་རླབས་གཡོས༔
नङ व था येस् थुग जे छिन लप योस्
अमिताभ-करुणाधिष्ठान से आप्लावित

སྤྲུལ་སྐུ་པདྨ་འབྱུང་གནས་བྱིན་བརླབས་ཏེ༔
टुल कु पेमा छुङ नेस् छिन लप ते
निर्माणकाय पद्माकर अधिष्ठित हुए

འཛམ་བུའི་གླིང་དུ་འགྲོ་བའི་དོན་ལ་བྱོན༔
ज़म बुइ लिङ दु डो बई दोन ल छोन
जम्बुद्वीप में सत्त्वार्थ पधारे

འགྲོ་དོན་རྒྱུན་ཆད་མེད་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཅན༔
डो दोन ग्युन छे मेद् पई थुग जे चेन
सत्त्वार्थ निरन्तर, करुणावान्

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।1।

རྒྱལ་པོ་ཁྲི་སྲོང་ལྡེའུ་བཙན་མན་ཆད་ནས༔
ग्यल पो ठि सोङ देहु ब़्चेन मेन छे नेस्
राजा ठि-स्रोङ देहु-ब़्चन के बाद से

ཆོས་རྒྱལ་གདུང་བརྒྱུད་མཐའ་ལ་མ་སྟོང་བར༔
छोस् ग्यल दुङ ग्युद् था ल म तोङ बर
धर्मराज-वंशपरम्परागत के शून्य न होने तक

དུས་གསུམ་རྒྱུན་ཆད་མེད་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
दुस् सुम ग्युन छे मेद् पर छिन ग्यीस् लोप
त्रि-काल निरन्तर अधिष्ठित करें

བོད་ཀྱི་ཆོས་སྐྱོང་རྒྱལ་པོའི་གཉེན་གཅིག་པུ༔
बोद् क्यि छोस् क्योङ ग्यल पोइ ञेन चिग पु
भोट धर्मपालक राजाओं के एकमात्र बन्धु

རྒྱལ་པོ་ཆོས་སྤྱོད་སྐྱོང་བའི་ཐུགས་རྗེ་ཅན༔
ग्यल पो छोस् चोद् क्योङ बई थुग जे चेन
धर्मचर्या-पालक राजा के प्रति करुणावान्

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।2।

སྐུ་ནི་ལྷོ་ནུབ་སྲིན་པོའི་ཁ་གནོན་མཛད༔
कु नि ल्हो नुप सिन पोइ ख नोन ज़े
काय, दक्षिण-पश्चिम में राक्षसों को अधीन करते

མ་རིག་ལོག་པའི་སེམས་ཅན་འདྲེན་པའི་དཔལ༔
म रिग लोग पई सेम चेन डेन पई पल
अज्ञानी विपरीत सत्त्वों के नायक-श्री

བརྩེ་གདུང་རྒྱུན་ཆད་མེད་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཅན༔
त्ज़े दुङ ग्युन छे मेद् पई थुग जे चेन
निरन्तर दया भाव वाले, करुणावान्

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।3।

ནངས་རེ་དགོང་རེ་བོད་ཀྱི་དོན་ལ་བྱོན༔
नङ रे गोङ रे बोद् क्यि दोन ल छोन
सुबह-शाम सदा भोट-कल्याणार्थ आते

ཡར་ངོ་ཚེས་བཅུའི་དུས་སུ་དངོས་སུ་བྱོན༔
यर ङो छ़ेस् चुइ दुस् सु ङोस् सु छोन
शुक्ल-पक्ष दशमी के समय प्रत्यक्ष पधारते

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ལྔ་བརྒྱའི་ཐ་མ་རྩོད་དུས་སྙིགས་མ་ལ༔
ङ ग्यई थ म त्ज़ोद् दुस् ञिग म ल
अन्तिम पञ्चशत, कलियुग कषाय में

ཉོན་མོངས་འཁྱོལ་ཉོག་དུག་ལྔ་རང་རྒྱུད་སྤྱོད༔ དེ་འདྲའི་
ञोन मोङ छोल ञोग दुग ङ रङ ग्युद् चोद्: दे
क्लेश-भ्रम-कलुषित, स्व-सन्तति पंच-विष में लगा

ཐུགས་རྗེས་བོད་ཀྱི་སེམས་ཅན་ཡོངས་ལ་གཟིགས༔
थुग जेस् बोद् क्यि सेम चेन योङ ल ज़िग
करुणा से समस्त भोट-सत्त्वों को देखते

ཉོན་མོངས་གདུལ་དཀའི་སེམས་ཅན་ཐབས་ཀྱིས་འདུལ༔
ञोन मोङ दुल कई सेम चेन थप क्यीस् दुल
क्लेश युक्त दुर्दम्य सत्त्वों को उपाय से दमन करते

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

དུས་ངན་སྙིགས་མའི་མཐའ་ལ་ཐུག་པའི་ཚེ༔
दुस् ङेन ञिग मई था ल थुग पई छ़े
दुर्दिन कषायान्त के स्पर्श काल में

ཉི་ཟེར་འཆར་སྡུད་མདངས་ལ་བཅིབས་ཏེ་བྱོན༔
ञि ज़ेर छर दुद् दङ ल चिप ते छोन
सूर्य-रश्मि उदयास्त के प्रभा पर चढ़ कर आते

འགྲོ་དོན་སྟོབས་ཆེན་མཛད་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཅན༔
डो दोन तोप छेन ज़े पई थुग जे चेन
महान् सत्त्वार्थकारी, करुणावान्।

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।4।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཉོན་མོངས་དུག་ལྔ་རགས༔
सेम चेन थम चे ञोन मोङ दुग ङ रग
सभी सत्त्व सथूल पंच क्लेश-विष वाले

དུས་ན་ཁྱེད་འདྲའི་ཐུགས་རྗེས་སྐྱོབས༔
डई दुस् न ख्येद् डई थुग जेस् क्योप
ऐसे समय आप जैसे के करुणा से शरण मिले

དད་ལྡན་མཐོ་རིས་འདྲེན་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཅན༔
दे देन थो रीस् डेन पई थुग जे चेन
भक्तों को स्वर्ग में ले जाने वाले करुणावान्।

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।5।

ཆོས་འཁོར་གཉན་པོ་འཇིག་ལ་ཐུག་པའི་ཚེ༔
छोस् खोर ञेन पो जिग ल थुग पई छे़
चण्ड़-धर्मचक्र के नष्ट होने के समीप पहुँचने पर

ཨོ་རྒྱན་ལྷ་སྲིན་སྡེ་བརྒྱད་འཁོར་གྱིས་བསྐོར༔
उग्येन ल्ह सिन दे ग्ये खोर ग्यीस् कोर
ओडीयानी देव-राक्षस अष्ट-वर्ग परिवार से परिवृत्त होंगे

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

སེམས་ཅན་སྒྱུ་ལུས་འཇིག་པའི་ནད་བྱུང་ཚེ༔
सेम चेन ग्यु लुस् जिग पई ने छुङ छे़
सत्त्व में मायाकाय नष्ट होने वाला रोग होने पर

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छो़म मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

ཚེ་ཟད་མ་ཡིན་བར་ཆད་ངེས་པར་སེལ༔
छ़े ज़े म यिन बर छे ङेस् पर सेल
आयु क्षय नहीं होता, नियत बाधा निवारण करते।

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।7।

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ཧོར་སོག་འཇིགས་པའི་དམག་གིས་མཐའ་བསྐོར་ནས༔
होर सोग जिग पई मग गीस् था कोर नेस्
तुर्क-मंगोल के भयानक सेना से परिवृत्त हो

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छो़म मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

ཧོར་སོག་དམག་དཔུང་བཟློག་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
होर सोग मग पुङ दोग पर थे छो़म मेद्
तुर्क-मंगोल सेनायें नियत रूप से लौट जायेंगी।

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।6।

མི་བཟོད་སྡུག་བསྔལ་ནད་ཀྱིས་ཉེན་པ་ན༔
मि ज़ोद् दुग ङल ने क्यीस् ञेन प न
सहन-अक्षम्य दुःख-रोग से ग्रसित होते समय

ཨོ་རྒྱན་སྨན་གྱི་བླ་དང་དབྱེར་མེད་པས༔
उग्येन मेन ग्यि ल दङ येर मेद् पेस्
ओडियानी, भैषज्य गुरु से अभिन्न होने से

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

འབྱུང་བ་དགྲར་ལངས་ས་བཅུད་ཉམས་པའི་ཚེ༔
छुङ व डर लङ स चुद् ञम पई छे़
भूत के शत्रु होने, पृथ्वी-रसायन के क्षति होने पर

སེམས་ཅན་མུ་གེའི་ནད་ཀྱིས་ཉེན་པ་ན༔
सेम चेन मु गे ने क्यीस् ञेन प न
सत्त्व, अकाल, रोग से ग्रसित होने के समय

ཨོ་རྒྱན་མཁའ་འགྲོ་ནོར་ལྷའི་ཚོགས་དང་བཅས༔
उर्ग्येन खा डो नोर ल्हई छ़ोग दङ चेस्
ओडियानी, डाकिनी वसुदेव-गण सहित

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ལས་ཅན་འགྲོ་བའི་དོན་དུ་གཏེར་འདོན་ན༔
लेस चेन डो बई दोन दु तेर दोन न
कर्म युक्त प्राणी हेतु निधि निःसृत होने पर

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

ཕ་ནོར་བུ་ཡིས་ལོན་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
फ नोर बु यीस् लोन पर थे छ़ोम मेद्
निःसंशय पितृ-धन पुत्र को प्राप्त होगा

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।9।

ཁ་ཆར་བུ་ཡུག་འཚུབས་ཞིང་ལམ་འགག་ན༔
ख छर बु युग छुप शिङ लम गग न
हिम झंझावात् से मार्ग बाधित होने पर

ཨོ་རྒྱན་གཞི་བདག་གཙན་པོའི་འཁོར་གྱིས་བསྐོར༔
उर्ग्येन शि दग ञेन पोइ खोर ग्यीस् कोर
ओडियानी, चण्ड क्षेत्राधिपति परिवार से परिवृत्त हो

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकिस्ता रहित अध्येषणा करें

དབུལ་ཕོངས་བཀྲེས་སྐོམ་སེལ་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
उल फोङ टेस् कोम सेल बर थे छ़ोम मेद्
निःसंशय, निर्धनता भूख-प्यास मिटाते

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।8।

དམ་ཚིག་ཟོལ་ཟོག་མེད་པའི་དཔའ་གདིང་གིས༔
दम छ़िग ज़ोल ज़ोग मेद् पई पा दिङ गीस्
निश्कलंक समय सहित वीरता के द्वारा

ཨོ་རྒྱན་ཡི་དམ་ལྷ་དང་དབྱེར་མེད་པས༔
उर्ग्येन यि दम ल्ह दङ येर मेद् पेस्
ओडियानी, इष्ट-देव से अभिन्न होने से

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

སྦས་ཡུལ་ནགས་ཁྲོད་དབེན་ས་སྙོགས་པའི་ཚེ༔
बेस् युल नग ठोद् वेन स ञोग पई छ़े
गुह्य-प्रदेश के वन में एकान्तिक बनने पर

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

ཆོས་མཛད་ལམ་སྣ་འདྲེན་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
छोस् ज़े लम न डेन पर थे छ़ोम मेद्
निःसंशय धर्म-कारी का मार्ग-दर्शन करेंगे

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

སྟག་གཟིག་དོམ་དྲེད་དུག་སྦྲུལ་མཆེ་བ་ཅན༔
तग ज़िग दोम डेद् दुग डुल छे व चेन
व्याघ्र, चीता, भालू, ऋक्ष, विषधर-दंष्ट्र वाले

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

གདུག་པའི་སེམས་ཅན་སྐྲོད་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
दुग पई सेम चेन टोद् पर थे छ़ोम मेद्
निःसंशय दुष्ट सत्त्वों को भगायेंगे

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।11।

སྒྱུ་ལུས་ཉེན་ཅིང་འཇིག་པའི་དུས་བྱུང་ཚེ༔
ग्यु लुस् ञेन चिङ जिग पई दुस् छुङ छे
मायाकाय पीड़ित हो, नष्ट होने के समय आने पर

ཨོ་རྒྱན་འབྱུང་བ་བཞི་ཡི་ལྷ་མོར་བཅས༔
उग्येन छुङ व शि यि ल्ह मोर चेस्
ओडियानी, चतुर्भूत देवी सहित

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ལམ་སྲང་འཇིགས་པའི་འཕྲང་ལ་འགྲིམས་པའི་ཚེ༔
लम सङ जिग पई ठङ ल डिम पई छे
भयानक कठिन मार्ग-प्रपात से गुजरते समय

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।10।

འབྲོག་ཆེན་འཇིགས་པའི་འཕྲང་ལ་འགྲིམས་པའི་ཚེ༔
डोग छेन जिग पई ठङ ल डिम पई छे
भयानक महाकान्तार-भूमि पर भ्रमण करते समय

ཨོ་རྒྱན་དཔའ་བོ་གིང་དང་སྲུང་མར་བཅས༔
उग्येन पा बो गिङ दङ सुङ मर चेस्
ओडियानी, वीर-कंकाल और रक्षिका सहित

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ས་ཆུ་མེ་རླུང་འབྱུང་བའི་བར་ཆད་ཀྱིས༔
स छु मे लुङ छुङ बई बर छे क्यीस्
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु-भूत के बाधा से

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

འབྱུང་བ་རང་སར་ཞི་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
छुङ व रङ सर शि वर थे छ़ोम मेद्
निःसंशय, भूत स्व-स्थल पर शान्त होंगे

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।12।

བསད་ཁྱེར་ཇག་པ་ཆོམ་པོས་ཉེན་པ་ན༔
से ख्येर जग प छोम पोस् ञेन प न
घातक डाकू-चोर से तंग होने पर

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

ཙཽ་ར་མི་རྒོད་ཧྲམ་སེམས་བཀླག་པར་བྱེད༔
ज़्चौ र मि गोद् ङ्म सेम लग पर छेद्
चोर, जंगली-नर के दुर्भाव को धूल चटाते

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।13।

མཚོན་ཆ་རྣོན་པོས་འདེབས་ཞིང་ཉེན་པ་ན༔
छ़ोन छ नोन पोस् देप शिङ ञेन प न
तीक्ष्ण शस्त्रों के प्रहार का खतरा हो

ཨོ་རྒྱན་རྡོ་རྗེའི་གུར་དང་ལྡན་པ་ཡིས༔
उर्ग्येन दोर जेई गुर दङ देन प यीस्
ओडियानी, वज्रगृह से युक्त हो

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ནམ་ཞིག་ཚེ་ཟད་འཆི་བའི་དུས་བྱུང་ཚེ༔
नम शिग छ़े ज़े छि बई दुस् छुङ छ़े
जब आयु-क्षय होते मृत्यु-काल पहुँचे

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་དུ་ངེས་པར་སྐྱེ༔
दे व चेन ग्यि शिङ दु ङेस् पर क्ये
अतः सुखावती क्षेत्र में नियत पैदा होंगे

ཨོ་རྒྱན་ཕྱག་རྒྱ་བཞི་ཡི་དགོངས་པར་ལྡན༔
उर्ग्येन छग ग्य शि यि गोङ पर देन
ओडियानी, चतुर्मुद्रा के अभिप्राय वाले

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

གང་ཞིག་གཤེད་མའི་དམག་གིས་མཐའ་བསྐོར་ནས༔
गङ शिग शेद् मई मग गीस् था कोर नेस्
जब वधक-सेना से परिवृत्त होकर

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

གཤེད་མ་བྲེད་ཅིང་མཚོན་ཆ་འཐོར་བར་འགྱུར༔
शेद् म डेद् चिङ छ़ोन छ थोर बर ग्युर
वधक कातर हो, शास्त्र छोड़ देते

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।14।

གནད་གཅོད་སྡུག་བསྔལ་དྲག་པོས་ཉེན་པ་ན༔
ने चोद् दुग ङल डग पोस् ञेन प न
मर्म-छेदक घोर दुःख से सन्तप्त होने पर

ཨོ་རྒྱན་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སྤྲུལ་པ་སྟེ༔
उर्ग्येन नङ व था येस् टुल प ते
ओडियानी, अमिताभ निर्माणकाय

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।15।

འཁྲུལ་སྣང་ཉིང་འཁྲུལ་སྡུག་བསྔལ་ཉེན་པ་ན༔
ठुल नङ ञिङ ठुल दुग ङल ञेन प न
भ्रान्त्याभास मतिभ्रम-दुःख से सन्तप्त होने पर

ཨོ་རྒྱན་དུས་གསུམ་མཁྱེན་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཡིས༔
उर्ग्येन दुस् सुम ख्येन पई थुग जे यीस्
ओडियानी, त्रिकालज्ञ के करुणा से

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

གཞན་ཡང་ལས་དང་རྐྱེན་གྱི་དབང་གྱུར་ཏེ༔
शेन यङ लेस दङ क्येन ग्यि वङ ग्युर ते
अपि च, कर्म और प्रत्यय के वशीभूत होकर

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

སྡུག་བསྔལ་འཁྲུལ་པ་རྩད་ནས་གཞིག་པར་བྱེད༔
दुग ङल ठुल प त्से नेस् शिग पर छेद्
दुःख-भ्रान्ति मूलतः नष्ट करेंगे।

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।17।

ཁྱད་པར་བོད་ཀྱི་རྗེ་འབངས་སྡུག་བསྔལ་ན༔
ख्ये पर बोद् क्यि जे बङ दुग ङल न
विशेषतया, भोट-राजा और प्रजा दुःखी हों तो

སྒྱུ་ལུས་གཡར་པོ་ཞིག་པའི་བར་དོ་རུ༔
ग्यु लुस् यर पो शिग पई बर दो रु
उधार मायाकाय-नष्ट पर, अन्तराभव में

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद् ञीस् थे छोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

འཁྲུལ་སྣང་རང་སར་གྲོལ་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད༔
ठुल नङ रङ सर डोल वर थे छोम मेद्
निःसंशय, भ्रान्त्याभास स्व-स्थल पर मुक्त होगा

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।16।

འཁྲུལ་སྣང་དངོས་པོར་ཞེན་ཅིང་སྡུག་བསྔལ་ན༔
ठुल नङ ङोस् पोर शेन चिङ दुग ङल न
भ्रान्त्याभास भावाभिनिविष्ट हो दुःखी होने पर

ཨོ་རྒྱན་བདེ་ཆེན་རྒྱལ་པོའི་ངོ་བོ་སྟེ༔
उर्ग्येन दे छेन ग्यल पोइ ङो बो ते
ओडियानी, महासुखराज स्वरूप

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उर्ग्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

འགྲོ་དྲུག་སྡུག་བསྔལ་ཆེན་པོས་ཉེན་པ་དང་༔
डो डुग दुग ङल छेन पोस् ञेन प दङ
षड्-विध प्राणियाँ महादुःख से संतप्त होने पर

དད་གུས་མོས་པའི་གདུང་ཤུགས་དྲག་པོ་ཡིས༔
दे गुस् मोस् पई दुङ शुग डग पो यीस्
भक्ति-आदर-छन्द (युक्त) उग्र-सन्ताप द्वारा

ཡིད་གཉིས་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་གསོལ་བ་འདེབས༔
यिद्ञीस् थे छ़ोम मेद् पर सोल व देप
संशय-विचिकित्सा रहित अध्येषणा करें

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्र्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ཨོ་རྒྱན་རྗེས་འཇུག་འཁོར་བ་སྤོང་འདོད་རྣམས༔
उग्र्येन जेस् जुग खोर व पोङ दोद् नम
ओडियानी-अनुयायी, संसार त्याग-इच्छा वाले

བྱི་འུས་ཕ་མར་འབོད་འདྲའི་གདུང་དབྱངས་ཀྱིས༔
ख्ये हु़स् फ मर बोद् डई दुङ यङ क्यीस्
बाल द्वारा माता-पिता सम्बोधन तप्प-घोष से

ཨོ་རྒྱན་པདྨ་འབྱུང་གནས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
उग्र्येन पेमा छुङ नेस् ल सोल व देप
ओडियान के पद्माकर से अध्येषणा है

ཨོ་རྒྱན་ཐུགས་རྗེས་འཕོ་འགྱུར་མེད་པར་གཟིགས༔
उग्र्येन थुग जेस् फो ग्युर मेद् पर ज़िग
ओडियानी, अपरिवर्तित करुणा से देखें

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।18।

རྩེ་གཅིག་གདུང་བས་གདུང་ཤུགས་དྲག་པོ་ཡིས༔
ज़्ते चिग दुङ वे दुङ शुग डग पो यीस्
एकाग्र तप्तोग्र सन्ताप द्वारा

ཉིན་མཚན་དུས་དྲུག་ནམ་བྱུང་གསོལ་བ་ཐོབ༔
ञिन छ़ेन दुस् डुग नम छुङ सोल व थोप
यथा-लब्ध, अहोरात्र छह बार अध्येषणा करता

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, आशय सहजसिद्ध हो।19।

བྱང་གཏེར་ལས་སོ། །
उत्तर-निधि से उद्धृत।

དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་གུ་རུ་རིན་པོ་ཆེ༔
दुस् सुम सङ ग्येस् गु रु रिन पो छे
त्रिकाल-बुद्ध (हैं) गुरु-रत्न

བར་ཆད་ཀུན་སེལ་བདུད་འདུལ་དྲག་པོ་རྩལ༔
बर छे कुन सेल दुद् दुल डग पो ज़्तल
सर्व-बाधा-निवारक, मार-दमोग्रक्रम

ཕྱི་ནང་གསང་བའི་བར་ཆད་ཞི་བ་དང་༔
छि नङ सङ बई बर छे शि व दङ
बाह्य-अध्यात्म-गुह्य-बाधा शान्त हों

དངོས་གྲུབ་ཀུན་བདག་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཞབས༔
ङोस् डुप कुन दग दे व छेन पोइ शप
सर्व-सिद्धि-अधिपति, महासुख-चरण

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ༔
सोल व देप सो छिन ग्यीस् लप तु सोल
अध्येषणा करता हूँ, अधिष्ठित करें

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
आशय सहजसिद्ध का अधिष्ठान प्रदान करें।1।

རྒྱལ་ཀུན་བསྐྱེད་ཡུམ་ཆོས་དབྱིངས་ཀུན་བཟང་མོ༔
ग्यल कुन क्येद् युम छोस् यिङ कुन ज़ङ मो
सर्व-जिन-जननी, धर्मधातु समन्तभद्री

བོད་འབངས་སྐྱོབ་པའི་མ་གཅིག་དྲིན་མོ་ཆེ༔
बोद् बङ क्योप पई म चिग डिन मो छे
भोट-प्रजा (की) शरणदात्री- एकमात्र माँ, महोपकारिणी

དངོས་གྲུབ་མཆོག་སྩོལ་བདེ་ཆེན་མཁའ་འགྲོའི་གཙོ༔
ङोस् डुप छोग ज़ोल दे छेन खा डोइ ज़ो
परम सिद्धि-दात्री, महासुख डाकिनी-प्रधान

ཡེ་ཤེས་མཚོ་རྒྱལ་ཞབས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས༔
ये शेस् छो ग्यल शप ल सोल व देप
अध्येषणा है ये-शेस् छो-ग्यल् के चरणों में।2।

ཕྱི་ནང་གསང་བའི་བར་ཆད་ཞི་བ་དང་༔
छि नङ सङ बई बर छे शि व दङ
बाह्य-अध्यात्म-गुह्य-बाधा शान्त हों

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
ल मई कु छे तेन पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें- गुरु आयु दृढ हों

ནད་མུག་མཚོན་བསྐལ་ཞི་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
ने मुग छोन कल शि वर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें- रोग, अकाल, शस्त्र-कल्प शान्त हों

བྱད་ཕུར་བོད་གཏོང་ཞི་བར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
छे फुर बोद् तोङ शि वर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें- कीलाकार, शाप-प्रक्षेपण शान्त हों

ཚེ་དཔལ་ཤེས་རབ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
छे पल शेस् रप ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें- आयु, श्री, प्रज्ञा की वृद्धि हों

བསམ་པ་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས༔
सम प ल्हुन ग्यीस् डुप पर छिन ग्यीस् लोप
आशय सहज-सिद्ध का अधिष्ठान प्रदान करें।3।

པདྨ་འབྱུང་གནས་ཁྱེད་སྐུ་ཅི་འདྲ་དང་། །
पेमा छुङ नेस् ख्येद् कु चि ड दङ
पद्माकर, आपका काय जैसा है

འཁོར་དང་སྐུ་ཚེ་ཚད་དང་ཞིང་ཁམས་དང་། །
खोर दङ कु छे छे दङ शिङ खम दङ
परिवार, आयु, परिमाण, और क्षेत्र-धातु सहित।

ཁྱེད་ཀྱི་མཚན་མཆོག་བཟང་པོ་ཅི་འདྲ་བ། །
ख्येद् क्यि छेन छोग ज़ङ पो चि ड व
आपका परम शुभ नाम जैसा है

དེ་འདྲ་ཁོ་ནར་བདག་སོགས་འགྱུར་བར་ཤོག །
दे ड खो नर दग सोग ग्युर बर शोग
हम लोग भी वैसे ही हों।4।

ཁྱོད་ལ་བསྟོད་ཅིང་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་མཐུས། །
ख्योद् ल तोद् चिङ सोल व तप पई थुस्
आपकी स्तुति और अध्येषणा के बल से

བདག་སོགས་གང་དུ་གནས་པའི་ས་ཕྱོགས་སུ། །
दग सोग गङ दु नेस् पई स छोग सु
हम लोग जिस श्रेष्ठ स्थान पर निवास करते हैं।

ནད་གདོན་དབུལ་ཕོངས་འཐབ་རྩོད་ཞི་བ་དང་། །
ने दोन उल फोङ थप ज़ोद् शि व दङ
रोग, निर्धनता, झगड़ा और विवाद शान्त हों

ཆོས་དང་བཀྲ་ཤིས་འཕེལ་བར་མཛད་དུ་གསོལ། །
छोस् दङ ट शीस् फेल बर ज़े दु सोल
धर्म एवं मंगल की वृद्धि हों।5।

# कुशलमूल को बोधि में परिवर्तित करने वाले आकस्मिक परिणामना एवं प्रणिधान

# བདེན་འགྲུབ་སྨོན་ལམ།
# सत्य-पद-सिद्धि प्रणिधान

བདེན་ཚིག་འགྲུབ་པའི་པྲ་ཎི་ཧྣ་རྣམ་མཁྱེན་གྲོང་འཇུག་ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས།
सर्वकारज्ञता-नगर-प्रवेश-नाम सत्य-पद-सिद्धि प्रणिधान

དངོས་གྲུབ་རྒྱ་མཚོའི་འབྱུང་གནས་བླ་མ་དང་མཆོག་གསུམ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ཞིང་སྐྱབས་
ङोस् डुप ग्य छ़ोइ छुङ नेस् ल म दङ छोग सुम छङ छुप सेम पा नम ल छग छ़ल शिङ क्यप
**सिद्धि-समुद्राकर गुरु और त्रि-उत्तम (त्रिरत्न) बोधिसत्त्वों को प्रणाम कर (उनके) शरण जाता हूँ।**

སུ་མཆིའོ། །བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ།
सु छिहो    छिन ग्यीस् लप तु सोल
**अधिष्ठित करें।**

མི་ངའི་སྐྱེ་བ་ནས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་དལ་འབྱོར་བཅོ་བརྒྱད་ཚང་བའི་མི་ལུས་རིན་པོ་ཆེ་ཐོབ་སྟེ་རྗེ་བཙུན་བླ་མ་
मि ङई क्ये व नेस् छ़े रप थम चे दु दल छोर चो ग्ये छ़ङ बई मि लुस् रिन पो छे थोप ते जे त्सुन
**मैं नर, समस्त जन्म-जन्मान्तरों में अष्टादश क्षण-सम्पद्-सम्पन्न नर-काय-रत्न प्राप्त कर लक्षण युक्त भट्टारक**

མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པའི་གདུལ་བྱར་འགྱུར་བར་ཤོག་ཅིག །
ल म छ़ेन ञिद् दङ देन पई दुल छर ग्युर बर शोग चिग
**गुरु का विनेयजन बनूँ।1।**

མངོན་མཐོ་དང་ངེས་ལེགས་མཐའ་དག་གི་འབྱུང་ཁུངས་ཐོས་བསམ་སྒོམ་གསུམ་གྱིས་རང་རྒྱུད་བཏུལ་ཏེ་རྒྱལ་བའི་
ङोन थो दङ ङेस् लेग था दग गि छुङ खुङ थोस् सम गोम सुम ग्यीस् रङ ग्युद् तुल ते ग्यल वई
**सभी अभ्युदय-निःश्रेयस के स्रोत- श्रवण-चिन्तन और मनन द्वारा स्व-सन्तति का दमन कर जिन-शासन-रत्न**

བསྟན་པ་རིན་པོ་ཆེའི་རྗེས་སུ་སློབ་པར་ཤོག་ཅིག །
तेन प रिन पो छे जेस् सु लोप पर शोग चिग
**का अनुसरण कर शिक्षा प्राप्त करूँ।2।**

ཆོས་ལ་འཇུག་པའི་རྩ་བ་ངེས་འབྱུང་དང་བློ་ལྡོག་རྣམ་པ་བཞི་རྒྱུད་ལ་ངམ་ངམ་ཤུགས་ཀྱིས་སྐྱེས་ནས་འཁོར་བ་མཐའ་
छोस् ल जुग पई त्र व ङेस् छुङ दङ लो दोग नम प शि ग्युद् ल ङम ङम शुग क्यीस् क्येस् नेस्
धर्म-प्रवेश का मूल वैराग्य तथा चतुर्विध मति-निवृत्ति- (चित्त-)सन्तति में स्वभाविक रूप से उत्पन्न हो संसार

མེད་ཀྱི་བྱ་བ་ལ་བཙོན་དོང་དང་མེ་འོབས་ལྟ་བུར་མཐོང་བར་ཤོག་ཅིག །
खोर व था मेद् क्यि छ व ल त्सोन दोङ दङ मे ह़ोप त बुर थोङ बर शोग चिग
के अनन्त कार्यों को बन्धन-कुण्ड और अग्नि-कुण्ड की तरह देखूँ।3।

ལས་འབྲས་བསླུ་བ་མེད་པ་ལ་ཡིད་ཆེས་སྙེད་ནས་དགེ་སྡིག་གི་ལས་ཕྲ་མོ་ཙམ་ལ་ཡང་འཇུག་ལྡོག་བྱེད་པར་
लेस डेस् लु व मेद् प ल यिद् छेस् ञेद् नेस् गे दिग गि लेस ठ मो त्सम ल यङ जुग दोग छेद् पर
अवञ्चनीय कर्म-फल में विश्वस्त हो पुण्य और पाप के सूक्ष्म-कर्म में भी प्रवेश और निवर्तन

ཤོག་ཅིག །
शोग चिग
कर सकूँ।4।

གནས་གྲོགས་འདུ་འཛི་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་བསྒྲུབ་པའི་བར་ཆད་ཀྱི་དབང་དུ་མི་འགྲོ་བར་དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་
नेस् डोग दु ज़ि ल सोग प छङ छुप डुप पई बर छे क्यि वङ दु मि डो बर कोन छोग सुम ग्यि
स्थान, मित्र, संसर्ग आदि बोधि-साधन के बाधा में परिवर्तित न हो, त्रिरत्न के शरण को प्राप्त कर तीन पुरुषों के

སྐྱབས་འོག་ཏུ་ཚུད་དེ་སྐྱེས་བུ་གསུམ་གྱི་ལམ་ལ་སློབ་པར་ཤོག་ཅིག །
क्यप ह़ोग तु छुद् दे क्येस् बु सुम ग्यि लम ल लोप पर शोग चिग
मार्ग को सीखूँ।5।

བདེ་གཤེགས་ཀུན་འདུས་ཀྱི་ངོ་བོ་བཀའ་དྲིན་ཅན་གྱི་བླ་མ་དམ་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་དང་མཉམ་འགྲོགས་ཀྱིས་མི་རུ་བཟུང་
दे शेग कुन दुस् क्यि ङो बो का डिन चेन ग्यि ल म दम प ल थे छ़ोम दङ ञम डोग क्यीस् मि रु
सुगत सर्वसंग्रह स्वरूप उपकारी सद्गुरु के प्रति संशय और साथ निवास करने के कारण (उन्हे) मनुष्य-ग्रहण

བའི་ལོག་ལྟ་སྤངས་ཏེ་སངས་རྒྱས་དངོས་སུ་མཐོང་བར་ཤོག་ཅིག །
ज़ुङ बई लोग त पङ ते सङ ग्येस् ङोस् सु थोङ बर शोग चिग
रूपी मिथ्या-दर्शन का त्याग कर (उन्हें) प्रत्यक्ष बुद्ध रूप में देखूँ।6।

དེའི་མཐུ་ལས་མཚོན་བྱེད་དཔེའི་དབང་བཞིས་སྒོ་གསུམ་སྨིན་པར་བྱས་ཏེ་རྨད་བྱུང་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་གསང་ལམ་ལ་
दे थु लेस छ़ोन छेद् पे वङ शीस् गो सुम मिन पर छेस् ते मे छुङ दोर जे थेग पई सङ लम ल जुग
इसके बल से लक्षित उपमा रूपी चार-अभिषेक द्वारा त्रि-द्वार का विपाक कर अद्भुत वज्रयान के गुह्यमार्ग में

འཇུག་པར་ཤོག་ཅིག །
पर शोग चिग
प्रवेश करूँ।7।

གསོལ་འདེབས་དང་མོས་གུས་ཀྱི་མཚམས་སྦྱོར་ལམ་དུ་ལོངས་ནས་མཚོན་བྱ་དོན་གྱི་དགོངས་རྒྱུད་བདག་ལ་འཕོས་
सोल देप दङ मोस् गुस् क्यि छम छोर लम दु लोङ नेस् छोन छ दोन ग्यि गोङ ग्युद् दग ल फोस्
अध्येषणा और छन्द-आदर के सीमायोग को मार्ग में परिवर्तित कर लक्ष्यार्थ अभिप्राय-तन्त्र मुझमें संक्रमित हो

ཏེ་རྟོགས་པ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་ཤོག་ཅིག །
ते तोग प नम खा दङ ञम पर शोग चिग
आकाश-सम ज्ञानवान् बनूँ।8।

བསྐྱེད་པ་མ་ཧཱ་ཡོ་གའི་ཉམས་ལེན་མཐར་ཕྱིན་ནས་སྣོད་བཅུད་དཀྱིལ་འཁོར་གསུམ་དུ་ཤེས་ཤིང་རིག་འཛིན་རྣམ་པ་
क्येद् प म हा यो गई ञम लेन थर छिन नेस् नोद् चुद् दक्यिल खोर सुम दु शेस् शिङ रिग ज़िन
आधान महायोग के अभ्यास में पारंगत होकर भाजन तथा सत्त्व को त्रि-मण्डल जानकर चतुर्विध विद्याधरों के

བཞིའི་ས་ལ་བགྲོད་པ་རྒྱལ་སྲས་པདྨ་དང་བི་མ་ལ་ལྟ་བུར་འགྱུར་བར་ཤོག་ཅིག །
नम प शी स ल डोद् प ग्यल सेस् पेमा दङ बि म ल त बुर ग्युर बर शोग चिग
भूमि में जाने वाले जिन-पुत्र पद्मसम्भव और विमलपुत्र के समान बनूँ।9।

ལུང་ཨ་ནུ་ཡོ་གའི་ཉམས་ལེན་མཐར་ཕྱིན་ནས་འཁོར་འདས་ཀྱི་འཛིན་རྟོག་བདེ་སྟོང་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ངོ་བོར་སངས་
लुङ अ नु यो गई ञम लेन थर छिन नेस् खोर देस् क्यि ज़िन तोग दे तोङ ञीस् सु मेद् पई ङो
आगम अनुयोग के अभ्यास में पारंगत होकर संसार-निर्वाण रूपी ग्राहक-विकल्प सुख-शून्य अद्वय रूप में

རྒྱས་ཏེ་འོག་མིན་སྟུག་པོ་བཀོད་པའི་ཞིང་ཁམས་ལ་དབང་བསྒྱུར་བར་ཤོག་ཅིག །
बोर सङ ग्येस् ते ह्रोग मिन तुग पो कोद् पई शिङ खम ल वङ ग्युर बर शोग चिग
बुद्ध बन कर अकनिष्ठ क्षेत्र-धातु मे अधिकार प्राप्त करूँ।10।

རྫོགས་ཆེན་ཨ་ཏི་ཡོ་གའི་ཉམས་ལེན་མཐར་ཕྱིན་ནས་ཆོས་ཅན་གྱི་སྣང་བ་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་ཀློང་དུ་ཟད་ནས་གཞོན་ནུ་བུམ་
ज़ोग छेन अ ति यो गई ञम लेन थर छिन नेस् छोस् चेन ग्यि नङ व छोस् ञिद् क्यि लोङ दु ज़े
महासम्पन्न अतियोग के अभ्यास में पारंगत हो धर्मी का आभास धर्मता-धातु में क्षय होकर कुमार-कलश-

སྐུར་གྲོལ་བ་རིག་འཛིན་དགའ་རབ་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུར་འགྱུར་བར་ཤོག་ཅིག །
नेस् शोन नु बुम कुर डोल व रिग ज़िन गा रप दोर जे त बुर ग्युर बर शोग चिग
काय मुक्त विद्याधर गाह्-रब् दोर्जे के समान बनूँ।11।

མདོར་ན་བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ལ་བསླབས་པ་ནས་བཟུང་སྟེ་སྒོ་གསུམ་གྱིས་བྱ་བ་ཅི་བགྱིས་ཐམས་ཅད་པ་
दोर न दग गीस् छङ छुप क्यि चोद् प ल लप प नेस् ज़ुङ ते गो सुम ग्यीस् छ व चि ग्यीस् थम
संक्षेप में, मेरे द्वारा बोधिचर्या-शिक्षा प्राप्त करने से लेकर त्रि-द्वार (काय-वाक्-चित्त) द्वारा किये गये समस्त

མ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་དུ་འགྱུར་བར་ཤོག་ཅིག །
चे फ म सेम चेन थम चे क्यि दोन दु ग्युर बर शोग चिग
कार्य माता-पिता रूपी सभी सत्त्वों की अर्थ सिद्धि के लिये हों।12।

དུས་དང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་དམ་པའི་ཆོས་མ་ཡིན་པའི་འཇིག་རྟེན་མཐུན་འཇུག་གི་བསམ་པ་སྐད་ཅིག་མ་ཙམ་ཡང་
दुस् दङ नम प थम चे दु दम पई छोस् म यिन पई जिग तेन थुन जुग गि सम प के चिग म त्सम
सभी समय और समस्त परिस्थितियों में असद्धर्म रूपी लौकिक आशय क्षण-भर भी

སེམས་ལ་མི་སྐྱེ་བར་ཤོག་ཅིག །
यङ सेम ल मि क्ये बर शोग चिग
चित्त में उदित न हो।13।

གལ་ཏེ་ལས་དང་བག་ཆགས་དབང་བཙན་པར་གྱུར་ནས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་བློ་སྐྱེས་ནའང་དེ་ཉིད་མི་འགྲུབ་
गल ते लेस दङ बग छग वङ त्सेन पर ग्युर नेस् छिन चि लोग गि लो क्येस् नहृङ दे ञिद् मि डुप
यदि कर्म और वासना के उग्र-अधिकार से विपरीत बुद्धि पैदा होने पर भी उसकी

པར་ཤོག་ཅིག །
पर शोग चिग
सिद्धि न हों।14।

གཞན་དོན་དུ་འགྱུར་ན་ལུས་སྲོག་འདོར་བ་ལ་ཡང་ཞུམ་ང་མེད་པ་གཞོན་ནུ་དོན་གྲུབ་ལྟ་བུར་འགྱུར་བར་
शेन दोन दु ग्युर न लुस् सोग दोर व ल यङ श्रम ङ मेद् प शोन नु दोन डुप त बुर ग्युर बर शोग
परार्थ हो रहा हो तो शरीर और प्राण के त्याग करने में आतंक-हीन कुमार सिद्धार्थ की

ཤོག་ཅིག །
चिग
तरह बनूँ।15।

དོན་གཉིས་ལྷུན་གྲུབ་ཀྱི་ས་ལ་ཕྱིན་ནས་ཁམས་གསུམ་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་དོང་ནས་སྤྲུགས་ནུས་པ་སྟོབས་བཅུ་མི་
दोन ञीस् ल्हुन डुप क्यि स ल छिन नेस् खम सुम खोर बई ग्य छो दोङ नेस् टुग नुस् प तोप चु
द्वयर्थ अनाभोग भूमि को प्राप्त कर त्रि-धातु संसार-सागर मूल से उखाड़ने में समर्थ दश-बल, चतुर्विध वैशारद्य

འཇིགས་རྣམ་བཞིའི་རྩལ་ཅན་དུ་གྱུར་ཅིག །
मि जिग नम शी ज़ल चेन दु ग्युर चिग
**में कुशल बनूँ।16।**

འདོད་པ་དང་བྲལ་བའི་སྨོན་ལམ་དེ་ལྟ་བུ་ཡོངས་སུ་འགྲུབ་པའི་མཐུན་འགྱུར་མཛད་པར་རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་རྣམས་ཀྱིས་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་ཡིན་ནོ། །
कामना रहित प्रणिधान उक्त प्रकार परिसम्पन्न करने में सहायक बनेगा- ऐसा जिन, जिन-पुत्रों (बुद्ध-बोधिसत्त्वों) द्वारा स्वीकृत किया गया है।

དྲང་སྲོང་བདེན་པར་སྨྲ་བ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
डङ सोङ देन पर म व नम ल छग छ़ल लो
**सत्यवादी ऋषियों को प्रणाम।**

དགེ་བ་སྟོབས་ཆེ་བར་གྱུར་ཅིག །
गे व तोप छे बर ग्युर चिग
**कुशल, महाबलशाली बनें।**

སྡིག་པ་འདག་སྐྱེན་པར་གྱུར་ཅིག །
दिग प दग क्येन पर ग्युर चिग
**पाप का शीघ्र शोधन हो।**

ཧཿཨཿཧཿཤཿསཿམཿ མ་མ་ཀོ་ལིང་ས་མནྟ།
ह़:अ:ह:श:स:म: मम कोलिङ समन्त
**ह़ः अः हः शः सः मः। मम कोलिङ समन्त।**

ཨོཾ་དྷ་རེ་དྷ་རེ་བྷནྡྷ་རེ་བྷནྡྷ་རེ་སྭཱ་ཧཱ།
ओं धरे धरे भन्धरे भन्धरे स्वाहा
**ओं धरे धरे भन्धरे भन्धरे स्वाहा।।**

སྨོན་ལམ་མཐུ་བཙན་པར་གྱུར་ཅིག །
मोन लम थु ज़ेन पर ग्युर चिग
**प्रणिधान, शक्तिमान् बनें।**

ཛ་ཡ་ཛ་ཡ་སིདྡྷི་སིདྡྷི་ཕ་ལ་ཕ་ལ།
ज य ज य सिद्दिह सिद्दिह फ ल फ ल
**जय जय सिद्धि सिद्धि फल फल।**

རིག་འཛིན་འཇིགས་མེད་གླིང་པའི་གསུང་ཡིན་ནོ། །
यह रिग्-ज़िन् जिग्स-मेद् लिङ्-पा का वचन है।

## འདོད་གསོལ་འགྲོ་ལ་བདེ་སྐྱིད་མ།
# काम-अध्येषणा-नाम सत्त्व-सुखोत्सव

འགྲོ་ལ་བདེ་སྐྱིད་འབྱུང་བའི་སྒོ་གཅིག་པུ། །
डो ल दे क्यिद् छुङ बई गो चिग पु
सत्त्व-सुखोत्सव के एकमात्र द्वार

ཀུན་མཁྱེན་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་རིན་པོ་ཆེ། །
कुन ख्येन ग्यल वई तेन प रिन पो छे
सर्वज्ञ जिन-शासन-रत्न।

ཡུལ་དུས་གནས་སྐབས་ཀུན་ཏུ་མི་ཉམས་པ། །
युल दुस् नेस् कप कुन तु मि ञम प
क्षेत्र-काल सभी परिस्थितियों में क्षय न हों

ཕྱོགས་མཐར་དར་ཞིང་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
छोग थर दर शिङ ग्येस् पर ज़े दु सोल
समस्त दिशा में फैलें, विस्तार प्राप्त करें।1।

ཚད་མེད་མཁྱེན་དང་བརྩེ་བའི་དཔལ་མངའ་ཞིང་། །
छ़े मेद् ख्येन दङ च़े बई पल ङा शिङ
अपरिमित ज्ञान और दया-श्री से युक्त

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་སྲོག་བས་གཅེས་འཛིན་པའི། །
ग्यल वई तेन प सोग वे चेस् ज़िन पई
जिन-शासन को प्राण से भी प्रिय धारण-कर्ता।

མཚུངས་མེད་བླ་མ་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་རྣམས། །
छुङ मेद् ल म गे बई शेस् ञेन नम
अद्वितीय गुरु, कल्याणमित्र लोग

སྐུ་ཚེ་རིང་ཞིང་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
कु छ़े रिङ शिङ ग्येस् पर ज़े दु सोल
चिरायु हों, विस्तार प्राप्त करें।2।

འགྲོ་ལ་དགེ་བའི་ལམ་བཟང་སྟོན་མཛད་ཅིང་། །
डो ल गे बई लम ज़ङ नङ ज़े चिङ
सत्त्वों में कुशल रूपी सुमार्ग को दिखाने वाले

འཆད་དང་སྒྲུབ་པའི་བྱ་བ་ལྷུར་ལེན་པའི། །
छे दङ डुप पई छ व ल्हुर लेन पई
वाचन एवं साधन-कार्य में लग्नशील।

ཆོས་བྱེད་དགེ་འདུན་འདི་དག་ཞབས་བརྟན་ཅིང་། །
छोस् छेद् गेन दुन दि दग शप तेन चिङ
धर्म-कर्ता यह संघ सुदृढ हों

ཕྲིན་ལས་ཕྱོགས་བཅུར་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
ठिन लेस छोग चुर ग्येस् पर ज़े दु सोल
कर्म, दश-दिशाओं में विस्तृत हों।3।

མི་རྣམས་ན་རྒ་འཆི་བའི་འཇིགས་མེད་ཅིང་། །
मि नम न ग छ़ि बई जिग मेद् चिङ
लोगों में रोग, जरा, मृत्यु-भय न हों

འཇིག་རྟེན་ཡང་དག་ལྟ་བ་དང་ལྡན་པས། །
जिग तेन यङ दग त व दङ देन पेस्
लौकिक सम्यक्-दर्शन से युक्त हों।

ཕན་ཚུན་བྱམས་པའི་ཡིད་དང་ལྡན་གྱུར་ཅིང་། །
फेन छुन छम पई यिद् दङ देन ग्युर चिङ
परस्पर मैत्री-चित्त से युक्त हों

ཚད་མེད་དགའ་བ་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
छे मेद् गा व ग्येस् पर ज़े दु सोल
अप्रमेय मुदिता का विस्तार करें।4।

གྲོང་རྣམས་འཇམ་པོའི་རླུང་གིས་གཡོ་བ་ཡིས། །
डोङ नम जम पोइ लुङ गीस् यो व यीस्
नगर कोमल वायु से उत्थित

བ་དན་དཀར་པོའི་ཕྲེང་བས་རབ་མཛེས་ཤིང་། །
व देन कर पोइ ठेङ वे रप ज़ेस् शिङ
श्वेत पताकाओं के क्रम से सुसज्जित।

གོས་བཟང་རིན་ཆེན་རྒྱན་དང་ལྡན་པ་ཡི། །
गोस् ज़ङ रिन छेन ग्येन दङ देन प यि
अच्छे वस्त्र, रत्नालंकार से युक्त

འབྱོར་ལྡན་སྐྱེ་བོས་གང་བར་མཛད་དུ་གསོལ།
छोर देन क्ये बोस् गङ बर ज़े दु सोल
सम्पन्न पुरुषों से परिपूर्ण होवें।5।

མཁའ་ལ་གློག་ཕྲེང་འགྱུ་བའི་སྤྲིན་མཛེས་ཤིང་། །
खा ल लोग ठेङ ग्यु बई टिन ज़ेस् शिङ
मेघ सुशोभित नभ में विद्युत्-माला चमकते

ས་ལ་རྨ་བྱ་དགའ་བའི་གར་མཛེས་པ། །
स ल म छ गा बई गर ज़ेस् प
पृथ्वी पर आनन्दित मोर सुन्दर नाचते।

ཟིམ་བུ་དལ་གྱིས་འབབ་པའི་ཆར་རྒྱུན་གྱིས། །
ज़िम बु दल ग्यीस् बप पई छर ग्युन ग्यीस्
मन्द फुहारों को छोड़ते वर्षा-क्रम द्वारा

འགྲོ་རྣམས་དགའ་བ་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
डो नम गा व ग्येस् पर ज़े दु सोल
सत्त्वों की प्रसन्नता को विस्तृत करें।6।

རི་རྣམས་རྩྭ་དང་མེ་ཏོག་འབབ་ཆུས་བརྒྱན། །
रि नम त्र दङ मे तोग बप छुस् ग्येन
समस्त गिरि- तृण, पुष्प और झरने से अलंकृत हों

ལྗུང་རྣམས་སྣ་ཚོགས་ཕྱུགས་དང་འབྲུ་ཡིས་གང་། །
लुङ नम न छ़ोग छुग दङ डु यीस् गङ
समस्त घाटियाँ- नाना पशु और अन्न से पूर्ण हों।

མི་རྣམས་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་གླུ་ལེན་ཞིང་། །
मि नम रप तु गा बई लु लेन शिङ
लोग अति प्रसन्न हो गाना गायें

དྲེགས་དང་འཐབ་རྩོད་མེད་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
डेग दङ थप त्ऱोद् मेद् पर ज़े दु सोल
अहङ्कार, झगड़ा और विवाद नहीं होवे।7।

རྒྱལ་པོའི་ཆབ་སྲིད་ཞི་བས་ལེགས་སྐྱོང་ཞིང་། །
ग्यल पोइ छप सिद् शि वे लेग क्योङ शिङ
राज-शासन शान्ति से सुव्यस्थित हों

འབངས་རྣམས་རྒྱལ་པོའི་བཀའ་ལུང་གུས་ལེན་པས། །
बङ नम ग्यल पोइ का लुङ गुस् लेन पेस्
प्रजायें राजाज्ञा का आदर करें।

ཕྱི་དང་ནང་གི་འཁྲུགས་རྩོད་ཉེར་ཞི་ནས། །
छि दङ नङ गि ठुग त्ऱोद् ञेर शि नेस्
बाह्याध्यात्म झगड़ा और विवाद उप-शान्त हों

རྫོགས་ལྡན་བཞིན་དུ་བདེ་བར་མཛད་དུ་གསོལ། །
ज़ोग देन शिन दु दे वर ज़े दु सोल
(लोग) सतयुग के समान सुखी हों।8।

གཙུག་ལག་ཁང་རྣམས་རྒྱལ་བའི་སྐུ་གཟུགས་དང་། །
ज़ुग लग खङ नम ग्यल वई कु ज़ुग दङ
समस्त विहार जिन-मूर्तियों और

དམ་ཆོས་གླེགས་བམ་དུ་མས་རབ་མཛེས་པ། །
दम छोस् लेग बम दु मेस रप ज़ेस् प
नाना सद्धर्म पोथियों से सुशोभित हों।

ལྷ་རྫས་མཆོད་པའི་སྤྲིན་ཚོགས་དཔག་མེད་ཀྱིས། །
ल्ह ज़ेस् छोद् पई टिन छोग पग मेद् क्यीस्
अपरिमित दिव्य पूजा-मेघ-गण द्वारा

མཆོད་པའི་ཆར་ཆེན་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
छोद् पई छर छेन ग्येस् पर ज़े दु सोल
विस्तृत पूजा की महावर्षा होवे।9।

དགོན་གནས་ཐམས་ཅད་ཐུབ་བསྟན་སྐྱོང་བྱེད་པ། །
गोन नेस् थम चे थुप तेन क्योङ छेद् प
समस्त विहार मुनि-शासन पालन-कर्ता

བཤེས་གཉེན་ངུར་སྨྲིག་འཛིན་པས་ཡོངས་ཁྱབ་སྟེ། །
शेस् ञेन ङुर मिग ज़िन पेस् योङ ख्यप ते
काषाय-वस्त्रधारी कल्याणमित्रों से परिपूर्ण हों।

འཆད་རྩོད་རྩོམ་པའི་བྱ་བས་དུས་འདའ་ཞིང་། །
छे ज़ोद् ज़ोम पई छ वे दुस् दा शिङ
व्याख्यान, शास्त्रार्थ और लेखन-कार्यों में समय बिता

ཀློག་དང་ཁ་ཏོན་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
लोग दङ ख तोन ग्येस् पर ज़े दु सोल
पाठ और स्वाध्याय विस्तृत होवे।10।

དགེ་བསྙེན་དགེ་ཚུལ་དགེ་སློང་ཕ་མ་རྣམས། །
गे ञेन गे छुल गे लोङ फ म नम
उपासक, श्रामणेर, भिक्षु-स्त्री-पुरुष

དྲི་མ་མེད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་ལྡན་ཞིང་།
डि म मेद् पई छुल ठिम दङ देन शिङ
विमल शील से समन्वित होकर।

རྣམ་དག་ཐོས་བསམ་སྒོམ་པའི་བྱ་བ་ཡིས། །
नम दग थोस् सम गोम पई छ व यीस्
विशुद्ध श्रवण-चिन्तन-मनन कार्यों से

བདེ་གཤེགས་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दे शेग तेन प ग्येस् पर ज़े दु सोल
सुगत-शासन विस्तृत होवें।11।

སྒྲུབ་པ་པོ་རྣམས་གཡེང་བ་ཀུན་སྤངས་ནས། །
डुप प पो नम येङ व कुन पङ नेस्
समस्त साधक सर्व-विक्षेपों को त्याग कर

འཚེ་བ་ཀུན་བྲལ་འདུ་འཛིས་རྣམ་དབེན་པའི། །
छे व कुन डल दु ज़ीस् नम वेन पई
सर्व-हिंसा त्याग, संसर्गों से विरहित।

ཞི་བའི་གནས་སུ་སྤོང་བ་ལྷུར་ལེན་པའི། །
शि बई नेस् सु पोङ व ल्हुर लेन पई
शान्त स्थल में प्रहाण (कार्य) में लग्नशील हो

རྟོགས་པའི་ཡོན་ཏན་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
तोग पई योन तेन ग्येस् पर ज़े दु सोल
अधिगम-गुण विस्तृत होवें।12।

ལྷག་པར་དད་པས་གསོལ་བ་འདེབས་བྱེད་པ། །
ल्हग पर दङ वे सोल व देप छेद् प
अधि-श्रद्धा से अध्येषणा करने पर

སྒྲུབ་པོ་བདག་ཅག་འཁོར་དང་བཅས་རྣམས་ལ། །
डुप पो दग चग खोर दङ चेस् नम ल
साधक सपरिवार हम लोगों में।

ལོག་འཚོ་བྲལ་བའི་དཔལ་འབྱོར་ཕུན་ཚོགས་དང་། །
लोग छ़ो डल बई पल छोर फुन छ़ोग दङ
मिथ्या-आजिविका बिना सम्पत्ति-सम्पन्नता तथा

ཚེ་དང་དམ་ཆོས་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
छ़े दङ दम छोस् ग्येस् पर ज़े दु सोल
आयु एवं सद्धर्म विस्तृत होवें।13।

སྦྱིན་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་བཟོད་དང་བརྩོན་འགྲུས་དང་། །
छिन दङ छ़ुल ठिम ज़ोद् दङ च़ोन डुस् दङ
दान तथा शील, क्षान्ति एवं वीर्य

བསམ་གཏན་ཤེས་རབ་བླ་ན་མེད་སོགས་ཀྱིས། །
सम तेन शेस् रप ल न मेद् सोग क्यीस्
अनुत्तर ध्यान-प्रज्ञा इत्यादि से।

རང་ལ་སངས་རྒྱས་ཆོས་ཀུན་ཡོངས་རྫོགས་ནས། །
रङ ल सङ ग्येस् छोस् कुन योङ ज़ोग नेस्
स्वयं में सर्वबुद्ध-धर्म परिसमाप्त हो

ལུང་རྟོགས་ཡོན་ཏན་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
लुङ तोग योन तेन ग्येस् पर ज़े दु सोल
आगम-अधिगम गुण विस्तृत होवें।14।

སྦྱིན་དང་སྙན་པར་སྨྲ་བས་འཁོར་བསྡུས་ནས། །
छिन दङ ञेन पर म वे खोर बदुस् नेस्
दान और मधुर-वचन से परिवार-संग्रह कर

དོན་སྤྱོད་དམ་ཆོས་ཚུལ་བཞིན་བཤད་པའི་མཐུས། །
दोन चोद् दम छोस् छ़ुल शिन शे पई थुस्
अर्थचर्या (युक्त हो) सद्धर्म के नियमवत
व्याख्यान-बल से।

རང་གཞན་དོན་མཐུན་ཆོས་ལ་ལེགས་སྦྱར་ནས། །
रङ शेन दोन थुन छोस् ल लेग छर नेस्
स्व-पर (को) समानार्थ धर्म में सुबद्ध कर

གཞན་དོན་ཆོས་བཞིན་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
शेन दोन छोस् शिन ग्येस् पर ज़े दु सोल
परार्थ धर्मोपम विस्तृत होवें।15।

ཆོས་ཀྱི་འགལ་རྐྱེན་མཐའ་དག་ཉེར་ཞི་ཞིང་། །
छोस् क्यि गल क्येन था दग ञेर शि शिङ
धर्म के सभी विघ्न-प्रत्यय उपशान्त हो

མཐུན་རྐྱེན་མ་ལུས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་གྱུར་ནས། །
थुन क्येन म लुस् फुन सुम छ़ोग ग्युर नेस्
अशेष सामग्रियाँ सम्पन्न होकर।

གང་དང་གང་ལ་ཐུབ་པས་རབ་བསྔགས་པའི། །
गङ दङ गङ ल थुप पेस् रप ङग पई
जहाँ-जहाँ मुनि द्वारा प्रशंसित

དགེ་བ་དེ་དག་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
गे व दे दग ग्येस् पर ज़े दु सोल
वे कुशल (पुण्य) विस्तृत होवें।16।

དཔལ་ལྡན་བླ་མའི་ཐུགས་རྗེ་བྱིན་རླབས་དང་། །
पल देन ल मई थुग जे छिन लप दङ
श्रीयुत गुरु के करुणा-अधिष्ठान से

ཆོས་ཀུན་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་བདེན་པ་དང་། །
छोस् कुन दे शिन ञिद् क्यि देन प दङ
सर्व धर्मों के तथता-सत्य और।

བདག་གི་ལྷག་བསམ་རྣམ་པར་དག་པའི་མཐུས། །
दग गि ल्हग सम नम पर दग पई थुस्
मेरे विशुद्ध अध्याशय बल से

ཇི་ལྟར་གསོལ་བ་བཏབ་བཞིན་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
जि तर सोल व तप शिन डुप ग्युर चिग
यथा अध्येषणावत सिद्धि हों।17।

ལམ་རིམ་སྨོན་ལམ།

# मार्गक्रम प्रणिधान

དེར་ནི་རིང་དུ་འབད་ལས་ཚོགས་གཉིས་ནི། །
देर नि रिङ दु बे लेस छ़ोग ञीस् नि
वहाँ, दीर्घकालिक यत्न से द्वि-सम्भार

མཁའ་ལྟར་ཡངས་པ་གང་ཞིག་བསགས་པ་དེས། །
खा तर यङ प गङ शिग सग प देस्
जो आकाश-सम संग्रह किया, उससे।

བློ་མིག་མ་རིག་གིས་ལྡོངས་འགྲོ་བ་ཀུན། །
लो मिग म रिग गीस् दोङ डो व कुन
मत्यक्षि अज्ञान से अन्धे सर्वसत्त्वों के

རྣམ་འདྲེན་རྒྱལ་བའི་དབང་པོར་བདག་གྱུར་ཅིག །
नम डेन ग्यल वई वङ पोर दग ग्युर चिग
विनायक रूपी जिनेन्द्र मैं बन जाउँ।1।

དེར་མ་སོན་པའི་ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་ཡང་། །
देर म सोन पई छ़े रप कुन तु यङ
वहाँ न पहुँचने तक, जन्म-जन्मान्तरों में भी

འཇམ་པའི་དབྱངས་ཀྱིས་བརྩེ་བས་རྗེས་བཟུང་སྟེ། །
जम पई यङ क्यीस् त़्से वे जेस् ज़ुङ ते
मञ्जुघोष द्वारा दया से अनुगृहीत हो।

བསྟན་པའི་རིམ་པ་ཀུན་ཚང་ལམ་གྱི་མཆོག །
तेन पई रिम प कुन छ़ङ लम ग्यि छोग
पूर्ण सर्वशासन-क्रम, उत्तम-मार्ग

རྙེད་ནས་སྒྲུབ་པས་རྒྱལ་རྣམས་མཉེས་བྱེད་ཤོག །
ञेद् नेस् डुप पेस् ग्यल नम ञेस् छेद् शोग
प्राप्त कर साधन से, जिनों को प्रसन्न करूँ।2।

རང་གིས་ཇི་བཞིན་རྟོགས་པའི་ལམ་གྱི་གནད། །
रङ गीस् जि शिन तोग पई लम ग्यि ने
स्वयं द्वारा यथा अवबोध ज्ञान-मर्म

ཤུགས་དྲག་བརྩེ་བས་དྲངས་པའི་ཐབས་མཁས་ཀྱིས། །
शुग डग त़्से वे डङ पई थप खेस् क्यीस्
दयोग्र-बल से आकर्षित उपाय-कौशल्य द्वारा।

འགྲོ་བའི་ཡིད་ཀྱི་མུན་པ་བསལ་བྱས་ནས། །
डो बई यिद् क्यि मुन प सल छेस् नेस्
सत्त्व-चित्तान्धकार का निवारण कर

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འཛིན་གྱུར་ཅིག །
ग्यल वई तेन प युन रिङ ज़िन ग्युर चिग
जिन-शासन दीर्घकाल तक धारण करूँ।3।

བསྟན་པ་རིན་ཆེན་མཆོག་གིས་མ་ཁྱབ་པའམ། །
तेन प रिन छेन छोग गीस् म ख्यप पह़म
परम शासन-रत्न से अव्याप्त, अथवा

ཁྱབ་ཀྱང་ཉམས་པར་གྱུར་པའི་ཕྱོགས་དེར་ནི། །
ख्यप क्यङ ञम पर ग्युर पई छोग देर नि
व्याप्त होने पर भी हानि-प्राप्त उस दिशा में।

སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོས་ཡིད་རབ་བསྐྱོད་པ་ཡིས། །
ञिङ जे छेन पोस् यिद् रप क्योद् प यीस्
महाकरुणा के चित्त-उद्वेलन द्वारा

ཕན་བདེའི་གཏེར་དེ་གསལ་བར་བྱེད་པར་ཤོག །
फेन दे तेर दे सल वर छेद् पर शोग
उस हित-सुख-निधि को प्रकाशित करूँ।4।

སྲས་བཅས་རྒྱལ་བའི་རྨད་བྱུང་འཕྲིན་ལས་ལས། །
सेस् चेस् ग्यल वई मे छुङ ठिन लेस लेस्
सपुत्र जिन के अद्भुत कर्म से

ལེགས་གྲུབ་བྱང་ཆུབ་ལམ་གྱི་རིམ་པས་ཀྱང་། །
लेग डुप छङ छुप लम ग्यि रिम पेस् क्यङ
सुसिद्ध, बोधिमार्गक्रम के द्वारा भी।

ཐར་འདོད་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་ལ་དཔལ་སྟེར་ཞིང་། །
थर दोद् नम क्यि यिद् ल पल तेर शिङ
मोक्षेच्छुकों के चित्त में श्री-दान-कर्ता

རྒྱལ་བའི་མཛད་པ་རིང་དུ་སྐྱོང་གྱུར་ཅིག །
ग्यल वई ज़े प रिङ दु क्योङ ग्युर चिग
जिन-कर्मों का दीर्घकाल तक पालन करूँ।5।

ལམ་བཟང་སྒྲུབ་པའི་མཐུན་རྐྱེན་སྒྲུབ་བྱེད་ཅིང་། །
लम ज़ङ डुप पई थुन क्येन डुप छेद् चिङ
सु-मार्ग के साधन-सामग्री साधने वाले,

འགལ་རྐྱེན་སེལ་བྱེད་མི་དང་མི་མིན་ཀུན། །
गल क्येन सेल छेद् मि दङ मि मिन कुन
विघ्न-प्रत्यय निवारक, सभी मनुष्य और अमनुष्य।

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་རྒྱལ་བས་བསྔགས་པ་ཡི། །
छ़े रप कुन तु ग्यल वे ङग प यि
जन्म-जन्मान्तरों में, जिन द्वारा प्रशंसित

རྣམ་དག་ལམ་དང་འབྲལ་བར་མ་གྱུར་ཅིག །
नम दग लम दङ डल बर म ग्युर चिग
विशुद्ध मार्ग से अलग न हों।6।

གང་ཚེ་ཐེག་པ་མཆོག་ལ་ཆོས་སྤྱོད་བཅུས། །
गङ छ़े थेग प छोग ल छोस् चोद् चुस्
जब परम यान में दश-धर्म-चर्या द्वारा

ཚུལ་བཞིན་སྒྲུབ་ལ་བརྩོན་པ་དེ་ཡི་ཚེ། །
छुल शिन डुप ल च़ोन प दे यि छ़े
नियमवत साधना करते यत्नशील हों उस समय।

མཐུ་ལྡན་རྣམས་ཀྱིས་རྟག་ཏུ་གྲོགས་བྱེད་ཅིང་། །
थु देन नम क्यीस् तग तु डोग छेद् चिङ
बलवानों द्वारा सदा सहायता कर

བཀྲ་ཤིས་རྒྱ་མཚོས་ཕྱོགས་ཀུན་ཁྱབ་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् ग्य छ़ोस् छोग कुन ख्यप ग्युर चिग
मंगल-सागर से समस्त दिशा व्याप्त हों।7।

ཅེས་པ་འདི་ནི་རྗེ་ཙོང་ཁ་པ་ཆེན་པོས་མཛད་པའོ། །
यह महान् जे-चोंखापा द्वारा रचित है।

ཤངས་ཆོས་སྨོན་ལམ།

# शङ्स-पा-धर्म प्रणिधान

རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་ཡེ་ཤེས་ཌཱ་ཀི་གཉིས། །
दोर जे छङ दङ ये शेस् डाकि ञीस्
वज्रधर और ज्ञान-ड़ाकिनी द्वय

ཁྱུང་པོ་རྣལ་འབྱོར་རྩ་བརྒྱུད་བླ་མ་དང་། །
ख्युङ पो नल छोर ज़ा ग्युद् ल म दङ
ख्युङ-पो नल्-जोर्, मूल-परम्परागत गुरु।

བདེ་དགྱེས་གསང་གསུམ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་དང་། །
दे ग्येस् सङ सुम ग्यु ठुल छेन मो दङ
चक्रसंवर, हेवज्र, गुह्यसमाज (ये) तीन, महामाया,

འཇིགས་བྱེད་རྟ་མཆོག་ལ་སོགས་ཡི་དམ་ལྷ། །
जिग छेद् त छोग ल सोग यि दम ल्ह
भैरव, हयग्रीव आदि इष्टदेव।1।

མཁའ་འགྲོ་སྡེ་ལྔ་ཉུར་མཛད་རེ་མ་ཏི། །
खा डो दे ङ न्युर ज़े रे म ति
पञ्च ड़ाकिनी वर्ग, कुरुकुल्ल (-नाथ), रेमति,

བཀའ་སྡོད་བཞི་སོགས་དམ་ཅན་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས། །
का दोद् शि सोग दम चेन ग्य छ़ोइ छ़ोग
चार आज्ञापालक आदि समयवान् समुद्र गण।

སྐྱབས་གནས་དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་རྩ་བ་གསུམ། །
क्यप नेस् कोन छोग सुम दङ ज़ा व सुम
शरण-स्थल त्रिरत्न और त्रि-मूल

མི་མངོན་དབྱིངས་ནས་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། །
मि ङोन यिङ नेस् दग ल गोङ सु सोल
अप्रत्यक्ष-धातु से मुझे ध्यान दें।2।

ཁྱེད་རྣམས་བྱིན་རླབས་ཐུགས་རྗེའི་བདེན་མཐུ་དང་། །
ख्येद् नम छिन लप थुग जे देन थु दङ
आप लोगों के अधिष्ठान करुणा-सत्य-बल और

དུས་གསུམ་བསགས་པའི་དགེ་རྩ་ཇི་སྙེད་མཐུས། །
दुस् सुम सग पई गे ज़ा जि ञेद् थुस्
त्रिकाल सञ्चित जितने कुशलमूल हैं, उनके बल से।

སྐྱེ་བ་འདི་དང་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ། །
क्ये व दि दङ छ़े रप थम चे दु
इस जन्म और अन्य जन्मों में

སྨོན་ལམ་གང་བཏབ་མྱུར་དུ་འགྲུབ་མཛད་གསོལ། །
मोन लम गङ तप न्युर दु डुप ज़े सोल
जो प्रणिधान किया, शीघ्र सिद्ध हों।3।

ཤིན་ཏུ་རྙེད་དཀའི་དལ་འབྱོར་རིན་ཆེན་འདི། །
शिन तु ञेद् कई दल छोर रिन छेन दि
सुदुर्लभ क्षणसम्पद् यह रत्न

ཆུད་ཟོས་མི་བྱ་སྙིང་པོ་ལེན་པར་ཤོག །
छुद् ज़ोस् मि छ ञिङ पो लेन पर शोग
व्यर्थ न गवां, सार ग्रहण करें।

མི་རྟག་མི་བརྟན་འགྱུར་བའི་ཆོས་ཅན་ལ། །
मि तग मि तेन ग्युर बई छोस् चेन ल
अनित्य, अस्थिर, परिवर्तनशील धर्मों का

བསམ་ཞིང་ལོང་མེད་བློ་སྣ་ཐུང་བར་ཤོག །
सम शिङ लोङ मेद् लो न थुङ बर शोग
चिन्तन कर समयाभाव जान क्रोधित न हों।4।

དགེ་སྡིག་ལས་འབྲས་ཆེ་ཕྲ་ཐམས་ཅད་ལ། །
गे दिग लेस डेस् छे ठ थम चे ल
समस्त स्थूल-सूक्ष्म पुण्य-पाप कर्म-फलों में

ཡིད་ཆེས་སྐྱེ་ཞིང་རྒྱུ་འབྲས་སྲུང་ནུས་ཤོག །
यिद् छेस् क्ये शिङ ग्यु डेस् सुङ नुस् शोग खम
विश्वास उत्पन्न हों, कर्मफल की रक्षा कर सकूँ।

ཁམས་གསུམ་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་རབ་མཐོང་ཞིང་། །
सुम खोर बई दुग ङ्ल रप थोङ शिङ
त्रिधातु संसार-दुःख को अच्छी तरह देखकर

འཁོར་བའི་གནས་ནས་ངེས་པར་འབྱུང་བར་ཤོག །
खोर बई नेस् नेस् ङेस् पर छुङ बर शोग
संसार-स्थल से निःसरण होऊँ।5।

བདག་སོགས་འདི་ཕྱི་བར་དོ་ཐམས་ཅད་དུ། །
दग सोग दि छि बर दो थम चे दु
हम लोग यहाँ, पर-जन्म और अन्तराभव सभी में

དཀོན་མཆོག་རྩ་གསུམ་སྐྱབས་འོག་ཚུད་པར་ཤོག །
कोन छोग त्स़ सुम क्यप ह़ोग छुद् पर शोग
त्रि-रत्न त्रि-मूल के शरण में हो जायें।

མཁའ་མཉམ་ཕ་མ་འགྲོ་དྲུག་སེམས་ཅན་ལ། །
खा ञम फ म डो डुग सेम चेन ल
आकाश सम षड्योनि के माता-पिता रूपी सत्त्वों में

བྱམས་དང་སྙིང་རྗེ་གཏིང་ནས་སྐྱེ་བར་ཤོག །
छम दङ ञिङ जे तिङ नेस् क्ये बर शोग
मैत्री और करुणा (-चित्त) तल से उत्पन्न हों।6।

མཐུན་རྐྱེན་ཀུན་འཛོམས་དབེན་པའི་རི་ཁྲོད་དུ། །
थुन क्येन कुन ज़ोम वेन पई रि ठोद् दु
समस्त सामग्री प्राप्त एकान्त गिरिगह्वर में

རྩེ་གཅིག་བསྒྲུབ་ནས་ཉམས་རྟོགས་མཐར་ཕྱིན་ཤོག །
त्स़े चिग डुप नेस् ञम तोग थर छिन शोग
एकाग्रता का साधन कर, अनुभूति-ज्ञान पारंगत हों।

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་ཡོན་ཏན་ཀུན་ལྡན་གྱི། །
छ़े रप कुन तु योन तेन कुन देन ग्यि
सभी जन्मों में, समस्त गुणों से युक्त।

བླ་མ་དམ་པས་རྗེས་སུ་འཛིན་པར་ཤོག །
ल म दम पेस् जेस् सु ज़िन पर शोग
सद्गुरु द्वारा अनुगृहीत होऊँ।7।

སངས་རྒྱས་ཀུན་དངོས་རྩ་བའི་བླ་མ་ལ། །
सङ ग्येस् कुन ङोस् त्स़ बई ल म ल
सर्व-बुद्ध-प्रत्यक्ष मूलगुरु में

བཅོས་མིན་མོས་གུས་སྙིང་ནས་སྐྱེ་བར་ཤོག །
चोस् मिन मोस् गुस् ञिङ नेस् क्ये बर शोग
अकृत्रिम छन्दादर हृदय से उत्पन्न हों।

ཡེ་ནས་རང་བྱུང་ལྷ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ། །
ये नेस् रङ छुङ ल्ह यि दक्यिल खोर ल
अनादि स्वयंभू देव-मण्डल में

ཡིན་པར་ཤེས་ཤིང་གསལ་སྣང་བརྟན་པར་ཤོག །
यिन पर शेस् शिङ सल नङ तेन पर शोग
स्वयं को जान, प्रकृष्ट-आभास दृढ हों।8।

བླ་མ་ཡི་དམ་མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་ཚོགས། །
ल म यि दम खा डो छोस् क्योङ ऴोग
गुरु, इष्ट, ड़ाकिनी, धर्म-पालक-गण

སྒྲུབ་ཙམ་ཉིད་ནས་མངོན་སུམ་ཞལ་མཐོང་ཤོག །
डुप ज़्ञम ञिद् नेस् ङोन सुम शल थोङ शोग
साधन मात्र से ही प्रत्यक्ष दर्शन कर सकूँ।

ལུས་ལ་བདེ་དྲོད་བཟོད་མེད་རབ་འབར་ཞིང༌། །
लुस् ल दे डोद् ज़ोद् मेद् रप बर शिङ
काय में उग्र सुखोक्ष्म प्रज्वलित हों

སེམས་ལ་བདེ་སྟོང་ཏིང་འཛིན་བརྟན་པར་ཤོག །
सेम ल दे तोङ तिङ ज़िन तेन पर शोग
चित्त में सुख-शून्य समाधि दृढ़ हों।9।

ཆོས་རྣམས་སྒྱུ་མ་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་ལ། །
छोस् नम ग्यु म मि लम त बु ल
माया स्वप्नोपम धर्मों में

བདེན་འཛིན་འཁྲུལ་པ་རྩད་ནས་ཞིག་པར་ཤོག །
देन ज़िन ठुल प ज़्ञे नेस् शिग पर शोग
सत् ग्राहक भ्रान्ति मूलतः नष्ट हों।

མཚན་མོ་རྩོལ་མེད་རྨི་ལམ་རབ་ཟིན་ཅིང༌། །
ऴेन मो ज़्ञोल मेद् मि लम रप ज़िन चिङ
रात्रि में बिना यत्न स्वप्न को ग्रहण कर

སྦྱོང་སྤེལ་སྤྲུལ་སྒྱུར་ཡུལ་སྣང་ཕེབས་པར་ཤོག །
छोङ पेल टुल ग्युर युल नङ फेप पर शोग
शोधन, वर्धन, निर्माण, वृद्धि कर विषयाभास में
भ्रमण करूँ।10।

མ་རིག་གཏི་མུག་གཉིད་ཀྱི་མུན་ཁུང་ལ། །
म रिग ति मुग ञिद् क्यि मुन खुङ ल
अज्ञान रूपी मोह-निद्रा के अन्धकार में

སྲབ་མཐུག་འོད་གསལ་ངོ་ཤེས་ཟིན་པར་ཤོག །
सप थुग ह़ोद् सल ङो शेस् ज़िन पर शोग
स्थूल-सूक्ष्म प्रभास्वर को जान सकूँ।

ཆོས་སྐུ་བླ་མ་ཡི་དམ་སྐར་ཁུང་མ། །
छोस् कु ल म यि दम कर खुङ म
धर्मकाय- गुरु, इष्ट, गवाक्षी,

མཁའ་སྤྱོད་ལ་སོགས་འཕོ་བ་འབྱོངས་པར་ཤོག །
खा चोद् ल सोग फो व छोङ पर शोग
खेचर आदि संक्रमण में निष्णात होऊँ।11।

སྐུ་གསུམ་རང་ཤར་འཁྲུགས་མེད་ལ་སོགས་ཀྱིས། །
कु सुम रङ शर छुग मेद् ल सोग क्यीस्
स्वयंभू त्रिकाय अभ्रान्त इत्यादि से

སྲིད་པ་བར་དོའི་སྐུ་གསུམ་མངོན་གྱུར་ཤོག །
सिद् प बर दोइ कु सुम ङोन ग्युर शोग
भव-अन्तराभव त्रिकाय प्रत्यक्ष हों।

སྐྱོན་བཞི་རང་གྲོལ་སྐུ་བཞི་ལྷུན་གྲུབ་ལ། །
क्योन शि रङ डोल कु शि ल्हुन डुप ल
चतुर्दोष स्वयं मुक्त हो, अनाभोग चतुर्काय में

ཕྱག་ཆེན་གནས་ལུགས་ཚེ་འདིར་རྟོགས་པར་ཤོག །
छग छेन नेस् लुग ऴे दिर तोग पर शोग
महामुद्रा स्वभाव को इस जन्म में जानूँ।12।

བླ་མ་མོས་གུས་སྣང་གྲགས་ལྷ་དང་སྔགས། །
ल म मोस् गुस् नङ डग ल्ह दङ ङग
गुरु छन्दादर, आभास प्रतिध्वनि देव और मन्त्र

སྣང་སེམས་སྒྱུ་མ་རྨི་ལམ་ལམ་ཁྱེར་ཤོག །
नङ सेम ग्यु म मि लम लम ख्येर शोग
आभास-चित्त माया को स्वप्न-मार्ग बनाऊँ।

བདེ་སྟོང་མཁའ་ལ་སྤྱོད་པའི་རྗེ་བཙུན་མས། །
दे तोङ खा ल चोद् पई जे त्सुन मेस
सुख-शून्य-खेचरी भट्टारिका द्वारा

བསྐྱེད་རྫོགས་ལམ་གྲུབ་མཁའ་སྤྱོད་བགྲོད་པར་ཤོག །
क्येद् ज़ोग लम डुप खा चोद् डोद् पर शोग
उत्पन्न-सम्पन्नक्रम-मार्ग सिद्ध कर खेचर प्राप्त करूँ।13।

ལུས་ཉིད་བེམས་པོ་སེམས་ནི་སྐྱེ་འཆི་བྲལ། །
लुस् ञिद् बेम पो सेम नि क्ये छि डल
काय- जड़ (और) चित्त जन्म-मृत्यु से रहित

འབྲས་བུ་འཆི་མེད་འཁྲུགས་མེད་དོན་རྟོགས་ཤོག །
डेस् बु छि मेद् छुग मेद् दोन तोग शोग
फल- अमृत अभ्रान्त अर्थ का ज्ञान हों।

བླ་མ་མགོན་པོའི་ཞལ་བཟང་རབ་མཐོང་ཞིང་། །
ल म गोन पोइ शल ज़ङ रप थोङ शिङ
गुरु-नाथ के भद्रमुख का सु-दर्शन कर

ལས་བཞི་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་ཤོག །
लेस शि छोग गि ङोस् डुप थोप पर शोग
चतुर्कर्म (रूपी) परमसिद्धि प्राप्त हों।14।

སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ནད་དང་སྡུག་བསྔལ་ཀུན། །
सेम चेन नम क्यि ने दङ दुग ङल कुन
प्राणियों के रोग और सभी दुःख

ཞི་བའི་མཐུ་བྱིན་སངས་རྒྱས་ལྟ་བུར་ཤོག །
शि बई थु छिन सङ ग्येस् त बुर शोग
शान्त कराने की शक्ति-दाता बुद्धोपम बनूँ।

ཚེ་བསོད་དབང་ཐང་ཉམས་དང་རྟོགས་པ་སོགས། །
छे सोद् वङ थङ ञम दङ तोग प सोग
आयु, पुण्य, अधिकार, अनुभव और ज्ञान आदि

དབྱར་གྱི་ཆུ་བོ་ལྟ་བུར་རྒྱས་པར་ཤོག །
यर ग्यि छु बो त बुर ग्येस् पर शोग
वर्षाकाल के नदी समान विस्तृत हों।15।

བསྟན་དང་འགྲོ་ལ་མཆོག་ཏུ་ཕན་པའི་ཕྱིར།
तेन दङ डो ल छोग तु फेन पई छिर
शासन और प्राणियों के परम कल्याण हेतु

ཁམས་གསུམ་སྲིད་གསུམ་དབང་དུ་འདུ་བར་ཤོག །
खम सुम सिद् सुम वङ दु दु बर शोग
त्रि-धातु त्रि-भव में अधिकार प्राप्त हों।

ཞིང་བཅུ་ཚང་བའི་དགྲ་བོ་སྒྲོལ་ནུས་ཕྱིར། །
शिङ चु छङ बई ड बो डोल नुस् छिर
दश-क्षेत्रापूर्ण शत्रु-मुक्ति में समर्थ के लिये

དྲག་སྔགས་ནུས་མཐུ་མེ་བཞིན་འབར་བར་ཤོག །
डग ङग नुस् थु मे शिन बर बर शोग
उग्र-मन्त्र सामर्थ्य, अग्निवत प्रज्वलित हों।16।

བདག་སོགས་སེམས་ཅན་བཅས་དང་རང་བཞིན་སོགས།།
दग सोग सेम चेन चेस् दङ रङ शिन सोग
मुझ सहित सत्त्वों में सावद्य और प्रकृति आदि

སྡིག་པ་གང་མཆིས་མ་ལུས་བྱང་བར་ཤོག །
दिग प गङ छीस् म लुस् छङ बर शोग
जो भी पाप हों, अशेष शोधित हों।

ཟང་ཟིང་ཆོས་དང་མི་འཇིགས་སྦྱིན་པ་ཡིས། །
ज़ङ ज़िङ छोस् दङ मि जिग छिन प यीस्
सास्रव (सम्पत्ति), धर्म और अभयदान द्वारा

སྐྱེ་དགུ་ཐམས་ཅད་བདེ་ལ་འགོད་ནུས་ཤོག །
क्ये गु थम चे दे ल गोद् नुस् शोग
सभी सत्त्वों को सुखारूढ कर सकूँ।17।

སོ་ཐར་བྱང་སེམས་གསང་སྔགས་དམ་ཚིག་སོགས། །
सो थर छङ सेम सङ ङग दम छ़िग सोग
प्रातिमोक्ष, बोधिसत्त्व, गुह्यमन्त्र-समयादि

དགེ་བའི་ཁྲིམས་རྣམས་དུས་ཀུན་སྲུང་ནུས་ཤོག །
गे बई ठिम नम दुस् कुन सुङ नुस् शोग
कुशल-शीलों के पालन में सदा समर्थ होऊँ।

སེམས་ཅན་གཅིག་གི་ཕྱིར་ཡང་བསྐལ་བརྒྱ་རུ། །
सेम चेन चिग गि छिर यङ कल ग्य रु
एक प्राणी हेतु भी शत कल्प पर्यन्त

བདག་ལུས་བྱེ་བར་གཏུབས་ཀྱང་བཟོད་པར་ཤོག །
दग लुस् छे बर तुप क्यङ ज़ोद् पर शोग
स्व-शरीर को कोटि बार काटे भी सहन कर सकूँ।18।

བདག་གཞན་ཐར་པའི་ལམ་མཆོག་སྒྲུབ་པ་ལ། །
दग शेन थर पई लम छोग डुप प ल
स्व-पर, मोक्ष परम-मार्ग के साधन पर

ཐུབ་པའི་དབང་པོའི་བརྩོན་འགྲུས་མཚུངས་པར་ཤོག །
थुप पई वङ पोइ ज़्ोन डुस् छुङ पर शोग
मुनेन्द्र के वीर्य समान प्राप्त हों।

མཐའ་བྲལ་འོད་གསལ་སེམས་ཉིད་ཆོས་ཀྱི་སྐུ། །
था डल ह़ोद् सल सेम ञिद् छोस् क्यि कु
कोटि रहित प्रभास्वर-चित्त धर्मकाय

ཞི་ལྷག་ཏིང་འཛིན་མི་གཡོ་བརྟན་པར་ཤོག །
शि ल्हग तिङ ज़िन मि यो तेन पर शोग
अचल, स्थिर शमथ-विपश्यना समाधि प्राप्त हों।19।

འཁོར་འདས་ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་ཐམས་ཅད་ལ། །
खोर देस् छोस् नम म लुस् थम चे ल
संसार-निर्वाण के अशेष सभी धर्मों में

མཁྱེན་རབ་འཇམ་པའི་དབྱངས་དང་མཚུངས་པར་ཤོག །
ख्येन रप जम पई यङ दङ छुङ पर शोग
ज्ञान, मञ्जुघोष के समान हो जाऊँ।

མདོ་རྒྱུད་གསར་རྙིང་ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་ཀུན། །
दो ग्युद् सर ञिङ छोस् नम म लुस् कुन
सूत्र-तन्त्र नवीन-प्राचीन सब

ཉམས་སུ་གང་བླངས་མཐའ་རུ་ཕྱིན་པར་ཤོག །
ञम सु गङ लङ था रु छिन पर शोग
जो भी अभ्यास करुँ, पारंगत हो जाऊँ।20।

གཟུགས་མཛེས་དབྱངས་སྙན་ཚེ་དཔལ་སྟོབས་འབྱོར་ལྡན།།
ज़ुग ज़ेस् यङ ञेन छ़े पल तोप छोर देन
सुरूप, मधुर स्वर, आयु-श्री, बल, सम्पत्ति-युक्त

གང་མཐོང་ཡིད་འོང་བརྩེ་བའི་སེམས་ཐོབ་ཤོག །
गङ थोङ यिद् ह़ोङ ज़्े बई सेम थोप शोग
जो भी दिखें- मनोहर, दया-चित्त उत्पन्न हों।

རྒྱལ་བསྟན་སྤྱི་དང་ཤངས་བརྒྱུད་བསྟན་པ་ལ། །
ग्यल तेन चि दङ शङ ग्युद् तेन प ल
सामान्य जिन-शासन और शङ्ग-पा शासन में

འཛམ་གླིང་རྒྱན་དང་ཤིང་རྟ་བརྒྱད་ལྟར་ཤོག །
ज़म लिङ ग्येन दङ शिङ त ग्ये तर शोग
जम्बुद्वीप-अलंकार और अष्ट-रथी समान होऊँ।21।

འཆི་བའི་དུས་སུ་གནད་གཅོད་མི་འབྱུང་ཞིང་། །
छि बई दुस् सु ने चोद् मि छुङ शिङ
मृत्युकाल में घोर व्यथित न होऊँ

འཇའ་འོད་རིང་བསྲེལ་འགྲོ་བ་འདྲེན་བྱེད་ཤོག །
जा ह़ोद् रिङ सेल डो व डेन छेद् शोग
इन्द्र-धनुष, (अस्थि) धातु (आदि) द्वारा प्राणियों को तारूँ।

བདག་གཞན་འཕོས་མ་ཐག་ཏུ་བདེ་བ་ཅན། །
दग शेन फोस् म थग तु दे व चेन
स्व-पर के च्युति मात्र पर, सुखावती में

ཁྱུང་པོ་ཡབ་སྲས་ཞབས་དྲུང་སྐྱེ་བར་ཤོག །
ख्युङ पो यप सेस् शप डुङ क्ये बर शोग
ख्युङ्-पो पिता-पुत्र समक्ष उत्पन्न होऊँ।22।

སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་ས་བཅུ་རབ་ཐོབ་སྟེ། །
क्येस् म थग तु स चु रप थोप ते
जन्म-अनन्तर दश-भूमि सु-प्राप्त कर

བླ་མེད་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་ཤོག །
ल मेद् ज़ोग पई छङ छुप थोप पर शोग
अनुत्तर सम्बोधि प्राप्त हो जायें।

སྲིད་ཞིའི་མཐའ་ལ་མི་གནས་འགྲོ་བའི་དོན། །
सिद् शी था ल मि नेस् डो बई दोन
भव-शान्त कोटि में अस्थित होकर, जगत हेतु

རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་ཀུན་དང་མཚུངས་པར་ཤོག །
ग्यल व सेस् चेस् कुन दङ छुङ पर शोग
समस्त जिन-सपुत्र के समान हो जाऊँ।23।

མཐོང་ཐོས་དྲན་རེག་ཟས་ཆོས་འབྲེལ་བ་ཀུན། །
थोङ थोस् डेन रेग ज़ेस् छोस् डेल व कुन
सभी- दर्शन, श्रवण, स्मृति, स्पर्श, खाद्य, धर्म से सम्बद्ध (प्राणी)

གདུལ་བྱ་འཁོར་གྱི་ཐོག་མར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दुल छ खोर ग्यि थोग मर क्ये बर शोग
प्रथम विनेयजन परिवार के रूप में पैदा हों।

གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་ཉེ་ལམ་གསང་སྔགས་དང་། །
दुल छ नम ल ञे लम सङ ङग दङ
विनेयजनों में निकट-मार्ग गुह्यमन्त्र तथा

ཐེག་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་ཆར་པ་ཕབ་པར་ཤོག །
थेग छेन छोस् क्यि छर प फप पर शोग
महायान-धर्म का वर्षा कर सकूँ।24।

མཐར་ཐུག་སེམས་ཅན་གཅིག་ཀྱང་མ་ལུས་པ། །
थर थुग सेम चेन चिग क्यङ म लुस् प
अन्ततः, एक भी सत्त्व शेष न रह (उन्हें)

བདག་ཉིད་ཁོ་ནས་སངས་རྒྱས་སར་བཀོད་ཤོག །
दग ञिद् खो नेस् सङ ग्येस् सर कोद् शोग
मै स्वयं द्वारा ही बुद्ध-भूमि पर आरूढ़ कर सकूँ।

བདག་གཞན་སངས་རྒྱས་ས་ལ་མ་བཀོད་བར། །
दग शेन सङ ग्येस् स ल म कोद् बर
स्व-पर को बुद्ध-भूमि पर आरूढ़ न करने तक

ཆོས་འགལ་བར་ཆད་སྐད་ཅིག་མི་འབྱུང་ཤོག །
छोस् गल बर छे के चिग मि छुङ शोग
धर्म-विरुद्ध बाधा, पल-भर भी न हों।25।

བདག་གི་བདེ་དང་དགེ་བ་ཅི་མཆིས་པ། །
दग गि दे दङ गे व चि छीस् प
मेरे जो भी सुख और कुशल हैं

འགྲོ་དྲུག་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱིས་ཐོབ་པར་ཤོག །
डो डुग सेम चेन कुन ग्यीस् थोप पर शोग
छह योनियों के समस्त सत्त्वों को प्राप्त हों।

དེ་ཐོབ་བདེ་དང་དགེ་བ་ལ་བརྟེན་ནས། །
दे थोप दे दङ गे व ल तेन नेस्
सुख और पुण्य उस प्राप्ति के आश्रय से

དུས་རྣམས་ཀུན་ཏུ་བདེ་སྐྱིད་འབྱུང་བར་ཤོག །
दुस् नम कुन तु दे क्यिद् छुङ बर शोग
सभी कालों में सुखोत्सव प्राप्त हों।26।

འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་སྡིག་སྒྲིབ་ཅི་མཆིས་པ། །
डो बई दुग ङल दिग डिप चि छीस् प
प्राणियों के दुःख पापावरण जो हैं

བདག་ཐིམ་བདག་གིས་སྡུག་བསྔལ་མྱོང་བར་ཤོག །
दग थिम दग गीस् दुग ङल न्योङ बर शोग
मुझ में विलीन हों, (उनका) मैं दुःख भोगूँ।

དེ་མྱོང་སྟོབས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ། །
दे न्योङ तोप क्यीस् सेम चेन म लुस् प
उस भोग के बल से अशेष सत्त्वों में

སྡུག་བསྔལ་སྡིག་སྒྲིབ་གཏན་ནས་མི་འབྱུང་ཤོག །
दुग ङल दिग डिप तेन नेस् मि छुङ शोग
दुःख-पापावरण कदापि नहीं हों।27।

དཀོན་མཆོག་རྩ་བ་གསུམ་གྱི་བྱིན་རླབས་དང་། །
कोन छोग त्Z व सुम ग्यि छिन लप दङ
त्रिरत्न-त्रिमूल के अधिष्ठान तथा

མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་སྲུང་མའི་ནུས་མཐུ་དང་། །
खा डो छोस् क्योङ सुङ मई नुस् थु दङ
ड़ाकिनी, धर्मपालों के सामर्थ्य और

དོན་དམ་འགྱུར་བ་མེད་པའི་བདེན་པ་དང་། །
दोन दम ग्युर व मेद् पई देन प दङ
अपरिवर्तनीय परमार्थ-सत्य सहित

ཀུན་རྫོབ་རྟེན་འབྲེལ་བསླུ་བ་མེད་པའི་མཐུས། །
कुन ज़ोप तेन डेल लु व मेद् पई थुस्
अवञ्चनीय संवृति-प्रतीत्य के बल से

ཇི་ལྟར་བཏབ་པའི་སྨོན་ལམ་དེ་དག་ཀུན། །
जि तर तप पई मोन लम दे दग कुन
यथा प्रार्थित वे सभी प्रणिधान

མྱུར་བ་ཉིད་དུ་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་པར་ཤོག །
न्युर व ञिद् दु यिद् शिन डुप पर शोग
शीघ्रातिशीघ्र इच्छानुरूप सिद्ध हों।28।

དེ་ལྟར་སྨོན་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དེ། །
दे तर मोन पई गे बई त्ZZ व दे
ऐसे प्रणिधान के वे (सभी) पुण्य

མ་གྱུར་ནམ་མཁའི་མཐའ་མཉམ་ཀུན་ལ་བསྔོ། །
म ग्युर नम खई था ञम कुन ल ङो
माँ-भूत नभान्त-सम सभी हेतु परिणामित करता हूँ।

སྡུག་བསྔལ་ཀུན་བྲལ་བདེ་བ་མཆོག་ཐོབ་ནས། །
दुग ङल कुन डल दे व छोग थोप नेस्
सर्व दुःख-मुक्त परम-सुख को प्राप्त कर

ཕྱམ་གཅིག་སངས་རྒྱས་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་ཤོག །
छम चिग सङ ग्येस् गो फङ थोप पर शोग
एक साथ बुद्ध-पद को प्राप्त करें।29।

ཅེས་པའང་དཔལ་ལྡན་ཤངས་པའི་གྲལ་མཐར་འཁོད་པ་ཀརྨ་རང་བྱུང་ཀུན་ཁྱབ་པས་ས་ཕོ་འབྲུག་གི་ལོར་སྨྲས་པ་འདིས་ཀྱང་འགྲོ་ཕན་རྒྱ་ཆེར་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །

यह भी श्रीयुत शङ्ग-पा के क्रमान्त में बैठने वाले कर्मा रङ्-जुङ् कुन्-ख्यब् द्वारा पृथ्वी-पुरुष सर्प-वर्ष में लिखा गया। इसके द्वारा भी विस्तृत जगत कल्याण हों। (भवतु सर्व-) मङ्गलम्।

# དམ་པའི་སྨོན་ལམ་སུམ་ཅུ་པ།
# दम्-पा का त्रिंशिका-प्रणिधान

ཕ་ཅིག་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྨོན་ལམ་སུམ་ཅུ་པ་ནི།

फ-चिग् दम्-पा सङ्ग-ग्यस् द्वारा रचित त्रिंशिका-प्रणिधान

བདག་གཞན་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་བརྒྱུད་ལྡན་བླ་མའི་བྱིན་རླབས་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
दग शेन नम क्यि ग्युद् ल ग्युद् देन ल मई छिन लप जुग पर ग्युर चिग
स्व-पर लोगों की (चित्त) सन्तति में परम्परा युक्त गुरु का अधिष्ठान प्रवेश हों।1।

དོན་གྱི་ངོ་སྤྲོད་གནད་དུ་ཚུད་པར་གྱུར་ཅིག །
दोन ग्यि ङो टोद् ने दु छुद् पर ग्युर चिग
अर्थ-परिचय (के) मर्म में प्रवेश हों।2।

རྟོགས་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
तोग प जि त व शिन दु ग्युद् ल क्ये बर ग्युर चिग
यथाभूत अधिगम (चित्त-)सन्तति में उत्पन्न हों।3।

སྟོབས་བཅུ་མི་འཇིགས་ལུང་བསྟན་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
तोप चु मि जिग लुङ तेन थोप पर ग्युर चिग
दश-बल, चार वैशारद्य और व्याकरण (भविष्यवाणी) प्राप्त हों।4।

ལྟ་སྟངས་གྲུབ་ཅིང་རྟེན་འབྲེལ་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
त तङ डुप चिङ तेन डेल छर बर ग्युर चिग
दर्शन-कला सिद्ध कर प्रतीत्य (-समुत्पाद) उदित हों।5।

འགྲོ་རྣམས་སྨིན་གྲོལ་གྱི་ལམ་ལ་འགོད་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
डो नम मिन डोल ग्यि लम ल गोद् नुस् पर ग्युर चिग
प्राणियों को विपाक-मुक्ति मार्ग पर आरूढ़ कर सकूँ।6।

ས་ལམ་གདན་ཐོག་གཅིག་ཏུ་བགྲོད་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
स लम देन थोग चिग तु डोद् नुस् पर ग्युर चिग
भूमि-मार्ग एक ही आसन द्वारा गमन कर सकूँ।7।

ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤྱན་གྱིས་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་བདེན་པ་མཐོང་བར་གྱུར་ཅིག །
शेस् रप क्यि चेन ग्यीस् छोस् ञिद् क्यि देन प थोङ बर ग्युर चिग
प्रज्ञा-चक्षु द्वारा धर्मता-सत्य का दर्शन कर सकूँ।8।

ཡོན་ཏན་ལོ་འདབ་བཞིན་དུ་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
योन तेन लो दप शिन दु ग्येस् पर ग्युर चिग
(समस्त) गुण पत्रोपम विस्तार को प्राप्त करें।9।

འབྲས་བུ་དཔག་བསམ་བཞིན་དུ་སྨིན་པར་གྱུར་ཅིག །
डेस् बु पग सम शिन दु मिन पर ग्युर चिग
फल कल्पतरु सा उपचित हों।10।

མོས་གུས་རི་རབ་བཞིན་དུ་བརྟན་པར་གྱུར་ཅིག །
मोस् गुस् रि रप शिन दु तेन पर ग्युर चिग
छन्द (और) आदर सुमेरु समान सुदृढ़ हों।11।

ངེས་པའི་ཤེས་པ་ཐེ་ཚོམ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
ङेस् पई शेस् प थे छ़ोम दङ डल बर ग्युर चिग
नियत-ज्ञान विचिकित्सा रहित हों।12।

ལས་ཀྱི་འཕྲོ་སད་ནས་སྨོན་ལམ་རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
लेस क्यि ठो से नेस् मोन लम नम पर दग पर ग्युर चिग
कर्मार्चि विबुद्ध होकर प्रणिधान विशुद्ध हों।13।

གོ་ཆས་འཇིག་རྟེན་གྱི་དྲི་མ་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
गो छेस् जिग तेन ग्यि डि म दग पर ग्युर चिग
कवच द्वारा लोक-मल शुद्ध हों।14।

སྒྲུབ་པ་ལ་བར་ཆད་མེད་ཅིང་དཀའ་ཐུབ་བཙན་པར་གྱུར་ཅིག །
डुप प ल बर छे मेद् चिङ का थुप ज़ेन पर ग्युर चिग
साधना बाधा रहित हों और कठोर तपस्या कर सकूँ।15।

རྩ་རླུང་ཐིག་ལེ་ལས་སུ་རུང་བར་གྱུར་ཅིག །
त्र लुङ थिग ले लेस सु रुङ बर ग्युर चिग
नाड़ी, वायु, बिन्दु कर्म योग्य हों।16।

རྟག་ཏུ་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
तग तु सम प नम पर दग पर ग्युर चिग
सदा आशय विशुद्ध हों।17।

བྱང་སེམས་ལ་ཉམས་པ་མེད་པར་གྱུར་ཅིག །
छ्ङ सेम ल ञम प मेद् पर ग्युर चिग
बोधिचित्त की हानि (कदापि) न हों।18।

ཐེག་ཆེན་གྱི་ལྟ་སྒོམ་ཉམས་སུ་སྐྱོང་བར་གྱུར་ཅིག །
थेग छेन ग्यि त गोम ञम सु न्योङ बर ग्युर चिग
महायान के दर्शन-साधना का अभ्यास कर सकूँ।19।

གཉིས་སྣང་གི་ཤེས་པ་རང་སར་གྲོལ་བར་གྱུར་ཅིག །
ञीस् नङ गि शेस् प रङ सर डोल वर ग्युर चिग
(ग्राह्य-ग्राहक रूपी) द्वयाभास ज्ञान स्व-स्थल पर मुक्त हों।20।

རིགས་ཁྱད་པར་ཅན་དུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
रिग ख्ये पर चेन दु क्ये बर ग्युर चिग
(समयानुसार) विशिष्ट जाति में उत्पन्न हों।21।

བརྒྱུད་ལྡན་བླ་མའི་རྗེས་སུ་འཛིན་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युद् देन ल मई जेस् सु ज़िन पर ग्युर चिग
परम्परावान् गुरु का अनुग्रह प्राप्त हों।22।

ལས་ཀྱི་མཐའ་མི་ལོག་པར་གྱུར་ཅིག །
लेस क्यि था मि लोग पर ग्युर चिग
कर्मान्त विरुद्ध न हों।23।

ཤེས་རབ་གསུམ་ལ་བློ་སྦྱོང་བར་གྱུར་ཅིག །
शेस् रप सुम ल लो छ्योङ बर ग्युर चिग
(श्रवणमयी आदि) तीन (प्रकार की) प्रज्ञाओं का चित्त में अभ्यास कर सकूँ।24।

དབང་གི་བྱིན་རླབས་འཇུག་པར་ཤོག་ཅིག །
वङ गि छिन लप जुग पर ग्युर चिग
अभिषेक-अधिष्ठान में प्रवेश हों।25।

བདེ་བ་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུ་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
दे व दोर जे त बु थोप पर ग्युर चिग
वज्रोपम-सुख की प्राप्ति हों।26।

རྣམ་ཤེས་རྩ་རླུང་ལ་རང་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
नम शेस् त्र लुङ ल रङ वङ थोप पर ग्युर चिग
विज्ञान (और) नाड़ी-वायु में अधिकार प्राप्त हों।27।

རང་ལུས་གཟུགས་སྐུར་འགྱུར་བར་ཤོག་ཅིག །
रङ लुस् ज़ुग कुर डुप पर ग्युर चिग
स्वकाय रूपकाय में परिवर्तित हों।28।

ཆོས་སྐུ་མངོན་སུམ་དུ་རྟོགས་པར་ཤོག་ཅིག །
छोस् कु ङोन सुम दु तोग पर ग्युर चिग
धर्मकाय का साक्षात् अधिगम हों।29।

སྤྲུལ་སྐུ་ཕྲིན་ལས་ཀྱི་གཞན་དོན་མཐར་ཕྱིན་པར་ཤོག་ཅིག །
टुल कु ठिन लेस क्यि शेन दोन थर छिन पर ग्युर चिग
निर्माणकाय रूपी कर्म द्वारा परार्थ सम्पूर्ण हों।30।

ངེས་དོན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་སྨོན་ལམ་བཞུགས་སོ། །

# नीतार्थ महामुद्रा प्रणिधान

ན་མོ་གུ་རུ།
नमो गुरु
नमो गुरवे।

བླ་མ་རྣམས་དང་ཡི་དམ་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷ། །
ल म नम दङ यि दम दक्यिल खोर ल्ह
गुरु, इष्ट और मण्ड़ल-देव

ཕྱོགས་བཅུ་དུས་གསུམ་རྒྱལ་བ་སྲས་དང་བཅས། །
छोग चु दुस् सुम ग्यल व सेस् दङ चेस्
दश-दिग् त्रिकाल-जिन, पुत्र-सहित।

བདག་ལ་བརྩེར་དགོངས་བདག་གི་སྨོན་ལམ་རྣམས། །
दग ल त्ज़ेर गोङ दग गि मोन लम नम
दया पूर्वक मुझे ध्यान दें, मेंरे प्रणिधान

ཇི་བཞིན་འགྲུབ་པའི་མཐུན་འགྱུར་བྱིན་བརླབས་མཛོད། །
जि शिन डुप पई थुन ग्युर छिन लप ज़ोद्
यथा सिद्धि हेतु, सामग्री अधिष्ठित करें।1।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
दग दङ था येस् सेम चेन थम चे क्यि
मेंरे सहित अनन्त सर्व सत्त्वों के

བསམ་སྦྱོར་རྣམ་དག་གངས་རི་ལས་སྐྱེས་པའི། །
सम छोर नम दग गङ रि लेस क्येस् पई
विशुद्ध आशय-प्रयोग रूपी हिमगिरि से उत्पन्न।

འཁོར་གསུམ་རྙོག་མེད་དགེ་ཚོགས་ཆུ་རྒྱུན་རྣམས། །
खोर सुम ञोग मेद् गे छ़ोग छु ग्युन नम
त्रिमण्ड़ल विशुद्ध पुण्य-राशि रूपी जल-धारायें

རྒྱལ་བ་སྐུ་བཞིའི་རྒྱ་མཚོར་འཛུག་གྱུར་ཅིག །
ग्यल व कु शी ग्य छ़ोर जुग ग्युर चिग
जिन-चतुर्काय रूपी समुद्र में प्रविष्ट हों।2।

ཇི་སྲིད་དེ་མ་ཐོབ་པ་དེ་སྲིད་དུ། །
जि सिद् दे म थोप प दे सिद् दु
यावत् उसकी प्राप्ति नहीं होने तक

སྐྱེ་དང་སྐྱེ་བ་ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་ཡང་། །
क्ये दङ क्ये व छ़े रप कुन तु यङ
सभी जन्म और जन्मान्तरों में भी।

སྡིག་དང་སྡུག་བསྔལ་སྒྲ་ཡང་མི་གྲག་ཅིང་། །
दिग दङ दुग ङल ड यङ मि डग चिङ
पाप और दुःख-शब्द की प्रतिध्वनि (तक) न हों

བདེ་དགེ་རྒྱ་མཚོའི་དཔལ་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
दे गे ग्य छ़ोइ पल ल चोद् पर शोग
सुख रूपी पुण्य-सागर-श्री का सम्भोग करें।3।

དལ་འབྱོར་མཆོག་ཐོབ་དད་བརྩོན་ཤེས་རབ་ལྡན། །
दल छोर छोग थोप दे ज़्रोन शेस् रप देन
परम क्षण-सम्पद् प्राप्त, श्रद्धा-वीर्य-प्रज्ञावान् बन

བཤེས་གཉེན་བཟང་བསྟེན་གདམས་པའི་བཅུད་ཐོབ་ནས།།
शेस् ञेन ज़ङ तेन दम पई चुद् थोप नेस्
सु-कल्याणमित्र सेवन कर, उपदेश-रसायन प्राप्त कर।

ཚུལ་བཞིན་སྒྲུབ་ལ་བར་ཆད་མ་མཆིས་པར། །
छुल शिन डुप ल बर छे म छीस् पर
नियमवत साधना में बाधा रहित होकर

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་དམ་ཆོས་སྤྱོད་པར་ཤོག །
छे रप कुन तु दम छोस् चोद् पर शोग
समस्त जन्मों में सद्धर्म का आचरण करूँ।4।

ལུང་རིགས་ཐོས་པས་མི་ཤེས་སྒྲིབ་ལས་གྲོལ། །
लुङ रिग थोस् पेस् मि शेस् डिप लेस डोल
आगम-युक्ति श्रवण से अज्ञानावरण से मुक्त हो

མན་ངག་བསམ་པས་ཐེ་ཚོམ་མུན་ནག་བཅོམ། །
मेन ङग सम पेस् थे छोम मुन नग चोम
उपदेश चिन्तन से विचिकित्सान्धकार नष्ट होकर।

སྒོམ་བྱུང་འོད་ཀྱིས་གནས་ལུགས་ཇི་བཞིན་གསལ། །
गोम छुङ होद् क्यीस् नेस् लुग जि शिन सल
भावनामयी प्रभा से यथाभूत प्रकृति प्रकट हो

ཤེས་རབ་གསུམ་གྱི་སྣང་བ་རྒྱས་པར་ཤོག །
शेस् रप सुम ग्यि नङ व ग्येस् पर शोग
त्रिविध प्रज्ञा का प्रकाश विस्तृत हों।5।

རྟག་ཆད་མཐའ་བྲལ་བདེན་གཉིས་གཞི་ཡི་དོན། །
तग छे था डल देन ञीस् शि यि दोन
नित्य-उच्छेदान्त रहित, सत्यद्वयाधार का अर्थ

སྒྲོ་སྐུར་མཐའ་བྲལ་ཚོགས་གཉིས་ལམ་མཆོག་གིས། །
डो कुर था डल छोग ञीस् लम छोग गीस्
अपवाद-कोटि रहित, द्वि-सम्भार रूपी परम-मार्ग द्वारा।

སྲིད་ཞིའི་མཐའ་བྲལ་དོན་གཉིས་འབྲས་ཐོབ་པའི། །
सिद् शी था डल दोन ञीस् डेस् थोप पई
भव-शान्त-कोटि रहित, द्वयर्थ फल प्राप्ति वाले

གོལ་འཁྲུགས་མེད་པའི་ཆོས་དང་ཕྲད་པར་ཤོག །
गोल छुग मेद् पई छोस् दङ ठे पर शोग
विपथ भ्रान्त रहित धर्म से मिलन हों।6।

སྦྱང་གཞི་སེམས་ཉིད་གསལ་སྟོང་ཟུང་འཇུག་ལ། །
छङ शि सेम ञिद् सल तोङ ज़ुङ जुग ल
शोधनाधार- चित्त ही प्रकट-शून्य युगनद्ध में

སྦྱོང་བྱེད་ཕྱག་ཆེན་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་ཆེས། །
छोङ छेद् छग छेन दोर जे नल छोर छेस्
शोधक- महामुद्रा वज्र महायोग द्वारा।

སྦྱང་བྱ་གློ་བུར་འཁྲུལ་པའི་དྲི་མ་རྣམས། །
छङ छ लो बुर ठुल पई डि म नम
शोध्य- आकस्मिक भ्रान्ति रूपी मल

སྦྱངས་འབྲས་དྲི་བྲལ་ཆོས་སྐུ་མངོན་གྱུར་ཤོག །
छङ डेस् डि डल छोस् कु ङोन ग्युर शोग
शोधन-फल- विमल धर्मकाय प्रत्यक्ष हों।7।

གཞི་ལ་སྒྲོ་འདོགས་ཆོད་པ་ལྟ་བའི་གདེང་། །
शि ल डो दोग छोद् प त बई देङ
वस्तु में परीक्षापूर्ण (है) दर्शन की विश्वस्तता

དེ་ལ་མ་ཡེངས་སྐྱོང་བ་སྒོམ་པའི་གནད། །
दे ल म येङ क्योङ व गोम पई ने
उसमें अविक्षेप पालन (है) भावना का मर्म।

སྒོམ་དོན་ཀུན་ལ་རྩལ་སྦྱོང་སྤྱོད་པའི་མཆོག །
गोम दोन कुन ल ज़ल छ्योङ चोद् पई छोग
समस्त भावनाओं में कला-अभ्यास (है) परम आचरण

ལྟ་སྒོམ་སྤྱོད་པའི་གདེང་དང་ལྡན་པར་ཤོག །
त गोम चोद् पई देङ दङ देन पर शोग
दर्शन-भावना-चर्या में विश्वासी बन जाऊँ।8।

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཀྱི་རྣམ་འཕྲུལ་ཏེ། །
छोस् नम थम चे सेम क्यि नम ठुल ते
समस्त धर्म चित्त द्वारा निर्मित

སེམས་ནི་སེམས་མེད་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོས་སྟོང་། །
सेम नि सेम मेद् सेम क्यि ङो बोस् तोङ
चित्त तो अचित्त, चित्त स्वभाव से शून्य।

སྟོང་ཞིང་མ་འགགས་ཅིར་ཡང་སྣང་བ་སྟེ། །
तोङ शिङ म गग चिर यङ नङ व ते
शून्य अनिरोधित, कुछ भी आभासित

ལེགས་པར་བརྟག་ནས་གཞི་རྩ་ཆོད་པར་ཤོག །
लेग पर तग नेस् शि ज़ छोद् पर शोग
सु-परीक्षा कर मूल का समाधान हों।9।

ཡོད་མ་མྱོང་བའི་རང་སྣང་ཡུལ་དུ་འཁྲུལ། །
योद् म न्योङ बई रङ नङ युल दु ठुल
असत् स्व-भासित विषय में भ्रमित हैं

མ་རིག་དབང་གིས་རང་རིག་བདག་ཏུ་འཁྲུལ། །
म रिग वङ गीस् रङ रिग दग तु ठुल
अज्ञानवश स्वसंवेदनात्म मे भ्रमित हैं।

གཉིས་འཛིན་དབང་གིས་སྲིད་པའི་ཀློང་དུ་འཁྱམས། །
ञीस् ज़िन वङ गीस् सिद् पई लोङ दु ख्यम
द्वयाभासवश भव-धातु में भ्रमण करते

མ་རིག་འཁྲུལ་པའི་རྩད་དང་ཆོད་པར་ཤོག །
म रिग ठुल पई ज़े दर छोद् पर शोग
अज्ञान रूपी भ्रम का समूल नाश हों।10।

ཡོད་པ་མ་ཡིན་རྒྱལ་བས་ཀྱང་མ་གཟིགས། །
योद् प म यिन ग्यल वे क्यङ म ज़िग
सत् नहीं, जिन (बुद्ध) ने भी नहीं देखा

མེད་པ་མ་ཡིན་འཁོར་འདས་ཀུན་གྱི་གཞི། །
मेद् प म यिन खोर देस् कुन ग्यि शि
असत् नहीं, भव-निर्वाण सभी का आधार है।

འགལ་འདུ་མ་ཡིན་ཟུང་འཇུག་དབུ་མའི་ལམ། །
गल दु म यिन ज़ुङ जुग उ मई लम
विरुद्ध-संग्रह नहीं, युगनद्ध मध्यम-मार्ग

མཐའ་བྲལ་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་རྟོགས་པར་ཤོག །
था डल सेम क्यि छोस् ञिद् तोग पर शोग
कोटि रहित चित्त-धर्मता का ज्ञान हों।11।

འདི་ཡིན་ཞེས་པ་གང་གིས་མཚོན་པ་མེད། །
दि यिन शेस् प गङ गीस् छोन प मेद्
यह है- ऐसा कह किसी द्वारा लक्षित नहीं

འདི་མིན་ཞེས་བྱ་གང་གིས་བཀག་པ་མེད། །
दि मिन शेस् छ गङ गीस् कग प मेद्
यह नहीं- ऐसा कह किसी से निरुद्ध नहीं।

བློ་ལས་འདས་པའི་ཆོས་ཉིད་འདུས་མ་བྱས། །
लो लेस देस् पई छोस् ञिद् दुस् म छेस्
चित्तातीत (रूपी) धर्मता असंस्कृत

ཡང་དག་དོན་གྱི་མཐའ་ནི་ངེས་པར་ཤོག །
यङ दग दोन ग्यि था नि ङेस् पर शोग
सम्यक् अर्थ की कोटि नियत हों।12।

འདི་ཉིད་མ་རྟོགས་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོར་འཁོར། །
दि ञिद् म तोग खोर बई ग्य छ़ोर खोर
इसी को नहीं जान संसार-सागर में घूमते

འདི་ཉིད་རྟོགས་ན་སངས་རྒྱས་གཞན་ན་མེད། །
दि ञिद् तोग न सङ ग्येस् शेन न मेद्
इसे जान लें तो बुद्ध अन्यत्र नहीं हैं।

ཐམས་ཅད་འདི་ཡིན་འདི་མིན་གང་ཡང་མེད། །
थम चे दि यिन दि मिन गङ यङ मेद्
सभी यह है, यह नहीं, कुछ भी नहीं

ཆོས་ཉིད་ཀུན་གཞིའི་མཚང་ནི་རིག་པར་ཤོག །
छोस् ञिद् कुन शी छ़ङ नि रिग पर शोग
धर्मता (रूपी) आलय-विज्ञान को जानूँ।13।

སྣང་ཡང་སེམས་ལ་སྟོང་ཡང་སེམས་ཡིན་ཏེ། །
नङ यङ सेम ल तोङ यङ सेम यिन ते
आभास भी चित्त और शून्य भी चित्त है

རྟོགས་ཀྱང་སེམས་ལ་འཁྲུལ་ཡང་རང་གི་སེམས། །
तोग क्यङ सेम ल ठुल यङ रङ गि सेम
अधिगम भी चित्त तथा भ्रम भी स्व-चित्त है।

སྐྱེས་ཀྱང་སེམས་ལ་འགགས་ཀྱང་སེམས་ཡིན་པས། །
क्येस् क्यङ सेम ल गग क्यङ सेम यिन पेस्
जाति भी चित्त एवं निरुद्ध भी चित्त होने से

སྒྲོ་འདོགས་ཐམས་ཅད་སེམས་ལ་ཆོད་པར་ཤོག །
डो दोग थम चे सेम ल छोद् पर शोग
सभी परीक्षायें चित्त में आपूर्ण हों।14।

བློས་བྱས་རྩོལ་བའི་སྒོམ་གྱིས་མ་བསླད་ཅིང་། །
लोस् छेस् ज़ोल बई गोम ग्यीस् म ले चिङ
बुद्धि-कृत यत्न-भावना द्वारा अमिश्रित

ཐ་མལ་འདུ་འཛིའི་རླུང་གིས་མ་བསྒྱོད་པར། །
थ मल दु ज़ी लुङ गीस् म क्योद् पर
निकृष्ट संसर्ग-वायु से अविचलित।

མ་བཅོས་གཉུག་མར་རང་བབ་འཇོག་ཤེས་པའི། །
म चोस् ञुग मर रङ बप जोग शेस् पई
अकृत्रिम, प्रकृत, स्व-संचरण स्थापित-ज्ञान

སེམས་དོན་ཉམས་ལེན་མཁས་ཤིང་སྐྱོང་བར་ཤོག །
सेम दोन ञम लेन खेस् शिङ क्योङ वर शोग
चित्तार्थ अभ्यास का कुशलपूर्वक पालन करूँ।15।

ཕྲ་རགས་རྟོག་པའི་དབའ་རླབས་རང་སར་ཞི། །
ठ रग तोग पई वा लप रङ सर शि
स्थूल-सूक्ष्म विकल्प रूपी लहरें स्व-स्थल में शान्त हों

གཡོ་མེད་སེམས་ཀྱི་ཆུ་བོ་ངང་གིས་གནས། །
यो मेद् सेम क्यि छु बो ङङ गीस् नेस्
अचल चित्त रूपी ओघ स्वभावतया स्थिर हों।

བྱིང་རྨུགས་རྙོག་པའི་དྲི་མ་དང་བྲལ་བའི། །
छिङ मुग ञोग पई डि म दङ डल बई
सत्यान-निमज्जन दोष रूपी मल से रहित

ཞི་གནས་རྒྱ་མཚོ་མི་གཡོ་བརྟན་པར་ཤོག །
शि नेस् ग्य छ़ो मि यो तेन पर शोग
शमथ रूपी समुद्र अचल और दृढ़ हों।16।

བལྟར་མེད་སེམས་ལ་ཡང་ཡང་བལྟས་པའི་ཚེ། །
तर मेद् सेम ल यङ यङ तेस् पई छ़े
अदृश्य चित्त को बारम्बार देखने पर

མཐོང་མེད་དོན་ནི་ཇི་བཞིན་ལྷག་གེར་མཐོང་། །
थोङ मेद् दोन नि जि शिन ल्हग गेर थोङ
अदर्शित-अर्थ का यथाभूत अत्यधिक दर्शन होता।

ཡིན་མིན་དོན་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཆོད་པ་ཉིད། །
यिन मिन दोन ल थे छ़ोम छोद् प ञिद्
है, नहीं- इस अर्थ का संशय निवारण होता

ཡུལ་ལ་བལྟས་པས་ཡུལ་མེད་སེམས་སུ་མཐོང༌། །
युल ल तेस् पेस् युल मेद् सेम सु थोङ
विषय को देखने से- विषय नहीं, चित्तमयी देखा

གཉིས་ལ་བལྟས་པས་གཉིས་འཛིན་རང་སར་གྲོལ། །
ञीस् ल तेस् पेस् ञीस् ज़िन रङ सर डोल
द्वय को देखने से- द्वय-ग्राहक स्व-स्थल पर मुक्त हुआ

ཡིད་བྱེད་བྲལ་བ་འདི་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེ། །
यिद् छेद् डल व दि नि छग ग्य छे
मनस्करण से रहित (अमनस्कार) यह तो 'महामुद्रा' है

འདི་ནི་ཀུན་འདུས་རྫོགས་ཆེན་ཞེས་ཀྱང་བྱ། །
दि नि कुन दुस् ज़ोग छेन शेस् क्यङ छ
इसे तो सर्वसंग्रह 'महासम्पन्न' भी कहा जाता

ཞེན་པ་མེད་པའི་བདེ་ཆེན་རྒྱུན་ཆད་མེད། །
शेन प मेद् पई दे छेन ग्युन छे मेद्
अभिनिवेश रहित महासुख (का) परम्परोच्छेद नहीं होता

བློ་ལས་འདས་པའི་མི་རྟོག་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ། །
लो लेस देस् पई मि तोग ल्हुन ग्यीस् डुप
चित्त से अतीत निर्विकल्प अनाभोग होता है

བཟང་ཞེན་ཉམས་ཀྱི་འཛིན་པ་རང་སར་གྲོལ། །
ज़ङ शेन ञम क्यि ज़िन प रङ सर डोल
शुभासक्ति-रस-ग्राहक स्व-स्थल पर मुक्त है

ཐ་མལ་ཤེས་པ་སྤང་བླང་བྲལ་ཐོབ་མེད། །
थ मल शेस् प पङ लङ डल थोप मेद्
प्रकृत-ज्ञान, हेयोपादेय अप्राप्ति-प्राप्ति से रहित

འཁྲུལ་མེད་རང་ངོ་རང་གིས་ཤེས་པར་ཤོག །
ठुल मेद् रङ ङो रङ गीस् शेस् पर शोग
अभ्रान्त स्वभाव को स्वयं द्वारा जान लूँ।17।

སེམས་ལ་བལྟས་པས་སེམས་མེད་ངོ་བོས་སྟོང༌། །
सेम ल तेस् पेस् सेम मेद् ङो बोस् तोङ
चित्त को देखने से- अचित्त, स्वरूपतया शून्य है।

འོད་གསལ་སེམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་རྟོགས་པར་ཤོག །
ह़ोद् सल सेम क्यि नेस् लुग तोग पर शोग
प्रभास्वर चित्त-स्वभाव का ज्ञान हों।18।

མཐའ་དང་བྲལ་བ་དབུ་མ་ཆེན་པོ་ཡིན། །
था दङ डल व उ म छेन पो यिन
कोटि से रहित यह 'महा-मध्यमक'।

གཅིག་ཤེས་ཀུན་དོན་རྟོགས་པའི་གདེང་ཐོབ་ཤོག །
चिग शेस् कुन दोन तोग पई देङ थोप शोग
एकज्ञ सर्वार्थ-ज्ञान में विश्वास प्राप्त हों।19।

མཚན་འཛིན་མེད་པའི་འོད་གསལ་སྒྲིབ་གཡོགས་བྲལ། །
छ़ेन ज़िन मेद् पई ह़ोद् सल डिप योग डल
निमित्त-ग्राहक रहित प्रभास्वर आवरणाच्छादित नहीं होता।

རྩོལ་མེད་ཉམས་མྱོང་རྒྱུན་ཆད་མེད་པར་ཤོག །
त्ज़ोल मेद् ञम न्योङ ग्युन छे मेद् पर शोग
प्रयत्न रहित अनुभव निरन्तर होता रहे।20।

ངན་རྟོག་འཁྲུལ་པ་རང་བཞིན་དབྱིངས་སུ་དག །
ङेन तोग ठुल प रङ शिन यिङ सु दग
दुर्विकल्प भ्रान्ति स्वभाव-धातु मे शुद्ध है।

སྤྲོས་བྲལ་ཆོས་ཉིད་བདེན་པ་རྟོགས་པར་ཤོག །
टोस् डल छोस् ञिद् देन प तोग पर शोग
निष्प्रपञ्च धर्मता-सत्य का अवबोध हों।21।

འགྲོ་བའི་རང་བཞིན་རྟག་ཏུ་སངས་རྒྱས་ཀྱང་། །
डो बई रङ शिन तग तु सङ ग्येस् क्यङ
प्राणी-स्वभाव सदा बुद्ध होने पर भी

མ་རྟོགས་དབང་གིས་མཐའ་མེད་འཁོར་བར་འཁྱམས། །
म तोग वङ गीस् था मेद् खोर वर ख्यम
अज्ञानवश अनन्त संसार में घूमते।

སྡུག་བསྔལ་མུ་མཐའ་མེད་པའི་སེམས་ཅན་ལ། །
दुग ङल मु था मेद् पई सेम चेन ल
कोटि-अन्त रहित दुःखी सत्त्वों हेतु

བཟོད་མེད་སྙིང་རྗེ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་བར་ཤོག །
ज़ोद् मेद् ञिङ जे ग्युद् ल क्ये बर शोग
अनन्त करुणा (चित्त-)सन्तति में उत्पन्न हों।22।

བཟོད་མེད་སྙིང་རྗེའི་རྩལ་ཡང་མ་འགགས་པའི། །
ज़ोद् मेद् ञिङ जे ऱ्सल यङ म गग पई
अनिरूद्ध अनन्त करुणा-कला का भी

བརྩེ་དུས་ངོ་བོ་སྟོང་དོན་རྗེན་པར་ཤར། །
त्से दुस् ङो बो तोङ दोन जेन पर शर
दया अवसर पर शून्य-स्वरूप नग्नोदित हों।

ཟུང་འཇུག་གོལ་ས་བྲལ་བའི་ལམ་མཆོག་འདི། །
ज़ुङ जुग गोल स डल बई लम छोग दि
विपथ रहित युगनद्ध यह उत्तम-मार्ग

འབྲལ་མེད་ཉིན་མཚན་ཀུན་ཏུ་བསྒོམ་པར་ཤོག །
डल मेद् ञिन छेन कुन तु गोम पर शोग
विरहित अहोरात्र सदा भावना करूँ।23।

སྒོམ་སྟོབས་ལས་བྱུང་སྤྱན་དང་མངོན་ཤེས་དང་། །
गोम तोप लेस छुङ चेन दङ ङोन शेस् दङ
भावन-बल से प्राप्त माँस-चक्षु और अभिज्ञा (द्वारा)

སེམས་ཅན་སྨིན་བྱས་སངས་རྒྱས་ཞིང་རབ་སྦྱངས། །
सेम चेन मिन छेस् सङ ग्येस् शिङ रप छङ
सत्त्व उपचित कर बुद्ध-क्षेत्र सुशोधित होता।

སངས་རྒྱས་ཆོས་རྣམས་འགྲུབ་པའི་སྨོན་ལམ་རྫོགས། །
सङ ग्येस् छोस् नम डुप पई मोन लम ज़ोग
समस्त बुद्ध-धर्म-सिद्धि का प्रणिधान पूर्ण होता

རྫོགས་སྨིན་སྦྱངས་གསུམ་མཐར་ཕྱིན་སངས་རྒྱས་ཤོག །
ज़ोग मिन छङ सुम थर छिन सङ ग्येस् शोग
पूर्ण-विपाक-शोधन तीन में पारंगत हो बुद्धत्व प्राप्त करूँ।24।

ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་ཐུགས་རྗེ་དང་། །
छोग चुइ ग्यल व सेस् चेस् थुग जे दङ
दश-दिग् जिन (और) पुत्र-सहित के करुणा तथा

རྣམ་དཀར་དགེ་བ་ཇི་སྙེད་ཡོད་པའི་མཐུས། །
नम कर गे व जि ञेद् योद् पई थुस्
विशुद्ध जितने भी पुण्य हैं (उन) के बल से।

དེ་ལྟར་བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
दे तर दग दङ सेम चेन थम चे क्यि
ऐसे मुझ सहित समस्त सत्त्वों के

སྨོན་ལམ་རྣམ་དག་ཇི་བཞིན་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
मोन लम नम दग जि शिन डुप ग्युर चिग
विशुद्ध प्रणिधान यथाभूत सिद्ध हों।25।

ཅེས་རྗེ་རང་བྱུང་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའོ། །
यह जे-रङ्-जुङ् दोर्जे द्वारा रचित है।

སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་སྨོན་ལམ།

# अवलोकितेश्वर प्रणिधान

ན་མོ་ལོ་ཀེ་ཤྭ་ར་ཡེ། །
नमो लोकेश्वराये
नमो लोकेश्वाराय।

དུས་གསུམ་བདེ་གཤེགས་མཁྱེན་བརྩེ་གཅིག་བསྡུས་པ། །
दुस् सुम दे शेग ख्येन त्ज़े चिग बदुस् प
त्रिकाल सुगतों के ज्ञान-दया एक में संगृहीत

འོད་དཔག་མེད་པས་བྱིན་བརླབས་སྤྲུལ་པའི་སྐུ། །
ह़ोद् पग मेद् पेस् छिन लप टुल पई कु
अमिताभ द्वारा अधिष्ठित निर्माणकाय।

སྨོན་ལམ་མཛད་འཕྲིན་ཐུགས་རྗེ་ཕུལ་བྱུང་བ། །
मोन लम ज़े ठिन थुग जे फुल छुङ व
प्रणिधान, कर्म (और) करुणा अतिशय

རྒྱལ་བ་སྲས་དང་སློབ་མ་དགྲ་བཅོམ་བཅས། །
ग्यल व सेस् दङ लोप म ड चोम चेस्
जिन, (जिन-)पुत्र, शिष्य और अर्हत सहित।1।

ཡི་དམ་ཆོས་སྐྱོང་དཀོན་མཆོག་སྐྱབས་ཀྱི་མཆོག །
यि दम छोस् क्योङ कोन छोग क्यप क्यि छोग
इष्ट, धर्मपाल, त्रिरत्न- शरणोत्तम

འགྲོ་བའི་དོན་དུ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་ཚོགས། །
डो बई दोन दु थुग जे छेन पोइ छ़ोग
सत्त्वार्थ, महाकरुणा गण।

ཞིང་གི་རྡུལ་མཉམ་དཔག་མེད་ཡོན་གནས་རྣམས། །
शिङ गि दुल ञम पग मेद् योन नेस् नम
क्षेत्र रजोपम, अपरिमित ज्ञानाश्रय वाले

ལྷག་བསམ་སྨོན་ལམ་འགྲུབ་པའི་དཔང་དུ་བཞུགས། །
ल्हग सम मोन लम डुप पई पङ दु शुग
अध्याशय प्रणिधान सिद्धि हेतु साक्षी स्वरूप स्थित हैं।2।

བདག་དང་བདག་གི་ཉེ་འབྲེལ་འཁོར་སློབ་འབངས། །
दग दङ दग गि ञे डेल खोर लोप बङ
मैं और मेरे सम्बन्धी, परिवार, शिष्य-प्रजा

གཞན་དག་དད་པའི་འགྲོ་བ་ཤི་གསོན་རྣམས། །
शेन दग दे पई डो व शि सोन नम
अन्य भी, श्रद्धावान् प्राणी जीवित-मृत।

ཐར་འདོད་བདེ་ཐོབ་ཕྱིར་དུ་རེ་བ་དང་། །
थर दोद् दे थोप छिर दु रे व दङ
मोक्ष-अभिलाषी, सुख-प्राप्ति हेतु आशावान्

ལྟོས་པས་དཔག་མེད་སྲི་ཞུ་སྒྲུབ་པ་དང་། །
तोस् पेस् पग मेद् सि शु डुप प दङ
आश्रयवान् बन अपरिमित सेवा किये।3।

རྣམ་བཞིའི་དཀོར་དང་བདག་གི་གནས་ཡུལ་མཁར། །
नम शी कोर दङ दग गि नेस् युल खर
चतुर्विध सम्पत्ति तथा मेरे स्थान, क्षेत्र, गढ़

ཟས་གོས་བཏུང་བ་ཡོ་བྱད་སྒོ་གསུམ་གྱི། །
ज़ेस् गोस् तुङ व यो छ़े गो सुम ग्यि
खाद्य, वस्त्र, पेय-पदार्थ त्रिद्वार के।

ལས་གྱུར་བྲན་དུ་བཀོལ་དང་བསྔོས་ཤ་ཟོས། །
लेस ग्युर डेन दु कोल दङ ङोस् श ज़ोस्
कर्मभूत नौकर बना, परिणामित माँस खाया

འཚོ་ཕྱིར་སྲོག་བཅད་འདོད་ཕྱིར་བསྡིག་འཕྲོག་བགྱིས། །
छ़ो छिर सोग चे दोद् छिर बदिग ठोग ग्यीस्
जीवन हेतु प्राणि-हत्या, कामवश पापहरण किया।4।

བདག་ལ་ཕན་གྲོགས་མཐུན་སྦྱོར་གནོད་བྱེད་བགེགས། །
दग ल फेन डोग थुन छोर नोद् छेद् गेग
मेरे सामग्री सहायक, हानि पहूँचाने वाले विघ्न

བར་མས་གཙོ་བྱས་མཐོང་ཐོས་དྲན་རེག་དང་། །
बर मेस ज़्रो छेस् थोङ थोस् डेन रेग दङ
प्रधानतया मध्यस्थ (और) देखे, सुने, स्मृति, स्पर्श-कर्ता

སྣ་ཚོགས་གང་འབྲེལ་ཁམས་གསུམ་འགྲོ་བ་རྣམས། །
न छ़ोग गङ डेल खम सुम डो व नम
नाना यथा सम्बद्ध त्रिधातु सत्त्व।

ཚེ་ཟད་འཆི་བདག་གཤིན་རྗེའི་དྲུང་སླེབས་ཏེ། །
छ़े ज़े छि दग शिन जे डुङ लेप ते
आयु क्षति होते मृत्यपति-यम समीप पहूँचने पर।5।

ཀུན་གྱིས་མི་སྟོངས་སྡིག་བྱས་འགྱོད་གནོང་ཚེ། །
कुन ग्यीस् मि तोङ दिग छेस् ग्योद् नोङ छ़े
सहायक-शून्य बन, किये पाप से पश्चाताप युक्त होने पर

བར་དོའི་སྣང་བ་སྒྱུ་མར་ངོ་ཤེས་ཤིང་། །
बर दोइ नङ व ग्यु मर ङो शेस् शिङ
अन्तराभव-आभास को माया स्वरूप जानकर।

མཚམས་སྦྱོར་ངན་པའི་བར་ཆད་ཟློག་པ་དང་། །
छ़म छोर ङेन पई बर छे दोग प दङ
बुरे प्रतिसन्धि-बाधा का निवर्तन और

འཕོ་བའི་བསུ་མ་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
फो बई सु म ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
संक्रमण में स्वागत करें (हे) अवलोकितेश्वर।6।

དེ་ལས་བར་དོའི་སྣང་བ་འཆར་སྲིད་དེ། །
दे लेस बर दोइ नङ व छर सिद् दे
सम्भव है इससे अन्तराभव उदित हो

མཐོང་སྣང་ཐམས་ཅད་དགྲ་རུ་ལྡང་བའི་ཚེ། །
थोङ नङ थम चे ड रु दङ बई छ़े
समस्त दर्शनाभास के शत्रुवत उत्थित होने पर।

ཡོན་པོའི་ལམ་ལ་སྲོང་བའི་འཁར་བ་བཞིན། །
योन पोइ लम ल सोङ बई खर व शिन
वक्र-मार्ग को समतल बनाने वाले दण्ड समान

འབྲལ་མེད་སྐྱེལ་མ་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
डल मेद् क्येल म ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
अलग न हो पथ-प्रदर्शक बने (हे) अवलोकितेश्वर।7।

ཆགས་སྡང་དབང་གིས་གནས་ངན་བཟང་མཐོང་སྟེ། །
छग दङ वङ गीस् नेस् ङेन ज़ङ थोङ ते
राग-द्वेष वशीभूत हो, बुरे स्थान अच्छे दिखते

མཐོང་སྣང་ཐམས་ཅད་ཆགས་པར་ལྡང་བའི་ཚེ། །
थोङ नङ थम चे छग पर दङ बई छ़े
समस्त दर्शनाभास आसक्ति में उत्थित होने पर।

ངན་འགྲོ་སྲིན་མོའི་གླིང་སྒོ་འགོག་པ་དང་། །
ङेन डो सिन मोइ लिङ गो गोग प दङ
दुर्गति रूपी राक्षसी-द्वीप का द्वार बन्द करें तथा

ལ་ལ་དམྱལ་བར་ཚ་གྲང་བཙོ་སྲེག་གིས། །
ल ल न्यल बर छ़ डङ ज़ो सेग गीस्
कुछ को शीतोष्ण-नरकों में उबालने-जलाने से

ཐུགས་རྗེའི་ཆུ་དང་སྙིང་རྗེའི་ག་བུར་ཆར། །
थुग जे छु दङ ञिङ जे ग पुर छर
करुणा-जल और करुणा-कर्पूर वर्षा

ལ་ལ་ཡི་དྭགས་གནས་སུ་བཟའ་བཏུང་གིས། །
ल ल यि दग नेस् सु ज़ा तुङ गीस्
कुछ तो प्रेत-स्थल में खाद्य-पेय द्वारा

བྱམས་པའི་རྒྱུན་གཏེར་གྱིས་ཚིམ་ཕྱག་སོར་གྱིས། །
छम पई ग्युन तेर ग्यीस् छ़िम छग सोर ग्यीस्
मैत्री-धारा-निधि से तृप्त करा हस्तांगुली द्वारा

ལ་ལ་དུད་འགྲོར་གཅིག་གིས་གཅིག་ཟ་ཞིང་། །
ल ल दुद् डोर चिग गीस् चिग ज़ शिङ
कश्चित् तिर्यग् में अन्योन्य भक्षण करते

གཏི་མུག་མུན་པ་འཐིབས་པའི་སྨག་རུམ་ལ། །
ति मुग मुन प थिप पई मग रुम ल
अज्ञानान्धकार आवरणित घने अन्धकार में

ལ་ལ་ལྷ་མིན་ཡུལ་དུ་འཐབ་རྩོད་ཀྱིས། །
ल ल ल्ह मिन युल दु थप ज़ोद् क्यीस्
कश्चित असुर योनि में झगडे-विवाद से

ཀུན་སྙོམས་རི་བོ་ཆེན་པོའི་གྲིབ་བསིལ་གྱིས། །
कुन ञोम रि बो छेन पोइ डिप सिल ग्यीस्
सर्व-समता रूपी महागिरि-छाया द्वारा

དལ་འབྱོར་ནོར་དང་སྤྲོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
दल छोर नोर दङ टोद् चिग चेन रेस ज़िग
क्षण-सम्पद्-सम्पत्ति से युक्त करायें (हे)
अवलोकितेश्वर।8।

མི་བཟད་འཇིགས་མེས་བསྐལ་མང་མནར་གྱུར་ཚེ། །
मि ज़े जिग मेस् कल मङ मनर ग्युर छ़े
घोर भयानक अग्नि से अनेक कल्पों तक सन्तप्त होते
समय

ཕབ་ནས་ཞེ་སྡང་སོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
फप नेस् शे दङ सोद् चिग चेन रेस ज़िग
कराकर द्वेष को मिटायें (हे) अवलोकितेश्वर।9।

བཀྲེས་ཕོངས་མེ་མཚོན་ཟ་ལ་ཕྱག་གི་མཐིལ། །
टेस् फोङ मे छ़ोन ज़ ल छग गि थिल
भूख से दयनीय हो अग्नि-शस्त्र खाने वालों को,
करतल-

སེར་སྣའི་མདུད་པ་གྲོལ་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
सेर नई दुद् प ठोल चिग चेन रेस ज़िग
मात्सर्य-गांठ को खोलें (हे) अवलोकितेश्वर।10।

བཀོལ་སྤྱོད་ཤ་པགས་དབང་དུ་གསོད་བྱེད་ཚེ། །
कोल चोद् श पग वङ दु सोद् छेद् छ़े
बेगारी, माँस, चर्मवश मरते समय।

ཡེ་ཤེས་སྒྲོན་མེ་སྦོར་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
ये शेस् डोन मे बोर चिग चेन रेस ज़िग
(हे) अवलोकितेश्वर ज्ञान का दीप जलायें।11।

གཡུལ་འཐྲུགས་ལས་ཀྱིས་དབང་མེད་དུཿཁ་ལ། །
युल ठुग लेस क्यीस् वङ मेद् दुःख ल
युद्धरत हो कर्मवश दुःखियों को।

ཕྲག་དོག་རླུང་སྒོ་ཆོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
ठग दोग लुङ गो छोद् चिग चेन रेस ज़िग
हे अवलोकितेश्वर इर्ष्या वायु-द्वार को काटें।12।

ལ་ལ་ལྷ་གནས་ལོངས་སྤྱོད་བདེ་བ་ལ། །
ल ल ल्ह नेस् लोङ चोद् दे व ल
कश्चित देव-स्थल के सम्पत्ति-सुख में खोकर

ཐུགས་རྗེ་རྨད་དུ་བྱུང་བའི་གྲུ་རྫིངས་ཀྱིས། །
थुग जे मे दु छुङ बई डु ज़िङ क्यीस्
अद्भुत करुणा-भूत नौका द्वारा

མི་རྣམས་སྐྱེ་ཀ་ན་འཆིའི་ཆུ་བོ་བཞིར། །
मि नम क्ये ग न छी छु बो शिर
मनुष्य लोग जाति, जरा, रोग, मरण चार-ओघ में

གཉིས་འཛིན་རྦ་ལ་འཁྲོ་བའི་གར་མཁན་ཚོགས། །
ञीस् ज़िन ब ल छो बई गर खेन छ़ोग
द्वि-ग्राहक लहरों में उतराते नृत्य कर्ताओं को

བདག་འཛིན་ཕ་མས་བསྐྱེད་པའི་བྱིས་པའི་ཚོགས། །
दग ज़िन फ मेस क्येद् पई छीस् पई छ़ोग
आत्म-ग्राहक (रूपी) माता-पितोत्पन्न बाल-गण

དུག་ལྔའི་མཚོན་ཆར་འབེབས་པའི་སྐྱེ་བོ་ཡི། །
दुग ङई छ़ोन छर बेप पई क्ये बो यि
पंचविष रूपी शस्त्र फेंकने वाले पुरुष-

དཔེར་ན་མི་གཙང་བ་ལ་སྦྲང་བུ་བཞིན། །
पेर न मि ज़ङ व ल डङ बु शिन
यथा अशुचि में मक्षिका जैसे

དལ་མེད་སྡུག་བསྔལ་བསྒྲུབ་པའི་བྱ་བ་ཡི། །
दल मेद् दुग ङल डुप पई छ व यि
आलस बिना, दुःख-साधन कार्यों के

འདི་དག་ཆོས་ལྡན་ལུས་ཐོབ་མཚན་ལྡན་གྱི། །
दि दग छोस् देन लुस् थोप छ़ेन देन ग्यि
ये (सभी) धर्म-युक्त काय प्राप्त कर, लक्षण-युक्त

གཡེང་བས་ལོ་འདས་མི་དྲན་འཆི་འཕོ་ལྟུང་། །
येङ वे लो देस् मि डेन छि फो तुङ
वर्ष-समाप्ति के स्मृति बिना मृत्यु-च्युत होते।

འདོད་ཆགས་ཆུ་ལས་སྒྲོལ་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
दोद् छग छु लेस डोल चिग चेन रेस ज़िग
(हे) अवलोकितेश्वर राग-जल से पार करायें।13।

སྡུག་བསྔལ་གསུམ་གྱི་ཆུ་གཏེར་ནང་དུ་རྒྱུ། །
दुग ङल सुम ग्यि छु तेर नङ दु ग्यु
त्रिविध दुःखों के जलनिधि में दौड़ते।

ཐུགས་རྗེའི་ལྕགས་ཀྱུས་དྲངས་ཤིག་སྤྱན་རས་གཟིགས།།
थुग जे चग क्युस् डोङ शिग चेन रेस ज़िग
(हे) अवलोकितेश्वर करुणांकुश से आकर्षित करें।14।

གཉིས་འཛིན་གོ་ཁྲབ་དམ་པོས་ལུས་བགོས་ནས། །
ञीस् ज़िन गो ठप दम पोस् लुस् गोस् नेस्
द्वि-ग्राहक रूपी कठोर कवच काय में पहन।

བདུད་སྡེ་ཆོས་ལ་སྒྱུར་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
दुद् दे छोस् ल ग्युर चिग चेन रेस ज़िग
मार-वर्ग को धर्म में परिवर्तित करें (हे) अवलोकितेश्वर।15।

འཁོར་བ་བདེ་བར་མཐོང་ནས་དེར་སྒོ་གསུམ། །
खोर व दे वर थोङ नेस् देर गो सुम
संसार सुखमय देख, वहाँ त्रिद्वार (काय-वाक्-चित्त)

དོན་མེད་ལས་འདི་སྟུངས་ཤིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
दोन मेद् लेस दि तुङ शिग चेन रेस ज़िग
इन व्यर्थ कार्यों को अल्प करें (हे) अवलोकितेश्वर।16।

བཤེས་གཉེན་མཆོག་བསྟེན་གུས་མཆོད་དེས་གསུང་གི །
शेस् ञेन छोग तेन गुस् छोद् देस् सुङ गि
परम कल्याणमित्र सेवन कर, आदर-सत्कार सहित, उनके वचन-

གདམས་པས་རྒྱུད་སྨིན་སངས་རྒྱས་དངོས་ཉིད་དུ། །
दम पेस् ग्युद् मिन सङ ग्येस् ङोस् ञिद् दु
उपदेश द्वारा सन्तति विपाक कर, प्रत्यक्ष बुद्ध रूप में

ངེས་པའི་བློ་དང་སྦྱོར་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
ङेस् पई लो दङ छोर चिग चेन रेस ज़िग
नियत-बुद्धि प्राप्त करायें (हे) अवलोकितेश्वर।17।

ཐོས་པས་དྲང་ངེས་ཆོས་རྣམས་དོན་འདོམས་ཤིང་། །
थोस् पेस् डङ ङेस् छोस् नम दोन दोम शिङ
श्रवण द्वारा नीतार्थ-नेयार्थ-धर्म संग्रह कर

བསམ་པས་ཞི་ལྷག་ཏིང་འཛིན་མངོན་གྱུར་ནས། །
सम पेस् शि ल्हग तिङ ज़िन ङोन ग्युर नेस्
चिन्तन द्वारा शमथ-विपश्यना समाधि का साक्षात कर।

བསྒོམས་པས་མཐའ་བྲལ་ལྟ་བ་རྟོགས་པར་ལྡན། །
गोम पेस् था डल त व तोग पर देन
भावना द्वारा कोटि रहित दर्शन-ज्ञान युक्त हो

སེམས་ཉིད་མ་དང་སྤྲོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
सेम ञिद् म दङ टोद् चिग चेन रेस ज़िग
चित्त रूपी माँ से मिलायें (हे) अवलोकितेश्वर।18।

ངེས་འབྱུང་བློ་ཡིས་ཚུལ་ཁྲིམས་ས་བོན་ཐེབས། །
ङेस् छुङ लो यीस् छुल ठिम स बोन थेप
वैराग्य-चित्त द्वारा शील रूपी बीज-वपन होता

གཞན་ཕན་འདོད་པའི་བྱང་སེམས་ལོ་འདབ་རྒྱས། །
शेन फेन दोद् पई छङ सेम लो दप ग्येस्
परहित चाहने वाला बोधिचित्त-पत्र विस्तृत होगा।

དེ་ལས་གསང་སྔགས་བསྐྱེད་རྫོགས་མེ་ཏོག་བཀྲ། །
दे लेस सङ ङग क्येद् ज़ोग मे तोग ट
इससे गुह्यमन्त्र उत्पन्न-सम्पन्नक्रम पुष्प खिलते

བསླབ་གསུམ་འབྲས་བུ་སྐྱེད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
लप सुम डेस् बु क्येद् चिग चेन रेस ज़िग
त्रिशिक्षा-फल उत्पन्न हों (हे) अवलोकितेश्वर।19।

རྒྱུ་འབྲས་བླང་དོར་ཚུལ་བཞིན་བསྒྲུབ་པ་དང་། །
ग्यु डेस् लङ दोर छुल शिन डुप प दङ
हेतु-फल हेय-उपादेय नियमवत साधित कर

ཚོགས་གཉིས་འཕེལ་ཁ་ཕར་ཕྱིན་དྲུག་སྤྱོད་པར། །
छ़ोग ञीस् फेल ख फर छिन डुग चोद् पर
द्वि-सम्भाव वृद्धि-मुख षट-पारमिता का आचरण कर।

ཚེ་གྲགས་རེ་སྨོན་ཆོས་བརྒྱད་དམ་པོ་ཡི། །
छे डग रे मोन छोस् ग्ये दम पो यि
माहात्म्य-प्रसिद्धि-आशा कठोर अष्ट-धर्म रूपी

ཞེན་པའི་ཐག་པ་ཆོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
शेन पई थग प छोद् चिग चेन रेस ज़िग
आसक्ति-पाश को तोड़े (हे) अवलोकितेश्वर।20।

ས་དང་ལམ་གྱིས་སྒྲོ་འདོགས་ཀུན་རྫོགས་ནས། །
स दङ लम ग्यीस् डो दोग कुन ज़ोग नेस्
भूमि और मार्ग के समस्त समारोप पूर्ण कर

སྐྱོན་ཀུན་སྤངས་ཤིང་ཡོན་ཏན་མཆོག་ལྡན་པའི། །
क्योन कुन पङ शिङ योन तेन छोग देन पई
सर्व दोषों को हटा, परम-गुण वाले।

རྒྱལ་བའི་གོ་འཕང་མངོན་ཐོབ་སྤྲུལ་སྐུ་ཡིས། །
ग्यल वई गो फङ ङोन थोप टुल कु यीस्
जिन-पद का साक्षात्कार कर निर्माणकाय द्वारा

གཞན་དོན་ལྷུན་གྲུབ་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
शेन दोन ल्हुन डुप ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
परार्थ अनाभोग सिद्ध हों (हे) अवलोकितेश्वर।21।

བདག་ལ་འབྲེལ་ཐོགས་བཟང་ངན་གང་མཆིས་ཀྱང་། །
दग ल डेल थोग ज़ङ ङेन गङ छीस् क्यङ
मुझसे अच्छे-बुरे जो भी सम्बद्ध हैं

དེ་སྲིད་བདག་འཚང་མི་རྒྱ་དེ་དག་གི། །
दे सिद् दग छ़ङ मि ग्य दे दग गि
तावत् मैं बुद्ध न हो, उनके

མ་རིག་ལམ་གོལ་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གཟིར་བའི། །
म रिग लम गोल दुग ङ्‌ल ग्यीस् ज़िर बई
अज्ञान(वश) विपथ दुःख से सन्तप्त

སྐྱེ་བོ་འདུལ་ལ་དུས་གསུམ་རྒྱལ་ཐུགས་བསྐྱེད། །
क्ये बो दुल ल दुस् सुम ग्यल थुग क्येद्
(उन) सत्त्वों के दमन हेतु त्रिकाल जिनवत
चित्तोत्पाद कर

བདག་སྡུག་ཆུང་དུས་འགྲོ་ཀུན་སྡུག་བསྔལ་ཆེའི། །
दग दुग छुङ ङुस् डो कुन दुग ङ्‌ल छे
मेरा अल्प दुःख समस्त सत्त्वों के महादुःख का

སེམས་ཅན་ཀུན་འབུལ་དེ་དོན་ཕན་རང་སྲོག །
सेम चेन कुन बुल दे दोन फेन रङ सोग
सर्वसत्त्वों को भेंट कर, तदर्थ लाभ हेतु स्व-प्राण

མཆོག་དམན་བར་གྱི་འགྲོ་བ་ཀུན་སྙོམས་སེམས། །
छोग मेन बर ग्यि डो व कुन ञोम सेम
उत्तम-अधम-मध्य समस्त सत्त्वों में समता-चित्त

དུག་སྦྲུལ་བཞིན་དུ་དངོས་བརྒྱུད་འཚེ་བའི་ལས། །
दुग डुल शिन दु ङोस् ग्युद् छ़े बई लेस
सर्पोपम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष हिंसा-कर्म

བདག་སོགས་རྣམ་ཀུན་གཞན་དོན་ཁོ་ན་ལས། །
दग सोग नम कुन शेन दोन खो न लेस
मैं और अन्य (सभी) सदैव परार्थ युक्त हो

ཕ་མས་གཙོ་བྱས་འཁོར་བ་སངས་རྒྱས་བར། །
फ मेस त्सो छेस् खोर व सङ ग्येस् बर
प्रधानतया माता-पिता सहित भव के बुद्ध होने तक।

དོན་བགྱིད་ཉིད་ལྟར་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
दोन ग्यिद् ञिद् तर ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
अर्थ-साधन-कर्ता आप जैसा बनूँ (हे)
अलोकितेश्वर।22।

གདུལ་དཀའ་སྔོན་གྱི་རྒྱལ་འདུལ་ཞིང་མིན་པའི། །
दुल का ङोन ग्यि ग्यल दुल शिङ मिन पई
दुर्दम्य, पूर्व-जिनों के दमन-क्षेत्र नहीं जो

མཛད་ལས་ཁྱད་འཕགས་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས།།
ज़े लेस ख्ये फग ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
विशिष्ट कर्म-युक्त बनायें (हे) अवलोकितेश्वर।23।

གོ་ཆོད་གཏོང་ཕྱུར་བདག་དགེ་ཕུན་ཚོགས་རྣམས། །
गो छोद् तोङ ग्युर दग गे फुन छ़ोग नम
स्थान ग्रहण करें, मेरे कुशल और सम्पन्नतायें

སྦྱིན་ལ་སྤོབས་པ་སྐྱེད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
छिन ल पोप प क्येद् चिग चेन रेस ज़िग
न्योछावर करने में समर्थ होऊँ (हे)
अवलोकितेश्वर।24।

རབ་བརྟན་གང་ཞིག་ཞེ་སྡང་གནོད་སྦྱོར་བའི། །
रप तेन गङ शिग शे दङ नोद् छोर बई
सुदृढ कर, जो द्वेष-अपकार प्रयोग।

སྦྱང་ནས་རྣམ་གྲོལ་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
छङ नेस् नम डोल ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
(हे) अवलोकितेश्वर, शोधित हो विमुक्ति प्राप्त
करूँ।25।

ཞི་བདེའི་བསམ་པ་སྐད་ཅིག་མི་འབྱུང་ཞིང་། །
शि दे सम प के चिग मि छुङ शिङ
शान्त-सुखाशय पल-भर भी उदित न हों।

ཆོས་མིན་ལས་གཞན་མི་དགེ་སྐྱེ་སྲིད་ན། །
छोस् मिन लेस शेन मि गे क्ये सिद् न
अधर्म रूपी अन्य कर्माकुशलोत्पत्ति सम्भव है

ཆོས་དབྱིངས་རྣམ་དག་བསླུ་མེད་རིན་ཆེན་གསུམ། །
छोस् यिङ नम दग लु मेद् रिन छेन सुम
विशुद्ध धर्मधातु, अवञ्चित त्रिरत्न,

བདེན་པ་མཆིས་པའི་སྨོན་ལམ་བཏབ་འདི་དག །
देन प छीस् पई मोन लम तप दि दग
सत्य होने का यह जा प्रणिधान किया गया

འདི་ཡིས་ཚེ་རབས་དཔལ་ལྡན་བླ་མ་དང་། །
दि यीस् छ़े रप पल देन ल म दङ
इसके द्वारा जन्म-जन्मान्तर श्रीयुत-गुरु और

གཡེལ་བ་མེད་པར་རྗེས་སུ་འཛིན་པའི་རྒྱུར། །
येल व मेद् पर जेस् सु ज़िन पई ग्युर
तन्द्रित न हो अनुगृहीत का हेतु

ཆོས་ལྡན་གནས་སུ་འཕོར་ཆུག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
छोस् देन नेस् सु फोर छुग चेन रेस ज़िग
(हे) अवलोकितेश्वर, धर्म-युक्त स्थान में संक्रमित करायें।26।

དྲང་སྲོང་ལྷ་དང་ལྷག་བསམ་འཁོར་འདས་དགེའི། །
डङ सोङ ल्ह दङ ल्हग सम खोर देस् गे
ऋषि, देव और अध्याशय भव-निर्वाण कुशलों का

མི་ཐོགས་མྱུར་དུ་སྒྲུབས་ཤིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
मि थोग न्युर दु डुप शिग चेन रेस ज़िग
(हे) अवलोकितेश्वर, अव्याघात हो शीघ्र साधित हों।27।

དུས་གསུམ་བདེ་གཤེགས་ཕྱག་ན་པདྨོ་མཆོག །
दुस् सुम दे शेग छग न पेमाे छोग
त्रिकाल सुगत श्रेष्ठ पद्मपाणि।

འགྱུར་བར་མྱུར་དུ་མཛོད་ཅིག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
ग्युर बर न्युर दु ज़ोद् चिग चेन रेस ज़िग
शीघ्र बन जायें, (हे) अवलोकितेश्वर।28।

ཞེས་པ་འཕགས་པ་ལ་གསོལ་འདེབས་སྨོན་ལམ་སྨྲེ་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་འདི་རང་གཞན་གྱི་དོན་དུ་འབྲི་གུང་པ་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོས་རྗེས་སུ་བཟུང་བ་དགེ་སློང་སྤྱན་སྔ་དཀོན་མཆོག་རཏྣས་སྦྱར་བ་དགེ་ཞིང་དར་བར་གྱུར་ཅིག །

इस प्रकार आर्य-अध्येषणा-प्रणिधान रूपी यह परिदेव-पद स्व-पर के लिये डि-गुङ्-पा वज्रधर धर्मराज द्वारा अनुगृहीत भिक्षु चन्-ङा कोन्-छोग्-रत्न द्वारा लेखनी-बद्ध किया गया। शुभ हों. विस्तार प्राप्त करें।

# སྟག་ལུང་ཐང་པ་ཆེན་པོའི་སྨོན་ལམ།
# महान् तग्-लुङ् थङ्-पा का प्रणिधान

རཏྣ་གུ་རུ།
रत्न गुरु
रत्न-गुरु !

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མི་ཕྱེད་མི་འབྲལ་འདུས་མ་བྱས་པར་མཁྱེན། །
मि छेद् मि डल दुस् म छेस् पर ख्येन
अभेद्य, अविभक्त, असंस्कृत जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।1।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མི་རྟོག་རྟོག་མེད་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་མཁྱེན། །
मि तोग तोग मेद् नम खा त बुर ख्येन
अविकल्प निर्विकल्प आकाशोपम जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।2।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་འཁྲུལ་མི་འཁྲུལ་འཁྲུལ་པ་མེད་པར་མཁྱེན། །
म ठुल मि ठुल ठुल प मेद् पर ख्येन
अभ्रान्त, अव्यभिचार, भ्रान्त रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।3।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་དམིགས་མི་དམིགས་དམིགས་པ་མེད་པར་མཁྱེན། །
म मिग मि मिग मिग प मेद् पर ख्येन
अनालम्ब, अनुपलम्भ, आलम्बन रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।4।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་གཡོས་མི་གཡོ་གཡོ་བ་མེད་པར་མཁྱེན། །
म योस् मि यो यो व मेद् पर ख्येन
अप्रकम्पित, अचल, चञ्चल रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।5।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་འགྱུར་མི་འགྱུར་འགྱུར་བ་མེད་པར་མཁྱེན། །
म ग्युर मि ग्युर ग्युर व मेद् पर ख्येन
निर्विकार, अपरिवर्तित, विकार रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।6।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་བྱས་མི་བྱེད་བྱེད་པར་མེད་པར་མཁྱེན། །
म छेस् मि छेद् छेद् पर मेद् पर ख्येन
अकृत, कार्य-हीन, कारित्र रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।7।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་བྱ་རྩོལ་བྲལ་བར་མཁྱེན། །
शेस् दङ शेस् छ छ ज़ोल डल बर ख्येन
ज्ञाता, ज्ञेय और क्रिया-कलाप रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।8।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་སྐྱེས་མི་སྐྱེ་སྐྱེ་བ་མེད་པར་མཁྱེན། །
म क्येस् मि क्ये क्ये व मेद् पर ख्येन
अनुत्पन्न, अनुत्पादित और उत्पाद रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।9।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མ་འགགས་མི་འགགས་འགགས་པ་མེད་པར་མཁྱེན། །
म गग मि गग गग प मेद् पर ख्येन
अनिरूद्ध, अनिरोधित और अनिवृत्त जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।10।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

གཟུགས་སོགས་གཉིས་མེད་གཅིག་པུ་མིན་པར་མཁྱེན། །
जुग सोग ञीस् मेद् चिग पु मिन पर ख्येन
रूपादि अद्वय, एक नहीं है- जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।11।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

ཁ་དོག་དབྱིབས་བྲལ་ངོ་བོ་རྣམ་དག་མཁྱེན། །
ख दोग यिप डल ङो बो नम दग ख्येन
वर्ण, आकार रहित, स्वभाव विशुद्ध जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।12।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

དངོས་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་མིན་པར་མཁྱེན། །
ङोस् दङ ङोस् पो मेद् प मिन पर ख्येन
भाव और भावाभाव रहित जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।13।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

སྤྲོས་པའི་མཚན་མ་རབ་ཏུ་ཞི་བར་མཁྱེན། །
टोस् पई छ़ेन म रप तु शि वर ख्येन
प्रपञ्च-निमित्त से प्रशान्त जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।14।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

རྒྱུ་ལམ་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་དག་པར་མཁྱེན། །
ग्यु लम डेस् बु नम पर दग पर ख्येन
हेतु-मार्ग-फल विशुद्ध जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज् !, उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।15।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

སྤང་བླང་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་མཁྱེན། །
पङ लङ मेद् पर ञम प ञिद् दु ख्येन
हेयोपादेय रहित समतामयी जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।16।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

དུས་གསུམ་སྲིད་གསུམ་མ་རིག་རྣམ་དག་མཁྱེན། །
दुस् सुम सिद् सुम म रिग नम दग ख्येन
त्रिकाल-त्रिभव में अज्ञान से विशुद्ध जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।17।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

གཉིས་མེད་གཉིས་སུ་མེད་པར་རོ་མཉམ་མཁྱེན། །
ञीस् मेद् ञीस् सु मेद् पर रो ञम ख्येन
अद्वैत, द्वय रहित समरस जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।18।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

རང་བཞིན་འོད་གསལ་ཡེ་ཤེས་འཁོར་ལོ་མཁྱེན། །
रङ शिन ह्वोद् सल ये शेस् खोर लो ख्येन
स्वभावतया प्रभास्वर, ज्ञानचक्र स्वरूप जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।19।

རིན་ཆེན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
रिन छेन ख्येद् क्यीस् छोस् नम थम चे नि
रत्न ! समस्त धर्मों को आप

མི་མཉམ་མཉམ་མཛད་གདུལ་བྱ་སྨིན་མཛད་མཁྱེན། །
मि ञम ञम ज़े दुल छ मिन ज़े ख्येन
असम समकारी, विनेयजन विपाक-कर्ता जानते हैं।

དེ་མཁྱེན་དེ་འདྲའི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
दे ख्येन दे डई छोस् नम थम चे नि
तत्त्वज्ञ ! उस प्रकार के समस्त धर्मों का

བདག་ཅག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་རྟོགས་ཤོག །
दग चग सेम चेन नम क्यीस् ङेस् तोग शोग
हम सत्त्वों द्वारा नियत-बोध हों।20।

སྨོན་ལམ་ཉི་ཤུ་པ་རྫོགས་སོ། །
विंशिका प्रणिधान समाप्त हुआ।

# ཁྲོ་ཕུའི་སྨོན་ལམ་རིན་ཆེན་ཞིལ་མ་ནི།
# मुक्त-रत्न नामक ठो-फु प्रणिधान

རྗེ་བཙུན་བྱམས་པ་མགོན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जे त्सुन छम प गोन पो ल छग छ़ल लो
भट्टारक मैत्रेयनाथ को प्रणाम।

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དང་།
छोग चु न शुग पई सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे दङ
दश-दिशाओं में स्थित बुद्ध और समस्त बोधिसत्त्व,

སློབ་དཔོན་དང་དགེ་འདུན་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ།
लोप पोन दङ गेन दुन दग ल गोङ सु सोल
आचार्य एवं संघ मुझे ध्यान दें।

བདག་དང་འཁོར་འདས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུས་གསུམ་དུ་བསགས་པ་དང་ཡོད་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས། བདག་དང་
दग दङ खोर देस् थम चे क्यीस् दुस् सुम दु सग प दङ योद् पई गे बई त्स़ व दीस्   दग दङ सेम
मैं और भव-भवातीत सभी द्वारा त्रिकाल सञ्चित सत् कुशलमूलों द्वारा स्वयं और समस्त

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་མྱུར་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་རིན་པོ་ཆེ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
चेन थम चे न्युर दु ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप रिन पो छे थोप पर ग्युर चिग
सत्त्व शीघ्र अनुत्तर सम्यक् सम्बुद्ध-रत्न को प्राप्त करें।1।

དེ་མ་ཐོབ་ཀྱི་བར་དུའང་ཚེ་རབས་ནས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་དམ་པའི་ཆོས་རིན་པོ་ཆེ་བསྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་སྐྱེས་བུ་ལྷ་
दे म थोप क्यि बर दुहृङ छ़े रप नेस् छ़े रप थम चे दु दम पई छोस् रिन पो छे डुप पई दोन दु
उसके प्राप्ति नहीं होने तक भी सभी जन्म-जन्मान्तरों में सद्धर्म-रत्न साधन के लिये पुरुष रूपी विशिष्ट

དང་མིའི་ལུས་ཁྱད་པར་ཅན་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
क्येस् बु ल्ह दङ मी लुस् ख्ये पर चेन थोप पर ग्युर चिग
देव-मनुष्य काय प्राप्त हों।2।

རིགས་མཐོ་བ་དང་བཙན་འཛིང་ཆེ་བའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
रिग थो व दङ ज़ेन जिङ छे बई छोग तु ग्युर चिग
उच्च जाति और महा-सुमित्रों में श्रेष्ठता प्राप्त हों।3।

ཚེ་རིང་བ་དང་ནད་མེད་པའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
छ़े रिङ व दङ ने मेद् पई छोग तु ग्युर चिग
दीर्घायु वालों और निरोगियों में श्रेष्ठता प्राप्त हों।4।

གཟུགས་མཛེས་པ་དང་གཟི་བརྗིད་ཆེ་བའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ज़ुग ज़ेस् प दङ ज़ि जिद् छे बई छोग तु ग्युर चिग
सुन्दर रूप और महा-ओजस्वियों में श्रेष्ठता प्राप्त हों।5।

ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་དང་འཚེ་བ་མེད་པའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
लोङ चोद् छे व दङ छ़े व मेद् पई छोग तु ग्युर चिग
महासम्पत्ति वालों और महा-अहिंसा वालों में श्रेष्ठता प्राप्त हों।6।

སྐྱེ་མཆེད་གཙང་བ་དང་དབང་པོ་རྣོ་བའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
क्ये छेद् ज़ङ व दङ वङ पो नो बई छोग तु ग्युर चिग
शुद्ध आयतन वाले और तीक्ष्णेन्द्रियों में श्रेष्ठता प्राप्त हों।7।

སྤྲོ་བ་དམ་པ་དང་ལྡན་ཞིང་སེམས་ལས་སུ་རུང་བའི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
टो व दम प दङ देन शिङ सेम लेस सु रुङ बई छोग तु ग्युर चिग
सदोत्साह-युक्त होकर कर्म-योग्य-चित्त वालों में श्रेष्ठता प्राप्त हों।8।

དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་རིན་པོ་ཆེ་དང་མཇལ་ཞིང་གྲོགས་དམ་པ་དང་ཚངས་པར་མཚུངས་པར་སྤྱོད་པར་གྱུར་ཅིག །
गे बई शेस् ञेन रिन पो छे दङ जल शिङ डोग दम प दङ छ़ङ पर छुङ पर चोद् पर ग्युर चिग
कल्यामिमित्र-रत्न का दर्शन कर सद्-मित्रों के साथ समान ब्रह्मचर्यावान् बनूँ।9।

གདམས་པ་དང་རྗེས་སུ་བསྟན་པ་ཟབ་མོ་ཐོས་ཤིང་དེའི་དོན་ཚུལ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
दम प दङ जेस् सु तेन प ज़ प मो थोस् शिङ दे दोन छुल शिन दु डुप पर ग्युर चिग
गम्भीर उपदेश और अनुशासन का श्रवण कर उसके अर्थ को नियमवत सिद्ध करूँ।10।

སྒྲུབ་པ་ལ་ཕྱི་ནང་གི་བར་ཆད་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་ཞིང་མཐུན་རྐྱེན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
डुप प ल छि नङ गि बर छे थम चे दङ डल शिङ थुन क्येन फुन सुम छ़ोग प थोप पर ग्युर चिग
साधना के समय बाह्याध्यात्म समस्त बाधाओं से मुक्त होकर सामग्री-सम्पन्नता को प्राप्त करूँ।11।

རང་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་ལྟར་སྒྲུབ་པ་མཐར་ཕྱིན་ཅིང་བསྒྲུབས་པའི་འབྲས་བུས་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་རྒྱ་ཆེར་ཕན་ཐོགས་
रङ जि तर दोद् प तर डुप प थर छिन चिङ डुप पई डेस् बुस् डो व थम चे ल ग्य छेर फेन थोग
स्वयं के यथेच्छानुसार साधन में पारंगत होकर साधन-फल द्वारा समस्त सत्त्वों में विस्तृत लाभ

པར་གྱུར་ཅིག །གཞན་ཡང་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས། བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྟེན་དལ་བ་ཕུན་སུམ་
पर ग्युर चिग   शेन यङ गे बई ज़ व दीस्   दग दङ सेम चेन थम चे क्यीस् तेन दल व फुन सुम
प्राप्त हों।12।  अपि च, इन कुशलमूलों द्वारा स्वयं और समस्त सत्त्वों द्वारा आश्रय रूपी क्षण-सम्पन्नता को

ཚོགས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །བསམ་པའི་རྟེན་དགེ་བ་ལ་ཡང་དག་པར་གོམས་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़ोग प थोप पर ग्युर चिग   सम पई तेन गे व ल यङ दग पर गोम पर ग्युर चिग
प्राप्त करूँ।13। आशय-आधार स्वरूप पुण्यों का सम्यक् अभ्यास करूँ।14।

སྤྱོད་པ་བསླབ་པ་རིན་པོ་ཆེ་ཉམས་སུ་ལེན་པར་གྱུར་ཅིག །
चोद् प लप प रिन पो छे ञम सु लेन पर ग्युर चिग
चर्या रूपी शिक्षा-रत्न का अभ्यास करूँ।15।

གཞི་དད་པ་བརྟན་པོ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
शि दे प तेन पो दङ देन पर ग्युर चिग
आश्रय रूपी दृढ़-श्रद्धा से युक्त बनूँ।16।

རྒྱུད་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युद् ञिङ जे छेन पो दङ देन पर ग्युर चिग
(चित्त-)सन्तति महाकरुणा से युक्त हों।17।

གྲོགས་བརྩོན་འགྲུས་བཟང་པོ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
डोग ज़ोन डुस् ज़ङ पो दङ देन पर ग्युर चिग
मित्र रूपी भद्र-वीर्य से युक्त हों।18।

ངོ་བོ་ཤེས་རབ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
ङो बो शेस् रप नम पर दग प दङ देन पर ग्युर चिग
स्वरूप विशुद्ध-प्रज्ञा से युक्त हों।19।

གུས་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པས་བླ་མ་དང་ལྷག་པའི་ལྷ་མཉེས་པར་བྱེད་པར་གྱུར་ཅིག །
गुस् प सम ग्यीस् मि ख्यप पेस् ल म दङ ल्हग पई ल्ह ञेस् पर छेद् पर ग्युर चिग
अनन्त आदर द्वारा गुरु एवं अधिदेव को प्रसन्न कर सकूँ।20।

ཏིང་ངེ་འཛིན་མུ་མཐའ་མེད་པས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཟུང་དུ་འབྲེལ་བར་གྱུར་ཅིག །
तिङ ङे ज़िन मु था मेद् पेस् शि नेस् दङ ल्हग थोङ ज़ुङ दु डेल बर ग्युर चिग
कोटि-अन्त रहित समाधि द्वारा शमथ-विपश्यना को युगनद्ध बनाऊँ।21।

ཐབས་ཟླ་མེད་དུ་ཆུང་བས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བར་བྱེད་པར་གྱུར་ཅིག །
थप मे दु छुङ वे सङ ग्येस् क्यि शिङ योङ सु छोङ बर छेद् पर ग्युर चिग
अप्रतिम उपाय द्वारा बुद्ध-क्षेत्र को परिशोधित कर सकूँ।22।

ཕྲིན་ལས་གཞལ་དུ་མེད་པས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ཁམས་གསུམ་མ་ལུས་པ་སྨིན་ཅིང་གྲོལ་བར་གྱུར་ཅིག །
ठिन लेस शल दु मेद् पेस् सेम चेन ग्यि दोन खम सुम म लुस् प मिन चिङ डोल वर ग्युर चिग
अप्रमेय कर्मों द्वारा सत्त्वार्थ, अशेष त्रिधातु मे उपचित हो मुक्ति को प्राप्त कराउँ।23।

དེ་བཞིན་དུ་ཁྱིམ་ནས་ཁྱིམ་མེད་པར་རབ་ཏུ་བྱུང་ཞིང་ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་པར་དག་པ་བསྲུང་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दे शिन दु ख्यिम नेस् ख्यिम मेद् पर रप तु छुङ शिङ छुल ठिम नम पर दग प सुङ नुस् पर ग्युर चिग
इसी प्रकार घर से बे-घर हो प्रव्रजित बन विशुद्ध शील की रक्षा में समर्थ बनूँ।24।

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་རིན་པོ་ཆེ་དང་མི་འབྲལ་ཞིང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱོད་པ་རླབས་པོ་ཆེ་བྱེད་པར་
छङ छुप क्यि सेम रिन पो छे दङ मि डल शिङ छङ छुप सेम पई चोद् प लप पो छे छेद् पर
बोधिचित्त-रत्न से अलग न हो असीम बोधिसत्त्वचर्या क्रियान्वित

གྱུར་ཅིག །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་ལུགས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྟོགས་ཤིང་གཞན་ལ་ཡང་དག་པའི་དོན་ཉི་
ग्युर चिग छोस् थम चे क्यि नेस् लुग जि त व शिन दु तोग शिङ शेन ल यङ दग पई दोनञि
करुँ।25। सर्वधर्म स्वभाव को यथाभूत जानकर अन्यों में सम्यक् अर्थ को सूर्योदय समान

མ་ཤར་བ་ལྟར་སྟོན་པར་གྱུར་ཅིག །
म शर व तर तोन पर ग्युर चिग
प्रदर्शित करुँ।26।

རྙེད་པ་མ་ཐོབ་པ་ལ་འདོད་པ་མེད་ཅིང་ཐོབ་ཀྱང་ཆོག་ཤེས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञेद् प म थोप प ल दोद् प मेद् चिङ थोप क्यङ छोग शेस् पर ग्युर चिग
अप्राप्त लाभ की इच्छा न कर, (लाभ की) प्राप्ति होने पर भी सन्तुष्ट होऊँ।27।

རང་གི་འབྱོར་པས་དྲེགས་པ་དང་ང་རྒྱལ་མེད་ཅིང་གཞན་གྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་སེམས་དགའ་བ་ཐོབ་པར་
रङ गि छोर पेस् डेग प दङ ङ ग्यल मेद् चिङ शेन ग्यि फुन सुम छ़ोग प ल सेम गा व थोप पर
स्व-सम्पत्ति के प्रति मद और अहङ्कार न कर पर-सम्पन्नता के प्रति चित्त मुदिता

གྱུར་ཅིག །རྙེད་པ་དང་གྲགས་པ་ཐམས་ཅད་སྐྱུགས་པ་ལྟར་གོ་ཞིང་བསྟོད་པ་དང་བདེ་བ་ཐམས་ཅད་བཙོན་བྱས་པ་
ग्युर चिग ञेद् प दङ डग प थम चे क्युग प तर गो शिङ तोद् प दङ दे व थम चे त्सोन छेस् प
प्राप्त करें।28। लाभ एवं समस्त प्रसिद्धि को वमन (उल्टी) समान जानकर, स्तुति तथा समस्त सुखों को

ལྟར་ཡིད་ཆེས་པར་གྱུར་ཅིག །
तर यिद् छेस् पर ग्युर चिग
कारागार-बद्ध सा जानूँ।29।

གཟུགས་སྦུ་བ་ལྟ་བུ་དང་ཚོར་བ་ཆུའི་ཆུ་བུར་ལྟར་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ुग बु व त बु दङ छ़ोर व छुइ छु बुर तर तोग पर ग्युर चिग
रूप को झाग समान तथा संवेदना को जल के बुद्बुदे समान जानूँ।30।

འདུ་ཤེས་སྨིག་རྒྱུ་ལྟ་བུ་དང་འདུ་བྱེད་ཆུ་ཤིང་གི་སྡོང་པོ་ལྟར་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
दु शेस् मिग ग्यु त बु दङ दु छेद् छु शिङ गि दोङ पो तर तोग पर ग्युर चिग
संज्ञा को मरीचिका समान तथा संस्कार को कदली-वृक्ष सा जानूँ।31।

རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་དང་དབང་པོ་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
नम पर शेस् प मि लम त बु दङ वङ पो थम चे ग्यु म त बुर तोग पर ग्युर चिग
विज्ञान को स्वप्न समान तथा सभी इन्द्रियों को मायोपम जानूँ।32।

ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཆུ་ཟླ་ལྟ་བུ་དང་འཛིན་པ་ཐམས་ཅད་སྤྲུལ་པ་ལྟར་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
युल थम चे छु द त बु दङ ज़िन प थम चे टुल प तर तोग पर ग्युर चिग
समस्त विषयों को जल-चन्द्र समान तथा समस्त ग्राहकों को निर्मितोपम जानूँ।33।

གཞན་ཡང་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདི་ལ་བརྟེན་ནས། བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འདུ་བྱེད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་
शेन यङ गे बई त्स व दि ल तेन नेस् दग दङ सेम चेन थम चे क्यीस् दु छेद् क्यि छोस् थम चे
अपि च, इन कुशलमूलों के आग्रह से मैं और समस्त सत्त्व समस्त संस्कृत धर्मों को

སྒྱུ་མ་ལྟར་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་བརྒྱད་མཉམ་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །སྒྱུ་མ་
ग्यु म तर तोग पर ग्युर चिग जिग तेन ग्यि छोस् ग्ये ञम प ञिद् थोप पर ग्युर चिग ग्यु म
माया समान जानें।34। अष्ट-लोक-धर्म में समता प्राप्त हों।35। समस्त मायोपम धर्मों को आकाशवत जानने

ལྟ་བུའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའ་ལྟར་རྟོགས་པས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་མངོན་དུ་བྱེད་པར་གྱུར་ཅིག །
त बुइ छोस् थम चे नम खा तर तोग पेस् न्य ङेन लेस देस् पई यिङ ङोन दु छेद् पर ग्युर चिग
से निर्वाण-धातु का साक्षात्कार हों।36।

མྱ་ངན་ལས་མ་འདས་པ་རྣམས་ལ་སྙིང་བརྩེ་བ་ཆེན་པོས་ཕན་བདེ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་བསྒྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
न्य ङेन लेस म देस् प नम ल ञिङ त्से व छेन पोस् फेन दे सम ग्यीस् मि ख्यप प डुप पर ग्युर चिग
(जो सत्त्व) निर्वाण को प्राप्त नहीं हुये हैं, उन्हें हार्दिक महा-करुणा द्वारा अनन्त हित साधित करूँ।37।

སྒྲུབ་པ་ཐམས་ཅད་བྱ་བྲལ་དུ་རྟོགས་པས་བྱ་བྱེད་རང་སར་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
डुप प थम चे छ डल दु तोग पेस् छ छेद् रङ सर दग पर ग्युर चिग
समस्त साधनों को कार्य रहित जानने से कार्य-क्रिया स्व-स्थल पर शुद्ध हों।38।

དེ་ལྟར་གྱུར་ནས་ཚེ་རབས་ནས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དུ་མ་མཉེས་པར་བྱེད་པ་ལ་མཁས་པ་
दे तर ग्युर नेस् छे रप नेस् छे रप थम चे दु गे बई शेस् ञेन दु म ञेस् पर छेद् प ल खेस् प
ऐसा सिद्ध हो, जन्म-जन्मान्तर पर्यन्त अनेक कल्याणमित्रों को प्रसन्न करने में कुशल, श्रेष्ठि पुत्र

ཚོང་དཔོན་གྱི་བུ་ནོར་བཟང་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
छोङ पोन ग्यि बु नोर ज़ङ त बुर ग्युर चिग
सुधन समान होऊँ।39।

མཉེས་པར་བྱས་ནས་དམ་པའི་ཆོས་ཚོལ་བ་ལ་བརྟུལ་ཕོད་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྟག་ཏུ་ངུ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
ञेस् पर छेस् नेस् दम पई छोस् छ़ोल व ल तुल फोद् प छङ छुप सेम पा तग तु ङु त बुर ग्युर चिग
(उन्हें) प्रसन्न कर सद्धर्म अन्वेषण के अवसर पर वीर्यवान्, बोधिसत्त्व सदाप्ररुदित समान होऊँ।40।

བཙལ་ནས་ཐོས་པའི་ཆོས་མི་བརྗེད་པ་བློ་གྲོས་རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
त्ज़ल नेस् थोस् पई छोस् मि जेद् प लो डोस् ग्य छ़ो त बुर ग्युर चिग
अन्वेषण कर श्रवण-धर्म को नहीं भूलने वाला, सागरमति के समान बनूँ।41।

མི་བརྗེད་པའི་དོན་ལ་མཉམ་པར་འཇོག་པ་རྒྱལ་སྲས་ནམ་མཁའ་མཛོད་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །མཉམ་པར་བཞག་པ་
मि जेद् पई दोन ल ञम पर जोग प ग्यल सेस् नम खा ज़ोद् त बुर ग्युर चिग ञम पर शग प
असम्प्रमोष अर्थ में समाहित होने वाले, जिनपुत्र गगन-गञ्ज समान बनूँ।42। समाहित अवस्था से अविक्षिप्त

ལས་མ་གཡོས་བཞིན་དུ་སྨོན་ལམ་ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པ་རྡོ་རྗེ་རྒྱལ་མཚན་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
लेस म योस् शिन दु मोन लम यङ दग पर डुप प दोर जे ग्यल छ़ेन त बुर ग्युर चिग
हो प्रणिधान का सम्यक् साधन-कर्ता, वज्रध्वज समान बनूँ।43।

སྨོན་ལམ་མཐའ་ཡས་པས་དམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དགོངས་པ་ཡོངས་སུ་སྒྲུབ་པ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
मोन लम था येस् पेस् दम प थम चे क्यि गोङ प योङ सु डुप प कुन तु ज़ङ पो त बुर ग्युर चिग
अनन्त प्रणिधान से समस्त सन्तों के अभिप्राय को परिपूर्ण करने वाले, समन्तभद्र समान बनूँ।44।

དགོངས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་མཁྱེན་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པ་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དབྱངས་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
गोङ प थम चे ल ख्येन रप क्यि थर छिन प जे ज़ुन जम यङ त बुर ग्युर चिग
समस्त अभिप्रायों में ज्ञान पारंगत, भट्टारक मञ्जुघोष समान बनूँ।45।

མཁྱེན་རབ་དང་ཐུགས་རྗེའི་བདག་ཉིད་རོ་མཉམ་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
ख्येन रप दङ थुग जे दग ञिद् रो ञम प चेन रेस ज़िग वङ छुग त बुर ग्युर चिग
ज्ञान एवं करुणा स्वभाव में एकरस, अवलोकितेश्वर के समान बनूँ।46।

ཐུགས་རྗེ་ཁྲོས་པས་འགྲོ་བ་མ་རུངས་པ་འདུལ་བ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
थुग जे ठोस् पेस् डो व म रुङ प दुल व छग न दोर जे त बुर ग्युर चिग
करुणा रूपी क्रोधोर्मि से क्रूर सत्त्वों को दमित करने वाले वज्रपाणि के समान बनूँ।47।

གདུལ་བྱ་འདུལ་བའི་ཕྲིན་ལས་བླ་ན་མེད་པ་རྒྱལ་བ་བྱམས་པ་མགོན་པོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
दुल छ दुल बई ठिन लेस ल न मेद् प ग्यल व छम प गोन पो त बुर ग्युर चिग
विनेयजनों के दमन में अनुत्तर कर्म वाले, जिन मैत्रेयनाथ के समान बनूँ।48।

བླ་ན་མེད་པའི་ཐབས་ལ་མཁས་པས་བསྟན་པ་རིན་པོ་ཆེ་འཛིན་པ་འཕགས་པ་ཆོས་འཕགས་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
ल न मेद् पई थप ल खेस् पेस् तेन प रिन पो छे ज़िन प फग प छोस् फग त बुर ग्युर चिग
अनुत्तर उपाय-कुशलता से शासन-रत्न को ग्रहण करने वाले, आर्य धर्मोदगत के समान बनूँ।49।

དེ་ལྟ་བུའི་གོ་འཕང་ཐོབ་ནས་ཀྱང་བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཆུ་བོ་སྒྲོལ་བར་བྱེད་
दे त बुइ गो फङ थोप नेस् क्यङ दग दङ सेम चेन थम चे क्यि दुग ङल ग्यि छु बो डोल वर छेद्
ऐसे पद को प्राप्त कर भी स्वयं सहित समस्त सत्त्वों को दुःखोघ से तारने वाले,

པའི་གྲུ་བོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
पई डु बो त बुर ग्युर चिग
नौका समान बनूँ।50।

ཉོན་མོངས་པའི་ཟུག་རྔུ་འབྱིན་པའི་སྨན་མཆོག་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
ञोन मोङ पई ज़ुग ङु छिन पई मेन छोग त बुर ग्युर चिग
क्लेश-पीड़ा को निकालने वाले, उत्तम-औषधि समान बनूँ।51।

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཚད་གདུང་སེལ་བར་བྱེད་པའི་སྤྲིན་སྟུག་པོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
नम पर तोग पई छ़े दुङ सेल बर छेद् पई टिन तुग पो त बुर ग्युर चिग
विकल्प रूपी उष्ण-दुःख का निवारण करने वाले घने मेघ समान बनूँ।52।

ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞི་རྟེན་བྱེད་པ་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
योन तेन रिन पो छे थम चे क्यि शि तेन छेद् प ग्य छ़ो छेन पो त बुर ग्युर चिग
**समस्त गुण-रत्नों का आश्रयाधार-कर्ता महासमुद्र के समान बनूँ।53।**

བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་ལྷུན་སྟུག་པ་རིའི་རྒྱལ་པོ་རི་རབ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
सोद् नम दङ ये शेस् क्यीस् ल्हुन तुग प री ग्यल पो रि रप त बुर ग्युर चिग
**पुण्य एवं ज्ञान से मेरुघनी, गिरिराज सुमेरु समान बनूँ।54।**

བློ་གྲོས་ཡངས་ཞིང་དྲི་མ་མེད་པ་སྟོན་ཀའི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
लो डोस् यङ शिङ डि म मेद् प तोन कई द बई दक्यिल खोर त बुर ग्युर चिग
**विमल-विस्तृत-बुद्धिमान्, शरद् के चन्द्रमण्ड़ल सा बनूँ।53।**

ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་གཟི་བརྗིད་དང་དཔལ་འབར་བ་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
थप दङ शेस् रप क्यि ज़ि जिद् दङ पल बर व ञि म दङ द व त बुर ग्युर चिग
**उपाय एवं प्रज्ञा ओज और श्री से प्रज्वलित, सूर्य एवं चन्द्रमा के समान बनूँ।54।**

དགོས་འདོད་མ་ལུས་པ་ཡིད་བཞིན་དུ་སྟེར་བ་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རྫས་སྣ་ཚོགས་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
गोस् दोद् म लुस् प यिद् शिन दु तेर व ङोस् डुप क्यि ज़ेस् न छ़ोग त बुर ग्युर चिग
**अशेष इच्छाओं को मन की इच्छानुसार देने वाले, नाना सिद्ध-पदार्थ समान बनूँ।55।**

མདོར་ན་བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་རྒུད་པ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་ཞིང་།
दोर न दग दङ सेम चेन थम चे जिग तेन दङ जिग तेन लेस देस् पई गुद् प था दग दङ डल शिङ
**संक्षेप में, स्वयं सहित समस्त सत्त्व, लोक एवं लोकातीत के समस्त हानियों से विरक्त होकर (उनके) जाति**

སྐྱེ་བ་དང་། རྒ་བ་དང་། ན་བ་དང་། འཆི་བ་དང་། སྡུ་ངན་དང་། སྨྲེ་སྔགས་འདོན་པ་དང་།
क्ये व दङ   ग व दङ   न व दङ   छि व दङ   न्य ङेन दङ   मे ङग दोन प दङ
**(जन्म), जरा, रोग, मृत्यु, दुःख, परिदेव,**

ཡིད་མི་བདེ་བ་དང་། འཁྲུགས་པ་ལ་སོགས་པ་སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་མྱུར་དུ་སྐེམ་པར་གྱུར་ཅིག །
यिद् मि दे व दङ   ठुग प ल सोग प दुग ङल ग्यि ग्य छ़ो छेन पो न्युर दु केम पर ग्युर चिग
**दौर्मनस्य और व्याकुलता आदि दुःख-महासागर शीघ्र शुष्क हों।56।**

འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་ཞིང་གཙང་བ་དང་།
जिग तेन दङ जिग तेन लेस देस् पई फुन सुम छ़ोग प दङ यङ दग पर देन शिङ ज़ङ व दङ
**लोक एवं लोकातीत के सम्पन्नताओं से सम्यक् रूप से युक्त होकर शुचिता,**

དག་པ་དང་། བདེ་བ་དང་། རྟག་པ་དང་། དགེ་ཞིང་ལེགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེ་ཐམས་ཅད་
दग प दङ   दे व दङ   तग प दङ   गे शिङ लेग प ल सोग पई योन तेन रिन पो छे थम चे
**पवित्रता, सुखता, और नित्यता सहित पुण्य-कल्याण आदि समस्त गुण-रत्नों के आकर**

ཀྱི་འབྱུང་གནས་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་དབང་གི་རྒྱལ་པོ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཅིག །
क्यि छुङ नेस् यिद् शिन ग्यि नोर बु रिन पो छे वङ गि ग्यल पो त बुर ग्युर चिग
**चिन्तामणि-रत्नेश्वरराज के समान बनूँ।**57।

དེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །
दे दे खो न शिन दु ग्युर चिग
**वे (प्रणिधान) वैसे ही सिद्ध हों।**

དེ་ལས་གཞན་དུ་མ་གྱུར་ཅིག །
दे लेस शेन दु म ग्युर चिग
**उनसे भिन्न नहीं हों।**

ཅི་ནས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །ཅེས་སོ། །
चि नेस् क्यङ दे शिन दु ग्युर चिग
**अनिवार्यतः वैसे ही (सिद्ध) हों।** इति।

ཡེལ་པའི་སྨོན་ལམ།

# जगन्नाथ येल्-पा प्रणिधान

འགྲོ་མགོན་ཡེལ་པས། ཡང་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་སེམས་ཀྱིས་ཅེར་རེ་བལྟས་ལ་དེའི་ངང་དུ་བཞག་པ་ཐུན་གཅིག་དེ་ལྟར་རེས་འཇོག་ཏུ་བསྒོམ་པའི་འགྲོ་འཇོག་པའི་དུས་སུ།

जगन्नाथ येल-पा ने कहा- पुनः चित्त-स्वरूप को चित्त द्वारा एकटक (एकाग्र) देखें। (तत्पश्चात्) उसी स्वभाव में स्थापित हों। एक सत्र ऐसे ही साधना करें। साधना के सत्रावसान पर-

བདག་གིས་ཟབ་མོའི་དོན་བསྒོམ་པ་ལ་སོགས་པའི་དགེ་བ་བགྱིས་པའི་འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་དེ། བདག་ཉིད་གཅིག་པུ་ལ་
दग गीस् ज़प मोइ दोन गोम प ल सोग पई गे व ग्यीस् पई डेस् बु थम चे दे दग ञिद् चिग पु
**मेंरे द्वारा गम्भीर-अर्थ भावना आदि कृत पुण्यों का समस्त फल स्वयं अकेले के लिये**

མི་སྨིན་པར་བདག་དང་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད། །ཁམས་གསུམ་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་
ल मि मिन पर दग दङ नम खा दङ ञम पई सेम चेन थम चे खम सुम खोर बई दुग ङल
**उपचित न होकर स्वयं सहित समस्त आकाश-सम-सत्त्व त्रिधातु संसार-दुःख सागर से**

གྱི་རྒྱ་མཚོ་ལས་མྱུར་དུ་ཐར་ནས་ཆོས་སྐུའི་དོན་རྟོགས་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །ཅེས་བརྗོད།
ग्यि ग्य छ़ो लेस न्युर दु थर नेस् छोस् कुइ दोन तोग पई ग्युर ग्युर चिग
**शीघ्र मुक्त होकर धर्मकाय अधिगम का हेतु बनें-** ऐसा पाठ करें।

དེ་ནས་བསྔོ་ས་སངས་རྒྱས། བསྔོ་རྒྱུ་དགེ་བ། ཆེད་དུ་བྱ་བ་སེམས་ཅན། བསྔོ་མཁན་རང་ཉིད་རྣམས་རང་གི་སེམས་ཡིན་སྙམ་དུ་སེམས།སེམས་མ་བཅོས་པའི་ངང་ལ་ཐུན་གཅིག་བསྒོམ། །

तत्पश्चात् परिणामना क्षेत्र- बुद्ध, परिणामना हेतु- पुण्य, उद्देश- सत्त्व, परिणामना-कर्ता- स्वयं सभी अपना चित्त है- ऐसा चिन्तन करना चाहिये। अकृतिम चित्त-स्वभाव में एक सत्र पर्यन्त भावना करना चाहिये।

# སྨོན་ལམ་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ།
# प्रणिधान-चिन्तामणि

ཨོཾ་སྭསྟི།
ओं स्वस्ति
ओं स्वस्ति।

དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་དབྱེར་མེད་རྡོ་རྗེ་འཆང་། །
दुस् सुम सङ ग्येस् येर मेद् दोर जे छङ
त्रैकालिक बुद्ध (से) अभिन्न वज्रधर।

བྱམས་པ་ལ་སོགས་རྒྱལ་སྲས་འཁོར་རྣམས་ལ། །
छम प ल सोग ग्यल सेस् खोर नम ल
मैत्रेय आदि जिनपुत्र-परिवार लोगों को।

ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར། །
ज़प चिङ ग्य छे छोस् क्यि खोर लो कोर
गम्भीर एवं विस्तृत धर्मचक्रप्रवर्त्तन करते (हैं)।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

འཁོར་འདས་གཉིས་མེད་སྤྲུལ་སྐུ་ཏཻ་ལོ་པ། །
खोर देस् ञीस् मेद् टुल कु तै लो प
अद्वय संसार-निर्वाण, निर्माणकाय तिलोपा।

འགྲོ་དོན་བྱིན་རླབས་ཉི་མ་མཁའ་ལ་ཤར། །
डो दोन छिन लप ञि म खा ल शर
सत्त्वार्थ अधिष्ठान रूपी सूर्य आकाश में उदित है।

མཉམ་གཞག་ངང་ལ་སྤྲོས་མེད་སྤྱོད་པ་མཛད། །
ञम शग ङङ ल टोस् मेद् चोद् प ज़े
समाहित स्वभाव में अप्रपञ्च-चर्या करते।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

ལུས་སྲོག་ལྟོས་མེད་བླ་མའི་བཀའ་བཞིན་བསྒྲུབ། །
लुस् सोग तोस् मेद् ल मई का शिन डुप
शरीर (और) प्राण की परवाह न कर, गुरु-वचन पालन करते।

བྱིན་རླབས་སྟོབས་ཀྱིས་འཇའ་ལུས་ཆོས་སྐུར་གྱུར། །
छिन लप तोप क्यीस् जा लुस् छोस् कुर ग्युर
अधिष्ठान-बल से इन्द्रधनुषकाय (रूपी) धर्मकाय में परिवर्तित।

བུ་ལ་ཧ་རིར་སྤྲུལ་སྐུས་འགྲོ་དོན་མཛད། །
पु ल ह रिर टुल कुस् डो दोन ज़े
फुल्लहरि में निर्मितकाय द्वारा सत्त्वार्थ करने वाले।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

དག་སྣང་དཔལ་གྱི་རི་ལ་སྤྲུལ་པའི་སྐུས། །
दग नङ पल ग्यि रि ल टुल पई कुस्
शुद्धाभासित श्रीपर्वत पर निर्माणकाय के द्वारा।

ལུང་བསྟན་ས་ར་ཧ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབ། །
लुङ तेन स र ह पेस् छिन ग्यीस् लप
व्याकरणित, (हैं) सरह द्वारा अधिष्ठित।

སྙིང་པོའི་དོན་རྟོགས་མངའ་བདག་རྒྱལ་བའི་སྲས། །
ञिङ पोइ दोन तोग ङा दग ग्यल वई सेस्
हृदयार्थ ज्ञाता, अधिपति जिनपुत्र (हैं)।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

ཐུགས་ཀྱི་སྲས་མཆོག་རྗེ་བཙུན་ལྷོ་བྲག་པ། །
थुग क्यि सेस् छोग जे ज़ुन ल्हो डग प
हृदयपुत्रों में उत्तम भट्टारक ल्हो-डग्-पा।

མཉམ་གཞག་ངང་ལ་རླུང་སེམས་གྲོང་འཇུག་མཛད། །
ञम शग ङङ ल लुङ सेम डोङ जुग ज़े
समाहित स्वभाव में वायु-चित्त (का) संक्रमण किया।

གཞན་ཕན་མཆོག་གི་གྲུབ་ཐོབ་ཆུ་རྒྱུན་བཞིན། །
शेन फेन छोग गि डुप थोप छु ग्युन शिन
परार्थोत्तम-सिद्ध (हैं) जलधारा-सा।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

རང་བྱུང་ཡེ་ཤེས་རིན་ཆེན་རི་བོ་ལ། །
रङ छुङ ये शेस् रिन छेन रि बो ल
स्वयंभू ज्ञान रूपी रत्नगिरि पर।

རྗེ་བཙུན་མིད་ལ་ཡོན་ཏན་ལྗོན་ཤིང་འཁྲུངས། །
जे ज़ुन मिद् ल योन तेन जोन शिङ ठुङ
भट्टारक मिद्-ला (मि-ला) गुणपादप उत्पन्न हुआ।

གྲུབ་ཐོབ་རྒྱལ་སྲས་ཡལ་འདབ་འབྲས་བུ་རྒྱས། །
डुप थोप ग्यल सेस् यल दप डेस् बु ग्येस्
सिद्ध-जिनपुत्र रूपी पत्रफल विस्तृत हुए।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

འདྲེན་པ་ཟླ་འོད་གཞོན་ནུའི་སྤྲུལ་པ་དེ། །
डेन प द ह़ोद् शोन नुइ टुल प दे
नायक कुमारचन्द्रप्रभ का वह निर्माण(-काय)।

རྩོད་ལྡན་དུས་སུ་འགྲོ་བའི་དོན་ལ་བྱོན། །
ज़ोद् देन दुस् सु डो बई दोन ल छोन
कलियुग में प्राणिहित के लिए पधारे।

གཞན་དོན་མཚུངས་མེད་དྭགས་པོ་རིན་པོ་ཆེ། །
शेन दोन छुङ मेद् दग पो रिन पो छे
अनुपम परार्थकर्त्ता (हैं) द्वग्स-पो रिन्-पो-छे।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

སྒྲིབ་པའི་སྤྲིན་བྲལ་ཆོས་སྐུ་ནམ་མཁའ་ལ། །
डिप पई टिन डल छोस् कु नम खा ल
आवरणमेघ रहित धर्मकाय (रूपी) आकाश में।

གཞན་དོན་ཡེ་ཤེས་མཁྱེན་པའི་ཉི་ཟླ་གསལ། །
शेन दोन ये शेस् ख्येन पई ञि द सल
परार्थ ज्ञान-ज्ञाता सूर्य-चन्द्र प्रकाशित।

རྗེ་བཙུན་ཁམས་པ་ཆོས་རྗེ་བརྩེ་བ་ཅན། །
जे ज़ुन खम प छोस् जे ज़े व चेन
दयावान् भट्टारक खम्स-पा धर्म-स्वामी।

རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་བཀའ་བརྒྱུད་བྱིན་རླབས་ལ། །
दोर जे छङ दङ का ग्युद् छिन लप ल
वज्रधर तथा काग्युद्-अधिष्ठान में।

ཐར་པ་བསྒྲུབ་ལ་བར་ཆད་མེད་པ་དང་། །
थर प डुप ल बर छे मेद् प दङ
मोक्ष साधन में बाधा न हो तथा।

བདག་ཀྱང་རིང་པོར་མི་ཐོགས་དེ་བཞིན་ཤོག །
दग क्यङ रिङ पोर मि थोग दे शिन शोग
मैं भी शीघ्रतर वैसा बन जाऊँ।।

བདག་སོགས་སློབ་འབངས་གསོལ་བ་གང་འདེབས་པ། །
दग सोग लोप बङ सोल व गङ देप प
हम गुरु-शिष्य जो अध्येषणा कर रहे हैं।

མ་འོངས་དུས་སུ་འགྲོ་བ་འདྲེན་པར་ཤོག །
म ह़ोङ दुस् सु डो व डेन पर शोग
अनागत काल में प्राणियों का आकर्षण करें।।

སྨོན་ལམ་འདི་ནི་སྨར་པ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་མཛད་པའོ། །
यह प्रणिधान मर्-पा शेस्-रब् ये-शेस् द्वारा रचित है।

## དགེ་སྦྱོར་བདུན་པའི་སྨོན་ལམ།

# कुशलयोग सप्तमी प्रणिधान

སྨོན་ལམ་རིང་མོ་འདི་ནི་རང་འདོད་ཀྱི་འཁྲི་བ་མེད་པར་ལྷག་བསམ་རྣམ་པར་དག་པས། བླ་མ་དཀོན་མཆོག་རྣམས་ཀྱང་སྨོན་ལམ་ལ་ཐུགས་གཏོད་ཅིང་བྱིན་གྱིས་རློབ་པར་བསམ་ལ་སྨོན་ལམ་གདབ་པ་ནི།

यह लम्बा प्रणिधान, स्वार्थ-आसक्ति रहित होकर विशुद्ध अध्याशय से गुरु त्रिरत्न आदि भी प्रणिधान को ध्यान देते हुए अधिष्ठित कर रहे हैं, ऐसा चिन्तन करना चाहिए। प्रणिधान तो–

བདག་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དུས་གསུམ་གྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་འཁོར་འདས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
दग शेन थम चे क्यि दुस् सुम ग्यि गे बई त्ऱ व दीस् नम खा दङ जम पई खोर देस् थम चे क्यि
स्व-पर सभी के इस त्रिकाल कुशलमूलों के द्वारा आकाशसम संसार-निर्वाण सभी के हित के लिए निरन्तर

དོན་དུ་བདག་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་དལ་འབྱོར་གྱི་མི་ལུས་རིན་པོ་ཆེ་རྒྱུན་ཆད་མེད་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
दोन दु दग छ़े रप थम चे दु दल छोर ग्यि मि लुस् रिन पो छे ग्युन छे मेद् प थोप पर ग्युर चिग
मुझे सभी जन्मान्तरों में क्षणसम्पद् मानव-रत्न प्राप्त हों।

ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་དད་པ་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
छ़े रप थम चे दु दे प छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
समस्त जन्मान्तरों में महाश्रद्धावानों में श्रेष्ठ होऊँ।

མོས་གུས་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
मोस् गुस् छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महाछन्द-आदर वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

བརྩོན་འགྲུས་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
त्ऱोन डुस् छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महावीर्यवानों में श्रेष्ठ होऊँ।

ཤེས་རབ་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
शेस् रप छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महाप्रज्ञावानों में श्रेष्ठ होऊँ।

སྤོབས་པ་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
पोप प छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महाप्रतिभा वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

ཡོན་ཏན་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
योन तेन छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महागुणवानों में श्रेष्ठ होऊँ।।

ཚེ་རིང་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
छ़े रिङ व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
दीर्घायु वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

ནད་མེད་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ने मेद् प नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
निरोगियों में श्रेष्ठ होऊँ।

གཟུགས་བཟང་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ज़ुग ज़ङ व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
भद्ररूप वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
लोङ चोद् छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महासम्पत्ति वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

སྙིང་རྗེ་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ञिङ जे छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महाकरुणा वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

སྙིང་རུས་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ञिङ रुस् छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महा-उत्साह वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

དབྱངས་སྙན་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
यङ ञेन प नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
मधुर घोष वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

གཟི་བརྗིད་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ज़ि जिद् छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महातेजस्वियों में श्रेष्ठ होऊँ।

རིགས་མཐོ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
रिग थो व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
उच्च कुलीनों में श्रेष्ठ होऊँ।

གཏོང་ཕོད་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
तोङ फोद् छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महात्यागियों में श्रेष्ठ होऊँ।।

གོ་ཆ་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
गो छ छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महासन्नाह वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

གཉེན་པོ་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
ञेन पो छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महाप्रतिपक्ष वालों में श्रेष्ठ होऊँ।

བཙན་ཤིང་ཆེ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །
त्sेन शिङ छे व नम क्यि छोग तु ग्युर चिग
महाशक्तिवानों में श्रेष्ठ होऊँ।।

ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་མཚན་དང་དཔེ་བྱད་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छे रप थम चे दु छेन दङ पे छे क्यीस् ग्येन प दोर जेई कु थोप पर ग्युर चिग
समस्त जन्मान्तरों में लक्षण एवं अनुव्यञ्जनों से अलंकृत वज्रकाय को प्राप्त करूँ।

ཡན་ལག་དྲུག་ཅུ་དང་ལྡན་པ་ཚངས་པའི་དབྱངས་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
येन लग डुग चु दङ देन प छङ पई यङ थोप पर ग्युर चिग
साठ अंगों से युक्त ब्रह्मस्वर को प्राप्त करूँ।

ཤེས་བྱ་ཀུན་ལ་མཁས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐུགས་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
शेस् छ कुन ल खेस् पई ये शेस् क्यि थुग दङ देन पर ग्युर चिग
समस्त ज्ञेयों को जानने वाले ज्ञानहृदय से युक्त होऊँ।

སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་རྣམས་དང་མཇལ་བར་གྱུར་ཅིག །
क्येस् म थग तु थेग प छेन पोइ गे बई शेस् ञेन नम दङ जल बर ग्युर चिग
उत्पन्न होते ही महायानीय कल्याणमित्रों का दर्शन करूँ।

མཇལ་ནས་མཉེས་པ་གསུམ་མཐར་ཕྱིན་པ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
जल नेस् ञेस् प सुम थर छिन प डुप पर ग्युर चिग
दर्शन कर तीन प्रसन्नताओं की पारंगतता सिद्ध हो।

མི་མཉེས་པ་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
मि ञेस् प के चिग क्यङ मि छुङ बर ग्युर चिग
अप्रसन्नता क्षणभर भी न हो।

དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དེ་དག་གི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་བྱིན་རླབས་དང་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པ་བདག་གི་ལུས་ངག་
गे बई शेस् ञेन दे दग गि कु सुङ थुग क्यि छिन लप दङ योन तेन म लुस् प दग गि लुस् ङग
उन कल्याणमित्रों के काय-वाक्-चित्त के अधिष्ठान और अशेष गुण मेरे काय-वाक्-चित्त में

ཡིད་གསུམ་ལ་འཇུག་ཅིང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
यिद् सुम ल जुग चिङ योङ सु ज़ोग पर ग्युर चिग
प्रवेश कर परिपूर्ण हों।।

ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞབས་དྲུང་དུ་གཞོན་ནུ་ལ་རབ་ཏུ་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
छे रप थम चे दु ल म सङ ग्येस् क्यि शप डुङ दु शोन नु ल रप तु छुङ बर ग्युर चिग
समस्त जन्मान्तरों में गुरु-बुद्ध के चरणों में कुमार-अवस्था में प्रव्रजित होऊँ।

ཚུལ་ཁྲིམས་དང་དམ་ཚིག་མཐར་ཕྱིན་པར་སྲུང་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
छुल ठिम दङ दम छिग थर छिन पर सुङ नुस् पर ग्युर चिग
शील एवं (तन्त्र-)समय (की) पारंगत (सम्पूर्ण) रूप से रक्षा कर सकूँ।

བསླབ་པ་གསུམ་གྱི་གཞི་བཟུང་ནས་དམ་པའི་ཆོས་མཐའ་དག་ལ་ཚུལ་བཞིན་དུ་སྤྱོད་པར་གྱུར་ཅིག །
लप प सुम ग्यि शि जुङ नेस् दम पई छोस् था दग ल छुल शिन दु चोद् पर ग्युर चिग
त्रिशिक्षाओं के आधार को ग्रहण कर सम्पूर्ण सद्धर्म में विधिपूर्वक आचरण करूँ।

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཐོས་བསམ་སྒོམ་གསུམ་མཐར་ཕྱིན་པ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
थेग प छेन पोइ छोस् थम चे ल थोस् सम गोम सुम थर छिन प डुप पर ग्युर चिग
समस्त महायान धर्मों में श्रवण-चिन्तन (और) मनन (ये) तीन पूरी तरह से सिद्ध करूँ।

དམ་པའི་ཆོས་སྒྲུབ་ཅིང་ཉམས་སུ་ལེན་པ་ལ་ཕྱི་ནང་གི་བར་ཆད་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
दम पई छोस् डुप चिङ ञम सु लेन प ल छि नङ गि बर छे के चिग क्यङ मि छुङ बर ग्युर चिग
सद्धर्म को साधित कर अभ्यास में बाह्याभ्यान्तर की बाधाएँ एक क्षण भी उत्पन्न न हों।।

ཡོན་ཏན་གྱི་རྩལ་ཁ་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
योन तेन ग्यि त्सल ख ज़ोग पर ग्युर चिग
गुण-कला को पूर्ण करूँ।

བརྒྱུད་པའི་སྲོལ་ཁ་ཟིན་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युद् पई सोल ख ज़िन पर ग्युर चिग
पारम्परिक रीति को ग्रहण करूँ।

ཕ་རྗེས་བུས་སོབས་པར་གྱུར་ཅིག །
फ जेस् बुस् सोप पर ग्युर चिग
पिता के पद-चिह्नों पर चलूँ।

སྟོང་ཉིད་དང་སྙིང་རྗེ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
तोङ ञिद् दङ ञिङ जे छोङ पर ग्युर चिग
शून्यता एवं करुणा का अभ्यास करूँ।

རང་གཞན་གྱི་དོན་གཉིས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
रङ शेन ग्यि दोन ञीस् डुप पर ग्युर चिग
स्व-पर के दो अर्थों को सिद्ध करूँ।

རྟོགས་པའི་ཡེ་ཤེས་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
तोग पई ये शेस् छर बर ग्युर चिग
अवगम (रूपी) ज्ञान का उदय हो।

མ་རིག་པའི་མུན་པ་སངས་པར་གྱུར་ཅིག །
म रिग पई मुन प सङ पर ग्युर चिग
अज्ञान (रूपी) अन्धकार को स्वच्छ करूँ।।

རྐྱེན་བཟང་ངན་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
क्येन ज़ङ ङेन थम चे सङ ग्येस् क्यि लम दु लोङ पर ग्युर चिग
समस्त अच्छे और बुरे प्रत्ययों को बुद्ध के मार्ग की ओर ले चलूँ।

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་ཤེས་རབ་ཆེན་པོས་ཆོས་ཉིད་བདེན་པའི་དོན་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
गे बई त्स व दीस् छ़े रप थम चे दु शेस् रप छेन पोस् छोस् ञिद् देन पई दोन तोग पर ग्युर चिग
इस कुशलमूल से सभी जन्मान्तरों में महाप्रज्ञा के द्वारा धर्मता (रूपी) सत्यार्थ का अवगम करूँ।

སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོས་གཞན་གྱི་སྡུག་བསྔལ་ལ་མི་བཟོད་པར་གྱུར་ཅིག །
ञिङ जे छेन पोस् शेन ग्यि दुग ङल ल मि ज़ोद् पर ग्युर चिग
महाकरुणा के द्वारा पर-दुःख को सहन न करूँ।

བྱིན་རླབས་ཆེན་པོས་གཞན་གྱི་སྣང་བ་སྒྱུར་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
छिन लप छेन पोस् शेन ग्यि नङ व ग्युर नुस् पर ग्युर चिग
महाधिष्ठान के द्वारा पर के आभास को परिवर्तित कर सकूँ।

གདམས་ངག་ཆེན་པོས་གཞན་གྱི་རྒྱུད་ལ་ཡོན་ཏན་འཁོད་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दम ङग छेन पोस् शेन ग्यि ग्युद् ल योन तेन खोद् नुस् पर ग्युर चिग
महान् उपदेश के द्वारा पर की (चित्त-)सन्तति में गुण-आरूढ कर सकूँ।

ཉམས་མྱོང་ཆེན་པོས་གཞན་གྱི་ལམ་སྣ་འཁྲིད་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञम न्योङ छेन पोस् शेन ग्यि लम न ठिद् नुस् पर ग्युर चिग
महान् अनुभव के द्वारा पर का मार्ग-दर्शन करा सकूँ।।

རྟོགས་པས་བདག་གྲོལ་བར་གྱུར་ཅིག །
तोग पेस् दग डोल वर ग्युर चिग
अवगम (धर्म) के द्वारा मैं मुक्त होऊँ।

ཐུགས་རྗེས་གཞན་གྲོལ་བར་གྱུར་ཅིག །
थुग जेस् शेन डोल वर ग्युर चिग
करुणा के द्वारा पर को मुक्त करूँ।

གདུལ་བྱ་དུས་ལ་བབ་པར་གྱུར་ཅིག །
दुल छ दुस् ल बप पर ग्युर चिग
विनेय(-जन) का कालावसर प्राप्त हो।

རྟེན་འབྲེལ་ཐབས་ལ་མཁས་པར་གྱུར་ཅིག །
तेन डेल थप ल खेस् पर ग्युर चिग
प्रतीत्योपाय में कुशल होऊँ।

གཟུང་འཛིན་མཁའ་ལྟར་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ुङ ज़िन खा तर दग पर ग्युर चिग
ग्राह्य-ग्राहक (विषय-विषयी दोनों) आकाशवत् शुद्ध हों।

བཟོད་མེད་ཀྱི་སྙིང་རྗེ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ोद् मेद् क्यि ञिङ जे छोङ पर ग्युर चिग
अपरिमित करुणा का अभ्यास करूँ।

ལས་འབྲས་ཀྱི་རྟེན་འབྲེལ་འཚར་བར་གྱུར་ཅིག །
लेस डेस् क्यि तेन डेल छर बर ग्युर चिग
कर्मफल का प्रतीत्य उदित हो।।

རང་འདོད་ཀྱི་རྩ་བ་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
रङ दोद् क्यि त्स़ व छोद् पर ग्युर चिग
अपनी राग का मूल कट जाए।

རིགས་དྲུག་ལ་བསྒོམ་ཕྱོགས་མེད་དུ་ཐེབས་པར་གྱུར་ཅིག །
रिग डुग ल गोम छोग मेद् दु थेप पर ग्युर चिग
षट् योनियों में साधना पक्षपात विना हो जाए।

ཁམས་གསུམ་སེམས་ཅན་གྱི་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་སུ་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་
खम सुम सेम चेन ग्यि लुस् ङग यिद् सुम दुस् सुम सङ ग्येस् क्यि कु सुङ थुग सु के चिग म ञिद्
त्रिधातु सत्त्वों के काय-वाक्-चित्त को त्रिकाल बुद्धों के काय-वाक्-चित्त में एक क्षण मात्र

ལ་ངོ་འཕྲོད་པར་གྱུར་ཅིག །
ल ङो ठोद् पर ग्युर चिग
में जान जाऊँ।

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་མ་ལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
गे बई त्ऱ व दीस् छ़े रप थम चे दु ल म ल सङ ग्येस् क्यि दु शेस् क्ये बर ग्युर चिग
इस कुशलमूल के द्वारा समस्त जन्मान्तरों में गुरु में बुद्ध-संज्ञा उत्पन्न हो।

མོས་གུས་ལ་ལྟེམ་རྐྱང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
मोस् गुस् ल तेम क्यङ मि छुङ बर ग्युर चिग
छन्दादर में अस्थिरता न हो।

དད་གུས་ལ་བརྟན་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
दे गुस् ल तेन प थोप पर ग्युर चिग
श्रद्धादर में स्थिरता प्राप्त हो।

ཡིད་ཆེས་ལ་རྒྱུན་ཆད་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
यिद् छेस् ल ग्युन छे मि छुङ बर ग्युर चिग
विश्वास निरन्तर बनी रहे।

ཐུགས་ཡིད་གཅིག་ཏུ་འདྲེ་བར་གྱུར་ཅིག །
थुग यिद् चिग तु डे बर ग्युर चिग
हृदय (और) मन एक में मिश्रित हो।

བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱིན་རླབས་དང་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པ་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
ल म सङ ग्येस् क्यि छिन लप दङ योन तेन म लुस् प जुग पर ग्युर चिग
गुरु-बुद्ध के अधिष्ठान तथा अशेष गुण (मुझमें) प्रवृत्त हों।

སྐྱོན་དག་ཡོན་ཏན་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
क्योन दग योन तेन ज़ोग पर ग्युर चिग
दोष–शुद्ध (तथा) गुण–पूर्ण हों।

ཚེ་འདི་བློ་ཡིས་ཐོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़े दि लो यीस् थोङ पर ग्युर चिग
इस जन्म का बुद्धि द्वारा त्याग हो।

དགོས་མེད་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
गोस् मेद् ग्युद् ल क्ये बर ग्युर चिग
निःसारता (चित्त-)सन्तति में उत्पन्न हो।

ཞེན་པ་གཏིང་ནས་ལྡོག་པར་གྱུར་ཅིག །
शेन प तिङ नेस् दोग पर ग्युर चिग
आसक्ति (का) तल से निवर्तन हो।

འཁྲི་བ་རྩད་ནས་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
ठि व त्ऱे नेस् छोद् पर ग्युर चिग
राग (का) मूल से छेदन हो।

འདོད་ཡོན་ལ་བློ་མི་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
दोद् योन ल लो मि जुग पर ग्युर चिग
कामगुण में बुद्धि प्रवृत्त न हो।

བྱ་བ་ལ་ལག་མི་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
छ व ल लग मि जुग पर ग्युर चिग
(सांसारिक) कार्य में हस्त प्रवृत्त न हो।

འཁོར་བ་ལ་ཡིད་མི་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
खोर व ल यिद् मि जुग पर ग्युर चिग
संसार में चित्त प्रवृत्त न हो।

གཞན་སྤྱོད་ལ་སེམས་མི་འཇུག་པར་གྱུར་ཅིག །
शेन चोद् ल सेम मि जुग पर ग्युर चिग
पर-चर्या में चित्त प्रवृत्त न हो।

བཟློག་སྒོམ་གནད་དུ་ཚུད་པར་གྱུར་ཅིག །
दोग गोम ने दु छुद् पर ग्युर चिग
निवर्तन-साधना मर्म में प्रवृत्त हो।

གཉེན་པོ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
ञेन पो ल वङ थोप पर ग्युर चिग
प्रतिपक्ष पर अधिकार प्राप्त हो।

རོ་སྙོམས་གདེང་དུ་ཚུད་པར་ཤོག་ཅིག །
रो ञोम देङ दु छुद् पर ग्युर चिग
समरसता में विश्वास प्राप्त हो।

ཆོས་བརྒྱད་མགོ་བོ་སྙོམས་པར་ཤོག་ཅིག །
छोस् ग्ये गो बो ञोम पर ग्युर चिग
(स्तुति-निन्दा आदि) अष्ट (लौकिक) धर्म में समता प्राप्त हो।

བདེ་སྡུག་རོ་སྙོམས་པར་ཤོག་ཅིག །
दे दुग रो ञोम पर ग्युर चिग
सुख-दुःख में समता प्राप्त हो।

རྐྱེན་ངན་གྲོགས་སུ་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
क्येन ङेन डोग सु छर बर ग्युर चिग
दुष्प्रत्यय मित्रता में उदित हो।

རྣམ་རྟོག་ཕྲིན་ལས་སུ་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नम तोग ठिन लेस सु छर बर ग्युर चिग
विकल्प कर्म में उदित हो।

རེ་དོགས་ཀྱི་གཡང་ས་ཆོད་པར་ཤོག་ཅིག །
रे दोग क्यि यङ स छोद् पर ग्युर चिग
आशा-निराशा के प्रपात का छेदन हो।

དགག་སྒྲུབ་སྤང་བླང་དང་བྲལ་བར་ཤོག་ཅིག །
गग डुप पङ लङ दङ डल बर ग्युर चिग
निषेध-साधन हेयोपादेय से रहित हो।

རྐྱེན་སྣང་བཟང་ངན་ཐམས་ཅད་ཆོས་ཉིད་དུ་རོ་སྙོམས་པར་ཤོག་ཅིག །
क्येन नङ ज़ङ ङेन थम चे छोस् ञिद् दु रो ञोम पर ग्युर चिग
अच्छे और बुरे समस्त प्रत्याभास धर्मता रूप में सम हो।

ཞིང་ཁམས་ཕྱོགས་མེད་དུ་འབྱོངས་པར་ཤོག་ཅིག །
शिङ खम छोग मेद् दु छोङ पर ग्युर चिग
क्षेत्रधातु सर्वत्र शोधित हो।

དག་སྣང་ཕྱོགས་མེད་དུ་སྐྱེ་བར་ཤོག་ཅིག །
दग नङ छोग मेद् दु क्ये बर ग्युर चिग
सर्वत्र शुद्धाभास उत्पन्न हो।

སྣང་བ་བླ་མར་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नङ व ल मर छर बर ग्युर चिग
आभास गुरु में उदित हो।

སྣང་བ་ཡི་དམ་དུ་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नङ व यि दम दु छर बर ग्युर चिग
आभास इष्ट में उदित हो।

སྣང་བ་ཆོས་སྐུར་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नङ व छोस् कुर छर बर ग्युर चिग
आभास धर्मधातु में उदित हो।

སྣང་བ་སྐུ་གསུམ་དུ་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नङ व कु सुम दु छर बर ग्युर चिग
आभास त्रिकाय में उदित हो।

སྣང་བ་བདེ་བར་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नङ व दे वर छर बर ग्युर चिग
आभास सुख में उदित हो।

སྣང་བ་སྒྱུ་མར་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
नङ व ग्यु मर छर बर ग्युर चिग
आभास माया में उदित हो।

སྣང་བ་རྟེན་འབྲེལ་དུ་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
नङ व तेन डेल दु छर बर ग्युर चिग
आभास प्रतीत्य में उदित हो।

སྣང་བ་ནོར་བུར་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
नङ व नोर बुर छर बर ग्युर चिग
आभास मणि में उदित हो।

བཟང་ངན་འབྲིང་གསུམ་སྤྱི་བོར་འཁུར་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ङ ङेन डिङ सुम चि बोर खुर नुस् पर ग्युर चिग
(मैं) अच्छे-बुरे (और) मध्य तीनों (प्रकार के बोझों) को उठाने में समर्थ होऊँ।

རང་གཞན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡིད་འོང་གི་བྱམས་པ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
रङ शेन थम चे ल यिद् ह़ोङ गि छम प छोङ पर ग्युर चिग
स्व-पर सभी में मनोज्ञ मैत्री का अभ्यास करूँ।

ཚད་མེད་ཀྱི་སྙིང་རྗེ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़े मेद् क्यि ञिङ जे छोङ पर ग्युर चिग
अपरिमित करुणा का अभ्यास करूँ।

ལྷག་པའི་བསམ་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ल्हग पई सम प छङ छुप क्यि सेम छोङ पर ग्युर चिग
अध्याशय (रूपी) बोधिचित्त का अभ्यास करूँ।

བདག་གཞན་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
दग शेन थम चे ञम प ञिद् दु तोग पर ग्युर चिग
स्व-पर सभी में समभाव का ज्ञान हो।

བདེ་སྡུག་བརྗེ་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दे दुग जे नुस् पर ग्युर चिग
सुख-दुःख को बदल सकूँ।

གཞན་གྱི་སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་དགའ་བཞིན་སྤྲོ་བཞིན་དུ་འཁུར་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
शेन ग्यि दुग ङल थम चे गा शिन टो शिन दु खुर नुस् पर ग्युर चिग
दूसरों के सभी दुःखों को प्रीति-प्रसन्नतापूर्वक उठा सकूँ।

ཁུར་ནས་སྤྱོད་ནུས་པའི་སྙིང་རྗེ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
खुर नेस् चोद् नुस् पई ञिङ जे दङ देन पर ग्युर चिग
उठाकर आचरण योग्य करुणा से युक्त होऊँ।

སྙིང་རྗེའི་སྒོ་ནས་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञिङ जे गो नेस् लम दु लोङ पर ग्युर चिग
करुणा के द्वारा मार्ग में उठ सकूँ।

སྟོང་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་རོ་སྙོམས་པར་གྱུར་ཅིག །
तोङ ञिद् क्यि दोन ल रो ञोम पर ग्युर चिग
शून्यता के अर्थ में समता प्राप्त हो।

སྡུག་བསྔལ་གྱི་རང་བཞིན་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
दुग ङल ग्यि रङ शिन ज़ग प मेद् पई दे व छेन पो छर बर ग्युर चिग
दुःख का स्वभाव अनास्रव रूपी महासुख (में) उदित हो।

བདག་གི་བདེ་སྐྱིད་ཐམས་ཅད་གཞན་ལ་དགའ་སྤྲོ་དང་བཅས་ཏེ་སྟེར་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दग गि दे क्यिद् थम चे शेन ल गा टो दङ चेस् ते तेर नुस् पर ग्युर चिग
अपना सभी सुख (एवं) प्रसन्नता प्रीति-सुखपूर्वक दूसरों को दे सकूँ।

བྱིན་ནས་ཀྱང་འཁོར་འདས་ཐམས་ཅད་ལ་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་སྨིན་ཅིང་ཁྱབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छिन नेस् क्यङ खोर देस् थम चे ल द त ञिद् दु मिन चिङ ख्यप पर ग्युर चिग
देने के साथ ही संसार (एवं) निर्वाण सभी में अभी फलित होकर व्याप्त हो।

དེས་སྐྱོན་ཐམས་ཅད་དག་ཅིང་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ནས་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་དོན་གཉིས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་
देस् क्योन थम चे दग चिङ योन तेन थम चे योङ सु ज़ोग नेस् द त ञिद् दु दोन ञीस् फुन सुम
उसके द्वारा समस्त दोष शुद्ध होकर समस्त गुण परिपूर्ण होकर अभी द्वयर्थ सम्पद्, विना यत्न के सिद्ध

རྩོལ་མེད་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़ोग प ज़ोल मेद् दु डुप पर ग्युर चिग
हों।

ཚིག་ཚོག་གནད་དུ་ཚུད་པར་གྱུར་ཅིག །
छिग छोग ने दु छुद् पर ग्युर चिग
परमैक मर्म में प्रविष्ट हो।

མཉམ་གཞག་ལ་བརྟན་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ञम शग ल तेन प थोप पर ग्युर चिग
समाधि में स्थिरता प्राप्त हो।

ཞི་གནས་མཐར་ཕྱིན་པར་གྱུར་ཅིག །
शि नेस् थर छिन पर ग्युर चिग
शमथ में पारंगत(-ता प्राप्त) हो।

བདེ་གསལ་མི་རྟོག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
दे सल मि तोग पई तिङ ङे ज़िन छोग तु ग्युर प छोङ पर ग्युर चिग
सुख-प्रकाशित (एवं) निर्विकल्प परम समाधि का अभ्यास करूँ।

མངོན་ཤེས་དང་རྫུ་འཕྲུལ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
ङोन शेस् दङ ज़ु ठुल ल सोग पई योन तेन पग तु मेद् प क्ये बर ग्युर चिग
अभिज्ञा एवं ऋद्धि आदि अपरिमित गुण उत्पन्न हों।

རིག་པའི་རྩ་བ་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
रिग पई त़्र व छोद् पर ग्युर चिग
ज्ञानमूल का छेदन हो।

རྣམ་རྟོག་ཆོས་སྐུར་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
नम तोग छोस् कुर छर बर ग्युर चिग
विकल्प धर्मकाय में उदित हो।

སྐྱོན་ཡོན་ཏན་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
क्योन योन तेन दु लोङ पर ग्युर चिग
दोष, गुण में परिवर्तित हो।

འཁྲུལ་པ་ཡེ་ཤེས་སུ་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
ठुल प ये शेस् सु छर बर ग्युर चिग
भ्रान्ति ज्ञान में उदित हो।

འཁོར་བ་མྱང་འདས་སུ་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
खोर व न्यङ देस् सु तोग पर ग्युर चिग
संसार (का) निर्वाण में अवगम हो।

སྡུག་བསྔལ་བདེ་བར་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
दुग ङल दे वर छर बर ग्युर चिग
दुःख, सुख में उदित हो।

བར་ཆད་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
बर छे ङोस् डुप तु दुस् पर ग्युर चिग
बाधा, सिद्धि में संग्रह हो।

ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छग ग्य छेन पो छोग गि ङोस् डुप थोप पर ग्युर चिग
महामुद्रा रूपी परम सिद्धि की प्राप्ति हो।

སྣང་བ་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ व वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
आभास पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ལས་འབྲེལ་ཕྱོགས་མེད་དུ་ཞོག་པར་གྱུར་ཅིག །
लेस डेल छोग मेद् दु शोग पर ग्युर चिग
सर्वत्र कर्म-सम्बन्ध स्थापित हो।

འབྲེལ་ཚད་དོན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
डेल छ़े दोन दङ देन पर ग्युर चिग
समस्त सम्बन्ध अर्थवान् हों।

བདག་གིས་གཞན་ལ་དུས་གསུམ་དུ་ཕན་གནོད་ཀྱི་ལས་ཅི་བྱས་པ་དང་། །
दग गीस् शेन ल दुस् सुम दु फेन नोद् क्यि लेस चि छेस् प दङ
मेरे द्वारा दूसरों के प्रति तीनों कालों में हित-अहित के जो भी कर्म किये हों, दूसरों के द्वारा (भी) मेरे प्रति तीनों

གཞན་གྱིས་བདག་ལ་དུས་གསུམ་དུ་ཕན་གནོད་ཀྱི་ལས་ཅི་བྱས་པ་དེ་རྣམས་ཐམས་ཅད་ལམ་ལོག་པ་དང་བཏང་
शेन ग्यीस् दग ल दुस् सुम दु फेन नोद् क्यि लेस चि छेस् प दे नम थम चे लम लोग प दङ तङ
कालों में हित-अहित के जो भी कर्म किये हों, वे सभी विपरीत मार्ग तथा उपेक्षा (अज्ञान)

སྙོམས་སུ་སྐད་ཅིག་ཙམ་ཡང་མི་འགྲོ་བར་གྱུར་ཅིག །
ञोम सु के चिग ज़म यङ मि डो बर ग्युर चिग
रूप में एक क्षण के लिए भी न चले जाएँ।

ནང་གི་རྒྱུ་ཕྱིའི་རྐྱེན་བར་གྱི་མཚམས་སྦྱོར་ལ་སོགས་པའི་དུས་གསུམ་གྱི་ལས་ངན་རྒྱུ་འབྲས་ས་བོན་དང་
नङ गि ग्यु छी क्येन बर ग्यि ज़म छोर ल सोग पई दुस् सुम ग्यि लेस ङेन ग्यु डेस् स बोन दङ
आन्तरिक हेतु, बाह्य प्रत्यय, मध्य का संयोजन आदि तीनों कालों के दुष्कर्म (रूपी) हेतु-फल, बीज सहित

བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་བྱང་ཞིང་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
चेस् प थम चे द त ञिद् दु छङ शिङ दग पर ग्युर चिग
सभी अभी शोधित होकर शुद्ध हों।

སླན་ཆད་འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་དང་། ང་རྒྱལ་དང་། ཕྲག་དོག་དང་། རྙེད་པ་དང་བཀུར་སྟི།
लेन छे दोद् छग दङ    शे दङ दङ    ति मुग दङ    ङ ग्यल दङ    ठग दोग दङ    ञेद् प दङ कुर
इसके बाद राग, द्वेष, मोह, मान, ईर्ष्या, लाभ-सत्कार, प्रसिद्धि की इच्छा तथा आसक्ति-चित्त आदि अकुशल

གྲགས་འདོད་དང་ཀློམ་སེམས་ལ་སོགས་པ་མི་དགེ་བའི་བསམ་སྦྱོར་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
ति    डग दोद् दङ लोम सेम ल सोग प मि गे बई सम छोर के चिग क्यङ मि छुङ बर ग्युर चिग
आशय-प्रयोग एक क्षण भी न हों।

ཚོགས་གཉིས་རླབས་པོ་ཆེ་རྩོལ་མེད་དུ་གསོག་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ोग ञीस् लप पो छे ज़ोल मेद् दु सोग पर ग्युर चिग
दो सम्भार अनन्त रूप से विना यत्न के एकत्रित हों।

གསང་སྔགས་ཀྱི་སྣོད་དུ་རུང་བར་གྱུར་ཅིག །
सङ ङग क्यि नोद् दु रुङ बर ग्युर चिग
गुह्यमन्त्र(-यान) में पात्रता हो।

དབང་རྣམ་པ་བཞི་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
वङ नम प शि थोप पर ग्युर चिग
चतुर्विध अभिषेक की प्राप्ति हो।

ཡེ་ཤེས་ངོས་ཟིན་པར་གྱུར་ཅིག །
ये शेस् ङोस् ज़िन पर ग्युर चिग
ज्ञान से परिचय हो।

དམ་ཚིག་གཙང་མ་སྲུང་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दम छ़िग त्सङ म सुङ नुस् पर ग्युर चिग
समय की शुद्ध रूप से रक्षा कर सकूँ।

བསྐྱེད་རྫོགས་ལ་བརྟན་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
क्येद् ज़ोग ल तेन प थोप पर ग्युर चिग
उत्पन्न (और) सम्पन्न(-क्रम) में स्थिरता प्राप्त हो।

འཕྲིན་ལས་བཞི་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ठिन लेस शि डुप पर ग्युर चिग
चार (प्रकार के) कर्म की सिद्धि हो।

རྒྱུ་འབྲས་ཀྱི་ཕྲ་ཞིབ་ཤེས་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्यु डेस् क्यि ठ शिप शेस् पर ग्युर चिग
हेतुफल की सूक्ष्मता का ज्ञान हो।

རིག་པའི་འགྲོ་ལྡོག་གོ་བར་གྱུར་ཅིག །
रिग पई डो दोग गो बर ग्युर चिग
ज्ञान की उत्पत्ति-निष्पत्ति को जानूँ।

དགེ་སྡིག་གི་འདོར་ལེན་ཤེས་པར་གྱུར་ཅིག །
गे दिग गि दोर लेन शेस् पर ग्युर चिग
कुशल-पाप के हेयोपादेय को जानूँ।

སྣང་བ་ལ་ནང་བྱན་ཚུད་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ व ल नङ छेन छ़ुद् पर ग्युर चिग
आभास से अवगत होऊँ।

ཕྱི་ནང་གསང་གསུམ་གྱི་རྟེན་འབྲེལ་ལ་མཁས་པར་གྱུར་ཅིག །
छि नङ सङ सुम ग्यि तेन डेल ल खेस् पर ग्युर चिग
बाह्य-अध्यात्म (और) गुह्य के प्रतीत्य में विद्वत्ता प्राप्त हो।

གཞན་སྣང་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
शेन नङ वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
पराभास में अधिकार प्राप्त हो।

སྨོན་ལམ་རྒྱ་ཆེན་པོ་འདེབས་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
मोन लम ग्य छेन पो देप नुस् पर ग्युर चिग
विस्तृत प्रणिधान कर सकूँ।

གང་བཏབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་སྨིན་པར་གྱུར་ཅིག །
गङ तप क्यि डेस् बु छ़े दि ञिद् ल मिन पर ग्युर चिग
जो प्रणिधान करूँ, उसका फल इस जन्म में परिपक्व हो।

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ཚེ་འདི་དང་སྐྱེ་བ་གཞན་དག་ཐམས་ཅད་དུ་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་རྩོལ་མེད་དུ་འགྲུབ་པར་
गे बई त्र व दीस् छे दि दङ क्ये व शेन दग थम चे दु डो दोन पग तु मेद् प त्रोल मेद् दु डुप पर
इस कुशलमूल के द्वारा इस जन्म तथा सभी अन्य जन्मों में अपरिमित परार्थ विना यत्न के

གྱུར་ཅིག །ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་གི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युर चिग   फ रोल तु छिन प डुग गि गो नेस् डुप पर ग्युर चिग
सिद्ध हों। षट् पारमिताओं के द्वारा सिद्ध हों।

བསྡུ་བ་བཞི་ཡི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
बदु व शि यि गो नेस् डुप पर ग्युर चिग
चार संग्रह (वस्तुओं) के द्वारा सिद्ध हों।

ཕྲིན་ལས་བཞིའི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ठिन लेस शी गो नेस् डुप पर ग्युर चिग
चार कर्मों के द्वारा सिद्ध हों।

ཚད་མེད་པ་བཞིའི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छे मेद् प शी गो नेस् डुप पर ग्युर चिग
चार अपरिमाण (ब्रह्मविहार) के द्वारा सिद्ध हों।

བསླབ་པ་གསུམ་གྱི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
लप प सुम ग्यि गो नेस् डुप पर ग्युर चिग
त्रिशिक्षा के द्वारा सिद्ध हों।

གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་ཀྱི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
डुप छेन ग्ये क्यि गो नेस् डुप पर ग्युर चिग
आठ सिद्धों के द्वारा सिद्ध हों।

འབད་པ་དང་རྩོལ་བ་མེད་པའི་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
बे प दङ त्रोल व मेद् पई डो दोन पग तु मेद् प डुप पर ग्युर चिग
कोशिश तथा प्रयत्न के विना अपरिमित परार्थ की सिद्धि हो।

ལུས་དང་སྲོག་ལ་མི་ལྟ་བར་གྱུར་ཅིག །
लुस् दङ सोग ल मि त बर ग्युर चिग
काय एवं प्राण की परवाह नहीं करूँ।

ངལ་བ་དང་སྐྱོ་དུབ་མེད་པར་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ङल व दङ क्यो दुप मेद् पर डो दोन पग तु मेद् प डुप पर ग्युर चिग
क्लान्त और दुःख-कष्ट के विना अपरिमित परार्थ की सिद्धि करूँ।

བདག་ཤི་བའི་འོག་ཏུ་ཡང་མགོ་དང་། རྐང་ལག་དང་། ཤ་དང་། རུས་པ་དང་། ཡན་ལག་དང་། ཉིང་ལག་དང་།
दग शि बई ह्रोग तु यङ गो दङ   कङ लग दङ   श दङ   रुस् प दङ   येन लग दङ   ञिङ लग
मेरी मृत्यु के बाद भी शीर्ष, हाथ-पैर, माँस, हड्डी, अङ्ग-प्रत्यङ्ग,

སྐྲ་དང་བ་སྤུ། སོ་དང་སེན་མོ། ཁྲག་དང་ཆུ་སེར། ཞག་དང་ཚིལ་བུ། དབང་པོ་ལྔ་ལ་སོགས་པའི་
दङ   ट दङ व पु   सो दङ सेन मो   ठग दङ छु सेर   शग दङ छ़िल बु   वङ पो ङ ल सोग पई
केश-रोम, दाँत-नख, रक्त-पीब, तैल-वसा (चर्बी) और पञ्चेन्द्रियों के द्वारा भी

སྒོ་ནས་ཀྱང་འགྲོ་དོན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
गो नेस् क्यङ डो दोन पग तु मेद् प डुप पर ग्युर चिग
अपरिमित सत्त्वार्थ सिद्ध हों।

བདག་ལ་དུས་གསུམ་དུ་དགའ་ཞིང་མགུ་བར་བྱེད་ཅིང་དད་གུས་ཀྱིས་གསོལ་བ་འདེབས་པ་དང་། བདག་གི་རྗེས་སུ་
दग ल दुस् सुम दु गा शिङ गु बर छेद् चिङ दे गुस् क्यीस् सोल व देप प दङ   दग गि जेस् सु
मुझे तीनों कालों में प्रसन्न हो सन्तुष्ट कर श्रद्धादर से अध्येषणा करने तथा मेरे अनुयायियों की (चित्त-)

འཇུག་པ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་རྟོགས་པ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་ཚེགས་མེད་དུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
जुग प नम क्यि ग्युद् ल तोग प छोग तु ग्युर प छ़ेग मेद् दु क्ये बर ग्युर चिग
सन्ततियों में कष्ट विना परम ज्ञान उत्पन्न हो।

ཉམས་མྱོང་རྒྱུན་ཆད་མེད་པར་བརྟན་པར་གྱུར་ཅིག །
ञम न्योङ ग्युन छे मेद् पर तेन पर ग्युर चिग
अनुभव निरन्तर स्थिर बना रहे।

ཏིང་ངེ་འཛིན་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
तिङ ङे ज़िन छोग तु ग्युर प क्ये बर ग्युर चिग
परम समाधि की उत्पत्ति हो।

མཆོག་ཐུན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་མ་ལུས་པ་རྩོལ་མེད་དུ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छोग थुन मोङ गि ङोस् डुप म लुस् प ज़ोल मेद् दु थोप पर ग्युर चिग
परम एवं सामान्य अशेष सिद्धियाँ यत्न विना प्राप्त हों।

སྣང་བ་རྟེན་འབྲེལ་དུ་ཤར་ནས་ཚེ་གཅིག་ལུས་གཅིག་ལ་སངས་རྒྱ་བར་གྱུར་ཅིག །
नङ व तेन डेल दु शर नेस् छ़े चिग लुस् चिग ल सङ ग्य बर ग्युर चिग
आभास प्रतीत्य में उदित होकर, एक जीवन एक काय में बुद्धत्व की प्राप्ति हो।

བདག་ལ་དུས་གསུམ་དུ་མ་དད་ཅིང་སྐུར་བ་འདེབས་པ་དང་། སྨོད་ཅིང་ཕྲག་དོག་པ་དང་། བརྙས་ཤིང་བསམ་སྦྱོར་
दग ल दुस् सुम दु म दे चिङ कुर व देप प दङ   मोद् चिङ ठग दोग प दङ   ञेस् शिङ सम छोर
मुझे तीनों कालों में श्रद्धा न कर अपवाद करने वाले, निन्दा कर ईर्ष्या करने वाले, सता कर दुराशय-प्रयोग

ངན་པ་བྱེད་པ་དང་། ངན་སྨྲས་དང་ཀྱལ་ཁ་གཏོང་བ་དེ་དག་གིས་བདག་གི་དུས་གསུམ་གྱི་ལས་ངན་མི་
ङेन प छेद् प दङ   ङेन मेस् दङ क्यल ख तोङ व दे दग गीस् दग गि दुस् सुम ग्यि लेस ङेन मि
करने वाले और दुर्वचन बोलने तथा उपहास करने वाले, उनके द्वारा मेरे तीनों कालों के दुष्कर्म-अकुशल रूपी

དགེ་བའི་རྒྱུ་འབྲས་ས་བོན་བག་ལ་ཉལ་བ་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་བྱང་ཞིང་དག་པར་གྱུར་ཅིག །
गे बई ग्यु डेस् स बोन बग ल ञल व दङ चेस् प थम चे द त ञिद् दु छङ शिङ दग पर ग्युर चिग
हेतुफल-बीज, वासना सहित सभी अभी शोधित होकर शुद्ध हो जाएँ।

དེ་དག་གི་རྒྱུད་ལ་རྣམ་སྨིན་གྱི་འབྲས་བུ་མི་འབྱུང་ཞིང་སངས་རྒྱས་པའི་གེགས་སུ་མི་འགྲོ་བར་གྱུར་ཅིག །
दे दग गि ग्युद् ल नम मिन ग्यि डेस् बु मि छुङ शिङ सङ ग्येस् पई गेग सु मि डो बर ग्युर चिग
उनके (चित्त-)सन्तति में विपाक-फल की उत्पत्ति न हो (वह) बुद्धत्व प्राप्ति के बाधा स्वरूप खड़ा न हो।

དེ་དག་བདག་གི་གདུལ་བྱར་གྱུར་ནས་ཚེ་གཅིག་ལུས་གཅིག་ལ་སངས་རྒྱ་བར་གྱུར་ཅིག །
दे दग दग गि दुल छर ग्युर नेस् छे चिग लुस् चिग ल सङ ग्य बर ग्युर चिग
वे मेरे विनेय(-जन) के रूप में परिवर्तित होकर एक जीवन एक काय में बुद्धत्व को प्राप्त करें।

ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་བདག་གི་གྲོགས་ཚངས་པ་མཚུངས་པར་སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་མ་
छ़े रप थम चे दु दग गि डोग छ़ङ प छ़ुङ पर चोद् प थम चे क्यङ सङ ग्येस् क्यि योन तेन म
समस्त जन्मान्तरों में मेरे मित्र ब्रह्मसमचर्या करने वाले सभी, बुद्ध के अशेष गुणों से इस जन्म में परिपूर्ण

ལུས་པ་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་རྫོགས་ནས་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སངས་རྒྱ་བར་གྱུར་ཅིག །
लुस् प छ़े दि ञिद् ल ज़ोग नेस् ल न मेद् पई छङ छुप तु सङ ग्य बर ग्युर चिग
होकर अनुत्तर सम्बोधि में बुद्धत्व प्राप्त करें।

བདག་གི་བླ་མ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་སྐུ་ཚེ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་འཕེལ་ནས་འཁོར་བ་མ་སྟོངས་ཀྱི་བར་དུ་སྐུ་མྱ་
दग गि ल म सङ ग्येस् नम क्यि कु छ़े नम खा दङ ञम पर फेल नेस् खोर व म तोङ क्यि बर दु
मेरे (समस्त) गुरु (रूपी) बुद्ध लोगों के जीवन आकाशसम वृद्धि कर संसार के शून्य नहीं होने तक काय द्वारा

ངན་ལས་མི་འདའ་བར་བཞུགས་པར་གྱུར་ཅིག །
कु न्य ङेन लेस मि दा बर शुग पर ग्युर चिग
परिनिर्वाण को प्राप्त न होकर (यहाँ) स्थित हों।

འཕྲིན་ལས་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་འཕེལ་ནས་འཁོར་བ་དོང་སྤྲུགས་པར་མཛད་པར་གྱུར་ཅིག །
ठिन लेस नम खा दङ ञम पर फेल नेस् खोर व दोङ टुग पर ज़े पर ग्युर चिग
कर्म आकाशसम वृद्धि को प्राप्त होकर संसार जड़ से उखड़ जाए।

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་བླ་མ་དུས་གསུམ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཡོན་ཏན་འཕྲིན་ལས་སྐུ་ཚེ་ཞིང་ཁམས་
गे बई ज़्व व दीस् ल म दुस् सुम सङ ग्येस् नम क्यि कु सुङ थुग योन तेन ठिन लेस कु छ़े शिङ
**इस कुशलमूल से गुरु त्रिकाल बुद्धों के काय-वाक्-चित्त-गुण-कर्म, जीवन-क्षेत्रधातु,**

མཛད་པ་རྣམ་འཕྲུལ་ཡེ་ཤེས་མ་ལུས་པ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་འཕེལ་ནས་ཐུགས་ཀྱི་དགོངས་པ་མཐའ་དག་
खम ज़े प नम ठुल ये शेस् म लुस् प नम खा दङ ञम पर फेल नेस् थुग क्यि गोङ प था दग योङ
**कार्य-विकुर्वण और अशेष ज्ञान आकाशसम वृद्धि होकर चित्त के समस्त**

ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །དུས་གསུམ་གྱི་ལམ་དུ་ཞུགས་པ་དང་འཇུག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐྱོན་ཐམས་ཅད་དག་
सु ज़ोग पर ग्युर चिग दुस् सुम ग्यि लम दु शुग प दङ जुग प थम चे क्यि क्योन थम चे दग
**अभिप्राय परिपूर्ण हों। तीनों कालों के मार्ग में प्रविष्ट हुए तथा होने वाले सभी के समस्त दोष शुद्ध होकर**

ཅིང་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
चिङ योन तेन थम चे ज़ोग पर ग्युर चिग
**समस्त गुण परिपूर्ण हों।**

དུས་གསུམ་གྱི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་བ་དང་ལྡན། སྡུག་བསྔལ་དང་བྲལ་ནས་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཚེ་གཅིག་
दुस् सुम ग्यि सेम चेन थम चे दे व दङ देन दुग ङल दङ डल नेस् ज़ोग पई छङ छुप तु छ़े चिग
**तीनों कालों के समस्त सत्त्व सुख से युक्त हों, दुःख से रहित होकर सम्बोधि में एक ही जीवन में**

ལ་སངས་རྒྱ་བར་གྱུར་ཅིག །
ल सङ ग्य बर ग्युर चिग
**बुद्धत्व को प्राप्त करें।**

བདག་གི་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་ལ་བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པ་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་འཇུག་
दग गि लुस् ङग यिद् सुम ल ल म सङ ग्येस् थम चे क्यि छे बई योन तेन म लुस् प द त ञिद् दु
**मेरे काय-वाक-चित्त तीनों में गुरु बुद्ध सभी के अशेष माहात्म्य गुण अभी प्रवृत्त**

ཅིང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
जुग चिङ योङ सु ज़ोग पर ग्युर चिग
**होकर परिपूर्ण हो जाएँ।**

བདག་གི་བ་སྤུའི་ཁུང་བུ་རེ་རེ་ནས་ཀྱང་བླ་མ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྤྲུལ་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་
दग गि व पुइ खुङ बु रे रे नेस् क्यङ ल म सङ ग्येस् नम क्यि नम पर टुल प सम ग्यीस् मि ख्यप
**मेरे रोम के एक-एक छिद्र से भी, गुरु बुद्धों के अनन्त विनिर्माण(-काय) एक-एक क्षण में**

པ་དུས་སྐད་ཅིག་མ་རེ་རེ་ལ་འགྱེད་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་འཁོར་འདས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
प दुस् के चिग म रे रे ल ग्येद् नुस् पर ग्युर चिग   नम खा दङ ञम पई खोर देस् थम चे क्यि
विभक्त (उत्पन्न) कर सकूँ। आकाशसम संसार-निर्वाण सभी (सत्त्वों) के समक्ष मेरे हितकारी एक-एक

མདུན་དུ་བདག་གི་ཕན་བྱེད་ཀྱི་སྤྲུལ་པ་རེ་རེ་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་སྣང་བར་གྱུར་ཅིག །
दुन दु दग गि फेन छेद् क्यि टुल प रे रे द त ञिद् दु नङ वर ग्युर चिग
निर्माण(-काय) अभी आभासित हों।

སྣང་མ་ཐག་ཏུ་དགའ་ཞིང་མགུ་ལ་དད་ཅིང་མོས་པ་སྐྱེས་ནས་དྭང་ཞིང་སྤྲོ་བའི་སྒོ་ནས་རང་དབང་མེད་པར་བདག་གི་
नङ म थग तु गा शिङ गु ल दे चिङ मोस् प क्येस् नेस् दङ शिङ टो बई गो नेस् रङ वङ मेद् पर
आभासित होते ही प्रसन्न-सन्तुष्ट होकर श्रद्धा एवं छन्द उत्पन्न कर भक्ति एवं प्रसन्नता के द्वारा स्वाभाविक रूप

དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दग गि वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
से मेरे वश में हो जाएँ।

དུས་གསུམ་དུ་བདག་མཐོང་བ་དང་། ཐོས་པ་དང་། དྲན་པ་དང་། རེག་པས་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་ལ་འཁོར་འདས་མ་
दुस् सुम दु दग थोङ व दङ   थोस् प दङ   डेन प दङ   रेग पेस् के चिग म ञिद् ल खोर देस् म
तीनों कालों में मेरे दर्शन, श्रवण, स्मृति तथा स्पर्श (मात्र) से एक ही क्षण में संसार-निर्वाण

ལུས་པའི་རྒྱུད་ལ་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོས་ཚིམ་ནས་ཉེས་པའི་སྐྱོན་ཐམས་ཅད་དག་ཅིང་ལེགས་པའི་ཡོན་ཏན་
लुस् पई ग्युद् ल ज़ग प मेद् पई दे व छेन पोस् छिम नेस् ञेस् पई क्योन थम चे दग चिङ लेग
अशेष (सत्त्वों) के (चित्त-)सन्तति में अनास्रव सुख से सन्तुष्ट कर, कष्टकारी समस्त दोष शुद्ध होकर समस्त

ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
पई योन तेन थम चे योङ सु ज़ोग पर ग्युर चिग
अच्छे गुण परिपूर्ण हों।

མདོར་ན་བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་འཕྲིན་ལས་མ་ལུས་པ་བདག་གིས་རྩོལ་མེད་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
दोर न ल म सङ ग्येस् क्यि ठिन लेस म लुस् प दग गीस् त्सोल मेद् दु डुप पर ग्युर चिग
संक्षेप में, गुरु बुद्ध के अशेष कर्म मेरे द्वारा विना यत्न के सिद्ध हों।

འགྲོ་བའི་དོན་རླབས་པོ་ཆེ་རྩོལ་མེད་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
डो बई दोन लप पो छे त्सोल मेद् दु डुप पर ग्युर चिग
अनन्त सत्त्वार्थ विना यत्न के सिद्ध हो।

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱོད་པ་རླབས་པོ་ཆེ་སྤྱོད་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
छङ छुप क्यि चोद् प लप पो छे चोद् नुस् पर ग्युर चिग
अनन्त बोधि(-सत्त्व)चर्या का आचरण कर सकूँ।

གཞན་ཡང་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་རྟོགས་པ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
शेन यङ गे बई त्स़ व दीस् छ़े रप थम चे दु तोग प छोग तु ग्युर प क्ये बर ग्युर चिग
अन्य भी, इस कुशल कर्म के द्वारा समस्त जन्मान्तरों में परम ज्ञान की उत्पत्ति हो।

ཏིང་ངེ་འཛིན་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
तिङ ङे ज़िन छोग तु ग्युर प क्ये बर ग्युर चिग
परम समाधि की उत्पत्ति हो।

ཉམས་མྱོང་རྒྱུན་ཆད་མེད་པར་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
ञम न्योङ ग्युन छे मेद् पर क्ये बर ग्युर चिग
निरन्तर अनुभव की उत्पत्ति हो।

མཆོག་ཐུན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་མ་ལུས་པ་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छोग थुन मोङ गि ङोस् डुप म लुस् प द त ञिद् दु थोप पर ग्युर चिग
अशेष परम (एवं) सामान्य सिद्धियाँ अभी प्राप्त हों।

བྱམས་སྙིང་རྗེ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
छम ञिङ जे छङ छुप क्यि सेम छोङ पर ग्युर चिग
मैत्री-करुणा (एवं) बोधिचित्त का अभ्यास हो।

རང་འདོད་ཚེ་འདིའི་བསམ་པ་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
रङ दोद् छ़े दी सम प के चिग क्यङ मि छुङ बर ग्युर चिग
स्वार्थ (रूपी) इस जन्म का आशय एक क्षण भी उत्पन्न न हो।

འགྲོ་བའི་དོན་བྱེད་པ་ལ་མིག་སྨན་དང་རིལ་བུ་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་ཆེན་བརྒྱད་ལ་མངའ་བརྙེས་པར་གྱུར་ཅིག །
डो बई दोन छेद् प ल मिग मेन दङ रिल बु ल सोग प डुप छेन ग्ये ल ङा ञेस् पर ग्युर चिग
सत्त्वार्थ क्रिया हेतु अञ्जन (एवं) गुलिका आदि आठ सिद्धि पर

ནད་དང་གདོན་དང་།
ने दङ दोन दङ
अधिकार प्राप्त करूँ।

ཉོན་མོངས་པ་དང་གཞན་གྱི་བསམ་སྦྱོར་ངན་པ་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་གྱུར་ཅིག །
ञोन मोङ प दङ शेन ग्यि सम छ्योर ङेन प थम चे शि वर ग्युर चिग
रोग एवं ग्रह और क्लेश एवं समस्त पर-दुष्टाशय-प्रयोग शान्त हों।

ཚེ་དང་དབང་ཐང་དང་ལོངས་སྤྱོད་དང་འཁོར་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़े दङ वङ थङ दङ लोङ चोद् दङ खोर ग्येस् पर ग्युर चिग
आयु, अधिकार, सम्पत्ति तथा परिवार का विस्तार हो।

རྒྱལ་པོ་དང་། བློན་པོ་དང་། བཙུན་མོ་དང་དམངས་ཕལ་པ་ལ་སོགས་པ་འགྲོ་བ་རིགས་དྲུག་གི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་
ग्यल पो दङ   लोन पो दङ   त्सुन मो दङ मङ फल प ल सोग प डो व रिग डुग गि सेम चेन
राजा, मन्त्री, रानी तथा सामान्य प्रजा आदि षट् योनियों के समस्त सत्त्व पर

དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
थम चे वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
अधिकार प्राप्त करूँ।

བླ་མའི་སྐུ་དགྲར་གྱུར་པ། དཀོན་མཆོག་གི་དབུ་འཕང་སྨོད་པ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་བཤིག་པ། རྣལ་འབྱོར་
ल मई कु डर ग्युर प   कोन छ्योग गि उ फङ मोद् प   सङ ग्येस् क्यि तेन प शिग प   नल छ्योर
गुरु-काय के शत्रु, (त्रि-)रत्न-गौरव के निन्दक, बुद्ध-शासन के नष्ट-कर्त्ता तथा योगी काय के प्रतिवादक आदि

གྱི་སྐུ་ལ་བརྡོ་བ་ལ་སོགས་པ་སེམས་ཅན་ཡོངས་ལ་གནོད་པའི་གདུག་པ་ཅན་ཐམས་ཅད་ཚར་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्यि कु ल बदो व ल सोग प सेम चेन योङ ल नोद् पई दुग प चेन थम चे छ़र छ्योद् पर ग्युर चिग
सभी सत्त्वों को हानि पहुँचाने वाले समस्त दुष्टों को शान्त करूँ।

མདོར་ན་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གྱི་བྱ་བ་དང་བྱེད་པ་ཐམས་ཅད་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་འབའ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་བར་
दोर न लुस् ङग यिद् सुम ग्यि छ व दङ छेद् प थम चे सेम चेन ग्यि दोन बा शिग तु ग्युर बर
संक्षेप में, काय-वाक्-चित्त के कर्म एवं समस्त क्रियाएँ केवल सत्त्वार्थ (कल्याणकारी)

གྱུར་ཅིག །
ग्युर चिग
हो जाएँ।

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདི་ལ་བརྟེན་ནས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
गे बई त्स़ व दि ल तेन नेस् छ़े रप थम चे दु नम पर तोग प लम दु लोङ पर ग्युर चिग
इस कुशलमूल के आश्रय से समस्त जन्मान्तरों में विकल्प का मार्ग-गमन हो।

ཉོན་མོངས་པ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञोन मोङ प लम दु लोङ पर ग्युर चिग
क्लेश का मार्ग-गमन हो।

འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
खोर बई दुग ङल लम दु लोङ पर ग्युर चिग
संसार-दुःख का मार्ग-गमन हो।

འཆི་བ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
छि व लम दु लोङ पर ग्युर चिग
मृत्यु का मार्ग-गमन हो।

སྡུག་བསྔལ་ལ་སྐྱོན་དུ་མི་ལྟ་བར་གྱུར་ཅིག །
दुग ङल ल क्योन दु मि त बर ग्युर चिग
दुःख को दोष के रूप में नहीं देखूँ।

ལྷ་འདྲེ་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
ल्ह डे वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
देव-पिशाच पर अधिकार प्राप्त करूँ।

སེམས་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सेम ल वङ थोप पर ग्युर चिग
चित्त पर अधिकार प्राप्त करूँ।

འབྱུང་བ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
छुङ व ल वङ थोप पर ग्युर चिग
भूत पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ཉོན་མོངས་པ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ञोन मोङ प ल वङ थोप पर ग्युर चिग
क्लेश पर अधिकार प्राप्त करूँ।

བསྡུ་བ་བཞི་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
बदु व शि ल वङ थोप पर ग्युर चिग
चार संग्रह (वस्तुओं) पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ལྷ་འདྲེ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ल्ह डे लम दु लोङ पर ग्युर चिग
देव-पिशाच का मार्ग-गमन हो।

ན་ཚ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
न छ लम दु लोङ पर ग्युर चिग
रोग का मार्ग-गमन हो।

བདག་འཛིན་བློས་ཐོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
दग ज़िन लोस् थोङ पर ग्युर चिग
आत्मग्रह का बुद्धि से परित्याग हो।

སྐྱིད་པ་ཆོས་བརྒྱད་ཆེད་དུ་མི་སྒྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
क्यिद् प छोस् ग्ये छेद् दु मि डुप पर ग्युर चिग
सुख को अष्ट (लोक-)धर्म के लिए साधित नहीं करूँ।

བར་ཆད་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
बर छे लम दु लोङ पर ग्युर चिग
बाधा का मार्ग-गमन हो।

སྣང་བ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ व ल वङ थोप पर ग्युर चिग
आभास पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ལས་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
लेस ल वङ थोप पर ग्युर चिग
कर्म पर अधिकार प्राप्त करूँ।

གཉེན་པོ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ञेन पो ल वङ थोप पर ग्युर चिग
प्रतिपक्ष पर अधिकार प्राप्त करूँ।

འཕྲིན་ལས་བཞི་ལ་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ठिन लेस शि ल वङ थोप पर ग्युर चिग
चार कर्मों पर अधिकार प्राप्त करूँ।

སྤྱོད་པ་བཞི་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
चोद् प शि ल वङ थोप पर ग्युर चिग
चार चर्या(-पथ) पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ཚེ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
छे ल वङ थोप पर ग्युर चिग
आयु पर अधिकार प्राप्त हो।

གཟི་བརྗིད་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
ज़ि जिद् ल वङ थोप पर ग्युर चिग
औजस् पर अधिकार प्राप्त करूँ।

སྐྱེ་བ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
क्ये व ल वङ थोप पर ग्युर चिग
जन्म पर अधिकार प्राप्त करूँ।

སྨོན་ལམ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
मोन लम ल वङ थोप पर ग्युर चिग
प्रणिधान पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ཡེ་ཤེས་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
ये शेस् ल वङ थोप पर ग्युर चिग
ज्ञान पर अधिकार प्राप्त करूँ।

རླུང་སེམས་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
लुङ सेम ल वङ थोप पर ग्युर चिग
वायु-चित्त पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
लुस् ङग यिद् सुम ल वङ थोप पर ग्युर चिग
काय-वाक्-चित्त पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ལོངས་སྤྱོད་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
लोङ चोद् ल वङ थोप पर ग्युर चिग
सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त हो।

ཐུགས་རྗེ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
थुग जे ल वङ थोप पर ग्युर चिग
करुणा पर अधिकार प्राप्त करूँ।

མོས་པ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
मोस् प ल वङ थोप पर ग्युर चिग
छन्द पर अधिकार प्राप्त करूँ।

རྫུ་འཕྲུལ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
ज़ु ठुल ल वङ थोप पर ग्युर चिग
ऋद्धि पर अधिकार प्राप्त करूँ।

ཆོས་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
छोस् ल वङ थोप पर ग्युर चिग
धर्म पर अधिकार प्राप्त करूँ।

རྟེན་འབྲེལ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
तेन डेल ल वङ थोप पर ग्युर चिग
प्रतीत्य पर अधिकार प्राप्त करूँ।

སྐྱེ་འགྲོ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
क्ये डो सेम चेन थम चे ल वङ थोप पर ग्युर चिग
समस्त उत्पन्न जगत् सत्त्वों पर अधिकार प्राप्त करूँ।

འཆི་བ་ལ་དབང་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
छि व ल वङ थोप पर ग्युर चिग
मृत्यु पर अधिकार प्राप्त करूँ।

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་བདག་འཆི་བའི་དུས་སུ་གཤིས་ངན་དུ་མི་འཆི་བར་གྱུར་ཅིག །
गे बई ज़्र व दीस् छ़े रप थम चे दु दग छि बई दुस् सु शीस् ङेन दु मि छि बर ग्युर चिग
इस कुशलमूल के द्वारा समस्त जन्मान्तरों में मेरी मृत्यु के समय बुरे रीति से मृत्यु नहीं हो (अर्थात् मेरा

གནད་གཅོད་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
ने चोद् क्यि दुग ङल मि छुङ बर ग्युर चिग
दर्मरण न हो)। मर्मच्छेदक दुःख नहीं हो।

དྲན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་དང་ལྡན་ཏེ་རང་ལ་དབང་ཡོད་པར་བསམ་བཞིན་དུ་སེམས་དགའ་སྤྲོ་དང་བཅས་ཏེ་འཆི་བར་
डेन प दङ शेस् शिन दङ देन ते रङ ल वङ योद् पर सम शिन दु सेम गा टो दङ चेस् ते छि बर
स्मृति-सम्प्रजन्य से युक्त होकर स्वतन्त्र होकर जानते हुए प्रसन्नतापूर्वक चित्त के

གྱུར་ཅིག །
ग्युर चिग
साथ मर सकूँ।

བར་དོ་དང་པོ་ལ་འོད་གསལ་ངོས་ཟིན་ནས་རང་དོན་ཆོས་ཀྱི་སྐུར་སངས་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
बर दो दङ पो ल ह़ोद् सल ङोस् ज़िन नेस् रङ दोन छोस् क्यि कुर सङ ग्येस् पर ग्युर चिग
प्रथम अन्तराभव में प्रभास्वर को जानते हुए स्वार्थ धर्मकाय में बुद्धत्व प्राप्त हो।

ཟག་མེད་ཀྱི་སྙིང་རྗེ་འབྱོངས་ནས་གཞན་སྣང་ལ་སྐུ་རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱིས་འཁོར་བ་དོང་སྤྲུགས་ཐུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ग मेद् क्यि ञिङ जे छोङ नेस् शेन नङ ल कु नम प ञीस् क्यीस् खोर व दोङ टुग थुप पर ग्युर
अनास्रव करुणा के अभ्यास से पराभास में द्विविध कायों के द्वारा संसार का समूल नाश कर सकूँ।

གལ་ཏེ་བདག་ལ་སྲིད་པ་བར་མ་དོའི་སྣང་བ་ཤར་ན་བར་དོ་ལ་བར་དོར་ངོ་ཤེས་པར་གྱུར་ཅིག །
चिग गल ते दग ल सिद् प बर म दोइ नङ व शर न बर दो ल बर दोर ङो शेस् पर ग्युर चिग
यदि मुझमें भव-अन्तराभव का आभास प्रकट हो, तब अन्तराभव को अन्तराभव के रूप में जानूँ।

དག་པ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྐུ་ལུས་སུ་ལྟ་ནུས་པར་གྱུར་ཅིག །
दग प ये शेस् क्यि कु लुस् सु त नुस् पर ग्युर चिग
शुद्ध ज्ञानकाय में देख सकूँ।

ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ལྷར་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
शिङ खम थम चे ल्हर छोङ पर ग्युर चिग
समस्त क्षेत्र-धातु देव में शोधित करूँ।

འོད་གསལ་གྱི་མེས་དངོས་པོའི་བག་ཆགས་ཐམས་ཅད་སྲེག་པར་གྱུར་ཅིག །
ह़ोद् सल ग्यि मेस् ङोस् पोइ बग छग थम चे सेग पर ग्युर चिग
प्रभास्वर रूपी अग्नि द्वारा समस्त पदार्थ-वासना को जला सकूँ।

མངལ་གྱི་སྒོ་ཁེགས་པར་གྱུར་ཅིག །
ङल ग्यि गो खेग पर ग्युर चिग
गर्भमुख को रोक सकूँ।

རིག་པ་ལ་རང་དབང་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
रिग प ल रङ वङ थोप पर ग्युर चिग
विद्या में अधिकार प्राप्त हो।

བསམ་བཞིན་དུ་སྐྱེ་བ་བླངས་ཏེ་གཞན་དོན་རླབས་པོ་ཆེ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सम शिन दु क्ये व लङ ते शेन दोन लप पो छे डुप पर ग्युर चिग
जानते हुए जन्म (को) ग्रहण कर अनन्त परार्थ को सिद्ध करूँ।

མངོན་པར་ཤེས་པ་དྲུག་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
ङोन पर शेस् प डुग दङ देन पर ग्युर चिग
छह अभिज्ञाओं से युक्त हो जाऊँ।

ལྷའི་མིག་གི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ल्हई मिग गि ङोन पर शेस् प थोप पर ग्युर चिग
दिव्य चक्षु-अभिज्ञा की प्राप्ति हो।

ལྷའི་རྣ་བའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ल्हई न बई ङोन पर शेस् प थोप पर ग्युर चिग
दिव्य श्रोत्र-अभिज्ञा की प्राप्ति हो।

སྔོན་གྱི་གནས་རྗེས་སུ་དྲན་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ङोन ग्यि नेस् जेस् सु डेन पई ङोन पर शेस् प थोप पर ग्युर चिग
पूर्वनिवासानुस्मृति-अभिज्ञा की प्राप्ति हो।

གཞན་གྱི་སེམས་ཤེས་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
शेन ग्यि सेम शेस् पई ङोन पर शेस् प थोप पर ग्युर चिग
परचित्तज्ञान-अभिज्ञा की प्राप्ति हो।

རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ु ठुल ग्यि ङोन पर शेस् प थोप पर ग्युर चिग
ऋद्धि-अभिज्ञा की प्राप्ति हो।

སྤྱན་ལྔ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
चेन ङ थोप पर ग्युर चिग
पाँच चक्षुओं की प्राप्ति हो।

ལྷའི་སྤྱན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
ल्हई चेन दङ देन पर ग्युर चिग
दिव्यचक्षु से युक्त हो।

སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྤྱན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
सङ ग्येस् क्यि चेन दङ देन पर ग्युर चिग
बुद्धचक्षु से युक्त हो।

སྣང་བ་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ व लम दु लोङ पर ग्युर चिग
आभास का मार्ग-गमन हो।

གཏུམ་མོ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
तुम मो छोङ पर ग्युर चिग
चण्डाली का अभ्यास हो।

དྲོད་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
डोद् क्ये बर ग्युर चिग
ऊष्म (योग) की उत्पत्ति हो।

རྩ་བདེ་བར་གྱུར་ཅིག །
त्स़ दे वर ग्युर चिग
नाड़ी सुखी हो।

བདེ་སྟོང་གི་ཏིང་ངེ་འཛིན་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
दे तोङ गि तिङ ङे ज़िन क्ये बर ग्युर चिग
सुख-शून्य की समाधि उत्पन्न हो।

ཟག་པ་ཟད་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ग प ज़े पई ङोन पर शेस् प थोप पर ग्युर चिग
आस्रवक्षय-अभिज्ञा की प्राप्ति हो।

ཤའི་སྤྱན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
शई चेन दङ देन पर ग्युर चिग
माँसचक्षु से युक्त हो।

ཆོས་ཀྱི་སྤྱན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
छोस् क्यि चेन दङ देन पर ग्युर चिग
धर्मचक्षु से युक्त हो।

ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤྱན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
शेस् रप क्यि चेन दङ देन पर ग्युर चिग
प्रज्ञाचक्षु से युक्त हो।

ཏིང་ངེ་འཛིན་ལམ་དུ་སློངས་པར་གྱུར་ཅིག །
तिङ ङे ज़िन लम दु लोङ पर ग्युर चिग
समाधि का मार्ग-गमन हो।

བདེ་བ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
दे व क्ये बर ग्युर चिग
सुख की उत्पत्ति हो।

མི་རྟོག་པ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
मि तोग प क्ये बर ग्युर चिग
निर्विकल्प की उत्पत्ति हो।

རླུང་འཇམ་པར་གྱུར་ཅིག །
लुङ जम पर ग्युर चिग
वायु कोमल हो।

ཉིན་པར་སྒྱུ་ལུས་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञिन पर ग्यु लुस् छोङ पर ग्युर चिग
दिन में मायाकाय(-योग) का अभ्यास हो।

མཚན་མོ་རྨི་ལམ་འབྱོངས་པར་ཤོག་ཅིག །
छ़ेन मो मि लम छोङ पर ग्युर चिग
रात्रि में स्वप्न(-योग) का अभ्यास हो।

འོད་གསལ་འབྱོངས་པར་ཤོག་ཅིག །
ह़ोद् सल छोङ पर ग्युर चिग
प्रभास्वर का अभ्यास हो।

འཕོ་བ་འབྱོངས་པར་ཤོག་ཅིག །
फो व छोङ पर ग्युर चिग
संक्रान्ति का अभ्यास हो।

གྲོང་འཇུག་འབྱོངས་པར་ཤོག་ཅིག །
डोङ जुग छोङ पर ग्युर चिग
संक्रमण का अभ्यास हो।

བར་དོ་འབྱོངས་པར་ཤོག་ཅིག །
बर दो छोङ पर ग्युर चिग
अन्तराभव का अभ्यास हो।

རིག་པའི་རྩ་བ་ཆོད་པར་ཤོག་ཅིག །
रिग पई त्स़ व छोद् पर ग्युर चिग
विद्या रूपी मूल का ज्ञान हो।

ཞི་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་མཐའ་དང་བྲལ་བའི་རྟོགས་པ་འཆར་བར་ཤོག་ཅིག །
शि बई तिङ ङे ज़िन ग्यीस् था दङ डल बई तोग प छर बर ग्युर चिग
शान्त-समाधि के द्वारा अन्त (कोटि) रहित (निष्प्रपञ्च) ज्ञान का उदय हो।

ཁྲོ་བོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་དྲག་པོའི་འཕྲིན་ལས་འགྲུབ་པར་ཤོག་ཅིག །
ठो बोइ तिङ ङे ज़िन ग्यीस् डग पोइ ठिन लेस डुप पर ग्युर चिग
क्रोध-समाधि के द्वारा उग्र-कर्म सिद्ध हो।

རྒྱས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་དགོས་འདོད་ཆར་བཞིན་དུ་འབབ་པར་ཤོག་ཅིག །
ग्येस् पई तिङ ङे ज़िन ग्यीस् गोस् दोद् छर शिन दु बप पर ग्युर चिग
विपुल समाधि के द्वारा इच्छित (वस्तुएँ) वर्षा के समान वर्षित हो।

དོན་དམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་སྣང་བ་དབང་དུ་འདུས་པར་ཤོག་ཅིག །
दोन दम पई तिङ ङे ज़िन ग्यीस् नङ व वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
परमार्थ समाधि के द्वारा आभास में अधिकार प्राप्त हो।

བརྩོན་འགྲུས་དྲག་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་ཅི་བསམ་འགྲུབ་པར་ཤོག་ཅིག །
त्स़ोन डुस् डग पोइ तिङ ङे ज़िन ग्यीस् चि सम डुप पर ग्युर चिग
उग्रवीर्यसमाधि के द्वारा जो चाहे (वह) सिद्ध हो।

མཆོག་ཐུན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་ཤོག་ཅིག །
छोग थुन मोङ गि ङोस् डुप थोप पर ग्युर चिग
परम (एवं) सामान्य सिद्धि की प्राप्ति हो।

མཁའ་འགྲོ་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
खा डो वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
डाक पर अधिकार प्राप्त हो।

སྙིང་རྗེ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञिङ जे छोङ पर ग्युर चिग
करुणा का अभ्यास हो।

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་སྐུ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
नम प थम चे ख्येन पई कु थोप पर ग्युर चिग
सर्वाकारज्ञता काय की प्राप्ति हो।

གདུག་པ་ཅན་ཐམས་ཅད་ཚར་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
दुग प चेन थम चे छ़र छोद् पर ग्युर चिग
सभी दुष्टों पर विजय प्राप्त हो।

ཁམས་གསུམ་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
खम सुम वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
तीनों धातुओं पर अधिकार प्राप्त हो।

མཛད་པ་མཐར་འདོན་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़े प थर दोन पर ग्युर चिग
कर्म में सफल हो।

འཇིག་རྟེན་གྱི་རྟེན་འབྲེལ་ཐབས་ལ་མཁས་པར་གྱུར་ཅིག །
जिग तेन ग्यि तेन डेल थप ल खेस् पर ग्युर चिग
लोक-प्रतीत्योपाय में कुशल हो।

དྲག་པོའི་ལས་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
डग पोइ लेस ल ङोस् डुप थोप पर ग्युर चिग
उग्र-कर्म में सिद्धि प्राप्त हो।

སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་ཞིང་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །མི་ཉམས་པར་གྱུར་ཅིག །
सङ ग्येस् क्यि तेन प दर शिङ ग्येस् पर ग्युर चिग मि ञम पर ग्युर चिग
बुद्धशासन की वृद्धि और विस्तार हो। नष्ट न हो।

བསྟན་པ་ལ་གནོད་པའི་གདུག་པ་ཅན་ཐམས་ཅད་ཚར་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
तेन प ल नोद् पई दुग प चेन थम चे छ़र छोद् पर ग्युर चिग
शासन का अहित करने वाले समस्त दुष्टों पर विजय प्राप्त हो।

འགྲོ་བའི་དགོས་འདོད་ཀྱི་གཏེར་ཁ་འབྱེད་པར་གྱུར་ཅིག །
डो बई गोस् दोद् क्यि तेर ख छेद् पर ग्युर चिग
प्राणियों के आवश्यक निधि-मुख का उद्घाटन हो।

ཉོན་མོངས་དང་རྣམ་རྟོག་ཞི་བར་གྱུར་ཅིག །
ञोन मोङ दङ नम तोग शि वर ग्युर चिग
क्लेश एवं विकल्प शान्त हों।

ནོར་ལོངས་སྤྱོད་ཆར་བཞིན་འབབ་པར་གྱུར་ཅིག །
नोर लोङ चोद् छर शिन बप पर ग्युर चिग
धन-सम्पत्ति वर्षा के समान वर्षित हों।

ལོག་འདྲེན་ཐམས་ཅད་ཚར་ཆོད་པར་གྱུར་ཅིག །
लोग डेन थम चे छ़र छोद् पर ग्युर चिग
समस्त विनायकों पर विजय प्राप्त हो।

འཆི་བ་རྗེས་སུ་དྲན་པར་གྱུར་ཅིག །
छि व जेस् सु डेन पर ग्युर चिग
मृत्यु का अनुस्मरण हो।

ཆོས་བརྒྱད་མགོ་མོ་སྙོམས་པར་གྱུར་ཅིག །
छोस् ग्ये गो बो ञोम पर ग्युर चिग
अष्ट(-लोक)धर्म में समता प्राप्त हो।

བློ་ལས་སུ་རུང་བར་གྱུར་ཅིག །
लो लेस सु रुङ बर ग्युर चिग
बुद्धि कर्म-योग्य बनें।

བློ་ཆོས་སུ་འགྲོ་བར་གྱུར་ཅིག །
लो छोस् सु डो बर ग्युर चिग
बुद्धि धर्म में प्रवेश करे।

སྣང་མི་སྣང་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ मि नङ थम चे वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
समस्त आभास-अनाभास पर अधिकार प्राप्त हो।

མི་རྟག་པ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
मि तग प ग्युद् ल क्ये बर ग्युर चिग
अनित्यता (चित्त-)सन्तति में उत्पन्न हो।

ཚེ་འདི་བློ་ཡིས་ཐོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़े दि लो यीस् थोङ पर ग्युर चिग
इस जन्म को चित्त से निःसार देखूँ।

འཛིན་པ་མཐའ་དག་ལས་གྲོལ་བར་གྱུར་ཅིག །
ज़िन प था दग लेस डोल वर ग्युर चिग
समस्त ग्राहक(-चित्त) से मुक्ति प्राप्त हो।

སེམས་བཀོལ་དུ་བཏུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सेम कोल दु तुप पर ग्युर चिग
चित्त से कार्य करा सकूँ।

ཅི་བྱས་ཆོས་སུ་འགྲོ་བར་གྱུར་ཅིག །
चि छेस् छोस् सु डो बर ग्युर चिग
जो भी करूँ, धर्म में समा जाए।

གང་བསམ་ཆོས་བཞིན་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
गङ सम छोस् शिन डुप पर ग्युर चिग
जो भी सोचूँ, धर्मानुसार सिद्ध हो।

ཆོས་མིན་གྱི་བསམ་པ་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
छोस् मिन ग्यि सम प के चिग क्यङ मि छुङ बर ग्युर चिग
अधर्म का चिन्तन एक क्षण के लिए भी उत्पन्न न हो।

བྱམས་པ་དང་སྙིང་རྗེ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འབྱོངས་ནས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་འགྲུབ་པར་
छम प दङ ञिङ जे छङ छुप क्यि सेम छोङ नेस् सेम चेन ग्यि दोन नम खा दङ ञम प डुप पर
मैत्री, करुणा तथा बोधिचित्त का उत्पाद कर सत्त्वार्थ आकाशसम सिद्ध हो।

གྱུར་ཅིག །དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་ཞེན་པ་ཕྱོགས་མེད་དུ་ལྡོག་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युर चिग  गे बई ज़्त्र व दीस् छ़े रप थम चे दु शेन प छोग मेद् दु दोग पर ग्युर चिग
इस कुशलमूल के द्वारा समस्त जन्मान्तरों में अदिग् (समस्त) आसक्ति का निवर्तन हो।

རི་ཁྲོད་ཕྱོགས་མེད་དུ་འགྲིམ་པར་གྱུར་ཅིག །
रि ठोद् छोग मेद् दु डिम पर ग्युर चिग
(अदिग् (समस्त) एकान्त का सेवन करूँ।

ཡོན་ཏན་ཕྱོགས་མེད་དུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག །
योन तेन छोग मेद् दु क्ये बर ग्युर चिग
अदिग् गुणों की उत्पत्ति हो।

སྙིང་རྗེ་ཕྱོགས་མེད་དུ་འབྱོངས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञिङ जे छोग मेद् दु छोङ पर ग्युर चिग
अदिग् करुणा का अभ्यास हो।

འགྲོ་དོན་ཕྱོགས་མེད་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
डो दोन छोग मेद् दु डुप पर ग्युर चिग
अदिग् सत्त्वार्थ सिद्ध हो।

རྟེན་འབྲེལ་ཕྱོགས་མེད་དུ་འཆར་བར་གྱུར་ཅིག །
तेन डेल छोग मेद् दु छर बर ग्युर चिग
अदिग् प्रतीत्य का उदय हो।

ཞབས་ཏོག་ཕྱོགས་མེད་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
शप तोग छोग मेद् दु डुप पर ग्युर चिग
अदिग् सेवा सिद्ध हो।

སྣང་སེམས་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ सेम येर मेद् दु तोग पर ग्युर चिग
आभास (एवं) चित्त के अभिन्नता का ज्ञान हो।

སྣང་བ་ལ་བདེན་འཛིན་ལྡོག་པར་གྱུར་ཅིག །
नङ व ल देन ज़िन दोग पर ग्युर चिग
आभास में सत्यग्राहक(-चित्त) की निवृत्ति हो।

བསམ་པ་དང་དགོས་འདོད་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
सम प दङ गोस् दोद् थम चे डुप पर ग्युर चिग
समस्त आशय एवं इच्छाएँ सिद्ध हों।

བཀྲ་ཤིས་དང་བདེ་ལེགས་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
ट शीस् दङ दे लेग थम चे छुङ बर ग्युर चिग
समस्त मंगल एवं स्वस्ति आ जाए।

ཕྱི་ནང་གི་བར་ཆད་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་གྱུར་ཅིག །
छि नङ गि बर छे थम चे शि वर ग्युर चिग
बाह्य-अध्यात्म समस्त बाधाएँ शान्त हों।

ནོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
नोर दङ लोङ चोद् फुन सुम छ़ोग प थम चे थोप पर ग्युर चिग
सभी धन एवं भोग-सम्पद् की प्राप्ति हो।

མ་ཆགས་མ་ཞེན་པའི་སྒོ་ནས་གཏོང་བ་གསུམ་མཐར་ཕྱིན་པ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
म छग म शेन पई गो नेस् तोङ व सुम थर छिन प डुप पर ग्युर चिग
अराग (एवं) अनासक्ति के द्वारा तीन (प्रकार के) त्याग (दान) सम्पूर्ण रूप से सिद्ध हों।

འཁོར་གྱི་ཚད་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདག་གིས་འདུལ་བར་གྱུར་ཅིག །
खोर ग्यि छे नम खा दङ ञम पई सेम चेन थम चे दग गीस् दुल वर ग्युर चिग
परिवार का परिमाण–आकाशसम सभी सत्त्व मेरे द्वारा दमित हों।

ཚེའི་ཚད་འཁོར་བ་མ་སྟོང་གི་བར་དུ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་པར་གྱུར་ཅིག །
छे छे खोर व म तोङ गि बर दु सेम चेन ग्यि दोन छेद् पर ग्युर चिग
आयु का परिमाण– संसार के शून्य नहीं होने तक सत्त्वार्थ करता रहूँ।

གདུལ་བྱའི་ཚད་དག་པ་དང་མ་དག་པ་ཐམས་ཅད་སྨིན་གྲོལ་ལ་འགོད་པར་གྱུར་ཅིག །
दुल छई छे दग प दङ म दग प थम चे मिन डोल ल खोद् पर ग्युर चिग
विनेयजन का परिमाण–शुद्ध एवं अशुद्ध (सत्त्व) सभी को विपाक-मुक्ति पर आरूढ करूँ।

ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཚད་ཁམས་གསུམ་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འདུས་པར་གྱུར་ཅིག །
शिङ खम क्यि छे खम सुम थम चे वङ दु दुस् पर ग्युर चिग
क्षेत्रधातु का परिमाण–सभी त्रिधातुओं पर अधिकार करूँ।

གོ་ཆའི་ཚད་གོང་འོག་གཉིས་ཀྱི་དོན་བྱེད་པ་ལ་འཁོར་བ་དོང་མ་སྤྲུགས་ཀྱི་བར་དུ་ངལ་བ་དང་། སྐྱོ་
गो छई छे गोङ ह़ोग ञीस् क्यि दोन छेद् प ल खोर व दोङ म टुग क्यि बर दु ङल व दङ क्यो
सन्नाह का परिमाण–पूर्व-पश्चात् दोनों की अर्थ-सिद्धि के लिए संसार के निर्मूल नहीं होने तक क्लान्त (थकावट),

བ་དང་། དུབ་པ་དག་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་འབྱུང་བར་སྤྲོ་དགའི་བསམ་པ་རྒྱུན་ཆད་མེད་པ་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
व दङ दुप प दग के चिग क्यङ मि छुङ बर टो गई सम प ग्युन छे मेद् प छुङ बर ग्युर चिग
खिन्नता (दुःखता) तथा काय-चित्त की हीनता एक क्षण भी न होकर सुख (एवं) प्रसन्नता का चित्त (अनुभव)

དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་བདག་གི་དུས་གསུམ་གྱི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཐམས་ཅད་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་སྨིན་པར་གྱུར་ཅིག །
गे बई त्स़ा व दीस् दग गि दुस् सुम ग्यि गे बई त्स़ा व थम चे छे दि ञिद् ल मिन पर ग्युर चिग
निरन्तर हो। इस कुशलमूल से मेरे तीनों कालों के समस्त कुशलमूल इसी जन्म में विपाचित हों।

སྨོན་ལམ་གྱི་འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་སྨིན་ཅིང་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །
मोन लम ग्यि डेस् बु थम चे छे दि ञिद् ल मिन चिङ डुप पर ग्युर चिग
प्रणिधान के समस्त फल इसी जन्म में उपचित होकर सिद्ध हों।

དེ་དག་ཀྱང་རྒྱ་ནམ་མཁའ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
दे दग क्यङ ग्य नम खा ञम पर ग्युर चिग
वे भी आकाशसम विस्तृत हों।

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་དང་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
छोस् क्यि यिङ दङ ञम पर ग्युर चिग
धर्मधातु के साथ सम हों।

དུས་གསུམ་ཤེས་བྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
दुस् सुम शेस् छई दक्यिल खोर दङ ञम पर ग्युर चिग
तीनों कालों के ज्ञेय-मण्डल के बराबर हों।

ཡུན་འཁོར་བ་མ་སྟོང་གི་བར་དུ་གནས་པར་གྱུར་ཅིག །
युन खोर व म तोङ गि बर दु नेस् पर ग्युर चिग
समय–संसार के शून्य होने तक सीमित हों।

ལས་གོང་འོག་གཉིས་ཀྱི་དོན་ཆེན་པོ་འབབ་ཞིག་ཏུ་འགྲོ་བར་གྱུར་ཅིག །
लेस गोङ ह्योग ञीस् क्यि दोन छेन पो बा शिग तु डो बर ग्युर चिग
कर्म–पूर्व-पश्चात् दोनों के महान् अर्थ में चले जाएँ।

མདོར་ན་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་བདག་བླ་མ་བརྒྱུད་པ་དང་བཅས་པ་ཡི་དམ་གྱི་ལྷ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་ཆོས་
दोर न गे बई ञ़ व दीस् दग ल म ग्युद् प दङ चेस् प यि दम ग्यि ल्ह छ़ोग खा डो छोस्
संक्षेप में, इस कुशलमूल से मैं–गुरु-परम्परा सहित इष्टदेवगण डाक-धर्मपालक धर्म करने वाले

མཛད་གྲུབ་ཐོབ་རྟོགས་ལྡན་ལ་སོགས་པ་དུས་གསུམ་གྱི་རྒྱལ་བ་སྲས་དང་བཅས་པ་མ་ལུས་པ་ཐམས་
क्योङ छोस् ज़े डुप थोप तोग देन ल सोग प दुस् सुम ग्यि ग्यल व सेस् दङ चेस् प म लुस् प थम
सिद्ध ज्ञानी आदि तीनों कालों के अशेष पुत्र (बोधिसत्त्व) सहित जिन (बुद्ध) सभी के साथ अभी

ཅད་དང་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་སྐུ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །གསུང་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །ཐུགས་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
चे दङ द त ञिद् दु कु ञम पर ग्युर चिग सुङ ञम पर ग्युर चिग थुग ञम पर ग्युर चिग
इसी समय से काय समान हों। वाक् समान हों। चित्त समान हों।

ཡོན་ཏན་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །ཕྲིན་ལས་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །སྐུ་ཚེ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
योन तेन ञम पर ग्युर चिग ठिन लेस ञम पर ग्युर चिग कु छ़े ञम पर ग्युर चिग
गुण समान हों। कर्म समान हों। जीवन समान हों।

ཞིང་ཁམས་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
शिङ खम ञम पर ग्युर चिग
**क्षेत्रधातु समान हों।**

རྣམ་འཕྲུལ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
नम ठुल ञम पर ग्युर चिग
**विनिर्माण(-काय) समान हों।**

སྤོབས་པ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
पोप प ञम पर ग्युर चिग
**प्रतिभा समान हों।**

ཡེ་ཤེས་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
ये शेस् ञम पर ग्युर चिग
**ज्ञान समान हों।**

རྫུ་འཕྲུལ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़ु ठुल ञम पर ग्युर चिग
**ऋद्धि समान हों।**

འགྲོ་དོན་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
डो दोन ञम पर ग्युर चिग
**सत्त्वार्थ समान हों।।**

མཛད་པ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
ज़े प ञम पर ग्युर चिग
**कार्य समान हों।**

ཤེས་རབ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
शेस् रप ञम पर ग्युर चिग
**प्रज्ञा समान हों।**

ནུས་མཐུ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
नुस् थु ञम पर ग्युर चिग
**बल-शक्ति समान हों।**

ཐུགས་རྗེ་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
थुग जे ञम पर ग्युर चिग
**करुणा समान हों।**

མངོན་ཤེས་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
ङोन शेस् ञम पर ग्युर चिग
**अभिज्ञा समान हों।**

ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྨོན་ལམ་ངོས་དྲག་ལ་སྣུགས་རིང་བ་བཏབ་བོ། །ཞེས་པ་འདི་ཆོས་རྗེ་གཙང་པ་རྒྱ་རས་ཀྱིས་མཛད་པའོ། །
इस प्रकार का स्पष्टोग्र प्रणिधान दीर्घकाल तक करना चाहिए। यह धर्म-भट्टारक ऱ्चङ-पा ग्या-रस् द्वारा लिखा गया है।

འབའ་རོམ་སྨོན་ལམ།

# बा-रोम् प्रणिधान

བླ་མ་ཡི་དམ་དཔའ་བོ་དང་། །
ल म यि दम पा बो दङ
गुरु, इष्ट तथा वीर

མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་སྲུང་མ་རྣམས། །
खा डो छोस् क्योङ सुङ म नम
डाकिनी एवं (हे) धर्मपालको !

བདག་ལ་དགོངས་པར་མཛད་ནས་ཀྱང་། །
दग ल गोङ पर ज़े नेस् क्यङ
मझे ध्यान दें और

སྨོན་ལམ་འགྲུབ་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
मोन लम डुप पर ज़े दु सोल
प्रणिधान की सिद्धि करायें।1।

བདག་གཞན་དུས་གསུམ་བསགས་པ་ཡི། །
दग शेन दुस् सुम सग प यि
स्व-पर द्वारा त्रिकाल में सञ्चित

འཁོར་འདས་གཉིས་ཀྱི་དགེ་བ་དང་། །
खोर देस् ञीस् क्यि गे व दङ
संसार-निर्वाण द्विविध कुशल तथा।

འདི་ལྟར་བགྱིས་པའི་དགེ་བ་ཡིས། །
दि तर ग्यीस् पई गे व यीस्
ऐसे कृत कुशलों के द्वारा

བདག་གཞན་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་ཤོག །
दग शेन सङ ग्येस् थोप पर शोग
स्व-पर बुद्धत्व को प्राप्त करें।2।

གང་དུ་སྐྱེས་པའི་གནས་རྣམས་སུ། །
गङ दु क्येस् पई नेस् नम सु
जन्म-स्थल जहाँ भी हो

ཕྱི་ནང་འཚེ་བ་མེད་པ་དང་། །
छि नङ छे व मेद् प दङ
बाह्याभयन्तर हिंसा न हों।

སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་དར་བ་དང་། །
सङ ग्येस् तेन प दर व दङ
बुद्ध-शासन का विस्तार तथा

དགོས་འདོད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་ཤོག །
गोस् दोद् फुन सुम छ़ोग पर शोग
आवश्यक इच्छाओं की सम्पन्नता हों।3।

དལ་འབྱོར་མི་ལུས་ཐོབ་པ་དང་། །
दल छोर मि लुस् थोप प दङ
क्षण-सम्पद् नर-काय प्राप्त हों

དགེ་བའི་བཤེས་དང་མཇལ་བ་དང་། །
गे बई शेस् दङ जल व दङ
कल्याणमित्र का दर्शन तथा।

དམ་ཆོས་ཚུལ་བཞིན་སྤྱོད་ནས་ཀྱང་། །
दम छोस् छुल शिन चे नेस् क्यङ
सद्धर्म का नियमवत चर्या कर भी

གང་དུ་འདུག་པའི་གནས་རྣམས་སུ། །
गङ दु दुग पई नेस् नम सु
जिस स्थल पर (मैं) निवास करुँ

དག་པའི་འཁོར་གྱིས་བསྐོར་བ་དང་། །
दग पई खोर ग्यीस् कोर व दङ
शुद्ध (आचार युक्त) परिवार से परिवृत्त हो

བདག་ལ་བརྟེན་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས། །
दग ल तेन पई सेम चेन नम
मुझ पर आश्रित सारे सत्त्व

སྡོམ་པ་ཚུལ་བཞིན་བསྲུང་བ་དང་། །
दोम प छुल शिन सुङ व दङ
संवर का नियमवत पालन कर

ཟག་མེད་འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་ཤོག །
ज़ग मेद् डेस् बु थोप पर शोग
फल- अनास्रव की प्राप्ति करें।6।

བྱང་ཆུབ་སེམས་མཆོག་བསྐྱེད་པ་དང་། །
छङ छुप सेम छोग क्येद् प दङ
परम बोधिचित्तोत्पाद कर तथा।

འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་མྱུར་ཐོབ་ཤོག །
डेस् बु सङ ग्येस् न्युर थोप शोग
फल- बुद्धत्व शीघ्र प्राप्त हों।7।

དབང་ཐོབ་བསྐྱེད་རྫོགས་བརྟན་པ་ཡིས། །
वङ थोप क्येद् ज़ोग तेन प यीस्
अभिषेक-लब्ध कर सुदृढ उत्पन्न-सम्पन्नक्रम द्वारा।

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་ཤོག །
ज़ोग पई सङ ग्येस् थोप पर शोग
संबुद्धत्व की प्राप्ति हों।4।

ལོངས་སྤྱོད་ཆོས་དང་མཐུན་པ་དང་། །
लोङ चोद् छोस् दङ थुन प दङ
धर्मानुरूप सम्पत्ति तथा।

འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་དཔལ་དུ་ཤོག །
डो व नम क्यि पल दु शोग
प्राणियों में श्री-स्वरूप होऊँ।5।

ཐེག་པ་ཆུང་ངུའི་སྒོར་ཞུགས་ནས། །
थेग प छुङ ङुइ गोर शुग नेस्
हीनयान-द्वार में प्रवेश होकर

དམ་ཆོས་ཚུལ་བཞིན་སྤྱད་པ་ཡིས། །
दम छोस् छुल शिन चे प यीस्
सद्धर्म की नियमवत चर्या से

ཕ་རོལ་ཕྱིན་པའི་སྒོར་ཞུགས་ནས། །
फ रोल छिन पई गोर शुग नेस्
पारमिता-द्वार में प्रवेश होकर

བདག་མེད་གཉིས་ཀྱི་དོན་རྟོགས་ནས། །
दग मेद् ञीस् क्यि दोन तोग नेस्
नैरात्म्य-द्वय के अर्थ-ज्ञान से

རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་སྒོར་ཞུགས་ནས། །
दोर जे थेग पई गोर शुग नेस्
वज्रयान के द्वार में प्रवेश होकर

མཆོག་དང་ཐུན་མོང་དངོས་གྲུབ་བརྙེས། །
छोग दङ थुन मोङ ङोस् डुप ञेस्
परम और सामान्य सिद्धि प्राप्त हों

ཚེ་འདིར་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་ཤོག །
छे दिर सङ ग्येस् थोप पर शोग
इह-जन्म में बुद्धत्व प्राप्त हों।8।

བདག་གིས་མཐོང་ཐོས་དྲན་པ་དང་། །
दग गीस् थोङ थोस् डेन प दङ
मैंने देखा, सुना, स्पर्श किया तथा।

ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་ཤོག །
थम चे सङ ग्येस् थोप पर शोग
सबको बुद्धत्व की प्राप्ति हों।9।

འཁོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཕུན་སུམ་ཚོགས། །
खोर दङ लोङ चोद् फुन सुम छोग
परिवार तथा भोग-सम्पन्नता (सहित)।

འགྲོ་བའི་དོན་དུ་སངས་རྒྱས་ཤོག །
डो बई दोन दु सङ ग्येस् शोग
सत्त्वार्थ बुद्धत्व को प्राप्त करूँ।10।

ཅེས་ཏི་ཤྲཱི་རས་པའི་གསུང་ངོ་། །
यह तिश्री रस्-पा का वचन है।

བདག་མཐོང་ཐོས་དང་དྲན་རེག་དང་། །
दग थोङ थोस् दङ डेन रेग दङ
मुझे देखा, सुना और स्मृति-स्पर्श किया एवं

བདག་ལ་ཞབས་ཏོག་བྱེད་པ་རྣམས། །
दग ल शप तोग छेद् प नम
जिन्होंने मेरी सेवा की

ཞིང་ཁམས་རྣམ་པར་དག་པ་རུ། །
शिङ खम नम पर दग प रु
विशुद्ध (बुद्धों के) क्षेत्र-धातु में

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བྱས་ནས། །
छोस् क्यि खोर लो कोर छेस् नेस्
धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करके

ཕག་གྲུའི་ཐུན་མཚམས་སྨོན་ལམ།

# सत्र-प्रणिधान (नाम) भट्टारक फग्-डु वचन

སེམས་ཉིད་མ་རྟོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་དོན་བྱེད་པར་ཤོག་ཅིག །
सेम ञिद् म तोग प नम क्यि दोन छेद् पर शोग चिग
(जिन्होंने) चित्त का अवबोध नहीं किया (उन) का (तदर्थ) कार्य करुँ।1।

དོན་བྱེད་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རང་ལ་གནས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་རྟོགས་པར་ཤོག་ཅིག །
दोन छेद् पई सेम चेन थम चे क्यीस् रङ ल नेस् पई ये शेस् छिन चि म लोग पर तोग पर शोग
(जिनके प्रति मेरे द्वारा) कार्य किये गये (उन) समस्त सत्त्वों को स्वयं में स्थित अविपरीत ज्ञान का अवबोध

རྟོགས་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་གཞན་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
चिग तोग नेस् सेम चेन थम चे क्यीस् क्यङ शेन दोन फुन सुम छ़ोग प छुङ बर ग्युर चिग
हों।2। अवबोध कर समस्त सत्त्वों द्वारा भी परार्थ सम्पन्नता को प्राप्त करें।3।

དགེ་བའི་རྩ་བ་དེས་ཚེ་རིང་བ་དང་། ནད་མེད་པ་དང་སྒྲུབ་པ་ལ་བར་ཆད་མེད་ཅིང་། མཉམ་རྗེས་ཐམས་ཅད་དུ་
गे बई ज़्व व देस् छ़े रिङ व दङ ने मेद् प दङ डुप प ल बर छे मेद् चिङ ञम जेस् थम चे दु
उन कुशलमूलों द्वारा दीर्घायु, निरोग, तथा साधन में विघ्न बिना, समाधि एवं पृष्ठलब्ध सभी अवस्थाओं में शून्य

སྟོང་པ་དང་སྙིང་རྗེ་མཉམ་པར་གནས་ནས། མཐོང་ཐོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐོགས་ནས་འགྲོ་བ་
तोङ प दङ ञिङ जे ञम पर नेस् नेस् थोङ थोस् थम चे ल फेन प ग्य छेन पो थोग नेस् डो व
एवं करुणा-सम स्थित होकर दर्शन-श्रवण किये गये सभी (सत्त्वों) के लिये विपुल हित-साधन कर समस्त

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡིད་དུ་འོང་བར་གྱུར་ཅིག །
थम चे क्यि यिद् दु ह़ोङ बर ग्युर चिग
प्राणियों में मनोज्ञ बनूँ।4।

དུས་དེ་ནས་འཁོར་བ་མ་སྟོངས་ཀྱི་བར་དུ་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པས། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་འགྲུབ་ནས་སེམས་ཅན་
दुस् दे नेस् खोर व म तोङ क्यि बर दु ल्हुन ग्यीस् डुप पेस् सेम चेन ग्यि दोन डुप नेस् सेम चेन
इस काल से लेकर संसार के शून्य नहीं होने तक अनाभोग सत्त्वार्थ सिद्ध कर समस्त सत्त्वों को केवल धर्म

ཐམས་ཅད་ལ་ཆོས་འབབ་ཞིག་གིས་ཕན་ཐོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
थम चे ल छोस् बा शिग गीस् फेन थोग पर ग्युर चिग
द्वारा लाभ पहुँचाऊँ।5।

ཟད་ཅིང་སྟོངས་པར་གྱུར་ཅིག་འཁོར་བ་ངན་སོང་གསུམ། །
ज़े चिङ तोङ पर ग्युर चिग खोर व ङेन सोङ सुम
क्षय हो शून्य हों भव (रूपी) तीन दर्गतियाँ।6।

ཞི་ཞིང་བརླག་པར་གྱུར་ཅིག་ནག་པོ་བདུད་ཀྱི་སྡེ། །
शि शिङ लग पर ग्युर चिग नग पो दुद् क्यि दे
शान्त हो नष्ट हों कृष्ण (क्लेश रूपी) मार-वर्ग।7।

བདེ་ཞིང་སྐྱིད་པར་གྱུར་ཅིག་མཐའ་ཡས་སེམས་ཅན་རྣམས། །
दे शिङ क्यिद् पर ग्युर चिग था येस् सेम चेन नम
सुखी हो क्षेम प्राप्त करें (भव के) अनन्त सत्त्व।8।

དར་ཞིང་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག་གཙུག་ལག་དམ་པའི་ཆོས། །
दर शिङ ग्येस् पर ग्युर चिग ज़ुग लग दम पई छोस्
फैलें विस्तार प्राप्त करें सद्धर्म-शास्त्र।9।

སྐུ་ཚེ་རིང་བར་གྱུར་ཅིག་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་རྣམས། །
कु छे रिङ बर ग्युर चिग गे बई शेस् ञेन नम
दीर्घायु होवें कल्याणमित्र लोग।10।

བདག་གིས་སྨོན་ལམ་འདི་བཏབ་པས། །
दग गीस् मोन लम दि तप पेस्
मेरे इस प्रणिधान के करने से

ཀུན་གྱི་སྨོན་ལམ་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །ཅེས་སོ། །
कुन ग्यि मोन लम डुप ग्युर चिग
सभी के प्रणिधान सिद्ध हो जायें।11। इति।

ཚལ་པའི་སྨོན་ལམ།

# छ़ल्-पा प्रणिधान

དགེ་བ་འདི་དང་དགེ་གཞན་རྣམས། །
गे व दि दङ गे शेन नम
यह पुण्य और अन्य कुशल सब

མ་ལུས་གཅིག་ཏུ་གྱུར་ནས་ནི། །
म लुस् चिग तु ग्युर नेस् नि
अशेष एकीकृत होकर।

ནམ་མཁའི་མཐའ་མཉམ་འགྲོ་དོན་དུ། །
नम खई था ञम डो दोन दु
आकाशान्त-सम जगद्धितार्थ

གཉིས་མེད་ཆོས་སྐུ་མངོན་གྱུར་ཤོག །
ञीस् मेद् छोस् कु ङोन ग्युर शोग
अद्वय धर्मकाय का साक्षात्कार हों।1।

འབད་པ་མེད་པར་འགྲོ་དོན་དུ། །
बे प मेद् पर डो दोन दु
बिना यत्न, जगत हित के लिये

ཞེན་བྲལ་དམིགས་མེད་ཐུགས་རྗེ་ཡིས། །
शेन डल मिग मेद् थुग जे यीस्
अभिनिवेश रहित अनालम्ब करुणा से।

གཟུགས་སྐུ་ནམ་མཁའི་མཐའ་ཁྱབ་པས། །
ज़ुग कु नम खई था ख्यप पेस्
रूपकाय का आकाशान्त व्याप्त होने से

གང་འདུལ་དེ་ལ་དེ་སྟོན་ཤོག །
गङ दुल दे ल दे तोन शोग
यथा दमन तथा प्रदर्शन हों।2।

དེང་ནས་བརྩམས་ཏེ་དུས་ཀུན་ཏུ། །
देङ नेस् ज़म ते दुस् कुन तु
आज से प्रारम्भ कर सभी कालों में

དལ་འབྱོར་ཕུན་ཚོགས་ལུས་ཐོབ་ནས། །
दल छोर फुन छ़ोग लुस् थोप नेस्
क्षण-सम्पद्-सम्पन्न काय (को) प्राप्त कर।

དད་དང་ཤེས་རབ་སྙིང་རྗེ་ཡིས། །
दे दङ शेस् रप ञिङ जे यीस्
श्रद्धा, प्रज्ञा और करुणा द्वारा

སྟོབས་ཆེན་དགེ་སྤྱོད་འབའ་ཞིག་ཤོག །
तोप छेन गे चोद् बा शिग शोग
महाबलशाली कुशलचर्या ही हों।3।

ཀུན་ཏུ་རྡོ་རྗེ་ཐེག་མཆོག་སྣོད། །
कुन तु दोर जे थेग छोग नोद्
सदा वज्रयान का सु-पात्र

རབ་གྱུར་བླ་མའི་གདམས་ངག་དང་། །
रप ग्युर ल मई दम ङग दङ
अच्छा बन, गुरु का उपदेश और।

རྟོགས་མཆོག་ཐུགས་རྗེའི་བྱིན་རླབས་ཅན། །
तोग छोग थुग जे छिन लप चेन
अधिगम-श्रेष्ठ (तथा) करुणाधिष्ठित

རྙེད་ནས་རྟག་ཏུ་མཉེས་བྱེད་ཤོག །
ञेद् नेस् तग तु ञेस् छेद् शोग
लाभ कर, सदैव (उन्हें) प्रसन्न करूँ।4।

རྒྱུན་དུ་བླ་མའི་ཡོན་ཏན་མཐོང་། །
ग्युन दु ल मई योन तेन थोङ
सदैव गुरु के गुणों को देख

སྐྱོན་རྣམས་གཅིག་ཀྱང་མ་མཐོང་བས། །
क्योन नम चिग क्यङ म थोङ वे
एक भी दोष नहीं देखने से।

རྡོར་འཛིན་ཉིད་དུ་རྟག་མཐོང་སྟེ། །
दोर ज़िन ञिद् दु तग थोङ ते
वज्रधारी सदा दिखते हैं

དད་གུས་རྒྱུན་ཆད་མེད་པར་ཤོག །
दे गुस् ग्युन छे मेद् पर शोग
श्रद्धा-आदर निरन्तर होवें।5।

ཀུན་སློང་ངན་པས་མ་སྦགས་པའི། །
कुन लोङ ङेन पेस् म बग पई
बुरे चित्तोत्पाद से मिश्रित न होकर

དམིགས་མེད་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡིས། །
मिग मेद् ञिङ जे छेन पो यीस्
अनालम्ब महाकरुणा द्वारा।

བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
ल म सङ ग्येस् थम चे क्यि
गुरु (और) समस्त बुद्धों के

ཡོན་ཏན་མ་ལུས་བདག་ལ་ཤོག །
योन तेन म लुस् दग ल शोग
अशेष गुण मुझे प्राप्त हों।6।

རྟག་ཆད་མུ་མཐར་མ་གོལ་བའི། །
तग छे मु थर म गोल बई
नित्योच्छेद कोटि-अन्त में न पड़

ཕྱོགས་བྲལ་ལྟ་བ་རྣམ་དག་དང་། །
छोग डल त व नम दग दङ
पक्ष रहित विशुद्ध दर्शन तथा।

ཞེན་མེད་བདེ་གསལ་མི་རྟོག་དང་། །
शेन मेद् दे सल मि तोग दङ
अभिनिवेश रहित सुख, प्रकट निर्विकल्प और

རོ་སྙོམས་སྤྱོད་པ་མཆོག་ཐོབ་ཤོག །
रो ञोम चोद् प छोग थोप शोग
परम समरस-चर्या की प्राप्ति हों।7।

ཀུན་ཏུ་གཡོ་སྒྱུ་ཚུལ་འཆོས་དང་། །
कुन तु यो ग्यु छुल छोस् दङ
सदा शठ तथा दम्भ

ཉོན་མོངས་དྲི་མས་མ་གོས་པས། །
ञोन मोङ डि मेस म गोस् पेस्
क्लेश-मल से मिश्रित न होकर।

དམ་ཚིག་མཁའ་འགྲོས་མ་ཁྲེལ་བ། །
दम छिग खा डोस् म ठेल व
समय (का) ड़ाकिनी द्वारा मखौल न करने योग्य

བསྲུང་ཞིང་སྒྲུབ་ལ་རྟག་བརྩོན་ཤོག །
सुङ शिङ डुप ल तग ज़्वोन शोग
पालन कर, सदा साधना में प्रयत्नरत हों।8।

རྟག་ཏུ་རི་ཁྲོད་འགྲིམ་བྱེད་ཅིང་། །
तग तु रि ठोद् डिम छेद् चिङ
सदा गिरिगह्वर मे रहकर

འཇིགས་སྐྱོ་བར་ཆད་གཏན་མི་འབྱུང་། །
जिग क्यो वर छे तेन मि छुङ
भयोद्विग्न, बाधा कदापि न हों।

ཉམས་མྱོང་རྟོགས་པ་དྲོད་རྟགས་སོགས། །
ञम न्योङ तोग प डोद् तग सोग
अनुभव, अधिगम, ऊष्म-लक्षणादि

ཡོན་ཏན་རྫུ་འཕྲུལ་མཐུ་ལྡན་ཤོག །
योन तेन ज़ु ठुल थु देन शोग
गुण, प्रातिहार्य, शक्ति से युक्त हों।9।

བདག་གིས་སྤྱོད་ལམ་ཅི་བྱས་ཀུན། །
दग गीस् चोद् लम चि छेस् कुन
मेरे द्वारा जो भी चर्या करूँ सब

བླ་མ་ཀུན་དང་མཆེད་གྲོགས་དང་། །
ल म कुन दङ छेद् डोग दङ
समस्त गुरु तथा (वज्र) बन्धु-मित्र।

སེམས་ཅན་གཞན་དག་མ་ལུས་པ། །
सेम चेन शेन दग म लुस् प
अशेष अन्य सत्त्व गण

ཀུན་གྱི་ཡིད་དུ་འོང་བར་ཤོག །
कुन ग्यि यिद् दु ह़ोङ बर शोग
सभी में मनोज्ञ बन जाऊँ।10।

བདག་གི་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དང་། །
दग गि लुस् ङग यिद् सुम दङ
मेरे काय-वाक्-चित्त तीन और

གནས་དང་གོས་དང་མིང་དང་རུས། །
नेस् दङ गोस् दङ मिङ दङ रुस्
स्थान, वस्त्र, नाम और वंश के।

མཐོང་ཐོས་དྲན་རེག་ལ་སོགས་ཀྱིས། །
थोङ थोस् डेन रेग ल सोग क्यीस्
दर्शन, श्रवण, स्मरण, स्पर्श आदि से

བདག་གཞན་ཅི་འདོད་ཀུན་རྫོགས་ཤོག །
दग शेन चि दोद् कुन ज़ोग शोग
स्व-पर जो चाहें, सभी पूर्ण हों।11।

དངོས་ཀུན་ཆགས་མེད་གཏོང་བྱེད་ཅིང་། །
ङोस् कुन छग मेद् तोङ छेद् चिङ
अनासक्त हो, सर्व पदार्थों का त्याग कर

རེ་འདོད་ལ་སོགས་སྐྱོན་དང་བྲལ། །
रे दोद् ल सोग क्योन दङ डल
आशा-इच्छा आदि दोष से विरक्त होकर।

རྣམ་དག་ཁྲིམས་ལྡན་སེམས་མི་འཁྲུག །
नम दग ठिम देन सेम मि ठुग
विशुद्ध शील युक्त हों, अविक्षिप्त चित्त होकर

གཏན་སྤྲོ་མི་གཡེང་མཁས་རྟོགས་ཤོག །
तेन टो मि येङ खेस् तोग शोग
अविक्षिप्त नियतोत्साह, कुशल का अधिगम करूँ।12।

བསྐྱེད་རྫོགས་གཉིས་ལ་བརྟན་ཐོབ་ནས། །
क्येद् ज़ोग ञीस् ल तेन थोप नेस्
उत्पन्न-सम्पन्नक्रम में दृढ़ता प्राप्त हों

འོད་གསལ་ཟུང་འཇུག་མཐར་ཕྱིན་ཏེ། །
ह़ोद् सल ज़ुङ जुग थर छिन ते
प्रभास्वर, युगनद्ध मे पारंगत होकर।

བདག་གི་བྱིན་རླབས་ལྷུན་གྲུབ་ཀྱིས། །
दग गि छिन लप ल्हुन डुप क्यीस्
मेरे अनाभोग अधिष्ठान द्वारा

འགྲོ་ཀུན་རེ་བ་སྐོང་བར་ཤོག །
डो कुन रे व कोङ बर शोग
सर्वसत्त्वों की आशा पूर्ण हों।13।

བདག་གི་དམིགས་མེད་སྙིང་རྗེ་ཡི། །
दग गि मिग मेद् ञिङ जे यि
मेरे अनालम्ब करुणा के

མཐུ་སྟོབས་རྫུ་འཕྲུལ་དཔག་མེད་ཀྱིས། །
थु तोप ज़ु ठुल पग मेद् क्यीस्
शक्तिबल (और) अपरिमित ऋद्धि के द्वारा।

ལྷ་ཀླུ་གནོད་སྦྱིན་བདུད་ལ་སོགས། །
ल्ह लु नोद् छिन दुद् ल सोग
देव, नाग यक्ष, मार आदि

མཐུ་ཆེན་དྲེགས་བཅས་ཀུན་འདུལ་ཤོག །
थु छेन डेग चेस् कुन दुल शोग
समस्त महाबली, अङ्कारियों का दमन हों।14।

བདག་གི་མགོ་དང་རྐང་ལག་དང་། །
दग गि गो दङ कङ लग दङ
मेरे शीर्ष, पाद और हस्त,

ཤ་ཁྲག་སྲོག་དབུགས་ལ་སོགས་པས། །
श ठग सोग उग ल सोग पेस्
माँस, रक्त, प्राण, श्वासादि द्वारा।

གཞན་ཕན་དུས་ལ་བབ་གྱུར་ན། །
शेन फेन दुस् ल बप ग्युर न
पर-हित-अवसर आ पड़े तो

སྤྲོ་ཞིང་ལེགས་གཏོང་མི་འགྱོད་ཤོག །
टो शिङ लेग तोङ मि ग्योद् शोग
प्रसन्नतापूर्वक सु-त्याग करुँ (और) पश्चाताप न हों।15।

ཟས་སྐོམ་ནོར་བུ་བཞོན་པ་སོགས། །
ज़ेस् कोम नोर बु शोन प सोग
खाद्य-पेय, रत्न, यान आदि

ལོངས་སྤྱོད་སྣ་ཚོགས་གང་འདོད་ལ། །
लोङ चोद् न छोग गङ दोद् ल
नाना सम्पत्ति जिसको जो चाहे।

བདག་གི་ཅི་དགོས་ཟད་མེད་ཀྱིས། །
दग गि चि गोस् ज़े मेद् क्यीस्
मेरे द्वारा जो चाहे (देकर), अक्षय रूप से

ཕན་འདོགས་ང་རྒྱལ་མེད་པར་ཤོག །
फेन दोग ङ ग्यल मेद् पर शोग
हित कर, अहङ्कार न करुँ।16।

དགྲ་དང་གདོན་གྱིས་གང་ཉེན་དང་། །
ड दङ दोन ग्यीस् गङ ञेन दङ
शत्रु तथा ग्रह द्वारा जो दुःखी हैं,

ནད་དང་མུ་གེ་ལ་སོགས་པའི། །
ने दङ मु गे ल सोग पई
रोग और अकाल इत्यादि।

སྡུག་བསྔལ་གང་གིས་ཉེན་ཡང་རུང་། །
दुग ङल गङ गीस् ञेन यङ रुङ
जिस दुःख से भी सन्तप्त होवे

བདག་གི་མཐུ་དཔལ་གྱིས་སྐྱོབ་ཤོག །
दग गि थु पल ग्यीस् क्योप शोग
मेरे शक्ति-श्री से रक्षा हों।17।

དེང་ནས་བཙམས་ཏེ་དུས་ཀུན་ཏུ། །
देङ नेस् ज़म ते दुस् कुन तु
आज से आरम्भ कर सभी कालों में

གཞན་དོན་འབའ་ཞིག་སྤྱོད་བྱེད་ཅིང་། །
शेन दोन बा शिग चोद् छेद् चिङ
केवल परार्थ का आचरण करके।

གཞན་གྱིས་མི་རིགས་གང་བྱས་ལ། །
शेन ग्यीस् मि रिग गङ छेस् ल
पर द्वारा अयुक्त जो भी करें, उसका

ཡིད་འཁྲུག་སྐྱོ་མེད་ཕན་འདོགས་ཤོག །
यिद् ठुग क्यो मेद् फेन दोग शोग
चित्त-विक्षोभ और खिन्न न हो, हित करूँ।18।

རློམ་སེམས་ང་རྒྱལ་ཕྲག་དོག་དང་། །
लोम सेम ङ ग्यल ठग दोग दङ
मद, अहङ्कार और इर्ष्या,

རང་འདོད་ཉེ་རིང་ཕྱོགས་རིས་སོགས། །
रङ दोद् ञे रिङ छोग रीस् सोग
स्वार्थ, तरफ़दारी, पक्षपात आदि।

མི་དགེའི་དྲི་མས་མ་གོས་པར། །
मि गे डि मेस म गोस् पर
अकुशल-मल से मिश्रित न होकर

འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཕན་ཐོགས་ཤོག །
डो व कुन ल फेन थोग शोग
समस्त प्राणियों का हितकारी बनूँ।19।

གཞན་གྱིས་བསྟོད་སོགས་དགའ་བ་མེད། །
शेन ग्यीस् तोद् सोग गा व मेद्
पर-स्तुति आदि में प्रसन्नता न हो

སྨད་སོགས་སྐྱོན་ལ་མི་དགའ་མེད། །
मे सोग क्योन ल मि गा मेद्
निन्दादि दोष में अप्रसन्न न होकर।

འབད་མེད་བཏང་སྙོམས་སྙིང་རྗེ་ཡིས། །
बे मेद् तङ ञोम ञिङ जे यीस्
अनाभोग समता और करुणा द्वारा

ཆགས་སྡང་དྲི་མས་མི་གོས་ཤོག །
छग दङ डि मेस मि गोस् शोग
राग-द्वेष-मल से अमिश्रित होउँ।20।

སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་དང་། །
चेन रेस ज़िग क्यि थुग जे दङ
अवलोकितेश्वर की करुणा तथा

འཇམ་པའི་དབྱངས་ཀྱི་ཤེས་རབ་དང་། །
जम पई यङ क्यि शेस् रप दङ
मञ्जुघोष की प्रज्ञा और।

ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེའི་མཐུ་སྟོབས་རྣམས། །
छग न दोर जेई थु तोप नम
वज्रपाणि का समस्त शक्तिबल

མ་ལུས་བདག་ལ་རྫོགས་པར་ཤོག །
म लुस् दग ल ज़ोग पर शोग
अशेष मुझमें सम्पूर्ण हो जायें।21।

ཀླུ་སྒྲུབ་སྙིང་པོའི་མཁྱེན་པ་དང་། །
लु डुप ञिङ पोइ ख्येन प दङ
नागार्जुन का हृदय-ज्ञान तथा

ས་ར་ཧ་ཡི་རྟོགས་པ་དང་། །
स र ह यि तोग प दङ
सरह (पाद) का अधिगम और।

བིར་ཝ་པ་ཡི་ནུས་མཐུ་ནམས། །
बिर व प यि नुस् थु नम
विरुपाद् का सर्व सामर्थ्य-शक्ति

མ་ལུས་བདག་གིས་ཐོབ་པར་ཤོག །
म लुस् दग गीस् थोप पर शोग
अशेष मुझको प्राप्त हो जायें।22।

སྔགས་རྒྱུད་མ་ལུས་སྦྱོར་བ་ཤེས། །
ङग ग्युद् म लुस् छोर व शेस्
अशेष मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग जानूँ

ལས་ཚོགས་མཐའ་དག་ཐོགས་མེད་འགྲུབ། །
लेस छ़ोग था दग थोग मेद् डुप
समस्त कर्म-संग्रह अप्रतिहत सिद्ध हों।

མན་ངག་དཔག་མེད་མངའ་བདག་བྱེད། །
मेन ङग पग मेद् ङा दग छेद्
अपरिमित उपदेशों का अधिपति बन

མཁའ་འགྲོ་མ་ལུས་མཉེས་བྱེད་ཤོག །
खा डो म लुस् ञेस् छेद् शोग
अशेष ड़ाकिनियों को प्रसन्न करुँ।23।

ཆོས་ཀུན་གང་ནས་ཀྱང་མི་འོངས། །
छोस् कुन गङ नेस् क्यङ मि ह़ोङ
समस्त धर्म कहीं से नहीं आता

གང་དུ་ཡང་ནི་མི་འགྲོ་ལ། །
गङ दु यङ नि मि डो ल
कहीं पर भी वह गमन नहीं करता।

གང་ཡང་མི་གནས་མཉམ་པའི་དོན། །
गर यङ मि नेस् ञम पई दोन
कहीं पर भी अ-स्थित, समता-अर्थ

ངེས་རྟོགས་རབ་བརྟན་གཞན་ཕན་ཤོག །
ङेस् तोग रप तेन शेन फेन शोग
नियतावबोध सुदृढ कर, परहितकारी बनूँ।24।

ཞེ་འདོད་སྐྱོན་བྲལ་གཞན་དོན་དུ། །
शे दोद् क्योन डल शेन दोन दु
अभिलाषा दोष रहित हो, परार्थ हेतु

བཟོ་དང་བསྟན་བཅོས་ཐམས་ཅད་དང་། །
ज़ो दङ तेन चोस् थम चे दङ
शिल्प और समस्त शास्त्र तथा।

སྙན་ངག་ལ་སོགས་ཕྱོགས་མེད་མཁས། །
ञेन ङग ल सोग छोग मेद् खेस्
काव्यादि में अप्रतिम विद्वान् बन

རྒོལ་བ་ཀུན་གྱིས་མི་ཐུབ་ཤོག །
गोल व कुन ग्यीस् मि थुप शोग
समस्त वादियों में दुर्जय बनूँ।25।

རིགས་དང་ཡོན་ཏན་ལོངས་སྤྱོད་དང་། །
रिग दङ योन तेन लोङ चोद् दङ
जाति और गुण-सम्पत्ति तथा

མ་ནོར་ཚིག་དོན་ཤེས་རབ་དང་། །
म नोर छ़िग दोन शेस् रप दङ
शब्दार्थ में अभ्रान्त प्रज्ञा।

མཐུ་རྩལ་སྤོབས་པ་ལ་སོགས་པའི། །
थु ज़ल पोप प ल सोग पई
शक्ति-कला, प्रतिभान आदि

མཐུན་རྐྱེན་ཚོགས་ཀྱིས་མི་ཕོངས་ཤོག །ཅེས་གསུངས་སོ།།
थुन क्येन छ़ोग क्यीस् मि फोङ शोग
सामग्री-गणों से वञ्चित न होऊँ।26। इति उक्तम्।।

བསྔོ་བ་དང་སྨོན་ལམ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པ།

# असाधारण परिणामना और प्रणिधान

འཇིག་རྟེན་གྱི་འདྲེན་པ་བསླུ་བ་མེད་པའི་སྐྱབས་རྣམ་པ་གསུམ་བདག་གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཅན་དེ་དགོངས་
जिग तेन ग्यि डेन प लु व मेद् पई क्यप नम प सुम दग शेन ग्यि दोन फुन सुम छ़ोग प चेन दे
लोकनायक ! अवञ्चनीय त्रिविध शरण ! स्व-परार्थ सम्पन्नवान् !

སུ་གསོལ།
गोङ सु सोल
आप ध्यान दें।

དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ཆེན་པོ་པ་དེས་མཐོ་རིས་དང་ཐར་པའི་ཆེད་དུ་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཅི་མཛད་པ་ཐམས་ཅད།
गे बई शेस् ञेन छेन पो प देस् थो रीस् दङ थर पई छेद् दु गे बई ज़्त्र व चि ज़े प थम चे
उस महान कल्याणमित्र द्वारा स्वर्ग एवं मोक्ष के लिये जो भी कुशलमूल किये,

ལྷག་པར་དགེ་བཤེས་ཆེན་པོ་དེའི་དོན་དུ་དམིགས་ནས་བདག་སོགས་ལ་སྦྱིན་སོགས་སྩལ་བའི་དགེ་བ་དང་།
ल्हग पर गे शेस् छेन पो दे दोन दु मिग नेस् दग सोग ल छिन सोग ज़्त्रल बई गे व दङ
वे सभी विशेषतया उस महान् कल्याणमित्र हेतु आलम्बन बना, स्वयं हम लोगों को दानादि दिये

གཞན་ཡང་བདག་སོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཅི་དང་ཅི་བསགས་པ་དེ་དང་དེ་དག་གིས་དགེ་
शेन यङ दग सोग सेम चेन थम चे क्यीस् गे बई ज़्त्र व चि दङ चि सग प दे दङ दे दग गीस् गे
गये पुण्य तथा और भी, स्वयं हम समस्त सत्त्वों द्वारा जो-जो कुशलमूल इकट्ठा किये उन-उनके

བའི་བཤེས་གཉེན་དམ་པ་དེས་གཙོ་བྱས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཆི་བ་བློ་རྡེག་ཏུ་དྲན་ནས་རྒས་རྒས་སུ་སྡོད་བློ་
बई शेस् ञेन दम प देस् ज़्त्रो छेस् पई सेम चेन थम चे छि व लो देग तु डेन नेस् गेस् गेस् सु दोद्
द्वारा, उस सद्-कल्याणमित्र की प्रधानता में सभी सत्त्व मृत्यु को बुद्धि ताड़न-कर्ता जानकर अति बूढे होने तक

མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
लो मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
बैठने की बुद्धि उत्पन्न न हो, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।1।

དགེ་བ་དང་སྡིག་པ་གང་ཡིན་ངོ་ཤེས་ནས་དགེ་བ་ལ་འཇུག་ཅིང་སྡིག་པ་ལས་བཟློག་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
गे व दङ दिग प गङ यिन ङो शेस् नेस् गे व ल जुग चिङ दिग प लेस दोग पई ग्युर ङो वर
पुण्य और पाप क्या है ? इससे परिचित होकर पुण्य में प्रवेश कर पाप से निवृत्त होने के हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।2।

འཁོར་བ་སྡུག་བསྔལ་དང་ཐར་པ་བདེ་བ་དམ་པར་ཤེས་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ग्यिह़ो   खोर व दुग ङल दङ थर प दे व दम पर शेस् पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
भव को दुःख तथा मोक्ष को परम सुख जानने के हेतु-स्वरूप परिणामित  करता हूँ।3।

དལ་འབྱོར་ད་ལན་ཙམ་མ་གཏོགས་མི་ཐོབ་པས་འདི་སྡིག་པའི་ངང་དུ་ཚེ་ཟད་དུ་འཇུག་པའི་བློ་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་
दल छोर द लेन ज़म म तोग मि थोप पेस् दि दिग पई ङङ दु छ़े ज़े दु जुग पई लो मि क्ये बई
क्षण-सम्पद् इस बार के अतिरिक्त दुबारा प्राप्त नहीं होगा। अतः इसके पाप-स्वभावी बन आयु-क्षय में प्रवृत्त

བར་བགྱིའོ། །
ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
होने की बुद्धि पैदा न हों, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।4।

སྐྱབས་གནས་དཀོན་མཆོག་གསུམ་མིན་པའི་ལོག་པ་ལ་དད་པ་སྐད་ཅིག་ཀྱང་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
क्यप नेस् कोन छोग सुम मिन पई लोग प ल दे प के चिग क्यङ मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
शरण-स्थल त्रिरत्न के सिवाय अन्य नहीं, अतः विपरीत में श्रद्धा क्षण-भर भी न हों, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।5।

དམན་པ་མྱང་འདས་ཀྱི་ལམ་སྟོན་པ་དང་དུག་གསུམ་ཡིད་བྱེད་ཀྱི་བླ་མ་དང་ནམ་ཡང་འཕྲད་པར་མི་འགྱུར་བའི་རྒྱུར་
मेन प न्यङ देस् क्यि लम तोन प दङ दुग सुम यिद् छेद् क्यि ल म दङ नम यङ ठे पर मि ग्युर
हीन निर्वाण के मार्ग-प्रदर्शक और त्रिविष (राग-द्वेष-मोह) का जप करने वाले गुरुओं से कदापि मिलन न हों,

བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।6।

བསླབ་པ་གསུམ་ལ་མི་སློབ་ཅིང་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་ལ་ཐོས་བསམ་འགོག་པའི་གྲོགས་དང་མི་འགྲོགས་པའི་རྒྱུར་
लप प सुम ल मि लोप चिङ ग्यल वई सुङ रप ल थोस् सम गोग पई डोग दङ मि डोग पई ग्युर
त्रिशिक्षा (शील, समाधि, प्रज्ञा) का शिक्षण न कर जिन-शास्त्रों में श्रवण-चिन्तन (-मनन) को रोकने वाले मित्र

བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ङो वर ग्यिह़ो
के साथ संगत न हों, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।7।

སངས་རྒྱས་པའི་ཐབས་གཞན་སྟོན་རྒྱུ་མེད་པར་ཤེས་པའི་རང་ངོ་བལྟས་ཙམ་གྱིས་ཚོག་ཤེས་འཛིན་པ་དེ་འདྲ་
सङ ग्येस् पई थप शेन तोन ग्यु मेद् पर शेस् पई रङ ङो तेस् ज़म ग्यीस् छोग शेस् ज़िन प दे ड
बुद्धत्व प्राप्ति का अन्य उपाय प्रदर्शित नहीं हो सकता- ऐसा जानकर स्वभाव के दर्शन मात्र से सन्तुष्ट होने वाले

བའི་རིགས་རྟག་ཏུ་མི་མཐོང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
वई रिग तग तु मि थोङ बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
ऐसे वर्ग सदा दिखाई न दें, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।8।

རང་ཉིད་ས་ལམ་མཐོན་པོ་ཡིན་སྙམ་པའི་བློ་འཆང་ནས་མི་དགེ་བ་བྱེད་པའི་གོ་འཕང་མི་ཐོབ་པའི་རྒྱུར་
रङ ञिद् स लम थोन पो यिन ञम पई लो छङ नेस् मि गे व छेद् पई गो फङ मि थोप पई ग्युर
'मैं उच्च भूमि-मार्गस्थ हूँ-' ऐसा सोचकर इस प्रकार के चित्त को धारण कर अकुशल करने वाले का पद प्राप्त न

བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ङो वर ग्यिह़ो
हों, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।9।

རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་ནས་འབྱུང་བའི་སྡོམ་གསུམ་གྱིས་གོ་མི་ཆོད་ཀྱང་རང་སར་བློས་དཔྱད་ནས་འདུལ་བའི་
ग्यल वई सुङ रप नेस् छुङ बई दोम सुम ग्यीस् गो मि छोद् क्यङ रङ सर लोस् चे नेस् दुल बई
जिन-प्रवचन से प्राप्त त्रिसंवर (प्रातिमोक्ष, बोधिसत्त्व, तन्त्रसंवर) द्वारा उसकी पूर्ति नहीं मानकर स्वयं द्वारा बुद्धि से परीक्षा कर विनय-शासन की स्थिति में भ्रमित होकर काय को सन्तप्त करने वाले न हों, इसके हेतु-

བསྟན་པ་ཡིན་པར་བློམ་ནས་ལུས་གདུང་བར་མི་བྱེད་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
तेन प यिन पर लोम नेस् लुस् दुङ बर मि छेद् पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
स्वरूप परिणामित करता हूँ।10।

གཞན་ངོ་ཚེ་འདིར་ཆགས་ནས་ཐོས་པ་སོགས་ལ་འབུངས་ཀྱང་ལག་ལེན་ཁྱིམ་པ་བས་དམན་པར་མི་བྱེད་པའི་
शेन ङो छ़े दिर छग नेस् थोस् प सोग ल बुङ क्यङ लग लेन ख्यिम प वे मेन पर मि छेद् पई
इस जन्म में पर-मुख के प्रति आसक्त होकर श्रवण आदि में लगने पर भी अभ्यास, गृहस्थ से भी हीन न हों,

རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।11।

ཚེ་འདིར་སྡིག་པ་ལ་འབད་ནས་ཡིན་པ་བསྟན་པ་ཡིན་པར་མི་མོས་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
छ़े दिर दिग प ल बे नेस् यिन प तेन प यिन पर मि मोस् पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
इस जन्म में पाप में प्रयत्नरत होना ही (बुद्ध) शासन है- ऐसे छन्द से मुक्त हों, इसके हेतु-स्वरूप परणामित

རང་གི་རྒྱུད་ལ་སྡོམ་པ་སྣ་རེ་ཙམ་ཡང་མེད་ཀྱང་དད་ཟས་ལེན་པའི་ཆོས་པར་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་
रङ गि ग्युद् ल दोम प न रे ज़म यङ मेद् क्यङ दे ज़ेस् लेन पई छ्योस् पर मि क्ये बई ग्युर ङो वर
करता हूँ।12। स्वयं की (चित्त) सन्तति में एक मात्र भी संवर नहीं होने पर भी श्रद्धा-द्रव्य

བགྱིའོ། །
ग्यिहो
(दानादि) लेने वाले धार्मिक-पुरुष के रूप में उत्पन्न न हों, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।13।

སྡིག་རང་གིས་བྱེད་ནས་ཁག་གཞན་ལ་འགེལ་བ་སོགས་གཡོ་སྒྱུའི་སྤྱོད་པ་མི་བྱེད་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दिग रङ गीस् छेद् नेस् खग शेन ल गेल व सोग यो ग्युइ चोद् प मि छेद् बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
स्वयं द्वारा पाप करके उसका श्रेय दूसरों पर ड़ालने आदि शठ-चर्या न करने, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।14।

རང་ཆོས་དང་མི་མཐུན་པར་ཤེས་ཀྱང་ད་དུང་གཞན་འཁྲུལ་དུ་འཇུག་ནས་རང་སྐྱོན་སྦེད་པར་བྱེད་པ་ལ་དགའ་
रङ छोस् दङ मि थुन पर शेस् क्यङ द दुङ शेन ठुल दु जुग नेस् रङ क्योन बेद् पर छेद् प ल गा
स्वयं धर्म-विरुद्ध जानने पर भी पुनः दूसरों को भ्रमित कर स्वयं के दोष को छिपाने में प्रसन्नता अनुभव न हों,

བའི་བློ་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
बई लो मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।15।

ཚེ་སྟོང་ཟད་དུ་སོང་བ་ལ་སྡུག་བསྔལ་མེད་པར་སྣམ་བུའི་ཁ་དོག་དང་ཚོས་མ་ལེགས་པ་ཙམ་ལ་སྡུག་བསྔལ་ཞག་སྐོར་
छ़े तोङ ज़े दु सोङ व ल दुग ङल मेद् पर नम बुइ ख दोग दङ छ़ोस् म लेग प ज़म ल दुग ङल
(अपनी) आयु के व्यर्थ-क्षय होने में दुःखी न होकर पट-वर्ण की रंगाई मात्र के अच्छा नहीं होने से दिवस

རེ་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
शग कोर रे मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
पर्यन्त दुःखी नहीं होने, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।16।

སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་ཡོངས་འཛིན་དམ་པ་མཇལ་ནས་ཆོས་བྱེད་པ་ལ་དགའ་སྤྲོ་མེད་པར་གོས་བཟང་འབྱོར་པ་
सङ ग्येस् क्यि तेन प दङ योङ ज़िन दम प जल नेस् छोस् छेद् प ल गा टो मेद् पर गोस् ज़ङ
बुद्ध-शासन तथा सद्गुरु का दर्शन कर धर्म करने के प्रति प्रसन्न न होकर, ‘सु-वस्त्र आदि थोड़ी सी सम्पत्ति मिले

རེ་བྱུང་ན་དགའ་བ་ལ་བསམ་པའི་དགའ་བ་གོ་ལོག་མི་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
छोर प रे छुङ न गा व ल सम पई गा व गो लोग मि छुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
तो बहुत अच्छा होता-’ ऐसी विपरीत प्रसन्नता न हों, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।17।

སྐྱེས་བུ་དམ་པའི་ཡོན་ཏན་དང་རྣམ་ཐར་མངོན་སུམ་ལ་མི་དད་པར་རྫུན་མ་གཞན་མགོ་བསྐོར་བའི་ལྐོག་གྱུར་
क्येस् बु दम पई योन तेन दङ नम थर ङोन सुम ल मि दे पर ज़ुन म शेन गो कोर बई कोग ग्युर
**सद्‌पुरुष के प्रत्यक्ष गुण एवं जीवनी में श्रद्धा न कर, झूठे, दूसरों को धोखे देने वाले, अप्रत्यक्ष गुण हैं- ऐसा**

གྱི་ཡོན་ཏན་ཡོད་ཟེར་བའི་རྗེས་སུ་མི་འཇུག་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ग्यि योन तेन योद् ज़ेर बई जेस् सु मि जुग पई ग्युर ङो वर ग्यिहो
**कहने वाले का अनुसरण नहीं करने, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।18।**

ཚིག་གི་ཕྱི་མོ་ཙམ་ཡང་མི་ཤེས་པར་གཞན་གྲོལ་བ་ལ་སྦྱོར་བ་སྣད་ཟེར་བའི་ཆོས་པ་ལ་ཡིད་མི་ཏོན་
छ़िग गि छि मो त्सम यङ मि शेस् पर शेन डोल व ल छोर व के ज़ेर बई छोस् प ल यिद् मि तोन
**शब्द के मातृका मात्र को भी न जान- ‘दूसरों को मुक्ति से योग करूँगा-’ ऐसे ढ़ोंग करने वाले धार्मिक के प्रति**

པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
पई ग्युर ङो वर ग्यिहो
**विश्वास न करने, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।19।**

གསུང་རབ་དང་འགལ་བའི་སྤྱོད་པ་བྱེད་ཀྱང་ད་དུང་ཕྱོགས་རིས་ཀྱི་དབང་གིས་འདི་དགོས་ལྡན་གྱི་མཛད་པ་
सुङ रप दङ गल बई चोद् प छेद् क्यङ द दुङ छोग रीस् क्यि वङ गीस् दि गोस् देन ग्यि ज़े प
**प्रवचन-विरुद्ध चर्या करने पर भी पुनः पक्षपातवश- ‘यह आवश्यक विशिष्ट कार्य है-’ ऐसा बुद्धि उत्पन्न नहीं**

ཁྱད་པར་ཅན་ཡིན་སྙམ་པའི་བློ་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ख्ये पर चेन यिन ञम पई लो मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
**करने, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।20।**

མདོར་ན་མདོ་རྒྱུད་ནས་བླ་མའི་ཡོན་ཏན་བཤད་པ་དང་ལྡན་པའི་བླ་མ་ཡོངས་འཛིན་ཞུ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दोर न दो ग्युद् नेस् ल मई योन तेन शे प दङ देन पई ल म योङ ज़िन शु बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
**संक्षेप में, सूत्र-तन्त्र में उक्त गुरु के गुणों से युक्त परिग्रह-गुरु से (धर्म) आग्रह करने, इसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।21।**

དེ་ལ་མདོ་རྒྱུད་ནས་བཤད་པའི་དད་པ་ཟོལ་མེད་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दे ल दो ग्युद् नेस् शे पई दे प ज़ोल मेद् क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
**उनके प्रति सूत्र-तन्त्र में उक्त निर्व्याज श्रद्धा उत्पन्न करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।22।**

དེའི་དྲུང་དེར་མདོ་རྒྱུད་ནས་བཤད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བཟུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दे डुङ देर दो ग्युद् नेस् शे पई छङ छुप क्यि सेम ज़ुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिहो
**उनके समक्ष सूत्र-तन्त्र में उक्त बोधिचित्त ग्रहण करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।23।**

དེ་བཟུང་ནས་རྒྱལ་བའི་བཀའ་ལས་བྱུང་བའི་ལམ་བསྒོམ་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दे ज़ुङ नेस् ग्यल वई का लेस छुङ बई लम गोम पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
उसके ग्रहण करने के बाद जिन-आगम से प्राप्त मार्ग-भावना करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।24।

ལམ་དེ་ལ་གེགས་མེད་པར་རིམ་བཞིན་ས་བཅུ་བགྲོད་དེ་འཆི་མེད་ཀྱི་གོ་འཕང་ཐོབ་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
लम दे ल गेग मेद् पर रिम शिन स चु डोद् दे छि मेद् क्यि गो फङ थोप पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
उस मार्ग में विघ्न रहित हो, क्रमशः दश-भूमि गमन करते हुये अमृत-पद (बुद्धत्व) प्राप्त करने, उसके हेतु-

དེ་ཐོབ་ནས་རང་གཞན་གྱི་དོན་འབད་མེད་ལྷུན་གྲུབ་ཏུ་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दे थोप नेस् रङ शेन ग्यि दोन बे मेद् ल्हुन डुप तु छुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
स्वरूप परिणामित करता हूँ।25।

གནས་སྐབས་སུ་ཡང་རྟག་པར་སེམས་ཅན་ལ་ཆགས་སྡང་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
नेस् कप सु यङ तग पर सेम चेन ल छग दङ मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
उसको प्राप्त कर स्व-परार्थ अनाभोग सिद्ध करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।26।

ཟས་ནོར་ལ་སེར་སྣ་ཆེ་ཞིང་ཕུང་ཁྲོལ་མི་བསྐྱེད་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ज़ेस् नोर ल सेर न छे शिङ फुङ ठोल मि क्येद् पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
सामान्य अवसरों पर भी सदा सत्त्वों के प्रति राग-द्वेष उत्पन्न नहीं करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।26।

འདོད་ཡོན་ལ་སྲེད་པ་ཆེ་ཞིང་དགེ་བ་ངང་གིས་ཆད་པ་དེ་འདྲ་མི་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दोद् योन ल सेद् प छे शिङ गे व ङङ गीस् छे प दे ड मि छुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
खाद्य-धन के प्रति अति लालची बन अनर्थोत्पन्न नहीं करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।27।

གཞན་ལ་སྙིང་རྗེ་མེད་པ་རྣམ་པར་འཚེ་བ་ཆོས་སུ་མི་སྨྲ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
शेन ल ञिङ जे मेद् प नम पर छ़े व छोस् सु मि म बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
कामगुणों में अति तृष्णा युक्त होकर स्वाभाविक रूप से पुण्य का उच्छेद नहीं करने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।28।

དགོས་མེད་རྒྱུད་ལ་མི་སྐྱེ་བའི་ཁར་ཆོས་པ་འཇིག་རྟེན་པར་འཇུག་པའི་བློ་མི་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
गोस् मेद् ग्युद् ल मि क्ये बई खर छोस् प जिग तेन पर जुग पई लो मि क्ये बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
'दूसरों के प्रति करुणा रहित हो विहिंसा करना धर्म है-' ऐसा नहीं कहने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।29।

ཀུས་ཀུས་སུ་དགེ་བ་བྱས་ནས་གདོད་ཤི་ཁར་སྡིག་པ་བྱེད་པ་དེ་འདྲ་མི་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
गेस् गेस् सु गे व छेस् नेस् दोद् शि खर दिग प छेद् प दे ड मि छुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
निष्प्रयोजन चित्तोत्पाद नहीं करने के साथ धार्मिक लोगों में लौकिक बुद्धि उत्पन्न नहीं होने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।30।

ཆོས་ཤེས་བཞིན་དེད་པོར་སོང་ནས་མི་དགེ་བ་བྱེད་པ་ལ་སྙིང་སྟོབས་ཆེར་འགྲོ་བ་དེ་ལྟ་བུ་མི་བྱེད་པའི་
छोस् शेस् शिन डेद् पोर सोङ नेस् मि गे व छेद् प ल ञिङ तोप छेर डो व दे त बु मि छेद् पई
वृद्ध होने तक पुण्य (संचय) करने के बावजूद मृत्यु समीप पहुँचने पर पाप-कर्ता नहीं बनने, उसके हेतु-स्वरूप

རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
परिणामित करता हूँ।31।

བསམ་པ་ཆེ་འདི་འབའ་ཞིག་བསམ་ནས་དེ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཆེ་ཕྱི་མའི་དོན་ཡིན་པ་ལྟར་འཚོས་པའི་ཆོས་པར་མི་
सम प छ़े दि बा शिग सम नेस् दे डुप पई थप छ़े छि मई दोन यिन प तर छोस् पई छोस् पर मि
धर्म को (अच्छी तरह) जानते हुये भी कठोर होकर अकुशल करने में महा-उत्साहवान् नहीं बनने, उसके

འགྱུར་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
ग्युर बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।32।

ཆོས་བྱེད་ན་རང་དབང་མི་འདུས་ལ་ཆོས་མིན་བྱེད་པ་ལ་རང་དབང་ཐོབ་པ་དེ་འདྲ་བར་མི་འགྱུར་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་
छोस् छेद् न रङ वङ मि दुस् ल छोस् मिन छेद् प ल रङ वङ थोप प दे ड बर मि ग्युर बई ग्युर
आशय केवल इस जन्म के लिये कर, लेकिन उसके साधनोपाय को पर-जन्मार्थ के समान ढोंग करने वाले

བགྱིའོ། །
ङो वर ग्यिह़ो
नहीं बनने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।33।

སངས་རྒྱས་བསྒྲུབས་ན་ཤེས་རབ་ཆུང་ལ་དམྱལ་བ་བསྒྲུབས་ན་ཤེས་རབ་ཆེ་བ་དེ་ལྟ་བུ་མི་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་
सङ ग्येस् डुप न शेस् रप छुङ ल न्यल व डुप न शेस् रप छे व दे त बु मि छुङ बई ग्युर ङो वर
धर्म करते समय स्वतन्त्रता अनुभव नहीं करता, लेकिन अधर्म करते समय स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाला- ऐसा

བགྱིའོ། །
ग्यिह़ो
नहीं बनने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।34।

ཐོས་བསམ་སྒོམ་གསུམ་བྱེད་ན་ལོང་མེད་པར་སྲོག་གཅོད་མ་བྱིན་ལེན་མི་ཚངས་སྤྱོད་བྱེད་ན་ལོང་ཡོད་པར་མི་འགྱུར་
थोस् सम गोम सुम छेद् न लोङ मेद् पर सोग चोद् म छिन लेन मि छ़ङ चोद् छेद् न लोङ योद्
बुद्धत्व साधन में अल्प-प्रज्ञा होता है, लेकिन नरक-साधन के समय महाप्रज्ञावान्- ऐसा नहीं बनने, उसके हेतु

བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
पर मि ग्युर बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
स्वरूप परिणामित करता हूँ।35।

འདོད་ཡོན་ལ་དགོས་མེད་དྲན་པ་ལ་ངོ་ཚ་ཞིང་འདོད་ཡོན་གྱི་ཕྱིར་ཁྱི་ལྟར་སྤྱོད་པ་ལ་ངོ་མི་ཚ་
दोद् योन ल गोस् मेद् डेन प ल ङो छ़ शिङ दोद् योन ग्यि छिर ख्यि तर चोद् प ल ङो मि छ़
कामगुण के प्रति निष्प्रयोजन-स्मृति (केवल कल्पना मात्र) में लज्जा कर (वास्तविक) कामगुण हेतु कुत्ते समान

བའི་སྐྱེ་བ་མི་ལེན་པའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
बई क्ये व मि लेन पई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
आचरण करने में (भी) निर्लज्ज- इस प्रकार का जन्म नहीं लेने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।36।

ཆུང་ནས་བཙུན་པ་བྱས། འགྲོགས་ས་དགེ་འདུན་དང་འགྲོགས། བརྟེན་ས་བླ་མ་བསྟེན། ཆོས་བྱེད་པའི་ལུགས་སུ་བྱས་
छुङ नेस् त्सुन प छेस्   डोग स गेन दुन दङ डोग   तेन स ल म तेन   छोस् छेद् पई लुग सु छेस्
छोटे (आयु) से भन्ते बन, संगत संघ के साथ कर, आश्रय- गुरु का सेवन करने के बावजूद धर्म करने का

པ་ལ་ཤེས་པ་མི་དགེ་བ་བྱེད་པ་གཞན་ལས་མཁས་པ། བསམ་པ་རང་གང་ཉེ་བའི་ཕྱོགས་ཚ་བྱེད་པ།
प ल शेस् प मि गे व छेद् प शेन लेस खेस् प   सम प रङ गङ ञे बई छोग छ छेद् प
पाखण्ड कर अकुशलकर्म-चित्तस्थ करने में दूसरों से कुशल, आशय- अपने जो समीप हैं उन्हीं का पक्ष लेने

བློ་ཕུགས་ཆགས་སྡང་ལ་གཏད་པ། ཤི་ཁ་ཐོས་བསམ་སྒོམ་པ་གང་གི་སློ་ནས་ཀྱང་ངས་འདི་བྱས་པ་དེ་ལེགས་
लो फुग छग दङ ल ते प   शि ख थोस् सम गोम प गङ गि गो नेस् क्यङ ङेस दि छेस् प दे लेग
वाला, बुद्धि का लक्ष्य राग-द्वेष में स्थापित कर मृत्यु समीप पहुँचने पर श्रवण-चिन्तन-मनन किसी के द्वारा

འདུག་བསམ་རྒྱུ་མེད་པར་དབང་མེད་དུ་ཧྲིལ་གྱིས་འཆི་བ་དེ་འདྲ་མི་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
दुग सम ग्यु मेद् पर वङ मेद् दु ह्रिल ग्यीस् छि व दे ड मि छुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो
भी- 'मैंने यह जो किया है, वह अच्छा है-' ऐसे सोच से रहित, परतन्त्र हो आकस्मिक-मृत्यु प्राप्त करने

རང་གིས་རང་མགོ་བསྐོར། རང་ལས་ཀྱིས་རང་བཅིངས། རང་རྫུན་གྱིས་རང་བསླུས། རང་གདོན་གྱིས་རང་
रङ गीस् रङ गो कोर   रङ लेस क्यीस् रङ चिङ   रङ ज़ुन ग्यीस् रङ लुस्   रङ दोन ग्यीस् रङ
वाला- ऐसा नहीं बनने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।37।

སྨྱོས་ནས་མཐར་ཐུག་མགོ་དཀར་ཧྲིལ་གྱིས་སོང་དུས་སྙིང་ཚ་ཁམ་ཁམ་པ། སྐྱོ་ལྷང་ལྷང་བ།
न्योस् नेस् थर थुग गो कर ह्रिल ग्यीस् सोङ दुस् ञिङ छ़ खम खम प   क्यो ल्हङ ल्हङ व
स्वयं द्वारा स्वयं को धोखा दे, स्व-कर्म द्वारा स्वयं बन्धित हो, अपने झूठे वचन द्वारा स्वयं का वञ्चन कर,

ཡི་སྨུག་གེ་བ་ཞིག་མི་འབྱུང་བའི་རྒྱུར་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །
यि मुग गे व शिग मि छुङ बई ग्युर ङो वर ग्यिह़ो

**स्व-ग्रह द्वारा स्वयं पागल होकर, अन्त में शीर्ष का सम्पूर्ण बाल सफेद होने पर हृदय की धड़कन बड़े, खिन्नता ही खिन्नता हो, चित्त सन्तप्त होने वाला- ऐसा नहीं बनने, उसके हेतु-स्वरूप परिणामित करता हूँ।38।**

ཞེས་པ་འདི་ནི་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཀརྨ་པ་མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ་དགའ་བའི་དབྱངས་ཅན་བཟང་པོ་ཞེས་མཚན་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་དེས་མཛད་པའོ། །
यह तो सर्वज्ञ कर्मापा मि-क्योद् दोर्जे गाह्-वई यङ्ग-चन् ज़ङ्-पो इस प्रकार के प्रसिद्ध नामधारी, उन्होंने लिखा है। (भवतु) सर्वमङ्गलम्।।

མི་ལའི་སྨོན་ལམ།

# मि-ला (रस्-पा) का प्रणिधान

རྗེ་བཙུན་གྱི་ཞལ་ནས། ང་བདེན་ཚིག་གྲུབ་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིན་པས། རང་རེ་ཀུན་ལ་གནས་སྐབས་དང་མཐར་ཐུག་གི་བདེ་སྐྱིད་འབྱུང་བའི་སྨོན་ལམ་བཟང་པོ་ཞིག་ངས་འདེབས་པར་རིགས་གསུངས་ནས་སྨོན་ལམ་གྱི་མགུར་འདི་གསུངས་སོ། །

भट्टारक (मि-ला रस्-पा) ने कहा–मैं शब्द-सत्य-सिद्ध योगी हूँ। अतः मेरी, हम सबके लिए आकस्मिक और अन्ततः सुखप्रापक अच्छा प्रणिधान करना उचित (ही) है। (यह कहकर भट्टारक ने) यह प्रणिधान-गीत गाया–

ཕ་སྨོན་ལམ་མཐར་ཕྱིན་འགྲོ་བའི་མགོན། །
फ मोन लम थर छिन डो बई गोन
प्रणिधान पारंगत लोकनाथ पिता।

སྒྲ་སྒྱུར་མར་པའི་ཞབས་ལ་འདུད། །
ड ग्युर मर पई शप ल दुद्
चरण-वन्दना अनुवादक मर्-पा की।।

འདིར་ཚོགས་གསོན་ཅིག་བུ་སློབ་ཀུན། །
दिर छ़ोग सोन चिग बु लोप कुन
सुनो, यहाँ एकत्रित समस्त पुत्र-शिष्य।

ཁྱེད་རྣམས་བདག་ལ་བཀའ་དྲིན་ཆེ། །
ख्येद् नम दग ल का डिन छे
आप लोग मेरे कृपा-कर्त्ता हैं।

བདག་ཀྱང་ཁྱེད་ལ་བཀའ་དྲིན་ཆེ། །
दग क्यङ ख्येद् ल का डिन छे
कृपा-कर्त्ता हूँ, मैं भी तुम्हारा।

བཀའ་དྲིན་མཉམ་པའི་དཔོན་སློབ་རྣམས། །
का डिन ञम पई पोन लोप नम
हैं सम-कृपालु गुरु-शिष्य लोग।

མངོན་དགའི་ཞིང་དུ་མཇལ་བར་ཤོག །
ङोन गई शिङ दु जल बर शोग
मिलन हो (हमारा) अमरावती में।।

འདིར་བཞུགས་ཡོན་བདག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
दिर शुग योन दग थम चे क्यङ
यहाँ विराजमान यजमान सभी भी।

ནད་མེད་ཚེ་རིང་བསོད་ནམས་ལྡན། །
ने मेद् छ़े रिङ सोद् नम देन
चिरंजीवी (और) पुण्य-युक्त हों।

བསམ་པ་ལོག་པ་མི་སྐྱེ་ཞིང་།
सम प लोग प मि क्ये शिङ
उलटे विचार उत्पन्न न हों और।

བསམ་པ་ཆོས་བཞིན་འགྲུབ་པར་ཤོག །
सम प छोस् शिन डुप पर शोग
विचार सिद्ध हों, धर्म के अनुरूप।।

ཡུལ་ཕྱོགས་འདིར་ཡང་བཀྲ་ཤིས་ཤིང་། །
युल छोग दिर यङ ट शीस् शिङ
हों मंगल इस क्षेत्र में भी और।

མི་ནད་འཁྲུགས་པ་མེད་པ་དང་། །
मि ने ठुग प मेद् प दङ
लोगों में रोग और झगड़े न हों।

ཀུན་ཏུ་ཆོས་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
कुन तु छोस् ल चोद् पर शोग
हो सर्वत्र धर्म का आचरण।।

རྣམ་ཐར་ཡིད་ལ་དྲན་པ་དང་། །
नम थर यिद् ल डेन प दङ
जीवनी के चित्त में स्मरण-कर्त्ता।

མངོན་དགའི་ཞིང་དུ་མཇལ་བར་ཤོག །
ङोन गई शिङ दु जल बर शोग
मिलन हो (हमारा) अमरावती में।।

སྤྱོད་ཅིང་བསྒྲུབ་པ་བྱེད་པ་དང་། །
चे चिङ ड्रुप प छेद् प दङ
चर्या कर, साधना करे और।

ཕྱག་དང་བསྐོར་བ་མཆོད་པ་འབུལ། །
छग दङ कोर व छोद् प बुल
प्रणाम, परिक्रमा और पूजा भेंट करूँ।

མ་འོངས་གང་ཟག་ཐམས་ཅད་པ། །
म ह़ोङ गङ ज़ग थम चे प
भविष्य के समस्त पुद्गलों में।

མི་ཁོ་བོས་དཀའ་བ་སྤྱད་སྤྱད་པས། །
मि खो बोस् का व चे चे पेस्
मुझ मानव के कठिनचर्याचरण से।

ཆོས་ཕྱིར་དཀའ་ཐུབ་སྤྱད་པ་ལ། །
छोस् छिर का थुप चे प ल
धर्मार्थ तपस्या आचरण में।

ལོ་ཡག་འབྲུ་འཕེལ་སྐྱིད་པ་དང་། །
लो यग ड्रु फेल क्यिद् प दङ
सु-वर्ष, अन्न-वृद्धि और सुखानन्द हो।

བདག་གི་ཞལ་མཐོང་གསུང་ཐོས་དང་། །
दग गि शल थोङ सुङ थोस् दङ
मुख-दर्शक, वाक्-श्रावक मेरी।

མཚན་ནི་རྣ་བར་ཐོས་ཚད་པ། །
छ़ेन नि न बर थोस् छ़े प
नाम या जीवनी–सभी सुनने वाले।

གང་ཞིག་བདག་གི་རྣམ་ཐར་ལ། །
गङ शिग दग गि नम थर ल
जो (कोई भी) मेरी जीवनी की।

ཉན་ཅིང་ཀློག་པར་བྱེད་པ་ལ། །
ञेन चिङ लोग पर छेद् प ल
सुन कर, पठन करने पर।

མངོན་དགའི་ཞིང་དུ་མཇལ་བར་ཤོག །
ङोन गई शिङ दु जल बर शोग
मिलन हो (हमारा) अमरावती में।।

གལ་ཏེ་སྒོམ་པ་ནུས་སྲིད་ན། །
गल ते गोम प नुस् सिद् न
यदि साधना सम्भव हो तो।

གེགས་དང་གོལ་ས་མེད་པར་ཤོག །
गेग दङ गोल स मेद् पर शोग
विघ्न और उत्पथ न हों।।

བསོད་ནམས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད། །
सोद् नम पग तु मेद् प योद्
पुण्य अपरिमित होता है।

དེ་ལ་འཇུག་ཅིང་བསྐུལ་བ་ལ། །
दे ल जुग चिङ कुल व ल
हो प्रविष्ट उसमें एवं प्रेरणा देने में।

མི་ཁོ་བོའི་རྣམ་ཐར་ཐོས་པ་ལ། །
मि खो बोइ नम थर थोस् प ल
मेरी नर-कथा श्रवण करने में।

དཔག་མེད་གསུམ་གྱི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
पग मेद् सुम ग्यि छिन लप क्यीस्
तीन अपरिमित अधिष्ठानों से।

བསམ་པ་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་པར་ཤོག །
सम प ज़म ग्यीस् डुप पर शोग
हों सिद्ध, मात्र विचार करने से।।

དངོས་པོ་མཆིས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
ङोस् पो छीस् प थम चे क्यीस्
और हैं जो समस्त वस्तुयें।

ས་དང་ཆུ་དང་མེ་དང་རླུང་། །
स दङ छु दङ मे दङ लुङ
पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु।

དེ་བཞིན་བདག་གིས་ཁྱབ་པར་ཤོག །
दे शिन दग गीस् ख्यप पर शोग
तथानुरूप मैं व्याप्त हो जाऊँ।।

དེ་བཞིན་གཞི་བདག་འབྱུང་པོའི་ཚོགས། །
दे शिन शि दग छुङ पोइ ज़ोग
वैसे ही भूपति भूत-गण।

བསམ་པ་ཆོས་དང་མཐུན་པར་ཤོག །
सम प छोस् दङ थुन पर शोग
धर्मानुसार विचार सिद्ध हों।।

བཀའ་དྲིན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད། །
का डिन पग तु मेद् प योद्
कृपा अपरिमित होती है।

བྱིན་རླབས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡོད། །
छिन लप पग तु मेद् प योद्
अधिष्ठान अपरिमित होता है।

ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་གྲོལ་གྱུར་ནས། །
थोस् प ज़म ग्यीस् डोल ग्युर नेस्
श्रवण मात्र से मुक्त होकर।

བདག་གི་གནས་དང་གནས་མལ་དང་། །
दग गि नेस् दङ नेस् मल दङ
निवास और शयनासन मेरे।

གར་སོང་ཡུལ་དུ་བདེ་སྐྱིད་ཤོག །
गर सोङ युल दु दे क्यिद् शोग
जहाँ जाएँ, देश सुखानन्द हो।।

ནམ་མཁའ་འབྱུང་བས་གར་ཁྱབ་པ། །
नम खा छुङ वे गर ख्यप प
और आकाश भूत जहाँ व्याप्त हों।

ལྷ་ཀླུ་ལ་སོགས་སྡེ་བརྒྱད་དང་། །
ल्ह लु ल सोग दे ग्ये दङ
देव-नाग आदि अष्ट वर्ग और।

གནོད་པ་སྐད་ཅིག་མི་སྐྱེལ་ཞིང་། །
नोद् प के चिग मि क्येल शिङ
एक-क्षण भी अहित न पहुँचा कर।

སྲོག་ཆགས་སྲིན་བུ་ཡན་ཆད་པ། །
सोग छग सिन बु येन छे प
प्राणी, कीट (पतंग) आदि।

གཅིག་ཀྱང་འཁོར་བར་མི་ལྟུང་བར། །
चिग क्यङ खोर वर मि तुङ बर
एक भी भव में पतित न हों।

མ་ལུས་ང་ཡིས་འདྲེན་པར་ཤོག །ཅེས་གསུངས་སོ། །
म लुस् ङ यीस् डेन पर शोग
अशेष मेरे द्वारा आकर्षित हों। ऐसा कहा।

## བོད་ཡུལ་བདེ་སྨོན།
# भोट-देश सुख-प्रणिधान

སྐྱབས་གནས་བསླུ་མེད་དཀོན་མཆོག་རྩ་བ་གསུམ། །
क्यप नेस् लु मेद् कोन छोग ज़्ञ व सुम
अवञ्चनीय शरण-स्थल त्रिरत्न, त्रिमूल

རྗེ་བཙུན་སྒྲོལ་མ་གུ་རུ་པདྨ་འབྱུང་། །
जे ज़्चुन डोल म गु रु पेमा छुङ
भट्टारिका तारा, गुरु पद्माकर

སྨོན་ལམ་ཡོངས་སུ་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
मोन लम योङ सु डुप पर छिन ग्यीस् लोप
प्रणिधान परि-सिद्ध हेतु अधिष्ठान करता हूँ।1।

ཕྱི་ནང་འབྱུང་བ་འཁྲུགས་པའི་རྒྱུ་རྐྱེན་གྱིས། །
छि नङ छुङ व ठुग पई ग्यु क्येन ग्यीस्
बाह्याभ्यन्तर-भूत विक्षेप के हेतु-प्रत्यय द्वारा

གཟའ་ཀླུ་རྒྱལ་གདོན་ནག་ཕྱོགས་འབྱུང་པོའི་གཟེར། །
ज़ा लु ग्यल दोन नग छोग छुङ पोइ ज़ेर
ग्रह, नाग, राजग्रह, कृष्ण-पक्ष भूत-कील

ཆར་ཆུ་མི་སྙོམས་གངས་ཆེན་ཟ་བྱིའི་ཐན། །
छर छु मि ञोम गङ छेन ड छी थेन
असम वर्षा-जल, हिमवत यम-मुषिका अपशकुन,

ཁྱད་པར་བསྟན་ལ་འཚེ་བའི་མཐའ་དམག་སོགས། །
ख्ये पर तेन ल छ़े बई था मग सोग
विशेषतया (बुद्ध) शासन को सताने वाले बाह्य-युद्ध आदि

ཁྱད་པར་གངས་ཅན་མགོན་པོ་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
ख्ये पर गङ चेन गोन पो चेन रेस ज़िग
विशेषतया हिमवतनाथ (आर्य) अवलोकितेश्वर

གསོལ་བ་འདེབས་སོ་ཐུགས་དམ་ཞལ་བཞེས་དགོངས།།
सोल व देप सो थुग दम शल शेस् गोङ
अध्येषणा करता हूँ, प्रतिज्ञा-वादा पर ध्यान दें

སྙིགས་དུས་འགྲོ་རྣམས་བསམ་སྦྱོར་ལོག་པ་དང་། །
ञिग दुस् डो नम सम छोर लोग प दङ
कलियुग-सत्त्वों के आशय-प्रयोग विपरीत तथा

སྔར་མ་གྲགས་པའི་མི་ཕྱུགས་དལ་ཡམས་ནད། །
ङर म डग पई मि छुग दल यम ने
पूर्व अप्रसिद्ध नर और पशु के उपसर्ग-रोग

བཙའ་སད་སེར་གསུམ་ལོ་ཉེས་དམག་འཁྲུགས་རྩོད། །
ज़्चा से सेर सुम लो ञेस् मग ठुग ज़्चोद्
तृण-रोग, पाला-ओला तीन, दुर्वर्ष, लड़ाई-झगड़ा, विवाद,

ས་གཡོ་མེ་དགྲ་འབྱུང་བཞིའི་འཇིགས་པ་དང་། །
स यो मे ड छुङ शी जिग प दङ
भूकम्प, अग्नि-शत्रु, चतुर्भूत (का) भय

གངས་ཅན་ལྗོངས་འདིར་གནོད་འཚེའི་རིགས་མཐའ་དག།
गङ चेन जोङ दिर नोद् छ़े रिग था दग
इस हिमवत क्षेत्र के सभी अपकारी हिंसा-वर्ग

སྨྱུར་དུ་ཞི་ཞིང་རྩད་ནས་འཇོམས་གྱུར་ཅིག །
न्युर दु शि शिङ ऱ्चे नेस् जोम ग्युर चिग
**शीघ्र शान्त हो मूलतः नष्ट हों।2।**

རྒྱུད་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་མཆོག་རིན་པོ་ཆེ། །
ग्युद् ल छङ छुप सेम छोग रिन पो छे
**(चित्त) सन्तति में परम बोधिचित्त-रत्न**

ཕན་ཚུན་བྱམས་པའི་སེམས་དང་ལྡན་ནས་ཀྱང་། །
फेन छुन छम पई सेम दङ देन नेस् क्यङ
**परस्पर मैत्री-चित्त से युक्त हों और**

སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་དར་རྒྱས་ཡུན་གནས་ཤོག །
सङ ग्येस् तेन प दर ग्येस् युन नेस् शोग
**बुद्ध-शासन विपुल-विस्तृत हो दीर्घकाल तर रहें।3।**

འཁོར་འདས་དགེ་བའི་རྩ་བ་གང་མཆིས་དང་། །
खोर देस् गे बई ऱ्च व गङ छीस् दङ
**संसार-निर्वाण कुशलमूल जो भी हैं एवं**

གསོལ་བཏབ་སྨོན་པའི་འབྲས་བུ་འགྲུབ་གྱུར་ཅིག །
सोल तप मोन पई डेस् बु डुप ग्युर चिग
**अध्येषणा-प्रणिधान-फल सिद्ध हो जायें।4।**

མི་དང་མི་མིན་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་གི། །
मि दङ मि मिन डो व था दग गि
**मनुष्य-अमनुष्य सभी प्राणियो के**

རང་གིས་སྐྱེས་ནས་གནོད་འཚེའི་བསམ་སྦྱོར་བྲལ། །
ङङ गीस् क्येस् नेस् नोद् ऱ्छे सम छोर डल
**स्वतः उद्भूत हो, अहित-हिंसा आशय-प्रयोग रहित हो**

བོད་ཡུལ་མཐའ་དབུས་བདེ་སྐྱིད་དཔལ་གྱིས་འབྱོར། །
बोद् युल था उस् दे क्यिद् पल ग्यीस् छोर
**भोटान्त-मध्य सुख-क्षेम-श्री से सम्पन्न हो**

རྩ་གསུམ་རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་བདེན་པའི་སྟོབས། །
ऱ्च सुम ग्यल व सेस् चेस् देन पई तोप
**त्रिमूल, जिन, पुत्र सहित उनके सत्य-बल (और)**

བདག་ཅག་ལྷག་བསམ་རྣམ་པར་དཀར་བའི་མཐུས། །
दग चग ल्हग सम नम पर कर बई थुस्
**हमारे विश्वेत-अध्याशय के बल से**

ཅེས་རྗེ་བླ་མ་འཇམ་དབྱངས་མཁྱེན་བརྩེ་དབང་པོའི་ཞལ་སྔ་ནས་དེང་སང་དུས་ཀྱི་འཚུབ་འགྱུར་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བས་རྗེ་ཉིད་ནས་བོད་ཡུལ་བདེ་བའི་སྨོན་ལམ་ཉིན་ཞག་རེར་ལན་དྲུག་རེ་མཛད་པ་ཡིན་པས། ཁྱོད་ནས་ཀྱང་དེ་ལྟར་གལ་ཆེ་ཞེས་བཀའ་སྐུལ་ཕེབས་པ་ལྟར་རང་གི་བསྙེལ་གསོས་སུ་བྲིས་པ་ཇི་བཞིན་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །ཅེས་བློ་གྲོས་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་ཙྪ་འདྲ་རིན་ཆེན་བྲག་ཏུ་རྒྱལ་ཟླ་བའི་དཀར་ཕྱོགས་འགྲུབ་པའི་སྦྱོར་བ་དང་ལྡན་པའི་སྔ་དྲོའི་ཚར་བྲིས་པ་ཡ་ཐཱ་སིདྡྷི་རསྟུ།

ऐसा भट्टारक गुरु जम्-यङ्ग खेन्-ऱ्चे वङ्-पो द्वारा- ‘वर्तमान में काल-गति बहुत अच्छा नहीं है। अतः (भट्टारक स्वयं) मैं भोट-देश सुख-प्रणिधान प्रत्येक दिन छह बार करता हूँ। अतः तुम्हारे द्वारा भी ऐसा करना आवश्यक आवश्यक है-’ ऐसी आज्ञा प्राप्त होने से स्मरण हेतु लिखा गया। यथा सिद्ध हों। ऐसा लो-डोस् था-यस् द्वारा ऱ्चा-ड़ा रिन्-छेन-डग् में पौषमास के शुक्ल-पक्ष सिद्धि के योग से युक्त होने पर प्रातःकाल लिखा गया। यथा सिद्धिरस्तु।

# पूर्व-पश्चिम क्षेत्र-व्यूह प्रणिधान

མངོན་པར་དགའ་བའི་ཞིང་གི་སྨོན་ལམ་མདོ་སྡེའི་དགོངས་དོན་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ། །

# सूत्राभिप्रायार्थ नामक अमरावती-क्षेत्र प्रणिधान

ཨོཾ་སྭསྟི།
ओं स्वस्ति।
ओं स्वस्ति।

ལྷ་ཡི་ལྷ་མཆོག་རྒྱལ་བ་ཤཱཀྱ་ཐུབ། །
 ल्ह यि ल्ह छोग ग्यल व शाक्य थुप
देवाधिदेव जिन-शाक्यमुनि

རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ཀྱི་བྱ་རྒོད་ཕུང་པོར་བཞུགས། །
ग्यल पोइ खप क्यि छ गोद् फुङ पोर शुग
राजगृह के गृध्रकूट पर विराजमान।

དགྲ་བཅོམ་དགེ་འདུན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཚོགས། །
ड चोम गेन दुन छङ छुप सेम पई छ़ोग
अर्हत्-संघ और बोधिसत्त्व-गण,

སྲིད་གསུམ་ཆེ་དགུའི་ཚོགས་ཀྱིས་ཞབས་ལ་གཏུགས། །
सिद् सुम छे गुइ छ़ोग क्यीस् शप ल तुग
त्रि-भव महात्मा-गण चरण-स्पर्श करते।1।

དེ་ཚེ་ཤཱ་རིའི་བུ་ཡིས་གསོལ་བཏབ་ནས། །
दे छ़े शा री बु यीस् सोल तप नेस्
तब शारिपुत्र ने अध्येषणा करने पर

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་ཆོས་ཀྱི་སྒྲོན་མེ་སྦར། །
डो ल फेन छिर छोस् क्यि डोन मे बर
जगद्धितार्थ धर्म-दीप जलाया।

བདག་ཀྱང་དད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
दग क्यङ दङ बई यिद् क्यीस् क्यप सु छि
मैं भी श्रद्धा-चित्त से शरण जाता हूँ

ཡང་དག་སྨོན་ལམ་འདི་དག་འགྲུབ་པར་ཤོག །
यङ दग मोन लम दि दग डुप पर शोग
ये सम्यक् प्रणिधान सिद्ध हो जायें।2।

འདི་ནས་ཤར་ཕྱོགས་ལོགས་སུ་སྟོང་གསུམ་སྟོང་། །
दि नेस् शर छोग लोग सु तोङ सुम तोङ
यहाँ से पूर्व दिशा में सहस्र-त्रिसहस्र

འདས་པའི་ཕ་རོལ་མངོན་པར་དགའ་བ་ཞེས། །
देस् पई फ रोल ङोन पर गा व शेस्
पार करने पर ‘अमरावती’- ऐसा

ཡོན་ཏན་གཞལ་དུ་མེད་པའི་ཞིང་ཁམས་ཡོད། །
योन तेन शल दु मेद् पई शिङ खम योद्
अप्रमेय गुण वाला क्षेत्र-धातु है

བདག་ཅག་ཞིང་དེར་ཆོས་ལ་སྤྱོད་པ་དང་། །
दग चग शिङ देर छोस् ल चोद् प दङ
हम उस क्षेत्र में धर्माचरण करें एवं।3।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་འཇུག་པ་དང་། །
छङ छुप सेम पा नम क्यि जुग प दङ
बोधिसत्त्वों की प्रवृत्ति तथा

སྤྱོད་པ་མཆོག་དང་སྤྲོ་བ་ཆེན་པོ་དང་། །
चोद् प छोग दङ टो व छेन पो दङ
परम चर्या और महा-उत्साह (रूपी वीर्य),

སེམས་མཆོག་བསྐྱེད་དང་གོ་ཆ་བགོ་བ་དང་། །
सेम छोग क्येद् दङ गो छ गो व दङ
परम चित्तोत्पाद एवं कवच धारण कर,

ཡོན་ཏན་བརྗོད་པའི་ཚུལ་ལ་འཇུག་པར་ཤོག །
योन तेन जोद् पई छुल ल जुग पर शोग
गुण व्याख्यान-क्रम में प्रवेश करूँ।4।

སྔོན་ཚེ་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སྤྱན་ཆེན་པོས། །
ङोन छे ज़ोग पई सङ ग्येस् चेन छेन पोस्
प्राचीन समय में महाचक्षुवान् बुद्ध ने

ཕར་ཕྱིན་དྲུག་ལས་བརྩམས་ཏེ་ཆོས་འཁོར་བསྐོར། །
फर छिन डुग लेस त्रम ते छोस् खोर कोर
षट् पारमिता-आधारित धर्मचक्र प्रवर्त्तन किया।

དེ་ཚེ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པའི་དགེ་སློང་ཞིག །
दे छे छोग तु ग्युर पई गे लोङ शिग
तब एक श्रेष्ठ भिक्षु ने

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་མཆོག་ལ་དམ་བཅའ་མཛད། །
छङ छुप चोद् प छोग ल दम चा ज़े
परम बोधिचर्या हेतु प्रतिज्ञा किया।5।

གནོད་སེམས་མི་སྐྱེ་རྐྱེན་གྱིས་མི་འཁྲུགས་པས། །
नोद् सेम मि क्ये क्येन ग्यीस् मि ठुग पेस्
व्यापाद नहीं, प्रत्यय से अक्षुब्ध नहीं होते

དེ་ནས་བརྩམས་ཏེ་རྒྱལ་སྲས་གནས་སྐབས་དང་། །
दे नेस् त्रम ते ग्यल सेस् नेस् कप दङ
तब से आरम्भ कर (वह) जिनपुत्र सभी अवस्थाओं में तथा

ད་ལྟ་རྒྱལ་བར་གྱུར་ཀྱང་མི་འཁྲུགས་ཞེས། །
द त ग्यल वर ग्युर क्यङ मि ठुग शेस्
अनागत में जिन होने पर भी ‘अक्षोभ्य’- ऐसा

བླ་ན་མེད་པའི་མཚན་མཆོག་དོན་ལྡན་གྱུར། །
ल न मेद् पई छेन छोग दोन देन ग्युर
अनुत्तर-श्रेष्ठ-नाम, अर्थवान् बना।6।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སྐབས་དེ་ཉིད་ལའང་། །
छङ छुप सेम पई नेस् कप दे ञिद् लहङ
उस बोधिचित्त अवस्था को भी

སྙིང་ནས་གུས་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ञिङ नेस् गुस् पई यिद् क्यीस् छग छल लो
हार्दिक-आदर चित्त से प्रणाम करता हूँ।

མགོན་པོ་ཁྱེད་ལྟར་དམ་བཅའ་སྨོན་ལམ་འདེབས། །
गोन पो ख्येद् तर दम चा मोन लम देप
(हे) नाथ ! आप जैसा प्रतिज्ञा-प्रणिधान करता हूँ

ཁྱེད་ཀྱི་མཛད་སྤྱོད་རྗེས་སུ་བདག་སློབ་ཤོག །
ख्येद् क्यि ज़े चोद् जेस् सु दग लोप शोग
आपकी कर्मचर्यानुसरण कर मैं सीखूँ।7।

གཡོ་སྒྱུ་མེད་ཅིང་བདེན་པས་སེམས་བསྐྱེད་ལ། །
यो ग्यु मेद् चिङ देन पेस् सेम क्येद् ल
शठ-हीन हो सत्य द्वारा चित्तोत्पाद करूँ

ཁྲོ་དང་གནོད་སེམས་འཁྲུགས་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས། །
ठो दङ नोद् सेम ठुग प थम चे पङ
क्रोध एवं हिंसा-चित्त, समस्त विक्षोभ त्यागूँ।

ནམ་ཡང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་སེམས་མི་འབྲལ། །
नम यङ थम चे ख्येन पई सेम मि डल
सर्वज्ञता-चित्त से कदापि विरक्त न हों

སྲོག་གཅོད་ལ་སོགས་མི་དགེའི་སེམས་དང་བྲལ། །
सोग चोद् ल सोग मि गे सेम दङ डल
प्राणि-हिंसा आदि अकुशल-चित्त से विरक्त हों

ཇི་སྐད་སྨྲས་པ་དེ་བཞིན་བགྱིད་པ་དང་། །
जि के मेस् प दे शिन ग्यिद् प दङ
यथावादी तथाकारी बन कर

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་རབ་ཏུ་བྱུང་ནས་ཀྱང་། །
छ़े रप कुन तु रप तु छुङ नेस् क्यङ
समस्त जन्मों में प्रव्रजित होकर भी

ཆགས་པ་མེད་པའི་སྤོབས་པས་དམ་ཆོས་སྟོན། །
छग प मेद् पई पोप पेस् दम छोस् तोन
राग रहित प्रतिभान से सद्धर्म प्रदर्शित करूँ

རྩ་ལྟུང་སྤངས་ཤིང་ཁྱིམ་གྱི་ལས་མི་བསྐྱེད། །
त्स़ तुङ पङ शिङ ख्यिम ग्यि लेस मि क्येद्
मूलापत्ति त्याग कर, गृहस्थ-कार्य उत्पन्न न हों

གཞན་གནོད་དཔའ་སྐྲོང་ལ་སོགས་མི་བགྱིད་ཅིང་། །
शेन नोद् पा कोङ ल सोग मि ग्यिद् चिङ
पर-हानि, (औरों को) सन्त्रस्त आदि न कर

ཐ་ན་ངུར་སྨྲིག་ཚུན་ལའང་མཆོད་རྟེན་དང་། །
थ न ङुर मिग छुन लह़ङ छोद् तेन दङ
अन्तशः काषायवस्त्र तक में स्तूप तथा

དམ་ཆོས་ཉན་པར་བརྩོན་ཞིང་ལྷ་གཞན་སྤངས། །
दम छोस् ञेन पर त्स़ोन शिङ ल्ह शेन पङ
सद्धर्म-श्रवण में वीर्यरत हो, पर-देव का त्याग करूँ

འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་ཉོན་མོངས་སྤངས། །
दोद् पई दोद् छग ल सोग ञोन मोङ पङ
काम-राग आदि क्लेशों को त्यागूँ।8।

རྟག་ཏུ་བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་ཡོངས་སུ་བསྔོ། །
तग तु ल मेद् छङ छुप योङ सु ङो
सदा अनुत्तर बोधि में परिणामित करूँ।

སངས་རྒྱས་ཡིད་བྱེད་འབྲལ་མེད་སྒོམ་པར་ཤོག །
सङ ग्येस् यिद् छेद् डल मेद् गोम पर शोग
मन में बुद्ध का बिना विच्छेद भावना हो।9।

འདོད་ཆུང་ཆོག་ཤེས་སྦྱངས་པའི་ཡོན་ཏན་ལྡན། །
दोद् छुङ छोग शेस् छङ पई योन तेन देन
अल्पेच्छता, सन्तुष्टि, धूतगुणों से युक्त हों।

བག་མེད་ལེ་ལོས་ཉལ་བ་ནམ་ཡང་མེད། །
बग मेद् ले लोस् ञल व नम यङ मेद्
अप्रमाद-आलस में कदापि निद्रा न हों।10।

བུད་མེད་རྫུན་དང་གཞན་སྐྱོན་བརྗོད་པ་དང་། །
बुद् मेद् ज़ुन दङ शेन क्योन जोद् प दङ
स्त्री, झूठ और पर-दोष-वाचक और

བདེན་དོན་སྤྱོད་ཚེ་ངན་སྤྱོད་སྤོང་བར་ཤོག །
देन दोन चोद् छ़े ङेन चोद् पोङ बर शोग
सत्यार्थ-चर्या पर दुष्चर्या का त्याग करूँ।11।

བློ་ལྡན་ཀུན་ལ་སྟོན་པའི་འདུ་ཤེས་བསྐྱེད། །
लो देन कुन ल तोन पई दु शेस् क्येद्
सभी बुद्धिमन्तों में शास्ता-संज्ञा पैदा करूँ।

ཆོས་དང་ཟང་ཟིང་རྟག་ཏུ་སྙོམས་པར་གཏོང་། །
छोस् दङ ज़ङ ज़िङ तग तु ञोम पर तोङ
समतापूर्वक सदा धर्म और सास्रव (सम्पत्तियों) का
दान करूँ।12।

སྲོག་ལའང་མི་ལྟ་གཞན་གྱི་སྡུག་བསྔལ་སེམས། །
सोग लह़ङ मि त शेन ग्यि दुग ङल सेम
प्राण का भी चिन्ता न कर, पर-दुःख चिन्तन करते

གང་ན་ཉེས་ལྟུང་སྒྲ་ཡང་མི་གྲག་པའི། །
गङ न ञेस् तुङ ड यङ मि डग पई
जहाँ दोषापत्ति का शब्द भी प्रतिध्वनित नहीं होता

མི་འཁྲུགས་རྒྱལ་བའི་སྨྱུ་གུར་གྱུར་པ་ན། །
मि ठुग ग्यल वई न्यु गुर ग्युर प न
अक्षोभ्य-जिन ने- अंकुर स्वरूप होने पर

དམ་བཅའ་འདི་འདྲ་ལྡན་པའི་རྒྱལ་སྲས་རྣམས། །
दम चा दि ड देन पई ग्यल सेस् नम
'ऐसे प्रतिज्ञा युक्त जिनपुत्र (बोधिसत्त्व) लोग

བདེན་པའི་མཐུ་ལས་འཇིག་རྟེན་ཁམས་ཀྱང་གཡོས། །
देन पई थु लेस जिग तेन खम क्यङ योस्
सत्य-बल द्वारा लोक-धातु कम्पित होता

འཇིག་རྟེན་ཀུན་ཏུ་བསྔགས་པ་ལན་བརྒྱར་བརྗོད། །
जिग तेन कुन तु ङग प लेन ग्यर जोद्
शत-बार सर्व लोकों में प्रशंसित

རྒྱལ་གཞན་སངས་རྒྱས་མཛད་པ་མཛད་པ་ན། །
ग्यल शेन सङ ग्येस् ज़े प ज़े प न
अन्य जिन द्वारा बुद्ध-कार्य करने पर

སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ཞི་ངོ་མཚར་དཔག་མེད་འབྱུང་། །
दुग ङल कुन शि ङो छ़र पग मेद् छुङ
सर्वदुःख शान्त हो, अपरिमित अद्भुत प्रकट होते

བསྐལ་པ་བཟང་པོའི་སེམས་དཔའ་སྟོང་ལ་སོགས། །
कल प ज़ङ पोइ सेम पा तोङ ल सोग
'भद्रकल्प के सहस्र बोधिसत्त्वादि

རྨི་ལམ་དུ་ཡང་ཚུལ་ཁྲིམས་འཆལ་བ་སྤངས། །
मि लम दु यङ छुल ठिम छल व पङ
स्वप्न में भी दुःशील का त्याग करते हैं।

ཞིང་མཆོག་ཡོངས་སུ་དག་པ་སྒྲུབ་པར་ཤོག །
शिङ छोग योङ सु दग प डुप पर शोग
परिशुद्ध परम-क्षेत्र का साधन करूँ।13।

རྣམ་པ་དེ་འདྲའི་སྨོན་ལམ་གོ་ཆ་མཛད། །
नम प दे डई मोन लम गो छ ज़े
इस प्रकार के प्रणिधान और कवच को धारण किया।

བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་ཉེ་ཞེས་རྒྱལ་བས་བསྔགས། །
ल मेद् छङ छुप ञे शेस् ग्यल वे ङग
अनुत्तर-बोधि के समीप हैं-' ऐसा जिन द्वारा प्रशंसित।14।

ཀྱེ་མ་སྔོན་མེད་སེང་གེའི་སྒྲ་ཆེན་ཞེས། །
क्ये म ङोन मेद् सेङ गे ड छेन शेस्
'अहो, अपूर्व सिंह-गर्जन-' ऐसा

བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱང་དེ་བཞིན་སྤྱོད་པར་ཤོག །
दग चग नम क्यङ दे शिन चोद् पर शोग
हमारा आचरण भी ऐसा ही हो।15।

འོད་ཀྱི་སྣང་བས་འཇིག་རྟེན་ཀུན་ཁྱབ་སྟེ། །
ह़ोद् क्यि नङ वे जिग तेन कुन ख्यप ते
प्रभा-रश्मियों से सर्वलोक व्याप्त होता।

ཁྱེད་ནི་ཐུགས་བསྐྱེད་ཙམ་ནའང་དེ་དང་མཚུངས། །
ख्येद् नि थुग क्येद् ज़्चम नह़ङ दे दङ छुङ
बोधिचत्तोत्पाद मात्र में तद्-सदृश आप हैं।16।

འཕགས་མཆོག་བགྲང་ཡས་ལས་ཀྱང་ཆེས་ལྷག་ཅེས། །
फग छोग डङ येस् लेस क्यङ छेस् ल्हग चेस्
असंख्य आर्य-श्रेष्ठों से भी अत्युत्तम-' ऐसा।

སློབ་པའི་དུས་ནའང་སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་བསྔགས། །
लोप पई दुस् नहङ सङ ग्येस् कुन ग्यीस् ङग
शैक्ष-काल में भी सभी बुद्धों द्वारा प्रशंसित

བདག་ཀྱང་མགོན་པོ་ཁྱོད་དང་མཚུངས་པར་ཤོག །
दग क्यङ गोन पो ख्योद् दङ छुङ पर शोग
(हे) नाथ, मैं भी आपके समान बनूँ।17।

བཅོམ་ལྡན་མི་འཁྲུགས་རྒྱལ་པོའི་བྱང་ཆུབ་ཤིང་། །
चोम देन मि ठुग ग्यल पोइ छङ छुप शिङ
भगवान् अक्षोभ्य जिन (बुद्ध) का बोधिवृक्ष

གནམ་འཕང་དུ་ནི་དཔག་ཚད་འབུམ་ཡོད་ལ། །
नम फङ दु नि पग छे बुम योद् ल
ऊँचाई मे शत-सहस्त्र होता है।

རིན་ཆེན་སྣ་བདུན་ལས་གྲུབ་དེ་ལས་ནི། །
रिन छेन न दुन लेस डुप दे लेस नि
सप्त-रत्नों से बना, उससे

རབ་ཏུ་སྙན་པའི་ཆོས་སྒྲ་མཐའ་ཡས་འབྱུང་། །
रप तु ञेन पई छोस् ड था येस् छुङ
अनन्त सुमधुर धर्म-घोष पैदा होते।18।

བསྐལ་པ་ཆེན་པོ་འབུམ་ཕྲག་བཅུ་ཡི་བར། །
कल प छेन पो बुम ठग चु यि बर
दश शत-सहस्त्र महाकल्प पर्यन्त

བཅོམ་ལྡན་འཚོ་ཞིང་བཞེས་ལ་ཆོས་ཀྱང་སྟོན། །
चोम देन छो शिङ शेस् ल छोस् क्यङ तोन
भगवान् जीवित रह कर, धर्म-प्रवचन करते।

ཕྱི་རྗེས་བསྟན་པའང་ཡུན་ཚད་དེ་ཙམ་གནས། །
छि जेस् तेन पहङ युन छे दे त्सम नेस्
पश्चात् शासन भी उतने ही काल स्थित होता

དེ་འདྲའི་རྒྱལ་བ་རྟག་ཏུ་མཐོང་བར་ཤོག །
दे डई ग्यल व तग तु थोङ बर शोग
ऐसे जिन (बुद्ध) का सदा दर्शन हों।19।

བྱང་ཆུབ་བརྙེས་པར་འགྱུར་བའི་ཞག་བདུན་སྔོན། །
छङ छुप ञेस् पर ग्युर बई शग दुन ङोन
बोधि-प्राप्त होने के सात दिन पूर्व

འགྲོ་ཀུན་དགའ་བདེས་ཁྱབ་ཅིང་ཉོན་མོངས་བྲལ། །
डो कुन गा देस् ख्यप चिङ ञोन मोङ डल
सर्व-प्राणी आनन्द-सुख व्याप्त हो, क्लेश विरक्त होते।

བླ་མེད་ཡེ་ཤེས་བརྙེས་ཚེ་ཁམས་གསུམ་གཡོ། །
ल मेद् ये शेस् ञेस् छे खम सुम यो
अनुत्तर-ज्ञान की प्राप्ति पर त्रिभव कम्पित होता

ཀུན་གྱིས་ཕྱག་འཚལ་མཆོད་པ་དཔག་ཡས་ཕུལ། །
कुन ग्यीस् छग छ्ल छोद् प पग येस् फुल
सभी अनन्त प्रणाम तथा पूजा-भेंट करते।20।

དཔག་ཚད་བརྒྱ་ཡི་ཚད་ཅན་ནོར་བུའི་གདུགས། །
पग छे ग्य यि छे चेन नोर बुइ दुग
शत योजन परिमाण वाला रत्न-छत्र

རྟག་ཏུ་དབུ་གཙུག་སྟེང་གི་ནམ་མཁར་གནས། །
तग तु उ त्सुग तेङ गि नम खर नेस्
सदा शीर्षोष्णीष पर नभ में स्थित रहता।

སྟོང་གསུམ་ཆེན་པོའི་འཇིག་རྟེན་ཁམས་དེ་ནི། །
तोङ सुम छेन पोइ जिग तेन खम दे नि
महा-त्रिसाहस्त्र वह लोक-धातु

སྐུ་ཡི་འོད་ཟེར་ཁོ་ནས་རྟག་ཏུ་ཁྱབ། །
कु यि होद् ज़ेर खो नेस् तग तु ख्यप
काय-प्रभा मात्र से सदा व्याप्त रहता।21।

ཞིང་ཁམས་དེ་ན་ངན་འགྲོ་བདུད་ལས་དང་། །
शिङ खम दे न ङेन डो दुद् लेस दङ
उस (शुद्ध) क्षेत्र में दुर्गति तथा मार,

མུ་སྟེགས་ཅན་དང་འཐབ་རྩོད་འཆིང་བ་མེད། །
मु तेग चेन दङ थप ज़ोद् छिङ व मेद्
तैर्थिक, लड़ाई-झगड़ा और बन्धन नहीं।

རྒས་དང་ནད་དང་རྒུད་པ་ཡོངས་མེད་ཅིང་། །
गेस् दङ ने दङ गुद् प योङ मेद् चिङ
जरा, रोग और आपदा कोई नहीं

བུད་མེད་སྐྱོན་དང་མི་གཙང་དངོས་པོ་མེད། །
बुद् मेद् क्योन दङ मि ज़ङ ङोस् पो मेद्
स्त्री-दोष और अशुचि पदार्थ नहीं।22।

ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱང་ཐེག་ཆེན་ཚུལ་ལ་བསྟེན། །
ञेन थोस् नम क्यङ थेग छेन छुल ल तेन
श्रावक लोग भी महायान-नय का सेवन करते

བདེན་པ་མཐོང་བའི་མོད་ལ་དགྲ་བཅོམ་ཐོབ། །
देन प थोङ बई मोद् ल ड चोम थोप
सत्य-दर्शन पर ही अर्हत् प्राप्त करते।

དགེ་སློང་དགེ་འདུན་བཀོད་པ་མཐའ་མེད་ཅིང་། །
गे लोङ गेन दुन कोद् प था मेद् चिङ
अनन्त वियूह भिक्षु-संघ का होता

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འདུས་པ་ཚད་མེད་དེ། །
छङ छुप सेम पई दुस् प छे मेद् दे
बोधिसत्त्वों की सभा अपरिमित।23।

དེ་དག་རེ་རེའི་ཡོན་ཏན་བགྲང་ལས་འདས། །
दे दग रे रे योन तेन डङ लेस देस्
उन प्रत्येक का गुण अगणित है

བདག་དང་མཐའ་ཡས་འགྲོ་བ་འདི་དག་ཀུན། །
दग दङ था येस् डो व दि दग कुन
मेरे सहित ये अनन्त सर्वसत्त्व।

ཚོགས་མཆོག་དམ་པ་དེ་འདྲའི་ནང་ཚུད་ནས། །
छ़ोग छोग दम प दे डई नङ छुद् नेस्
उस प्रकार के श्रेष्ठ परम-गण में प्रवेश कर

ཆོས་ཀྱི་སྒོ་ཡི་ཏིང་འཛིན་ཐོབ་པར་ཤོག །
छोस् क्यि गो यि तिङ ज़िन थोप पर शोग
धर्म-द्वार-समाधि प्राप्त हो जायें।24।

མདོག་བཟང་ས་གཞི་འཇམ་ལ་རེག་ན་བདེ། །
दोग ज़ङ स शि जम ल रेग न दे
भूमि सु-वर्ण (और) कोमल, स्पर्श पर सुख देने वाली

མཐོ་དམན་མེད་ཅིང་ལྷ་ཡི་ནོར་བུས་སྤྲས། །
थो मेन मेद् चिङ ल्ह यि नोर बुस् टेस्
ऊबड़-खाबड़ नहीं है, देव-रत्नों से सज्जित।

གསེར་གྱི་པདྨ་མང་པོས་རབ་ཏུ་ཁེབས། །
सेर ग्यि पेमा मङ पोस् रप तु खेप
अनेक सुवर्ण-कमलों से पूरी तरह आवरणित

སྡོང་དུམ་ཚེར་མ་ངམ་གྲོག་ལ་སོགས་སྤངས། །
दोङ दुम छ़ेर म ङम डोग ल सोग पङ
वृक्ष-खण्ड, काँटे और प्रपात आदि से रहित है।25।

གོས་དང་རྒྱན་རྣམས་དཔག་བསམ་ཤིང་ལས་འབྱུང་། །
गोस् दङ ग्येन नम पग सम शिङ लेस छुङ
वस्त्र तथा अलङ्कारें कल्पतरु से प्राप्त होते

འབད་རྩོལ་མེད་པར་རིན་ཆེན་སྣོད་རྣམས་སུ། །
बे ज़ोल मेद् पर रिन छेन नोद् नम सु
बिना प्रयत्न, रत्न-पात्रों में

རོ་བརྒྱ་ལྡན་པའི་ཁ་ཟས་འདོད་བཞིན་འབྱུང་། །
रो ग्य देन पई ख ज़ेस् दोद् शिन छुङ
शतरसी-खाद्य इच्छा मात्र पर प्राप्त होता

ཁྲི་དང་མལ་སྟན་ཡོ་བྱད་དུ་མས་ཁྱབ། །
ठि दङ मल तेन यो छे दु मेस ख्यप
आसन, शय्या अनेक द्रव्यों से व्याप्त हैं।26।

མྱ་ངན་མེད་པའི་ལྗོན་པས་ཡོངས་སུ་བསྐོར། །
न्य ङेन मेद् पई जोन पेस् योङ सु कोर
अशोक-वृक्षों से हैं (वे) परिवृत्त।

འཇམ་པོའི་རླུང་ལྡང་ཚ་གྲང་སྡུག་བསྔལ་མེད། །
जम पोइ लुङ दङ छ़ डङ दुग ङल मेद्
हलके वायु उठते, शीतोष्ण-दुःख नहीं।27।

གཙོ་འཁོར་གཞན་མེད་ཐམས་ཅད་སྙོམས་པར་བདེ། །
त्सो खोर शेन मेद् थम चे ञोम पर दे
मण्ड़ल-प्रधान अन्य नहीं, सभी समान सुखी हैं।

ཇི་ལྟར་ཡིད་ལ་བསམ་པ་དེ་ལྟར་འབྱུང་། །
जि तर यिद् ल सम प दे तर छुङ
यथा वाञ्छित तथा प्राप्त करते हैं।28।

ཡིད་འོང་སྒྲ་དང་དྲི་ཞིམ་ཀུན་ཏུ་འཐུལ། །
यिद् ह़ोङ ड दङ डि शिम कुन तु थुल
मनोहर शब्द तथा सुगन्ध सभी जगह

མགོན་ཁྱོད་སྤྱོད་ཡུལ་གཤེགས་ན་ཞབས་ཀྱི་རྗེས། །
गोन ख्योद् चोद् युल शेग न शप क्यि जेस्
नाथ ! आप चर्यागमन करें तो (आपके) पादचिह्न (से)

པདྨ་དེ་ཡང་མཆོད་ཡུལ་ཆེན་པོར་འགྱུར། །
पेमा दे यङ छोद् युल छेन पोर ग्युर
वे पद्म भी महा पूजा-विषय बनते हैं।30।

ཁྱིམ་རྣམས་ཐམས་ཅད་གཞལ་མེད་ཁང་པ་སྟེ། །
ख्यिम नम थम चे शल मेद् खङ प ते
समस्त गृह (होते) विमानों की पंक्तियाँ

ཞིང་བུ་གསེར་གྱི་བྱེ་མ་བདལ་བ་ལ། །
ज़िङ बु सेर ग्यि छे म दल व ल
सुवर्ण-बालु विखरे पुष्करिणियाँ

དེ་དག་སྐྱེས་བུའི་འདོད་ལ་རྗེས་སུ་འབྱུང་། །
दे दग क्येस् बुइ दोद् ल जेस् सु छुङ
वे (सब) पुरुष-इच्छानुसार उत्पन्न होते

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལས། །
ज़ोग पई सङ ग्येस् छोस् क्यि ग्यल पो लेस
सम्बुद्ध धर्मराज के अतिरिक्त

ཉོ་ཚོང་ཞིང་སོགས་ལས་ལ་མི་འཇུག་སྟེ། །
ञो छ़ोङ शिङ सोग लेस ल मि जुग ते
व्यापार-क्षेत्रादि कार्यों में प्रविष्ट नहीं होते

གསེར་གྱི་ཏ་ལའི་ནགས་ཀྱིས་ཕྱོགས་ཀུན་ཁྱབ། །
सेर ग्यि त लई नग क्यीस् छोग कुन ख्यप
सुवर्णताल-वन से सर्व-दिशा व्याप्त है

གླུ་གར་རོལ་མོས་རྩེ་ཡང་བག་ཡོད་ལྡན། །
लु गर रोल मोस् त्से यङ बग योद् देन
गीत-नृत्य-वाद्य करते, पर हैं अप्रमादी।29।

རིན་ཆེན་ཆུ་སྐྱེས་འདབ་སྟོང་ལྡན་པ་འབྱུང་། །
रिन छेन छु क्येस् दप तोङ देन प छुङ
सहस्र-दल रत्न-जलज उत्पन्न होते

འཛམ་བུ་གླིང་ནས་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་བར། །
ज़म बु लिङ नेस् सुम चु त्स सुम बर
जम्बुद्वीप से त्रायस्त्रिंशत पर्यन्त

གསེར་དངུལ་བཻཌཱུརྱ་ཡི་ཐེམ་སྐས་ཅན། །
सेर ङुल बैदूर्य यि थेम केस् चेन
सुवर्ण, रजत, वैडूर्य-सोपान बना

ཇི་ལྟར་ལྷ་གཞན་དེ་ལྟར་མི་ཡང་བདེ། །
जि तर ल्ह शेन दे तर मि यङ दे
यथा पर-देव तथा नर भी सुखी हैं

དབང་སྒྱུར་བདུད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་ཞེས་གྲགས་ནའང་། །
वङ ग्युर दुद् क्यि जिग तेन शेस् डग नहृङ
'मार-लोक वशीभूत-'ऐसा प्रसिद्ध होने पर भी

འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་བཅོམ་ལྡན་མི་འཁྲུགས་པ། །
डो व थम चे चोम देन मि ठुग प
सभी प्राणी भगवान् अक्षोभ्य की

ཐམས་ཅད་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་ཤས་ཆུང་ཞིང་། །
थम चे कुन नेस् ञोन मोङ शेस् छुङ शिङ
सभी अल्प संक्लेशवान् होते

འདོད་པའི་དགའ་བ་ལས་ཀྱང་ཆགས་བྲལ་ཐོབ། །
दोद् पई गा व लेस क्यङ छग डल थोप
कामरति से भी विरक्ति-प्राप्त करते

ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱང་རྣམ་འཕྲུལ་ཟད་མི་མངའ། །
ञेन थोस् नम क्यङ नम ठुल ज़े मि ङा
श्रावक लोग भी अक्षय ऋद्धि वाले

ཞིང་ཁམས་མཆོག་དེའི་ཆོས་ཀྱི་འབྱོར་པས་ནི། །
शिङ खम छोग दे छोस् क्यि छोर पेस् नि
उस श्रेष्ठ-धातु के धर्म सम्पत्ति द्वारा

ཐུགས་རྗེ་ལྡན་པ་སྤོས་ཀྱི་གླང་པོ་ནི། །
थुग जे देन प पोस् क्यि लङ पो नि
करुणा-युक्त गन्धहस्ति तो

དེ་ལ་ལྷ་དང་མི་རྣམས་བདེ་བར་རྒྱུ། །
दे ल ल्ह दङ मि नम दे वर ग्यु
उस पर देव एवं मनुष्य सुखपूर्वक चलते।31।

ལྷ་རྣམས་འཛམ་བུ་གླིང་པ་རྣམས་ལ་སྨོན། །
ल्ह नम ज़म बु लिङ प नम ल मोन
देव लोग जम्बुद्वीप लोगों के प्रति प्रणिधान करते

ཡང་དག་ལམ་ལ་ཞུགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན། །
यङ दग लम ल शुग प खो न यिन
सम्यक् मार्ग में ही प्रविष्ट होते हैं।32।

རྟག་པར་མཆོད་ལ་བརྩོན་ཅིང་ཆོས་ཀྱང་ཉན། །
तग पर छोद् ल च़ोन चिङ छोस् क्यङ ञेन
सदा पूजा करते, यत्नपूर्वक धर्म भी सुनते।

སྡིག་པའི་ལས་དང་ཉེས་ལྟུང་དྲི་མས་དབེན། །
दिग पई लेस दङ ञेस् तुङ डि मेस वेन
पाप-कर्म और दोषापत्ति-मल विरक्त

མངལ་གནས་ཁང་བཟང་ལྟ་བུར་ཞག་བདུན་བདེ། །
ङल नेस् खङ ज़ङ त बुर शग दुन दे
गर्भस्थ सु-गृह सा सात दिन सुखी रहता।33।

སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་བསམ་མི་ཁྱབ། །
सेम पा नम क्यि नम थर सम मि ख्यप
बोधिसत्त्वों की अचिन्त्य कहानी।

ཞིང་གཞན་ཐམས་ཅད་ཟིལ་གྱིས་གནོན་པར་འགྱུར། །
शिङ शेन थम चे ज़िल ग्यीस् नोन पर ग्युर
सभी अन्य क्षेत्र पराभूत होते हैं।34।

ད་ལྟ་སྐྱོབ་པ་མཆོག་གི་རྒྱལ་ཚབ་ལགས། །
द त क्योप प छोग गि ग्यल छ़प लग
अभी श्रेष्ठ-त्रायी के प्रतिनिधि हैं।

མི་འཁྲུགས་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པའི་ཕྱི་རྗེས་སུ། །
मि ठुग ग्यल वई तेन पई छि जेस् सु
जिन-अक्षोभ्य-शासन के पीछे

ཞག་བདུན་ལོན་ནས་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར། །
शग दुन लोन नेस् छोस् क्यि ग्यल पोर ग्युर
सात दिन बीतने पर धर्मराज होंगे।35।

ལྷ་མིའི་སྟོན་པ་གསེར་གྱི་པདྨ་ཞེས། །
ल्ह मी तोन प सेर ग्यि पेमा शेस्
देव-नर-शास्ता 'सुवर्ण-पद्म-' ऐसा

སྟོབས་བཅུ་ལྡན་པ་མི་འཁྲུགས་ཇི་ལྟ་བ། །
तोप चु देन प मि ठुग जि त व
दशबल-युक्त यथा अक्षोभ्य।

ཐུགས་རྗེའི་འཕྲིན་ལས་བསམ་མི་ཁྱབ་པར་འགྱུར། །
थुग जे ठिन लेस सम मि ख्यप पर ग्युर
अचिन्त्य कारुण्य-कर्मवान् होंगे

མགོན་པོ་དེ་ནི་མཉེས་པར་བྱེད་གྱུར་ཅིག །
गोन पो दे नि ञेस् पर छेद् ग्युर चिग
उस नाथ को (मैं) प्रसन्न करूँ।36।

བཅོམ་ལྡན་ཁྱོད་ཀྱི་མཛད་སྤྱོད་ཇི་ལྟ་བར། །
चोम देन ख्योद् क्यि ज़े चोद् जि त बर
भगवन्! यथा आपकी कर्म-चर्या

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་སྒྲུབ་པར་དམ་འཆའ་ཞིང་། །
छङ छुप चोद् प डुप पर दम छा शिङ
बोधिचर्या साधन हेतु प्रतिज्ञा कर।

མི་འཁྲུགས་ཉིད་དང་ལྷན་ཅིག་འགྲོགས་པའི་ཕྱིར། །
मि ठुग ञिद् दङ ल्हेन चिग डोग पई छिर
अक्षोभ्य! आपके साथ संगत हेतु

ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ལ་སྤྱོད་པ་དང་། །
फ रोल छिन प डुग ल चोद् प दङ
षट् पारमिता का आचरण तथा।37।

ཁྱོད་སྐུ་དམ་ཆོས་གསུང་བའི་རྣམ་པ་དང་། །
ख्योद् कु दम छोस् सुङ बई नम प दङ
आपकी काय, सद्धर्म-वाचक आकृति,

དགེ་སློང་དགེ་འདུན་དྲན་དང་རྒྱལ་སྲས་ཀྱི། །
गे लोङ गेन दुन डेन दङ ग्यल सेस् क्यि
भिक्षु-संघ-स्मृति तथा जिनपुत्र के

དགེ་འདུན་རྗེས་སུ་དྲན་ནས་ཡོངས་སུ་བསྔོ། །
गेन दुन जेस् सु डेन नेस् योङ सु ङो
संघानुस्मृति कर परिणामित करूँगा

དེ་དག་མངོན་དགའི་ཞིང་དུ་སྐྱེ་བར་གསུངས། །
दे दग ङोन गई शिङ दु क्ये बर सुङ
उक्त हैं- 'वे अमरावती क्षेत्र में उत्पन्न होंगे।'38।

རྒྱལ་ཚབ་དམ་པའི་མཚན་ཐོས་སྨོན་ལམ་འདེབས། །
ग्यल छ़ब दम पई छ़ेन थोस् मोन लम देप
परम प्रतिनिधि का नाम-श्रवण, प्रणिधान-कर्ता,

ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་ཁམས་དག་པར་སྒྲུབ་པ་དང་། །
छोग चुइ शिङ खम दग पर डुप प दङ
दश-दिग् क्षेत्र-धातु का शुद्ध-साधन।

གཞན་དག་ཞིང་དེར་སྨོན་ལམ་འདེབས་སུ་འཇུག །
शेन दग शिङ देर मोन लम देप सु जुग
अन्यों को उस क्षेत्र हेतु प्रणिधान करने देना,

མི་འཁྲུགས་ཞིང་གི་མདོ་སྡེར་སྤྱོད་པ་དང་། །
मि ठुग शिङ गि दो देर चोद् प दङ
अक्षोभ्य-क्षेत्र के सूत्र-पिटक-चर्या एवं।39।

གླང་པོའི་ཁྲི་དང་པདྨ་ལ་བཞུགས་པའི། །
लङ पोइ ठि दङ पेमा ल शुग पई
हस्ति-आसन तथा पद्म पर विराजित

ཁྱེད་སྐུ་བགྲང་ཡས་དགེ་འདུན་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐོར། །
ख्येद् कु डङ येस् गेन दुन छ़ोग क्यीस् कोर
आपकी काय, असंख्य संघ-गणों से परिवृत्त

སངས་རྒྱས་བདེན་པའི་ཚིག་གིས་དེ་སྐད་གསུངས། །
सङ ग्येस् देन पई छ़िग गीस् दे के सुङ
बुद्ध सत्य-पद द्वारा ऐसा उक्त है-

བསོད་ནམས་དགེ་བའི་ཚོགས་ལ་རབ་ཞུགས་ནས། །
सोद् नम गे बई छ़ोग ल रप शुग नेस्
पुण्य (रूपी) कुशल-राशि में सु-प्रविष्ट होकर

བདག་ཅག་དེང་ནས་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ། །
दग चग देङ नेस् क्ये व थम चे दु
हम लोग आज से समस्त जन्मों में

རྣམ་གསུམ་སྒྲིབ་པའི་ཚོགས་རྣམས་དྲུང་ཕྱུང་ནས། །
नम सुम डिप पई छ़ोग नम डुङ छुङ नेस्
त्रिविध आवरण-राशियों को समूल नष्ट कर

ཇི་སྲིད་དེ་མ་ཐོབ་ཀྱི་བར་དུ་ཡང་། །
जि सिद् दे म थोप क्यि बर दु यङ
यावत् उसकी प्राप्ति नहीं होने तक

དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་དགའ་སྟོན་མཆོག་རོལ་བས། །
दम पई छोस् क्यि गा तोन छोग रोल वे
सद्धर्म (रूपी) परमोत्सव का भोग कर

སྐུ་གཟུགས་སྟོང་ཐག་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་སོགས། །
कु ज़ुग तोङ ठग डुप पर छेद् प सोग
सहस्र काय रूपी मूर्तियों के साधन-कर्ता आदि।

མངོན་སུམ་མཐོང་ནས་ཞིང་དེར་འགྲོ་བར་འགྱུར། །
ङोन सुम थोङ नेस् शिङ देर डो बर ग्युर
प्रत्यक्ष दर्शन कर, उस (अमरावती) क्षेत्र में
जायेंगे।40।

འགྲོ་བ་ཀུན་ཀྱང་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུས། །
डो व कुन क्यङ नम प दे त बुस्
‘समस्त सत्त्व भी इसी प्रकार

མངོན་པར་དགའ་བའི་ཞིང་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
ङोन पर गा बई शिङ ल चोद् पर शोग
अमरावती-क्षेत्र का भोग करें।’41।

ཕ་རོལ་ཕྱིན་བཅུའི་དཔལ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་། །
फ रोल छिन चुइ पल ल लोङ चोद् चिङ
दश पारमिता-श्री का भोग कर।

མི་འཁྲུགས་མགོན་པོའི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་ཤོག །
मि ठुग गोन पोइ गो फङ थोप पर शोग
अक्षोभ्य-नाथ की पद की प्राप्ति करें।42।

མི་མཐུན་ཕྱོགས་ཀྱི་བར་ཆད་ཀུན་ཞི་ཞིང་། །
मि थुन छोग क्यि बर छे कुन शि शिङ
विपक्ष की सभी बाधायें शान्त हों।

འགྲོ་ཀུན་བླ་མེད་བདེ་ལ་འགོད་པར་ཤོག །
डो कुन ल मेद् दे ल गोद् पर शोग
सर्व-सत्त्वों को अनुत्तर-सुख पर आरूढ़ करूँ।43।

ཅེས་པ་མངོན་པར་དགའ་བའི་ཞིང་གི་སྨོན་ལམ་མདོ་སྡེའི་དགོངས་དོན་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཡང་དོན་གཉེར་མང་པོས་བསྐུལ་བའི་ངོར། རྒྱལ་ཁམས་པ་ཏཱ་ར་ནཱ་ཐས་ངེས་པར་བརྗོད་པའོ། །

ऐसे सूत्रपिटकाभिप्रायार्थ नामक अमरावती-क्षेत्र प्रणिधान- इसे भी अनेक संकल्पशील लोगों द्वारा प्रेरित करने पर भ्रमण-कर्ता तारनाथ द्वारा निरुक्त किया गया। (भवतु सर्व-) मङ्गलम्।।

# རྣམ་དག་བདེ་ཆེན་ཞིང་གི་སྨོན་ལམ།
# विशुद्ध-सुखावती प्रणिधान

འདི་ཉིད་ཚག་མེད་ཐུགས་དམ་མཛོད། །
ལག་པ་ན་ཡང་འབད་ནས་བྲིས། །
མང་པོ་འགའ་ལ་ཨེ་ཕན་བསམས། །
དཔེ་སྐྱོད་འདོད་མི་གདའ་ན་གཡོར། །
འདི་ལས་ཕན་ཡོན་ཆེ་བ་མེད། །
འདི་ལས་ཟབ་པའི་གདམས་ངག་མེད། །
ང་ཡི་ཆོས་ཀྱི་རྩ་བ་ཡིན། །
རང་གར་མ་བསྐྱུར་ཉམས་ལེན་འབྱུངས། །
འདི་ནི་མདོ་ལུགས་ཡིན་པའི་ཕྱིར། །
ལུང་མ་ཐོབ་ཀྱང་འདོན་ནི་རུང་། །

यह है छग्स-मेद् का अभ्यास
हस्त-दर्द पर भी यत्न से लिखा है।
सोचा- क्या बहुतों को लाभ होगा ?
प्रतिलिपि करना न चाहें तो उधार लें।।
इससे अधिक लाभकारी अन्य नहीं
इससे गम्भीर उपदेश नहीं।
मेरे धर्म का मूल है (यह)
व्यर्थ में न फेंक अभ्यास में लगें।।
यह तो सूत्र-विधि होने से
आगम न मिले भी पाठ-योग्य है।।

ཨེ་མ་ཧོ།
ए म हो
हे माँ।

འདི་ནས་ཉི་མ་ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་རོལ་ན། །
दि नेस् ञि म नुप क्यि छ्योग रोल न
यहाँ से सूर्यास्त की दिशा में

གྲངས་མེད་འཇིག་རྟེན་མང་པོའི་ཕ་རོལ་ན། །
डङ मेद् जिग तेन मङ पोइ फ रोल न
असंख्य अनेक लोकों के पार।

ཅུང་ཟད་སྟེང་དུ་འཕགས་པའི་ཡུལ་ས་ན། །
चुङ ज़े तेङ दु फग पई युल स न
किञ्चित् ऊपर उठे हुये क्षेत्र में

རྣམ་པར་དག་པའི་ཞིང་ཁམས་བདེ་བ་ཅན། །
नम पर दग पई शिङ खम दे व चेन
विशुद्ध क्षेत्र-धातु सुखावती।

བདག་གི་ཆུ་བུར་མིག་གིས་མ་མཐོང་ཡང་། །
दग गि छु बुर मिग गीस् म थोङ यङ
मेरे बुलबुले आँखो से न देखने पर भी

རང་སེམས་གསལ་བའི་ཡིད་ལ་ལམ་མེར་གསལ། །
रङ सेम सल बई यिद् ल लम मेर सल
मेरे प्रकृष्ट-चित्त में उद्दीप्त है।1।

དེ་ན་བཅོམ་ལྡན་རྒྱལ་བ་འོད་དཔག་མེད། །
दे न चोम देन ग्यल व ह़ोद् पग मेद्
वहाँ भगवान् जिन-अमिताभ

པདྨ་རཱ་གའི་མདོག་ཅན་གཟི་བརྗིད་འབར། །
पेमा रा गई दोग चेन ज़ि जिद् बर
पद्मराग वर्णी, ओज प्रज्वलित

དབུ་ལ་གཙུག་ཏོར་ཞབས་ལ་འཁོར་ལོ་སོགས། །
उ ल त्सुग तोर शप ल खोर लो सोग
शीर्ष पर उष्णीष, चरण में चक्रादि

མཚན་བཟང་སོ་གཉིས་དཔེ་བྱད་བརྒྱད་ཅུས་སྤྲས། །
छ़ेन ज़ङ सो ञीस् पे छे ग्ये चुस् टेस्
बत्तीस सु-लक्षण, अस्सी अनुव्यञ्जन से सुशोभित।

ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་མཉམ་གཞག་ལྷུང་བཟེད་འཛིན།།
शल चिग छग ञीस् ञम शग ल्हुङ ज़ेद् ज़िन
एक मुख, द्वि-हस्त, समाधिस्थ, भिक्षा-पात्र धारण किये

ཆོས་གོས་རྣམ་གསུམ་གསོལ་ཞིང་སྐྱིལ་ཀྲུང་གིས། །
छोस् गोस् नम सुम सोल शिङ क्यिल टुङ गीस्
त्रि-चीवर धारण कर, (वज्र) पर्यङ्क बैठे

པདྨ་སྟོང་ལྡན་ཟླ་བའི་གདན་སྟེང་དུ། །
पेमा तोङ देन द बई देन तेङ दु
सहस्त्र पद्म-युक्त चन्द्रासन के ऊपर

བྱང་ཆུབ་ཤིང་ལ་སྐུ་རྒྱབ་བརྟེན་མཛད་དེ། །
छङ छुप शिङ ल कु ग्यप तेन ज़े दे
काय-पार्श्व बोधिवृक्ष का आश्रय लिये

ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན་གྱིས་རྒྱང་ནས་བདག་ལ་གཟིགས། །
थुग जे चेन ग्यीस् ग्यङ नेस् दग ल ज़िग
करुण-चक्षु द्वारा मुझे सुदूर से देख रहे हैं।2।

གཡས་སུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
येस् सु छङ छुप सेम पा चेन रेस ज़िग
दक्षिण में बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर

སྐུ་མདོག་དཀར་པོ་ཕྱག་གཡོན་པད་དཀར་འཛིན། །
कु दोग कर पो छग योन पे कर ज़िन
काय श्वेत-वर्ण, वाम-हस्त में पुण्डरीक धारण किये

གཡོན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མཐུ་ཆེན་ཐོབ། །
योन दु छङ छुप सेम पा थु छेन थोप
वाम में बोधिसत्त्व महास्थामप्राप्त

སྔོན་པོ་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་པདྨ་གཡོན། །
ङोन पो दोर जेस् छ़ेन पई पेमा योन
नील, वज्रालंकृत-पद्म बायें में

གཡས་གཉིས་སྐྱབས་སྦྱིན་ཕྱག་རྒྱ་བདག་ལ་བསྟན། །
येस् ञीस् क्यप छिन छग ग्य दग ल तेन
दायाँ दोनों वरद-मुद्रा मुझे प्रदर्शित करते।3।

གཙོ་བོ་གསུམ་པོ་རི་རྒྱལ་ལྷུན་པོ་བཞིན། །
त्सो वो सुम पो रि ग्यल ल्हुन पो शिन
तीनों प्रभु, पर्वतराज मेरु जैसे

ལྷང་ངེ་ལྷན་ནེ་ལྷམ་མེར་བཞུགས་པའི་འཁོར། །
ल्हङ ङे ल्हेन ने ल्हम मेर शुग पई खोर
विरोचित, तपित, भासित, विराजित-परिवार

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དགེ་སློང་བྱེ་བ་འབུམ། །
छङ छुप सेम पई गे लोङ छे व बुम
भिक्षु-बोधिसत्त्व कोटि-शतसहस्त्र

ཀུན་ཀྱང་གསེར་མདོག་མཚན་དང་དཔེ་བྱད་བརྒྱན། །
कुन क्यङ सेर दोग छ़ेन दङ पे छे ग्येन
सभी सुवर्ण-वर्ण, लक्षणानुव्यञ्जनालंकृत

ཆོས་གོས་རྣམ་གསུམ་གསོལ་ཞིང་སེར་ལྟེམ་མེ། །
छोस् गोस् नम सुम सोल शिङ सेर तेम मे
त्रि-चीवर धारण कर पीला ही पीला

བདག་གི་སྒོ་གསུམ་གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दग गि गो सुम गुस् पेस् छग छल लो
त्रि-द्वार आदर से नमन है मेरा।4।

ཕྱག་གཡས་འོད་ཟེར་ལས་སྤྲུལ་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
छग येस् ह़ोद् ज़ेर लेस टुल चेन रेस ज़िग
दक्षिण-हस्त-प्रभा से अवलोकितेश्वर निर्माण करते

ཕྱག་གཡོན་འོད་ཟེར་ལས་སྤྲུལ་སྒྲོལ་མ་སྟེ། །
छग योन ह़ोद् ज़ेर लेस टुल डोल म ते
वाम-हस्त-रश्मि से तारा निर्मित करते।5।

ཐུགས་ཀྱི་འོད་ཟེར་ལས་སྤྲུལ་པདྨ་འབྱུང་། །
थुग क्यि ह़ोद् ज़ेर लेस टुल पेमा छुङ
हृदय-रश्मि से पद्माकर निर्मित

ཆོས་སྐུ་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छोस् कु ह़ोद् पग मेद् ल छग छल लो
धर्मकाय अमिताभ को नमन है।6।

སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་བརྩེ་བས་རྟག་ཏུ་གཟིགས། །
सेम चेन कुन ल त्se वे तग तु ज़िग
सभी सत्त्वों को सदा प्यार से देखते

རྣམ་རྟོག་གང་འགྱུ་རྟག་ཏུ་ཐུགས་ཀྱིས་མཁྱེན། །
नम तोग गङ ग्यु तग तु थुग क्यीस् ख्येन
विकल्प जो हो, सदा चित्त द्वारा जानते

རྟག་ཏུ་མ་འདྲེས་སོ་སོར་སྙན་ལ་གསན། །
तग तु म डेस् सो सोर ञेन ल सेन
सदा अमिश्रित, अलग-अलग, कर्णों से सुनते

མོས་གུས་ཕྱག་ལ་ཉེ་རིང་ཁྱད་མེད་ཕྱིར། །
मोस् गुस् छग ल ञे रिङ ख्ये मेद् छिर
छन्दादर नमन में पक्षपात-भेद नहीं होता

ཆོས་སྐུ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་རིགས་ཀྱི་བདག །
छोस् कु नङ व था येस् रिग क्यि दग
कुलाधिपति धर्मकाय अमिताभ

ཡང་སྤྲུལ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་བྱེ་བ་བརྒྱ། །
यङ टुल चेन रेस ज़िग वङ छे व ग्य
पुनर्निर्मित अवलोकितेश्वर शत-कोटि

ཡང་སྤྲུལ་སྒྲོལ་མ་བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་འགྱེད། །
यङ टुल डोल म छे व ठग ग्य ग्येद्
पुनर्निर्मित तारा शत-कोटि विभक्त हुये

ཡང་སྤྲུལ་ཨོ་རྒྱན་བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་འགྱེད། །
यङ टुल उर्ग्येन छे व ठग ग्य ग्येद्
पुनर्निर्मित ओडियानी शत-कोटि विभक्त हुये

སངས་རྒྱས་སྤྱན་གྱིས་ཉིན་མཚན་དུས་དྲུག་ཏུ། །
सङ ग्येस् चेन ग्यीस् ञिन छेन दुस् डुग तु
बुद्ध-चक्षु द्वारा अहोरात्र छह बार

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་ཡིད་ལ་གང་དྲན་པའི། །
सेम चेन कुन ग्यि यिद् ल गङ डेन पई
सर्वसत्त्वचित्त में जो भी स्मृति-

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱིས་ངག་ཏུ་གང་སྨྲས་ཚིག །
सेम चेन कुन ग्यीस् ङग तु गङ मेस् छिग
समस्त सत्त्वों द्वारा जो भी वाक्-कथित-पद

ཀུན་མཁྱེན་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कुन ख्येन ह़ोद् पग मेद् ल छग छल लो
नमन है सर्वज्ञ अमिताभ को।7।

ཆོས་སྤངས་མཚམས་མེད་བྱས་པ་མ་གཏོགས་པ། །
छोस् पङ छम मेद् छेस् प म तोग प
धर्म त्यागने वाले आनन्तर्य कर्म-कर्ता के अतिरिक्त

བདེ་བ་ཅན་དེར་སྐྱེ་བའི་སྨོན་ལམ་གྲུབ། །
दे व चेन देर क्ये बई मोन लम डुप
प्रणिधान सिद्ध होता- उस सुखावती में पैदा होने का

འདྲེན་པ་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
डेन प ह्योद् पग मेद् ल छग छ़ल लो
नमन है नायक अमिताभ को।8।

མྱ་ངན་མི་འདའ་ད་ལྟ་མངོན་སུམ་བཞུགས། །
न्य ङेन मि दा द त ङोन सुम शुग
निर्वाण प्राप्त नहीं करते, अभी प्रत्यक्ष विराजमान हैं

ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མ་གཏོགས་པ། །
लेस क्यि नम पर मिन प म तोग प
कर्म-विपाक वाले को छोड़

དུས་མིན་འཆི་བ་མ་ལུས་བཟློག་པར་གསུངས། །
दुस् मिन छि व म लुस् दोग पर सुङ
कहा है- 'अशेष असमय-मृत्यु निवारण होता'

སྟོང་གསུམ་འཇིག་རྟེན་རབ་འབྱམས་གྲངས་མེད་པ། །
तोङ सुम जिग तेन रप छम डङ मेद् प
त्रिसाहस्र अनेक अन्य लोकों को

འོད་དཔག་མེད་པའི་མཚན་དང་བདེ་བ་ཅན། །
ह्योद् पग मेद् पई छ़ेन दङ दे व चेन
अमिताभ का नाम और सुखावती

དེ་ནི་དེ་བས་བསོད་ནམས་ཆེ་བར་གསུངས། །
दे नि दे वे सोद् नम छे बर सुङ
कहा है- 'वह तो उससे अधिक पुण्य वाला है'

ཁྱེད་ལ་དད་ཅིང་སྨོན་ལམ་བཏབ་ཚད་ཀུན། །
ख्येद् ल दे चिङ मोन लम तप छे कुन
आपमें श्रद्धाकर सभी प्रणिधान करने वाले

བར་དོར་ཕྱོན་ནས་ཞིང་དེར་འདྲེན་པར་གསུངས། །
बर दोर छोन नेस् शिङ देर डेन पर सुङ
कहा है- 'अन्तराभव में आकर उस क्षेत्र में तारते हैं'

ཁྱེད་ཀྱི་སྐུ་ཚེ་བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་དུ། །
ख्येद् क्यि कु छे कल प डङ मेद् दु
आपकी आयु असंख्य-कल्प पर्यन्त

ཁྱེད་ལ་རྩེ་གཅིག་གུས་པས་གསོལ་བཏབ་ན། །
ख्येद् ल त्से चिग गुस् पेस् सोल तप न
एकाग्र हो आपको आदरपूर्वक अध्येषणा करें तो

ཚེ་ཟད་པ་ཡང་ལོ་བརྒྱ་ཐུབ་པ་དང་། །
छ़े ज़े प यङ लो ग्य थुप प दङ
आयु-क्षय वाला भी शतायु होता

མགོན་པོ་ཚེ་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
गोन पो छ़े पग मेद् ल छग छ़ल लो
नमन है नाथ-अमितायु को।9।

རིན་ཆེན་གྱིས་བཀང་སྦྱིན་པ་ཕྱིན་པ་བས། །
रिन छेन ग्यीस् कङ छिन प छिन प वे
रत्नों से भर दान करने से अधिक

ཐོས་ནས་དད་པས་ཐལ་མོ་སྦྱར་བྱས་ན། །
थोस् नेस् दे पेस् थल मो छर छेस् न
इसे सुन श्रद्धा से अञ्जलिबद्ध हों तो

དེ་ཕྱིར་འོད་དཔག་མེད་ལ་གུས་ཕྱག་འཚལ། །
दे छिर ह्योद् पग मेद् ल गुस् छग छ़ल
अतः अमिताभ को नमन करता हूँ।10।

གང་ཞིག་འོད་དཔག་མེད་པའི་མཚན་ཐོས་ནས། །
गङ शिग ह्रोद् पग मेद् पई छ़ेन थोस् नेस्
जो अमिताभ का नाम श्रवण कर

ཁ་ཞེ་མེད་པར་སྙིང་ཁོང་རུས་པའི་གཏིང་། །
ख शे मेद् पर ञिङ खोङ रुस् पई तिङ
निष्कपट हृदय के भीतरी तल से

ལན་གཅིག་ཙམ་ཞིག་དད་པ་སྐྱེས་པ་ན། །
लेन चिग त्ज़म शिग दे प क्येस् प न
मात्र एक बार श्रद्धा उत्पन्न हो तो

དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་ལམ་ལས་ཕྱིར་མི་ལྡོག །
दे नि छङ छुप लम लेस छिर मि दोग
वह बोधिमार्ग से लौटता नहीं है

མགོན་པོ་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
गोन पो ह्रोद् पग मेद् ल छग छ़ल लो
नमन है नाथ अमिताभ को।11।

སངས་རྒྱས་འོད་དཔག་མེད་པའི་མཚན་ཐོས་ནས། །
सङ ग्येस् ह्रोद् पग मेद् पई छ़ेन थोस् नेस्
बुद्ध अमिताभ का नाम श्रवण करने पर

དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོ་མ་ཐོབ་བར། །
दे नि छङ छुप ञिङ पो म थोप बर
वह बोधिगर्भ की प्राप्ति नहीं होने तक

བུད་མེད་མི་སྐྱེ་རིགས་ནི་བཟང་པོར་སྐྱེ། །
बुद् मेद् मि क्ये रिग नि ज़ङ पोर क्ये
स्त्री में उत्पन्न न हो, सु-जाति मे पैदा होता

ཚེ་རབས་ཀུན་ཏུ་ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་དག་འགྱུར། །
छ़े रप कुन तु छ़ुल ठिम नम दग ग्युर
सभी जन्मों में विशुद्ध-शील होगा

བདེ་གཤེགས་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
दे शेग ह्रोद् पग मेद् ल छग छ़ल लो
नमन है सुगत अमिताभ को।12।

བདག་གི་ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་དགེ་རྩར་བཅས། །
दग गि लुस् दङ लोङ चोद् गे त्ज़र चेस्
मेरी काय और सम्पत्ति, कुशलमूल सहित

དངོས་སུ་འབྱོར་བའི་མཆོད་པ་ཅི་མཆིས་པ། །
ङोस् सु छोर बई छोद् प चि छीस् प
जो भी प्रत्यक्ष सम्पन्न-पूजा है

ཡིད་སྤྲུལ་བཀྲ་ཤིས་རྫས་རྟགས་རིན་ཆེན་བདུན། །
यिद् टुल ट शीस् ज़ेस् तग रिन छेन दुन
चित्त-निर्मित सप्त-रत्न, मंगल द्रव्य-चिह्न

གདོད་ནས་གྲུབ་པ་སྟོང་གསུམ་འཇིག་རྟེན་གྱི། །
दोद् नेस् ड्रुप प तोङ सुम जिग तेन ग्यि
अनादि सिद्ध त्रिसाहस्र लोकों में

གླིང་བཞི་རི་རབ་ཉི་ཟླ་བྱེ་བ་བརྒྱ། །
लिङ शि रि रप ञि द छे व ग्य
चतुर्द्वीप, सुमेरु, सूर्य-चन्द्र शत-कोटि

ལྷ་ཀླུ་མི་ཡི་ལོངས་སྤྱོད་ཐམས་ཅད་ཀུན། །
ल्ह लु मि यि लोङ चोद् थम चे कुन
देव-नाग, मनुष्यों के सभी सम्पत्तियाँ

བློ་ཡིས་བླངས་ཏེ་འོད་དཔག་མེད་ལ་འབུལ། །
लो यीस् लङ ते ह्रोद् पग मेद् ल बुल
चित्त द्वारा ग्रहण कर अमिताभ को भेंट करता हूँ

བདག་ལ་ཕན་ཕྱིར་ཐུགས་རྗེའི་སྟོབས་ཀྱིས་བཞེས། །
दग ल फेन छिर थुग जे तोप क्यीस् शेस्
मेरे हित हेतु करुणा-बल से स्वीकार करें।13।

ཕ་མས་ཐོག་དྲངས་བདག་སོགས་འགྲོ་ཀུན་གྱི། །
फ मेस थोग डङ दग सोग डो कुन ग्यि
माता-पिता सहित मुझ आदि सभी प्राणियों के

ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་ད་ལྟའི་བར། །
थोग म मेद् पई दुस् नेस् द तई बर
अनादि काल से वर्तमान पर्यन्त

སྲོག་བཅད་མ་བྱིན་བླངས་དང་མི་ཚངས་སྤྱོད། །
सोग चे म छिन लङ दङ मि छ्ङ चोद्
प्राणि-हिंसा, चोरी और अब्रह्मचर्या

ལུས་ཀྱི་མི་དགེ་གསུམ་པོ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
लुस् क्यि मि गे सुम पो थोल लो शग
कायिक त्रिविध अकुशलों की देशना करता हूँ।14।

རྫུན་དང་ཕྲ་མ་ཚིག་རྩུབ་ངག་འཁྱལ་བ། །
ज़ुन दङ ठ म छ्गि त्रुप ङग ख्यल व
झूठ, चुगली, कठोर-वचन, बकवास

ངག་གི་མི་དགེ་བཞི་པོ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
ङग गि मि गे शि पो थोल लो शग
वाचिक चतुर्विध अकुशलों की देशना करता हूँ।15।

བརྣབ་སེམས་གནོད་སེམས་ལོག་པར་ལྟ་བ་སྟེ། །
नप सेम नोद् सेम लोग पर त व ते
अभिध्या, हिंसा-चित्त, मिथ्या-दर्शन

ཡིད་ཀྱི་མི་དགེ་གསུམ་པོ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
यिद् क्यि मि गे सुम पो थोल लो शग
मानसिक त्रिविध अकुशलों की देशना करता हूँ।16।

ཕ་མ་སློབ་དཔོན་དགྲ་བཅོམ་བསད་པ་དང་། །
फ म लोप पोन ड चोम से प दङ
माता-पिता, आचार्य, अर्हत्-वध

རྒྱལ་བའི་སྐུ་ལ་ངན་སེམས་སྐྱེས་པ་དང་། །
ग्यल वई कु ल ङेन सेम क्येस् प दङ
जिन-काय के प्रति दुष्टचित्तोत्पाद

མཚམས་མེད་ལྔ་ཡི་ལས་བསགས་མཐོལ་ལོ་བཤགས།།
छ्म मेद् ङ यि लेस सग थोल लो शग
पाँच आनन्तर्य-कर्म-संचय की देशना करता हूँ।17।

དགེ་སློང་དགེ་ཚུལ་བསད་དང་བཙུན་མ་ཕབ། །
गे लोङ गे छुल से दङ त्सुन म फप
भिक्षु-श्रामणेर-वध, भिक्षुणी की च्युति,

སྐུ་གཟུགས་མཆོད་རྟེན་ལྷ་ཁང་བཤིག་ལ་སོགས། །
कु ज़ुग छोद् तेन ल्ह खङ शिग ल सोग
मूर्ति, स्तूप, देवालय-नष्ट आदि

ཉེ་བའི་མཚམས་མེད་སྡིག་བྱས་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
ञे बई छ्म मेद् दिग छेस् थोल लो शग
उप-आनन्तर्य कृत-पाप-कर्मों की देशना करता हूँ।18।

དཀོན་མཆོག་ལྷ་ཁང་གསུང་རབ་རྟེན་གསུམ་སོགས། །
कोन छोग ल्ह खङ सुङ रप तेन सुम सोग
त्रिरत्न, देवालय, प्रवचन, त्रि-अधिष्ठानादि

དཔང་ཞེས་ཚད་བཙུགས་མནའ་ཟོས་ལ་སོགས་པ། །
पङ शेस् छे त्सुग मना ज़ोस् ल सोग प
साक्षी हैं- ऐसा प्रमाण रख, कसमादि जो खाये

ཆོས་སྤངས་ལས་ངན་བསགས་པ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
छोस् पङ लेस ङेन सग प थोल लो शग
धर्म-प्रहाण (रूपी) दुष्कर्म-संचय की देशना करता हूँ।19।

ཁམས་གསུམ་སེམས་ཅན་བསད་ལས་སྡིག་ཆེ་བ། །
खम सुम सेम चेन से लेस दिग छे व
त्रिधातु (पर्यन्त) सत्त्व-हत्या से अधिक पाप

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལ་སྐུར་པ་བཏབ། །
छङ छुप सेम पा नम ल कुर व तप
बोधिसत्त्वों का अपवाद करना है

དགེ་བའི་ཕན་ཡོན་སྡིག་པའི་ཉེས་དམིགས་དང་། །
गे बई फेन योन दिग पई ञेस् मिग दङ
कुशल-अनुशंसा, पाप का आदीनव एवं

ཐོས་ཀྱང་མི་བདེན་བཤད་ཚོད་ཡིན་བསམ་པ། །
थोस् क्यङ मि देन शे छ़ोद् यिन सम प
सुन कर भी- असत्य, कथन मात्र जो सोचा

ཐར་མེད་ལས་ངན་བསགས་པ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
थर मेद् लेस ङेन सग प थोल लो शग
अमुक्त दुष्कर्म-संचय की देशना करता हूँ।21।

སྤང་ལྟུང་སོར་བཤགས་ཉེས་བྱས་སྡེ་ཚན་ལྔ། །
पङ तुङ सोर शग ञेस् छेस् दे छ़ेन ङ
नैसर्गिकापत्ति, प्रतिदेशना, दुष्कृत पंच-वर्ग

ནག་པོའི་ཆོས་བཞི་ལྟུང་བ་ལྔ་ལྔ་བརྒྱད། །
नग पोइ छोस् शि तुङ व ङ ङ ग्ये
चार कृष्ण-धर्म, आपत्ति- पाँच. पाँच, आठ

རྩ་ལྟུང་བཅུ་བཞི་ཡན་ལག་སྦོམ་པོ་བརྒྱད། །
त़्ज़ तुङ चु शि येन लग बोम पो ग्ये
मूलापत्ति- चौदह, अष्ट- स्थूल-अवयव

སྡོམ་པ་མ་ཞུས་མི་དགེའི་ལས་བྱས་པ། །
दोम प म शुस् मि गे लेस छेस् प
संवरादान न कर अकुशल-कर्म किये हैं

རང་བཞིན་ཁ་ན་མ་ཐོའི་སྡིག་པ་སྟེ། །
रङ शिन ख न म थोइ दिग प ते
प्रकृति-अवद्य पाप हैं (ये)

དོན་མེད་སྡིག་ཆེན་བསགས་པ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
दोन मेद् दिग छेन सग प थोल लो शग
व्यर्थ महापाप-संचय की देशना करता हूँ।20।

དམྱལ་བའི་སྡུག་བསྔལ་ཚེ་ཚད་ལ་སོགས་པ། །
न्यल बई दुग ङल छ़े छ़े ल सोग प
नरक के दुःख, आयु-परिमाणादि

མཚམས་མེད་ལྔ་བས་ཐུ་བའི་ལས་ངན་པ། །
छ़म मेद् ङ वे थु बई लेस ङेन प
पंच-आनन्तर्यों से अधिक दुष्कर्म वाला

ཕམ་པ་བཞི་དང་ལྷག་མ་བཅུ་གསུམ་དང་། །
फम प शि दङ ल्हग म चु सुम दङ
चार पाराजिक एवं शेषापत्ति तेरह

སོ་ཐར་ཚུལ་ཁྲིམས་འཆལ་བ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
सो थर छुल ठिम छल व थोल लो शग
प्रातिमोक्ष दुःशील की देशना करता हूँ।22।

བྱང་སེམས་བསླབ་པ་ཉམས་པ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
छङ सेम लप प ञम प थोल लो शग
बोधिसत्त्व-शिक्षा-आपत्ति की देशना करता हूँ।23।

གསང་སྔགས་དམ་ཚིག་ཉམས་པ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
सङ ङग दम छ़िग ञम प थोल लो शग
गुह्यतन्त्र-समयापत्ति की देशना करता हूँ।24।

མི་ཚངས་སྤྱོད་དང་ཆང་འཐུང་ལ་སོགས་པ། །
मि छ़ङ चोद् दङ छङ थुङ ल सोग प
अब्रह्मचर्या और मद्यपान आदि

སྡིག་པ་སྡིག་ཏུ་མ་ཤེས་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
दिग प दिग तु म शेस् थोल लो शग
पाप-देशना नहीं जाना, (आज) देशना करता हूँ।25।

སྐྱབས་སྡོམ་དབང་བསྐུར་ལ་སོགས་ཐོབ་ན་ཡང་། །
क्यप दोम वङ कुर ल सोग थोप न यङ
शरण-संवर, अभिषेकादि प्राप्त होने पर भी

བཅས་པའི་ལྟུང་བ་ཕོག་པ་མཐོལ་ལོ་བཤགས། །
चेस् पई तुङ व फोग प थोल लो शग
प्रतिक्षेपणापत्ति की देशना करता हूँ।26।

སྔར་བྱས་སྡིག་པ་ཁོང་དུ་དུག་སོང་ལྟར། །
ङर छेस् दिग प खोङ दु दुग सोङ तर
पूर्वकृत-पाप विषपान के समान है

ཕྱིན་ཆད་སྡོམ་སེམས་མེད་ན་མི་འདག་པས། །
छिन छे दोम सेम मेद् न मि दग पेस्
पश्चात् संवर-चित्त न हों तो शुद्ध नहीं होता

ད་ནས་མི་བགྱིད་སེམས་ལ་དམ་བཅའ་བཟུང་། །
द नेस् मि ग्यिद् सेम ल दम चा ज़ुङ
अबसे नहीं करुँगा-’ ऐसे चित्त मे प्रतिज्ञा करता हूँ

བདག་རྒྱུད་ཡོངས་སུ་དག་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
दग ग्युद् योङ सु दग पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, मेरी सन्तति परिशुद्ध हों।28।

དེ་ལ་ཕྲག་དོག་མི་དགེའི་སེམས་སྤངས་ནས། །
दे ल ठग दोग मि गे सेम पङ नेस्
उसके प्रति इर्ष्या-अकुशल-चित्त त्याग कर

དེ་ཡི་བསོད་ནམས་མཉམ་དུ་ཐོབ་པར་གསུངས། །
दे यि सोद् नम ञम दु थोप पर सुङ
उक्त है- ‘उसके समान पुण्य प्राप्त होता है’।29।

དགེ་བ་གང་བསྒྲུབས་ཀུན་ལ་ཡི་རང་ངོ་། །
गे व गङ डुप कुन ल यि रङ ङो
जो भी कुशल साधित हैं, सभी का अनुमोदन है

དེ་ཡི་སྡོམ་པ་དམ་ཚིག་བསྲུང་མ་ཤེས། །
दे यि दोम प दम छ़िग सुङ म शेस्
उस संवर और समय-पालन में अज्ञान

འགྱོད་པ་མེད་ན་བཤགས་པས་མི་འདག་པས། །
ग्योद् प मेद् न शग पेस् मि दग पेस्
पश्चात्ताप न हों तो देशना (मात्र) से शुद्ध नहीं होता

ངོ་ཚ་འཇིགས་སྐྲག་འགྱོད་པ་ཆེན་པོས་བཤགས། །
ङो छ़ जिग टग ग्योद् प छेन पोस् शग
लज्जा, भय-डर, महापश्चात्ताप द्वारा देशना करता हूँ।27।

ཕྱིན་ཆད་སྲོག་ལ་བབས་ཀྱང་མི་དགེའི་ལས། །
छिन छे सोग ल बप क्यङ मि गे लेस
अतः ‘इसके बाद प्राण हेतु भी अकुशल-कर्म

བདེ་གཤེགས་འོད་དཔག་མེད་པ་སྲས་བཅས་ཀྱིས། །
दे शेग ह़ोद् पग मेद् प सेस् चेस् क्यीस्
सुगत अमिताभ, सपुत्रों द्वारा

གཞན་གྱིས་དགེ་བ་བྱེད་པ་ཐོས་པའི་ཚེ། །
शेन ग्यीस् गे व छेद् प थोस् पई छ़े
पर (अन्य) द्वारा कुशल-कार्य के श्रवण पर

སྙིང་ནས་དགའ་བས་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ན། །
ञिङ नेस् गा वे जेस् सु यि रङ न
हृदय से प्रसन्न हो अनुमोदन करें तो

དེ་ཕྱིར་འཕགས་པ་རྣམས་དང་སོ་སྐྱེ་ཡིས། །
दे छिर फग प नम दङ सो क्ये यीस्
अतः आर्य और पृथग्जनों द्वारा

བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་མཆོག་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་ནས། །
ल मेद् छङ छुप छोग तु सेम क्येद् नेस्
अनुत्तर परम बोधिचत्तोत्पाद करके

འགྲོ་དོན་རྒྱ་ཆེན་མཛད་ལ་ཡི་རང་ངོ་། །
डो दोन ग्य छेन ज़े ल यि रङ ङो
विपुल सत्त्वार्थ-कर्ताओं का अनुमोदन है।30।

མི་དགེ་བཅུ་པོ་སྤངས་པ་དགེ་བ་བཅུ། །
मि गे चु पो पङ प गे व चु
दशाकुशल का त्याग दश-कुशल (ये) हैं-

གཞན་གྱི་སྲོག་བསྐྱབ་སྦྱིན་པ་གཏོང་བ་དང་། །
शेन ग्यि सोग क्यप छिन प तोङ व दङ
पर प्राण-रक्षा, दान का करना,

སྡོམ་པ་སྲུང་ཞིང་བདེན་པར་སྨྲ་བ་དང་། །
दोम प सुङ शिङ देन पर म व दङ
संवर पालन कर, सत्य का कहना,

འཁོན་པ་བསྡུམ་དང་ཞི་དུལ་དྲང་པོར་སྨྲ། །
खोन प बदुम दङ शि दुल डङ पोर म
वैरियों में समझौता, शान्त-दम-सत्य-कथन,

དོན་དང་ལྡན་པའི་གཏམ་བརྗོད་འདོད་པ་ཆུང་། །
दोन दङ देन पई तम जोद् दोद् प छुङ
अर्थ-युक्त वार्ता, अल्पेच्छा,

བྱམས་དང་སྙིང་རྗེ་སྒོམ་ཞིང་ཆོས་ལ་སྤྱོད། །
छम दङ ञिङ जे गोम शिङ छोस् ल चोद्
मैत्री और करुणा-भावना कर धर्मचर्या

དགེ་བ་དེ་རྣམས་ཀུན་ལ་ཡི་རང་ངོ་། །
गे व दे नम कुन ल यि रङ ङो
उन सभी पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ।31।

ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་རབ་འབྱམས་ཐམས་ཅད་ན། །
छोग चुइ जिग तेन रप छम थम चे न
दश-दिग् अनन्त सभी लोकों में

རྫོགས་སངས་རྒྱས་ནས་རིང་པོར་མ་ལོན་པར། །
ज़ोग सङ ग्येस् नेस् रिङ पोर म लोन पर
सम्बुद्ध हुये अभी बहुत देर नहीं हुये

དེ་དག་རྣམས་ལ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ནི། །
दे दग नम ल छोस् क्यि खोर लो नि
उन लोगों से- 'विपुल धर्मचक्र का

རྒྱ་ཆེན་མྱུར་དུ་བསྐོར་བར་བདག་གིས་བསྐུལ། །
ग्य छेन न्युर दु कोर बर दग गीस् कुल
शीघ्र प्रवर्त्तन करें-' मैं अध्येषणा करता हूँ

མངོན་ཤེས་ཐུགས་ཀྱིས་དེ་དོན་མཁྱེན་པར་གསོལ། །
ङोन शेस् थुग क्यीस् दे दोन ख्येन पर सोल
प्रार्थना है, इस अर्थ को अभिज्ञा-चित्त से जानें।32।

སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་བསྟན་འཛིན་དགེ་བའི་བཤེས། །
सङ ग्येस् छङ सेम तेन ज़िन गे बई शेस्
बुद्ध-बोधिसत्त्व, शासनधर-कुशलमित्र

མྱ་ངན་འདའ་བར་བཞེད་ཀུན་དེ་དག་ལ། །
न्य ङेन दा बर शेद् कुन दे दग ल
निर्वाण-आशय-युक्त उन सभी लोगों से

མྱ་ངན་མི་འདའ་བཞུགས་པར་གསོལ་བ་འདེབས། །
न्य ङेन मि दा शुग पर सोल व देप
अध्येषणा है- निर्वाण प्राप्त न कर स्थित हों।33।

འདིས་མཚོན་བདག་གི་དུས་གསུམ་དགེ་བ་རྣམས། །
दीस् छोन दग गि दुस् सुम गे व नम
यह सहित मेरे त्रिकाल पुण्य सब

འགྲོ་བ་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་དོན་དུ་བསྔོ། །
डो व सेम चेन कुन ग्यि दोन दु ङो
प्राणी सर्वसत्त्वों के लिये परिणामित है

ཀུན་ཀྱང་བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་མྱུར་ཐོབ་ནས། །
कुन क्यङ ल मेद् छङ छुप न्युर थोप नेस्
सभी शीघ्र अनुत्तर-बोधि को प्राप्त कर

ཁམས་གསུམ་འཁོར་བ་དོང་ནས་སྤྲུགས་གྱུར་ཅིག །
खम सुम खोर व दोङ नेस् टुग ग्युर चिग
त्रिधातु-संसार को तल से समाप्त करें।34।

དེ་ཡི་དགེ་བ་བདག་ལ་མྱུར་སྨིན་ནས། །
दे यि गे व दग ल न्युर मिन नेस्
इसका यह पुण्य मुझमें शीघ्रोपचित होकर

ཚེ་འདིར་དུས་མིན་འཆི་བ་བཅོ་བརྒྱད་ཞི། །
छे दिर दुस् मिन छि व चो ग्ये शि
इस जन्म में- अठारह असमय-मृत्यु शान्त हों

ནད་མེད་ལང་ཚོ་རྒྱས་པའི་ལུས་སྟོབས་ལྡན། །
ने मेद् लङ छो ग्येस् पई लुस् तोप देन
निरोग, विपुल-यौवन, बलवान्-काय,

དཔལ་འབྱོར་འཛད་མེད་དབྱར་གྱི་གངྒཱ་ལྟར། །
पल छोर ज़े मेद् यर ग्यि गङ्गा तर
श्री-सम्पत्ति वर्षा-ऋतु के गङ्गावत अक्षय रहें।35।

བདུད་དགྲའི་འཚེ་བ་མེད་ཅིང་དམ་ཆོས་སྤྱོད། །
दुद् डई छे व मेद् चिङ दम छोस् चोद्
मार-शत्रु-हिंसा से रहित हो, सद्धर्म (का) आचरण करूँ

བསམ་པའི་དོན་ཀུན་ཆོས་ལྡན་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ། །
सम पई दोन कुन छोस् देन यिद् शिन डुप
सर्व-आशयार्थ धर्म-युक्त हो यथेच्छ सिद्ध हो जायें

བསྟན་དང་འགྲོ་ལ་ཕན་ཐོགས་རྒྱ་ཆེན་འགྲུབ། །
तेन दङ डो ल फेन थोग ग्य छेन डुप
शासन तथा प्राणियों का विपुल लाभ सिद्ध हों

མི་ལུས་དོན་དང་ལྡན་པར་འགྲུབ་པར་ཤོག །
मि लुस् दोन दङ देन पर डुप पर शोग
नर-काय अर्थ-युक्त सिद्ध हों।36।

བདག་དང་བདག་ལ་འབྲེལ་ཐོགས་ཀུན། །
दग दङ दग ल डेल थोग कुन
मैं और मेरे से सम्बद्ध सब

འདི་ནས་ཚེ་འཕོས་གྱུར་མ་ཐག །
दि नेस् छे फोस् ग्युर म थग
यहाँ आयु-च्युति होने के अनन्तर

སྤྲུལ་པའི་སངས་རྒྱས་འོད་དཔག་མེད། །
टुल पई सङ ग्येस् होद् पग मेद्
निर्मित (आप) बुद्ध-अमिताभ

དགེ་སློང་དགེ་འདུན་འཁོར་གྱིས་བསྐོར། །
गे लोङ गेन दुन खोर ग्यीस् कोर
भिक्षु-संघ परिवार से परिवृत्त

མདུན་དུ་མངོན་སུམ་འབྱོན་པར་ཤོག །
दुन दु ङोन सुम छोन पर शोग
प्रत्यक्ष (मेरे) सामने आ जायें।37।

དེ་མཐོང་ཡིད་དགའ་སྣང་བ་སྐྱིད། །
दे थोङ यिद् गा नङ व क्यिद्
उनके दर्शन पर चित्तानन्द, सुखाभास

ཤི་བའི་སྡུག་བསྔལ་མེད་པར་ཤོག །
शि बई दुग ङल मेद् पर शोग
मृत्यु-दुःख से रहित हो जाऊँ।38।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མཆེད་བརྒྱད་ནི། །
छङ छुप सेम पा छेद् ग्ये नि
बोधिसत्त्व अष्ट-बन्धु लोग

རྫུ་འཕྲུལ་སྟོབས་ཀྱིས་ནམ་མཁར་ཕྱིན། །
ज़ु ठुल तोप क्यीस् नम खर छोन
ऋद्धि-बल से नभ में आयें

ལམ་སྟོན་ལམ་སྣ་འདྲེན་པར་ཤོག །
लम तोन लम न डेन पर शोग
पथ-प्रदर्शक बन मार्ग-दर्शन करें।39।

ལྷ་མིའི་བདེ་སྐྱིད་མི་རྟག་འགྱུར། །
ल्ह मी दे क्यिद् मि तग ग्युर
देव-नर सुखोत्सव अनित्य हैं

ཐོག་མ་མེད་ནས་ད་ལྟའི་བར། །
थोग म मेद् नेस् द तई बर
अनादि से वर्तमान पर्यन्त

དེ་ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दे ल क्यो व क्ये बर शोग
इसमें खिन्नता पैदा हो जायें।41।

སྐྱེ་རྒ་ན་འཆི་གྲངས་མེད་མྱོང་། །
क्ये ग न छि डङ मेद् न्योङ
जाति, जरा, रोग, मृत्यु असंख्य भोगते

མི་དང་ལྷ་ཡི་བདེ་སྐྱིད་འདི། །
मि दङ ल्ह यि दे क्यिद् दि
मनुष्य और देव का यह सुखोत्सव्

འདོད་པ་སྤུ་ཙམ་མེད་པར་ཤོག །
दोद् प पु त्र्म मेद् पर शोग
(अतः यहाँ) केश-मात्र भी आसक्ति न रहें।42।

མི་རྟག་སྒྱུ་མ་རྨི་ལམ་བཞིན། །
मि तग ग्यु म मि लम शिन
अनित्य हैं माया (और) स्वप्न जैसे

བདེ་བ་ཅན་དུ་འགྲོ་བ་ཡི། །
दे व चेन दु डो व यि
सुखावती में गमन करने का

ངན་སོང་སྡུག་བསྔལ་བཟོད་གླག་མེད། །
ङेन सोङ दुग ङ्ल ज़ोद् लग मेद्
दुर्गति-दुःख असहनीय हैं

དེ་ལ་སྐྲག་སེམས་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दे ल टग सेम क्ये बर शोग
इनमे भय-चित्त पैदा हो जायें।40।

འཁོར་བ་འདི་ན་ཡུན་རེ་རིང་། །
खोर व दि न युन रे रिङ
इस संसार में दीर्घकाल (स्थित) रहे

མི་ནས་མི་རུ་སྐྱེ་ཚོག་ཀྱང་། །
मि नेस् मि रु क्ये छोग क्यङ
नर से नर में पैदा हो सकते, पर

དུས་ངན་སྙིགས་མར་བར་ཆད་མང་། །
दुस् ङेन ञिग मर बर छे मङ
दुष्काल कषाय में बाधा अधिक हैं

དུག་དང་འདྲེས་པའི་ཟས་བཞིན་དུ། །
दुग दङ डेस् पई ज़ेस् शिन दु
विष-मिश्रित-खाद्य के समान है

ཉེ་དུ་ཟས་ནོར་མཐུན་གྲོགས་རྣམས། །
ञे दु ज़ेस् नोर थुन डोग नम
सम्बन्धी, खाद्य-धन (और) समान-मित्र

ཆགས་ཞེན་སྤུ་ཙམ་མེད་པར་ཤོག །
छग शेन पु त्र्म मेद् पर शोग
रागासक्ति केश-मात्र भी न हों।43।

ས་ཆ་ཡུལ་རིས་ཁང་ཁྱིམ་རྣམས། །
स छ युल रीस् खङ ख्यिम नम
भूमि, क्षेत्र-कल्पना, घर-गृह आदि

བདེན་པར་མ་གྲུབ་ཤེས་པར་ཤོག །
देन पर म डुप शेस् पर शोग
'सत् नहीं हैं-' ऐसा जानूँ।44।

ཉེས་ཆེན་བཙོན་ནས་ཐར་པ་བཞིན། །
ञेस् छेन ज़ोन नेस् थर प शिन
महादोषी के कारागार से मुक्त होने सा

ཕྱི་ལྟས་མེད་པར་འབྲོས་པར་ཤོག །
छि तेस् मेद् पर डोस् पर शोग
पीछे न देखकर भागता जाऊँ।45।

བྱ་རྒོད་རྙི་ནས་ཐར་བ་བཞིན། །
छ गोद् ञि नेस् थर व शिन
गृध्र का, जाल से मुक्त होने सा

འཇིག་རྟེན་ཁམས་ནི་གྲངས་མེད་པ། །
जिग तेन खम नि डङ मेद् प
लोकधातुओं की संख्या नहीं है

བདེ་བ་ཅན་དུ་ཕྱིན་པར་ཤོག །
दे व चेन दु छिन पर शोग
सुखावती (क्षेत्र) में चला जाऊँ।46।

མངོན་སུམ་བཞུགས་པའི་ཞལ་མཐོང་ནས། །
ङोन सुम शुग पई शल थोङ नेस्
प्रत्यक्ष बैठे का मुख-दर्शन कर

སྐྱེ་གནས་བཞི་ཡི་མཆོག་གྱུར་པ། །
क्ये नेस् शि यि छोग ग्युर प
चार योनियों में परम

རྨི་ལམ་ཡུལ་གྱི་ཁང་ཁྱིམ་ལྟར། །
मि लम युल ग्यि खङ ख्यिम तर
स्वप्न-विषय का घर-गृह जैसा

ཐར་མེད་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་ནས། །
थर मेद् खोर बई ग्य छो नेस्
अमुक्त संसार-सागर से (मैं)

བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་ཁམས་སུ། །
दे व चेन ग्यि शिङ खम सु
सुखावती के क्षेत्र-धातु में

ཆགས་ཞེན་འཁྲི་བ་ཀུན་བཅད་ནས། །
छग शेन ठि व कुन चे नेस्
रागासक्ति-रति का सर्वोच्छेद कर

ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ནམ་མཁའ་ལ། །
नुप क्यि छोग क्यि नम खा ल
पश्चिम-दिशा के आकाश (धातु) में

སྐད་ཅིག་ཡུད་ལ་བགྲོད་བྱས་ནས། །
के चिग युद् ल डोद् छेस् नेस्
क्षण-भर, पल में चलते हुये

དེ་རུ་སངས་རྒྱས་འོད་དཔག་མེད། །
दे रु सङ ग्येस् ह़ोद् पग मेद्
वहाँ पर बुद्ध अमिताभ

སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་དག་པར་ཤོག །
डिप प थम चे दग पर शोग
सर्वावरण शुद्ध हो जायें।47।

མེ་ཏོག་པདྨའི་སྙིང་པོ་ལ། །
मे तोग पेमाई ञिङ पो ल
पद्म-पुष्प के गर्भ में

བརྫུས་ཏེ་སྐྱེ་བ་ལེན་པར་ཤོག །
ज़ुस् ते क्ये व लेन पर शोग
उपपादुक पैदा हो जाऊँ।48।

མཚན་དཔེ་ལྡན་པའི་ལུས་ཐོབ་ཤོག །
छेन पे देन पई लुस् थोप शोग
लक्षणानुव्यञ्जित काय-प्राप्त हों।49।

ལོ་གྲངས་ལྔ་བརྒྱའི་བར་དག་ཏུ། །
लो डङ ङ ग्यई बर दग तु
वर्ष-संख्या पाँच सौ पर्यन्त

སངས་རྒྱས་གསུང་ནི་ཐོས་ན་ཡང་། །
सङ ग्येस् सुङ नि थोस् न यङ
बुद्ध-वाक् का श्रवण होने पर भी

སངས་རྒྱས་ཞལ་མཇལ་ཕྱི་བའི་སྐྱོན། །
सङ ग्येस् शल जल छि बई क्योन
बुद्ध-मुख दर्शन में देरी का दोष

སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་མེ་ཏོག་བྱེ། །
क्येस् म थग तु मे तोग छे
जाति अनन्तर पुष्प खिल जायें

བསོད་ནམས་སྟོབས་དང་རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས། །
सोद् नम तोप दङ ज़ु ठुल ग्यीस्
पुण्य-बल और प्रातिहार्य द्वारा

བསམ་མི་ཁྱབ་པར་སྤྲོས་བྱས་ནས། །
सम मि ख्यप पर टोस् छेस् नेस्
अचिन्त्य निर्मित करके

དེ་ཚེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེས། །
दे छे दे शिन शेग प देस्
तब उस तथागत द्वारा

སྐད་ཅིག་ཉིད་ལ་ལུས་རྫོགས་ནས། །
के चिग ञिद् ल लुस् ज़ोग नेस्
क्षण-भर में काय-पूर्ण हो

མི་སྐྱེ་དོགས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གྱིས། །
मि क्ये दोग पई थे छोम ग्यीस्
उत्पत्ति नहीं होगी ? ऐसी संशय-विचिकित्सा द्वारा

ནང་དེར་བདེ་སྐྱིད་ལོངས་སྤྱོད་ལྡན། །
नङ देर दे क्यिद् लोङ चोद् देन
उसके भीतर सुखोत्सव का भोग करते

མེ་ཏོག་ཁ་ནི་མི་བྱེ་བས། །
मे तोग ख नि मि छे वे
पुष्प-मुख उद्घाटित नहीं होता

དེ་འདྲ་བདག་ལ་མི་འབྱུང་ཤོག །
दे ड दग ल मि छुङ शोग
ऐसा मेरे साथ नहीं बीतें।50।

འོད་དཔག་མེད་པའི་ཞལ་མཐོང་ཤོག །
ह़ोद् पग मेद् पई शल थोङ शोग
अमिताभ का मुख-दर्शन हों।51।

ལག་པའི་མཐིལ་ནས་མཆོད་པའི་སྤྲིན། །
लग पई थिल नेस् छोद् पई टिन
हस्त-तल से पूजा का मेघ

སངས་རྒྱས་འཁོར་བཅས་མཆོད་པར་ཤོག །
सङ ग्येस् खोर चेस् छोद् पर शोग
सपरिवार-बुद्ध का पूजा करूँ।52।

ཕྱག་གཡས་བརྐྱངས་ནས་མགོ་ལ་བཞག །
छग येस् क्यङ नेस् गो ल शग
दक्षिण-हस्त फैला शीर्ष पर रख

བྱང་ཆུབ་ལུང་བསྟན་ཐོབ་པར་ཤོག །
छङ छुप लुङ तेन थोप पर शोग
बोधि का व्याकरण प्राप्त करूँ।53।

རང་རྒྱུད་སྨིན་ཅིང་གྲོལ་བར་ཤོག །
रङ ग्युद् मिन चिङ डोल वर शोग
स्व-सन्तति उपचित हो मुक्त हो जाऊँ।54।

རྒྱལ་སྲས་ཐུ་བོ་རྣམ་གཉིས་ཀྱིས། །
ग्यल सेस् थु बो नम ञीस् क्यीस्
प्रमुख जिनपुत्र दोनों द्वारा

ཉིན་རེ་བཞིན་དུ་ཕྱོགས་བཅུ་ཡི། །
ञिन रे शिन दु छोग चु यि
प्रत्येक दिन दसों दिशाओं के

འོད་དཔག་མེད་པ་མཆོད་པ་དང་། །
ह़ोद् पग मेद् प छोद् प दङ
अमिताभ का पूजा करते हैं।56।

དེ་དག་ཀུན་ལ་བསྙེན་བཀུར་ཞིང་། །
दे दग कुन ल ञेन कुर शिङ
उन सबों का सत्कार करके

རྫུ་འཕྲུལ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཡིས། །
ज़ु ठुल थोग प मेद् प यीस्
अप्रतिहत प्रातिहार्य द्वारा

ལས་རབ་རྫོགས་དང་སྟུག་པོ་བཀོད། །
लेस रप ज़ोग दङ तुग पो कोद्
परम-कर्मापूर्ण तथा अकनिष्ठ

མི་བསྐྱོད་རིན་འབྱུང་དོན་ཡོད་གྲུབ། །
मि क्योद् रिन छुङ दोन योद् डुप
अक्षोभ्य, रत्नसम्भव, अमोघसिद्धि

ཟབ་དང་རྒྱ་ཆེའི་ཆོས་ཐོས་ནས། །
ज़प दङ ग्य छे छोस् थोस् नेस्
गम्भीर और उदार धर्म सुनकर

སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་མཐུ་ཆེན་ཐོབ། །
चेन रेस ज़िग दङ थु छेन थोप
अवलोकितेश्वर और महास्थामप्राप्त

བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཤིང་རྗེས་བཟུང་ཤོག །
छिन ग्यीस् लप शिङ जेस् ज़ुङ शोग
अधिष्ठित हो अनुगृहीत हो जाऊँ।55।

སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་དཔག་མེད་པ། །
सङ ग्येस् छङ सेम पग मेद् प
अपरिमित बुद्ध-बोधिसत्त्व

ཞིང་དེར་བལྟ་ཕྱིར་འབྱོན་པའི་ཚེ། །
शिङ देर त छिर छोन पई छ़े
उस क्षेत्र के दर्शनागमन पर

ཆོས་ཀྱི་བདུད་རྩི་ཐོབ་པར་ཤོག །
छोस् क्यि दुद् त्सि थोप पर शोग
धर्म का अमृत प्राप्त करूँ।57।

མངོན་དགའི་ཞིང་དང་དཔལ་ལྡན་ཞིང་། །
ङोन गई शिङ दङ पल देन शिङ
अमरावती-क्षेत्र और श्री-क्षेत्र,

སྔ་དྲོ་དེ་དག་རྣམས་སུ་འགྲོ། །
ङ डो दे दग नम सु डो
प्रातःकाल उनमें चला जाऊँ।58।

རྣམ་སྣང་ལ་སོགས་སངས་རྒྱས་ལ། །
नम नङ ल सोग सङ ग्येस् ल
वैरोचन आदि बुद्धों से

དབང་དང་བྱིན་རླབས་སྡོམ་པ་ཞུ། །
वङ दङ छिन लप दोम प शु
अभिषेकानुभाव एवं संवर ग्रहण कर

དགོང་མོ་བདེ་བ་ཅན་ཉིད་དུ། །
गोङ मो दे व चेन ञिद् दु
सायंकाल सुखावती में

པོ་ཏ་ལ་དང་ལྕང་ལོ་ཅན། །
पो ट ल दङ चङ लो चेन
पोतल और अलकावती

སྤྲུལ་སྐུའི་ཞིང་ཁམས་བྱེ་བ་བརྒྱར། །
टुल कुइ शिङ खम छे व ग्यर
शत-कोटि निर्माणकाय-क्षेत्र-धातुओं में

ཕྱག་རྡོར་པད་འབྱུང་བྱེ་བ་བརྒྱ། །
छग दोर पे छुङ छे व ग्य
शत-कोटि वज्रपाणि-पद्माकर

དབང་དང་གདམས་ངག་ཟབ་མོ་ཞུ། །
वङ दङ दम ङग ज़प मो शु
अभिषेक और गम्भीरोपदेश ग्रहण कर

ཐོགས་པ་མེད་པར་ཕྱིན་པར་ཤོག །
थोग प मेद् पर छिन पर शोग
अप्रतिहत रूप से वापस लौटूँ।61।

ལྷ་ཡི་མིག་གིས་གསལ་བར་མཐོང་། །
ल्ह यि मिग गीस् सल वर थोङ
देव-चक्षु द्वारा स्पष्ट दिखाई देते।

འཆི་དུས་ཞིང་དེར་ཁྲིད་པར་ཤོག །
छि दुस् शिङ देर ठिद् पर शोग
मृत्यु-काल में उस क्षेत्र में ले जाऊँ।62।

མཆོད་པ་དུ་མས་མཆོད་བྱས་ནས། །
छोद् प दु मेस छोद् छेस् नेस्
अनेक पूजाओं से पूजित कर

དཀའ་ཚེགས་མེད་པར་སླེབ་པར་ཤོག །
का छ़ेग मेद् पर लेप पर शोग
कष्ट विना (मैं) वापस आऊँ।59।

རྔ་ཡབ་གླིང་དང་ཨོ་རྒྱན་ཡུལ། །
ङ यप लिङ दङ उग्येन युल
चामरद्वीप एवं ओडियान-क्षेत्र

སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་སྒྲོལ་མ་དང་། །
चेन रेस ज़िग दङ डोल म दङ
अवलोकितेश्वर तथा तारा

མཇལ་ཞིང་མཆོད་པ་རྒྱ་མཚོས་མཆོད། །
जल शिङ छोद् प ग्य छ़ोस् छोद्
दर्शन कर, पूजामेघ से पूजूँ।60।

མྱུར་དུ་རང་གནས་བདེ་ཆེན་ཞིང་། །
न्युर दु रङ नेस् दे छेन शिङ
शीघ्र स्व-स्थान महासुख-क्षेत्र (में)

ཤུལ་གྱི་ཉེ་དུ་གྲྭ་སློབ་སོགས། །
शुल ग्यि ञे दु ड◌ॖ लोप सोग
(मृत्यु-बाद) पीछे-छूटे सम्बन्धी, भिक्षु, शिष्यादि

སྲུང་སྐྱོབ་བྱིན་གྱིས་རློབ་བྱེད་ཅིང་། །
सुङ क्योप छिन ग्यीस् लोप छेद् चिङ
रक्षा और अधिष्ठित करके

བསྐལ་བཟང་འདི་ཡི་བསྐལ་པའི་ཡུན། །
कल ज़ङ दि यि कल पई युन
इस भद्रकल्प का जो कल्प-समय है

བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞག་གཅིག་སྟེ། །
दे व चेन ग्यि शग चिग ते
सुखावती का एक दिन होता।

བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་འཆི་བ་མེད། །
कल प डङ मेद् छि व मेद्
असंख्य कल्पों तक मृत्यु नहीं है

རྟག་ཏུ་ཞིང་དེ་འཛིན་པར་ཤོག །
तग तु शिङ दे ज़िन पर शोग
सदा उस क्षेत्र में बना रहूँ।63।

བྱམས་པ་ནས་བཟུང་མོས་པའི་བར། །
छम प नेस् ज़ुङ मोस् पई बर
मैत्रेय से छन्द पर्यन्त

བསྐལ་བཟང་འདི་ཡི་སངས་རྒྱས་རྣམས། །
कल ज़ङ दि यि सङ ग्येस् नम
इस भद्रकल्प के (सभी) बुद्ध लोग

འཇིག་རྟེན་འདི་ན་ནམ་འབྱོན་ཚེ། །
जिग तेन दि न नम छोन छे
जब इस लोक (धातु) में आयें

རྫུ་འཕྲུལ་སྟོབས་ཀྱིས་འདིར་འོངས་ནས། །
ज़ु ठुल तोप क्यीस् दिर ह्रोङ नेस्
प्रातिहार्य-बल से यहाँ आकर (मैं)

སངས་རྒྱས་མཆོད་ཅིང་དམ་ཆོས་ཉན། །
सङ ग्येस् छोद् चिङ दम छोस् ञेन
बुद्ध-पूजन (और) सद्धर्म श्रवण कर

སླར་ཡང་བདེ་ཆེན་ཞིང་ཁམས་སུ། །
लर यङ दे छेन शिङ खम सु
पुनः सुखावती क्षेत्र-धातु में

ཐོགས་པ་མེད་པར་འགྲོ་བར་ཤོག །
थोग प मेद् पर डो बर शोग
अप्रतिहत रूप से वापस जाऊँ।64।

སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག །
सङ ग्येस् छे व ठग ठिग ग्य तोङ ठग
हुँ। बुद्ध कोटि-नयुत-शत-सहस्र

བརྒྱད་ཅུ་རྩ་གཅིག་སངས་རྒྱས་ཞིང་ཀུན་གྱི། །
ग्ये चु त्ज़ चिग सङ ग्येस् शिङ कुन ग्यि
इक्यासी बुद्ध-क्षेत्र सभी के

ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་ཐམས་ཅད་གཅིག་བསྡོམས་པ། །
योन तेन कोद् प थम चे चिग बदोम प
समस्त गुण-वियुह एक में संगृहीत

ཞིང་ཁམས་ཀུན་ལས་ཁྱད་འཕགས་བླ་ན་མེད། །
शिङ खम कुन लेस ख्ये फग ल न मेद्
सभी क्षेत्र-धातुओं में विशिष्टानुत्तर

བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दे व चेन ग्यि शिङ देर क्ये बर शोग
उस सुखावती-क्षेत्र में जन्म हों।65।

རིན་ཆེན་ས་གཞི་ཁོད་སྙོམས་ལག་མཐིལ་ལྟར། །
रिन छेन स शि खोद् ञोम लग थिल तर
रत्न-भूमि समतल करतल-सा

ཡངས་ཤིང་རྒྱ་ཆེ་གསལ་ཞིང་འོད་ཟེར་འབར། །
यङ शिङ ग्य छे सल शिङ ह्रोद् ज़ेर बर
विशाल-विस्तृत, उज्जवल रश्मि-प्रज्वलित

མནན་ན་ནེམ་ཞིང་བཏེག་ན་སྤར་བྱེད་པ། །
मनेन न नेम शिङ तेग न पर छेद् प
दबाने से दवता, उठाने पर लचकीला

བདེ་འཇམ་ཡངས་པའི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दे जम यङ पई शिङ देर क्ये बर शोग
सुख-कोमलायत, उस क्षेत्र में उत्पन्न हों।66।

ལོ་མ་དར་ཟབ་འབྲས་བུ་རིན་ཆེན་བརྒྱན། །
लो म दर ज़प डेस् बु रिन छेन ग्येन
कौशेय-पत्र, फल रत्नालंकृत

ཟབ་དང་རྒྱ་ཆེའི་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་རྣམས་སྒྲོགས། །
ज़प दङ ग्य छे छोस् क्यि ड नम डोग
गम्भीर और उदार धर्म-शब्दों की चहचहाहट

སྤོས་ཆུའི་ཆུ་ཀླུང་ཡན་ལག་བརྒྱད་ལྡན་མང་། །
पोस् छुइ छु लुङ येन लग ग्ये देन मङ
अष्टावयव-युक्त अनेक गन्धोदक-नदियाँ

རིན་ཆེན་སྣ་བདུན་ཐེམ་སྐས་ཕ་གུས་བསྐོར། །
रिन छेन न दुन थेम केस् फ गुस् कोर
सप्त-रत्न-सोपान (एवं) ईंटों से परिवृत

པདྨའི་འོད་ཟེར་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འཕྲོ། །
पेमाई ह्रोद् ज़ेर पग तु मेद् प ठो
अपरिमित पद्म-रश्मियों का प्रस्फुरण

ཡ་མཚན་ཆེན་པོའི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
य छ़ेन छेन पोइ शिङ देर क्ये बर शोग
महा-अद्भुत उस क्षेत्र में उत्पन्न हों।68।

ཉོན་མོངས་དུག་ལྔ་དུག་གསུམ་ནད་དང་གདོན། །
ञोन मोङ दुग ङ दुग सुम ने दङ दोन
क्लेश-पंच-विष, त्रि-विष, रोग और ग्रह,

སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་ཞིང་དེར་ཐོས་མ་མྱོང་། །
दुग ङल थम चे शिङ देर थोस् म न्योङ
समस्त दुःख उस क्षेत्र में सुने नहीं जाते

རིན་ཆེན་དུ་མ་ལས་གྲུབ་དཔག་བསམ་ཤིང་། །
रिन छेन दु म लेस डुप पग सम शिङ
अनेक रत्नों से बना (है) कल्प-वृक्ष

དེ་སྟེང་སྤྲུལ་པའི་བྱ་ཚོགས་སྐད་སྙན་སྒྲགས། །
दे तेङ टुल पई छ छ़ोग के ञेन डेस्
उसके ऊपर, निर्मित विहंग-गणों का मधुर-शब्द

ངོ་མཚར་ཆེན་པོའི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
ङो छ़र छेन पोइ शिङ देर क्ये बर शोग
महान् अद्भुत उस क्षेत्र में पैदा हों।67।

དེ་བཞིན་བདུད་རྩིའི་ཁྲུས་ཀྱི་རྫིང་བུ་རྣམས། །
दे शिन दुद् त्सी ठुस् क्यि ज़िङ बु नम
तथा अमृत की स्नान-पुष्करिणियाँ

མེ་ཏོག་པདྨ་དྲི་ཞིམ་འབྲས་བུར་ལྡན། །
मे तोग पेमा डि शिम डेस् बुर देन
पद्म-पुष्प (हैं) सुगन्धित फल-युक्त

འོད་ཟེར་རྩེ་ལ་སྤྲུལ་པའི་སངས་རྒྱས་བརྒྱན། །
ह्रोद् ज़ेर त्से ल टुल पई सङ ग्येस् ग्येन
रश्मि-अग्र निर्मित-बुद्धो से अलंकृत

མི་ཁོམ་བརྒྱད་དང་ངན་སོང་སྒྲ་མི་གྲགས། །
मि खोम ग्ये दङ ङेन सोङ ड मि डग
आठ-अक्षण और दुर्गति-शब्द ध्वनित नहीं

དགྲ་དང་དབུལ་ཕོངས་འཐབ་རྩོད་ལ་སོགས་པ། །
ड दङ उल फोङ थप त्सोद् ल सोग प
शत्रु, निर्धनता, झगड़ा और विवाद आदि

བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दे व छेन पोइ शिङ देर क्ये बर शोग
महासुख के उस क्षेत्र में उत्पन्न हों।69।

བུད་མེད་མེད་ཅིང་མངལ་ནས་སྐྱེ་བ་མེད། །
बुद् मेद् मेद् चिङ ङल नेस् क्ये व मेद्
(वहाँ) स्त्री नहीं, गर्भ से उत्पन्न नहीं

ཐམས་ཅད་སྐུ་ལུས་ཁྱད་མེད་གསེར་གྱི་མདོག །
थम चे कु लुस् ख्ये मेद् सेर ग्यि दोग
अभिन्न सर्वकाय, सुवर्ण-वर्ण

མངོན་ཤེས་ལྔ་དང་སྤྱན་ལྔ་ཀུན་ལ་མངའ། །
ङोन शेस् ङ दङ चेन ङ कुन ल ङा
सभी पञ्च अभिज्ञा और पञ्च-चक्षु से युक्त हैं

རང་བྱུང་རིན་ཆེན་སྣ་ཚོགས་གཞལ་ཡས་ཁང་། །
रङ छुङ रिन छेन न छ़ोग शल येस् खङ
स्वयंभू नाना रत्न-विमान

རྩོལ་སྒྲུབ་མི་དགོས་དགོས་འདོད་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ། །
ज़ोल डुप मि गोस् गोस् दोद् ल्हुन ग्यीस् डुप
यत्न-साधन अनावश्वयक, जो चाहे सहजसिद्ध

གང་འདོད་མཆོད་སྤྲིན་ལག་པའི་མཐིལ་ནས་འབྱུང་། །
गङ दोद् छोद् टिन लग पई थिल नेस् छुङ
जो चाहे पूजा-मेघ, करतल से प्राप्त होता

བདེ་སྐྱིད་ཀུན་འབྱུང་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
दे क्यिद् कुन छुङ शिङ देर क्ये बर शोग
समस्त सुखोत्सव-प्राप्त, उस क्षेत्र में उत्पन्न हों।71।

ཤིང་དང་ཆུ་ཀླུང་པདྨོ་ཐམས་ཅད་ལས། །
शिङ दङ छु लुङ पेमाो थम चे लेस
वृक्ष, नदी, और समस्त पद्मों से

ལོངས་སྤྱོད་མཆོད་པའི་སྤྲིན་ཕུང་རྟག་ཏུ་འབྱུང་། །
लोङ चोद् छोद् पई टिन फुङ तग तु छुङ
सदा सम्पत्ति पूजा-राशि प्राप्त होते

ཀུན་ཀྱང་མེ་ཏོག་པདྨའི་སྦུབས་ནས་འཁྲུངས། །
कुन क्यङ मे तोग पेमाई बुप नेस् ठुङ
सभी पद्म-पुष्प के भीतर से उत्पन्न

དབུ་ལ་གཙུག་ཏོར་ལ་སོགས་མཚན་དཔེས་བརྒྱན། །
उ ल ज़ुग तोर ल सोग छ़ेन पेस् ग्येन
शीर्ष पर उष्णीषादि लक्षणानुव्यञ्जनालंकृत

ཡོན་ཏན་དཔག་མེད་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
योन तेन पग मेद् शिङ देर क्ये बर शोग
अपरिमित गुण वाले उस क्षेत्र में उत्पन्न हों।70।

ཅི་འདོད་ལོངས་སྤྱོད་ཡིད་ལ་དྲན་པས་འབྱུང་། །
चि दोद् लोङ चोद् यिद् ल डेन पेस् छुङ
सम्पत्ति जो चाहे, मनस्मरण से प्राप्त होता

ང་ཁྱོད་མེད་ཅིང་བདག་ཏུ་འཛིན་པ་མེད། །
ङ ख्योद् मेद् चिङ दग तु ज़िन प मेद्
मै-तू नहीं, आत्मीय-ग्रहण नहीं है

ཐམས་ཅད་བླ་མེད་ཐེག་ཆེན་ཆོས་ལ་སྤྱོད། །
थम चे ल मेद् थेग छेन छोस् ल चोद्
सभी अनुत्तर महायान-धर्म का आचरण करते

དྲི་ཞིམ་རླུང་གིས་མེ་ཏོག་ཆར་ཆེན་འབེབས། །
डि शिम लुङ गीस् मे तोग छर छेन बेप
सुगन्धित-वायु द्वारा महा-पुष्प-वर्षा होती

ཡིད་དུ་འོང་བའི་གཟུགས་སྒྲ་དྲི་རོ་རེག །
यिद् दु ह़ोङ बई ज़ुग ड डि रो रेग
मनोज्ञ-रूप, शब्द, सुगन्ध, रस, स्प्रष्टव्य

བུད་མེད་མེད་ཀྱང་སྤྲུལ་པའི་ལྷ་མོའི་ཚོགས། །
बुद् मेद् मेद् क्यङ टुल पई ल्ह मोइ छ़ोग
स्त्री नहीं हैं पर, निर्मित देवी-गण

མཆོད་པའི་ལྷ་མོ་དུ་མས་རྟག་ཏུ་མཆོད། །
छोद् पई ल्ह मो दु मेस तग तु छोद्
अनेक पूजा-देवी सदा पूजा करती हैं।72।

འདུག་པར་འདོད་ཚེ་རིན་ཆེན་གཞལ་ཡས་ཁང་། །
दुग पर दोद् छ़े रिन छेन शल येस् खङ
बैठना चाहें तो रत्न-विमान

ཉལ་བར་འདོད་ཚེ་རིན་ཆེན་ཁྲི་བཟང་སྟེང་། །
ञल बर दोद् छ़े रिन छेन ठि ज़ङ तेङ
सोना चाहें तो सु-रत्नासन के ऊपर

དར་ཟབ་དུ་མའི་མལ་སྟན་སྔས་དང་བཅས། །
दर ज़प दु मई मल तेन ङेस् दङ चेस्
तकिया सहित अनेक रेशमी-वस्त्रों का
शननासन।73।

བྱ་དང་ལྗོན་ཤིང་ཆུ་ཀླུང་རོལ་མོ་སོགས། །
छ दङ जोन शिङ छु लुङ रोल मो सोग
पक्षी, वृक्ष, नदी और वाद्यादि (से)

ཐོས་པར་འདོད་ན་སྙན་པའི་ཆོས་སྒྲ་སྒྲོགས། །
थोस् पर दोद् न ञेन पई छोस् ड डोग
सुनना चाहें तो मधुर धर्म-शब्द ध्वनित होता

མི་འདོད་ཚེ་ན་རྣ་བར་སྒྲ་མི་གྲགས། །
मि दोद् छ़े न न बर ड मि डग
न चाहें तो कर्ण में शब्द प्रतिध्वनित नहीं होता।74।

བདུད་རྩིའི་རྫིང་བུ་ཆུ་ཀླུང་དེ་རྣམས་ཀྱང་། །
दुद् त्ज़ी ज़िङ बु छु लुङ दे नम क्यङ
अमृत-पुष्करिणी वे नदियाँ भी

དྲོ་གྲང་གང་འདོད་དེ་ལ་དེ་ལྟར་འབྱུང་། །
डो डङ गङ दोद् दे ल दे तर छुङ
शीतोष्ण जैसा चाहें, उसको वैसा प्राप्त होता

ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་པའི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་ཤོག །
यिद् शिन डुप पई शिङ देर क्ये बर शोग
उस मनोपम-सिद्ध क्षेत्र में उत्पन्न हों।75।

ཞིང་དེར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་འོད་དཔག་མེད། །
शिङ देर ज़ोग पई सङ ग्येस् ह़ोद् पग मेद्
उस क्षेत्र में सम्बुद्ध-अमिताभ

བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་མྱ་ངན་མི་འདའ་བཞུགས། །
कल प डङ मेद् न्य ङेन मि दा शुग
असंख्य कल्पों तक निर्वाण प्राप्त न कर रहते

དེ་སྲིད་དེ་ཡི་ཞབས་འབྲིང་བྱེད་པར་ཤོག །
दे सिद् दे यि शप डिङ छेद् पर शोग
तावत् उनका सेवक बना रहूँ।76।

ནམ་ཞིག་འོད་དཔག་མེད་དེ་ཞི་བར་གཤེགས། །
नम शिग ह़ोद् पग मेद् दे शि वर शेग
जब अमिताभ शान्त (निर्वाण) में गमन करेंगे

བསྐལ་པ་གང་གཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད། །
कल प गङ्गाई लुङ गि छे म ञेद्
गङ्गा-नदी के बालु बराबर

གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་བསྟན་པ་གནས་པའི་ཚེ། །
ञीस् क्यि बर दु तेन प नेस् पई छ़े
दो कल्प पर्यन्त शासन की स्थिति पर

རྒྱལ་ཚབ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་མི་འབྲལ་ཞིང་། །
ग्यल छ़प चेन रेस ज़िग दङ मि डल शिङ
प्रतिनिधि अवलोकितेश्वर से अलग न होकर

དེ་ཡི་ཡུན་ལ་དམ་ཆོས་འཛིན་པར་ཤོག །
दे यि युन ल दम छोस् ज़िन पर शोग
तद्-पर्यन्त सद्धर्म (का) ग्रहण करूँ।77।

སྲོད་ལ་དམ་ཆོས་ཉུབ་པའི་ཐོ་རངས་ལ། །
सोद् ल दम छोस् नुप पई थो रङ ल
सायं सद्धर्मास्त हो, उसके प्रत्यूष में

སངས་རྒྱས་འོད་ཟེར་ཀུན་ནས་འཕགས་པ་ཡི། །
सङ ग्येस् ह़ोद् ज़ेर कुन नेस् फग प यि
बुद्ध-रश्मि सभी से ऊपर

ཞལ་ལྟ་མཆོད་ཅིང་དམ་ཆོས་ཉན་པར་ཤོག །
शल त छोद् चिङ दम छोस् ञेन पर शोग
मुख-दर्शन (एवं) पूजा कर सद्धर्म-श्रवण करूँ।78।

འབུམ་ཕྲག་དགུ་བཅུ་ཙ་དྲུག་བཞུགས་པའི་ཚེ། །
बुम ठग गु चु त्ज़ डुग शुग पई छ़े
छयानवे-लाख स्थित रहने पर

མི་བརྗེད་གཟུངས་ཀྱིས་དམ་ཆོས་འཛིན་པར་ཤོག །
मि जेद् ज़ुङ क्यीस् दम छोस् ज़िन पर शोग
अविस्मरण-धारणी से सद्धर्म-धारण करूँ।79।

བསྐལ་པ་དུང་ཕྱུར་དྲུག་དང་བྱེ་བ་ཕྲག །
कल प दुङ छुर डुग दङ छे व ठग
कल्प षट-अर्बुद और कोटि

མཐུ་ཆེན་ཐོབ་དང་རྟག་ཏུ་མི་འབྲལ་ཤོག །
थु छेन थोप दङ तग तु मि डल शोग
महास्थामप्राप्त से सदा अलग न हों।80।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རབ་ཏུ་བརྟན་པ་ནི། །
दे शिन शेग प रप तु तेन प नि
तथागत 'सुप्रतिष्ठित' तो

སྐུ་ཚེ་བསྟན་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་མཉམ། །
कु छ़े तेन प चेन रेस ज़िग दङ ञम
जीवनावधि अवलोकितेश्वर सम है

སྤྱན་རས་གཟིགས་དེ་མངོན་པར་སངས་རྒྱས་ནས། །
चेन रेस ज़िग दे ङोन पर सङ ग्येस् नेस्
वह अवलोकितेश्वर अभिसम्बुद्धत्व प्राप्त कर

དཔལ་བརྩེགས་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱར་གྱུར་པའི་ཚེ། །
पल त्ज़ेग ग्यल पो शेस् छर ग्युर पई छ़े
'श्रीकूटराज' नाम वाले (बुद्ध) होने पर

སྐུ་ཚེ་བསྐལ་པ་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་ནི། །
कु छ़े कल प छे व ठग ठिग नि
जीवन-अवधि कल्प-कोटि-नयुत

རྟག་ཏུ་ཞབས་འབྲིང་བསྙེན་བཀུར་བྱེད་པ་དང་། །
तग तु शप डिङ ञेन कुर छेद् प दङ
सदा सेवक बन, सत्कार करूँ तथा

མྱ་ངན་འདས་ནས་དེ་ཡི་བསྟན་པ་ནི། །
न्य ङेन देस् नेस् दे यि तेन प नि
निर्वाण प्राप्ति-बाद उनका शासन

འབུམ་ཕྲག་གསུམ་གནས་དེ་ཚེ་ཆོས་འཛིན་ཅིང་། །
बुम ठग सुम नेस् दे छ़े छोस् ज़िन चिङ
त्रिशतसाहस्र स्थित, तब धर्म-धारण कर

དེ་ནས་མཐུ་ཆེན་ཐོབ་དེ་སངས་རྒྱས་ནས། །
दे नेस् थु छेन थोप दे सङ ग्येस् नेस्
तत्पश्चात् 'महास्थामप्राप्त' बुद्ध होकर

ཡོན་ཏན་ནོར་བུ་བརྩེགས་པའི་རྒྱལ་པོར་གྱུར། །
योन तेन नोर बु त्ज़ेग पई ग्यल पोर ग्युर
'गुणरत्नकूटराज' (नामधारी) हुये

སངས་རྒྱས་དེ་ཡི་རྟག་ཏུ་ཞབས་འབྲིང་བྱེད། །
सङ ग्येस् दे यि तग तु शप डिङ छेद्
उस बुद्ध का सदा सेवक बन

མཆོད་པས་མཆོད་ཅིང་དམ་ཆོས་ཀུན་འཛིན་ཤོག །
छोद् पेस् छोद् चिङ दम छोस् कुन ज़िन शोग
पूजा से पूजित कर सर्व-सद्धर्म धारण करूँ।81।

ཞིང་ཁམས་དེ་འམ་དག་པའི་ཞིང་གཞན་དུ། །
शिङ खम दे ह़म दग पई शिङ शेन दु
उस क्षेत्र-धातु अथवा अन्य शुद्ध-क्षेत्र में

རྫོགས་སངས་རྒྱས་ནས་ཚེ་དཔག་མེད་པ་ལྟར། །
ज़ोग सङ ग्येस् नेस् छे पग मेद् प तर
सम्बुद्ध होकर अमितायु जैसा

སྤྲུལ་པ་གྲངས་མེད་འགྲོ་བ་འདྲེན་པ་སོགས། །
टुल प डङ मेद् डो व डेन प सोग
असंख्य निर्मितों द्वारा प्राणी-तारण आदि

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཚེ་དང་བསོད་ནམས་དང་། །
दे शिन शेग पई छे दङ सोद् नम दङ
तथागत का आयु और पुण्य

ཆོས་སྐུ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་འོད་དཔག་མེད། །
छोस् कु नङ व था येस् ह़ोद् पग मेद्
धर्मकाय- अमिताभ-अमिताभ

གང་ཞིག་ཁྱེད་ཀྱི་མཚན་ནི་སུས་འཛིན་པ། །
गङ शिग ख्येद् क्यि छेन नि सुस् ज़िन प
आपके नाम को जो कोई धारण करें

མེ་ཆུ་དུག་མཚོན་གནོད་སྦྱིན་སྲིན་པོ་སོགས། །
मे छु दुग छोन नोद् छिन सिन पो सोग
अग्नि, जल, विष, शस्त्र, यक्ष-राक्षस आदि

བདག་ནི་ཁྱེད་ཀྱི་མཚན་འཛིན་ཕྱག་འཚལ་བས། །
दग नि ख्येद् क्यि छेन ज़िन छग छल वे
मैंने (भी) आपका नाम-धारण कर नमन किया है

དེ་ནས་བདག་གི་ཚེ་དེ་བརྗེས་མ་ཐག །
दे नेस् दग गि छे दे जेस् म थग
इसके बाद मेरे उस जीवन-परिवर्तन पर

བླ་མེད་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་ཤོག །
ल मेद् ज़ोग पई सङ ग्येस् थोप पर शोग
अनुत्तर सम्बुद्धत्व को प्राप्त करूँ।82।

མཚན་ཐོས་ཙམ་གྱིས་འགྲོ་ཀུན་སྨིན་ཅིང་གྲོལ། །
छेन थोस् त्सम ग्यीस् डो कुन मिन चिङ डोल
नाम-श्रवण मात्र से सर्व-प्राणी विपाक-मुक्त होते

འབད་མེད་ལྷུན་གྲུབ་འགྲོ་དོན་དཔག་མེད་ཤོག །
बे मेद् ल्हुन डुप डो दोन पग मेद् शोग
हों अनाभोग अपरिमित सत्त्वार्थ।83।

ཡོན་ཏན་ཡེ་ཤེས་གཟི་བརྗིད་ཚད་མེད་པ། །
योन तेन ये शेस् ज़ि जिद् छे मेद् प
गुण, ज्ञान, ओज अपरिमित

ཚེ་དང་ཡེ་ཤེས་དཔག་མེད་བཅོམ་ལྡན་འདས། །
छे दङ ये शेस् पग मेद् चोम देन देस्
भगवान्- आयु और ज्ञान अपरिमित।84।

སྔོན་གྱི་ལས་ཀྱི་རྣམ་སྨིན་མ་གཏོགས་པ། །
ङोन ग्यि लेस क्यि नम मिन म तोग प
'पूर्व-कर्मों के विपाक को छोड़

འཇིགས་པ་ཀུན་ལས་སྐྱོབ་པར་ཐུབ་པས་གསུངས། །
जिग प कुन लेस क्योप पर थुप पेस् सुङ
सभी भयों से सुरक्षित हैं'- (ऐसा) मुनि ने कहा है।85।

འཇིགས་དང་སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ལས་བསྐྱབ་མཛད་གསོལ།།
जिग दङ दुग ङल कुन लेस क्यप ज़े सोल
अतः सभी भय और दुःखों से (मेरी) रक्षा करें।

བཀྲ་ཤིས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
ट शीस् फुन सुम छ़ोग पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, मंगल-सम्पन्न हो जाऊँ।86।

སངས་རྒྱས་སྐུ་གསུམ་བརྙེས་པའི་བྱིན་རླབས་དང་། །
सङ ग्येस् कु सुम ञेस् पई छिन लप दङ
बुद्ध के त्रिकाय-प्राप्त-अधिष्ठान तथा

ཆོས་ཉིད་མི་འགྱུར་བདེན་པའི་བྱིན་རླབས་དང་། །
छोस् ञिद् मि ग्युर देन पई छिन लप दङ
अपरिवर्तनीय तथता-सत्य के अधिष्ठान एवं

དགེ་འདུན་མི་ཕྱེད་འདུན་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
गेन दुन मि छेद् दुन पई छिन लप क्यीस्
संघ के अभेद छन्दाधिष्ठान द्वारा

ཇི་ལྟར་སྨོན་ལམ་བཏབ་བཞིན་འགྲུབ་པར་ཤོག །
जि तर मोन लम तप शिन डुप पर शोग
यथा प्रणिधान किया, तथा सिद्ध हो जायें।87।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कोन छोग सुम ल छग छ़ल लो
त्रिरत्नाय नमः।

ཏདྱཐཱ། པཉྩེནྡྲི་ཡ་ཨཱ་ཝ་བོ་དྷ་ནཱ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། སྨོན་ལམ་འགྲུབ་པའི་གཟུངས་སོ། །
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय आवबोधानाये स्वाहा।
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अवबोधनाय स्वाहा। इति प्रणिधान-सिद्ध-धारणी

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ན་མོ་མཉྫུ་ཤྲཱི་ཡེ། ན་མོ་སུ་ཤྲཱི་ཡེ། ན་མོཿཨུཏྟ་མ་ཤྲཱི་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ།
कोन छोग सुम ल छग छ़ल लो नमो मञ्जुश्रीये। नमो सुश्रीये। नमोःउत्तम श्रीये स्वाहा।
त्रिरत्नाय नमः। नमो मञ्जुश्रीये। नमो सुश्रीये। नमोः उत्तमश्रीये स्वाहा।।

ཞེས་བརྗོད་ནས་ཕྱག་གསུམ་འཚལ་ན་འབུམ་ཐེར་དུ་འགྱུར་བར་གསུངས། དེ་ནས་རབ་བརྒྱ་ཕྲག །འབྲིང་ཅི་ནུས། ཐ་མ་ཡང་ཕྱག་བདུན་ཡན་འཚལ། རབ་འདི་མ་ཆག་པ། འབྲིང་ལོ་ཟླ་ཙམ་མ་ཆག་པ། ཐ་མ་ནམ་ཁོམ་སྐབས་སུ་ཁ་ནུབ་ཏུ་ཕྱོགས་ནས་བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་ཁམས་ཡིད་ལ་དྲན་ཅིང་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ་དད་པ་རྩེ་གཅིག་གིས་བཏོན་ན། ཚེ་འདིར་ཚེའི་བར་ཆད་སེལ། ཕྱི་མ་བདེ་བ་ཅན་དུ་སྐྱེ་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད་དོ། །འོད་མདོ་ཞིང་བཀོད་མདོ་དང་། པདྨ་དཀར་པོ་འཆི་མེད་རྔ་སྒྲ་སོགས་ཀྱི་དགོངས་པ་ཡིན། ཞེས་དགེ་སློང་རཱ་ག་ཨ་སྱས་སྦྱར་བས་འགྲོ་བ་སེམས་ཅན་མང་པོ་བདེ་བ་ཅན་དུ་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །

ऐसा कहकर तीन बार नमस्कार करें तो (वह) शतसाहस्त्र हो जाता है- ऐसा कहा गया है। तत्पश्चात् उत्तम- सौ, मध्यम- यथा सामर्थ्य तथा अन्तशः भी सात बार तक प्रणाम करें। उत्तम- इसका निरन्तर पाठ, मध्यम- वर्ष या मास पर्यन्त निरन्तर, अन्तशः- जब समय मिले पश्चिम की ओर मुख करके, सुखावती क्षेत्र-धातु का मन में स्मरण कर अमिताभ के प्रति अञ्जलिबद्ध होकर एकटक श्रद्धा से पाठ करें तो इस जन्म में आयु-बाधा समाप्त होगी। पर-जन्म में सुखावती में पैदा होंगे- इसमें संशय नहीं है। यह अमिताभ-सूत्र, क्षेत्रवियूह-सूत्र, पुण्डरीक(-सूत्र), अमृत-दुन्दुभि(-सूत्र) आदि का अभिप्राय है। यह भिक्षु 'रागास्य' द्वारा लिखा गया। अतः अनेक प्राणी-सत्त्व सुखावती (क्षेत्र) में उत्पन्न होने का हेतु बनें।

བདེ་སྨོན་བསྡུས་པ།

# संक्षिप्त सुखावती प्रणिधान

ཨེ་མ་ཧོ༔
ए म हो
हे माँ!

ངོ་མཚར་སངས་རྒྱས་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་༔
ङो छ़र सङ ग्येस् नङ व था येस् दङ
अद्भुत् बुद्ध अमिताभ तथा।

གཡས་སུ་ཇོ་བོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་༔
येस् सु जो बो थुग जे छेन पो दङ
दक्षिण में स्वामी महाकारुणिक और।

གཡོན་དུ་སེམས་དཔའ་མཐུ་ཆེན་ཐོབ་རྣམས་ལ༔
योन दु सेम पा थु छेन थोप नम ल
वाम में बोधिसत्त्व महास्थामप्राप्त लोग।

སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་དཔག་མེད་འཁོར་གྱིས་བསྐོར༔
सङ ग्येस् छङ सेम पग मेद् खोर ग्यीस् कोर
अपरिमित बुद्ध-बोधिसत्त्व परिवारों से परिवृत्त।।

བདེ་སྐྱིད་ངོ་མཚར་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡི༔
दे क्यिद् ङो छ़र पग तु मेद् प यि
अपरिमित अद्भुत् सुखोत्सव से युक्त।

བདེ་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་བའི་ཞིང་ཁམས་དེར༔
दे व चेन शेस् छ बई शिङ खम देर
सुखावती नामक उस क्षेत्र-धातु में।

བདག་ནི་འདི་ནས་ཚེ་འཕོས་གྱུར་མ་ཐག༔
दग नि दि नेस् छ़े फोस् ग्युर म थग
मेरे यहाँ से जीवन-संक्रमण के अनन्तर।

སྐྱེ་བ་གཞན་གྱིས་བར་མ་ཆོད་པ་རུ༔
क्ये व शेन ग्यीस् बर म छोद् प रु
अन्य जन्म से बाधा रहित होकर।

དེ་རུ་སྐྱེས་ནས་སྣང་མཐའི་ཞལ་མཐོང་ཤོག༔
दे रु क्येस् नेस् नङ थई शल थोङ शोग
वहाँ उत्पन्न होकर अमिताभ का मुख-दर्शन हो।।

དེ་སྐད་བདག་གིས་སྨོན་ལམ་བཏབ་པ་འདི༔
दे के दग गीस् मोन लम तप प दि
तथा मेरे द्वारा इस प्रणिधान के करने से।

ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས༔
छोग चुइ सङ ग्येस् छङ सेम थम चे क्यीस्
दश दिशाओं के समस्त बुद्धों से।

གེགས་མེད་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ༔
गेग मेद् डुप पर छिन ग्यीस् लप तु सोल
अध्येषणा है–विना बाधा सिद्ध हों।।

ཏདྱ་ཐཱ༔ པཉྩ་ཨིནྡྲི་ཡ་ཨཱ་ཝ་བོ་དྷ་ནཱ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ༔
तद्यथा पञ्चन्द्रिय आवबोधनाये स्वाहा
**तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अवबोधनाय स्वाहा।।**

ཞེས་པ་འདི་ནི་སྤྲུལ་སྐུ་མི་འགྱུར་རྡོ་རྗེ་དགུང་ལོ་བཅུ་གསུམ་གསེར་འཕྱུང་གི་ལོ་ས་ག་ཟླ་བའི་ཚེས་བདུན་ལ་གཙོ་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་ཞལ་གཟིགས་པའི་ཚེ་སངས་རྒྱས་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་དངོས་སུ་གསུངས་པའོ།།

इसे टुलकु मिग्युर दोर्जे द्वारा अपने 13वें वर्ष, अग्नि-स्त्री पक्षी वर्ष, वैशाख मास की 7वीं तिथि को (अमिताभ आदि) प्रधान परिवार के दर्शन होने पर बुद्ध अमिताभ (स्वयं) ने प्रत्यक्ष कहा है।

ཕྱོགས་དུས་རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་དགོངས༔
छोग दुस् ग्यल व सेस् चेस् गोङ
**दिग्-काल (के) बुद्ध सपुत्र ध्यान दें।**

ཚོགས་གཉིས་རྫོགས་ལ་རྗེས་ཡི་རང༔
छ़ोग ञीस् ज़ोग ल जेस् यि रङ
**द्विसम्भार (की) पूर्ति पर अनुमोदन करता हूँ।**

བདག་གི་དུས་གསུམ་དགེ་བསགས་པ༔
दग गि दुस् सुम गे सग प
**मैंने त्रिकाल में कुशल संचय किया है।**

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་མཆོད་པ་འབུལ༔
कोन छोग सुम ल छोद् प बुल
**त्रिरत्नों को पूजा-भेंट किया है।।**

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་འཕེལ་གྱུར་ཅིག༔
ग्यल वई तेन प फेल ग्युर चिग
**(उससे) जिन-शासन की वृद्धि हो।**

དགེ་བ་སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་བསྔོ༔
गे व सेम चेन कुन ल ङो
**(समस्त) कुशल सर्वसत्त्व हेतु परिणामित हैं।**

འགྲོ་ཀུན་སངས་རྒྱས་ཐོབ་གྱུར་ཅིག༔
डो कुन सङ ग्येस् थोप ग्युर चिग
**समस्त प्राणी बुद्धत्व (को) प्राप्त करें।।**

དགེ་རྩ་ཐམས་ཅད་གཅིག་བསྡུས་ཏེ༔
गे त़्र थम चे चिग बदुस् ते
**सर्वकुशलमूलों का एक में संग्रह कर।**

བདག་གི་རྒྱུད་ལ་སྨིན་གྱུར་ཅིག༔
दग गि ग्युद् ल मिन ग्युर चिग
**मेरे (चित्त-)सन्तति में उपचित हो जाए।।**

སྒྲིབ་གཉིས་དག་ནས་ཚོགས་རྫོགས་ཏེ༔
डिप ञीस् दग नेस् छ़ोग ज़ोग ते
**द्वि-आवरण शुद्ध हो सम्भार पूर्ण होकर।**

ཚེ་རིང་ནད་མེད་ཉམས་རྟོགས་འཕེལ༔
छ़े रिङ ने मेद् ञम तोग फेल
**दीर्घायु, निरोग (और) अनुभूत्यात्मक ज्ञान की वृद्धि हो।**

ཚེ་འདིར་ས་བཅུ་ནོན་གྱུར་ཅིག༔
छ़े दिर स चु नोन ग्युर चिग
**इस जन्म में दश-भूमि पर अधिकार प्राप्त करूँ।।**

ནམ་ཞིག་ཚེ་འཕོས་གྱུར་མ་ཐག༔
नम शिग छ़े फोस् ग्युर म थग
**जीवन के संक्रमण काल में।**

བདེ་བ་ཅན་དུ་སྐྱེ་གྱུར་ཅིག༔
दे व चेन दु क्ये ग्युर चिग
**सुखावती में जन्म हो जाए।**

སྐྱེས་ནས་པདྨའི་ཁ་བྱེ་སྟེ༔
क्येस् नेस् पेमाई ख छे ते
**उत्पन्न होकर पद्म-मुख उद्-घाटित हो।**

ལུས་རྟེན་དེ་ལ་སངས་རྒྱས་ཤོག༔
लुस् तेन दे ल सङ ग्येस् शोग
**उस काय-आश्रय में (ही) बुद्धत्व प्राप्त करूँ।।**

བྱང་ཆུབ་ཐོབ་ནས་ཇི་སྲིད་དུ༔
छङ छुप थोप नेस् जि सिद् दु
**बोधि प्राप्त कर यावत् (संसार की स्थिति तक)।**

སྤྲུལ་པས་འགྲོ་བ་འདྲེན་པར་ཤོག༔
टुल पेस् डो व डेन पर शोग
**निर्मित(-काय) द्वारा सत्त्वाकर्षण करूँ।।**

ས་མ་ཡ༔ རྒྱ་རྒྱ་རྒྱ༔ ཅེས་པ་འདི་ནི་སྤྲུལ་སྐུ་མི་འགྱུར་རྡོ་རྗེའི་གཏེར་མའོ།།
समय। मुद्रा मुद्रा मुद्रा।। यह (तो) निर्मितकाय मि-ग्युर् दोर्जे का निधि ग्रन्थ है।।

# महाप्रणिधान के अवसर पर कुछ आवश्यक विधियाँ

# གནས་བརྟན་ཕྱག་མཆོད།
# स्थविर-नमन-पूजा

ལག་མཐིལ་ལྟར་མཉམ་རིན་ཆེན་རྒྱན་གྱིས་སྤྲས། །
लग थिल तर ञम रिन छेन ग्येन ग्यीस् टेस्
करतलवत-सम, रत्नालंकार सज्जित

རིན་ཆེན་ལས་གྲུབ་གྲུ་བཞི་སྒོ་བཞི་པ། །
रिन छेन लेस डुप डु शि गो शि प
रत्न से बना वर्गाकार, चतुर्द्वार-वाला

ལྗོན་ཤིང་ཆུ་མཚོས་བརྒྱན་པའི་ས་གཞིའི་དབུས། །
जोन शिङ छु छ़ोस् ग्येन पई स शी उस्
वृक्ष, जल-सरस् से अलंकृत-स्थल के मध्य

པདྨ་ཉི་ཟླས་བརྒྱན་པའི་གདན་སྟེང་དུ། །
पेमा ञि देस् ग्येन पई देन तेङ दु
पद्म-सूर्य-चन्द्रालंकृत आसन के ऊपर।1।

ཐུགས་རྗེས་རྩོད་པའི་དུས་ཀྱི་གདུལ་བྱ་རྣམས། །
थुग जेस् त्स़ोद् पई दुस् क्यि दुल छ नम
करुणा से कलियुग के विनेयजनों को

ཐུབ་པ་མཆོག་དང་གནས་བརྟན་ཆེན་པོ་རྣམས། །
थुप प छोग दङ नेस् तेन छेन पो नम
परम-मुनि और महास्थविर लोग

རྣམ་གྲོལ་ལམ་ལ་འགོད་མཛད་འགྲོ་བའི་མགོན། །
नम डोल लम ल गोद् ज़े डो बई गोन
विमुक्ति-मार्ग पर आरूढ करने वाले जगन्नाथ

འཁོར་དང་བཅས་པ་གནས་འདིར་གཤེགས་སུ་གསོལ།།
खोर दङ चेस् प नेस् दिर शेग सु सोल
परिवार सहित इस स्थल पर पधारें।2।

ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་ཐམས་ཅད་དང་། །
छोग चुइ ग्यल व सेस् चेस् थम चे दङ
दश-दिशाओं के समस्त जिन-सपुत्र

རྣམ་གྲོལ་བསོད་ནམས་ཞིང་དུ་བཀའ་སྡོད་པའི། །
नम डोल सोद् नम शिङ दु का दोद् पई
विमुक्ति-पुण्य-क्षेत्र में आगमस्थ

ཡོན་སྦྱོང་མཆོད་པའི་གནས་སུ་སྤྱན་འདྲེན་གྱིས། །
योन छोङ छोद् पई नेस् सु चेन डेन ग्यीस्
दक्षिणा-शोधन-पूजा-स्थल पर आमन्त्रित करते हैं

ཤེས་རབ་མེ་འབར་ཉོན་མོངས་མཚོ་སྐེམ་ཞིང་། །
शेस् रप मे बर ञोन मोङ छ़ो केम शिङ
प्रज्ञाग्नि-ज्वाला से क्लेश-सागर सुखा कर

ཕྱོགས་བཅུའི་ཉན་ཐོས་དགེ་འདུན་བཞུགས་སོ་འཚལ། །
छोग चुइ ञेन थोस् गेन दुन शुग सो छ़ल
दश-दिग् श्रावक-संघ जितने भी हैं

འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་མཆོད་ཀྱིས་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
डो बई दोन छिर छोद् क्यीस् शेग सु सोल
सत्त्वार्थ हेतु पूजा है, अतः कृपया पधारें।3।

འགྲོ་བའི་མགོན་པོ་ཤཱཀྱ་སེང་གེ་ཡི། །
डो बई गोन पो शाक्य सेङ गे यि
जगन्नाथ (बुद्ध) शाक्यसिंह के

སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་གང་གི་ཕྱག་ཏུ་བཞུགས། །
सङ ग्येस् तेन प गङ गि छग तु शुग
बुद्ध-शासन जिनके हाथों में है

གསུང་རབ་རིན་ཆེན་སྒྲོམ་གྱི་ཁ་འབྱེད་པའི། །
सुङ रप रिन छेन डोम ग्यि ख छेद् पई
प्रवचन रत्न-पिटक का मुख-उद्घाटक

དགྲ་བཅོམ་གནས་བརྟན་ཆེན་པོ་བཞུགས་སོ་འཚལ། །
ड चोम नेस् तेन छेन पो शुग सो छ़ल
अर्हत् महास्थविर जितने भी हैं

དམ་ཆོས་སྤེལ་བའི་སླད་དུ་སྤྱན་འདྲེན་ན། །
दम छोस् पेल बई ले दु चेन डेन न
सद्धर्म विस्तार हेतु आमन्त्रित करने से

འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་མཆོད་ཀྱིས་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
डो बई दोन छिर छोद् क्यीस् शेग सु सोल
सत्त्वार्थ हेतु पूजा है, कृपया पधारें।4।

ཐུབ་པས་བཀའ་བསྒོས་བསྟན་པའི་རྒྱལ་མཚན་འཛིན། །
थुप पेस् का गोस् तेन पई ग्यल छ़ेन ज़िन
मुनि-आज्ञा से शासन-ध्वज लहराते

ཡན་ལག་འབྱུང་དང་མ་ཕམ་ནགས་ན་གནས། །
येन लग छुङ दङ म फम नग न नेस्
अंगज, अजित और वनवासिन्,

དུས་ལྡན་རྡོ་རྗེ་མོའི་བུ་བཟང་པོ་དང་། །
दुस् देन दोर जे मोइ बु ज़ङ पो दङ
कालिक, वज्रीपुत्र तथा भद्र,

གསེར་བེའུ་བྷ་ར་དྷྭ་ཛ་གསེར་ཆེན་མཆོག །
सेर बेहु भ र ध◌ॣ ज सेर छेन छोग
कनकवत्स, भारद्वाज महासुवर्णोत्तम।5।

འཕགས་པ་བ་ཀུ་ལ་དང་སྒྲ་གཅན་འཛིན། །
फग प व कु ल दङ ड चेन ज़िन
आर्य बकुल और राहुल,

ལམ་ཕྲན་བྷ་ར་དྷྭ་ཛ་བསོད་སྙོམས་ལེན། །
लम ठेन भ र ध◌ॣ ज सोद् ञोम लेन
चूडपन्थक,पैण्डपातिक भारद्वाज,

ལམ་བརྟན་ཀླུའི་སྡེ་སྦེད་བྱེད་མི་ཕྱེད་པ། །
लम तेन लुइ दे वेद् छेद् मि छेद् प
महापन्थक, नागसेन, गोपक, अभेद,

འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་མཆོད་ཀྱིས་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
डो बई दोन छिर छोद् क्यीस् शेग सु सोल
सत्त्वार्थ हेतु पूजा है, कृपया पधारें।6।

སྤངས་དང་ཡེ་ཤེས་ཕུན་ཚོགས་སངས་རྒྱས་ཀྱང་། །
पङ दङ ये शेस् फुन छ़ोग सङ ग्येस् क्यङ
प्रहाण और ज्ञान (से) सम्पन्न बुद्ध भी

གདུལ་བྱའི་དབང་གིས་ཉན་ཐོས་ཚུལ་འཛིན་ཅིང་།
दुल छई वङ गीस् ञेन थोस् छ़ुल ज़िन चिङ
विनेयजन-वश श्रावक-नय धारण किये हैं

ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་ཕྲིན་ལས་ཆོས་སྐྱོང་བའི། །
ख्ये पर चेन ग्यि ठिन लेस छोस् क्योङ बई
विशिष्ट-कर्म (रूपी) धर्म के पालक

གནས་བརྟན་བཅུ་དྲུག་འདིར་བྱོན་གདན་ལ་བཞུགས། །
नेस् तेन चु डुग दिर छोन देन ल शुग
सोलह स्थविर यहाँ पधार, आसन ग्रहण करें।7।

བདེ་གཤེགས་བཀའ་ལུང་གཙོར་མཛད་བསྟན་པ་སྲུང་། །
दे शेग का लुङ ज़ोर ज़े तेन प सुङ
सुगत-वचनागम को प्रधान मान शासन-रक्षा करते

རང་དོན་དོར་ནས་འཁོར་བའི་ནགས་ཚལ་དུ། །
रङ दोन दोर नेस् खोर बई नग छ़ल दु
स्वार्थ त्याग कर संसार रूपी वन में

གཞན་དོན་ལྷུར་མཛད་གནས་བརྟན་བཅུ་དྲུག་པོ། །
शेन दोन ल्हुर ज़े नेस् तेन चु डुग पो
परार्थ में यत्नशील, सोलह स्थविर लोग

དམ་བཅས་ཐུགས་རྗེའི་དབང་གིས་གནས་འདིར་གཤེགས།།
दम चेस् थुग जे वङ गीस् नेस् दिर शेग
प्रतिज्ञा और करुणावश इस स्थल पर पधारें।8।

དགེ་བསྙེན་སྐྱབས་གསོལ་བདེན་པའི་ཚིག་ཉན་པ། །
गे ञेन क्यप सोल देन पई छ़िग ञेन प
शरण लिये उपासक, सत्य-पद के श्रावक

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་ཞབས་འབྲིང་མཆིས་སོ་འཚལ།།
कोन छोग सुम ग्यि शप डिङ छीस् सो छ़ल
त्रिरत्न के समस्त सेवकों द्वारा

བསོད་ནམས་རིན་ཆེན་གླིང་དུ་སྤྱན་འདྲེན་ན། །
सोद् नम रिन छेन लिङ दु चेन डेन न
पुण्य रत्न-द्वीप में आमन्त्रित कर रहे हैं तो

འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་མཆོད་ཀྱིས་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
डो बई दोन छिर छोद् क्यीस् शेग सु सोल
सत्त्वार्थ हेतु पूजा है, कृपया पधारें।9।

མཚུངས་མེད་བལྟ་བས་མི་ངོམས་པ། །
छुङ मेद् त वे मि ङोम प
अप्रतिम, दर्शन पर तृप्प न हुआ जाता

གསེར་གྱི་མདོག་ཅན་མཛེས་པའི་སྐུ། །
सेर ग्यि दोग चेन ज़ेस् पई कु
सुवर्ण-वर्ण-वाले, सुन्दर काय,

ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་སྐྱིལ་ཀྲུང་བཞུགས། །
शल चिग छग ञीस् क्यिल टुङ शुग
एक-मुख, दो-हस्त, वज्रपर्यङ्क बैठे

ས་གནོན་མཉམ་གཞག་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །
स नोन ञम शग ज़े छग छ़ल
भूम्याभिभूत-समाधिस्थ को नमन है।

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।1।

གངས་རི་ཆེན་པོ་ཏི་སེ་ན། །
गङ रि छेन पो ति से न
महान् हिमगिरि कैलाश पर

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་ཡན་ལག་འབྱུང་། །
फग प नेस् तेन येन लग छुङ
आर्य स्थविर अंगज (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་སུམ་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ सुम ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और तीन सौ से परिवृत्त

སྤོས་ཕོར་རྔ་ཡབ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
पोस् फोर ङ यप ज़िन छग छ़ल
धूपपात्र (और) चामर-धारी को नमन है।

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।2।

དྲང་སྲོང་རི་ཡི་ཤེལ་ནགས་ལ། །
डङ सोङ रि यि शेल नग ल
ऋषि-गिरि के स्फटिक-वन में

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་མ་ཕམ་པ། །
फग प नेस् तेन म फम प
आर्य स्थविर अजित (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་བརྒྱ་ཕྲག་གཅིག་གིས་བསྐོར། །
ड चोम ग्य ठग चिग गीस् कोर
एक-सौ अर्हतों से परिवृत्त

ཕྱག་གཉིས་མཉམ་གཞག་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །
छग ञीस् ञम शग ज़े छग छ़ल
द्वि-हस्त समाधि-मुद्रावान् को नमन है।

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।3।

ལོ་མ་བདུན་པའི་རི་ཕུག་ན། །
लो म दुन पई रि फुग न
सप्तपर्णी के गिरिगह्वर में

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་ནགས་ན་གནས། །
फग प नेस् तेन नग न नेस्
आर्य स्थविर वनवासिन् (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་བཞི་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ शि ग्येस् कोर
अर्हत हज़ार और चार-सौ से वरिवृत्त

སྡིགས་མཛུབ་རྔ་ཡབ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
दिग ज़ुप ङ यप ज़िन छग छ़ल
तर्जनी, चामरधारी को नमन है।

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।4।

ཛམྦུ་གླིང་གི་ཟངས་གླིང་ན། །
जम्बु लिङ गि ज़ङ लिङ न
जम्बुद्वीप के ताम्रद्वीप में

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་དུས་ལྡན་ཏེ། །
फग प नेस् तेन दुस् देन ते
आर्य स्थविर कालिक (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་ཆིག་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ छिग ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और एक-सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

སིངྒ་ལ་ཡི་གླིང་ན་ནི། །
सिङ्ग ल यि लिङ न नि
सिंहल (-देश) के द्वीप में

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་གིས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ ठग चिग गीस् कोर
अर्हत् हजार और एक-सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

ཆུ་བོ་ཡ་མུ་ནའི་གླིང་ན། །
छु बो य मु नई लिङ न
नदी यमुना के द्वीप में

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་ཉིས་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ ञीस् ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और दो-सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

གནས་མཆོག་དམ་པ་ཁ་ཆེ་ན། །
नेस् छोग दम प ख छे न
पवित्र परम-स्थल कश्मीर में

གསེར་གྱི་རྣ་ཀོར་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
सेर ग्यि न कोर ज़िन छग छ़ल
सुवर्ण-कुण्डलधारी को नमन है

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।5।

གནས་བརྟན་རྡོ་རྗེ་མོ་ཡི་བུ། །
नेस् तेन दोर जे मो यि बु
स्थविर वज्रीपुत्र (रहते) हैं

སྡིགས་མཛུབ་རྔ་ཡབ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
दिग ज़ुप ङ यप ज़िन छग छ़ल
तर्जनी, चामरधारी को नमन हैं

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।6।

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་བཟང་པོ་ནི། །
फग प नेस् तेन ज़ङ पो नि
आर्य स्थविर भद्र (रहते) हैं

ཆོས་འཆད་མཉམ་གཞག་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །
छोस् छे ञम शग ज़े छग छ़ल
धर्म-वाचन-समाधिस्थ को नमन है

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।7।

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་གསེར་བེའུ། །
फग प नेस् तेन सेर बेहु
आर्य स्थविर कनकवत्स (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་ཆེན་པོ་ལྔ་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम छेन पो ङ ग्येस् कोर
महान् अर्हत् पाँच सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

ནུབ་ཀྱི་བ་ལང་སྤྱོད་ན་ནི། །
नुप क्यि व लङ चोद् न नि
पश्चिम के गोदानीय में

དགྲ་བཅོམ་ཆེན་པོ་བདུན་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम छेन पो दुन ग्येस् कोर
महान् अर्हत् सात सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བྱང་གི་སྒྲ་མི་སྙན་ན་ནི། །
छङ गि ड मि ञेन न नि
उत्तर के उत्तरकुरु में

དགྲ་བཅོམ་ཆེན་པོ་དགུ་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम छेन पो गु ग्येस् कोर
महान् अर्हत् नौ-सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

ཏྲི་ཡང་ཀུ་ཡི་གླིང་ན་ནི། །
टि यङ कु यि लिङ न नि
प्रियंगु के द्वीप में

རིན་ཆེན་ཞགས་པ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
रिन छेन शग प ज़िन छग छ़ल
रत्नपाश-धारी को नमन है।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।8।

བྷ་ར་དྷྭ་ཛ་གསེར་ཆེན་མཆོག །
भ र ध◌ྭ ज सेर छेन छोग
भारद्वाज सुवर्णोत्तम (रहते) हैं

ཕྱག་གཉིས་མཉམ་གཞག་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །
छग ञीस् ञम शग ज़े छग छ़ल
द्वि-हस्त समाधि-मुद्रावान् को नमन है।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।9।

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་བ་ཀུ་ལ། །
फग प नेस् तेन व कु ल
आर्य स्थविर बकुल (रहते) हैं

ཕྱག་གཡོན་ནེའུ་ལེ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
छग योन नेहु ले ज़िन छग छ़ल
वाम-हस्त नेवला-धारी को नमन है।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।10।

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་སྒྲ་གཅན་འཛིན། །
फग प नेस् तेन ड चेन ज़िन
आर्य स्थविर राहुल (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་ཆིག་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ छिग ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और एक-सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བྱ་རྒོད་ཕུང་པོའི་རི་བོ་ལ། །
छ गोद् फुङ पोइ रि बो ल
गृध्रकूट-पर्वत पर

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་དྲུག་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ डुग ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और छह-सौ से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

ཤར་གྱི་ལུས་འཕགས་གླིང་ན་ནི། །
शर ग्यि लुस् फग लिङ न नि
पूर्व के विदेह-द्वीप में

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་གིས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ ठग चिग गीस् कोर
अर्हत् एक-हज़ार से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

ལྷ་གནས་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་ན། །
ल्ह नेस् सुम चु च़ सुम न
देव-स्थल त्रायस्त्रिंशत में

རིན་ཆེན་ཏོག་ཞུ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
रिन छेन टोग शु ज़िन छग छ़ल
रत्न-मुकुट-धारी को नमन है।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।11।

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་ལམ་ཕྲན་བརྟན། །
फग प नेस् तेन लम ठेन तेन
आर्य स्थविर चूडपन्थक (रहते) हैं

ཕྱག་གཉིས་མཉམ་གཞག་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །
छग ञीस् ञम शग ज़े छग छ़ल
द्वि-हस्त समाधि-मुद्रावान् को नमन है।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।12।

བྷ་ར་དྷྭ་ཛ་བསོད་སྙོམས་ལེན། །
भ र ध◌ྭ ज सोद् ञोम लेन
पैण्डपातिक भारद्वाज (रहते) हैं

གླེགས་བམ་ལྷུང་བཟེད་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
लेग बम ल्हुङ ज़ेद् ज़िन छग छ़ल
पुस्तक (एवं) भिक्षापात्र-धारी को नमन है

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।13।

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་ལམ་བསྟན་ནི། །
फग प नेस् तेन लम तेन नि
आर्य स्थविर महापन्थक (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་ཆེན་པོ་དགུ་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम छेन पो गु ग्येस् कोर
महान् अर्हत् नौ-सौ से परिवृत्त

གླེགས་བམ་ཆོས་འཆད་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །
लेग बम छोस् छे ज़े छग छ़ल
पुस्तक(-धर), धर्मवाचक को नमन है

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।14।

རི་ཡི་རྒྱལ་པོ་ངོས་ཡངས་ལ། །
रि यि ग्यल पो ङोस् यङ ल
गिरिराज-विपुल-पार्श्व में

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་ཀླུ་ཡི་སྡེ། །
फग प नेस् तेन लु यि दे
आर्य स्थविर नागसेन (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་ཉིས་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ ञीस् ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और दो-सौ से परिवृत्त

བུམ་པ་འཁར་གསིལ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
बुम प खर सिल ज़िन छग छ़ल
कलश (एवं) खक्खर-धारी को नमन है

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।15।

རི་ཡི་རྒྱལ་པོ་བྷི་ཧུ་ལར། །
रि यि ग्यल पो भि हु लर
गिरिराज भिहल में

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་སྦེད་བྱེད་ནི། །
फग प नेस् तेन बेद् छेद् नि
आर्य स्थविर गोपक (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་དང་བཞི་བརྒྱས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ दङ शि ग्येस् कोर
अर्हत् हज़ार और चार-सौ से परिवृत्त

ཕྱག་གཉིས་གླེགས་བམ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
छग ञीस् लेग बम ज़िन छग छ़ल
द्वि-हस्त-पुस्तक-धारी को नमन है

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छ़े तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।16।

རི་ཡི་རྒྱལ་པོ་གངས་ཅན་ལ། །
रि यि ग्यल पो गङ चेन ल
गिरिराज हिमवत में

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་མི་ཕྱེད་པ། །
फग प नेस् तेन मि छेद् प
आर्य स्थविर अभेद (रहते) हैं

དགྲ་བཅོམ་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་གིས་བསྐོར། །
ड चोम तोङ ठग चिग गीस् कोर
अर्हत् एक-हज़ार से परिवृत्त

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

འཕགས་པའི་དགེ་བསྙེན་དྷརྨ་ཏཱ། །
फग पई गे ञेन धम ता
आर्य-उपासक धर्मता

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་མདུན་ན་བཞུགས། །
नङ व था येस् दुन न शुग
अमिताभ सामने बैठे हैं

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བརྩོན་པས་གོ་བགོས་མཐུ་སྟོབས་ཅན། །
ज़ोन पेस् गो गोस् थु तोप चेन
वीर्य-कवच-धारी, शक्ति-बल वाले

ཤར་ལྷོ་ནུབ་བྱང་ཕྱོགས་བཞི་ཡི། །
शर ल्हो नुप छङ छोग शि यि
पूर्व, दक्षिण, पश्चिम-उत्तर चतुर्दिशा के

བླ་མའི་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། །
ल मई कु छे तेन प दङ
गुरु का जीवन-अवधि दृढ़ हों

བྱང་ཆེན་མཆོད་རྟེན་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
छङ छेन छोद् तेन ज़िन छग छ़ल
महाबोधि-स्तूपधारी को नमन है

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।17।

རལ་པའི་ཐོད་བཅིངས་གླེགས་བམ་ཁུར། །
रल पई थोद् चिङ लेग बम खुर
जटा बाँधे, पुस्तक लिये हुये

རྔ་ཡབ་བུམ་པ་འཛིན་ཕྱག་འཚལ། །
ङ यप बुम प ज़िन छग छ़ल
चामर (एवं) कलशधारी को नमन है।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।18।

སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་ལེགས་སྐྱོང་བའི། །
सङ ग्येस् तेन प लेग क्योङ बई
बुद्ध-शासन को सुरक्षित रखने वाले

རྒྱལ་ཆེན་བཞི་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल छेन शि ल छग छ़ल लो
चतुर्महाराजाओं को, नमन करता हूँ।

བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प ग्येस् पर छिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें शासन विस्तृत हों।20।

སངས་རྒྱས་སྤྲུལ་པ་དགྲ་བཅོམ་འཕགས་པའི་ཚོགས། །
सङ ग्येस् टुल प ड चोम फग पई छ़ोग
बुद्ध-निर्मित अर्हत् आर्य-गण

འགྲོ་བའི་དོན་དུ་བསྟན་པ་སྐྱོང་མཛད་པའི། །
डो बई दोन दु तेन प क्योङ ज़े पई
सत्त्वार्थ शासन के पालन-कर्ता

དཀོན་མཆོག་གསུམ་དངོས་གནས་བརྟན་བཅུ་དྲུག་གིས།།
कोन छोग सुम ङोस् नेस् तेन चु डुग गीस्
प्रत्यक्ष त्रिरत्न हैं- सोलह-स्थविर

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་གནས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प युन रिङ नेस् पर छ्रिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, शासन दीर्घकाल रहे।21।

ཐུགས་རྗེའི་བདག་ཉིད་གནས་བརྟན་བཅུ་དྲུག་གི །
थुग जे दग ञिद् नेस् तेन चु डुग गि
करुणात्मक सोलह स्थविरों के

འཁོར་ཚོགས་སྲིད་མཚོ་ལས་བརྒལ་ཉོན་མོངས་མེད། །
खोर छ़ोग सिद् छ़ो लेस गल ञोन मोङ मेद्
परिवार-गण (हैं), भवसागर मुक्त, क्लेश-रहित

ཁྲི་དང་དྲུག་སྟོང་བཞི་བརྒྱའི་ཚོགས་རྣམས་ཀྱིས། །
ठि दङ डुग तोङ शि ग्यई छ़ोग नम क्यीस्
दस सहस्र, षट-सहस्र, चार-सौ-गण द्वारा

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་གནས་པར་བྱིན་གྱིས་རློབས། །
तेन प युन रिङ नेस् पर छ्रिन ग्यीस् लोप
अधिष्ठित करें, शासन दीर्घकाल रहे।22।

བསོད་ནམས་རྒྱ་མཚོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། །
सोद् नम ग्य छ़ो योङ सु ज़ोग छेद् चिङ
पुण्य-सागर परिपूर्ण करके

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་རྣམ་པར་དག་གྱུར་ཏེ། །
ये शेस् ग्य छ़ो नम पर दग ग्युर ते
ज्ञान-सागर विशुद्ध होकर

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་མ་ལུས་ཀུན་རྫོགས་ནས། །
योन तेन ग्य छ़ो म लुस् कुन ज़ोग नेस्
गुण-सागर अशेष पूर्ण कर

འཇིག་རྟེན་ཀུན་ལས་ཁྱད་པར་འཕགས་པར་ཤོག །
जिग तेन कुन लेस ख्ये पर फग पर शोग
समस्त लोकों में विशिष्ट हो जायें।23।

དུས་གསུམ་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་སྲས་ཐུགས་རྗེ་ཡིས། །
दुस् सुम ग्यल व ग्यल सेस् थुग जे यीस्
त्रिकाल-जिन (एवं) जिनपुत्र-करुणा से

ཉན་ཐོས་ཚུལ་བཟུང་སྲིད་པ་ཇི་སྲིད་བར། །
ञेन थोस् छ़ुल ज़ुङ सिद् प जि सिद् बर
श्रावक-नय ग्रहण कर, यावत् भव-स्थिति तक

བསྟན་པ་སྐྱོང་ཞིང་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་པ། །
तेन प क्योङ शिङ डो बई दोन ज़े प
शासन-रक्षा कर सत्त्वार्थ करने वाले

གནས་བརྟན་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
नेस् तेन छेन पो नम क्यि ट शीस् शोग
महास्थविरों का मंगल हों।24।

ཞེས་པཎ་ཆེན་ཤཱཀྱ་ཤྲཱི་སོ། །
यह महापण्डित शाक्यश्री का (लिखा गया) है।

# དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བདུན་མཆོད་པའི་ཆོ་ག་བསྡུས་ཏེ་བྱ་བ་བཞུགས་སོ། །
# संक्षिप्त सप्त तथागत पूजा-विधि

བཅོམ་ལྡན་འདས་སྨན་གྱི་བླ་བཻཌཱུརྱའི་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བདུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བདུན་མཆོད་པའི་ཆོ་ག་བསྡུས་ཏེ་བྱ་བར་འདོད་པས། སོ་སོར་ཐར་པའི་སྡོམ་པ་གང་རུང་དང་ལྡན་ཞིང་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་ལ། དུས་ཚེས་བརྒྱད་ལྔ་བུའམ། རྒྱུན་དུ་གནས་ན་ཡིད་དུ་འོང་བ་གཙང་མར་བྱས་པའི་གནས་སུ་མཎྜལ་མེ་ཏོག་གི་ཚོམ་བུ་ལྷ་གྲངས་དང་མཉམ་པ་བཀོད། སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅི་རིགས་སུ་བཞུགས། མཆོད་པ་ཅི་འབྱོར་ཡང་བཤམས་ཏེ་ནུས་པ་མ་སྒྲིབ་པར་བཤམས། དེ་ནས་ཁྲུས་བྱས་ཏེ་སྟན་བདེ་བར་འདུག་ལ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཅི་རིགས་སུ་བསྒོམ།

भगवान् भैषज्यगुरु वैडूर्यप्रभराज आदि सप्त तथागत को प्रणाम। संक्षिप्त सप्त तथागत पूजा-विधि करने के इच्छुक के द्वारा किसी एक प्रातिमोक्षसंवर से युक्त होकर बोधिचित्त को उत्पन्न करना चाहिए। अष्टमी अथवा सदा करना चाहते हैं तो मनोहर स्वच्छ किए हुए स्थल पर मण्डल, पुष्प-निमित्त देव-संख्या समान स्थापित करना चाहिए। काय-वाक्-चित्त अधिष्ठान इनमें जो प्राप्त हो, को स्थापित करें। जो प्राप्त हो पूजा-वस्तुओं को सुसज्जित कर, यथा शक्य सजा करके सुखासन पर बैठें। कुछ समय शून्यता समाधि की भावना करनी चाहिए।

གང་གིས་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་། །
गङ गीस् तेन चिङ डेल बर छुङ
जिसके द्वारा प्रतीत्यसमुत्पाद (को)।

འགག་པ་མེད་པ་སྐྱེ་མེད་པ། །
गग प मेद् प क्ये मेद् प
अनिरोध, अनुत्पाद।

ཆད་པ་མེད་པ་རྟག་མེད་པ། །
छे प मेद् प तग मेद् प
अनुच्छेद, अशाश्वत।

འོང་བ་མེད་པ་འགྲོ་མེད་པ། །
ह़ोङ व मेद् प डो मेद् प
अनागम, अनिर्गम।

ཐ་དད་དོན་མིན་དོན་གཅིག་མིན། །
थ दे दोन मिन दोन चिग मिन
अनेकार्थ, अनानार्थ।

སྤྲོས་པ་ཉེར་ཞི་ཞིར་བསྟན་པ། །
टोस् प ञेर शि शिर तेन प
प्रपञ्चोपशम शिव (रूप) देशित किया।

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སྨྲ་རྣམས་ཀྱི། །
ज़ोग पई सङ ग्येस् म नम क्यि
सम्बुद्धों द्वारा कथित।

དམ་པ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཞེས་དང་།
दम प दे ल छग छ़ल लो
(उस) वर (श्रेष्ठ) को प्रणाम करता हूँ।।

གང་ཞིག་རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་དེ་མ་སྐྱེས། །
गङ शिग क्येन लेस क्येस् प दे म क्येस्
जो प्रत्योत्पन्न है, वह अनुत्पन्न है।

དེ་ལ་སྐྱེ་བའི་རང་བཞིན་ཡོད་མ་ཡིན། །
दे ल क्ये बई रङ शिन योद् म यिन
उसमें जाति-स्वभाव नहीं है।

རྐྱེན་ལ་རག་ལས་གང་དེ་སྟོང་པ་སྟེ། །
क्येन ल रग लेस गङ दे तोङ प ते
जो प्रत्ययाश्रित है, वह शून्य है।

གང་གིས་སྟོང་ཉིད་ཤེས་དེ་བག་ཡོད་ཡིན།
गङ गीस् तोङ ञिद् शेस् दे वग योद् यिन
जो शून्यता को जानता है, वह अप्रमादी है।।

ཞེས་པ་ངག་དོན་དྲན་བཞིན་དུ་བརྗོད། དེ་ལས་ལངས་ནས།
इस प्रकार वाक् (वचन) के अर्थ का स्मरण करते हुए वाचन करना चाहिए। उस (समाधि) से उठकर–

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་བ་དང་བདེ་བའི་རྒྱུ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
सेम चेन थम चे दे व दङ दे वई ग्यु दङ देन पर ग्युर चिग
समस्त सत्त्व सुख एवं सुख-हेतु से युक्त हों।

སྡུག་བསྔལ་དང་སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྒྱུ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
दुग ङल दङ दुग ङल ग्यि ग्यु दङ डल बर ग्युर चिग
समस्त सत्त्व दुःख एवं दुःख-हेतु से विरक्त हों।

སྡུག་བསྔལ་མེད་པའི་བདེ་བ་དམ་པ་དང་མི་འབྲལ་བར་གྱུར་ཅིག །
दुग ङल मेद् पई दे व दम प दङ मि डल बर ग्युर चिग
समस्त सत्त्व दुःख रहित परम सुख से विच्छेद नहीं हों।

ཉེ་རིང་ཆགས་སྡང་གཉིས་དང་བྲལ་བའི་བཏང་སྙོམས་ཆེན་པོ་ལ་གནས་པར་གྱུར་ཅིག །
ञे रिङ छग दङ ञीस् दङ डल बई तङ ञोम छेन पो ल नेस् पर ग्युर चिग
समस्त सत्त्व निष्पक्ष राग-द्वेष दो से रहित महा-उपेक्षा में स्थित हों।

ལན་གསུམ་མཐར་ཚད་མེད་བཞི་བསྒོམ་ཞིང་།
तीन बार।

སངས་རྒྱས་ཆོས་དང་ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་རྣམས་ལ། །
सङ ग्येस् छोस् दङ छ़ोग क्यि छोग नम ल
अन्त में (मैत्रेय आदि) चार अप्रमाण की भावना करें।

བདག་གིས་སྦྱིན་སོགས་བགྱིས་པ་འདི་དག་གིས། །
दग गीस् छिन सोग ग्यीस् प दि दग गीस्
मेरे द्वारा किये इन दानादि कृत्यों से।

བྱང་ཆུབ་བར་དུ་བདག་ནི་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छङ छुप बर दु दग नि क्यप सु छि
बुद्ध-धर्म और परम गण (संघ) में। बोधि पर्यन्त मैं शरण जाता (हूँ)।

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་འགྲུབ་པར་ཤོག །
डो ल फेन छिर सङ ग्येस् डुप पर शोग
सत्त्व कल्याणार्थ बुद्ध बन जाऊँ।।

དེ་ནས་རང་གི་ནུས་པ་དང་ཕྱོགས་བཅུའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྲས་དང་བཅས་པས་དེ་ལྟར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་ཡང་བསམ།
उसके बाद अपने बल तथा दश दिशाओं के पुत्र (बोधिसत्त्वों) सहित तथागतों द्वारा एवं अधिष्ठित करने का चिन्तन भी करना चाहिए।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བདེན་པ་དང་། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་མཐུ་དང་། ཚོགས་གཉིས་
कोन छोग सुम ग्यि देन प दङ   सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा नम क्यि थु दङ   छ़ोग ञीस्
**त्रिरत्न के सत्य, बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों के बल, दो सम्भारों की परिपूर्णता रूपी**

ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་མངའ་ཐང་ཆེན་པོ་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རང་བཞིན་རྣམ་པར་དག་ཅིང་བསམ་གྱིས་མི་
योङ सु ज़ोग पई ङा थङ छेन पो दङ   छोस् क्यि यिङ रङ शिन नम पर दग चिङ सम ग्यीस् मि
**महान् अधिकार और धर्मधातु विशुद्ध स्वभाव के अनन्त बल के**

ཁྱབ་པའི་སྟོབས་ཀྱིས། ཡུལ་ཕྱོགས་འདི་ཐམས་ཅད་ཞིང་ཁམས་རྣམ་པར་དག་པ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་
ख्यप पई तोप क्यीस्   युल छोग दि थम चे शिङ खम नम पर दग प जिग तेन ग्यि खम दे व चेन
**द्वारा ये सभी प्रदेश विशुद्ध क्षेत्रधातु लोकधातु सुखावती के समान**

ལྟ་བུ་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་པོ་རྒྱུ་རིན་པོ་
त बु योन तेन सम ग्यीस् मि ख्यप प दङ देन पर ग्युर चिग   शल मेद् खङ छेन पो ग्यु रिन पो
**अनन्त गुणों से व्याप्त हों। महान् विमान (जो) हेतु (स्वरूप) नानाविध**

ཆེ་སྣ་ཚོགས་ལས་གྲུབ་པ། རྒྱ་སྟོང་གསུམ་གང་གཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་དང་མཉམ་པ། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་བསམ་
छे न छ़ोग लेस डुप प   ग्य तोङ सुम गङ्गाई लुङ गि छे म दङ ञम प   नम पर थर पई गो सम
**रत्नों से बनें हैं, त्रिसाहस्र गङ्गा घाटी के बालू समान विस्तृत, अनन्त विमोक्ष द्वारों से**

གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་ལྡན་པ་འོད་ཟེར་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་འབར་བ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་ཐམས་ཅད་
ग्यीस् मि ख्यप प दङ देन प ह़ोद् ज़ेर छेन पो रप तु बर व   सेम चेन थम चे क्यि दोन थम चे
**व्याप्त तथा महाप्रभा से प्रज्वलित, समस्त सत्त्वों के सभी अर्थों को**

ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ། གདན་རིན་པོ་ཆེ་སེང་གེའི་ཁྲི་པདྨ་དང་ཟླ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དང་། མཆོད་པའི་
योङ सु ज़ोग पर छेद् प   देन रिन पो छे सेङ गे ठि पेमा दङ द व पग तु मेद् प दङ   छोद् पई
**परिपूर्ण करने वाले, रत्न (निर्मित) सिंहासन अपरिमित पद्म और चन्द्र का आसन,**

སྤྲིན་བཟང་པོར་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ལས་བྱུང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །ཅེས་ལན་གསུམ་བཟླས།
टिन ज़ङ पोर चोद् पई मोन लम लेस छुङ व सम ग्यीस् मि ख्यप प दङ देन पर ग्युर चिग
**भद्रचर्याप्रणिधान में कहे अनुसार अनन्त पूजामेघ से युक्त हों।** (इसकी) तीन बार अनुवृत्ति करनी चाहिए।

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བདེན་པ་དང་། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་
कोन छोग सुम ग्यि देन प दङ सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे क्यि छिन ग्यीस् लप प
त्रिरत्न के सत्य, समस्त बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों के अधिष्ठान (आशीर्वाद),

དང་། ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་མངའ་ཐང་ཆེན་པོ་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྣམ་པར་དག་ཅིང་བསམ་གྱིས་མི་
दङ छोग ञीस् योङ सु ज़ोग पई ङा थङ छेन पो दङ छोस् क्यि यिङ नम पर दग चिङ सम
दो सम्भारों के परिपूर्ण होने के महान् अधिकार तथा धर्मधातु के विशुद्ध स्वरूप

ཁྱབ་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །ལན་གསུམ་བཟླས་ལ།
ग्यीस् मि ख्यप पई तोप क्यीस् दे शिन दु ग्युर चिग
अनन्त बल के द्वारा तथता स्वरूप हों। (तीन बार अनुवृत्ति करें।

དེ་ནས་འཕགས་པ་སྤྱན་དྲངས་ཏེ། །པུས་མོ་བཙུགས་ཏེ་མེ་ཏོག་བླངས། ཐལ་མོ་སྦྱར་ནས་འདི་སྐད་ཅེས།
तत्पश्चात् आर्य का आमन्त्रण कर घुटना टेक पुष्प ग्रहण कर अञ्जलिबद्ध होकर इस प्रकार (पाठ करें)–

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མཚན་ལེགས་པར་ཡོངས་བསྒྲགས་དཔལ་གྱི་རྒྱལ་པོ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་
चोम देन देस् दे शिन शेग प छेन लेग पर योङ डग पल ग्यि ग्यल पो दङ दे शिन शेग
भगवान् तथागत नामसुपरिकीर्ति-श्रीराज, तथागत

པ་རིན་པོ་ཆེ་དང་ཟླ་བ་དང་པདྨས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་པ་མཁས་པ་གཟི་བརྗིད་སྒྲ་དབྱངས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དང་། དེ་
प रिन पो छे दङ द व दङ पेमोस् रप तु ग्येन प खेस् प ज़ि जिद् ड यङ क्यि ग्यल पो दङ दे
रत्नचन्द्रपद्मसुअलंकृत विद्वानौजशब्दघोषराज,

བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་བཟང་དྲི་མེད་རིན་ཆེན་སྣང་བ་བརྟུལ་ཞུགས་གྲུབ་པ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མྱ་ངན་མེད་
शिन शेग प सेर ज़ङ डि मेद् रिन छेन नङ व तुल शुग डुप प दङ दे शिन शेग प न्य ङेन मेद्
तथागत स्वर्णभद्रविमलरत्नाभासव्रतसिद्ध, तथागत

མཆོག་དཔལ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཆོས་བསྒྲགས་རྒྱ་མཚོའི་དབྱངས་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱ་
छोग पल दङ दे शिन शेग प छोस् डग ग्य छ़ोइ यङ दङ दे शिन शेग प छोस् क्यि ग्य
अशोकवरश्री, तथागत धर्मघोषणासागरघोष, तथागत

མཚོ་མཆོག་གི་བློས་རྣམ་པར་རོལ་པ་མངོན་པར་མཁྱེན་པ་དང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་
छ़ो छोग गि लोस् नम पर रोल प ङोन पर ख्येन प दङ चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम
धर्मसागरवरबुद्धिविरतिअभिज्ञान, भगवान् तथागत अर्हत्

པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིག་པ་དང་ཞབས་སུ་ལྡན་པ། བདེ་བར་གཤེགས་པ། འཇིག་རྟེན་མཁྱེན་པ།
प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् रिग प दङ शप सु देन प  दे वर शेग प  जिग तेन ख्येन प
**सम्यक् सम्बुद्ध विद्याचरणसम्पन्न सुगत लोकविद्**

སྐྱེས་བུ་འདུལ་བའི་ཁ་ལོ་བསྒྱུར་བ། བླ་ན་མེད་པ། ལྷ་དང་མི་རྣམས་ཀྱི་སྟོན་པ། སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་
क्येस् बु दुल बई ख लो ग्युर व  ल न मेद् प  ल्ह दङ मि नम क्यि तोन प  सङ ग्येस् मेन ग्यि
**पुरुषदम्यसारथि अनुत्तर देव-मनुष्यों के शास्ता बुद्ध भैषज्यगुरु**

བླ་བཻཌཱུརྻའི་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དང་། ད་ལྟར་བདག་ཅག་གི་སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་འཛམ་བུའི་
ल वैदूर्यई ह़ोद् क्यि ग्यल पो दङ  द तर दग चग गि तोन प चोम देन देस् शाक्य थुप प ज़म बुइ
**वैडूर्यप्रभ-राज तथा वर्तमान में हमारे शास्ता भगवान् शाक्यमुनि इस**

གླིང་འདིར་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ཚུལ་བསྟན་ཀྱང་། ཞིང་ཁམས་གཞན་དུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རྣམ་པར་རོལ་པ་
लिङ दिर न्य ङेन लेस देस् पई छुल तेन क्यङ  शिङ खम शेन दु दे शिन शेग पई नम पर रोल प
**जम्बूद्वीप में निर्वाण प्राप्ति का क्रम (नय) दिखाने पर भी दूसरे क्षेत्रधातु में तथागत नानाविध विरतियों द्वारा**

སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་ཅིང་བཞུགས་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཇམ་དཔལ་
न छ़ोग क्यीस् डो बई दोन ज़े चिङ शुग प दङ  छङ छुप सेम पा सेम पा छेन पो जम पल
**प्राणियों का कल्याण करते हुए विराजमान हैं। बोधिसत्त्व महासत्त्व**

གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་དང་། རྒྱལ་བའི་སྲས་སྐྱབས་གྲོལ་དང་། ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་
शोन नुर ग्युर प दङ  ग्यल वई सेस् क्यप डोल दङ  छग न दोर जे ल सोग प पग तु मेद् प
**मञ्जुश्रीकुमारभूत, जिनपुत्र शरणमुक्ति, वज्रपाणि आदि अपरिमित लोग,**

དང་། དམ་པའི་ཆོས་དང་འཁོར་རྣམ་བཞི་སྐྱོང་བར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་དང་།
दङ  दम पई छोस् दङ खोर नम शि क्योङ वर शल ग्यीस् शेस् प ल्हई वङ पो ग्य छ्िन दङ
**सद्धर्म तथा चतुर्विध परिवार को पालन करने की प्रतिज्ञा करने वाले देवेन्द्र शतक्रतु,**

ཚངས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་དང་། གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཇི་འཇིགས་ལ་སོགས་པ་གནོད་
छ़ङ प दङ  ग्यल पो छेन पो शि दङ  नोद् छ्िन ग्यि दे पोन छेन पो जि जिग ल सोग प नोद्
**ब्रह्मा, चतुर्महाराज और यक्षसेनापति यथा-भय आदि यक्ष के समस्त**

སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་སྔོན་གྱི་ཐུགས་དམ་བཟང་པོ་ལས་གླེང་སྟེ། བདག་ཅག་ལ་སོགས་པ་འགྲོ་བ་མང་པོ་
छ्िन ग्यि दे पोन थम चे ल यङ ङोन ग्यि थुग दम ज़ङ पो लेस लेङ ते  दग चग ल सोग प डो व
**सेनापतियों को भी पूर्व के भद्र प्रतिज्ञा की याद दिलाकर हम लोगों के साथ ही**

སྐྱོབ་པའི་སླད་དུ་མགོན་སྐྱབས་དཔུང་གཉེན་དུ་སྤྱན་འདྲེན་ཞིང་མཆིས་ན་མཆོད་པའི་ཚོགས་སྤྲུར་བའི་ཕོ་བྲང་གི་དཀྱིལ་
मङ पो क्योप पई ले दु गोन क्यप पुङ ञेन दु चेन डेन शिङ छीस् न छोद् पई छ़ोग छर बई फो
अनेक प्राणियों की रक्षा के लिए नाथ-शरण (और) सहायता के लिए आमन्त्रण कर रहा हूँ, अतः पूजा रूपी

འཁོར་འདིར་གཤེགས་ཤིང་གདན་འཛོམས་པ་ཆེན་པོ་མཛད་དེ་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་ཅི་གནང་། ལན་གཅིག་བཟླས།
डङ गि दक्यिल खोर दिर शेग शिङ देन ज़ोम प छेन पो ज़े दे छिन ग्यीस् लप पर चि नङ
सम्भार योजित इस प्रासाद मण्डल में पधार, एकत्रित होकर कृपया अधिष्ठित करें। एक बार अनुवृत्ति करें।

མ་ལུས་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་མགོན་གྱུར་ཅིང་། །
म लुस् सेम चेन कुन ग्यि गोन ग्युर चिङ
अशेष समस्त सत्त्वों के नाथ स्वरूप।

བདུད་སྡེ་དཔུང་བཅས་མི་བཟད་འཇོམས་མཛད་ལྷ། །
दुद् दे पुङ चेस् मि ज़े जोम ज़े ल्ह
मारसेना सहित चण्ड (को) नष्ट करने वाले देव।

དངོས་རྣམས་མ་ལུས་ཇི་བཞིན་མཁྱེན་གྱུར་པའི། །
ङोस् नम म लुस् जि शिन ख्येन ग्युर पई
अशेष पदार्थों को यथावत् जानने वाले।

བཅོམ་ལྡན་འཁོར་དང་བཅས་ཏེ་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
चोम देन खोर दङ चेस् ते शेग सु सोल
प्रार्थना है, भगवान् परिवार सहित पधारें।।

བཅོམ་ལྡན་བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་དུ་མ་རུ། །
चोम देन कल प डङ मेद् दु म रु
भगवान् (ने) असंख्य अनेक कल्पों में।

འགྲོ་ལ་བརྩེ་ཕྱིར་ཐུགས་རྗེ་རྣམ་སྦྱངས་ཤིང་། །
डो ल त्ज़े छिर थुग जे नम छङ शिङ
सत्त्व-प्रेम के कारण, करुणा का परम अभ्यास किया।

སྨོན་ལམ་རྒྱ་ཆེན་དགོངས་པ་ཡོངས་རྫོགས་པའི། །
मोन लम ग्य छेन गोङ प योङ ज़ोग पई
विस्तृत प्रणिधान (तथा) अभिप्राय के परिपूर्ण स्वरूप।

ཁྱོད་བཞེད་འགྲོ་དོན་མཛད་དུས་འདི་ལགས་ན། །
ख्योद् शेद् डो दोन ज़े दुस् दि लग न
आपके अभिप्राय स्वरूप सत्त्वार्थ का यही समय है।

དེ་ཕྱིར་ཆོས་དབྱིངས་ཕོ་བྲང་ལྷུན་གྲུབ་ནས། །
दे छिर छोस् यिङ फो डङ ल्हुन डुप नेस्
इसलिए अनाभोग धर्मधातु प्रासाद से।

རྫུ་འཕྲུལ་བྱིན་རླབས་སྣ་ཚོགས་སྟོན་མཛད་ཅིང་། །
ज़ु ठुल छिन लप न छ़ोग तोन ज़े चिङ
नाना ऋद्धि-अधिष्ठान का प्रदर्शन कर।

མཐའ་ཡས་སེམས་ཅན་ཚོགས་རྣམས་སྒྲོལ་བའི་ཕྱིར། །
था येस् सेम चेन छ़ोग नम डोल बई छिर
अनन्त सत्त्वगण को तारने के लिए।

ཡོངས་དག་འཁོར་དང་བཅས་ཏེ་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
योङ दग खोर दङ चेस् ते शेग सु सोल
प्रार्थना है, परिशुद्ध परिवार सहित पधारें।।

བཅོམ་ལྡན་འདིར་ནི་བྱོན་པ་ལེགས། །
चोम देन दिर नि छोन प लेग
भगवन् आपका आगमन अच्छा है।

བདག་ཅག་བསོད་ནམས་སྐལ་པར་ལྡན། །
दग चग सोद् नम कल पर देन
हम पुण्य (के) भागी हुए।

བདག་གི་མཆོད་ཡོན་བཞེས་སླད་དུ། །
दग गि छोद् योन शेस् ले दु
मेरे पूजा-अर्घ्य ग्रहण करने हेतु।

འདི་ཉིད་དུ་ནི་བཞུགས་སུ་གསོལ། །
दि ञिद् दु नि शुग सु सोल
प्रार्थना है, यहीं पर विराजमान हों।।

སྟོང་གསུམ་ཀུན་དང་མཉམ་པ་ཡི། །
तोङ सुम कुन दङ ञम प यि
सर्वत्रिसाहस्र के बराबर।

པདྨ་འདབ་བརྒྱད་གེ་སར་བཅས། །
पेमा दप ग्ये गे सर चेस्
केसर सहित अष्टदलपद्म।

བདེ་ཞིང་ཡངས་པར་འབུལ་ལགས་ན། །
दे शिङ यङ पर बुल लग न
सुख(-द) विशाल अर्पित करने से।

ཅི་བདེ་བར་ནི་བཞུགས་སུ་གསོལ། །
चि दे वर नि शुग सु सोल
सुखपूर्वक विराजमान हों।।

སྤྱན་དྲངས་པའི་རྗེས།
आमन्त्रित करने के बाद–

སོ་སོའི་ཞིང་ཁམས་ནས་རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས་ནམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་ཏེ་གཞལ་མེད་ཁང་གི་དབུས་སུ་སེང་གེའི་ཁྲི་ཆེན་པོ་
सो सोइ शिङ खम नेस् ज़ु ठुल ग्यीस् नम खा ल शेग ते शल मेद् खङ गि उस् सु सेङ गे ठि छेन पो
अपने-अपने क्षेत्र-धातु से, ऋद्धि से आकाश में आगमन कर विमान के मध्य अष्ट सिंहासन पर

བརྒྱད་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བརྒྱད་བཞུགས། ཆོས་པོ་ཏི་ཡང་བཞུགས། བར་གྱི་སྣམ་བུ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་
ग्ये ल दे शिन शेग प ग्ये शुग   छोस् पो ति यङ शुग   बर ग्यि नम बु ल छङ छुप सेम पा
अष्ट तथागत विराजमान हुए। धर्म (स्वरूप) पोथी भी विराजमान हुईं। मध्य के ऊनी पट्टिका पर अपरिमित

འཇམ་དཔལ་ལ་སོགས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བཞུགས། གསུམ་པ་ལ་གཡས་གྲལ་དུ་ཚངས་པ་དང་བརྒྱ་བྱིན། གཡོན་གྲལ་
जम पल ल सोग प पग तु मेद् प शुग   सुम प ल येस् डल दु छ़ङ प दङ ग्य छिन   योन
बोधिसत्त्व मञ्जुश्री आदि विराजमान हुए। तृतीय में दक्षिण के क्रम में ब्रह्मा एवं शक्र, वाम क्रम में बारह यक्ष

དུ་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་བཅུ་གཉིས། སྒོ་བཞི་ལ་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་རང་རང་གིས་དམ་བཅས་པ་
डल दु नोद् छिन ग्यि दे पोन चु ञीस्   गो शि ल ग्यल पो छेन पो शि रङ रङ गीस् दम चेस् प
सेनापति, चार द्वारों पर चतुर्महाराज अपने-अपने प्रतिज्ञा के अनुसार (स्वयं के कार्य को) साधित कर

བཞིན་དུ་སྒྲུབ་ཅིང་བཞུགས་པར་གྱུར་པར་བསམ་ལ།
शिन दु डुप चिङ शुग पर ग्युर
विराजमान हुए–ऐसा चिन्तन करना चाहिए।

དེ་ལྟར་བསམ་པའི་རྗེས་ལ། ཁྲུས་གསོལ་རྒྱས་པ་ཕྱག་ལེན་ལྟར་དང་མཎྜལ་རྒྱས་པར་འབུལ། སྨོན་ཐུན་འདོན་སྲོལ་གདའང་རྒྱུན་དུ་བསྡུས་པ་འདི་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་ཏེ།

ऐसा चिन्तन करने के पश्चात् विधिवत् विस्तृत स्नान-क्रिया तथा विस्तृत मण्डल का अर्पण करना चाहिए। प्रणिधान-सत्र के पाठ की परम्परा होने पर भी संक्षेप में सदा इतने मात्र से समाप्त किया जा सकता है–अत्यन्त सुगन्धित स्नान-गृह में।

ཁྲུས་ཀྱི་ཁང་པ་ཤིན་ཏུ་དྲི་ཞིམ་པར། །
ठुस् क्यि खङ प शिन तु डि शिम पर
अत्यन्त सुगन्धित स्नान-गृह में।

ཤེལ་གྱི་ས་གཞི་གསལ་ཞིང་འཚེར་བ་བསྟར། །
शेल ग्यि स शि सल शिङ छ़ेर व तर
(जिनका) फर्श स्वच्छ एवं दीप्तिमान है।

རིན་ཆེན་འབར་བའི་ཀ་བ་ཡིད་འོང་ལྡན། །
रिन छेन बर बई क व यिद् ह़ोङ देन
स्तम्भ रत्नप्रज्वलित एवं मनोहर हैं।

མུ་ཏིག་འོད་ཆགས་བླ་རེས་བྲེས་པ་དེར། །
मु तिग ह़ोद् छग ल रेस् डेस् प देर
वितान मोतियों से प्रभासित हैं, उसमें।।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་དང་དེ་སྲས་ལ། །
दे शिन शेग प नम दङ दे सेस् ल
तथागतों तथा उनके पुत्रों को।

རིན་ཆེན་བུམ་པ་མང་པོ་སྤོས་ཀྱི་ཆུ། །
रिन छेन बुम प मङ पो पोस् क्यि छु
अनेक मनोज्ञ रत्न-कलश।

ཡིད་འོང་ལེགས་པར་བཀང་བ་གླུ་དང་ནི། །
यिद् ह़ोङ लेग पर कङ व लु दङ नि
(जो) सुगन्धित जल से पूर्ण हैं (उन्हें) गीत।

རོལ་མོར་བཅས་པ་དུ་མས་སྐུ་ཁྲུས་གསོལ། །
रोल मोर चेस् प दु मेस कु ठुस् सोल
(तथा) नाना वाद्यों सहित स्नान कराता हूँ।।

ཨོཾ་སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་ཨ་བྷི་ཥེ་ཀ་ཏེ་ས་མ་ཡ་ཤྲཱི་ཡེ་ཧཱུཾ།
ओं सर्व तथागत अभिषेकते समय श्रीये हूँ
ओं सर्व तथागत अभिषेकते समय श्रीये हूँ

ཇི་ལྟར་བལྟམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
जि तर तम प ज़म ग्यीस् नि
जिस प्रकार (सिद्धार्थ के) जन्म लेने के तुरन्त बाद

ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་ཁྲུས་གསོལ་ལྟར། །
ल्ह नम क्यीस् नि ठुस् सोल तर
सभी देवताओं ने स्नान कराया था।

ལྷ་ཡི་ཆུ་ནི་དག་པ་ཡིས། །
ल्ह यि छु नि दग प यीस्
दिव्य, शुद्ध जल से

དེ་བཞིན་བདག་གིས་སྐུ་ཁྲུས་གསོལ། །
दे शिन दग गीस् कु ठुस् सोल
उसी प्रकार मैं स्नान कराता हूँ।।

འདི་ནི་ཁྲུས་མཆོག་དཔལ་དང་ལྡན། །
दि नि ठुस् छोग पल दङ देन
यह परम स्नान श्रीयुक्त है।

ཐུགས་རྗེའི་ཆུ་ནི་བླ་ན་མེད། །
थुग जे छु नि ल न मेद्
करुणा रूपी जल अनुत्तर है।

བྱིན་རླབས་ཡེ་ཤེས་ཆུ་ཡིན་ཏེ། །
छिन लप ये शेस् छु यिन ते
जल है अधिष्ठान (तथा) ज्ञान।

ཅི་འདོད་དངོས་གྲུབ་སྩོལ་བར་མཛོད། །
चि दोद् ङोस् डुप ज़ोल बर ज़ोद्
यथेच्छ सिद्धि प्रदान करते हैं।

དེ་དག་སྐུ་ལ་མཚུངས་པ་མེད་པའི་གོས། །
दे दग कु ल छुङ प मेद् पई गोस्
उनके कायों को अनुपम तथा।

གཙང་ལ་དྲི་རབ་བགོས་པས་སྐུ་ཕྱིའོ། །
ज़ङ ल डि रप गोस् पेस् कु छिहो
शुद्ध सुगन्धित वस्त्रों से पोंछता हूँ।

སྲབ་འཇམ་ཡང་བ་ལྷ་ཡི་གོས། །
सप जम यङ प ल्ह यि गोस्
पतला, कोमल (और) हल्का देववस्त्र है।

མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེའི་སྐུ་བརྙེས་ལ། །
मि क्योद् दोर जेई कु ञेस् ल
(जो) अक्षोभ्यवज्र रूपी काय को प्राप्त (हैं)।

མི་ཕྱེད་དད་པས་བདག་འབུལ་ན། །
मि छेद् दे पेस् दग बुल न
अनन्य भक्ति द्वारा स्वयं को अर्पित करने से।

བདག་སོགས་རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ཐོབ་ཤོག །
दग सोग दोर जेई कु थोप शोग
हम सभी वज्रकाय को प्राप्त करें।

ལྷག་བསམ་དག་པའི་ན་བཟའ་འདི་འབུལ་བས། །
ल्हग सम दग पई न ज़ा दि बुल वे
शुद्ध अध्याशय रूपी इस वस्त्र के अर्पण से।

ལུས་ལ་ངུར་སྨྲིག་གོས་གྱོན་སེམས་ལ་ནི། །
लुस् ल ङुर मिग गोस् ग्योन सेम ल नि
काय में काषाय वस्त्र पहन (तथा) चित्त में।

ངོ་ཚ་ཁྲེལ་ཡོད་བཟོད་པའི་གོས་གྱོན་ནས། །
ङो छ़ ठेल योद् ज़ोद् पई गोस् ग्योन नेस्
ह्री-अपत्रपा (और) क्षान्ति (सहनशीलता) रूपी वस्त्र धारण कर।

རྒྱལ་བ་བསྐྱེད་པའི་ཡུམ་ལ་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व क्येद् पई युम ल छोद् पर ग्यि
जिनोत्पादक रूपी माँ (प्रज्ञापारमिता) की पूजा करता हूँ।

སྣ་ཚོགས་དབང་པོའི་གཞུ་ལྟར་རབ་བཀྲ་ཞིང་། །
न छ़ोग वङ पोइ शु तर रप ट शिङ
नानाविध इन्द्रधनुषवत् विचित्र।

གང་ལ་རེག་ན་བདེ་བའི་རྒྱུར་གྱུར་པའི། །
गङ ल रेग न दे वई ग्युर ग्युर पई
जिससे स्पर्श हो, सुख का हेतु बन जाता।

གོས་བཟང་རིན་ཆེན་བདག་བློ་སྦྱོང་ཕྱིར་འབུལ།།
गोस् ज़ङ रिन छेन दग लो छोङ छिर बुल
सुवस्त्र, रत्न (आदि) स्वचित्त के शोधन हेतु अर्पित करता हूँ।

བཟོད་པ་དམ་པའི་གོས་ཀྱིས་བརྒྱན་པར་ཤོག །བརྗོད་ལ། མཎྜལ་རྒྱས་པ་འབུལ།
ज़ोद् प दम पई गोस् क्यीस् ग्येन पर शोग
सद्-क्षान्ति रूपी वस्त्र से अलंकृत हो जाए।। (ऐसा) कहना चाहिए। (तत्पश्चात्) विस्तृत मण्डल को अर्पण करनी चाहिए, (यथा–)

ས་གཞི་སྤོས་ཆུས་བྱུགས་ཤིང་མེ་ཏོག་བཀྲམ། །
स शि पोस् छुस् छुग शिङ मे तोग टम
भूमि को धूप से लेपित कर पुष्प बिखेरता हूँ।

རི་རབ་གླིང་བཞི་ཉི་ཟླས་བརྒྱན་པ་འདི། །
रि रप लिङ शि ञि देस् ग्येन प दि
सुमेरु, चतुर्द्वीप, सूर्य-चन्द्र से अलङ्कृत यह।

སངས་རྒྱས་ཞིང་དུ་དམིགས་ཏེ་ཕུལ་བ་ཡིས། །
सङ ग्येस् शिङ दु मिग ते फुल व यीस्
बुद्ध-क्षेत्र को आलम्बन कर भेंट करने से।

འགྲོ་ཀུན་རྣམ་དག་ཞིང་དེར་སྤྱོད་པར་ཤོག །
डो कुन नम दग शिङ देर चोद् पर शोग
समस्त सत्त्व विशुद्ध क्षेत्र में वास करें।।

མཉེས་བྱེད་མཎྜལ་བཟང་པོ་འདི་ཕུལ་བས། །
ञेस् छेद् मण◌्ल ज़ङ पो दि फुल वे
प्रसन्न-कर्तृ (प्रसन्नता दायक) इस भद्रमण्डल के अर्पण से।

བྱང་ཆུབ་ལམ་ལ་བར་ཆད་མི་འབྱུང་ཞིང་། །
छङ छुप लम ल बर छे मि छुङ शिङ
बोधि-मार्ग पर बाधा उत्पन्न न हों।

དུས་གསུམ་བདེ་གཤེགས་དགོངས་པ་རྟོགས་པ་དང་། །
दुस् सुम दे शेग गोङ प तोग प दङ
त्रिकाल सुगत-अभिप्राय का अवगम तथा।

སྲིད་པར་མི་འཁྲུལ་ཞི་བར་མི་གནས་ཤིང་། །
सिद् पर मि ठुल शि वर मि नेस् शिङ
भव में अभ्रान्ति (तथा) शान्त (निर्वाण) में स्थित न हों।

ནམ་མཁའ་མཉམ་པའི་འགྲོ་རྣམས་སྒྲོལ་བར་ཤོག །
नम खा ञम पई डो नम डोल वर शोग
तर जाएँ आकाशसम सत्त्व।।

ཕྱག་འཚལ་བ་དང་མཆོད་ཅིང་བཤགས་པ་དང་། །
छग छ़ल व दङ छोद् चिङ शग प दङ
वन्दना, पूजना तथा देशना।

རྗེས་སུ་ཡི་རང་བསྐུལ་ཞིང་གསོལ་བ་ཡི། །
जेस् सु यि रङ कुल शिङ सोल व यि
अनुमोदना, प्रार्थना तथा अध्येषणा।

དགེ་བ་ཅུང་ཟད་བདག་གིས་ཅི་བསགས་པ། །
गे व चुङ ज़े दग गीस् चि सग प
जो (भी) किञ्चित् मैंने पुण्य (कर्म) किया है।

ཐམས་ཅད་བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་ཕྱིར་བསྔོའོ། །
थम चे दग गीस् छङ छुप छिर ङो ह़ो
सभी सम्बोधि हेतु परिणामना करता हूँ।।

ཕྱོགས་བཅུ་དུས་གསུམ་གྱི་བདེ་བར་གཤེགས་པ་སྲས་དང་བཅས་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །
छोग चु दुस् सुम ग्यि दे वर शेग प सेस् दङ चेस् प नम ल छग छ़ल लो छोद् दो
दशदिग् तीनों कालों के सुगत पुत्र सहितों को प्रणाम करता हूँ। पूजा करता हूँ।

སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
क्यप सु छिह़ो
शरण में जाता हूँ।।

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་མཚན་ལེགས་པར་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् छेन लेग पर योङ डग
भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध नामसुपरिकीर्तिश्रीराज को प्रणाम करता हूँ।

ཡོངས་བསྒྲགས་དཔལ་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
पल ग्यि ग्यल पो ल छग छ़ल लो   छोद् दो   क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་པོ་ཆེ་དང་ཟླ་བ་དང་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् रिन पो छे दङ द व दङ
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध रत्नचन्द्रपद्म (से) सुअलंकृत विद्वानौजशब्दघोषराज**

པདྨས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་པ་མཁས་པ་གཟི་བརྗིད་སྒྲ་དབྱངས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །
पेमोस् रप तु ग्येन प खेस् प ज़ि जिद् ड यङ क्यि ग्यल पो ल छग छ़ल लो   छोद् दो
**को प्रणाम करता हूँ। पूजा करता हूँ।**

སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
क्यप सु छिह़ो
**शरण में जाता हूँ।।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གསེར་བཟང་དྲི་མེད་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् सेर ज़ङ डि मेद् रिन छेन
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध स्वर्णभद्रविमल-**

རིན་ཆེན་སྣང་བ་བརྟུལ་ཞུགས་གྲུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
नङ व तुल शुग डुप प ल छग छ़ल लो   छोद् दो   क्यप सु छिह़ो   चोम देन देस् दे शिन शेग प
**रत्नाभासव्रतसिद्ध को प्रणाम करता हूँ। पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་མྱ་ངན་མེད་མཆོག་
ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् न्य ङेन मेद् छोग पल ल छग छ़ल लो   छोद्
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध अशोकवरश्री को प्रणाम करता हूँ।**

དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
दो   क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཆོས་བསྒྲགས་རྒྱ་མཚོའི་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् छोस् डग ग्य छ़ोइ यङ ल
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध धर्मघोषणासागरघोष को प्रणाम करता हूँ।**

དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
छग छ़ल लो  छोद् दो  क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཆོས་ཀྱི་རྒྱ་མཚོ་མཆོག་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् छोस् क्यि ग्य छ़ो छोग
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध धर्मसागरवरबुद्धि-विरति-अभिज्ञान को प्रणाम करता हूँ।**

གི་བློས་རྣམ་པར་རོལ་པ་མངོན་པར་མཁྱེན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
गि लोस् नम पर रोल प ङोन पर ख्येन प ल छग छ़ल लो  छोद् दो  क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ་བཻཌཱུརྱའི་འོད་ཀྱི་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् मेन ग्यि ल वैदूर्यई ह़ोद्
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध भैषज्यगुरु वैडूर्यप्रभराज को प्रणाम करता हूँ।**

རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
क्यि ग्यल पो ल छग छ़ल लो  छोद् दो  क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྒྱལ་བ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་
तोन प चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् ग्यल व शाक्य
**शास्ता भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध जिन शाक्यमुनि को प्रणाम करता हूँ।**

པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
थुप प ल छग छ़ल लो  छोद् दो  क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

མ་རིག་མུན་སེལ་སྒྲོན་མེ་མཆོག །
म रिग मुन सेल डोन मे छोग
(जो) अज्ञान-अन्धकार-निवारक परम दीप (हैं)।

སྡུག་བསྔལ་ནད་སེལ་སྨན་གྱི་ཕུལ། །
दुग ङल ने सेल मेन ग्यि फुल
दुःख-रोग-निवारक अतिशय-औषध (हैं)।

དམ་ཆོས་དཀོན་མཆོག་ཐམས་ཅད་ལ། །
दम छोस् कोन छोग थम चे ल
(उन) समस्त सद्धर्म त्रिरत्नों को।

ཕྱག་འཚལ་མཆོད་དོ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
छग छ़ल छोद् दो क्यप सु छिह़ो
प्रणाम-पूजा (कर) शरण में जाता हूँ।।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་
छङ छुप सेम पा सेम पा छेन पो जम पल शोन नुर ग्युर प ल छग छ़ल लो   छोद् दो   क्यप
**बोधिसत्त्व महासत्त्व मञ्जुश्री-कुमारभूत को प्रणाम करता हूँ। पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

སུ་མཆིའོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་སྐྱབས་གྲོལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །
सु छिह़ो   छङ छुप सेम पा सेम पा छेन पो फग प क्यप डोल ल छग छ़ल लो   छोद् दो
**बोधिसत्त्व महासत्त्व आर्य शरणमुक्ति को प्रणाम करता हूँ। पूजा करता हूँ।**

སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དཔལ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་
क्यप सु छिह़ो   छङ छुप सेम पा सेम पा छेन पो पल छग न दोर जे ल सोग प नम ल छग छ़ल
**शरण में जाता हूँ।। बोधिसत्त्व महासत्त्व श्रीवज्रपाणि आदि को प्रणाम करता हूँ।**

འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །ཚངས་པ་དང་བརྒྱ་བྱིན་དང་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་ལ་སོགས་པ་ཆོས་སྐྱོང་
लो   छोद् दो   क्यप सु छिह़ो   छ़ङ प दङ ग्य छिन दङ ग्यल पो छेन पो शि ल सोग प छोस्
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।। ब्रह्मा, शक्रक्रतु और चतुर्महाराज आदि धर्मपालकों को**

བ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་
क्योङ व नम ल छग छ़ल लो   छोद् दो   क्यप सु छिह़ो   नोद् छिन ग्यि दे पोन छेन पो जि
**प्रणाम करता हूँ। पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।। यक्षमहासेनापति**

རྗེ་འཇིགས་ལ་སོགས་པ་གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་བཅུ་གཉིས་གཡོག་བདུན་འབུམ་བདུན་འབུམ་དང་བཅས་པ་
जिग ल सोग प नोद् छिन ग्यि दे पोन छेन पो चु ञीस् योग दुन बुम दुन बुम दङ चेस् प
**यथाभय आदि द्वादश यक्षमहासेनापति (जो) सात-सात लाख भृत्यों के साथ हैं, को प्रणाम करता हूँ।**

རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
नम ल छग छ़ल लो   छोद् दो   क्यप सु छिह़ो
**पूजा करता हूँ। शरण में जाता हूँ।।**

འཕགས་པའི་ཚོགས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་ཡོན་དང་བྱུག་པ་མེ་ཏོག་དང་བདུག་སྤོས། མར་མེ་དང་ཞལ་ཟས།
फग पई छ़ोग दे दग थम चे ल छोद् योन दङ छुग प मे तोग दङ दुग पोस्   मर मे दङ शल ज़ेस्
**उन समस्त आर्यगण को अर्घ्य, लेपन, पुष्प, गन्ध, दीप और नैवेद्य,**

རོལ་མོ་དང་སིལ་སྙན། གདུགས་དང་བ་དན་ལ་སོགས་པ་དངོས་སུ་ཅི་འབྱོར་བ་འདི་དག་དང་།
रोल मो दङ सिल ञेन   दुग दङ व देन ल सोग प ङोस् सु चि छोर व दि दग दङ
**वाद्य तथा तूर्य्य, छत्र एवं पताका आदि प्रत्यक्ष रूप से ये जो भी प्राप्त हैं,**

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བདག་པོས་ཡོངས་སུ་མ་བཟུང་བའི་ལྷ་དང་མིའི་རྫས་དམ་པ་བདེ་བའི་ཡོ་བྱད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་
छोग चु न दग पोस् योङ सु म ज़ुङ बई ल्ह दङ मी ज़ेस् दम प दे वई यो छे फुन सुम छ़ोग प
दश दिशाओं में स्वामी द्वारा अपरिगृहीत देव-मनुष्य के दिव्य पदार्थ समस्त

ཐམས་ཅད་དང་། གཟུངས་དང་རིག་པའི་མཐུ་དང་མོས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་བསྐྱེད་པའི་མཆོད་པའི་སྤྲིན་བཟང་པོར་
थम चे दङ   ज़ुङ दङ रिग पई थु दङ मोस् पई तोप क्यीस् क्येद् पई छोद् पई टिन ज़ङ पोर
सुखकारक द्रव्य-सम्पद्, धारणी एवं विद्या-बल तथा छन्द-बल से उत्पन्न भद्र-पूजामेघ

སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ལས་བྱུང་བ་རྒྱ་མཚོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་མཐའ་ཀླས་པ་ཐམས་ཅད་བཀང་སྟེ་
चोद् पई मोन लम लेस छुङ व ग्य छ़ो थम चे क्यीस् नम खई खम क्यि था लेस् प थम चे कङ ते
भद्रचर्याप्रणिधान(-राज) में उद्भूत समस्त सागरों द्वारा अनन्त आकाशधातुओं को भर कर भेंट करता हूँ।

འབུལ་ལོ། །མཆོད་དོ། །བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱིས་ཐོག་མ་མ་མཆིས་པ་ནས་འཁོར་བ་ན་འཁོར་བའི་ཚེ་རབས་ཐམས་
बुल लो   छोद् दो   दग चग नम क्यीस् थोग म म छीस् प नेस् खोर व न खोर बई छ़े रप थम
पूजा करता हूँ।। हम लोगों के द्वारा अनादि काल से संसार में संसरित होने वाले, जन्मान्तरों में पाप रूपी

ཅད་དུ་སྡིག་པ་མི་དགེ་བའི་ལས་མདོར་ན་མི་བགྱི་བར་འོས་པའི་ལས་ནི་བགྱིས། བགྱི་བར་འོས་པའི་ལས་
चे दु दिग प मि गे बई लेस दोर न मि ग्यि बर ह़ोस् पई लेस नि ग्यीस्   ग्यि बर ह़ोस् पई लेस
अकुशल-कर्म, संक्षेप में–अकरणीय कर्मों को करने, करणीय कर्मों को नहीं करने आदि प्रत्यक्षतः जो भी सारे

མ་བགྱིས་པ་ལ་སོགས་པ་དངོས་སྡིག་ཅི་མཆིས་པ་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་འཆགས་སོ། །
म ग्यीस् प ल सोग प ङोस् दिग चि छीस् प थम चे यङ दग पर छग सो
पाप हैं, सभी (की) सम्यक् रूप से देशना करता हूँ।

དུས་གསུམ་གྱི་འཕགས་པ་དང་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོའི་དགེ་བ་མཐའ་དག་གི་བསོད་ནམས་ཐམས་ཅད་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་།།
दुस् सुम ग्यि फग प दङ सो सोइ क्ये बोइ गे व था दग गि सोद् नम थम चे ल जेस् सु यि रङ ङो
तीनों कालों के आर्य तथा पृथग्जनों के अनन्त कुशल रूपी समस्त पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ।

ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བླ་ན་མེད་པ་བསྐོར་བར་བསྐུལ་ལོ། །
छोग चुइ ग्यल व थम चे ल छोस् क्यि खोर लो ल न मेद् प कोर बर कुल लो
दश दिशाओं के समस्त जिनों (बुद्धों) से धर्मचक्र-प्रवर्त्तन हेतु अध्येषणा करता हूँ।

འཇིག་རྟེན་གྱི་སྒྲོན་མེ་གང་དག་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བའི་ཚུལ་སྟོན་པར་བཞེད་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་མྱ་ངན་ལས་མི་
जिग तेन ग्यि डोन मे गङ दग न्य ङेन लेस दा बई छुल तोन पर शेद् प दे दग थम चे ल न्य ङेन
जो लोकदीप (बुद्ध) परिनिर्वाण के क्रम प्रदर्शन हेतु विचार कर रहे हैं, उन सबसे निर्वाण को प्राप्त न कर,

འདའ་བར་འཇིག་རྟེན་གྱི་དོན་མཛད་ཅིང་ཡུན་རིང་དུ་བཞུགས་པར་གསོལ་བར་འཚལ་ལོ། །
लेस मि दा बर जिग तेन ग्यि दोन ज़े चिङ युन रिङ दु शुग पर सोल बर छ़ल लो
लोकार्थ सम्पादन करते हुए दीर्घकाल तक विराजमान रहने हेतु प्रार्थना करता हूँ।

བཅོམ་ལྡན་འདས་གདན་འཛོམས་པ་ཆེན་པོས་དགོངས་སུ་གསོལ།
चोम देन देस् देन ज़ोम प छेन पोस् गोङ सु सोल
भगवान् जो यहाँ विशाल रूप में एकत्रित हैं, के द्वारा ध्यान दें।

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྙད་མའི་དུས་ལྔ་བརྒྱ་པ་ཐ་མ་དམ་པའི་ཆོས་ལྟར་
चोम देन देस् थुग जे छेन पो दङ देन प नम क्यीस् ले मई दुस् ङ ग्य प थ म दम पई छोस् तर
भगवान् महाकारुणिकों के द्वारा पश्चात्-काल पाँच सौ के अन्तिम समय,

བཅོས་པ་འབྱུང་བ་ན་སེམས་ཅན་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བསྒྲིབས་པ། ནད་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་གཟིར་བ།
चोस् प छुङ व न सेम चेन लेस क्यि डिप प न छ़ोग क्यीस् डिप प    ने न छ़ोग क्यीस् ज़िर व
सद्धर्म-सा कृत्रिम समय आने पर (जब) सत्त्व नाना (प्रकार के) कर्मावरणों से आवरणित, नाना रोगों से

མྱ་ངན་དང་སྡུག་བསྔལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་གཙེས་པ། ཕོངས་པར་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྗེས་སུ་
न्य ङेन दङ दुग ङल नम प न छ़ोग क्यीस् त्सेस् प    फोङ पर ग्युर पई सेम चेन थम चे जेस् सु
पीड़ित, नाना शोक एवं दुःख से परेशान (दुःखी) होने तथा सम्पद् हीन होने वाले समस्त सत्त्वों पर अनुग्रह

བཟུང་ཞིང་ལྷ་དང་མི་རྣམས་ཀྱི་དོན་དང་ཕན་པ་དང་བདེ་བའི་སླད་དུ། སྔོན་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་
ज़ुङ शिङ ल्ह दङ मि नम क्यि दोन दङ फेन प दङ दे वई ले दु    ङोन चोम देन देस् दे शिन शेग
कर देव-मनुष्यों के कल्याण, हित तथा सुख के लिए पूर्व में सात भगवान् तथागत

པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བདུན་གྱིས་ཐབས་མཁས་པ་དང་། སྔོན་གྱི་སྨོན་ལམ་
प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् दुन ग्यीस् थप खेस् प दङ    ङोन ग्यि मोन लम
अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धों द्वारा उपाय-कौशल्य और जिस प्रकार पहले के विशिष्ट प्रणिधान कर

གྱི་ཁྱད་པར་རྒྱས་པ་རླབས་པོ་ཆེ་དག་ཇི་ལྟར་བཏབ་ཅིང་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་དང་། དོན་དེ་ཉིད་ད་ལྟར་
ग्यि ख्ये पर ग्येस् प लप पो छे दग जि तर तप चिङ छिन ग्यीस् लप प दङ    दोन दे ञिद् द तर
अधिष्ठित किया गया था, वही अभिप्राय वर्तमान में

བདག་ཅག་གི་སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པས་ཇི་ལྟར་བཀའ་སྩལ་ཅིང་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་དང་།
दग चग गि तोन प चोम देन देस् पल शाक्य थुप पेस् जि तर का त्सल चिङ छिन ग्यीस् लप प दङ
हमारे शास्ता भगवान् श्रीशाक्यमुनि द्वारा यथा वाचन कर अधिष्ठित किया गया था,

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་དང་། སྐྱབས་གྲོལ་དང་། ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་
फग प जम पल दङ क्यप डोल दङ छग न दोर जे ल सोग प छङ छुप सेम पा नम क्यीस्
आर्य मञ्जुश्री, शरणमुक्ति तथा वज्रपाणि आदि बोधिसत्त्वों द्वारा

ཇི་ལྟར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་དང་། ཚངས་པ་དང་ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་དང་། རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་དང་།
जि तर छिन ग्यीस् लप प दङ छ़ङ प दङ ल्हई वङ पो ग्य छिन दङ ग्यल पो छेन पो शि
जैसे अधिष्ठित किया गया था, ब्रह्मा तथा देवेन्द्र शक्र, चतुर्महाराज और

གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་བཅུ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་སྐྱོང་བའི་དགེ་བསྙེན་ཆེན་པོ་
दङ नोद् छिन ग्यि दे पोन छेन पो चु ञीस् ल सोग प दम पई छोस् क्योङ बई गे ञेन छेन पो
बारह यक्षमहासेनापति आदि सद्धर्म पालक महा-उपासक सभी एकत्रितों के

རྣམས་དང་། ཐམས་ཅད་གདན་འཛོམས་པའི་སྤྱན་སྔར་ཕོ་བྲང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་བཤམས། འབྱོར་པའི་སྟོབས་ཅི་
नम दङ थम चे देन ज़ोम पई चेन ङर फो डङ गि दक्यिल खोर शम छोर पई तोप चि
समक्ष प्रासाद-मण्डल सजा कर जितनी समृद्धि है, उतने बल से पूजा-सम्भार

མཆིས་པས་མཆོད་པའི་ཚོགས་སྦྱར་ནས་མཚན་ནས་བརྗོད་དེ་མཆོད་པ་འབུལ། བཀའ་དྲིན་དྲན་ཅིང་མཆིས་ན།
छीस् पेस् छोद् पई छ़ोग छर नेस् छ़ेन नेस् जोद् दे छोद् प बुल का डिन नोद् चिङ छीस् न
एकत्रित कर नाम कहकर पूजा भेंट करता हूँ। कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करने से

གདན་འཛོམས་པས་སྔོན་ཇི་ལྟར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཤིང་བཀའ་སྩལ་པ་བཞིན་དུ་མདོ་སྡེའི་ཕན་ཡོན་ཇི་སྐད་འབྱུང་
देन ज़ोम पेस् ङोन जि तर छिन ग्यीस् लप शिङ का ज़ल प शिन दु दो दे फेन योन जि के छुङ
एकत्रितों के द्वारा पूर्व में जिस प्रकार अधिष्ठित कर वाचन किया गया था, वैसे ही सूत्रपिटक का जितनी

བའི་བཀའ་དྲིན་ཐམས་ཅད། ཚེ་གེ་མོའམ། བདག་ཅག་ལ་སོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འཕྲལ་དུ་ཐོབ་པར་
बई का डिन थम चे छे गे मोह़म दग चग ल सोग सेम चेन थम चे क्यीस् ठल दु थोप पर
अनुशंसा (लाभ) प्राप्ति की कृतज्ञता है, सभी अमुक...अथवा हम समस्त सत्त्वों द्वारा आकस्मिक रूप प्राप्त

བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར་མཛད་དུ་གསོལ།
छिन ग्यीस् लप पर ज़े दु सोल
करने हेतु अधिष्ठित करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

གོང་གི་ཕྱོགས་བཅུ་དུས་གསུམ་གྱི་སོགས་ནས་འདི་བར་ལན་གསུམ་བཟླས།

पूर्व के दश दिग् तीनों कालों के...आदि से लेकर ...यहाँ तक तीन बार अनुवृत्ति करनी चाहिए।

སྐབས་འདིར་གཟུངས་སྔགས་བཟླས།
यहाँ (निम्नलिखित) धारणी-मन्त्र का जप करें।

ཏདྱཐཱ། གྷུ་མེ་གྷུ་མེ། ཨི་མི་ནེ། མི་ཧི། མ་ཏེ་མ་ཏེ། སཔྟ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ། ས་མཱ་དྷྱ་དྷིཥྛི་ཏེ། ཨ་ཏེ་མ་ཏེ།
तद्यथा। घुमेघुमे। इमिने। मिहि। मतिमति। सप्ततथागत। समाध्यधिष्ठिते। अतेमते।
तद्यथा। घुमे घुमे। इमिने। मिहि। मति मति। सप्त तथागत। समाध्यधिष्ठिते। अते मते।

པཱ་ལེ་པཱ་པཾ་ཤོ་དྷ་ནེ། སརྦ་པཱ་པཾ་ན་ཤ་ཡ། མ་མ་བུདྡྷེ་བུདྡྷོཏྟ་མེ། ཨུ་མེ་ཀུ་མེ། བུདྡྷ་ཀྵེ་ཏྲ་པ་རི་ཤོ་དྷ་ནེ། དྷ་མེ་ནི་དྷ་མེ།
पालेपापंशोधनि। सर्बपापंनाशय। ममबुद्धेबुद्धोत्तमे। उमेकुमे। बुद्धक्षेत्रपरिशोधनि। धमेनिधमे।
पाले पापं शोधनि। सर्वपापं नाशय। मम बुद्धे बुद्धोत्तमे। उमे कुमे। बुद्धक्षेत्र परिशोधनि। धमे निधमे।

མེ་རུ་མེ་རུ། མེ་རུ་ཤི་ཁ་རེ། སརྦ་ཨ་ཀཱ་ལ་མྲྀ་ཏྱུ་ནི། པཱ་ར་ཎི། བུདྡྷེ་སུ་བུདྡྷེ། བུདྡྷ་ཨ་དྷིཥྛི་ཏེ་ན། རཀྵནྟུ་མེ།
मेरु मेरु। मेरुशिखरे। सर्बअकालम्रत्युनी।पारणि। बुद्धेसुबुद्धे। बुद्धअधिष्ठितेन। रक्षन्तुमे।
मेरु मेरु। मेरुशिखरे। सर्व-अकालमृत्युनी। पारणि। बुद्धे सुबुद्धे। बुद्ध-अधिष्ठितेन। रक्षन्तु मे।

སརྦ་དེ་ཝཱཿ ས་མེ་ཨ་ས་མེ། ས་མ་ནྭཱ་ཧ་རནྟུ་མེ། སརྦ་བུདྡྷཱ། བོ་དྷི་སཏྭཱ། ཤ་མེ་ཤ་མེ། པྲ་ཤ་མནྟུ་མེ།
सर्बदेबाः समेअसमे। समन्वाहरन्तुमे। सर्बबुद्ध। बोधिसत्वा। शमे शमे। प्रशमन्तुमे।
सर्वदेवाः समे असमे। समन्नवाहरन्तु मे। सर्वबुद्ध-बोधिसत्त्व। शमे शमे। प्रशमन्तु मे।

སརྦ་ཨཱི་ཏྱུད་པ་དྲ་བ་བྱཱ་དྷ་ཡཿ པཱུ་ར་ཎི་པཱུ་ར་ཎི་པཱུ་ར་ཡ་མེ། སརྦ་ཨཱ་ཤ་ཡཱ་བཻ་ཌཱུརྻ་པྲ་ཏི་བྷཱ་སེ།
सर्बईत्युदपद्रबब्याधयःपूरणि पूरणि पूरयमे। सर्ब आशयाबैडूर्यप्रतिभासे।
सर्व-ईत्युदपद्रवव्याधयः पूरणि पूरणि पूरय मे। सर्व-आशयावैडूर्यप्रतिभासे।

སརྦ་པཱ་པཾ་ཀྵ་ཡཾ་ཀཱ་རི་སྭཱ་ཧཱ།
सर्ब पापंक्षयंकारिस्वाहा।
सर्वपापं क्षयंकारि स्वाहा।

ཞེས་ཚོ་ག་ཚར་རེ་ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་དམ། ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་གམ། བདུན་རེ་གང་འོས་ཡོང་སྐབས་དང་བསྟུན་ཏེ། དེ་ནས།
इस प्रकार प्रत्येक विधि (के सम्पन्न करने) में 108, 21 अथवा 7 बार तक समयानुसार जप करना चाहिए। तत्पश्चात्–

བླ་མ་མཉམ་མེད་སངས་རྒྱས་རིན་པོ་ཆེ། །
ल म ञम मेद् सङ ग्येस् रिन पो छे
अद्वितीय गुरु बुद्ध-रत्न (और)।

དུས་གསུམ་བདེ་གཤེགས་སྲས་བཅས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
दुस् सुम दे शेग सेस् चेस् थम चे क्यीस्
त्रिकाल सुगत-सपुत्रों के द्वारा।

སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་ངོ་བོར་བྱིན་བརླབས་པ། །
कु सुङ थुग क्यि ङो बोर छिन लप प
अधिष्ठित किया गया काय-वाक्-चित्त स्वरूप में।

བཀའ་དྲིན་ཆེན་པོའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
का डिन छेन पोइ शप ल छग छ़ल लो
महाकृपावानों के चरणों में नमन है।।

མ་བཅོས་སྤྲོས་བྲལ་བླ་མ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ། །
म चोस् टोस् डल ल म छोस् क्यि कु
अकृत्रिम निष्प्रपञ्च गुरु धर्मकाय।

བདེ་ཆེན་ལོངས་སྤྱོད་བླ་མ་ཆོས་ཀྱི་རྗེ། །
दे छेन लोङ चोद् ल म छोस् क्यि जे
महासुख सम्भोग गुरु धर्मस्वामि।

པད་སྡོང་ལས་འཁྲུངས་བླ་མ་སྤྲུལ་པའི་སྐུ། །
पे दोङ लेस ठुङ ल म टुल पई कु
पद्मनाल से उद्भूत गुरु निर्माणकाय।

སྐུ་གསུམ་རྡོ་རྗེ་འཆང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
कु सुम दोर जे छङ ल छग छ़ल लो
त्रिकाय वज्रधर को प्रणाम करता हूँ।।

ཟ་ཧོར་རྒྱལ་པོའི་རིགས་འཁྲུངས་དགེ་སློང་གང་། །
ज़ होर ग्यल पोइ रिग ठुङ गे लोङ गङ
जो भिक्षु ज़होर राजकुल में उत्पन्न हुए।

མཁན་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞི་བ་འཚོ། །
खेन पो छङ छुप सेम पा शि व छ़ो
उपाध्याय बोधिसत्त्व शान्तरक्षित।

སྡོམ་བརྩོན་རིག་པའི་གནས་ལྔ་ཀུན་ལ་མཁས། །
दोम ज़ोन रिग पई नेस् ङ कुन ल खेस्
संवर-वीर्य समस्त विद्या-स्थानों में पण्डित।

བསླབ་པ་གསུམ་ལྡན་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
लप प सुम देन दे ल छग छ़ल लो
त्रिशिक्षा युक्त उनको नमन है।।

འཕགས་མཆོག་རིགས་གསུམ་མགོན་པོ་བསམ་བཞིན་དུ། །
फग छोग रिग सुम गोन पो सम शिन दु
परमार्य त्रिकुलनाथ, जानते हुए।

བོད་འབངས་ཆོས་ལ་འགོད་ཕྱིར་སྐུར་སྤྲུལ་པ། །
बोद् बङ छोस् ल खोद् छिर कुर टुल प
भोट-प्रजा को धर्मारूढ कराने हेतु काय में निर्मित।

མངའ་བདག་སྲོང་བཙན་ཁྲི་སྲོང་རལ་པ་ཅན། །
ङा दग सोङ ज़ेन ठि सोङ रल प चेन
अधिपति स्रोङ-त्सन, ठि-स्रोङ (और) रल्-पा-चन।

ཆོས་རྒྱལ་མེས་དབོན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छोस् ग्यल मेस् वोन नम ल छग छ़ल लो
धर्मराज-वंशों को नमन करता हूँ।।

དགའ་ལྡན་གནས་ན་ནམ་མཁའ་དྲི་མ་མེད། །
गा देन नेस् न नम खा डि म मेद्
तुषित-स्थान में आकाश-विमल।

འཕགས་པའི་གནས་ན་དཱི་པཾ་ཀ་ར་ཞེས། །
फग पई नेस् न दा पिं क र शेस्
आर्यदेश (भारत) में दीपङ्कर(-श्रीज्ञान) नाम (है)।

ཁ་བ་ཅན་ན་དཔལ་ལྡན་ཨ་ཏི་ཤ། །
ख व चेन न पल देन अ ति श
हिमवन्त (भोट) में पल्-दन् अतिशा (श्री-अतीश)।

ས་སྟེང་གྲགས་པས་ཁྱབ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
स तेङ डग पेस् ख्यप ल छग छ़ल लो
विश्व में प्रसिद्धि से व्याप्तक को नमन है।।

མ་འོངས་སངས་རྒྱས་བདུན་པ་རབ་གསལ་གང་། །
म ह़ोङ सङ ग्येस् दुन प रप सल गङ
जो अनागत 7वें बुद्ध विकाश हैं।

ཤཱཀྱ་ཤྲཱི་བྷ་དྲ་ཞེས་གྲགས་པའི། །
शाक्य श्रीभद्रशेस् डग पई
शाक्यश्रीभद्र नाम से प्रसिद्धि वाले।

མཁྱེན་རབ་ཐུགས་རྗེ་ཚད་མེད་མངའ་བ་ལས། །
ख्येन रप थुग जे छ़े मेद् ङा व लेस
प्रज्ञान अपरिमित करुणायुक्त होने से।

བློ་གྲོས་ཟད་མེད་ཡོན་ཏན་གཏེར་མངའ་བ། །
लो डोस् ज़े मेद् योन तेन तेर ङा व
अक्षयमति गुणनिधि (से) युक्त।

ཕྱོགས་བཅུར་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་མ་ལུས་དང་། །
छ्योग चुर शुग पई ग्यल व म लुस् दङ
दश दिशाओं में विराजित अशेष जिन (बुद्ध) तथा।

རྡུལ་གཅིག་སྟེང་ན་རྡུལ་སྙེད་བཞུགས་པ་ཡི། །
दुल चिग तेङ न दुलञेद् शुग प यि
एक अणु के ऊपर यावत् अणु विराजमान हुए।

སྒྲོལ་མས་རྗེས་བཟུང་མཁས་ཤིང་གྲུབ་པ་བརྙེས། །
डोल मेस जेस् ज़ुङ खेस् शिङ डुप प ञेस्
तारा द्वारा अनुगृहीत विद्वत्ता और सिद्धि को प्राप्त।

ཁ་ཆེ་མཁས་པ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ख छे खेस् प दे ल छग छ़ल लो
उस कश्मीरी विद्वान् को नमन है।।

མི་ཕམ་མགོན་པོ་རྣམ་པར་སྣང་བ་ཅན། །
मि फम गोन पो नम पर नङ व चेन
अजितनाथ के आकार में आभासित।

འཇམ་དབྱངས་བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།
जम यङ ल मई शप ल छग छ़ल लो
मञ्जुघोष गुरु के चरणों में नमन है।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དང་རྒྱལ་སྲས་མ་ལུས་ཚོགས། །
छङ छुप सेम दङ ग्यल सेस् म लुस् छ़ोग
बोधिचित्त तथा अशेष जिनपुत्रगण।

བླ་མ་འཕགས་པའི་ཚོགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल म फग पई छ़ोग ल छग छ़ल लो
गुरु आर्यगण को प्रणाम करता हूँ।।

ཞེས་པའི་རྗེས་སུ། བདེ་གཤེགས་བརྒྱད་ཀྱི་བསྟོད་པ་མཁན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པ་ནི།
इसके पश्चात् उपाध्याय स्वयं द्वारा रचित अष्ट तथागत स्तुति तो–

མཚན་གྱི་མེ་ཏོག་རྒྱས་ཤིང་དག་པ་ལ། །
छ़ेन ग्यि मे तोग ग्येस् शिङ दग प ल
(बत्तीस) लक्षण रूपी विस्तृत शुद्ध पुष्पों पर।

གང་གིས་མཐོང་ཐོས་དྲན་དང་དཔལ་འགྱུར་བ། །
गङ गीस् थोङ थोस् डेन दङ पल ग्युर प
जिनके द्वारा दर्शन-श्रवण-स्मृति से श्री (युक्त) होते हैं।

དཔེ་བྱད་བཟང་པོའི་འབྲུ་ཆགས་མཛེས་པའི་སྐུ། །
पे छे ज़ङ पोइ डु छग ज़ेस् पई कु
(अस्सी) भद्रानुव्यञ्जन रूपी अलंकृत सुन्दर काय।

མཚན་གྱི་རྒྱལ་པོ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छ़ेन ग्यि ग्यल पो दे ल छग छ़ल लो
उस लक्षणराज को नमन करता हूँ।।

རིན་ཆེན་ཟླ་བ་པདྨས་རབ་བརྒྱན་ཅིང་། །
रिन छेन द व पेमोस् रप ग्येन चिङ
रत्नचन्द्र-पद्म से अच्छी तरह अलंकृत।

རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུར་ཟབ་པའི་སྐུ་མངའ་བ། །
ग्य छो त बुर ज़प पई कु ङा व
सागरोपम गम्भीर काय से युक्त हैं।

ཛམ་བུའི་ཆུ་བོ་གསེར་ལྟར་ལྷང་ངེ་བ། །
जम बुइ छु बो सेर तर ल्हङ ङे व
जम्बूनदी सुवर्णोपम विरोचन (स्वच्छ)।

དྲི་མེད་གསེར་གྱི་མཆོད་སྡོང་ལྟ་བུའི་སྐུ། །
डि मेद् सेर ग्यि छोद् दोङ त बुइ कु
विमल सुवर्ण-वृक्षोपम काय।

མྱ་ངན་འདས་ཞིང་བདེ་བའི་མཆོག་བརྙེས་པ། །
न्य ङेन देस् शिङ दे वई छोग ञेस् प
निर्वाण प्राप्त परम सुख को प्राप्त करने वाले।

འགྲོ་དྲུག་མགོན་དང་དཔལ་དུ་གྱུར་པ་ཡི། །
डो डुग गोन दङ पल दु ग्युर प यि
षट् प्राणियों के नाथ तथा श्री में परिवर्तित।

ཆོས་སྒྲ་ཆེན་པོས་ཕ་རོལ་རྒོལ་བ་འཇོམས། །
छोस् ड छेन पोस् फ रोल गोल व जोम
महान् धर्म-शब्द से पर-वाद को नष्ट करते।

འགྲོ་བའི་དུག་གསུམ་མ་ལུས་ཞི་མཛད་པ། །
डो बई दुग सुम म लुस् शि ज़े प
प्राणियों के अशेष त्रिविषों के नाश-कर्त्ता।

ཆོས་ཀྱི་བློ་གྲོས་གཏིང་དཔག་དཀའ་བའི་ཚུལ། །
छोस् क्यि लो डोस् तिङ पग का बई छुल
धर्ममति दुरवगाह रूपी क्रम।

ཤེས་བྱ་ཀུན་ལ་མཁས་པའི་མཁྱེན་པ་འཕགས། །
शेस् छ कुन ल खेस् पई ख्येन प फग
(जो) समस्त ज्ञेय में कुशल रूपी विशिष्ट ज्ञान हैं।

སྒྲ་དབྱངས་རྒྱལ་པོ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ड यङ ग्यल पो दे ल छग छ़ल लो
उन शब्दघोषराज को नमन करता हूँ।।

ཉི་མ་སྟོང་ལས་ལྷག་པའི་གཟི་བརྗིད་འབར། །
ञि म तोङ लेस ल्हग पई ज़ि जिद् बर
सहस्र सूर्यों से अधिक की औजस् प्रज्वलित।

གསེར་བཟང་དྲི་མེད་སྣང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सेर ज़ङ डि मेद् नङ ल छग छ़ल लो
भद्र सुवर्ण विमलाभासित को नमन करता हूँ।।

འགྲོ་བའི་སྡུག་བསྔལ་གདུང་བ་ཞི་མཛད་ཅིང་། །
डो बई दुग ङल दुङ व शि ज़े चिङ
प्राणियों के दुःख-पीड़ा को शान्त करने वाले।

མྱ་ངན་མེད་མཆོག་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
न्य ङेन मेद् छोग पल ल छग छ़ल लो
परम निर्वाणश्री को नमन करता हूँ।।

རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུར་ཟབ་པའི་སྐུ་མངའ་ཞིང་། །
ग्य छो त बुर ज़प पई कु ङा शिङ
सागरोपम गम्भीर काय वाले।

ཆོས་བསྒྲགས་རྒྱ་མཚོའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छोस् डग ग्य छोइ यङ ल छग छ़ल लो
धर्म-कीर्तिसागरघोष को नमन करता हूँ।।

རྣམ་དག་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལ་རོལ་མཛད་ཅིང་། །
नम दग छोस् क्यि यिङ ल रोल ज़े चिङ
विशुद्ध धर्मधातु में विलोडन करने वाले।

ཤེས་བྱ་མ་ལུས་མངོན་སུམ་གཟིགས་པ་པོ། །
शेस् छ म लुस् ङोन सुम ज़िग प पो
अशेष ज्ञेयों को प्रत्यक्ष देखने वाले।

འགྲོ་བའི་ནད་གསོ་མཛད་པ་སྨན་པའི་མཆོག །
डो बई ने सो ज़े प मेन पई छोग
(जो) प्राणियों के रोगोपचार-कर्त्ता परम औषध ।

སྐུ་ཡི་འོད་ཀྱིས་འགྲོ་བ་སྒྲོལ་མཛད་པ། །
कु यि ह़ोद् क्यीस् डो व डोल ज़े प
काय-प्रभा से प्राणियों को तारने वाले (हैं)।

ཐུགས་རྗེ་ཀུན་ལ་སྙོམས་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས། །
थुग जे कुन ल ञोम पई चोम देन देस्
भगवान् में, सभी के प्रति करुणा समान है।

དུག་གསུམ་ནད་སེལ་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ། །
दुग सुम ने सेल सङ ग्येस् मेन ग्यि ल
त्रिविष रोग निवारक बुद्ध भैषज्य गुरु।

ཉི་མ་ལྟ་བུར་མ་རིག་མུན་པ་སེལ། །
ञि म त बुर म रिग मुन प सेल
देव-मनुष्य शास्ता भैषज्य गुरु।

དུག་གསུམ་ནད་སེལ་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ། །
दुग सुम ने सेल सङ ग्येस् मेन ग्यि ल
त्रिविष रोग निवारक बुद्ध भैषज्य गुरु।

ལྷ་མིའི་སྟོན་པ་སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་སྟེ། །
ल्ह मी तोन प मेन पई ग्यल पो ते
देव-मनुष्य-शास्ता भैषज्यराज

དུག་གསུམ་ནད་སེལ་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ། །
दुग सुम ने सेल सङ ग्येस् मेन ग्यि ल
त्रिविष रोग निवारक बुद्ध भैषज्य गुरु।

ཆོས་བློ་མངོན་པར་མཁྱེན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छोस् लो ङोन पर ख्येन ल छग छ़ल लो
धर्ममति अभिज्ञान को नमन करता हूँ।।

བཻཌཱུརྱ་ལྟར་དྭངས་པའི་སྐུ་མངའ་ཞིང་། །
वैदूर्य तर दङ पई कु ङा शिङ
वैडूर्य के समान स्वच्छ काय वाले।

སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मेन पई ग्यल पो दे ल छग छ़ल लो
उन भैषज्यराज को नमन करता हूँ।।

མཚན་ཙམ་ཐོས་པས་ངན་འགྲོའི་སྡུག་བསྔལ་སྐྱོབ། །
छ़ेन ज़म थोस् पेस् ङेन डोइ दुग ङल क्योप
(वे) नाम मात्र के श्रवण से दुर्गति-दुःख से बचाते।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह़ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

ཟླ་བ་ལྟ་བུར་ཉོན་མོངས་གདུང་བ་སེལ། །
द व त बुर ञोन मोङ दुङ व सेल
भगवान् त्रिलोक के शरण-दाता।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह़ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

བཅོམ་ལྡན་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལ་སྐྱབས་མཛད་པ། །
चोम देन जिग तेन सुम ल क्यप ज़े प
भगवान् त्रिलोक को शरण देने वाले

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह़ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।

ཁྱོད་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་སྨན་པ་སྟེ། །
ख्योद् नि जिग तेन सुम ग्यि मेन प ते
आप त्रिलोक के भैषज्य हैं।

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་རྩད་ནས་གཅོད། །
दोद् छग शे दङ ति मुग ज़े नेस् चोद्
राग-द्वेष-मोह जड़ से हटाते।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་ལ་རབ་ཏུ་འགོད། །
सेम चेन थम चे दे ल रप तु गोद्
समस्त सत्त्वों को सुख पर प्रारूढ करते।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह्ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

ཡེ་ཤེས་སྤྱན་གྱིས་འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་གཟིགས། །
ये शेस् चेन ग्यीस् डो व कुन ल ज़िग
ज्ञानचक्षु से सर्वसत्त्वों को देखते।

ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན་གྱིས་འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཁྱབ། །
थुग जे चेन ग्यीस् डो व कुन ल ख्यप
करुणा चक्षु से सर्वसत्त्वों में व्याप्त होते।

དུག་གསུམ་ནད་སེལ་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ། །
दुग सुम ने सेल सङ ग्येस् मेन ग्यि ल
त्रिविष रोग निवारक बुद्ध भैषज्य गुरु।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह्ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

རླུང་དང་མཁྲིས་པ་བད་ཀན་འདུས་པ་སོགས། །
लुङ दङ ठीस् प बे केन दुस् प सोग
वायु, पित्त तथा कफ-सन्निपात आदि।

འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་འཁྲུགས་པར་གྱུར་པ་ལ། །
छुङ व छेन पो ठुग पर ग्युर प ल
महाभूत के विक्षिप्त होने पर।

ནད་ཀྱི་གཉེན་པོ་ཕྱག་གཡས་ཨ་རུ་ར། །
ने क्यि ञेन पो छग येस् अ रु र
दक्षिण-हस्त में रोग-प्रतिपक्ष हरितकी।

སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
मेन पई ग्यल पो ख्योद् ल छग छ़ल लो
भैषज्यराज आपको नमन करता हूँ।।

སྐུ་མདོག་མཐིང་ཀ་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོ་འདྲ། །
कु दोग थिङ क अुद्पल ङोन पो ड
कायवर्ण नील नीलोत्पल के समान।

ཕྱག་གཡོན་བདུད་རྩིའི་སྨན་གྱི་ལྷུང་བཟེད་བསྣམས། །
छग योन दुद् ज़ी मेन ग्यि ल्हुङ ज़ेद् नम
वाम हस्त में अमृत रूपी औषध-पात्र धारण किये।

དུག་གསུམ་ནད་སེལ་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ། །
दुग सुम ने सेल सङ ग्येस् मेन ग्यि ल
त्रिविष रोग निवारक बुद्ध भैषज्य गुरु।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह्ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

ཉེས་པ་རྒྱ་མཚོ་དག་ནི་གཞིར་སྤངས་ནས། །
ञेस् प ग्य छ़ो दग नि शिर पङ नेस्
दोष-सागरों को आधार से हटाकर।

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་དག་གི་ཕ་རོལ་སོན། །
योन तेन ग्य छ़ो दग गि फ रोल सोन
गुणसागरों से पार पहुँचे हैं।

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ལྷ་ཡི་ལྷར་གྱུར་པ། །
थम चे ख्येन प ल्ह यि ल्हर ग्युर प
सर्वज्ञ देवाधिदेवभूत।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह़ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

སྨོན་ལམ་རྒྱ་ཆེན་ཡོངས་སུ་དག་གྱུར་པའི། །
मोन लम ग्य छेन योङ सु दग ग्युर पई
विस्तृत प्रणिधान परिशुद्ध होकर।

ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ལྟ་བུར་གཞན་དོན་མཛད། །
यिद् शिन नोर बु त बुर शेन दोन ज़े
चिन्तामणिवत् परार्थ करते।

དུག་གསུམ་ནད་སེལ་སངས་རྒྱས་སྨན་གྱི་བླ། །
दुग सुम ने सेल सङ ग्येस् मेन ग्यि ल
त्रिविष रोग निवारक बुद्ध भैषज्य गुरु।

བཻཌཱུརྱའི་འོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
वैदूर्यई ह़ोद् ल छग छ़ल लो
वैडूर्यप्रभ को नमन करता हूँ।।

ཐབས་མཁས་ཐུགས་རྗེས་ཤཱཀྱའི་རིགས་སུ་འཁྲུངས། །
थप खेस् थुग जेस् शाक्यई रिग सु ठुङ
उपाय-कुशल करुणा से शाक्यकुल में जन्में।

གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་བདུད་ཀྱི་དཔུང་འཇོམས་པ། །
शेन ग्यीस् मि थुप दुद् क्यि पुङ जोम प
अपराजेय, मारसेना के नाशक।

གསེར་གྱི་ལྷུན་པོ་ལྟ་བུར་བརྗིད་པའི་སྐུ། །
सेर ग्यि ल्हुन पो त बुर जिद् पई कु
सुवर्णगिरि जैसा गुरुकाय वाले।

ཤཱཀྱའི་རྒྱལ་པོ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
शाक्यई ग्यल पो दे ल छग छ़ल लो
उस शाक्यराज को नमन करता हूँ।।

ཞེས་དང་། ཆོས་དཀོན་མཆོག་དང་འཁོར་གྱི་བསྟོད་པ་ལག་ལེན་མཐོང་བརྒྱུད་ནི།
इति। धर्मरत्न तथा परिवार की स्तुति, दर्शन परम्परा विधि तो–अज्ञानान्धकार निवारक परम दीप (है)।

མ་རིག་མུན་སེལ་སྒྲོན་མེའི་མཆོག །
म रिग मुन सेल डोन मे छोग
दुःख-रोग निवारक

སྡུག་བསྔལ་ནད་སེལ་སྨན་གྱི་ཕུལ། །
दुग ङ्ल ने सेल मेन ग्यि फुल
अतिशय औषध (है)।

དམ་ཆོས་དཀོན་མཆོག་ཐམས་ཅད་ལ། །
दम छोस् कोन छोग थम चे ल
समस्त सद्धर्म-रत्न को।

ཕྱག་འཚལ་མཆོད་ཅིང་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छग छ़ल छोद् चिङ क्यप सु छि
प्रणाम पूजाकर शरण जाता हूँ।।

གཞོན་ནུའི་སྐུ་ལུས་འཆང་དབང་པོ། །
शोन नुइ कु लुस् छङ वङ पो
कुमार-काय को धारण करने वाले इन्द्र।

ཡེ་ཤེས་སྒྲོན་མེ་རབ་བརྒྱན་ཅིང་། །
ये शेस् डोन मे रप ग्येन चिङ
ज्ञान-दीप से सुअलंकृत होकर।

འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མུན་སེལ་བ། །
जिग तेन सुम ग्यि मुन सेल व
तीन लोकों के अन्धकार को नष्ट करने वाले।

འཇམ་དཔལ་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
जम पल यङ ल छग छ़ल लो
मञ्जुश्रीघोष को नमन करता हूँ।।

འགྲོ་དྲུག་འཇིགས་པ་བརྒྱད་ལས་སྐྱོབ་མཛད་ཅིང་། །
डो डुग जिग प ग्ये लेस क्योप ज़े चिङ
षट् गतियों को अष्ट भय से रक्षा करने वाले।

འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་ཆེ་ལས་སྒྲོལ་བའི་གྲུ། །
खोर बई ग्य छ़ो छे लेस डोल बई डु
संसार रूपी महासागर से तरने की नाव (हैं)।

མྱ་ངན་འདས་སར་ཕྱིན་པའི་དེད་དཔོན་མཆོག །
न्य ङेन देस् सर छिन पई देद् पोन छोग
निर्वाण भूमि पर जाने के परम सार्थवाह।

སེམས་དཔའ་སྐྱབས་གྲོལ་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
सेम पा क्यप डोल ज़े ल छग छ़ल लो
बोधिसत्त्व को शरणमुक्त करने वाले को नमन है।।

ལྕང་ལོ་ཅན་གྱི་གནས་མཆོག་དམ་པ་ནས། །
चङ लो चेन ग्यि नेस् छोग दम प नेस्
अलकावती रूपी श्रेष्ठ परम स्थान में।

གསང་སྔགས་རིག་སྔགས་ཀུན་གྱི་བདག་པོ་སྟེ། །
सङ ङग रिग ङग कुन ग्यि दग पो ते
समस्त गुह्यमन्त्र विद्यामन्त्रों के अधिपति।

ལོག་འདྲེན་བགེགས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་འཇོམས་མཛད་པ།།
लोग डेन गेग क्यि छ़ोग नम जोम ज़े प
विनायक बाधागण को नष्ट करने वाले।

བཅོམ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་བསྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चोम देन दोर जे नम ल छग छ़ल लो
भगवान् वज्रधर को नमन करता हूँ।।

ཚངས་དང་བརྒྱ་བྱིན་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི། །
छ़ङ दङ ग्य छिन ग्यल पो छेन पो शि
ब्रह्मा, शक्रक्रतु तथा चतुर्महाराज।

རང་རང་སྡེ་བཅས་མཐུ་དང་དཔལ་ལྡན་པ། །
रङ रङ दे चेस् थु दङ पल देन प
अपने-अपने वर्ग सहित शक्ति तथा श्री से युक्त।

སྟོན་པའི་དམ་ཆོས་སྐྱོང་བར་མཛད་པ་ཡི། །
तोन पई दम छोस् क्योङ वर ज़े प यि
शास्ता के सद्धर्म का पालन करने वाले।

ལྷ་ཡི་དགེ་བསྙེན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल्ह यि गे ञेन नम ल छग छ़ल लो
देव-उपासकों को नमन करता हूँ।।

བདེ་གཤེགས་བསྟན་པ་སྲུང་བའི་དགེ་བསྙེན་མཆོག །
दे शेग तेन प सुङ बई गे ञेन छोग
सुगत शासन रक्षक परम उपासक।

འཇིགས་པའི་གཟུགས་དང་རྔམ་པའི་ཆ་ལུགས་ཅན། །
जिग पई ज़ुग दङ ङम पई छ लुग चेन
भयानक काय तथा आशय-वेश वाले।

བདུན་འབུམ་འཁོར་གྱིས་བསྐོར་བའི་བཅུ་གཉིས་པོ། །
दुन बुम खोर ग्यीस् कोर बई चु ञीस् पो
सात लाख परिवार से परिवृत्त बारह गण।

གནོད་སྦྱིན་སྡེ་དཔོན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
नोद् छिन दे पोन नम ल छग छ़ल लो
यक्ष सेनापतियों को नमन करता हूँ।।

ཞེས་བརྗོད་པས་ཕྱག་འཚལ་ཞིང་།
ऐसा वाचन करते हुए प्रणाम कर–

འཕགས་པའི་ཚོགས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་ཡོན་དང་ཞབས་བསིལ་དང་བྱུག་པ། མེ་ཏོག་དང་བདུག་སྤོས། མར་མེ་དང་ཞལ་
फग पई छ़ोग दे दग थम चे ल छोद् योन दङ छुग प मे तोग दङ दुग पोस् मर मे दङ शल
उन सभी आर्यगणों को अर्घ्य एवं लेपन, पुष्प और धूप, दीप एवं नैवेद्य,

ཟས། རོལ་མོ་དང་སིལ་སྙན། གདུགས་དང་བ་དན་ལ་སོགས་པ་དངོས་སུ་ཅི་འབྱོར་པ་དེ་དག་དང་།
ज़ेस् रोल मो दङ सिल ञेन दुग दङ व देन ल सोग प ङोस् सु चि छ़ोर प दे दग दङ
वाद्य तथा तूर्य्य और छत्र एवं पताका आदि प्रत्यक्ष रूप से जो प्राप्त हैं,

ཕྱོགས་བཅུ་ན་བདག་པོས་ཡོངས་སུ་མ་བཟུང་བའི་ལྷ་དང་མིའི་རྫས་དམ་པ་བདེ་བའི་ཡོ་བྱད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་
छोग चु न दग पोस् योङ सु म ज़ुङ बई ल्ह दङ मी ज़ेस् दम प दे वई यो छे फुन सुम छ़ोग प
वे तथा दश दिशाओं में स्वामी द्वारा परिग्रहण नहीं किये गये देव एवं मनुष्यों के परम द्रव्य रूपी सुख देने वाले

ཐམས་ཅད་དང་། གཟུངས་དང་རིག་པའི་མཐུ་དང་མོས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་བསྐྱེད་པའི་མཆོད་སྤྲིན་བཟང་པོར་སྤྱོད་པའི་
थम चे दङ ज़ुङ दङ रिग पई थु दङ मोस् पई तोप क्यीस् क्येद् पई छोद् टिन ज़ङ पोर चोद्
समस्त पदार्थ सम्पद् तथा धारणी एवं विद्याशक्ति तथा छन्दबल के द्वारा उत्पन्न भद्रचर्याप्रणिधान में उक्त

སྨོན་ལམ་ལས་བྱུང་བ་རྒྱ་མཚོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནམ་མཁའི་མཐའ་ཀླས་པ་ཐམས་ཅད་བཀང་སྟེ་འབུལ་ལོ། །
पई मोन लम लेस छुङ व ग्य छ़ो थम चे क्यीस् नम खई था लेस् प थम चे कङ ते बुल लो
पूजामेघ रूपी सारे सागरों को समस्त आकाशधातु को भरकर भेंट करता हूँ।

མཆོད་དོ། །བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱིས་ཐོག་མ་མ་མཆིས་པ་ནས་འཁོར་བ་ན་འཁོར་བའི་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་སྡིག་
छोद् दो दग चग नम क्यीस् थोग म म छीस् प नेस् खोर व न खोर बई छ़े रप थम चे दु दिग
पूजा करता हूँ।। हम लोगों के द्वारा अनादि काल से संसार में संसरण के समस्त जन्मान्तरों में (जो) पाप

པ་མི་དགེ་བའི་ལས་མདོར་ན་མི་བགྱི་བར་འོས་པའི་ལས་ནི་བགྱིས། བགྱི་བར་འོས་པའི་ལས་མ་བགྱིས་པ་ལ་སོགས་
प मि गे बई लेस दोर न मि ग्यि बर ह़ोस् पई लेस नि ग्यीस् ग्यि बर ह़ोस् पई लेस म ग्यीस् प
रूपी अकुशल-कर्म, संक्षेप में, अकरणीय कर्मों के करने तथा करणीय कर्मों के नहीं करने आदि

པ་དངོས་སྡིག་ཅི་མཆིས་པ་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་འཆགས་སོ། །དུས་གསུམ་གྱི་འཕགས་པ་དང་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོའི་
ल सोग प ङोस् दिग चि छीस् प थम चे यङ दग पर छग सो दुस् सुम ग्यि फग प दङ सो सोइ
के प्रत्यक्ष जो पाप किये हैं, सभी की सम्यक् रूप से देशना करता हूँ। तीनों कालों के आर्य एवं पृथग्जनों के

དགེ་བ་མཐའ་དག་གི་བསོད་ནམས་ཐམས་ཅད་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་། །ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་
क्ये बोइ गे व था दग गि सोद् नम थम चे ल जेस् सु यि रङ ङो    छोग चुइ ग्यल व थम चे
समस्त कुशल के सारे पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ। दश दिशाओं के समस्त जिनों (बुद्धों)

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བླ་ན་མེད་པ་བསྐོར་བར་བསྐུལ་ལོ། །འཇིག་རྟེན་གྱི་སྒྲོན་མེ་གང་དག་མྱ་ངན་ལས་
छोस् क्यि खोर लो ल न मेद् प कोर बर कुल लो    जिग तेन ग्यि डोन मे गङ दग न्य ङेन लेस
से अनुत्तर धर्मचक्रप्रवर्त्तन के लिए अध्येषणा करता हूँ। जो लोकदीप (बुद्ध) निर्वाणक्रम को दिखाने हेतु विचार

འདའ་བའི་ཚུལ་སྟོན་པར་བཞེད་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བར་འཇིག་རྟེན་གྱི་དོན་མཛད་ཅིང་
दा बई छुल तोन पर शेद् प दे दग थम चे ल न्य ङेन लेस मि दा बर जिग तेन ग्यि दोन ज़े चिङ
कर रहे हैं उन सबसे निर्वाण को प्राप्त नहीं कर लोकार्थ का सम्पादन करते हुए दीर्घकाल तक स्थित रहने के

ཡུན་རིང་དུ་བཞུགས་སུ་གསོལ་བར་འཚལ་ལོ། །ཞེས་བརྗོད་པས་འཕགས་པ་གདན་འདྲོམས་པའི་མཆོད་པ་ཅི་འབྱོར་བ་བྱ།
युन रिङ दु शुग सु सोल बर छ़ल लो
लिए प्रार्थना करता हूँ। इस वाचन के द्वारा एकत्रित आर्यों के लिए जो प्राप्त हैं, उन वस्तुओं से पूजा करनी चाहिए।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བདུན་དང་། སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་
दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् दुन दङ    तोन प चोम देन देस् पल
सप्त तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध तथा शास्ता भगवान्

དཔལ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་འཁོར་དང་བཅས་པ་སྤྱན་དྲངས་ཏེ་མཚན་ནས་བརྗོད་ཅིང་ཕྱག་འཚལ་བ་དང་། མཆོད་ཅིང་དེ་དག་
शाक्य थुप प खोर दङ चेस् प चेन डङ ते छ़ेन नेस् जोद् चिङ छग छ़ल व दङ    छोद् चिङ दे
श्रीशाक्यमुनि को सपरिवार आमन्त्रित कर नाम वाचन सहित प्रणाम करने, पूजा कर उनका

གི་སྨོན་ལམ་བཏབ་པ་དང་། དེ་དག་གི་སྤྱན་སྔར་སྡིག་པ་བཤགས་པ་དང་། དགེ་བ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་
दग गि मोन लम तप प दङ    दे दग गि चेन ङर दिग प शग प दङ    गे व ल जेस् सु यि रङ व
प्रणिधान करने, उनके समक्ष पापदेशना करने, पुण्यानुमोदन करने,

དང་། ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བར་བསྐུལ་ཞིང་མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བར་གསོལ་བ་བཏབ་པ་དང་།
दङ    छोस् क्यि खोर लो कोर बर कुल शिङ न्य ङेन लेस मि दा बर सोल व तप प दङ
धर्मचक्रप्रवर्त्तन के लिए अध्येषणा सहित परिनिर्वाण नहीं होने हेतु प्रार्थना करने,

དེ་དག་གི་མཐུ་དཔལ་དང་བྱིན་རླབས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས། བདག་ཅག་ཐོག་མ་མ་མཆིས་པའི་འཁོར་བ་ནས་བསགས་པའི་
दे दग गि थु पल दङ छिन लप क्यि तोप क्यीस्    दग चग थोग म म छीस् पई खोर व नेस् सग
इन (कुशल कार्यों) के शक्तिश्री तथा अधिष्ठान-बल के द्वारा हमारे अनादि काल के संसरण से संगृहीत

སྡིག་པ་དང་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་བྱང་ཞིང་དག་པར་གྱུར་ཅིག །ལུས་ལ་ནད་མེད་པ་དང་ཚེ་རིང་བར་
पई दिग प दङ डिप प थम चे छङ शिङ दग पर ग्युर चिग     लुस् ल ने मेद् प दङ छे रिङ बर
पाप एवं समस्त आवरण शोधित होकर शुद्ध हो जाएँ। काय में रोग नहीं हों तथा दीर्घायु हों।

གྱུར་ཅིག །འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་མངའ་བརྙེས་པར་གྱུར་ཅིག །
ग्युर चिग     जिग तेन दङ जिग तेन लेस देस् पई पल फुन सुम छोग प ल ङा ञेस् पर ग्युर चिग
लोक एवं लोकातीत श्रीसम्पद् में अधिकार प्राप्त हों।

མཐར་ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ནས་རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་
थर छोग ञीस् योङ सु ज़ोग नेस् दोर जेई कु छोस् क्यि ग्यल पो सङ ग्येस् चोम देन देस् क्यि गो
अन्त में दो सम्भार परिपूर्ण होकर वज्रकाय धर्मराज बुद्ध भगवान् के पद

གོ་འཕང་བརྙེས་པར་གྱུར་ཅིག །ཡུལ་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་མི་ནད་དང་ཕྱུགས་ནད་དང་ལོ་ཉེས་པ་དང་དགྲའི་
फङ ञेस् पर ग्युर चिग     युल खम थम चे दु यङ मि ने दङ छुग ने दङ लो ञेस् प दङ डई नोद्
की प्राप्ति हो। समस्त राज्यों में भी मनुष्य के रोग, पशुओं के रोग, दुर्वर्ष और शत्रु द्वारा

གནོད་པ་ལ་སོགས་པ་བཀྲ་མི་ཤིས་པའི་བག་ཅི་ཡང་མི་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །ཆར་ཆུ་དུས་སུ་བབས་ཏེ་ལོ་
प ल सोग प ट मि शीस् पई बग चि यङ मि छुङ बर ग्युर चिग     छर छु दुस् सु बप ते लो छुग
अहित आदि अमंगल थोड़ा भी नहीं हों। समय पर वर्षा होने से फसल,

ཕྱུགས་འཕེལ་ཞིང་རྒྱས་པ་དང་། བདེ་སྐྱིད་ཀྱི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
फेल शिङ ग्येस् प दङ     दे क्यिद् क्यि पल फुन सुम छोग प दङ देन पर ग्युर चिग
पशु आदि का विस्तार तथा सुखानन्द श्रीसम्पद् से युक्त हों।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བདེ་བ་དང་ལྡན་ཏེ། ཞིང་ཁམས་དེ་དག་ཏུ་སྐྱེས་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེ་དག་གི་
सेम चेन थम चे क्यङ दे व दङ देन ते     शिङ खम दे दग तु क्येस् नेस् दे शिन शेग प दे दग गि
समस्त सत्त्व भी सुख से युक्त होकर उन क्षेत्रधातुओं में उत्पन्न हों, उन तथागतों के उपदेश को प्राप्त कर दो

གདམས་ངག་ཐོབ་སྟེ་ཚོགས་གཉིས་རྫོགས་ནས་སངས་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
दम ङग थोप ते छोग ञीस् ज़ोग नेस् सङ ग्येस् पर ग्युर चिग
सम्भारों को परिपूर्ण कर बुद्धत्व को प्राप्त करें।

ཁྱད་པར་དུ་ཡང་དམ་པའི་ཆོས་ཡུན་རིང་དུ་གནས་ཤིང་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
ख्ये पर दु यङ दम पई छोस् युन रिङ दु नेस् शिङ ग्येस् पर ग्युर चिग
विशेषतया सद्धर्म दीर्घकाल तक स्थित होकर विस्तार को प्राप्त करे।

དེ་ནས་བཟོད་པར་གསོལ་ཏེ།
तत्पश्चात् क्षान्ति हेतु प्रार्थना करनी चाहिए–

ཆེ་གེ་མོས། བདག་ཅག་ལ་སོགས་པ་འགྲོ་བ་མང་པོའི་དོན་མཛད་པར་གསོལ་བའི་སྐབས་འདིར་བདག་ཅག་དུས་ངན་པའི་
दग चग ल सोग प डो व मङ पोइ दोन ज़े पर सोल बई कप दिर दग चग दुस् ङेन
अमुक द्वारा...हमारे साथ अनेक प्राणियों के लिए अर्थ-सम्पादन हेतु प्रार्थना के इस अवसर पर हम बुरे काल

སེམས་ཅན་སྤྱོད་པ་དམན་ཞིང་མ་དག་པས་མ་འཚལ་བ་དང་། ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་ཉོན་མོངས་པ་དང་འདྲེས་པ་དང་།
पई सेम चेन चोद् प मेन शिङ म दग पेस् म छ़ल व दङ लुस् ङग यिद् सुम ञोन मोङ प दङ
के सत्त्व-चर्या में हीन तथा अशुद्ध होने से अयोग्य, काय-वाक्-चित्त तीनों क्लेश से मिश्रित होने, पूजा-वस्तु के

མཆོད་པའི་དངོས་པོ་ཆུང་ཞིང་དམན་པ་དང་། གཙང་སྦྲ་མ་བྱེད་པ་དང་། མདོ་ལས་བྱུང་བའི་
डेस् प दङ छोद् पई ङोस् पो छुङ शिङ मेन प दङ ज़ङ ड म छेद् प दङ दो लेस छुङ वई
छोटे एवं हीन होने, स्वच्छ नहीं करने तथा सूत्रोक्त विध्यानुसार असमर्थ होने आदि भ्रान्तियुक्त होने से जो

ཆོ་ག་བཞིན་དུ་མ་ལྕོགས་པ་ལ་སོགས་པ་འཁྲུལ་ཞིང་ནོངས་པ་ཐམས་ཅད་འཕགས་པ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་
छो ग शिन दु म चोग प ल सोग प ठुल शिङ नोङ प थम चे फग प थुग जे छेन पो दङ देन प
सारे दोष हुए हैं, आर्य (महा-)कारुणिकों के समक्ष क्षमा करने हेतु प्रार्थना करता हूँ।

རྣམས་ལ་བཟོད་པར་གསོལ་ཞིང་མཆིས་ན། ཐུགས་བརྩེ་བས་དགོངས་ཏེ་བཟོད་པར་བཞེས་ཤིང་འཕྲལ་དང་ཡུན་དུ་
नम ल ज़ोद् पर सोल शिङ छीस् न थुग ज़े वे गोङ ते ज़ोद् पर शेस् शिङ ठल दङ युन दु
अतः दया-चित्त से (हम लोगों के प्रति) ध्यान देकर क्षमा करते हुए आकस्मिक एवं दीर्घकाल पर्यन्त हम लोग

བདག་ཅག་གི་སྒྲིབ་པར་མི་འགྱུར་བར་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ།
दग चग गि डिप पर मि ग्युर बर छिन ग्यीस् लप तु सोल
आवरणित नहीं होने के लिए अधिष्ठित करने हेतु प्रार्थना करते हैं।

དེ་ནས་རྗེས་ལ་གཤེགས་གསོལ་ཏེ།
उसके बाद प्रत्यागमन हेतु प्रार्थना–

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་ཁྱེད་རྣམས་ཀྱིས་བདག་ཅག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དོན་མཛད་ལགས་ཀྱིས།
गोन पो थुग जे छेन पो दङ देन प ख्येद् नम क्यीस् दग चग दङ सेम चेन थम चे दोन ज़े लग
नाथ महाकारुणिक आप लोगों द्वारा हमारे एवं सर्वसत्त्वों के अर्थ का सम्पादन

སོ་སོའི་ཞིང་ཁམས་སུ་འཁོར་དང་བཅས་པ་གཤེགས་སུ་གསོལ། སླར་ཡང་སེམས་ཅན་དོན་ལ་ཐུགས་
क्यीस्　सो सोइ शिङ खम सु खोर दङ चेस् प शेग सु सोल　लर यङ सेम चेन दोन ल थुग
**किया है, अतः अपने क्षेत्र में सपरिवार प्रत्यागमन करें। भविष्य में, पुनः सत्त्वार्थ के लिए करुणा से पधारने**

རྗེས་འབྱོན་པར་ཞུ།
जेस् छोन पर शु
**हेतु प्रार्थना करता हूँ।।**

དེ་ནས་བཟང་སྤྱོད་ཚར་རེ་འདོན་པ་ལག་ལེན་ཡིན་ཅིང་། ཉིན་ཚོག་ཚར་གཅིག་ཡིན་ན་མཎྜལ་དང་མཆོད་པ་བསྡུ། ཡང་ཉིན་རེ་ཚོ་ག་ཚར་གཉིས་གསུམ་སོགས་དང་སྒྲུབ་ཚོག་ཞག་སྦྲེལ་ཡིན་ན་མ་གྲོལ་བར་མཎྜལ་དེ་ཀར་བཞུགས་ནས་མཆོད་པ་རྣམས་བརྗེས། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བདུན་མཆོད་པའི་ཚོ་ག་བསྡུས་ཏེ་བྱ་བ་སློབ་དཔོན་བོདྷི་སཏྭས་མཛད་པའི་གཞུང་སོར་བཞག་ལ། ཞལ་འཕངས་རྣམས་རྒྱལ་ཚབ་རིན་པོ་ཆེས་མཆན་བུར་མཛད་པ་རྣམས་དཀྱུས་སུ་བཅུག་སྟེ་ཀཾ་ཚང་གི་ཕྱག་ལེན་ལྟར་སྦྱར་བ་ལ་ནོངས་པ་མཆིས་ན་བཟོད་པར་འཚལ་ཞིང་། དགེ་བ་མཆིས་ན་བསྟན་འགྲོའི་དོན་དུ་བསྔོ་བར་བགྱིའོ། །ཞེས་རྗེ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དྲུག་པ་ཆོས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་གིས་ལེགས་པར་བསྒྲིགས་ནས་སྤར་དུ་བཀོད་པ་ལ་འཁྲུགས་ཆུང་ཟད་ཡོད་པ་དང་ཁ་འཕངས་དག་དང་ཤེས་དགོས་པ་རྣམས་བཅུད་ནས་བལྟས་ཚོག་འདོན་བསྒྲིགས་སུ་བྲིས་པ་ཀརྨ་ཨ་རཱ་གས་སོ། ། སྨན་བླའི་ཐང་སྐུ་དང་གསེར་སྐུ་ཡོད་ན་བཤམས། མཎྜལ་སྟེང་དུ་འབྲུའི་ཚོམ་བུ་བརྒྱད་དབུས་དང་དགུ་བཀོད། དེའི་མདུན་དུ་ལྷ་བཤོས་བརྒྱད་དང་མར་མེ་བརྒྱད་དང་ཏིང་བདུན་དུ་ཡོན་ཆབ་བཤམས། རོལ་མོ་མཆོད་རོལ་སྐབས་སུ་བྱེད་པའོ། ། མངྒ་ལཾ་བྷ་ཝནྟུ། །ཤུ་བྷཾ།

इसके पश्चात् भद्रचर्याप्रणिधान का एक बार पाठ करने की परम्परा है। यदि दिन में एक ही बार इस विधि को सम्पन्न करना है, तब मण्डल एवं पूजा आदि का संग्रह कर लेना चाहिए। पुनः एक दिन में विधि को दो-तीन या अधिक बार सम्पन्न करना है, दिन भर की साधना-विधि आदि के साथ सम्पन्न करना है, तब समाप्त न कर मण्डल को वैसे ही स्थापित कर पूजा-द्रव्य आदि को बदल देना चाहिए। यह संक्षिप्त सप्त तथागत पूजा-विधि आचार्य बोधिसत्त्व द्वारा रचित शास्त्र की ही पूर्ति की गई है। अतिरिक्त वचन ग्यल्-छब रिन्-पो-छे द्वारा जो टिप्पणी की गई थी, उसे सामान्यतया यहाँ जोड़कर कम्-छङ विधि के अनुसार निबद्ध करने में दोष हो तो क्षमा चाहता हूँ। पुण्य हो तो शासन एवं प्राणियों के प्रति परिणामित करता हूँ। ऐसे स्वामी सर्वज्ञ छठे (शमरपा) छोस्-की वङ्-छुग् (धर्मेश्वर) द्वारा अच्छी तरह निबद्ध कर काष्ठबद्ध (प्रकाशित) करने में कुछ गलती होने तथा अतिरिक्त जोड़ने तथा आवश्यक जानने लायक बातों को जोड़ कर कर्मा अराग द्वारा दर्शनयुक्त-पाठ में निबद्ध कर लिखा गया। भैषज्य गुरु का पट्टचित्र तथा सुवर्ण मूर्ति आदि हो तो सजाना चाहिए। मण्डल के ऊपर अन्न निमित्त (डुई छोम्-बु) आठ तथा मध्य के साथ नौ स्थापित करना चाहिए। उनके समक्ष आठ नैवेद्य, आठ दीप सहित सात जलपात्र में अर्पित योग्य जल सजाना चाहिए। वाद्य,पूजावाद्य आदि अवसर अनुसार करनी चाहिए। भवतु सर्वमङ्गलम् ।। शुभमास्तु सर्वजगताम् ।।

# མདོ་ལུགས་བླ་མ་མཆོད་པའི་ཆོ་ག །
# गुरु-पूजा विधि

རྒྱ་གར་སྐད་དུ། གུརུཔཱུཛཱཀལྤནཱམ། བོད་སྐད་དུ། བླ་མ་མཆོད་པའི་ཆོ་ག་ཞེས་བྱ་བ། དཔལ་ཤཱཀྱ་སེངྒེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་ཡང་ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེ་སྡུད་པ་ལས། སངས་རྒྱས་ཆོས་རྣམས་དགེ་བའི་བཤེས་ལ་བརྟེན་ཏོ་ཞེས། །ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་མཆོག་མངའ་རྒྱལ་བས་དེ་སྐད་གསུངས། །ཞེས་དང་། ཇོ་བོ་བཀའ་གདམས་པའི་ཞལ་ནས། མན་ངག་ཐམས་ཅད་བསྡུས་པའི་མགོ་ནི། །བཤེས་གཉེན་དམ་པ་མི་བཏང་བ་ཡིན། །དེ་ལས་དད་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་སོགས། །ཡོན་ཏན་ཀུན་འབྱུང་ཀུན་གྱི་གཏེར་ཡིན། །ཞེས་དང་། དྭགས་པོ་རིན་པོ་ཆེས། བླ་མའི་བྱིན་རླབས་ཤིག་མ་ཞུགས་ན། སེམས་ཉིད་འདི་བལྟས་པས་མི་མཐོང་། བཟུང་བས་མི་ཟིན། བཀག་པས་མི་ཁེགས། རང་གི་སྣང་བ་འདི་ཡང་སྤངས་པས་མི་སྤོང་། བཤིག་པས་མི་ཤིགས། དེ་བས་ན། ཚོགས་གསོག་པར་འདོད་པ་དང་། སྒྲིབ་པ་སྦྱང་བར་འདོད་པ་དང་། བར་ཆད་ཞི་བར་འདོད་པ་དང་། རྟོགས་པ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་བ་དང་། སྣང་བ་ཟིལ་གྱིས་གནོན་པར་འདོད་པ་དང་། རང་གཞན་གྱི་དོན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱིས། བླ་མ་ཁོ་ན་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱ་ཞིང་། གསོལ་བ་འདེབས་པ་གཅིག་པུ་ལས་མེད། ཅེས་དང་། རྨོག་ཅོག་པས། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་རང་དཀར་ནའང་དཀར། རྗེ་བཙུན་མ་རང་དམར་ནའང་དམར། ཀྱཻ་རྡོ་རྗེ་རང་སྔོ་ནའང་སྔོ། ང་ནི་གང་དུ་འདུག་ཀྱང་བླ་མའི་སྣང་བ་དང་མ་བྲལ་བས་ཚེ་གཅིག་གི་སངས་རྒྱས་དེ་ཡོང་ཡོང་འདྲ། ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར། འདི་ཕྱིའི་ལེགས་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞི་མ། ལམ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ། ཐོབ་འདོད་ཀུན་གྱི་མཆོག་གྱུར། མངོན་མཐོ་དང་ངེས་ལེགས་ཀྱི་དེད་དཔོན། མན་ངག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་ནི་བླ་མ་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ཉིད་ཡིན་ཅིང་། དེ་ལ་རྒྱུ་མཚན་ཤེས་པས་ཚུལ་བཞིན་མོས་གུས་བྱས་ན་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཡང་མཐོང་བར་འགྱུར་ཏེ། རྒྱུད་བླ་མ་ལས། རང་བྱུང་རྣམས་ཀྱི་དོན་དམ་དེ། །དད་པ་ཉིད་ཀྱིས་རྟོགས་བྱ་ཡིན། །ཞེས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་དགེ་ལེགས་ཀུན་གྱི་རྩ་བ་བླ་མ་མཆོད་པའི་ཉམས་ལེན་ལ་འབད་པར་བྱའོ། །དེའི་ཚུལ་ནི། ས་གཞི་གནས་ཁང་མཆོད་པ་བརླབ། །ཚོགས་ཞིང་སྤྱན་དྲངས་བྱོན་ལེགས་བྱ། །ཁྲུས་གསོལ་སྐུ་ཕྱི་རྒྱན་བྱུགས་འབུལ། །ཕྱག་འཚལ་མཆོད་བསྟོད་སྡིག་པ་བཤགས། །སྐྱབས་སེམས་ཡི་རང་ཆོས་འཁོར་བསྐུལ། །བཞུགས་གསོལ་བསྔོ་བ་བཀྲ་ཤིས་ཏེ། །ཆོས་སྤྱོད་ཡན་ལག་ཉི་ཤུའོ། །ཞེས་པ་བཞིན་བྱ་བ་ལ། སྐྱབས་འགྲོ་དང་སེམས་བསྐྱེད་ཇོ་བོའི་ལུགས་ནི།

भारतीय भाषा में–गुरु-पूजा-कल्प(-विधि) नाम। भोट-भाषा में–ला-मा छोद्-पई छो-गा शेस्-ज-वा। श्री शाक्यसिंह को प्रणाम करता हूँ।

तथापि रत्नगुणसंचय(-गाथा) में कहा है–बुद्ध के सभी धर्म कल्याणमित्र पर आश्रित होते हैं–इति। परम गुणों को धारण करने वाले जिन (बुद्ध) वैसा कहते हैं।। स्वामी का-दम्-पा का कहना है–समस्त उपदेशों का संग्रह-शीर्ष तो। कल्याणमित्र को, है नहीं छोडना। उनसे भक्ति एवं बोधिचित्त आदि। सभी गुण होते, सभी के निधि हैं।। द्वग्स-पो रिन्-पो-छे का कहना है–गुरु का अधिष्ठान (आशीर्वाद) प्रवेश नहीं हो तो यह चित्तता देखने से दर्शन नहीं होता, पकड़ने पर पकड़ में नहीं आता, रोकने पर नहीं रुकता। अपना यह आभास भी त्याग करने पर त्यक्त नहीं होता तथा नाश करने पर नष्ट नहीं होता। इसलिए सम्भार-एकत्रण की इच्छा करने वाले, आवरण शोधन, बाधा शान्त करने, अवगम सन्तति को उत्पन्न करने, आभास को अभिभूत करने की चाहत तथा स्वयं एवं अन्य के अर्थ (हित) को सम्पन्न करने की इच्छा करने वालों के द्वारा गुरु मात्र का सत्कार करते हुए अध्येषणा करने के सिवाय अन्य (कोई) मार्ग नहीं है। मोग्-चोग्-पा का कहना है–महाकारुणिक (अवलोकितेश्वर) श्वेत हों तो हों,भट्टारिका (वाराही) स्वयं रक्त (लाल) हों तो हों, हेवज्र स्वयं नीले हों तो हों, मैं तो जहाँ भी रहूँ, गुरु के आभास से रहित नहीं होने के कारण एक जन्म में प्राप्त होने वाला बुद्ध बनूँगा ही।

इस जन्म तथा पर-जन्म के सभी अच्छे कार्यों का आधार, समस्त मार्गों का मूल,समस्त लाभों मे परम, अभ्युदय-निःश्रेयस् के सार्थवाह और समस्त उपदेशों के स्रोत तो गुरु कल्याणमित्र ही हैं। इसमें कारण को जानते हुए नियमानुसार छन्दादर करते हैं, तब धर्मता के अर्थ को देख पायेंगे, यथा उत्तरतन्त्र में कहा गया है–स्वयंभुओं के वह परमार्थ (का)। भक्ति (श्रद्धा) से है अवगम होता।। अतः समस्त अच्छाईयों के मूल गुरु-पूजा के अभ्यास में लग जाना चाहिए। इसका क्रम तो इस प्रकार कहा गया है, यथा–भूमि-स्थल (तथा) पूजा (का) अधिष्ठान। सम्भार-क्षेत्र का आवाहन, स्वागत करना। स्नान, मूर्ति-मार्जन, आभरण-लेपन भेंट। प्रणाम, पूजा-स्तुति, पापदेशना। शरण-चित्तोत्पाद, अनुमोदन, धर्मचक्र अध्येषणा। स्थिति प्रार्थना, परिणामना, मङ्गल। बीस हैं धर्मचर्या के अंग।। इस प्रकार ऊपर कहे अनुसार (उक्त गुरु-पूजा-विधि को) सम्पन्न करने के लिए स्वामी (दीपङ्करश्रीज्ञान) के मतानुसार शरणगमन एवं (बोधि-)चित्तोत्पाद तो–

སངས་རྒྱས་ཆོས་དང་ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་རྣམས་ལ། །
सङ ग्येस् छोस् दङ छोग क्यि छोग नम ल
गुरु, धर्म और परम गण (संघ) में।

བྱང་ཆུབ་བར་དུ་བདག་ནི་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छङ छुप बर दु दग नि क्यप सु छि
बोधि पर्यन्त मैं शरण जाता हूँ।

བདག་གིས་སྦྱིན་སོགས་བགྱིས་པ་འདི་དག་གིས། །
दग गीस् छिन सोग ग्यीस् प दि दग गीस्
दानादि किये मेरे इन कार्यों से।

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་འགྲུབ་པར་ཤོག །
डो ल फेन छिर सङ ग्येस् डुप पर शोग कोन
जगत् हितार्थ मैं बुद्ध बन जाऊँ।।

ས་གཞི་དང་གནས་ཁང་བྱིན་བརླབ་ནི།
भूमि तथा निवास स्थल का अधिष्ठान–

དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བདེན་པ་དང་། བྱིན་རླབས་དང་། ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་མཐུ་དང་། ཆོས་ཀྱི་
छोग सुम ग्यि देन प दङ छिन लप दङ छोग ञीस् योङ सु ज़ोग पई थु दङ छोस् क्यि
त्रिरत्न के सत्य, अधिष्ठान, दो सम्भारों के परिपूर्ण होने के बल,

དབྱིངས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ཡོན་ཏན་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཞིང་དག་པའི་སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་
यिङ क्यि रङ शिन ग्यि योन तेन दङ छङ छुप सेम पा नम क्यि शिङ दग पई छोर व ल सोग
धर्मधातु के स्वभाव का गुण तथा बोधिसत्त्वों के क्षेत्र-शुद्धि रूपी प्रयोग इत्यादि

པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་སྦྱངས་པའི་མཐུ་དང་། བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་མོས་པའི་མཐུ་ལས་གནས་འདི་སངས་
प सङ ग्येस् क्यि शिङ योङ सु छङ पई थु दङ दग चग नम क्यि मोस् पई थु लेस नेस् दि सङ
बुद्धक्षेत्र के परिशुद्धि का बल, हम लोगों के छन्द शक्ति से यह स्थल

རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱན་དང་བཀོད་པ་དང་། ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་
ग्येस् क्यि शिङ थम चे क्यि ग्येन दङ कोद् प दङ योन तेन फुन सुम छोग प थम चे दङ देन
समस्त बुद्ध क्षेत्रों के आभरणों से व्यूहित तथा समस्त गुणसम्पदों

པར་གྱུར་ཏེ། ས་གཞི་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རང་བཞིན་ལག་མཐིལ་ལྟར་མཉམ་པ། ཐ་གྲུ་ཆེ་བ། ཡངས་
पर ग्युर ते स शि रिन पो छे न छोग क्यि रङ शिन लग थिल तर ञम प थ डु छे व यङ
से युक्त होकर नाना स्थल-रत्नों का स्वभाव हथेली समान सम, महाविपुल,

པ། རེག་ན་འཇམ་ཞིང་བདེ་བ། དྲི་མ་མེད་ཅིང་འོད་གསལ་བ། ཙནྡན་སྦྲུལ་གྱི་སྙིང་པོའི་དྲི་བསུང་དང་
प रेग न जम शिङ दे व डि म मेद् चिङ होद् सल व ज़न्देन डुल ग्यिञिङ पोइ डि सुङ दङ
विस्तृत, स्पर्श होने पर कोमल और सुखदायक, मल से रहित होकर प्रभास्वर, उरगसारचन्दन के गन्ध से

ལྡན་པའི་ལྷའི་མེ་ཏོག་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་གཅལ་དུ་བཀྲམ་པ། མཐའ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕ་གུས་བརྩིགས་པ། གསེར་
देन पई ल्हई मे तोग न छ़ोग क्यीस् चल दु टम प  था रिन पो छे फ गुस् त्सिग प  सेर
**युक्त नाना देवपुष्पों के द्वारा विकीर्णित, कोटि (अन्त) रत्न ईंटों से निर्मित,**

དང་། དངུལ་དང་། མུ་ཏིག་གི་ཕྱེ་མ་གྲམ་བུར་བདལ་བ། ཨུཏྤལ་དང་། ཀུ་མུད་དང་། པདྨ་འགྱིང་ཞིང་
दङ  ङुल दङ  मु तिग गि छे म डम बुर दल व  उत्पल दङ  कु मुद् दङ  पेमा ग्यिङ शिङ
**सुवर्ण-चाँदी तथा मोतियों के चूर्ण पूरी तरह बिखरे हुए, उत्पल-कुमुद तथा लहराते पद्म पूरी**

ལྡེམ་པས་ཁེབས་པར་གྱུར་ཅིང་། ཆུ་བྱ་སྣ་ཚོགས་སྐད་སྙན་པར་སྒྲོགས་པས་དགའ་ཞིང་འཕྱོ་ལ་ལྡིང་བས་བརྒྱན་པའི་
देम पेस् खेप पर ग्युर चिङ  छु छ न छ़ोग के ञेन पर डोग पेस् गा शिङ छो ल दिङ वे ग्येन पई
**तरह ढके हुए, नाना प्रकार के जलचर पक्षी मधुर गान करते हुए प्रसन्न होकर उड़ते लहराते हुए अलंकृत, आठ**

ཡན་ལག་བརྒྱད་དང་ལྡན་པའི་མཚོ་དང་རྫིང་དང་ལྟེང་ཀ་དག་གིས་མཛེས་པར་བྱས་པ། རིན་པོ་ཆེའི་དཔག་བསམ་
येन लग ग्ये दङ देन पई छ़ो दङ ज़िङ दङ तेङ क दग गीस् ज़ेस् पर छेस् प  रिन पो छे पग सम
**अवयवों से युक्त तालाब, पुष्करिणी तथा सरोवरों से विभूषित, रत्नकल्पतरु,**

གྱི་ཤིང་ལྗོན་པ། ལྷའི་ནོར་བུ་དང་། མུ་ཏིག་གི་རྒྱན་ཕྲེང་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དཔྱངས་པ་དང་།
ग्यि शिङ जोन प  ल्हई नोर बु दङ  मु तिग गि ग्येन ठेङ दङ  रिन पो छे चङ प दङ
**देवमणि, मोतियों की आभरण-मालाओं,रत्नों की लड़ियों,**

མེ་ཏོག་གི་མགོ་ལྗོག་དང་འབྲས་བུ་མཛེས་པར་ཆགས་པས་གཡུར་ཟ་ཞིང་ལྡེམ་པ། གསེར་གྱི་དྲིལ་བུ་གཡེར་ཁ་
मे तोग गि गो चोग दङ डेस् बु ज़ेस् पर छग पेस् युर ज़ शिङ देम प  सेर ग्यि डिल बु येर ख
**पुष्प-कलियों तथा फल के अच्छी तरह लगने से पक कर लहराते हुए, सुवर्ण लघु घण्टियों**

འཁྲོལ་བ་ལས་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་འབྱུང་བ་དང་ལྡན་པ་ཚར་དུ་སྡེངས་པས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའི་ས་གཞི་ལ།
ठोल व लेस दम पई छ़ोस् क्यि ड छुङ व दङ देन प छ़र दु डेङ पेस् लेग पर ग्येन पई स शि ल
**के बजने से सद्धर्म के शब्द निकलते हुए अच्छी तरह सजाई गई सुअलंकृत भूमि पर**

གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་པོ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བདུན་མཆོག་ཏུ་འབར་བ་བཀོད་པ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་
शल मेद् खङ छेन पो रिन पो छे न दुन छ़ोग तु बर व कोद् प जिग तेन ग्यि खम पग तु मेद् प
**सप्त रत्नों से परम प्रज्वलित महान् विमान का व्यूहन, (उससे) अपरिमित लोकधातुओं तक**

རྒྱས་པར་འགེངས་པའི་འོད་ཟེར་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ། གནས་ཐ་དད་པ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་མཐའ་ཡས་པ་
ग्येस् पर गेङ पई ह़ोद् ज़ेर छेन पो रप तु छुङ व  नेस् थ दे प शिन तु नम पर छे व था येस् प
**विस्तृत रूप से भरे हुए (उनमें से) महारश्मियाँ निकलती हुई, अन्य स्थल अतिविभक्त अनन्त**

རྣམ་པར་གནས་པ། རྒྱ་ཡོངས་སུ་མ་ཆད་པ། ཁམས་གསུམ་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་འཇིག་རྟེན་
नम पर नेस् प ग्य योङ सु म छे प खम सुम लेस यङ दग पर देस् पई चोद् युल जिग तेन
रूप में स्थित, अति विस्तृत, तीनों धातुओं से सम्यक् रूप से अतीत गोचर वाला लोकातीत

ལས་འདས་པ་དེའི་བླ་མའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ལས་བྱུང་བ། ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་ཅིང་དབང་བསྒྱུར་བའི་རྣམ་པར་
लेस देस् प दे ल मई गे बई त्स व लेस छुङ व शिन तु नम पर दग चिङ वङ ग्युर बई नम पर
उस गुरु के कुशलमूल से उद्भूत, अत्यन्त विशुद्ध मनमोहक आकार में

རིག་པའི་མཚན་ཉིད། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གནས། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དགེ་འདུན་དང་ལྡན་པ། ལྷ་དང་།
रिग पई छेन ञिद् दे शिन शेग पई नेस् छङ छुप सेम पई गेन दुन दङ देन प ल्ह दङ
विद्या लक्षण वाला, तथागत आवास, बोधिसत्त्व संघ से युक्त, देव,

ཀླུ་དང་། གནོད་སྦྱིན་དང་། དྲི་ཟ་དང་། ལྷ་མ་ཡིན་དང་། ནམ་མཁའ་ལྡིང་དང་། མིའམ་ཅི་དང་།
लु दङ नोद् छिन दङ डि ज़ दङ ल्ह म यिन दङ नम खा दिङ दङ मिह्म चि दङ
नाग, यक्ष, पिशाच, असुर, गरुड़, किन्नर,

ལྟོ་འཕྱེ་ཆེན་པོ་དང་། མི་དང་མི་མ་ཡིན་པ་མཐའ་ཡས་པ་རྣམ་པར་རྒྱུ་བ་ཆོས་ཀྱི་རོའི་དགའ་བ་དང་།
तो छे छेन पो दङ मि दङ मि म यिन प था येस् प नम पर ग्यु व छोस् क्यि रोइ गा व दङ
महोरग, अनन्त मनुष्य एवं अमनुष्य विचरण करते हुए धर्मरस की प्रीति तथा

བདེ་བ་ཆེན་པོས་བརྟེན་པ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་ཐོབ་པར་བྱེད་པས་ཉེ་བར་
दे व छेन पोस् तेन प सेम चेन थम चे क्यि दोन थम चे यङ दग पर थोप पर छेद् पेस् ञे वर
महासुख द्वारा आश्रित, समस्त सत्त्वों के सारे अर्थ सम्यक् रूप से प्राप्त होने से उपस्थित,

གནས་པ། ཉོན་མོངས་པའི་གནོད་པའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། བདུད་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ།
नेस् प ञोन मोङ पई नोद् पई डि म थम चे दङ डल व दुद् थम चे योङ सु पङ प
क्लेश रूपी अहितकारी समस्त मलों से रहित, समस्त मारों का

ཐམས་ཅད་ཀྱི་བཀོད་པ་ལས་ལྷག་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བཀོད་པའི་གནས། དྲན་པ་དང་བློ་གྲོས་དང་རྟོགས་པ་
थम चे क्यि कोद् प लेस ल्हग पई दे शिन शेग पई कोद् पई नेस् डेन प दङ लो डोस् दङ तोग
परित्याग किये, सभी के व्यूहण से अधिक तथागत का व्यूहण-स्थल, स्मृति, बुद्धि तथा महाज्ञान के

ཆེན་པོས་ངེས་པར་འབྱུང་བ། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་བཞོན་པ་ཡིན་པ། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོང་
प छेन पोस् ङेस् पर छुङ व शि नेस् दङ ल्हग थोङ गि शोन प यिन प नम पर थर पई गो
द्वारा निष्क्रमित, शमथ एवं विपश्यना का यान स्वरूप, शून्यता-विमोक्ष-द्वार,

པ་ཉིད་དང་། མཚན་མ་མེད་པ་ཉིད་དང་། སྨོན་པ་མེད་པ་ནས་འཇུག་པ། རིན་པོ་ཆེ་པདྨའི་རྒྱལ་
तोङ प ञिद् दङ   छ़ेन म मेद् प ञिद् दङ   मोन प मेद् प नेस् जुग प   रिन पो छे पेमाई ग्यल
अनिमित्त, अप्रणिहित द्वारा प्रवेश करने वाले,रत्नपद्मराज अनन्त गुणों से

པོ་ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་པས་བརྒྱན་པའི་བཀོད་པ་ལ་བརྟེན་པའི་གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་པོར་གྱུར་པའི་དབུས་སུ།
पो योन तेन था येस् पेस् ग्येन पई कोद् प ल तेन पई शल मेद् खङ छेन पोर ग्युर पई उस् सु
अलंकृत व्यूहणाश्रित महान् विमानभूत के मध्य,

པདྨའི་གདན་རིན་པོ་ཆེ་སེང་གེའི་ཁྲིའི་སྟེང་ལ། སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་འཁོར་སྐྱེས་མཆོག་མར་མི་
पेमाई देन रिन पो छे सेङ गे ठी तेन ल   तोन प चोम देन देस् शाक्य थुप प ल खोर क्येस् छोग
पद्मासन रत्नसिंहासन के ऊपर के आसन पर, शास्ता शाक्यमुनि को परिवार स्वरूप पुरुषोत्तम मर(-पा

དྭགས་གསུམ་སོགས་འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་རྣམས་དང་། གྲུབ་ཆེན་ཁྱུང་པོ་རྣལ་འབྱོར་སོགས་གསེར་
मर मि दग सुम सोग फग बोद् क्यि खेस् डुप नम दङ   डुप छेन ख्युङ पो नल छोर सोग सेर
छोस्-की लो-डोस्), मि(-ला रस्-पा), द्वग्स(-पो रिन-पो-छे सोद्-नम्स रिन्-छेन्) तीन आदि आर्य (भारत

ཆོས་ཀྱི་བཀའ་བབས། མེས་རྔོག་ཚོན་སོགས་བཤད་བརྒྱུད་ཀྱི་བཀའ་བབས། རས་ཆུང་པ་སོགས་སྙན་བརྒྱུད་ཀྱི་
छोस् क्यि का बप   मेस् ङोग छ़ोन सोग शे ग्युद् क्यि का बप   रेस छुङ प सोग ञेन ग्युद् क्यि
तथा) भोट के विद्वानों एवं सिद्धों, महासिद्ध ख्युङ-पो नल्-जोर् आदि सुवर्ण-धर्म के अधिपति, मेस्(-तोन्

བཀའ་བབས། ཚེ་བཞི་ཆུང་བརྒྱད་སོགས་སྒྲུབ་བརྒྱུད་ཀྱི་བཀའ་བབས་ཏེ། ཡོངས་འཛིན་བཤེས་གཉེན་དུ་མའི་འཁོར་
का बप   छे शि छुङ ग्ये सोग डुप ग्युद् क्यि का बप ते   योङ ज़िन शेस् ञेन दु मई खोर
छ़ोन्-पो), ङोग्(तोन् छोस्-दोर्), छ़ोन(छुर-तोन वङ्-डे) आदि व्याख्या परम्परा के अधिपति, रस्-छुङ-पा

གྱིས་བསྐོར་བའི་འདུས་པ་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་གདན་འཛོམས་པའི་བཞུགས་གནས་འཕགས་པ་སོ་སོའི་སྨོན་
ग्यीस् कोर बई दुस् प ग्य छ़ोइ छ़ोग थम चे देन ज़ोम पई शुग नेस् फग प सो सोइ मोन
आदि कर्णतन्त्र के अधिपति, चार महान् (काग्युद्-पा तथा) आठ लघु (काग्युद्-पा) आदि साधन परम्परा के

ལམ་ཁྱད་པར་ཅན་དང་མངའ་ཐང་དང་འཚམས་པར་གྲུབ་པ་མཛེས་པ་ཤ་སྟག་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །
लम ख्ये पर चेन दङ ङा थङ दङ छ़म पर डुप प ज़ेस् प श तग छुङ बर ग्युर चिग
अधिपति हैं, अनेक गुरु एवं कल्याणमित्रों के परिवार से परिवृत्त संग्रह-सागर के समस्त गण (संघ) के

མཆོད་པ་བྱིན་བརླབ་ནི། ཕྱི་ནང་ཀུན་ཏུ་ཡང་ཆ་རིགས་དང་འཚམས་པར་ལྷ་དང་མིའི་ཡོ་བྱད་དམ་པ། དྲི་དང་། རོ་དང་། རེག་
छि नङ कुन तु यङ छ रिग दङ छ़म पर ल्ह दङ मी यो छे दम प   डि दङ   रो दङ   रेग प दङ
एकत्रित सभा-स्थल, प्रत्येक आर्य के विशिष्ट प्रणिधान तथा अधिकार के अनुरूप सुन्दर सिद्ध मात्र हों।

པ་དང་ལྡན་པ་ཡིད་དུ་འོང་བ། གྱ་ནོམ་པའི་བཟའ་བ་དང་། བཅའ་བ་དང་། མྱང་བ་དང་། ལྡག་པ་དང་། རྔུབ་པ་དང་།
देन प यिद् दु ह़ोङ व   ग्य नोम पई ज़ा व दङ   चा व दङ   न्यङ व दङ   दग प दङ   ङुप प
पूजा-अधिष्ठान तो–बाह्य-आभ्यन्तर सभी जगह युगनद्ध गोत्र के अनुरूप देव तथा मनुष्य का

གཞིབ་པ་ལ་སོགས་པ་ཞལ་ཟས་བཤམ་པར་བྱ་བ་སྣ་ཚོགས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་དག་དང་། ན་བཟའ་
दङ   शिप प ल सोग प शल ज़ेस् शम पर छ व न छ़ोग प ख्ये पर चेन दग दङ   न ज़ा
परम द्रव्य–गन्ध, रस, मनोज्ञ स्प्रष्टव्य, मनोज्ञ खाद्य, शुष्क खाद्य, चखने, चाटने, पीने, चूसने योग्य आदि

དང་། རྒྱན་དང་། རོལ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཕུལ་དུ་ཕྱིན་པ་སྣ་ཚོགས་པ། ཕུང་པོ་གསུམ་པའི་མདོ་དང་།
दङ   ग्येन दङ   रोल मो ल सोग प फुल दु छिन प न छ़ोग प   फुङ पो सुम पई दो दङ
विशिष्ट नाना प्रकार के सजाये गये नैवेद्य, अतिशय नाना प्रकार के वस्त्र, आभरण तथा वाद्य आदि,

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ལས་བྱུང་བའི་མཆོད་པའི་སྤྲིན་རྒྱ་མཚོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྒྱས་པར་གང་ཞིང་
ज़ङ पो चोद् पई मोन लम लेस छुङ बई छोद् पई टिन ग्य छ़ो थम चे क्यीस् ग्येस् पर गङ शिङ
त्रिस्कन्धसूत्र तथा भद्रचर्याप्रणिधान(-राज) में कहे समस्त पूजामेघसागर के द्वारा विस्तारपूर्वक भरकर

རྒྱན་གླུབས་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག། འཕགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་གདན་འཛོམས་ནས་དེ་བཞིན་དུ་བྱིན་གྱིས་
ग्येन लुप प दङ देन पर ग्युर चिग   फग प थम चे क्यङ देन ज़ोम नेस् दे शिन दु छिन ग्यीस्
आभरणों से ढक जाए। समस्त आर्य भी उपस्थित हो तथा अधिष्ठित कर ग्रहण करके

བརླབས་ཤིང་བཞེས་ཏེ་ལོངས་སྤྱོད་པར་གྱུར་ཅིག།
लप शिङ शेस् ते लोङ चोद् पर ग्युर चिग
(उनका) उपभोग करें।

ཨོཾ་ན་མོ་བྷ་ག་བ་ཏེ། བཛྲ་སཱ་ར་པྲ་མརྡ་ནི། ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ཡ། ཨརྷ་ཏེ་སམྱཀྶཾ་བུདྡྷཱ་ཡ། ཏདྱ་ཐཱ། ཨོཾ་བཛྲེ་བཛྲེ་
ओं नमो भगवते। वज्रसार प्रमर्धनि। तथागताय। अर्हते सम्यक्संबुद्धय। तद्यथा। ओं वज्रे वज्रे
ओं नमो भगवते। वज्रसारप्रमर्धनि। तथागताय अर्हते सम्यक् सम्बुद्धाय। तद्यथा। ओं वज्रे वज्रे

མ་ཧཱ་བཛྲེ། མ་ཧཱ་ཏེ་ཛོ་བཛྲེ། མ་ཧཱ་བིདྱཱ་བཛྲེ། མ་ཧཱ་བོ་དྷི་ཙིཏྟ་བཛྲེ། མ་ཧཱ་བོ་དྷི་མཎྜོ་པ་སཾ་ཀྲ་མ་ཎ་
महावज्रे। महा तेजो वज्रे। महा विद्या वज्रे। महा बोधिचित्त वज्रे। महाबोधि मण्डोप संप्रमण-
महावज्रे। महातेजोवज्रे। महाविद्यावज्रे। महाबोधिचित्तवज्रे। महाबोधि मण्डोप संप्रमण-

བཛྲེ། སརྦ་ཀརྨ་ཨཱ་བ་ར་ཎ་བི་ཤོ་དྷ་ན་བཛྲེ་སྭཱཧཱ།
वज्रे। सर्व कर्म आवरणविशोधन वज्रे स्वाहा।
वज्रे। सर्वकर्मावरणविशोधन-वज्रे स्वाहा।।

སྤྱན་འདྲེན་པ་ནི། དཔལ་མཉམ་མེད་ཤཱཀྱའི་རྒྱལ་པོ་འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས་སློབ་མ་དུལ་བ་མཐའ་ཡས་
पल ञम मेद् शाक्यई ग्यल पो फग पई गेन दुन ग्य छ़ोइ छ़ोग लोप म दुल व था येस् पई खोर
आवाहन तो–श्री अनुपम शाक्यराज (बुद्ध) आर्यसंघसागर के गण (संघ) रूपी दम्य अनन्त शिष्यों के परिवार

པའི་འཁོར་དང་བཅས་པ་བདག་སོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉེས་ལྟུང་གི་དྲི་མ་སྦྱང་ཞིང་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་
दङ चेस् प दग सोग सेम चेन थम चे क्यि ञेस् तुङ गि डि म छ्ङ शिङ सोद् नम क्यि छ़ोग पेल
सहित मेरे सहित समस्त सत्त्वों के दोषापत्ति रूपी मल को शोधित कर पुण्य-सम्भार की वृद्धि के लिए

སྤེལ་བའི་སླད་དུ་སྤྱན་འདྲེན་ཞིང་མཆིས་ན་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བསྐུལ་ཏེ་དེང་དུས་ལ་བབ་ཀྱིས་དགོངས་པར་མཛད་དུ་
बई ले दु चेन डेन शिङ छीस् न थुग जे छेन पोस् कुल ते देङ दुस् ल बप क्यीस् गोङ पर ज़े दु
आवाहन करने के फलस्वरूप महाकरुणा से प्रेरित हो आज (सही) समय आने से (हम लोगों के प्रति) ध्यान

གསོལ། དེ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐུགས་སུ་ཆུད་པས་རྣམ་པར་སངས་རྒྱས་པའི་སངས་རྒྱས་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་གྱིས་
सोल   दे यङ छोस् थम चे थुग सु छुद् पेस् नम पर सङ ग्येस् पई सङ ग्येस् ञि मई ह़ोद् ज़ेर
देने हेतु प्रार्थना करता हूँ। तथापि समस्त धर्मों के अवगम होने से सम्बुद्धत्वाकार को प्राप्त बुद्ध सूर्यरश्मि द्वारा

གསལ་བར་རེག་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་པདྨ་རྒྱས་པ། པདྨའི་འབྱུང་གནས་རྣམས་ལ་སྣང་མཛད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་དྲེ་
ग्यीस् सल वर रेग नेस् शेस् रप क्यि पेमा ग्येस् प   पेमाई छुङ नेस् नम ल नङ ज़े क्यि ठेङ व छे
स्पष्टतया स्पर्श करने से प्रज्ञापद्म के विस्तार को प्राप्त, पद्माकरों में वैरोचन-माला के अभिन्न रूप से व्याप्त

དྲག་མེད་པར་ཁྱབ་པར་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་ཁྱབ་པར་གང་བ། གཙུག་ཏོར་གྱི་ནང་ནས་ཀུན་ཏུ་འབྱུང་
डग मेद् पर ख्यप पर तिङ ङे ज़िन ग्यीस् ख्यप पर गङ व   ज़ुग तोर ग्यि नङ नेस् कुन तु छुङ
समाधि द्वारा व्याप्तापूर्ण, उष्णीष के भीतर से सदा उद्भूत रूपी

བའི་འོད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས་དུས་མཐའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གནས་མ་ལུས་པ་བཀྲ་བར་བྱས་ཤིང་།
बई ह़ोद् क्यि दक्यिल खोर ग्यीस् दुस् थई दक्यिल खोर ग्यि नेस् म लुस् प ट बर छेस् शिङ
प्रभा-मण्डल के द्वारा कालान्त मण्डल के अशेष स्थलों को प्रकाशित करने वाले,

གནོད་སྦྱིན་གྱི་བདག་པོའི་གཙུག་ཏོར་གྱི་ནོར་བུ་ཆེན་པོས་ཞབས་ཀྱི་སེན་མོ་ལ་འདྲེས་པར་བྱས་ནས་
नोद् छिन ग्यि दग पोइ ज़ुग तोर ग्यि नोर बु छेन पोस् शप क्यि सेन मो ल डेस् पर छेस् नेस्
यक्षाधिपति के उष्णीष महारत्न से चरण-नख मिलकर धर्म की देशना करने वाले,

ཆོས་སྟོན་པ། ཞི་བར་གཞོལ་བའི་ལམ་དུ་འདྲེན་པ། འཇིག་རྟེན་འདྲེན་པ། གཉེན་བཤེས་པ།
छोस् तोन प   शि वर शोल बई लम दु डेन प   जिग तेन डेन प   ञेन शेस् प
शान्त प्रविष्ट-मार्ग में आकर्षित करने वाले, लोकनायक, बन्धुमित्र,

གཉེན་གཅིག་པུ་དག་ནི་མེ་མར་གྱི་ཕྲེང་བ་ཚར་དུ་བཀོད་པའམ། གསེར་གྱི་མཆོད་སྡོང་བསྒྲིགས་པ་ལྟར་གསལ་བ།
ञेन चिग पु दग नि मे मर ग्यि ठेङ व छ़र दु कोद् पह़म   सेर ग्यि छोद् दोङ डिग प तर सल व
एकमात्र बन्धु तो अंगार-माला के सुसज्जित करने अथवा पूजा दीप के सजाने के जैसा प्रकाशित,

བདག་གི་སེམས་ཤེལ་གྱི་རང་བཞིན་ལ་ངོ་མཚར་བར་ཤར་བ་ཇི་ལྟ་བ་དེ་ལྟར་རིན་པོ་ཆེའི་ཕོ་བྲང་ཟད་མི་ཤེས་པའི་
दग गि सेम शेल ग्यि रङ शिन ल ङो छ़र बर शर व जि त व दे तर रिन पो छे फो डङ ज़े मि
स्फटिक स्वभाव में यथा मेरा चित्त अचम्भित होता है, वैसे ही अक्षय निधि से युक्त रत्न-प्रासाद-स्थल में

གཏེར་དང་ལྡན་པའི་གནས་སུ་གཤེགས་ཤིང་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར་མཛད་དུ་གསོལ།
शेस् पई तेर दङ देन पई नेस् सु शेग शिङ छिन ग्यीस् लप पर ज़े दु सोल
आगमन कर अधिष्ठित करने हेतु प्रार्थना करता हूँ।

མ་ལུས་སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་མགོན་གྱུར་ཅིང་། །
म लुस् सेम चेन कुन ग्यि गोन ग्युर चिङ
अशेष सर्वसत्त्वों के नाथ स्वरूप।

བདུད་སྡེ་དཔུང་བཅས་མི་བཟད་འཇོམས་མཛད་ལྷ། །
दुद् दे पुङ चेस् मि ज़े जोम ज़े ल्ह
अक्षय सेना सहित मार्ग-वर्ग (को) नष्ट करने वाले देव।

དངོས་རྣམས་མ་ལུས་ཇི་བཞིན་མཁྱེན་གྱུར་པའི། །
ङोस् नम म लुस् जि शिन ख्येन ग्युर पई
अशेष पदार्थों को यथावत् जानने वाले।

བཅོམ་ལྡན་འཁོར་བཅས་གནས་འདིར་གཤེགས་སུ་གསོལ།།
चोम देन खोर चेस् नेस् दिर शेग सु सोल
प्रार्थना है, भगवान् परिवार सहित इस स्थल पर पधारें।।

བཅོམ་ལྡན་བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་དུ་མ་རུ། །
चोम देन कल प डङ मेद् दु म रु
भगवान् (आपने) असंख्य बहुत से कल्पों में।

འགྲོ་ལ་བརྩེ་ཕྱིར་ཐུགས་རྗེ་རྣམ་སྦྱངས་ཤིང་། །
डो ल ज़े छिर थुग जे नम छङ शिङ
प्राणियों में दया से करुणा विशोधन किया।

སྨོན་ལམ་རྒྱ་ཆེན་དགོངས་པ་ཡོངས་རྫོགས་པའི། །
मोन लम ग्य छेन गोङ प योङ ज़ोग पई
विस्तृत प्रणिधान-अभिप्राय परिपूर्ण करने वाले।

ཁྱེད་བཞེད་འགྲོ་དོན་མཛད་དུས་འདི་ལགས་ན། །
ख्येद् शेद् डो दोन ज़े दुस् दि लग न
आपके मतानुसार सत्त्वार्थ का समय यही होने से।।

དེ་ཕྱིར་ཆོས་དབྱིངས་པོ་བྲང་ལྷུན་གྲུབ་ནས། །
दे छिर छोस् यिङ फो डङ ल्हुन डुप नेस्
अतः अनाभोग धर्मधातु प्रासाद से।

རྫུ་འཕྲུལ་བྱིན་རླབས་སྣ་ཚོགས་སྟོན་མཛད་ཅིང་། །
ज़ु ठुल छिन लप न छ़ोग तोन ज़े चिङ
नाना ऋद्धि-अधिष्ठान प्रदर्शित करके।

མཐའ་ཡས་སེམས་ཅན་ཚོགས་རྣམས་བསྒྲལ་བའི་ཕྱིར།།
था येस् सेम चेन छ़ोग नम डल बई छिर
अनन्त सत्त्व समूहों को तारने हेतु।

ཡོངས་དག་འཁོར་དང་བཅས་ཏེ་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
योङ दग खोर दङ चेस् ते शेग सु सोल
प्रार्थना है, परिशुद्ध परिवार सहित पधारें।।

འགྲོ་མགོན་ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན་ལྡན་རྣམས། །
डो गोन थुग जे चेन देन नम
जगन्नाथ करुणा रूपी चक्षु वाले।

ཆོས་སྐུ་སྤྲོས་དང་བྲལ་བ་ལས། །
छोस् कु टोस् दङ डल व लेस
धर्मकाय निष्प्रपञ्च (क्षेत्र) से।

གཟུགས་སྐུའི་རྣམ་པར་བཞེངས་ནས་ཀྱང་། །
ज़ुग कुइ नम पर शेङ नेस् क्यङ
रूपकाय रूपी आकार में उठकर भी।

འགྲོ་བའི་དོན་ལ་གཤེགས་སུ་གསོལ། །
डो बई दोन ल शेग सु सोल
प्रार्थना है, जगत्-हित हेतु पधारें।।

བྱོན་ལེགས་ཞུ་བ་ནི།
स्वागत वाचन तो–

བཅོམ་ལྡན་འདིར་ནི་བྱོན་པ་ལེགས། །
चोम देन दिर नि छोन प लेग
भगवान्! यहाँ आपका स्वागत है।

བདག་ཅག་བསོད་ནམས་སྐལ་བར་ལྡན། །
दग चग सोद् नम कल बर देन
हम पुण्य के भागी हुए।

བདག་གི་མཆོད་ཡོན་བཞེས་སླད་དུ། །
दग गि छोद् योन शेस् ले दु
मेरे पूजा-अर्घ्य ग्रहण के लिए।

འདི་ཉིད་དུ་ནི་བཞུགས་སུ་གསོལ། །
दि ञिद् दु नि शुग सु सोल
प्रार्थना है, यहीं पर विराजमान हों।।

སྟོང་གསུམ་ཀུན་དང་མཉམ་པ་ཡི། །
तोङ सुम कुन दङ ञम प यि
समस्त त्रिसाहस्र के बराबर।

པདྨ་འདབ་བརྒྱ་གེ་སར་བཅས། །
पेमा दप ग्य गे सर चेस्
केसर सहित शतदल पद्म।

བདེ་ཞིང་ཡངས་པ་འབུལ་ལགས་ན། །
दे शिङ यङ प बुल लग न
सुख-विशालता भेंट करता हूँ।

ཅི་བདེ་བར་ནི་བཞུགས་སུ་གསོལ། །
चि दे वर नि शुग सु सोल
प्रार्थना है, यथासुखी विराजमान हों।।

མཆོད་ཡོན་དུང་གི་ཆུ་བཟེད་ཞལ་དུ་སྦྱིན་བཞིན་དུ།
अर्घ्य रूपी शंख-जल को मुख में देते हुए–

ཆུ་བོ་གངྒཱའི་རྒྱུན་བཞིན་དུ། །
छु बो गङ्गाई ग्युन शिन दु
गङ्गा नदी के धारा समान।

ཨརྒྷཾ་རྒྱུན་ཡང་མི་འཆད་དེ། །
अर्घं ग्युन यङ मि छे दे
अर्घ्य-धारा भी टूटती नहीं।

བླ་མེད་མཆོད་པ་འདི་འབུལ་ན། །
ल मेद् छोद् प दि बुल न
करता हूँ, अनुत्तर पूजा भेंट।

ཐུགས་རྗེས་དགོངས་ཏེ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
थुग जेस् गोङ ते शेस् सु सोल
प्रार्थना है, करुणा-सन्धि से ग्रहण करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དག་སྟེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུ་ཡོངས་སུ་
दग दङ था येस् पई सेम चेन थम चे क्यि नम पर तोग प दग ते दे शिन शेग पई कु योङ सु दग
मेरे सहित अनन्त सर्वसत्त्वों के विकल्प शुद्ध होकर परिशुद्ध तथागत काय की प्राप्ति हो।

དག་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །ཞབས་བསིལ་འདི་དང་ཞབས་ལ་མཆོད་ཡོན་འདི་དག་ཞབས་དག་ལ་དབུལ་བར་བགྱིའོ། །
प थोप पर ग्युर चिग शप सिल दि दङ शप ल छोद् योन दि दग शप दग ल उल बर ग्यिह़ो
यह पादोदक तथा ये पाद-अर्घ्य पादों में अर्पित करता हूँ।

དུརྦ་མ་ཉམས་པ་དང་དྲི་དང་མེ་ཏོག་དང་བཅས་པ་རུང་བའི་ཆུ་ཡིས་ཞབས་དག་བཀྲུ་བར་བགྱིའོ། །
दुब म ञम प दङ डि दङ मे तोग दङ चेस् प रुङ बई छु यीस् शप दग टु बर ग्यिह़ो
अदूषित दूर्वा, गन्ध तथा पुष्प सहित योग्य जल से चरणों का प्रक्षालन करता हूँ।

ཆུ་བོ་གངྒཱའི་རྒྱུན་བཞིན་དུ། །
छु बो गङ्गाई ग्युन शिन दु
गङ्गा नदी की धारा (के) समान।

ཞབས་བསིལ་རྒྱུན་ཡང་མི་འཆད་དེ། །
शप सिल ग्युन यङ मि छे दे
पादोदक धारा भी विच्छिन्न नहीं होती।

བླ་མེད་མཆོད་པ་འདི་འབུལ་ན། །
ल मेद् छोद् प दि बुल न
करता हूँ, अनुत्तर पूजा भेंट।

ཐུགས་རྗེས་དགོངས་ཏེ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
थुग जेस् गोङ ते शेस् सु सोल
प्रार्थना है, करुणा-सन्धि से ग्रहण करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱིང་བ་དང་རྒོད་པའི་དྲི་མ་དག་སྟེ་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་ཡང་དག་པ་
दग दङ था येस् पई सेम चेन थम चे क्यि छिङ व दङ गोद् पई डि म दग ते ज़ु ठुल ग्यि कङ प
मेरे सहित अनन्त सर्वसत्त्वों के निमग्न और औद्धत्य रूपी मल शुद्ध होकर सम्यक् ऋद्धिपाद

ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
यङ दग प थोप पर ग्युर चिग
की प्राप्ति हो।

དེ་ནས་ཁྲུས་གསོལ་བ་ལ།
तत्पश्चात् स्नान हेतु–

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས། རིག་པ་དང་ཞབས་སུ་
चोम देन देस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् रिग प दङ शप सु देन
**भगवान् तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध, विद्याचरणसम्पन्न,**

ལྡན་པ། བདེ་བར་གཤེགས་པ། འཇིག་རྟེན་མཁྱེན་པ། སྐྱེས་བུ་འདུལ་བའི་ཁ་ལོ་བསྒྱུར་བ། བླ་ན་མེད་པ། ལྷ་དང་
प दे वर शेग प जिग तेन ख्येन प क्येस् बु दुल बई ख लो ग्युर व ल न मेद् प ल्ह दङ
**सुगत, लोकविद्, पुरुषदम्यसारथि, अनुत्तर, उस देव-मनुष्यों के शास्ता को**

མི་རྣམས་ཀྱི་སྟོན་པ་དེ་ལ་ཡོ་བྱད་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པའི་ཁྲུས་འདི་གསོལ་བར་བགྱིའོ། །
मि नम क्यि तोन प दे ल यो छे थम चे दङ देन पई ठुस् दि सोल बर ग्यिह़ो
**समस्त पदार्थों से युक्त यह स्नान कराता हूँ।**

ཁྲུས་ཀྱི་ཁང་པ་ཤིན་ཏུ་དྲི་ཞིམ་པ། །
ठुस् क्यि खङ प शिन तु डि शिम प
**अत्यन्त सुगन्धित स्नान-गृह में।**

རིན་ཆེན་འབར་བའི་ཀ་བ་ཡིད་འོང་ལྡན། །
रिन छेन बर बई क व यिद् ह़ोङ देन
**स्तम्भ रत्नप्रज्वलित एवं मनोहर हैं।**

དེ་བཞིན་གཤེགས་དང་དེ་ཡི་སྲས་རྣམས་ལ། །
दे शिन शेग दङ दे यि सेस् नम ल
**तथागतों तथा उनके पुत्रों को।**

ཡིད་འོང་ལེགས་པར་བཀང་བ་གླུ་དང་ནི། །
यिद् ह़ोङ लेग पर कङ व लु दङ नि
**(जो) सुगन्धित जल से पूर्ण हैं (उन्हें) गीत।**

འདི་ནི་ཁྲུས་མཆོག་དཔལ་དང་ལྡན། །
दि नि ठुस् छोग पल दङ देन
**यह तो श्रीयुक्त परम स्नान है।**

བྱིན་བརླབས་ཡེ་ཤེས་ཆུ་ཡིས་ནི། །
छिन लप ये शेस् छु यीस् नि
**अधिष्ठान-ज्ञान (रूपी) जल के द्वारा।**

ཤེལ་གྱི་ས་གཞི་གསལ་ཞིང་འཚེར་བ་བཀྲ། །
शेल ग्यि स शि सल शिङ छेर व तर
**(जिनका) फर्श स्वच्छ एवं दीप्तिमान है।**

མུ་ཏིག་འོད་ཆགས་བླ་རེ་བྲེས་པ་དེར། །
मु तिग ह़ोद् छग ल रे डेस् प देर
**वितान मोतियों से प्रभासित हैं, उसमें।।**

རིན་ཆེན་བུམ་པ་མང་པོའི་སྤོས་ཀྱི་ཆུ། །
रिन छेन बुम प मङ पोइ पोस् क्यि छु
**अनेक मनोज्ञ रत्न-कलश।**

རོལ་མོར་བཅས་པ་དུ་མས་སྐུ་ཁྲུས་གསོལ། །
रोल मोर चेस् प दु मेस कु ठुस् सोल
**(तथा) नाना वाद्यों सहित स्नान कराता हूँ।।**

ཐུགས་རྗེའི་ཆུ་ནི་བླ་ན་མེད། །
थुग जे छु नि ल न मेद्
**अनुत्तर है, करुणा रूपी जल।**

ཅི་འདོད་དངོས་གྲུབ་སྩལ་དུ་གསོལ། །
चि दोद् ङोस् डुप ज़ल दु सोल
**प्रार्थना है, यथेच्छ सिद्धि प्रदान करें।।**

རི་བོ་ལྟར་ནི་མཛེས་པ་ཡི། །
रि बो तर नि ज़ेस् प यि
मेरु समान सुन्दरता (वाले)।

ཡོན་ཏན་དམ་པའི་རྒྱན་ལྡན་པ། །
योन तेन दम पई ग्येन देन प
परम गुण रूपी अलंकार से युक्त।

མཆོད་གནས་རིན་ཆེན་དེ་དག་ལ། །
छोद् नेस् रिन छेन दे दग ल
पूजनीय उन रत्नों को।

བདག་གིས་ཁྲུས་འདི་གསོལ་བར་བགྱི། །
दग गीस् ठुस् दि सोल बर ग्यि
मैं यह स्नान कराता हूँ।।

སྙིང་རྗེ་ཡིས་ནི་ངེས་གང་བས། །
ञिङ जे यीस् नि ङेस् गङ वे
नियत करुणापूर्ण होने से।

རྟག་ཏུ་ཕན་དང་བདེ་མཛད་པའི། །
तग तु फेन दङ दे ज़े पई
सदा लाभ एवं सुख देने वाले।

མཆོག་ཏུ་དུལ་བ་དེ་དག་ལ། །
छोग तु दुल व दे दग ल
परम दम्य उन (लोगों) को।

བདག་གིས་ཁྲུས་འདི་གསོལ་བར་བགྱི། །
दग गीस् ठुस् दि सोल बर ग्यि
मैं यह स्नान कराता हूँ।।

ཞེས་པས་ཁྲུས་གསོལ་ནས།
इनके द्वारा स्नान कराकर–

དེ་དག་སྐུ་ལ་མཚུངས་པ་མེད་པའི་གོས། །
दे दग कु ल छुङ प मेद् पई गोस्
उनके काय को अनुपम वस्त्र।

གཙང་ལ་དྲི་རབ་བསྒོས་པས་སྐུ་ཕྱིའོ། །
त्सङ ल डि रप गोस् पेस् कु छिहो
स्वच्छ सुगन्धित द्वारा (मैं) पोंछता हूँ।।

ཞེས་སྐུ་ཕྱི། དེ་ནས་དེ་ལ་ཁ་དོག་ལེགས་བསྒྱུར་བའི། །
दे नेस् दे ल ख दोग लेग ग्युर बई
इस प्रकार काय को पोंछें।

ན་བཟའ་ཤིན་ཏུ་དྲི་ཞིམ་དམ་པ་འབུལ། །
न ज़ा शिन तु डि शिम दम प बुल
इसके बाद उन्हें वर्ण परिवर्तित (किये)।

གོས་བཟང་སྲབ་ལ་འཇམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་། །
गोस् ज़ङ सप ल जम प न छोग दङ
अत्यन्त सुगन्धित परम वस्त्र भेंट करता हूँ।

རྒྱན་མཆོག་བརྒྱ་ཕྲག་དེ་དང་དེ་དག་གིས། །
ग्येन छोग ग्य ठग दे दङ दे दग गीस्
पतला कोमल नाना सुवस्त्र। उन-उन परम सैंकड़ों अलंकारों से।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་དང་དེ་སྲས་དང་། །
दे शिन शेग प नम दङ दे सेस् दङ
तथागत लोग और उनके पुत्र तथा।

སྐྱེས་མཆོག་དམ་པ་རྣམས་ལའང་བརྒྱན་པར་བགྱི། །
क्येस् छोग दम प नम लहङ ग्येन पर ग्यि
पुरुषोत्तमों को भी अलंकृत करता हूँ।।

ཞེས་གོས་རྒྱན་ཕུལ།
ऐसे वस्त्र और अलंकार भेंट करने चाहिए।

སྟོང་གསུམ་ཀུན་ཏུ་དྲི་ངད་ལྡང་བ་ཡི། །
तोङ सुम कुन तु डि ङे दङ व यि
त्रिसाहस्र (लोकधातुओं) में सुगन्ध के उठते।

གསེར་སྦྱངས་བཙོ་མ་ཕྱི་དོར་བྱས་པ་ལྟར། །
सेर छङ त्सो म छि दोर छेस् प तर
तप्त शोधित सुवर्ण के रगड़ने के जैसा।

དྲི་མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་ཐུབ་དབང་ཀུན་གྱི་སྐུ། །
डि छोग नम क्यीस् थुप वङ कुन ग्यि कु
परम गन्धों से सभी मुनीन्द्र-काय।

འོད་ཆགས་འབར་བ་དེ་དག་བྱུག་པར་བགྱི། །
ह़ोद् छग बर व दे दग छुग पर ग्यि
उन प्रभा-प्रस्फुटितों का लेपन करता हूँ।।

ཞེས་བྱུག་པ་འབུལ་ལོ། །ཚོགས་བསགས་བགྱི་བ་ལ། ཕྱག་འཚལ་བ་ནི།
ऐसा लेपन भेंट करना चाहिए। सम्भार संचय करने के लिए प्रणाम करना–

གང་གིས་འཆིང་རྣམས་ཐམས་ཅད་རབ་བཅད་ཅིང་། །
गङ गीस् छिङ नम थम चे रप चे चिङ
जिन्होंने समस्त बन्धनों का प्रच्छेदन कर।

སྡེ་དང་བཅས་པའི་བདུད་ནི་བཏུལ་ནས་སུ། །
दे दङ चेस् पई दुद् नि तुल नेस् सु
वर्ग सहित मारों को दमित करके (किया)।

མི་མཆོག་འདུལ་བ་ཁ་ལོ་བསྒྱུར་མཛད་ཅིང་། །
मि छोग दुल व ख लो ग्युर ज़े चिङ
परम नर दम्य सारथि बनें हैं।

དབང་པོ་ཞི་ཞིང་ཉེར་ཞི་ཞི་ལ་མཁས། །
वङ पो शि शिङ ञेर शि शि ल खेस्
इन्द्रिय शान्त कर उपशान्त शान्ति के ज्ञाता।

ཡོན་ཏན་རིན་ཆེན་མང་པོའི་ཚོགས་མངའ་ཞིང་། །
योन तेन रिन छेन मङ पोइ छ़ोग ङा शिङ
अनेक गुण-रत्न राशियों से युक्त।

མུ་སྟེགས་ཚོགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བཅོམ་བྱས་ཏེ། །
मु तेग छ़ोग नम थम चे चोम छेस् ते
तैर्थिक गण सभी को नष्ट किया (है)।

བྱང་ཆུབ་མཆོག་བརྙེས་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
छङ छुप छोग ञेस् दे ल छग छ़ल लो
उस परम बोधि प्राप्त-कर्त्ता को प्रणाम करता हूँ।।

ཀུན་སྦྱོར་འཆིང་བ་གཅོད་མཛད་དེ་བཞིན་གཤེགས། །
कुन छोर छिङ व चोद् ज़े दे शिन शेग
संयोजन बन्धन को काटने वाले तथागत।

མཉན་ཡོད་བཞུགས་པ་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ञेन योद् शुग प दे ल छग छ़ल लो
उस श्रावस्ति में वास करने वाले को प्रणाम करता हूँ।।

མཚན་རབ་ཡེ་ཤེས་ཡོངས་སུ་དག་པའི་སྐུ། །
छ़ेन रप ये शेस् योङ सु दग पई कु
परम नाम ज्ञान परिशुद्ध काय।

གསེར་གྱི་མདོག་ཅན་ལྷ་དང་མིས་མཆོད་པ། །
सेर ग्यि दोग चेन ल्ह दङ मीस् छोद् प
सुवर्ण वर्ण वाले देव-मनुष्यों द्वारा पूजित।

བཅོམ་ལྡན་ལྷ་ཡི་ལྷ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चोम देन ल्ह यि ल्ह ल छग छ़ल लो
भगवान् देवों के देव को प्रणाम करता हूँ।।

གླིང་རས་བླ་མ་མཆོད་པ་ལས། གང་གི་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་ནི། །
गङ गि खोर बई ञेस् प नि
लिङ्-रस् गुरु-पूजा में कहा है– संसार के दोष (सभी), जिनके।

དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་འཇོམས་མཛད་ཅིང་། །
डेन प ज़म ग्यीस् जोम ज़े चिङ
स्मृति मात्र से नष्ट हो जाते।

བླ་མེད་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་མཛད་པའི། །
ल मेद् छङ छुप थोप ज़े पई
अनुत्तर बोधि को प्राप्त कराने वाले।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་མ་རིག་མུན་པའི་ཚོགས། །
गङ गि म रिग मुन पई छ़ोग
अज्ञानान्धकार राशि, जिनके।

སྨག་ཏུ་གྱུར་པ་སེལ་མཛད་པ། །
मग तु ग्युर प सेल ज़े प
जो घने हैं, निवारण करने वाले।

ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྟ་བུ་ཡི། །
ञि मई दक्यिल खोर त बु यि
हैं, सूर्य-मण्डल के समान।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
(उन) गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་གྱི། །
गङ गि खोर बई दुग ङल ग्यि
सांसारिक दुःखों के, जिनके।

ཚད་གདུང་མ་ལུས་སེལ་མཛད་པ། །
छ़े दुङ म लुस् सेल ज़े प
अशेष तप्त पीड़ाओं को हटाने वाले।

ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྟ་བུ་ཡི། །
द बई दक्यिल खोर त बु यि
हैं चन्द्र-मण्डल के समान।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི། །
गङ गि दोद् छग ल सोग पई
राग इत्यादि के, जिनके।

ཉོན་མོངས་ནད་རྣམས་སེལ་མཛད་པ། །
ञोन मोङ ने नम सेल ज़े प
क्लेश रोगों को हटाने वाले।

སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་ལྟ་བུ་ཡི། །
मेन पई ग्यल पो त बु यि
हैं भैषज्यराज के समान।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་ཟག་མེད་བདེ་ཆེན་གྱི། །
गङ गि ज़ग मेद् दे छेन ग्यि
अनास्रव सुख के, जिनके।

རྟ་མཆོག་རིན་ཆེན་ལྟ་བུ་ཡི། །
त छोग रिन छेन त बु यि
हैं, परम अश्व-रत्न-सा।

གྲོང་ཁྱེར་མཆོག་ཏུ་སྐྱེལ་མཛད་པ། །
डोङ ख्येर छोग तु क्येल ज़े प
परम नगर में पहुँचाने वाले।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་སྐྱེ་རྒ་ན་འཆི་ཡི། །
गङ गि क्ये ग न छि यि
जाति, जरा, रोग, मरण के, जिनके।

མཉན་པའི་རྒྱལ་པོ་ལྟ་བུ་ཡི། །
ञेन पई ग्यल पो त बु यि
हैं, नाविकराज के समान।

ཆུ་བོ་ཆེ་ལས་སྒྲོལ་མཛད་པ། །
छु बो छे लेस डोल ज़े प
महा-ओघ से तारने वाले।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་འགྲོ་བའི་དགོས་འདོད་རྣམས། །
गङ गि डो बई गोस् दोद् नम
जगत् के आवश्यकताओं को, जिनके।

ནོར་བུ་རིན་ཆེན་ལྟ་བུ་ཡི། །
नोर बु रिन छेन त बु यि
हैं, मणिरत्न के समान।

ཡིད་བཞིན་རྫོགས་པར་འབྱུང་འགྱུར་བའི། །
यिद् शिन ज़ोग पर छुङ ग्युर बई
इच्छावत् पूर्ण करने वाले।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀུན། །
गङ गि छोस् नम थम चे कुन
समस्त सभी धर्म, जिनके।

ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའི་ཐུགས་མངའ་བའི། །
नम खा त बुइ थुग ङा बई
नभ समान चित्त को धारण करने वाले।

འདུ་འབྲལ་མེད་པ་ཁྱབ་གྱུར་པ། །
दु डल मेद् प ख्यप ग्युर प
संचय-विचय रहित व्याप्त होते हैं।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

གང་གི་གསུང་གི་འོད་ཟེར་གྱིས། །
गङ गि सुङ गि ह्रोद् ज़ेर ग्यीस्
जिनके वाक्-रश्मियों के द्वारा।

བདག་སོགས་རྨོངས་པ་མ་ལུས་པ། །
दग सोग मोङ प म लुस् प
मैं इत्यादि अशेष मूढ़ता।

སྙིང་གི་པདྨོ་ཁ་བྱེས་པའི། །
ञिङ गि पेमाो ख छेस् पई
हृदय पद्ममुख को उद्घाटित करने वाले।

བླ་མའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ल मई शप ल छग छ़ल लो
गुरु-चरणों को प्रणाम करता हूँ।।

མཆོད་པ་འབུལ་བ་ནི། དཔང་སྐོང་ཕྱག་རྒྱ་པའི་མདོ་ལས།
पूजा भेंट तो, पङ्-कोङ छग्-ग्या-पा सूत्र में कहा है–

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བསོད་ནམས་རབ་འབྱམས་ལས་བྱུང་བ་མི་མཉམ་པ་དང་མཉམ་པའི་མཆོད་པ་སྣ་ཚོགས།
छङ छुप सेम पई सोद् नम रप छम लेस छुङ व मि ञम प दङ ञम पई छोद् प न छ़ोग
बोधिसत्त्व के अपरिमित पुण्य से उद्भूत सम-विषम नाना प्रकार की पूजा–श्रेष्ठ,

མཆོག །གཙོ་བོ། དམ་པ། ཁྱད་པར་ཅན། བཟང་པོ། ཀུ་ནོམ་པ། བླ་ན་མེད་པ། མི་མཉམ་པ་དང་
छोग ञो वो दम प ख्ये पर चेन ज़ङ पो ग्य नोम प ल न मेद् प मि ञम प दङ ञम
प्रधान, परम, विशिष्ट, भद्र, मनोज्ञ, अनुत्तर तथा विषम एवं सम के

མཉམ་པས་ཕྱོགས་བཅུའི་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཕྱུར་བུར་བཀང་སྟེ། ཆོས་ཀྱི་མཆོད་པ་དང་བཅས་པས་མ་
पेस् छोग चुइ नोद् क्यि जिग तेन थम चे छुर बुर कङ ते छोस् क्यि छोद् प दङ चेस् पेस् म लुस्
द्वारा दश दिशाओं के समस्त भाजन लोकों को पूरी तरह भर कर धर्म की पूजा सहित अशेष, शेष विना, शेष

ལུས་མི་ལུས་ལུས་པ་མེད་པའི་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱི་མའི་མུ་མཐར་ཐུག་ཏུ་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་མཆོད་ཅིང་འདོན་
मि लुस् लुस् प मेद् पई कोन छोग सुम ल छि मई मु थर तग तु ग्युन मि छे पर छोद् चिङ दोन
से रहित, त्रिरत्न का अनन्त जन्मान्तरों में सदा निरन्तर पूजा कर पाठ करना चाहिए। भेंट कर प्रार्थना करनी

ནོ། །དབུལ་ཞིང་གསོལ་ལོ། །བཀུར་སྟིར་བགྱིའོ། །བླ་མར་བགྱིའོ། །རི་མོར་བགྱིའོ། །མཉེས་པར་བགྱིའོ། །
नो उल शिङ सोल लो कुर तिर ग्यिहो ल मर ग्यिहो रि मोर ग्यिहो ञेस् पर ग्यिहो
चाहिए, सत्कार करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, परिचर्य्या करनी चाहिए, प्रसन्न करना चाहिए।

ཞེས་པས་མཚམས་སྦྱར་ཏེ། ཐོག་མར་ཉེར་སྤྱོད་ལྔ་འབུལ་བ་ནི།
इसके साथ योजन कर प्रथम पञ्चोपचार का भेंट तो–

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོའི་མཆོད་རྫས་ལས་གྲུབ་པའི། །
ग्यल व ग्य छ़ोइ छोद् ज़ेस् लेस डुप पई
जिन-सागर रूपी पूजा-द्रव्यों से सिद्ध।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོའི་མེ་ཏོག་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས། །
शिङ खम ग्य छ़ोइ मे तोग ग्य छ़ोइ छ़ोग
क्षेत्रधातुसागर रूपी पुष्पसागर राशि।

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་རྒྱལ་བ་འཁོར་བཅས་ལ། །
योन तेन ग्य छ़ोइ ग्यल व खोर चेस् ल
गुणसागर रूपी जिन (बुद्ध) सहित को।

དད་པ་རྒྱ་མཚོས་འབུལ་ལོ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
दे प ग्य छ़ोस् बुल लो शेस् सु सोल  दग दङ
अर्पित श्रद्धासागर द्वारा, प्रार्थना है, स्वीकार करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་བདུན་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
था येस् पई सेम चेन थम चे छङ छुप क्यि येन लग दुन दङ देन पर ग्युर चिग
मेरे सहित समस्त अनन्त सत्त्व, सात बोध्यंग से युक्त हों।

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོའི་མཆོད་རྫས་ལས་གྲུབ་པའི། །
ग्यल व ग्य छ़ोइ छोद् ज़ेस् लेस डुप पई
जिन-सागर रूपी पूजा-द्रव्यों से सिद्ध।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོའི་བདུག་སྤོས་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས། །
शिङ खम ग्य छ़ोइ दुग पोस् ग्य छ़ोइ छ़ोग
क्षेत्रधातुसागर रूपी धूपसागर राशि।

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་རྒྱལ་བ་འཁོར་བཅས་ལ། །
योन तेन ग्य छ़ोइ ग्यल व खोर चेस् ल
गुणसागर रूपी जिन (बुद्ध) सहित को।

དད་པ་རྒྱ་མཚོས་འབུལ་ལོ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
दे प ग्य छ़ोस् बुल लो शेस् सु सोल
अर्पित श्रद्धासागर द्वारा, प्रार्थना है, स्वीकार करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་པར་དག་སྟེ་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་ལྡན་
दग दङ था येस् पई सेम चेन थम चे छ़ुल ठिम नम पर दग ते यङ दग पई छ़ुल ठिम दङ देन
मेरे सहित समस्त अनन्त सत्त्व, शील विशुद्ध होकर सम्यक् शील

པར་གྱུར་ཅིག །
पर ग्युर चिग
से युक्त हों।

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོའི་མཆོད་རྫས་ལས་གྲུབ་པའི། །
ग्यल व ग्य छ़ोइ छोद् ज़ेस् लेस डुप पई
जिन-सागर रूपी पूजा-द्रव्यों से सिद्ध।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོའི་སྣང་གསལ་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས། །
शिङ खम ग्य छ़ोइ नङ सल ग्य छ़ोइ छ़ोग
क्षेत्रधातुसागर रूपी दीपसागर राशि।

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་རྒྱལ་བ་འཁོར་བཅས་ལ། །
योन तेन ग्य छ़ोइ ग्यल व खोर चेस् ल
गुणसागर रूपी जिन (बुद्ध) सहित को।

དད་པ་རྒྱ་མཚོས་འབུལ་ལོ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
दे प ग्य छ़ोस् बुल लो शेस् सु सोल
अर्पित श्रद्धासागर द्वारा, प्रार्थना है, स्वीकार करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་མ་རིག་པའི་མུན་པ་བསལ་ནས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་
दग दङ था येस् पई सेम चेन थम चे म रिग पई मुन प सल नेस् थम चे ख्येन पई ये शेस् क्यि
मेरे सहित समस्त अनन्त सत्त्व अज्ञानान्धकार का निवारण कर सर्वज्ञता रूपी

སྒྲོན་མ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
डोन म दङ देन पर ग्युर चिग
ज्ञान-दीप से युक्त हों।

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོའི་མཆོད་རྫས་ལས་གྲུབ་པའི། །
ग्यल व ग्य छ़ोइ छोद् ज़ेस् लेस डुप पई
जिन-सागर रूपी पूजा-द्रव्यों से सिद्ध।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོའི་དྲི་ཆབ་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས། །
शिङ खम ग्य छ़ोइ डि छप ग्य छ़ोइ छ़ोग
क्षेत्रधातुसागर रूपी गन्धसागर राशि।

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་རྒྱལ་བ་འཁོར་བཅས་ལ། །
योन तेन ग्य छ़ोइ ग्यल व खोर चेस् ल
गुणसागर रूपी जिन (बुद्ध) सहित को।

དད་པ་རྒྱ་མཚོས་འབུལ་ལོ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
दे प ग्य छ़ोस् बुल लो शेस् सु सोल
अर्पित श्रद्धासागर द्वारा, प्रार्थना है, स्वीकार करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཆུས་རྣམ་པར་གཡེངས་པའི་དྲི་མ་དག་སྟེ་བདེ་ཞིང་
दग दङ था येस् पई सेम चेन थम चे तिङ ङे ज़िन ग्यि छ़ुस् नम पर येङ पई डि म दग ते दे शिङ
मेरे सहित समस्त अनन्त सत्त्व समाधि-जल के द्वारा विक्षेपन रूपी मल को स्वच्छ कर

ཚིམ་པར་གྱུར་ཅིག །
छ़िम पर ग्युर चिग
सुखी और सन्तुष्ट हों।

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོའི་མཆོད་རྫས་ལས་གྲུབ་པའི། །
ग्यल व ग्य छ़ोइ छोद् ज़ेस् लेस डुप पई
जिन-सागर रूपी पूजा-द्रव्यों से सिद्ध।

ཞིང་ཁམས་རྒྱ་མཚོའི་ཞལ་ཟས་རྒྱ་མཚོའི་ཚོགས། །
शिङ खम ग्य छ़ोइ शल ज़ेस् ग्य छ़ोइ छ़ोग
क्षेत्रधातुसागर रूपी नैवेद्यसागर राशि।

ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་རྒྱལ་བ་འཁོར་བཅས་ལ། །
योन तेन ग्य छ़ोइ ग्यल व खोर चेस् ल
गुणसागर रूपी जिन (बुद्ध) सहित को।

དད་པ་རྒྱ་མཚོས་འབུལ་ལོ་བཞེས་སུ་གསོལ། །
दे प ग्य छ़ोस् बुल लो शेस् सु सोल
अर्पित श्रद्धासागर द्वारा, प्रार्थना है, स्वीकार करें।।

བདག་དང་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བཀྲེས་པའི་སྡུག་བསྔལ་བསལ་ནས་ཡིད་བཞིན་གྱི་ཟས་སྐོམ་དང་
दग दङ था येस् पई सेम चेन थम चे टेस् पई दुग ङल सल नेस् यिद् शिन ग्यि ज़ेस् कोम दङ देन
मेरे सहित समस्त अनन्त सत्त्व भूख रूपी दुःख का निवारण कर मनोवाञ्छित

ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
पर ग्युर चिग
खाद्य-पेय से युक्त हों।

འདོད་ཡོན་ལྔ་ནི།
पञ्च कामगुण तो–

རྒྱལ་བ་ཟག་མེད་འབྱོར་ལ་མངའ་བསྒྱུར་ཡང་། །
ग्यल व ज़ग मेद् छ्योर ल ङा ग्युर यङ
जिन (बुद्ध) अनास्रव सम्पद् पर अधिकार प्राप्त करने पर भी।

མཆོད་པས་མཁའ་མཉམ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
छोद् पेस् खा ञम सेम चेन थम चे क्यीस्
पूजने से, आकाशसम समस्त सत्त्वों द्वारा।

འགྲོ་བའི་དོན་དུ་འདོད་ཡོན་རྣམ་ལྔ་ཡིས། །
डो बई दोन दु दोद् योन नम ङ यीस्
जगत्-हित हेतु पाँच कामगुणों द्वारा।

བསོད་ནམས་མི་ཟད་གཏེར་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
सोद् नम मि ज़े तेर ल चोद् पर शोग
अक्षय पुण्य-निधि का भोग करें।।

རྒྱལ་སྲིད་སྣ་བདུན་ནི།
अष्ट मङ्गल-द्रव्य–

མི་དབང་རིན་ཆེན་སྣ་བདུན་འདི་དག་ནི།།
मि वङ रिन छेन न दुन दि दग नि
देवेन्द्र (के) असुरों से विजय पर।

བདག་གིས་བཞམས་ཤིང་ཡིད་ཀྱིས་ཕུལ་བ་ཡིས། །
दग गीस् शम शिङ यिद् क्यीस् फुल व यीस्
जिनेन्द्रों तथा बोधिसत्त्वों की।

སངས་རྒྱས་སྲས་དང་བཅས་པ་མ་ལུས་ལ། །
सङ ग्येस् सेस् दङ चेस् प म लुस् ल
अष्ट मङ्गल देवियों द्वारा जैसे पूजा गया।

འགྲོ་བ་མི་ཟད་གཏེར་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
डो व मि ज़े तेर ल चोद् पर शोग ल्ह यि वङ
अष्ट मङ्गल द्रव्यों से पूजा करता हूँ।।

བཀྲ་ཤིས་རྫས་བརྒྱད་ནི།
अष्ट मंगल-द्रव्य -

ལྷ་ཡི་དབང་པོ་ལྷ་མིན་གཡུལ་རྒྱལ་ནས། །
ल्ह यि वपो ल्ह मिन युल ग्यल नेस्
देवेन्द्र असुर से युद्ध में विजित होकर

རྒྱལ་དབང་རྣམས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ། །
ग्यल वङ नम दङ छङ छुप सेम पा ल
जिनेन्द्रगण तथा बोधिसत्त्वों को

བཀྲ་ཤིས་ལྷ་མོ་བརྒྱད་ཀྱིས་མཆོད་པ་ལྟར། །
ट शीस् ल्ह मो ग्ये क्यीस् छोद् प तर
अष्ट मंगल देवियों द्वारा जैसे पूजा गया

བཀྲ་ཤིས་རྫས་བརྒྱད་དག་གིས་མཆོད་པར་བགྱི། །
ट शीस् ज़ेस् ग्ये दग गीस् छोद् पर ग्यि
अष्ट मंगल द्रव्यों से पूजा करता हूँ।

བཀྲ་ཤིས་རྟགས་བརྒྱད་ནི།
अष्ट मङ्गल चिह्न–

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् छिन लप पई
नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् छिन लप पई
नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् छिन लप पई
नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् छिन लप पई
नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।

བསོད་ནམས་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བའི་འཁོར་ལོ་འདི། །
सोद् नम ग्यु लेस छुङ बई खोर लो दि
पुण्य-हेतु से उद्भूत यह चक्र।

དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བར་ཤོག །
दम पई छोस् क्यि खोर लो कोर बर शोग
सद्धर्म का धर्मचक्रप्रवर्त्तन हो।।

དྲི་མེད་ཤིན་ཏུ་མཛེས་པའི་དཔལ་བེའུ་འདི། །
डि मेद् शिन तु ज़ेस् पई पल बेहु दि
विमल अति सुन्दर यह श्रीवत्स।

ཀུན་མཁྱེན་ཡེ་ཤེས་ཉིད་དང་ལྡན་པར་ཤོག །
कुन ख्येन ये शेस् ञिद् दङ देन पर शोग
सर्वज्ञ-ज्ञान से युक्त हो जाएँ।

རིན་ཆེན་བཅུད་ཀྱིས་གང་བའི་བུམ་པ་འདི། །
रिन छेन चुद् क्यीस् गङ बई बुम प दि
रत्न-रसायन से पूरित यह कलश।

བསོད་ནམས་ཚོགས་རྫོགས་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན་པར་ཤོག །
सोद् नम छ़ोग ज़ोग ग्येन ग्यीस् ग्येन पर शोग
पुण्य-सम्भार पूरक अलंकार से अलंकृत हों।

དྲི་མེད་ཤིན་ཏུ་དག་པའི་པདྨ་འདི། །
डि मेद् शिन तु दग पई पेमा दि
विमल अत्यन्त शुद्ध यह पद्म।

འཁོར་བའི་ཉེས་པའི་སྐྱོན་གྱིས་མ་གོས་ཤོག །
खोर बई ञेस् पई क्योन ग्यीस् म गोस् शोग
सांसारिक आपत्ति रूपी दोष से लिप्त न हों।

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् ज्छिन लप पई
**नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।**

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
**जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।**

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् ज्छिन लप पई
**नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।**

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
**जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।**

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् ज्छिन लप पई
**नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।**

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
**जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।**

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱིན་བརླབས་པའི། །
गोन पो थुग जे छेन पोस् ज्छिन लप पई
**नाथ महाकारुणिक द्वारा अधिष्ठित।**

གང་ལ་ཕུལ་བ་དེ་ཡིས་སྐད་ཅིག་ལ། །
गङ ल फुल व दे यीस् के चिग ल
**जिन्हें भेंट की, उससे क्षण भर में।**

དྲི་མེད་ཤིན་ཏུ་དཀར་བའི་དུང་ཆེན་འདི། །
डि मेद् शिन तु कर बई दुङ छेन दि
**विमल अत्यन्त शुक्ल यह महाशंख।**

རྩོད་ངན་ཕམ་བྱེད་ཆོས་སྒྲ་སྒྲོགས་པར་ཤོག །
ज़ोद् ङेन फम छेद् छोस् ड डोग पर शोग
**दुर्विवाद निवारक धर्म-पद की घोषणा हो।**

དྲི་མེད་ཤིན་ཏུ་དག་པའི་གསེར་ཉ་འདི། །
डि मेद् शिन तु दग पई सेर ञ दि
**विमल अत्यन्त शुद्ध यह सुवर्ण मत्स्य।**

འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོ་ཆེ་ལས་སྒྲོལ་བར་ཤོག །
खोर बई ग्य छ़ो छे लेस डोल वर शोग
**संसार रूपी महासागर से तर जाएँ।**

སྐྱབས་ཀྱི་དམ་པ་རིན་ཆེན་གདུགས་མཛེས་འདི། །
क्यप क्यि दम प रिन छेन दुग ज़ेस् दि
**परम शरण सुन्दर यह रत्नछत्र।**

ཀུན་ལ་སྐྱབས་ཀྱི་དམ་པ་བྱེད་པར་ཤོག །
कुन ल क्यप क्यि दम प छेद् पर शोग
**सभी में परम शरण का कार्य करें।**

དམ་ཆོས་མི་ནུབ་རྒྱལ་མཚན་དམ་པ་འདི། །
दम छोस् मि नुप ग्यल छ़ेन दम प दि
**सद्धर्म अनस्त (रूपी) यह परम ध्वज।**

དམ་ཆོས་མི་ནུབ་རྒྱལ་མཚན་འཛུགས་པར་ཤོག །
दम छोस् मि नुप ग्यल छ़ेन ज़ुग पर शोग
**सद्धर्म अनस्त (रूपी) ध्वज का आरोहण हो।**

ཙཱ་རུའི་བཟའ་བ་ནི། ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཏེ།
चारु-खाद्य तो, आकाश-निधि द्वारा अधिष्ठित करके–

གཟུགས་སྒྲ་དྲི་རོ་རེག་ལྡན་པ། །
ज़ुग ड डि रो रेग देन प
रूप-शब्द-गन्ध-रस-स्प्रष्टव्य-युक्त।

བདག་གིས་དད་པས་འབུལ་ལགས་ཀྱིས། །
दग गीस् दे पेस् बुल लग क्यीस्
मैं श्रद्धा से अर्पित करता हूँ।

ཞལ་ཟས་རོ་བརྒྱ་ལྡན་པ་ཡིད་འཐོག་པ། །
शल ज़ेस् रो ग्य देन प यिद् ठोग प
नैवेद्य शतरसयुक्त (तथा) मनोहर।

དད་པས་ཕུལ་བས་འགྲོ་བ་འདི་དག་ཀུན། །
दे पेस् फुल वे डो व दि दग कुन
भक्तिपूर्वक भेंट से समस्त ये प्राणी।

རྒྱལ་བས་བདུད་བཅོམ་བྱང་ཆུབ་སངས་རྒྱས་ཏེ། །
ग्यल वे दुद् चोम छङ छुप सङ ग्येस् ते
जिन (बुद्ध) ने अरि को हन्त कर बोधि (रूपी) बुद्ध(-त्व को) प्राप्त किया।

བདག་ཅག་བསོད་ནམས་ཞིང་དུ་འགྱུར་སླད་དུ། །
दग चग सोद् नम शिङ दु ग्युर ले दु
हमारे पुण्य-भूमि में परिवर्तन हेतु।

དུས་ཀུན་དགེ་བའི་ལོ་ཏོག་འཕེལ་རྒྱས་ནས། །
दुस् कुन गे बई लो तोग फेल ग्येस् नेस्
सभी समय कुशल-शस्य (फसल) वृद्धि-विस्तार को प्राप्त कर।

ཏིང་འཛིན་ཆོས་དང་ཟས་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཤོག །
तिङ ज़िन छोस् दङ ज़ेस् ल लोङ चोद् शोग
समाधि-धर्म तथा खाद्य का भोग करें।।

མཆོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཟས་མཆོག་འདི། །
छोग तु ग्युर पई ज़ेस् छोग दि
परमभूत परम खाद्य यह।

ཅི་བདེ་བར་ནི་བཞེས་སུ་གསོལ། །
चि दे वर नि शेस् सु सोल
प्रार्थना है, यथा सुखी होकर ग्रहण करें।।

ལེགས་སྦྱར་འདི་ནི་རྒྱལ་བ་སྲས་བཅས་ལ། །
लेग छर दि नि ग्यल व सेस् चेस् ल
इस सुनिबद्ध को जिन (बुद्ध) पुत्र सहित को।

འབྱོར་ལྡན་ཏིང་འཛིན་ཟས་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
छोर देन तिङ ज़िन ज़ेस् ल चोद् पर शोग
सम्पन्न होकर समाधि-खाद्य का भोग करें।।

རྒྱལ་བའི་སྐུ་ལ་བཀྲེས་སྐོམ་མི་མངའ་ཡང་། །
ग्यल वई कु ल डिप क्येम मि ङा यङ
जिनकाय भूख-प्यास से युक्त नहीं होने पर भी।

སྦྱར་བའི་བཤོས་དང་ཞལ་ཟས་འདི་ཕུལ་བས། །
छर बई शोस् दङ शल ज़ेस् दि फुल वे
इस निबद्ध खाद्य और नैवेद्य के अर्पण से।

བདེ་བ་ཅན་དུ་པདྨོ་ལས་སྐྱེས་ཏེ། །
दे व चेन दु पेमाो लेस क्येस् ते
सुखावती में पद्म से उत्पन्न होकर।

ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དགེ་འདུན་གྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བ་རྣམས་ལ་ཞལ་ཟས་
यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् छङ छुप सेम पई गेन दुन ग्यीस् योङ सु कोर व नम ल शल ज़ेस्
बोधिसत्त्व संघ से परिवृत्त सम्यक् सम्बुद्धों को नाना प्रकार के नैवेद्य–

སྣ་ཚོགས་པའི་ཚོད་མ་དང་འཁུར་བ་དང་བཤོས་དང་ཞོ་ལ་སོགས་པ་ལྷའི་རྫས་གྱ་ནོམ་པ་དྲི་བཟང་པོ་རུང་
न छ़ोग पई छ़ोद् म दङ खुर व दङ शोस् दङ शो ल सोग प ल्हई ज़ेस् ग्य नोम प डि ज़ङ पो रुङ
शाक (सब्जी), पूड़ी, भोजन तथा दही आदि मनोज्ञ-सुगन्धित देव-द्रव्य,

བའི་ཆུས་གང་བའི་བུམ་པ་དང་བཅས་པ་རྣམས། བདག་དང་སྦྱིན་པའི་བདག་པོ་ལ་སོགས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་
बई छुस् गङ बई बुम प दङ चेस् प नम    दग दङ छिन पई दग पो ल सोग पई सेम चेन थम चे
(पीने) योग्य जल से पूर्ण कलश आदि मेरे सहित दानपति आदि समस्त सत्त्वों को

རྗེས་སུ་བཟུང་སྟེ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་ལ་རབ་ཏུ་འགོད་པའི་སླད་དུ་
जेस् सु ज़ुङ ते ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् क्यि गो फङ ल रप तु गोद् पई ले दु
अनुग्रह कर अनुत्तर सम्यक् सम्बुद्धत्व पद पर प्रारूढ़ करने के लिए

དབུལ་བར་བགྱིའོ། །
उल बर ग्यिहो
अर्पित करते हैं।

ལྔ་ཐག་ལྔ་ནི།
पञ्च-पञ्च-वर्ग तो–

རྒྱལ་བ་མགོན་པོ་དཔལ་གྱིས་ལྷམ་མེར་བཞུགས། །
ग्यल व गोन पो पल ग्यीस् ल्हम मेर शुग
जिन-नाथ श्री से भासित विराजमान हैं।

བསོད་ནམས་ཡེ་ཤེས་སྐུ་ལྔ་བརྙེས་པ་ལ། །
सोद् नम ये शेस् कु ङ ञेस् प ल
पुण्य-ज्ञान (रूपी) पाँच काय को प्राप्त हुए हैं।

ལྔ་ཐག་ལྔ་ལྡན་སྙིང་པོ་དམ་པ་འབུལ། །
ङ ठग ङ देन ञिङ पो दम प बुल
पञ्च-वर्ग पाँच से युक्त परम सार को भेंट करता हूँ।

འགྲོ་བས་བདེ་གཤེགས་སྙིང་པོ་ཐོབ་པར་ཤོག །
डो वे दे शेग ञिङ पो थोप पर शोग
गतियों (प्राणियों) द्वारा सुगतसार की प्राप्ति करें।।

འབྲུ་རྣམ་པ་ལྔ་ཕུལ་བས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ལོ་ཏོག་འཕེལ་ཞིང་དགེ་བའི་ལོ་ཏོག་དུས་ཀུན་
डु नम प ङ फुल वे सेम चेन थम चे ल जिग तेन ग्यि लो तोग फेल शिङ गे बई लो तोग दुस् कुन
पञ्चविध अन्न के अर्पण से समस्त सत्त्वों में लौकिक शस्य (फसल) की वृद्धि होकर सदा कुशल शस्य की वृद्धि

ཏུ་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅིག །
तु ग्येस् पर ग्युर चिग
होती रहे।

རིན་པོ་ཆེ་རྣམ་པ་ལྔ་ཕུལ་བས་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དགོས་དགུ་ཡིད་བཞིན་དུ་
रिन पो छे नम प ङ फुल वे यिद् शिन ग्यि नोर बु रिन पो छेस् सेम चेन थम चे क्यि गोस् गु
**पञ्चविध रत्न के अर्पण से चिन्तामणिरत्न द्वारा समस्त सत्त्वों की आवश्यकताएँ मनोवाञ्छितानुसार पूरा कर**

བསྐངས་ནས་འབྱོར་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
यिद् शिन दु कङ नेस् छोर प फुन सुम छोग प दङ देन पर ग्युर चिग
**समृद्धि-सम्पन्नता से युक्त हो जाएँ।**

སྨན་རྣམ་པ་ལྔ་ཕུལ་བས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནད་བཞི་བརྒྱ་རྩ་བཞིའི་སྡུག་བསྔལ་དང་བྲལ་ནས་ཐུགས་རྗེའི་སྨན་
मेन नम प ङ फुल वे सेम चेन थम चे ने शि ग्य त्र शी दुग ङ्ल दङ डल नेस् थुग जे मेन ग्यीस्
**पञ्चविध औषध के अर्पण से समस्त सत्त्व चार सौ चार प्रकार के रोग-दुःख से मुक्त होकर करुणा रूपी औषध**

གྱིས་དུག་གསུམ་གྱི་ནད་ལས་ཐར་བར་གྱུར་ཅིག །
दुग सुम ग्यि ने लेस थर बर ग्युर चिग
**द्वारा त्रिविष रूपी रोग से मुक्त हों।**

སྙིང་པོ་རྣམ་པ་ལྔ་ཕུལ་བས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་ཅིག །
ञिङ पो नम प ङ फुल वे सेम चेन थम चे दे खो न ञिद् क्यि ञिङ पो दङ देन पर ग्युर चिग
**पञ्च-सार के अर्पण से समस्त सत्त्व तथता रूपी सार से युक्त हों।**

དྲི་རྣམ་པ་ལྔ་ཕུལ་བས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཆུས་རྣམ་པར་གཡེང་བའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་རྣམ་
डि नम प ङ फुल वे सेम चेन थम चे तिङ ङे ज़िन ग्यि छुस् नम पर येङ बई डि म थम चे नम
**पञ्चविध गन्ध के अर्पण से समस्त सत्त्व समाधि-जल के द्वारा विक्षेपन रूपी समस्त मल (से) विशुद्ध होकर**

པར་དག་སྟེ་བདེ་ཞིང་ཚིམ་པར་གྱུར་ཅིག །
पर दग ते दे शिङ छिम पर ग्युर चिग
**सुखी एवं सन्तुष्ट हों।।**

མཆོད་པའི་དངོས་པོ་གཞན་ཡང་གྲུབ་ཆེན་གླིང་གིས་མཛད་པའི་བླ་མ་མཆོད་པ་ལས།
अन्य पूजा-द्रव्य भी महासिद्ध लिङ्(रस्-पा) द्वारा रचित गुरु-पूजा में (इस प्रकार उक्त है)–

ནམ་མཁའ་ཉི་ཟླ་གཟའ་སྐར་འཇའ་ཚོན་དང་། །
नम खा ञि द ज़ा कर जा छोन दङ
**आकाश सूर्य-चन्द्र ग्रह-नक्षत्र इन्द्रधनुष।**

མཛེས་པའི་སྤྲིན་དང་ཁུག་རྣ་ལ་སོགས་པས། །
ज़ेस् पई टिन दङ खुग न ल सोग पेस्
**सुन्दरता युक्त बादल तथा कुहरा आदि से।**

རབ་ཏུ་བརྒྱན་ཅིང་ཡིད་རབ་དྭང་གྱུར་པ། །
रप तु ग्येन चिङ यिद् रप दङ ग्युर प
सुअलंकृत कर, स्वच्छ मन के द्वारा।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

རི་བོ་མཆོག་དང་དེ་བཞིན་རི་ཐྲན་དང་། །
रि बो छोग दङ दे शिन रि ठेन दङ
सुमेरु एवं वैसे ही लघु गिरि।

གངས་རི་སྨན་རི་རིན་ཆེན་རི་བོ་སོགས། །
गङ रि मेन रि रिन छेन रि बो सोग
हिमगिरि, औषधगिरि, रत्नगिरि इत्यादि।

དགོས་འདོད་འབྱུང་བའི་རི་གཞན་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
गोस् दोद् छुङ बई रि शेन जि ञेद् कुन
आवश्यकता स्रोत जितने भी अन्य पहाड़ हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

རིན་ཆེན་ས་གཞིར་ལོ་ཏོག་སྨིན་བྱེད་ཅིང་། །
रिन छेन स शिर लो तोग मिन छेद् चिङ
रत्न-भूमि में शस्य को पका कर।

སྐྱེད་མོས་ཚལ་དང་ཀུན་དགའ་ར་བ་དང་། །
क्येद् मोस् छ़ल दङ कुन गा र व दङ
उपवन (उद्यान) तथा आराम (विहार)।

གཙུག་ལག་ཁང་སོགས་ཕོ་བྲང་བཞིན་གྱུར་པ། །
त्सुग लग खङ सोग फो डङ शिन ग्युर प
कूटागार इत्यादि प्रासादोपम को।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

གཞལ་མེད་ཁང་ཆེན་བསིལ་ཁང་སྒོ་ཁང་དང་། །
शल मेद् खङ छेन सिल खङ गो खङ दङ
महाविमान, शीतगृह और द्वार-गृह।

རྟ་བབས་ལ་སོགས་མཛེས་པའི་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན། །
त बप ल सोग ज़ेस् पई ग्येन ग्यीस् ग्येन
तोरण इत्यादि सुन्दर अलंकारों से अलंकृत।

ངོ་མཚར་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་དེ་དག་ཀུན། །
ङो छ़र छोग तु ग्युर प दे दग कुन
अद्भुत् परमभूत वे सभी।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

གཙུག་ལག་ཁང་དང་རྒྱལ་པོའི་ཕོ་བྲང་དང་། །
त्सुग लग खङ दङ ग्यल पोइ फो डङ दङ
कूटागार तथा राजप्रासाद।

མཁར་དང་ཡུལ་འཁོར་གྲོང་དང་གྲོང་ཁྱེར་དང་། །
खर दङ युल खोर डोङ दङ डोङ ख्येर दङ
दुर्ग, राष्ट्रीय ग्राम और नगर।

ཡིད་འོང་མཛེས་པའི་ཁང་བཟང་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
यिद् होङ ज़ेस् पई खङ ज़ङ जि ञेद् कुन
मनोहर सुन्दर जितने भी अच्छे घर हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

བླ་བྲེ་གདུགས་དང་རྒྱལ་མཚན་བ་དན་དང་། །
ल डे दुग दङ ग्यल छ़ेन व देन दङ
वितान-छत्र तथा ध्वज-पताका।

དར་དཔྱངས་ལྷབ་ལྷུབ་འཕན་དང་ལྡ་ལྡི་དང་། །
दर चङ ल्हप ल्हुप फेन दङ द दि दङ
पट्टमुकुट, लहराते (स्तम्भ-)अलंकार तथा पट्टदामन।

ཡོལ་བ་ལ་སོགས་བཀོད་པའི་ཁྱད་པར་རྣམས། །
योल व ल सोग कोद् पई ख्ये पर नम
यवनिका (परदा) आदि (से) विशिष्ट (रूप से) सजाए हुए (अलंकरण)।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

གསེར་དངུལ་ཟངས་ལྕགས་དེ་བཞིན་མུ་ཏིག་དང་། །
सेर ङुल ज़ङ चग दे शिन मु तिग दङ
सुवर्ण, रजत, ताम्र, लोह एवं मोती।

བཻཌཱུརྻ་དང་དུང་དང་མན་ཤེལ་དང་། །
बैदूर्य दङ दुङ दङ मेन शेल दङ
वैडूर्य सहित शङ्ख तथा स्फटिकशिला।

བྱུ་རུ་ལ་སོགས་རིན་ཆེན་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
छु रु ल सोग रिन छेन जि ञेद् कुन
प्रवाल आदि जितने भी रत्न हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

རྒྱ་མཚོ་ཆེ་དང་ཆུ་བོ་ཆུ་ཕྲན་དང་། །
ग्य छ़ो छे दङ छु बो छु ठेन दङ
महासागर, नदी और छोटी नदियाँ।

མཚོ་དང་རྫིང་བུ་ལྟེང་ཀ་ཆུ་མིག་སོགས། །
छ़ो दङ ज़िङ बु तेङ क छु मिग सोग
तालाब, तडाग, सरोवर, स्रोत आदि।

ཉོག་པ་མེད་ཅིང་ཡན་ལག་བརྒྱད་ལྡན་ཆབ། །
ञोग प मेद् चिङ येन लग ग्ये देन छप
दोष रहित आठ अवयव युक्त पानी।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ལོ་ཏོག་རྩི་ཐོག་ཤིང་ཏོག་ཇི་སྙེད་པའི། །
लो तोग त्ज़ि थोग शिङ तोग जि ञेद् पई
शस्य, रसायन, फल जो भी हैं (उन)के।

དྲི་དང་རོ་ལྡན་འགྲོ་བའི་གསོས་གྱུར་པ། །
डि दङ रो देन डो बई सोस् ग्युर प
गन्ध, रसयुक्त जगत् का पोषक।

དབང་པོའི་སྤྱོད་ཡུལ་ངོ་མཚར་སྣ་ཚོགས་པ། །
वङ पोइ चोद् युल ङो छ़र न छ़ोग प
नाना अद्भुत् (जो) इन्द्रिय गोचर हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ཙན་དན་ག་བུར་གུར་གུམ་ལ་སོགས་ཏེ། །
त्ज़ेन देन ग बुर गुर गुम ल सोग ते
चन्दन, कर्पूर, केसर इत्यादि।

རོ་དང་ནུས་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི། །
रो दङ नुस् प सम ग्यीस् मि ख्यप पई
रस एवं शक्ति अचिन्त्य जिनके हैं।

ནད་སེལ་སྨན་གྱི་རྣམ་པ་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
ने सेल मेन ग्यि नम प जि ञेद् कुन
औषध स्वरूप जितने भी रोग निवारक हैं।

རྒྱུ་མཆོག་རྐྱེན་གྱིས་ལེགས་པར་སྦྱར་བ་ཡི། །
ग्यु छोग क्येन ग्यीस् लेग पर छर व यि
परम हेतु-प्रत्यय से सुनिबद्ध जो हैं।

འཇིག་རྟེན་ཟས་མཆོག་མ་ལུས་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
जिग तेन ज़ेस् छोग म लुस् जि ञेद् कुन
अशेष परम खाद्य जितने भी हैं।

འཇིག་རྟེན་དག་ན་ན་བཟའི་མཆོག་གྱུར་པ། །
जिग तेन दग ने न ज़ई छोग ग्युर प
लोकों में, वस्त्रों में जो उत्तम हैं।

ཁྱེ་བྲག་དཔག་མེད་ཇི་སྙེད་ཡོད་པ་ཀུན། །
छे डग पग मेद् जि ञेद् योद् प कुन
विशेष अपरिमित जितने भी हैं।

ཞེས་དང་། ལྷ་ཡི་དབང་པོ་ཉེ་བའི་དབང་པོ་དང་། །
ल्ह यि वङ पो ञे बई वङ पो दङ
देवेन्द्र तथा उपेन्द्र और।

ལོངས་སྤྱོད་འདོད་ཡོན་ཚོགས་བཅས་དེ་དག་ཀུན། །
लोङ चोद् दोद् योन छोग चेस् दे दग कुन
सम्पत्ति कामभोग की वे राशियाँ।

ལྷ་མིན་ཀླུ་དང་གནོད་སྦྱིན་དྲི་ཟ་དང་། །
ल्ह मिन लु दङ नोद् छिन डि ज़ दङ
असुर, नाग, तथा यक्ष (और) पिशाच।

འཁོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་ངོ་མཚར་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
खोर दङ लोङ चोद् ङो छर जि ञेद् कुन
जितने भी अद्भुत परिवार तथा सम्पत्ति हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

བཟའ་དང་བཅའ་དང་ལྡག་དང་བཏུང་ལ་སོགས། །
ज़ा दङ चा दङ दग दङ तुङ ल सोग
खाद्य, भोज्य, चोष्य एवं पेय आदि।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ཁྱད་འཕགས་སྐུ་ལ་འཇམ་ཞིང་མཛེས་པ་ཡི། །
ख्ये फग कु ल जम शिङ ज़ेस् प यि
विशिष्ट, काय के प्रति कोमल और सुन्दर।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।। इति।

བུ་དང་བུ་མོ་མཛེས་པའི་འཁོར་དང་བཅས། །
बु दङ बु मो ज़ेस् पई खोर दङ चेस्
पुत्र-पुत्री तथा सुन्दर परिवार सहित।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

དབང་པོ་ལ་སོགས་བུ་དང་བུ་མོ་དང་། །
वङ पो ल सोग बु दङ बु मो दङ
इन्द्र आदि पुत्र तथा पुत्रियाँ

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་རྒྱལ་མི་ཡི་དབང་ཕྱུག་མཆོག །
खोर लोस् ग्युर ग्यल मि यि वङ छुग छोग
चक्रवर्ती राजा तथा श्रेष्ठ नरेन्द्र (सम्राट)।

དཔུང་གི་ཚོགས་དང་བཅས་པ་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
पुङ गि छोग दङ चेस् प जि ञेद् कुन
सेना सहित जितने भी (लोग) हैं।

རྒྱལ་ཕྲན་ལ་སོགས་སྐྱེས་པ་བུད་མེད་དང་། །
ग्यल ठेन ल सोग क्येस् प बुद् मेद् दङ
छोटे राष्ट्र आदि पुरुष एवं स्त्रियाँ।

རིན་ཆེན་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན་པ་དེ་དག་ཀུན། །
रिन छेन ग्येन ग्यीस् ग्येन प दे दग कुन
रत्नालंकारों से अलंकृत वे सभी।

སེང་གེ་ཁྱུ་མཆོག་ལ་སོགས་སྟོབས་ཆེན་དང་། །
सेङ गे ख्यु छोग ल सोग तोप छेन दङ
सिंह, वृषभ आदि महाबली तथा।

ནགས་ཁྲོད་རི་བོའི་སུལ་ན་རྒྱུ་བ་ཀུན། །
नग ठोद् रि बोइ सुल न ग्यु व कुन
वन गिरि-घाटी में घूमने वाले सभी।

རྟ་དང་གླང་པོ་དེ་བཞིན་ཤིང་རྟ་དང་། །
त दङ लङ पो दे शिन शिङ त दङ
अश्व, हस्ति, ऐसे ही रथ तथा।

ཤུགས་ཆེན་མགྱོགས་པར་འགྲོ་བ་དེ་དག་ཀུན། །
शुग छेन ग्योग पर डो व दे दग कुन
महाशक्तिवान् वे सभी त्वरित गमन करने वाले।

མཁའ་ལྡིང་རྒྱལ་པོ་ཀ་ལ་པིང་ཀ་དང་། །
खा दिङ ग्यल पो क ल पिङ क दङ
गरुड़राज तथा कलविङ्क और।

བཙུན་མོ་སྲས་བཅས་རིན་ཆེན་སྣ་བདུན་དང་། །
त्सुन मो सेस् चेस् रिन छेन न दुन दङ
राज्ञी पुत्र सहित सप्तविध रत्न तथा।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ཁྱེའུ་བུ་མོ་མཛེས་པའི་གོས་གྱོན་ཅིང་། །
ख्येहु बु मो ज़ेस् पई गोस् ग्योन चिङ
शिशु (तथा) लड़की सुन्दर वस्त्र धारण कर।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ཨེ་ཎ་སོགས་མཛེས་པའི་རི་དྭགས་སོགས། །
ए न्य सोग ज़ेस् पई रि दग सोग
एणी आदि जो सुन्दर मृग इत्यादि हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

འཇིག་རྟེན་དག་ན་ཐེག་ཆེན་གཤོན་པའི་མཆོག །
जिग तेन दग न थेग छेन शोन पई छोग
लोकों में महायान परम यान।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ཁྲུང་ཁྲུང་རྨ་བྱ་ཁུ་བྱུག་ངུར་པ་སོགས། །
ठुङ ठुङ म छ खु छुग ङुर प सोग
सारस, मयूर, कोयल, हँस आदि।

སྐད་སྙན་མཛེས་པའི་འདབ་ཆགས་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
के ञेन ज़ेस् पई दप छग जि ञेद् कुन
मधुर शब्द वाले जितने भी सुन्दर खग हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

ལྷ་མིའི་ལོངས་སྤྱོད་ཡོངས་སུ་བཟུང་བ་དང་། །
ल्ह मी लोङ चोद् योङ सु ज़ुङ व दङ
परिगृहीत देव-मनुष्य सम्पत्ति।

ཡོངས་སུ་གཟུང་མིན་རང་བཞིན་གནས་པའི་རིགས། །
योङ सु ज़ुङ मिन रङ शिन नेस् पई रिग
अपरिगृहीत स्वाभाविक गोत्र हैं।

ངོ་མཚར་སྤྱོད་དུ་རུང་བ་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
ङो छ़र चे दु रुङ व जि ञेद् कुन
अद्भुत् जितने भी गोचर स्वरूप हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་པོ་བྲང་གཞལ་ཡས་ཁང་། །
नोद् क्यि जिग तेन फो डङ शल येस् खङ
भाजन-लोक प्रासाद (तथा) विमान।

བཅུད་ཀྱི་སེམས་ཅན་སྣ་ཚོགས་སྤྲུལ་པའི་རིགས། །
चुद् क्यि सेम चेन न छ़ोग टुल पई रिग
सत्त्व-लोक नाना निर्मित गोत्र।

ཡིད་འོང་མཛེས་པའི་རོལ་མོ་ཇི་སྙེད་ཀུན། །
यिद् ह़ोङ ज़ेस् पई रोल मो जि ञेद् कुन
मनोहर सुन्दर वाद्य जितने भी हैं।

སྐྱེས་མཆོག་རིན་ཆེན་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
क्येस् छोग रिन छेन नम ल बुल बर ग्यि
उत्तमपुरुषरत्नों को अर्पित करता हूँ।।

བདག་གི་ལུས་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཐམས་ཅད་དང་། །
दग गि लुस् दङ लोङ चोद् थम चे दङ
मेरा काय और समस्त सम्पत्ति।

མཁའ་དང་མཉམ་པའི་འགྲོ་བ་མ་ལུས་ཀུན། །
खा दङ ञम पई डो व म लुस् कुन
आकाशसम अशेष सर्वजगत्।

སྐྱེས་མཆོག་ཁྱེད་ཀྱི་འབངས་སུ་འབུལ་ལགས་ན། །
क्येस् छोग ख्येद् क्यि बङ सु बुल लग न
पुरुषोत्तम आपकी प्रजा स्वरूप अर्पित करता हूँ।

ཐུགས་རྗེས་དགོངས་ནས་བཞེས་ཏེ་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ། །
थुग जेस् गोङ नेस् शेस् ते क्यप तु सोल
प्रार्थना है, करुणापूर्वक ध्यान दें, ग्रहणकर रक्षा करें।

སྒྲུབ་པའི་མཆོད་པ་ནི།
साधन-पूजा तो–

ཐོས་པའི་མཆོད་ཡོན་རྒྱ་མཚོས་ལེགས་གཏམས་ཤིང་། །
थोस् पई छोद् योन ग्य छ़ोस् लेग तम शिङ
श्रवण अर्घ्यसागर से अच्छी तरह पूरित।

རྣམ་བཀྲ་རིག་པའི་མེ་ཏོག་ཀུན་ཏུ་བཀྲམ། །
नम ट रिग पई मे तोग कुन तु टम
विचित्र विद्या रूपी पुष्प हैं, विकीर्णित।

ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་དག་དྲི་ཡི་བདུག་སྤོས་འཐུལ། །
छुल ठिम नम दग डि यि दुग पोस् थुल
विशुद्ध शील रूपी गन्ध का धूप लहराते।

འཆད་པ་ཉིན་མོར་བྱེད་པའི་སྒྲོན་མེ་སྦར། །
छे प ञिन मोर छेद् पई डोन मे बर
वाचन दिवस-कर्त्ता दीप है, प्रज्वलित।

རྩོད་པ་ཉེས་པ་རྣམ་སྦྱོང་དྲི་ཆབ་གཏམས། །
त़्सोद् प ञेस् प नम छ्योङ डि छप तम
वाद-दोष विशुद्धक गन्ध से पूरित।

བསམ་གཏན་རོ་བརྒྱ་ལྡན་པའི་ཞལ་ཟས་བཞམས། །
सम तेन रो ग्य देन पई शल ज़ेस् शम
समाधि शतरस वाले नैवेद्य से सुशोभित।

རྩོམ་པ་སྡེབ་ལེགས་སྙན་པའི་རོལ་མོ་སོགས། །
त़्सोम प देप लेग ञेन पई रोल मो सोग
लेखन सुनिबद्ध (है) मधुरता का वाद्य आदि।

འཕགས་རྣམས་དགྱེས་བྱེད་མཆོད་པ་འདི་དག་གིས། །
फग नम ग्येस् छेद् छोद् प दि दग गीस्
आर्य प्रसन्न-कर्त्ता, इन पूजाओं के द्वारा।

བླ་མེད་བླ་མ་རྒྱལ་བ་སྲས་དང་བཅས། །
ल मेद् ल म ग्यल व सेस् दङ चेस्
अनुत्तर गुरु जिन (बुद्ध) पुत्र (बोधिसत्त्व) सहित।

མཆོད་པར་འོས་པའི་སྐྱབས་ཀུན་མཆོད་པར་བགྱི། །
छोद् पर ह़ोस् पई क्यप कुन छोद् पर ग्यि
पूजा किया है, समस्त पूजनीयों की।

སྟོན་པ་མཆོག་གིས་ཇི་ལྟར་བསྟན་པ་བཞིན། །
तोन प छोग गीस् जि तर तेन प शिन
परम शास्ता द्वारा जैसे दिखाया गया।

རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་ཐེག་པ་རབ་གསལ་བར། །
ग्यु दङ डेस् बुइ थेग प रप सल वर
हेतु एवं फलयान स्पष्टतया।

ཞིང་རྣམས་ཀུན་ཏུ་ནུབ་མེད་འབར་མཛད་པ། །
शिङ नम कुन तु नुप मेद् बर ज़े प
(बुद्ध-)क्षेत्र सदा अस्त न हो प्रज्वलित करने वाले।

བཀའ་བརྒྱུད་རིམ་པར་བྱོན་རྣམས་མཆོད་པར་བགྱི། །
का ग्युद् रिम पर छोन नम छोद् पर ग्यि
पूजा है, आगम परम्परा में क्रमशः आने वालों का।।

མཎྜལ་ཚོམ་བུ་སོ་བདུན་མ་ཡང་འབུལ། བསྟོད་པའི་རིམ་པ་ནི། འཕགས་པ་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་གིས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས།
(यहाँ) सप्त निमित्त मण्डल भी अर्पित करना चाहिए। स्तुतिक्रम तो, आर्यराष्ट्रपालपरिपृच्छासूत्र में कहा है–

མཚན་མཆོག་ལྡན་པ་དྲི་མེད་ཟླ་བའི་ཞལ། །
छ़ेन छोग देन प डि मेद् द बई शल
परम नाम वाले विमल चन्द्रमुख।

གསེར་མདོག་འདྲ་བ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
सेर दोग ड व ख्योद् ल छग छ़ल तोद्
सुवर्ण वर्णोपम आपकी नमन-स्तुति है।

རྡུལ་བྲལ་ཁྱོད་འདྲ་སྲིད་པ་གསུམ་མ་མཆིས། །
दुल डल ख्योद् ड सिद् प सुम म छीस्
रज विरक्त आप-सा तीन भवों में कोई नहीं।

མཉམ་མེད་མཁྱེན་ཅན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ञम मेद् ख्येन चेन ख्योद् ल छग छ़ल तोद्
अनुपम ज्ञानवान् आपकी नमन-स्तुति है।।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་བདུད་ཀྱི་བུ་མོ་བཞིས་བསྟོད་པར་གྲགས་པ།
तथागत को चार मार दुहिताओं द्वारा किया गया प्रसिद्ध स्तुति–

རྣམ་དག་སྐུ་མངའ་མཆོག་ཏུ་གཟུགས་བཟང་བ། །
नम दग कु ङा छोग तु ज़ुग ज़ङ व
विशुद्ध कायवान् परम भद्रकाय वाले।

གྲགས་པ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ལྷང་ངེ་བ། །
डग प जिग तेन सुम न ल्हङ ङे व
प्रसिद्धि तीनों लोकों में प्रकाशित।

ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་གསེར་གྱི་ལྷུན་པོ་འདྲ། །
ये शेस् ग्य छ़ो सेर ग्यि ल्हुन पो ड
ज्ञान-सागर सुवर्ण मेरु समान (हैं)।

མགོན་པོ་མཆོག་བརྙེས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
गोन पो छोग ञेस् ख्योद् ल छग छ़ल तोद्
नाथ परम प्राप्त करने वाले की नमन-स्तुति है।।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་སྡེ་བཞིས་བསྟོད་པར་གྲགས་པ།
तथागत को चतुर्महाराज द्वारा किया गया प्रसिद्ध स्तुति–

རྒྱལ་བ་ཟླ་བ་དྲི་མ་མེད་པའི་སྐུ། །
ग्यल व द व डि म मेद् पई कु
जिन-चन्द्र मल रहित काय।

རྒྱལ་བ་པདྨ་དྲི་མ་མེད་པའི་སྤྱན། །
ग्यल व पेमा डि म मेद् पई चेन
जिन-पद्म मल रहित चक्षु।

རྒྱལ་བའི་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུ་སྟེ། །
ग्यल वई योन तेन ग्य छ़ो त बु ते
जिन (बुद्ध) का गुण समुद्रवत् है।

རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོ་ཡེ་ཤེས་ཆུ་ཡིས་གང་། །
ग्यल व ग्य छ़ो ये शेस् छु यीस् गङ
जिनसमुद्र ज्ञान-जल से पूर्ण।

རྒྱལ་བའི་ཞབས་ནི་འཁོར་ལོ་བྲིས་པ་སྟེ། །
ग्यल वई शप नि खोर लो डीस् प ते
जिनपाद चक्रचित्रित हैं।

རྒྱལ་བ་ཉི་མ་འོད་ཟེར་སྟོང་གི་འོད། །
ग्यल व ञि म ह़ोद् ज़ेर तोङ गि ह़ोद्
जिन-आदित्य सहस्र-रश्मि।

རྒྱལ་བ་མེ་ཏོག་པད་ཙ་རྡུལ་མེད་ཚེམས། །
ग्यल व मे तोग पे त्स़ दुल मेद् छ़ेम
जिन-पुष्प पद्ममूल अरज दन्त।

རིན་པོ་ཆེ་ནི་དུ་མའི་འབྱུང་གནས་གྱུར། །
रिन पो छे नि दु मई छुङ नेस् ग्युर
अनेक रत्नों के आकरभूत हैं।

ཏིང་འཛིན་བརྒྱ་ཕྲག་སྟོང་གིས་ཀུན་ཏུ་གང་། །
तिङ ज़िन ग्य ठग तोङ गीस् कुन तु गङ
शतसहस्र समाधि से आपूर्ण।

འཁོར་ཡུག་མུ་ཁྱུད་དེ་བཞིན་རྩིབས་མ་སྟོང་། །
खोर युग मु ख्युद् दे शिन त्ज़िप म तोङ
चक्रवाल, नेमि, ऐसे ही सहस्र अरे हैं।

ཕྱག་དང་ཞབས་ནི་དྲྭ་བས་སྤྲས་པ་སྟེ། །
छग दङ शप नि ड वे टेस् प ते
हस्त और पाद तो जाल से विभूषित।

ཞབས་ཀྱི་དྲྭ་བ་ངང་པའི་དབང་པོ་བཞིན། །
शप क्यि ड व ङङ पई वङ पो शिन
पाद-जाल हंसराज (के) जैसे।

གསེར་གྱི་རི་བོ་ལྟ་བུར་རབ་ཏུ་གདའ། །
सेर ग्यि रि बो त बुर रप तु दा
हैं, पूरी तरह सुवर्णगिरि-सा।

རྒྱལ་བ་དྲི་མེད་གསེར་གྱི་རི་དབང་པོ། །
ग्यल व डि मेद् सेर ग्यि रि वङ पो
जिन-विमल सुवर्ण का सुमेरु।

ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་རི་དབང་འདྲ་བ་སྟེ། །
योन तेन थम चे रि वङ ड व ते
समस्त गुण सुमेरु के समान हैं।

སངས་རྒྱས་རི་དབང་རྒྱལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
सङ ग्येस् रि वङ ग्यल ल छग छ़ल तोद्
बुद्ध सुमेरुराज की नमन-स्तुति है।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཟླ་བ་ཆུ་ཟླ་འདྲ། །
दे शिन शेग प द व छु द ड
तथागत चन्द्र, जल-चन्द्र के समान हैं।

ནམ་མཁའ་དང་ཡང་མཚུངས་ཤིང་འདྲ་བ་སྟེ། །
नम खा दङ यङ छुङ शिङ ड व ते
आकाश के साथ भी मिलते-जुलते हैं।

སྒྱུ་མ་སྨིག་རྒྱུ་ལྟ་བུར་ཆགས་པ་མེད། །
ग्यु म मिग ग्यु त बुर छग प मेद्
माया-मरीचि समान राग से रहित हैं।

རྒྱལ་བ་དྲི་མ་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ग्यल व डि म मेद् ल छग छ़ल तोद्
जिन मल रहित की नमन-स्तुति है।।

བླ་མ་མཆོད་པ་ཡོན་ཏན་ཀུན་འབྱུང་ལས།
गुण-समुदय (नामक) गुरु-पूजा में कहा है–

སྐུ་ལ་ཚད་མེད་བགྲང་དུ་མེད། །
कु ल छ़े मेद् डङ दु मेद्
(बुद्ध) काय का परिमाण तथा संख्या नहीं है।

ནམ་མཁའ་དང་ནི་མཉམ་གྱུར་ཅིང་། །
नम खा दङ नि ञम ग्युर चिङ
आकाश के बराबर है।

སྣ་ཚོགས་དབང་ཕྱུག་མི་ཤིགས་པ། །
न छ़ोग वङ छुग मि शिग प
विचित्र ईश्वर नाश (अनित्य) से परे है।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

ཐམས་ཅད་སྟོང་པའི་ཆོ་འཕྲུལ་ལས། །
थम चे तोङ पई छो ठुल लेस
सर्वशून्य रूपी प्रातिहार्य (ऋद्धि) से।

འབྱུང་ལྔའི་བདག་ཉིད་རང་བྱུང་དཔལ། །
छुङ ङई दग ञिद् रङ छुङ पल
पञ्च भूतात्मक स्वयंभूश्री।

སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་ཆེ་བའི་བདག །
ग्यु ठुल छेन पो छे बई दग
महामाया माहात्म्य।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

འདུས་མ་བྱས་ཤིང་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ། །
दुस् म छेस् शिङ ल्हुन ग्यीस् डुप
असंस्कृत है, अनाभोग है।

དངོས་མེད་དངོས་ཀུན་བདག་ཉིད་ཅན། །
ङोस् मेद् ङोस् कुन दग ञिद् चेन
अपदार्थ, समस्त पदार्थों का आत्मत्व।

གཟུགས་མེད་གཟུགས་བཟང་དམ་པའི་མཆོག །
ज़ुग मेद् ज़ुग ज़ङ दम पई छोग
अरूपी, भद्ररूप परम रूपों में श्रेष्ठ।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

ཐོག་མཐར་འགྲོ་འོང་མི་མངའ་ཞིང་། །
थोग थर डो ह़ोङ मि ङा शिङ
आदि-अन्त, गमन-आगमन से विमुक्त।

སྐྱེ་འཇིག་འདུ་འབྲལ་མི་མངའ་ཡང་། །
क्ये जिग दु डल मि ङा यङ
जाति-नाश, संग्रह-विग्रह युक्त नहीं होने पर भी।

འགྲོ་དོན་ཅིར་ཡང་སྟོན་མཛད་པའི། །
डो दोन चिर यङ तोन ज़े पई
कुछ भी सत्त्वार्थ हेतु प्रदर्शन करने वाले।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

རྣམ་སྤྲུལ་སྒྱུ་མའི་སྐུར་བསྟན་ནས། །
नम टुल ग्यु मई कुर तेन नेस्
विनिर्मित माया रूपी काय को दिखा कर।

སྣ་ཚོགས་སྒྱུ་མའི་གར་མཛད་ཅིང་། །
न छ़ोग ग्यु मई गर ज़े चिङ
माया रूपी नाना नृत्य करने वाले।

རྣམ་གྲོལ་འབྲས་བུ་སྟེར་མཛད་པའི། །
नम डोल डेस् बु तेर ज़े पई
विमुक्ति-फल को देने वाले।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

སྐུ་ཡི་རྣམ་སྤྲུལ་རེ་རེས་ཀྱང་། །
कु यि नम टुल रे रेस् क्यङ
विनिर्मित एक-एक काय के द्वारा भी।

སེམས་ཅན་ཁམས་ནི་དཔག་མེད་པའི། །
सेम चेन खम नि पग मेद् पई
अपरिमित सत्त्व-धातुओं के।

དགོས་འདོད་ཡིད་བཞིན་སྐོང་མཛད་པའི། །
गोस् दोद् यिद् शिन कोङ ज़े पई
मनोवाञ्छित आवश्यकताओं को पूरा करने वाले।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

ཇི་སྲིད་འཁོར་བ་དེ་སྲིད་དུ། །
जि सिद् खोर व दे सिद् दु
जब तक संसार है, तब तक।

ཐུགས་རྗེའི་ལྕགས་ཀྱུས་འགྲོ་བ་འདྲེན། །
थुग जे चग क्युस् डो व डेन
करुणा रूपी अंकुश से प्राणियों को आकर्षित करते।

བརྗོད་དུ་མེད་པའི་ངང་ཉིད་ལས། །
जोद् दु मेद् पई ङङ ञिद् लेस
अनिर्वचनीयता के स्वभाव द्वारा।

ཕྱོགས་བཅུ་ཀུན་ཏུ་སྒྲོགས་མཛད་པ། །
छोग चु कुन तु डोग ज़े प
समस्त दश दिशाओं में घोषित करने वाले।

སྲིད་གསུམ་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི། །
सिद् सुम डो व म लुस् पई
त्रिभव के अशेष सत्त्वों के।

ཐམས་ཅད་ཡིད་དང་མཐུན་གྱུར་པའི། །
थम चे यिद् दङ थुन ग्युर पई
सभी (वाक्) मन के अनुरूप होते हैं।

གསུང་གི་བརྗོད་པ་རེ་རེས་ཀྱང་། །
सुङ गि जोद् प रे रेस् क्यङ
एक-एक वाक्-वचनों से भी।

ཐར་པའི་ལམ་མཆོག་སྟོན་མཛད་པའི། །
थर पई लम छोग तोन ज़े पई
परम मोक्ष मार्ग को दिखाने वाले।

ཞི་སོགས་ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀུན། །
शि सोग लेस नम थम चे कुन
शान्त आदि समस्त सभी कर्म।

སྐུ་ལ་མཛད་པ་རྒྱུན་མི་འཆད། །
कु ल ज़े प ग्युन मि छे
काय-कर्म का विच्छेद नहीं होता।

རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दोर जेई कु ल छग छ़ल तोद्
वज्रकाय की नमन-स्तुति है।।

ཚངས་པ་ལ་སོགས་སྙན་པའི་དབྱངས། །
छ़ङ प ल सोग ञेन पई यङ
ब्रह्म इत्यादि मधुर घोष।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

རྣ་བའི་དབང་པོ་ཚིམ་མཛད་ཅིང་། །
न बई वङ पो छ़िम ज़े चिङ
कर्णेन्द्रिय को सन्तुष्ट करने वाले।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

མ་རིག་མུན་པ་སེལ་མཛད་ཅིང་། །
म रिग मुन प सेल ज़े चिङ
अज्ञानान्धकार को हटाने वाले।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

ཞལ་ནས་བརྗོད་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
शल नेस् जोद् प त्सम ग्यीस् नि
मुख से वाचन करने मात्र से।

ཚུལ་བཞིན་དུ་ནི་གྲུབ་གྱུར་པའི། །
छुल शिन दु नि डुप ग्युर पई
यथा विधि सिद्ध करने वाले।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེའི་གསུང་དབྱངས་ཀྱིས། །
ज़प चिङ ग्य छे सुङ यङ क्यीस्
गम्भीर और विस्तृत वाक्-घोष द्वारा।

ཐེ་ཚོམ་དྲྭ་བ་གཅོད་མཛད་ཅིང་། །
थे छ़ोम ड◌ॖ व चोद् ज़े चिङ
विचिकित्सा-जाल को काटने वाले।

ཡིད་བདེ་དང་བ་སྟེར་མཛད་པའི། །
यिद् दे दङ व तेर ज़े पई
सुखी चित्त (चित्त-सुख), श्रद्धा को देने वाले।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

འགྲོ་བའི་དགོས་འདོད་ཐམས་ཅད་ཀུན། །
डो बई गोस् दोद् थम चे कुन
प्राणियों की समस्त सभी आवश्यकताएँ।

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་སྨོན་ལམ་གྱིས། །
थुग जे छेन पोइ मोन लम ग्यीस्
महाकारुणिक के प्रणिधान द्वारा।

ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་འབྱུང་གྱུར་པའི། །
फुन सुम छ़ोग पर छुङ ग्युर पई
सम्पन्नता प्राप्त होने वाले।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

གསུང་གི་རྣམ་སྤྲུལ་རང་བྱུང་གསུང་། །
सुङ गि नम टुल रङ छुङ सुङ
वाक् विनिर्मित स्वयंभू वाक् है।

ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་དངོས་རྣམས་ལ། །
नम खा ल सोग ङोस् नम ल
आकाश इत्यादि द्रव्यों में।

ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་ནི་འབྱུང་གྱུར་པའི། །
छोस् क्यि ड नि छुङ ग्युर पई
धर्म शब्दोदय होने वाले।

རྣམ་དག་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
नम दग सुङ ल छग छ़ल तोद्
विशुद्ध वाक् की नमन-स्तुति है।।

ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དང་། །
फुङ पो खम दङ क्ये छेद् दङ
स्कन्ध-धातु तथा आयतन और।

གཟུང་དང་འཛིན་པ་ལ་སོགས་པའི། །
ज़ुङ दङ ज़िन प ल सोग पई
ग्राह्य (विषय) और ग्राहक (चित्त) इत्यादि।

རྟོག་པ་ཀུན་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ། །
तोग प कुन लेस नम पर डोल
समस्त विकल्पों से विनिर्मुक्त।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छ़ल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་དཔག་ཏུ་མེད། །
सम ग्यीस् मि ख्यप पग तु मेद्
(हैं) अचिन्त्य, अपरिमित हैं।

ཚད་མེད་གཞལ་དུ་མེད་གྱུར་ཅིང༌། །
छ़े मेद् शल दु मेद् ग्युर चिङ
(हैं) अपरिमित, अतुल्य हैं।

མཉམ་པ་མེད་ཅིང་དཔེ་མེད་པའི། །
ञम प मेद् चिङ पे मेद् पई
(हैं) अनुपम, उपमा रहित हैं।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छ़ल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

འཁོར་འདས་ཆོས་རྣམས་མ་ལུས་ཀུན། །
खोर देस् छोस् नम म लुस् कुन
संसार-निर्वाण के अशेष धर्मों को।

ཉིད་ཀྱི་ཐུགས་སུ་མཁྱེན་གྱུར་ཅིང༌། །
ञिद् क्यि थुग सु ख्येन ग्युर चिङ
अपने चित्त में जानने वाले।

མཁའ་ལྟར་དྲི་མ་མི་མངའ་བའི། །
खा तर डि म मि ङा बई
आकाशवत् मल से युक्त नहीं जो।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छ़ल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

འཇིག་རྟེན་སྤྱོད་པ་སྣ་ཚོགས་ཀུན། །
जिग तेन चोद् प न छ़ोग कुन
सभी विचित्र लोक-आचरण।

ཀུན་རྫོབ་སྒྱུ་མ་ལྟར་གཟིགས་ཤིང༌། །
कुन ज़ोप ग्यु म तर ज़िग शिङ
संवृति मायावत् देखते।

སྐྱེ་འཇིག་མེད་པར་མཁྱེན་གྱུར་པའི། །
क्ये जिग मेद् पर ख्येन ग्युर पई
उत्पत्ति-नाश रहित को जानने वाले।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छ़ल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

དུས་གསུམ་ཤེས་བྱ་མ་ལུས་ཀུན། །
दुस् सुम शेस् छ म लुस् कुन
त्रिकाल के अशेष सभी ज्ञेयों को।

སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་གཞི་མེད་པར། །
क्ये व मेद् चिङ शि मेद् पर
अनुत्पन्न और आश्रय विहीन।

སྐད་ཅིག་ཉིད་ལ་མཁྱེན་གྱུར་པའི། །
के चिग ञिद् ल ख्येन ग्युर पई
क्षण भर में जानने वाले।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छ़ल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་འགག་པ་མེད། །
क्ये व मेद् चिङ गग प मेद्
अनुत्पन्न तथा अनिरोध।

དམིགས་མེད་རབ་ཏུ་མི་གནས་པ། །
मिग मेद् रप तु मि नेस् प
अनालम्ब, सुस्थित नहीं है।

མཚན་ཉིད་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན། །
छेन ञिद् मेद् पई छेन ञिद् चेन
लक्षण रहितों में हैं लक्षणवान्।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

རྣམ་དག་སྤྲོས་དང་བྲལ་བའི་ཐུགས། །
नम दग टोस् दङ डल बई थुग
विशुद्ध, प्रपञ्च से रहित रूपी चित्त।

སྐྱོན་སྤངས་ཐུགས་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཅན། །
क्योन पङ थुग जे दग ञिद् चेन
त्यक्त दोष, करुणा रूपी आत्मतत्व वाले।

སངས་རྒྱས་ཕྲིན་ལས་མཛད་པ་པོ། །
सङ ग्येस् ठिन लेस ज़े प पो
बुद्ध-कर्म को करने वाले।

ཡེ་ཤེས་ཐུགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ये शेस् थुग ल छग छल तोद्
ज्ञान-हृदय की नमन-स्तुति है।।

སྡིག་པ་བཤགས་པ་ནི། དཔང་སྐོང་ཕྱག་རྒྱའི་མདོ་ལས་གསུངས་པ།
पापदेशना तो, पङ्-कोङ् छग्-ग्या-पा सूत्र में–

བདག་ཅག་གི་སྐྱེ་བ་འདི་དང་སྐྱེ་བ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མ་མཆིས་པ་ནས་སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་འཁོར་བ་ན་
दग चग गि क्ये व दि दङ क्ये व थोग म दङ थ म म छीस् प नेस् सिद् प सुम ग्यि खोर व न
हमारा यह जन्म तथा अनादि-अनन्त काल से त्रिभव संसार में संसरण

འཁོར་ཞིང་འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་གསུམ་གྱི་དབང་གིས་ལུས་དང་། ངག་དང་། ཡིད་
खोर शिङ दोद् छग दङ   शे दङ दङ   ति मुग सुम ग्यि वङ गीस् लुस् दङ   ङग दङ   यिद्
करते राग, द्वेष एवं मोह तीनों के वशीभूत होकर काय, वाक् तथा चित्त के

ཀྱི་སྒོ་ནས་མི་དགེ་བ་བཅུ་དང་། མཚམས་མེད་པ་ལྔ་ལ་སོགས་ཏེ། གསུང་རབ་ཀུན་ལས་འགལ་བའི་སྡིག་པ་མི་
क्यि गो नेस् मि गे व चु दङ   छम मेद् प ङ ल सोग ते   सुङ रप कुन लेस गल बई दिग प मि
द्वारा दशाकुशल(-कर्म) तथा पाँच आनन्तर्य(-कर्म) आदि समस्त वाङ्मयों से विरुद्ध पाप (रूपी) अकुशलकर्म

དགེ་བའི་ལས་བདག་གིས་ཅི་བགྱིས་པ་དང་། གཞན་ལ་བཅོལ་བ་དང་། གཞན་བགྱིད་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་དེ་
गे बई लेस दग गीस् चि ग्यीस् प दङ   शेन ल चोल व दङ   शेन ग्यिद् प ल जेस् सु यि रङ व दे
जो भी मैंने किए हों, दूसरों से कराए हों तथा दूसरों के किए का अनुमोदन किए हों,

དག་རྡུལ་ཙམ་བག་ཙམ་ཡང་མ་ལུས་པར་མཐོལ་ཞིང་བཤགས་སོ། །སྤྱངས་ཤིང་བསལ་ཏོ། །གཞིག་ཅིང་གདོན་
दग दुल त्स़म बग त्स़म यङ म लुस् पर थोल शिङ शग सो   छङ शिङ सल तो   शिग चिङ दोन
वे (सभी) अणुमात्र वासना मात्र भी न रखकर देशना करता हूँ। शोधित कर निवारण करता हूँ। नष्ट कर निकाल देता हूँ।

ནོ། །མི་འཆབ་བོ། །མི་སྦེད་དོ། །མི་བསྙེན་མི་བགྱིད་དོ། །
नो मि छप बो मि बेद् दो मि ञेन मि ग्यिद् दो
**प्रतिच्छादन नहीं करता हूँ। नहीं छुपाता हूँ। पास नहीं रखता हूँ। नहीं करता हूँ।।**

ཕུང་པོ་གསུམ་པའི་མདོ་ཡང་འདོན། སྐྱབས་འགྲོ་དང་སེམས་བསྐྱེད་ཀྱི་སྡོམ་པ་བཟུང་བ་ནི། སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པའི་ཆོ་ག་ལས།

(यहाँ) त्रिस्कन्धसूत्र का पाठ करना चाहिए। शरणगमन तथा (बोधि-)चित्तोत्पादसंवर का ग्रहण तो, आचार्य नागार्जुन के बोधिचित्तोत्पाद-विधि में–

སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ།
सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे दग ल गोङ सु सोल
**बुद्ध एवं समस्त बोधिसत्त्व मुझे ध्यान दें।**

བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གདུང་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་བགྱི་བའི་སླད་དུ། དུས་འདི་ནས་བཟུང་སྟེ།
दग मिङ दि शेस् ग्यि वे सङ ग्येस् क्यि दुङ ग्युन मि छे पर ग्यि बई ले दु दुस् दि नेस् ज़ुङ ते
**मैं अमुक...नाम वाला बुद्धगोत्र की अविच्छिन्नता के लिए इस काल से**

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་གནས་ཀྱི་བར་དུ། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྐང་གཉིས་ཀྱི་མཆོག་
छङ छुप क्यि ञिङ पो ल नेस् क्यि बर दु यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् कङ ञीस् क्यि छोग
**बोधिगर्भ में स्थापित होने तक द्विपादों में श्रेष्ठ सम्यक् सम्बुद्ध की**

ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི་སྟེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ། ཐམས་ཅད་གཟིགས་པ། འཇིགས་པ་
ल क्यप सु छि ते थुग जे छेन पो दङ देन प थम चे ख्येन प थम चे ज़िग प जिग प
**शरण में जाता हूँ। महाकरुणावान्, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्वभयमुक्त,**

ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ། སྐྱེས་བུ་ཁྱུ་མཆོག །སྐུ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ། བླ་ན་མེད་པའི་
थम चे दङ डल व क्येस् बु छेन पो क्येस् बु ख्यु छोग कु सम ग्यीस् मि ख्यप प ल न मेद्
**पुरुषोत्तम, पुरुष वृषभ, अचिन्त्य काय, अनुत्तर काय, धर्मकायवान्**

སྐུ། ཆོས་ཀྱི་སྐུ་མངའ་བ་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །ཆོས་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་མཆོག་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི་
पई कु छोस् क्यि कु ङा व ल क्यप सु छिह़ो छोस् दोद् छग दङ डल बई छोग ल क्यप सु छि
**की शरण में जाता हूँ। धर्म विराग में श्रेष्ठ की शरण में जाता हूँ।**

སྟེ། བླ་ན་མེད་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་མངའ་བ། ཞི་བ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་སོ་སོར་རང་གིས་རིག་པ་ལ་
ते ल न मेद् प दे शिन शेग प ल ङा व शि व छोस् क्यि कु सो सोर रङ गीस् रिग प ल
**अनुत्तर, तथागत में युक्त, शान्त धर्मकाय प्रतिसंविद् की**

སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །དགེ་འདུན་དུལ་བ་ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི་སྟེ། ཕྱོགས་བཞིའི་འཕགས་པ་ཕྱིར་མི་
क्यप सु छिहो गेन दुन दुल व छोग क्यि छोग ल क्यप सु छि ते छोग शी फग प छिर मि
**शरण में जाता हूँ। संघ दम्य गण में श्रेष्ठ की शरण में जाता हूँ। चार दिशाओं के**

ལྡོག་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོའི་དགེ་འདུན་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །
दोग पई छङ छुप सेम पा छेन पोइ गेन दुन ल क्यप सु छिहो
**आर्य अनिवर्तनीय महाबोधिसत्त्व के संघ की शरण में जाता हूँ।**

དེ་སྐད་ལན་གསུམ་བཟླ། སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བའོ། །
इस प्रकार तीन बार अनुवृत्ति करें। (यह) शरणगमन है।

སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་དུས་
सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे दग ल गोङ सु सोल दग मिङ दि शेस् ग्यि व दुस् दि
**बुद्ध एवं समस्त बोधिसत्त्व मुझे ध्यान दें। मैं अमुक...नामक**

འདི་ནས་བཟུང་སྟེ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་གནས་ཀྱི་བར་དུ། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་
नेस् ज़ुङ ते छङ छुप क्यि ञिङ पो ल नेस् क्यि बर दु सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे
**इस काल से लेकर बोधिगर्भ में स्थित होने तक बुद्ध एवं समस्त**

དུས་ཇི་ལྟ་བ་དང་སྟོབས་ཅི་མཆིས་པ་བཞིན་དུ་བདག་འབུལ་ཞིང་མཆིས་ན། མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་
ल दुस् जि त व दङ तोप चि छीस् प शिन दु दग बुल शिङ छीस् न गोन पो थुग जे छेन पो
**बोधिसत्त्वों को यथावत् समय तथा यथा सामर्थ्य स्वयं का अर्पण करता हूँ। नाथ महाकरुणावान्**

དག་བདག་བཞེས་སུ་གསོལ།
दङ देन प दग दग शेस् सु सोल
**लोग, प्रार्थना है कि मुझे ग्रहण करें।**

དེ་སྐད་ལན་གསུམ་བཟླ། བདག་དབུལ་བའོ། །
ऐसा तीन बार अनुवृत्ति करें। (यह) स्वयं का अर्पण है।

སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ། ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་
सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा थम चे दग ल गोङ सु सोल जि तर ङोन ग्यि दे शिन शेग प ड
**बुद्ध एवं समस्त बोधिसत्त्व मुझे ध्यान दें। जैसे पूर्व के तथागत**

པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དག་སྔོན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱད་པ་སྤྱོད་པའི་ཚེ། སེམས་
चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् दग ङोन छङ छुप सेम पई चे प चोद् पई छे सेम
अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध लोग पूर्व में बोधिसत्त्व का आचरण करते समय समस्त सत्त्वों को तारने,

ཅན་ཐམས་ཅད་བསྒྲལ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དགྲོལ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དབུགས་དབྱུང་བ་དང་།
चेन थम चे डल व दङ सेम चेन थम चे डोल व दङ सेम चेन थम चे उग युङ व
समस्त सत्त्वों को मुक्त करने, समस्त सत्त्वों को आश्वस्त करने, समस्त सत्त्वों को

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་
दङ सेम चेन थम चे योङ सु न्य ङेन लेस दा व दङ सेम चेन थम चे थम चे ख्येन पई
परिनिर्वाण प्राप्त कराने तथा समस्त सत्त्वों को सर्वज्ञता ज्ञान पर

ཡེ་ཤེས་ལ་དགོད་པའི་སླད་དུ། ཇི་ལྟར་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཐུགས་བསྐྱེད་པ་དེ་
ये शेस् ल गोद् पई ले दु जि तर ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप तु थुग क्येद् प दे
आरूढ करने के लिए जैसे अनुत्तर सम्यक् सम्बोधि में चित्तोत्पाद किए,

བཞིན་དུ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་ཡང་དུས་འདི་ནས་བཟུང་སྟེ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་མཆིས་ཀྱི་
शिन दु दग मिङ दि शेस् ग्यि व यङ दुस् दि नेस् ज़ुङ ते छङ छुप क्यि ञिङ पो ल छीस् क्यि
वैसे ही मैं अमुक...नामक भी इस काल से लेकर बोधिगर्भ की प्राप्ति पर्यन्त

བར་དུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བསྒྲལ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དགྲོལ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་
बर दु सेम चेन थम चे डल व दङ सेम चेन थम चे डोल व दङ सेम चेन थम चे
समस्त सत्त्वों को तारने, समस्त सत्त्वों को मुक्त करने, समस्त सत्त्वों को

དབུགས་དབྱུང་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཐམས་
उग युङ व दङ सेम चेन थम चे योङ सु न्य ङेन लेस दा व दङ सेम चेन थम चे थम
आश्वस्त करने, समस्त सत्त्वों को परिनिर्वाण प्राप्त कराने, समस्त सत्त्वों को सर्वज्ञता

ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་དགོད་པའི་སླད་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་དོ། །
चे ख्येन पई ये शेस् ल गोद् पई ले दु ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप तु सेम क्येद् दो
ज्ञान पर आरूढ करने के लिए अनुत्तर सम्यक् सम्बोधि में चित्तोत्पाद करता हूँ।

ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དེ་དག་གིས་
जि तर ङोन ग्यि सङ ग्येस् चोम देन देस् नम दङ छङ छुप सेम पा छेन पो दे दग गीस्
जैसे पूर्व के बुद्ध भगवान् तथा उन महाबोधिसत्त्वों के द्वारा

དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། ཕུང་པོ་དང་། ཁམས་དང་། སྐྱེ་མཆེད་དང་། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་རྣམ་
ङोस् पो थम चे दङ डल व फुङ पो दङ खम दङ क्ये छेद् दङ ज़ुङ व दङ ज़िन प नम
सर्वपदार्थ से रहित, स्कन्ध, धातु, आयतन तथा ग्राह्य (विषय) एवं ग्राहक (विषयी चित्त)

པར་སྤངས་པ། ཆོས་བདག་མེད་པ་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་རང་གི་སེམས་གཟོད་མ་ནས་མ་སྐྱེས་པ། སྟོང་པ་
पर पङ प छोस् दग मेद् प ञम प ञिद् क्यीस् रङ गि सेम ज़ोद् म नेस् म क्येस् प तोङ प
विरहित, धर्मानात्मता में समता के कारण स्वचित्त के अनादि काल से अनुत्पन्न होने,

ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་ཡང་
ञिद् क्यि ङो बो ञिद् क्यि छङ छुप क्यि सेम क्येद् प दे शिन दु दग मिङ दि शेस् ग्यि व यङ
शून्यता स्वभाव के कारण बोधिचित्त का उत्पाद किये, वैसे ही मैं अमुक...नाम वाला भी

དུས་འདི་ནས་བཟུང་སྟེ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་མཆིས་ཀྱི་བར་དུ་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་དོ། །ཇི་
दुस् दि नेस् ज़ुङ ते छङ छुप क्यि ञिङ पो ल छीस् क्यि बर दु छङ छुप तु सेम क्येद् दो जि
इस काल से लेकर बोधिगर्भ की प्राप्ति पर्यन्त बोधिचित्त उत्पन्न करता हूँ। जैसे पूर्व के उन

ལྟར་སྔོན་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དེ་དག་གིས་བདུད་དཔུང་དང་
तर ङोन ग्यि दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् दे दग गीस् दुद् पुङ दङ
तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धों ने मार (को) सेना सहित हराकर

བཅས་པ་ཕམ་པར་མཛད་དེ། ཉིད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པ་དེ་བཞིན་དུ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་
चेस् प फम पर ज़े दे ञिद् ङोन पर ज़ोग पर सङ ग्येस् प दे शिन दु दग मिङ दि शेस् ग्यि व
स्वयं अभिसम्बोधि को प्राप्त किये थे, वैसे ही मैं अमुक...नाम वाला भी

ཡང་བདུད་དཔུང་དང་བཅས་པ་མཐའ་དག་ཕམ་པར་བགྱིས་ཏེ། བདག་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བར་བགྱིའོ། །
यङ दुद् पुङ दङ चेस् प था दग फम पर ग्यीस् ते दग ङोन पर ज़ोग पर छ़ङ ग्य बर ग्यिहो
मारसेना सहित सभी को हराकर मैं अभिसम्बोधि को प्राप्त करूँगा।

ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དེ་དག་གིས་ཉིད་མངོན་
जि तर ङोन ग्यि दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् दे दग गीस् ञिद् ङोन
जैसे पूर्व के उन तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धों ने स्वयं अभिसम्बोधि

པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ནས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་དེ་བཞིན་ཏུ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་ཡང་
पर ज़ोग पर सङ ग्येस् नेस् छोस् क्यि खोर लो कोर व दे शिन तु दग मिङ दि शेस् ग्यि व यङ
को प्राप्त कर धर्मचक्र का प्रवर्त्तन किया था, वैसे ही मैं अमुक...नाम वाला

མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རབ་ཏུ་བསྐོར་བར་བགྱིའོ། །ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་དེ་
ङोन पर ज़ोग पर सङ ग्येस् ते छोस् क्यि खोर लो रप तु कोर बर ग्यिहो    जि तर ङोन ग्यि दे
अभिसम्बोधि को प्राप्त कर धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करूँगा। जैसे पूर्व के उन

བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དེ་དག་གིས་ཉིད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་
शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् दे दग गीस् ञिद् ङोन पर ज़ोग पर
तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धों ने स्वयं अभिसम्बोधि को प्राप्त कर

སངས་རྒྱས་ནས་ཚོགས་ཡོངས་སུ་བསྡུས་པ་དེ་བཞིན་དུ། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བ་ཡང་མངོན་པར་
सङ ग्येस् नेस् छ़ोग योङ सु बदुस् प दे शिन दु    दग मिङ दि शेस् ग्यि व यङ ङोन पर ज़ोग पर
सम्भार का पूर्ण संग्रह किया था, वैसे ही मैं अमुक...नाम वाला अभिसम्बोधि को प्रा

རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ་ཚོགས་ཡོངས་སུ་བསྡུ་བར་བགྱིའོ། །
सङ ग्येस् ते छ़ोग योङ सु बदु बर ग्यिहो
प्त कर सम्भार का सम्पूर्ण रूप से संग्रह करूँगा।

སྤྱོད་འཇུག་ལས་གསུངས་པ།
(बोधि-)चर्यावतार में कहा गया है–

བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོར་མཆིས་ཀྱི་བར། །
छङ छुप ञिङ पोर छीस् क्यि बर
बोधिगर्भ के गमन पर्यन्त।

སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
सङ ग्येस् नम ल क्यप सु छि
(मैं) बुद्धों के शरण में जाता।

ཆོས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡི། །
छोस् दङ छङ छुप सेम पा यि
धर्म और बोधिसत्त्व के।

ཚོགས་ལའང་དེ་བཞིན་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छ़ोग लहङ दे शिन क्यप सु छि
गण के भी, वैसे ही शरण में जाता हूँ।

ཇི་ལྟར་སྔོན་གྱི་བདེ་གཤེགས་ཀྱིས། །
जि तर ङोन ग्यि दे शेग क्यीस्
जैसे पूर्व के सुगतों ने।

བྱང་ཆུབ་ཐུགས་ནི་བསྐྱེད་པ་དང་། །
छङ छुप थुग नि क्येद् प दङ
बोधिचित्त का उत्पाद किया।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བསླབ་པ་ལ། །
छङ छुप सेम पई लप प ल
बोधिसत्त्व की शिक्षा में।

དེ་དག་རིམ་བཞིན་གནས་པ་ལྟར། །
दे दग रिम शिन नेस् प तर
वे क्रमवत् स्थित हुए।

དེ་བཞིན་འགྲོ་ལ་ཕན་དོན་དུ། །
दे शिन डो ल फेन दोन दु
वैसे ही सत्त्व-हित हेतु।

བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་བསྐྱེད་བགྱི་ཞིང་། །
छङ छुप सेम नि क्येद् ग्यि शिङ
बोधिचित्त का उत्पाद करता हूँ।

དེ་བཞིན་དུ་ནི་བསླབ་པ་ལའང་། །
दे शिन दु नि लप प लहृङ
वैसे ही (त्रि-)शिक्षाओं को भी।

རིམ་པ་བཞིན་དུ་བསླབ་པར་བགྱི། །
रिम प शिन दु लप पर ग्यि
क्रमवत् (मैं) सीखूँगा।।

དེ་སྐད་ལན་གསུམ་བཟླ། བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པའོ། །རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་ནི། སྤྱོད་འཇུག་ལས།
इस प्रकार तीन बार अनुवृत्ति करनी चाहिए। अनुमोदन तो (बोधि-)चर्यावतार में–

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་ངན་སོང་གི །
सेम चेन कुन ग्यि ङेन सोङ गि
सर्वसत्त्वों के दुर्गतियों के।

སྡུག་བསྔལ་ངལ་གསོའི་དགེ་བ་དང་། །
दुग ङल ङल सोइ गे व दङ
दुःख विश्रामक कुशल तथा।

སྡུག་བསྔལ་ཅན་དག་བདེར་གནས་ལ། །
दुग ङल चेन दग देर नेस् ल
जो दुःखी सुख-स्थित हैं, हेतु।

དགའ་བས་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་། །
गा वे जेस् सु यि रङ ङो
प्रसन्नता से अनुमोदन करता हूँ।।

བྱང་ཆུབ་རྒྱུར་གྱུར་དགེ་བསགས་པ། །
छङ छुप ग्युर ग्युर गे सग प
बोधि-हेतुभूत कुशल संचय हैं।

དེ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་། །
दे ल जेस् सु यि रङ ङो
उनके प्रति अनुमोदन करता हूँ।

ལུས་ཅན་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལས། །
लुस् चेन खोर बई दुग ङल लेस
कायी संसार रूपी दुःखों से।

ངེས་པར་ཐར་ལ་ཡི་རང་ངོ་། །
ङेस् पर थर ल यि रङ ङो
नियत मुक्ति का अनुमोदन करता हूँ।।

སྐྱོབ་པ་རྣམས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་དང་། །
क्योप प नम क्यि छङ छुप दङ
तायियों के बोधि तथा।

རྒྱལ་སྲས་ས་ལའང་ཡི་རང་ངོ་། །
ग्यल सेस् स लहृङ यि रङ ङो
जिनपुत्र भूमि का भी अनुमोदन करता हूँ।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་མཛད་པའི། །
सेम चेन थम चे दे ज़े पई
सर्वसत्त्व सुखकारी।

ཐུགས་བསྐྱེད་དགེ་བ་རྒྱ་མཚོ་དང་། །
थुग क्येद् गे व ग्य छ़ो दङ
चित्तोत्पाद कुशल-सागर तथा।

སེམས་ཅན་ཕན་པར་མཛད་པ་ལ། །
सेम चेन फेन पर ज़े प ल
सत्त्व के हित करने वाले।

དགའ་བས་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་། །
गा वे जेस् सु यि रङ ङो
प्रसन्नता से अनुमोदन करता हूँ।।

ཆོས་འཁོར་བསྐུལ་བ་ནི།
धर्मचक्र(-प्रवर्त्तन) हेतु प्रार्थना तो–

ཕྱོགས་རྣམས་ཀུན་གྱི་སངས་རྒྱས་ལ། །
छोग नम कुन ग्यि सङ ग्येस् ल
समस्त दिशाओं के बुद्धों से।

ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ་གསོལ་བ་ནི། །
थल मो छर ते सोल व नि
अञ्जलिबद्ध होकर अध्येषणा करता हूँ।

སེམས་ཅན་སྡུག་བསྔལ་མུན་འཐོམས་ལ། །
सेम चेन दुग ङल मुन थोम ल
सत्त्व दुःखान्धकार में भटकने वालों में।

ཆོས་ཀྱི་སྒྲོན་མེ་སྦར་དུ་གསོལ། །
छोस् क्यि डोन मे बर दु सोल
प्रार्थना है, धर्मदीप को जलाएँ।।

མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བར་བཞུགས་གསོལ་ནི།
(परि-)निर्वाण को प्राप्त नहीं कर (लोक में) स्थिति हेतु प्रार्थना तो–

རྒྱལ་བ་མྱ་ངན་འདའ་བཞེད་ལ། །
ग्यल व न्य ङेन दा शेद् ल
जिन (बुद्ध), निर्वाण की इच्छा वालों से।

ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ་གསོལ་བ་ནི། །
थल मो छर ते सोल व नि
प्रार्थना है, अञ्जलिबद्ध होकर।

འགྲོ་འདི་ལྡོངས་པར་མི་དགོད་ཅིང་། །
डो दि दोङ पर मि गोद् चिङ
इन सत्त्वों को अन्धभूत नहीं छोड़कर।

བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་བཞུགས་པར་གསོལ། །
कल प डङ मेद् शुग पर सोल
प्रार्थना है, असंख्य कल्प स्थित हों।।

བསྔོ་སྨོན་བྱ་བ་ནི། དེ་ལྟར་འདི་དག་ཀུན་བྱས་ཏེ། །
दे तर दि दग कुन छेस् ते
परिणामना-प्रणिधान तो–वैसे ये सब करने से।

དགེ་བ་བདག་གིས་བསགས་པ་གང་། །
गे व दग गीस् सग प गङ
जो कुशल मैंने संचित किए हैं।

དེས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
देस् नि सेम चेन थम चे क्यि
उसके द्वारा समस्त सत्त्वों के।

སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་བསལ་བར་ཤོག །
दुग ङल थम चे सल वर शोग
समस्त दुःखों का निवारण हो जाए।।

འགྲོ་བ་ནད་པ་ཇི་སྲིད་དུ། །
डो व ने प जि सिद् दु
सत्त्व रोगी जब तक हैं।

སྨན་དང་སྨན་པ་ཉིད་དག་དང་། །
मेन दङ मेन प ञिद् दग दङ
औषध तथा भैषज्य और।

ཟས་དང་སྐོམ་གྱི་ཆར་ཕབ་སྟེ། །
ज़ेस् दङ कोम ग्यि छर फप ते
खाद्य तथा पेय की वर्षा कर।

མུ་གེའི་བསྐལ་པ་བར་མའི་ཚེ། །
मु गे कल प बर मई छे
अकाल रूपी मध्य कल्प में।

སེམས་ཅན་ཕོངས་ཤིང་དབུལ་བ་ལ། །
सेम चेन फोङ शिङ उल व ल
सत्त्व विपत्तियुक्त निर्धनता में।

ཡོ་བྱད་མཁོ་དགུ་སྣ་ཚོགས་སུ། །
यो छे खो गु न छ्रोग सु
नाना आवश्यक सामग्रियों (के रूप) में।

ལུས་དང་དེ་བཞིན་ལོངས་སྤྱོད་དང་། །
लुस् दङ दे शिन लोङ चोद् दङ
काय, ऐसे ही सम्पत्ति तथा।

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་དོན་སྒྲུབ་ཕྱིར། །
सेम चेन कुन ग्यि दोन ड्रुप छिर
समस्त सत्त्वों के अर्थ-साधन हेतु।

ཐམས་ཅད་བཏང་བས་མྱ་ངན་འདའ། །
थम चे तङ वे न्य ङेन दा
सर्वत्याग से निर्वाणी हैं।

ནད་སོས་གྱུར་གྱི་བར་དུ་ནི། །
ने सोस् ग्युर ग्यि बर दु नि
रोग के ठीक होने तक।

དེ་ཡི་ནད་གཡོག་བྱེད་པར་ཤོག །
दे यि ने योग छेद् पर शोग
उस रोगी का सेवक बनूँ।।

བཀྲེས་དང་སྐོམ་པའི་སྡུག་བསྔལ་བསལ། །
टेस् दङ कोम पई दुग ङल सल
भूख एवं प्यास-दुःख को हटाऊँ।

བདག་ནི་ཟས་དང་སྐོམ་དུ་གྱུར། །
दग नि ज़ेस् दङ कोम दु ग्युर
मैं खाद्य और पेय बनूँ।।

བདག་ནི་མི་ཟད་གཏེར་གྱུར་ཏེ། །
दग नि मि ज़े तेर ग्युर ते
अक्षय निधि बन जाऊँ मैं।

མདུན་ན་ཉེ་བར་གནས་གྱུར་ཅིག །
दुन न ञे वर नेस् ग्युर चिग
(उनके) समक्ष उपस्थित हो जाऊँ (मैं)।।

དུས་གསུམ་དགེ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
दुस् सुम गे व थम चे क्यङ
त्रैकालिक समस्त पुण्य भी।

ཕངས་པ་མེད་པར་གཏང་བར་བྱ། །
फङ प मेद् पर तङ बर छ
अनासक्ति से त्याग करूँ।।

བདག་བློ་མྱ་ངན་འདས་པ་སྒྲུབ། །
दग लो न्य ङेन देस् प ड्रुप
अपना चित्त निर्वाणी बना।

ཐམས་ཅད་གཏོང་བར་ཆབས་ཅིག་ལ། །
थम चे तोङ बर छप चिग ल
सर्वत्याग समान होने पर भी।

སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་གཏོང་བ་མཆོག །
सेम चेन नम ल तोङ व छोग
श्रेष्ठ है, सत्त्वों को देना।।

བདག་གིས་ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ། །
दग गीस् लुस् चेन थम चे ल
मेरे द्वारा समस्त कायवानों (प्राणियों) को।

ལུས་འདི་ཅི་བདེར་བྱིན་ཟིན་གྱིས། །
लुस् दि चि देर छिन ज़िन ग्यीस्
यह काय यथेच्छ दे दिया है।

རྟག་ཏུ་གསོད་དང་སྨོད་པ་དང་། །
तग तु सोद् दङ मोद् प दङ
सदा मारें और निन्दा करें।

བརྡེག་སོགས་ཅི་དགར་བྱེད་ལ་རག །
देग सोग चि गर छेद् ल रग
यथा वाञ्छित पीटें भी क्या है।।

བདག་གི་ལུས་ལ་རྩེ་བྱེད་དམ། །
दग गि लुस् ल त्से छेद् दम
मेरे काय से क्रीड़ा करें या।

ཅོ་འདྲི་ག་ཞའི་རྒྱུ་བྱེད་ཀྱང་། །
चो डि ग शई ग्यु छेद् क्यङ
हँसे या विलास करें।

བདག་གི་ལུས་འདི་བྱིན་ཟིན་གྱིས། །
दग गि लुस् दि छिन ज़िन ग्यीस्
यह मेरा काय दिया जा चुका है।

འདི་ཡི་ཁ་ཏས་ཅི་ཞིག་བྱ། །
दि यि ख तेस् चि शिग छ
इसकी मुझे चिन्ता क्यों है।।

དེ་ལ་གནོད་པར་མི་འགྱུར་བའི། །
दे ल नोद् पर मि ग्युर बई
उसे अहित न होने वाले।

ལས་གང་ཡིན་པ་བྱེད་དུ་ཆུག །
लेस गङ यिन प छेद् दु छुग
जो कार्य हैं, कराएँ (मुझसे)।

བདག་ལ་དམིགས་ནས་ནམ་དུ་ཡང་། །
दग ल मिग नेस् नम दु यङ
मुझको आलम्बन कर, कभी भी।

འགའ་ཡང་དོན་མེད་མ་གྱུར་ཅིག །
गा यङ दोन मेद् म ग्युर चिग
कुछ भी अनर्थ न हो जाए।।

བདག་ལ་དམིགས་ནས་གང་དག་གི། །
दग ल मिग नेस् गङ दग गि
मुझे आलम्बन कर जिनके अन्दर।

ཁྲོ་འམ་དད་པའི་སེམས་བྱུང་བ། །
ठो हम दे पई सेम छुङ व
क्रोध या श्रद्धा-चित्त होए।

དེ་ཉིད་རྟག་ཏུ་དེ་དག་གི །
देञिद् तग तु दे दग गि
वही सदा उन (लोगों) के।

དོན་ཆེན་འགྲུབ་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །
दोन छेन डुप पई ग्युर ग्युर चिग
महान् हितसिद्धि का हेतु बन जाए।।

གང་དག་བདག་ལ་ཁ་ཟེར་རམ། །
गङ दग दग ल ख ज़ेर रम
जो मेरी निन्दा करें या।

གཞན་དག་གནོད་པ་བྱེད་པ་འམ། །
शेन दग नोद् प छेद् प ह़म
और अन्य जो अपकारी।

དེ་བཞིན་འཕྱར་ཀ་གཏོང་ཡང་རུང་། །
दे शिन छर क तोङ यङ रुङ
वैसे ही उपहास करें मेरा।

ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་སྐལ་ལྡན་གྱུར། །
थम चे छङ छुप कल देन ग्युर
सभी बोधि के भागी हों।।

བདག་ནི་མགོན་མེད་རྣམས་ཀྱི་མགོན། །
दग नि गोन मेद् नम क्यि गोन
अनाथों का नाथ बनूँ और।

ལམ་ཞུགས་རྣམས་ཀྱི་དེད་དཔོན་དང་། །
लम शुग नम क्यि देद् पोन दङ
यात्रियों का सार्थवाह बन जाऊँ।

རྒལ་འདོད་རྣམས་ཀྱི་གྲུ་དང་ནི། །
गल दोद् नम क्यि डु दङ नि
पारेच्छुकों की नाव बनूँ तथा।

གཟིངས་དང་ཟམ་པ་ཉིད་དུ་གྱུར། །
ज़िङ दङ ज़म प ञिद् दु ग्युर
सेतु तथा बेड़ा बन जाऊँ।।

གླིང་དོན་གཉེར་ལ་གླིང་དང་ནི། །
लिङ दोन ञेर ल लिङ दङ नि
द्वीपार्थियों का द्वीप बनूँ।

གནས་མལ་འདོད་ལ་གནས་མལ་དང་། །
नेस् मल दोद् ल नेस् मल दङ
शय्यार्थियों की (मैं) शय्या।

བདག་ནི་ལུས་ཅན་བྲན་འདོད་པ། །
दग नि लुस् चेन डेन दोद् प
दासार्थियों के लिए दास।

ཀུན་གྱི་བྲན་དུ་འགྱུར་བར་ཤོག །
कुन ग्यि डेन दु ग्युर बर शोग
बनूँ सभी देहवानों हेतु।।

ཡིད་བཞིན་ནོར་དང་བུམ་པ་བཟང་། །
यिद् शिन नोर दङ बुम प ज़ङ
चिन्तामणि तथा भद्रघट।

རིག་སྔགས་གྲུབ་དང་སྨན་ཆེན་དང་། །
रिग ङग डुप दङ मेन छेन दङ
सिद्धविद्या तथा महौषधि।

དཔག་བསམ་གྱི་ནི་ཤིང་དག་དང་། །
पग सम ग्यि नि शिङ दग दङ
बनूँ कल्पवृक्ष और।

ལུས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་འདོད་འཇོར་གྱུར། །
लुस् चेन नम क्यि दोद् जोर ग्युर
देहवानों की कामधेनु।।

ས་སོགས་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་དང་། །
स सोग छुङ व छेन पो दङ
जैसे महाधातु पृथ्वी-आदि।

ནམ་མཁའ་བཞིན་དུ་རྟག་པར་ཡང་། །
नम खा शिन दु तग पर यङ
समस्त आकाश में रहने वाले।

སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཡི། །
सेम चेन पग तु मेद् प यि
(संसार स्थित) अपरिमित सत्त्वों के।

དེ་བཞིན་ནམ་མཁའི་མཐས་ཐུག་པའི། །
दे शिन नम खई थेस् तुग पई
वैसे ही आकाशव्यापी।

ཐམས་ཅད་མྱ་ངན་འདས་བར་དུ། །
थम चे न्य ङेन देस् बर दु
सभी के परिनिर्वृत्त नहीं होने तक।

ནམ་མང་ཉེར་འཚོའི་གཞིར་ཡང་ཤོག །
नम मङ ञेर छ़ोइ शिर यङ शोग
नाना प्रकार से भोग्य होऊँ।।

སེམས་ཅན་ཁམས་ལ་ནམ་ཀུན་ཏུ། །
सेम चेन खम ल नम कुन तु
सत्त्वधातु हेतु पूरी तरह से।

བདག་ནི་ཉེར་འཚོའི་རྒྱུར་ཡང་ཤོག །
दग नि ञेर छ़ोइ ग्युर यङ शोग
मैं उपभोग्य (भोग) का हेतु बनूँ।।

ཐུགས་རྒྱུད་བསྐུལ་བའི་ཚུལ་དུ་ཤེར་ཕྱིན་ཡི་གེ་ཉུང་ངུ་ལས་གསུངས་པའི་གཟུངས་ནི།
चित्त-सन्तति की प्रेरणाक्रम हेतु प्रज्ञा-पारमिता-अल्पाक्षरी में उक्त धारणी तो–

ཏདྱ་ཐཱ། ཨོཾ་མུ་ནེ་མུ་ནེ་མ་ཧཱ་མུ་ན་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཞེས་ཅི་རིགས་དང་།
तद्यथा। ।ओं मुने मुने महामुनये स्वाहा।
तद्यता। ओं मुने मुने महामुनये स्वाहा।। ऐसा यथायोग करनी चाहिए।

མཁས་གྲུབ་ཀརྨ་ཆགས་མེད་ཀྱི་ནང་གཞུག་བཞག་ཐབས་ལས། བླ་བརྒྱུད་ཚང་མ་ཀུན་གྱི་མཚན་སྔགས་ནི།
विद्वान्-सिद्ध कर्मा छग्स-मेद् (अराग) द्वारा नङ्-जुग् शग्-थब्स (अध्यात्म प्रवेश स्थापन) में कहा गया है–समस्त गुरु-परम्पराओं का नाम-मन्त्र है–

ཨོཾ་ཨཱ་སརྦ་གུ་རུ་ཧཱུྃ་སྭཱ་ཧཱ།
ओं आ सर्व गुरु हूँ स्वाहा।
ओं आ सर्वगुरु हूँ स्वाहा।

དེ་ལ་མཚན་སྔགས་ཐམས་ཅད་འདུས་པ་ཡིན། །ཞེས་གསུངས་པའི་མཚན་སྔགས་ཀྱང་ཅི་འགྲུབ་ཏུ་བཟླའོ། །ས་བཅུ་པའི་མདོའི་ཆོས་ཀྱི་སྤྲིན་གྱི་ལེའུ་ལས་གསུངས་པའི་འོད་ཟེར་ཆེན་པོའི་དབང་བསྐུར་བའི་ཚུལ་ལྟར་མོས་ནས།

इसमें समस्त नाम-मन्त्र संगृहीत हैं। जो ऐसा कहा गया है, अतः (इस) नाममन्त्र का भी यथा सिद्ध जप करना चाहिए। दश-भूमिकसूत्र के धर्ममेघ नामक परिच्छेद में कहे महारश्मि-अभिषेक के नय के समान अधिष्ठति कर–

དེ་ལྟར་མཚན་ནས་བརྗོད་ཅིང་གཟུངས་བཟླས་པའི་རྐྱེན་གྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་
दे तर छ़ेन नेस् जोद् चिङ ज़ुङ देस् पई क्येन ग्यीस् दे शिन शेग प ड चोम प यङ दग पर
इस प्रकार नाम का वाचन कर धारणी-जप के कारण तथागत अर्हत् सम्यक्

པའི་སངས་རྒྱས་དང་འཁོར་དེ་དག་གི་མཛོད་སྤུ་དང་སྐུའི་གནས་དག་ནས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་མངོན་པར་ཤེས་
ज़ोग पई सङ ग्येस् दङ खोर दे दग गि ज़ोद् पु दङ कुइ नेस् दग नेस् थम चे ख्येन प ञिद् क्यि
**सम्बुद्ध तथा उन परिवारों के ऊर्णाकेश तथा काय-स्थानों से सर्वज्ञता-**

པ་དང་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་འོད་ཟེར་འཁོར་གྲངས་མེད་པ་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་བཅུ་བྱུང་སྟེ།
ङोन पर शेस् प दङ देन प शेस् छ बई ह़ोद् ज़ेर खोर डङ मेद् प ग्य तोङ ठग चु चु छुङ ते
**अभिज्ञायुक्त नामक रश्मियाँ असंख्य दश-दश शतसहस्र उद्भूत होकर,**

དེ་དག་གིས་ཕྱོགས་བཅུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་མ་ལུས་པར་སྣང་བར་བྱས་ནས།
दे दग गीस् छ्योग चु थम चे क्यि जिग तेन ग्यि खम थम चे म लुस् पर नङ वर छेस् नेस्
**उनके द्वारा समस्त दश दिशाओं के सारे अशेष लोकधातुओं को आभासित कर**

འཇིག་རྟེན་ལ་ལན་བཅུ་བསྐོར་བ་བྱས་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་བ་ཆེན་པོ་རྣམས་བསྟན། བྱང་ཆུབ་
जिग तेन ल लेन चु कोर व छेस् ते दे शिन शेग पई नम पर ठुल व छेन पो नम तेन छङ छुप
**लोक का दश बार प्रदक्षिणा कर तथागत के महाप्रातिहार्य (का) प्रदर्शन करते हैं। अनेक कोटिनियुतशतसहस्र**

སེམས་དཔའ་བྱེ་བ་ཁྲག་ཁྲིག་བརྒྱ་སྟོང་ཕྲག་མང་པོ་བསྐུལ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རབ་འབྱམས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་
सेम पा छे व ठग ठिग ग्य तोङ ठग मङ पो कुल सङ ग्येस् क्यि शिङ रप छम थम चे नम प
**बोधिसत्त्वों को प्रेरित किए। समस्त अनन्त बुद्धक्षेत्रों में षड्विध प्रकम्पन किया।**

དྲུག་ཏུ་བསྐྱོད། ངན་སོང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཆི་འཕོ་དང་། འགྲོ་བར་སྐྱེ་བ་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱས། བདུད་ཀྱི་
डुग तु क्योद् ङेन सोङ थम चे क्यि छि फो दङ डो बर क्ये व रप तु शि वर छेस् दुद् क्यि
**सर्वदुर्गतियों के संक्रमण तथा जगतोत्पाद को प्रशान्त किया।**

གནས་ཐམས་ཅད་མོག་མོག་པོར་བྱས། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་མངོན་པར་རྫོགས་པས་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་
नेस् थम चे मोग मोग पोर छेस् दे शिन शेग प थम चे ङोन पर ज़ोग पेस् छङ छुप प नम
**समस्त मार-स्थानों को धूमिल किया। सर्वतथागत अभिसम्बोध्याकार में**

པར་སངས་རྒྱས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གདན་ཀུན་ཏུ་བསྟན། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་
पर सङ ग्येस् पई सङ ग्येस् क्यि देन कुन तु तेन सङ ग्येस् थम चे क्यि खोर ग्यि दक्यिल खोर
**सम्बुद्धत्व के बुद्धासन को सर्वतः प्रदर्शित किया। समस्त बुद्धों के परिवार-मण्डल**

བཀོད་པའི་མཐུ་རབ་ཏུ་བསྟན། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱིས་ཁྱབ་པ། ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་
कोद् पई थु रप तु तेन जिग तेन ग्यि खम छोस् क्यि यिङ क्यीस् लेस् प नम खई खम क्यि
**व्यूहन की शक्ति का प्रदर्शन किया। लोकधातु की धर्मधातु में व्याप्ति। आकाशधातु से**

མཐས་གཏུགས་པ་ཐམས་ཅད་སྣང་བར་བྱས་ནས། ཕྱིར་ལོག་སྟེ་སེམས་ཅན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྟེང་
थेस् तुग प थम चे नङ वर छेस् नेस्  छिर लोग ते सेम चेन ग्यि दक्यिल खोर थम चे क्यि तेङ
व्याप्त सभी आभासित करके, प्रत्यवर्तन कर, सत्त्वों के समस्त मण्डलों के ऊपर से

ནས་བསྐོར་བ་བྱས་ནས་བཀོད་པ་ཆེན་པོ་བསྟན་ཏེ། འོད་ཟེར་དེ་དག་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་
नेस् कोर व छेस् नेस् कोद् प छेन पो तेन ते  ह़ोद् ज़ेर दे दग सेम चेन थम चे क्यि येन लग गि
प्रदक्षिणा कर महाव्यूहन का प्रदर्शन कर, वे सभी रश्मियाँ समस्त सत्त्वों के परम अवयवों में लीन हो गए।

དམ་པར་ནུབ་པར་གྱུར། དེའི་འཁོར་གྱི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱང་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་མགོར་ནུབ་པར་གྱུར།
दम पर नुप पर ग्युर  दे खोर ग्यि ह़ोद् ज़ेर नम क्यङ सेम चेन नम क्यि गोर नुप पर ग्युर
उनके परिवार की रश्मियाँ भी सर्वसत्त्वों के शीर्ष में लीन हो गईं।

འོད་ཟེར་དེ་དག་གིས་ཕོག་མ་ཐག་ཏུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྔོན་མ་ཐོབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་སྟོང་
ह़ोद् ज़ेर दे दग गीस् फोग म थग तु सेम चेन थम चे क्यीस् ङोन म थोप पई तिङ ङे ज़िन तोङ
उन रश्मियों के स्पर्श होने मात्र से समस्त सत्त्वों द्वारा पूर्व में अप्राप्त दस-दस हज़ार समाधियों को प्राप्त किये।

ཕྲག་བཅུ་བཅུ་རབ་ཏུ་ཐོབ། འོད་ཟེར་དེ་དག་ཀྱང་དུས་གཅིག་ཏུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་དམ་
ठग चु चु रप तु थोप  ह़ोद् ज़ेर दे दग क्यङ दुस् चिग तु सेम चेन थम चे क्यि येन लग गि दम
वे रश्मियाँ भी एक ही समय में समस्त सत्त्वों के परम-अवयव पर उतरीं और समस्त सत्त्व भी सम्यक्

པ་ལ་འབབ་པར་གྱུར་ཏེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡུལ་ལ་མངོན་
प ल बप पर ग्युर ते  सेम चेन थम चे क्यङ यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् क्यि युल ल ङोन
सम्बुद्धत्व रूपी विषय में अभिषेक को प्राप्त करके दशबल परिपूर्ण करके सम्यक् सम्बुद्धत्व की गणना को प्राप्त

པར་དབང་བསྐུར་བ་ཐོབ་སྟེ། སྟོབས་བཅུ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ནས་ནི། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སུ་བགྲང་བ་
पर वङ कुर व थोप ते  तोप चु योङ सु ज़ोग नेस् नि  यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् सु डङ
हुए।

ཡང་ཐོབ་པར་གྱུར་བསམས།
व यङ थोप पर ग्युर
ऐसा चिन्तन करना चाहिए।

སྨོན་ལམ་གདབ་པ་ནི། དཔང་སྐོང་ཕྱག་རྒྱ་པའི་མདོ་ལས།
प्रणिधान करना तो पङ्-कोङ् छग्-ग्या (नामक) सूत्र में–

དུས་འདི་ནས་ནམ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་མཆིས་ཀྱི་བར་དུ། དགོངས་པའི་དབང་གིས་ཆེད་དུ་སྤྲུལ་པ་མ་
दुस् दि नेस् नम छङ छुप क्यि ञिङ पो ल छीस् क्यि बर दु   गोङ पई वङ गीस् छेद् दु टुल प म
**इस काल से लेकर बोधिगर्भ पर्यन्त जाने तक भिप्रायवश जानबूझकर (काय रूप में) निर्मित होने के अतिरिक्त**

གཏོགས་པར་ནམ་ནམ་ཤར་ཤར་ཚེ་ཚེ་རབས་རབས་སུ་ངན་སོང་གསུམ་ལ་སོགས་ཏེ། བགེགས་རིགས་ཐམས་ཅད་དུ་
तोग पर नम नम शर शर छे छे रप रप सु ङेन सोङ सुम ल सोग ते   गेग रिग थम चे दु मि
**कभी-कभी, गौण-गौण, समय-समय, सन्तति-सन्तति में तीन दुर्गति आदि समस्त बाधा रूपी सन्ततियों में**

མི་སྐྱེ་ཞིང་མི་ལྟུང་བར་ཤོག་ཅིག །ལོག་པ་མི་དགེ་བའི་ལས་ལ་མི་ཕྱོགས་མི་བགྱིད་པར་ཤོག་ཅིག །
क्ये शिङ मि तुङ बर शोग चिग   लोग प मि गे बई लेस ल मि छोग मि ग्यिद् पर शोग चिग
**उत्पन्न न होकर (उनमें) पतित न हों। विपरीत अकुशलकर्म की ओर नहीं जाते हुए उनको नहीं करूँ।**

ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་རྒྱུ་ལ་མི་ཕྱོགས་མི་གསོག་པར་ཤོག་ཅིག །སྨད་པའི་ལུས་དང་སྡུག་བསྔལ་གྱི་
लेस दङ ञोन मोङ पई ग्यु ल मि छोग मि सोग पर शोग चिग   मे पई लुस् दङ दुग ङल ग्यि
**कर्म एवं क्लेश-हेतु की ओर न मुड़ते हुए (उनका) संचय नहीं करूँ। निन्दनीय काय तथा समस्त दुःख रूपी**

འབྲས་བུ་ཀུན་ལས་ཐར་ནས་ཕྱིན་ཆད་མི་སྤྱོང་བར་ཤོག་ཅིག །དུས་འདི་ནས་ནམ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་
डेस् बु कुन लेस थर नेस् छिन छे मि न्योङ बर शोग चिग   दुस् दि नेस् नम छङ छुप क्यि ञिङ
**फलों से मुक्त होते हुए, इसके बाद भोग नहीं हो। इस काल से लेकर बोधिगर्भ पर्यन्त**

པོ་ལ་མཆིས་ཀྱི་བར་དུ་སྒོ་གསུམ་ནས་དགེ་བ་ཆུ་བོའི་རྒྱུན་བཞིན་དུ་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་ཤོག་ཅིག །ཚེ་རབས་
पो ल छीस् क्यि बर दु गो सुम नेस् गे व छु बोइ ग्युन शिन दु ग्युन मि छे पर शोग चिग   छे रप
**जाने तक (काय-वाक्-चित्त रूपी) तीन द्वारों से कुशल, नदी की धारा की तरह अनुच्छिन्न रूप से हों। किन्हीं**

གར་སྐྱེས་ཀྱང་བདེ་སྐྱིད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་ཏེ། །སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་མཐུ་དང་
गर क्येस् क्यङ दे क्यिद् फुन सुम छोग प दङ देन ते   सेम चेन थम चे क्यि दोन छ व ल थु दङ
**भी जन्मान्तर में उत्पन्न होने पर भी सुख-आमोद सम्पद् से युक्त होकर सर्वसत्त्वार्थक्रिया में शक्ति एवं**

དབང་ཡོད་པར་ཤོག་ཅིག །གང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འབའ་ཞིག་གི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའི་ཆོས་བླ་ན་མེད་པའི་
वङ योद् पर शोग चिग   गङ दे शिन शेग प बा शिग गि थुग सु छुद् पई छोस् ल न मेद् पई
**अधिकार प्राप्त हो। जो तथागत मात्र के द्वारा जाना जाने वाला धर्म है, अनुत्तर (सम्यक् सम्-)**

བྱང་ཆུབ་ཏུ་གདོན་མི་ཟ་བར་འཚང་རྒྱ་བའི་དོན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་བདག་གིས་ཀྱང་མ་ནོར་
छङ छुप तु दोन मि ज़ बर छङ ग्य बई दोन दे खो न जिद् गङ यिन प दे दग गीस् क्यङ म नोर
**बोधि में संशय विना बुद्धत्व प्राप्ति का जो तथता रूपी अर्थ है, वह मेरे द्वारा भी विना त्रुटि के**

བར་ཁོང་དུ་ཆུད་ཅིང་བསྒོམས་ལ། གཞན་དག་ལ་ཡང་མ་ནོར་བར་སྟོན་ཅིང་འདྲེན་པར་ཤོག་ཅིག །དུས་
बर खोङ दु छुद् चिङ गोम ल शेन दग ल यङ म नोर बर तोन चिङ डेन पर शोग चिग दुस्
जानते हुए भावित कर, अन्यों को भी विना त्रुटि के प्रदर्शित करते हुए (उनको) आकर्षित करूँ। इस काल

འདི་ནས་ནམ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་མཆིས་ཀྱི་བར་དུ་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆི་སྟེ། བདག་
दि नेस् नम छङ छुप क्यि ञिङ पो ल छीस् क्यि बर दु कोन छोग सुम ल क्यप सु छि ते दग
से लेकर बोधि-प्राप्ति के गमन पर्यन्त तीनों रत्नों की शरण में जाकर, स्वयं के काय-अर्पण करने से

ཉིད་ལུས་དབུལ་གྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ་སོ་ནས་རྟག་ཏུ་བཞེས་ཤིག །ཇི་ལྟར་
ञिद् लुस् उल ग्यीस् थुग जे छेन पो दङ देन प नम क्यीस् सो सो नेस् तग तु शेस् शिग जि तर
महाकारुणिकों के द्वारा (मुझे) अलग-अलग सदा ग्रहण करें। जिस प्रकार

ན་དུས་གསུམ་གྱི་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། ཕུང་པོ་དང་།
न दुस् सुम ग्यि सङ ग्येस् दङ छङ छुप सेम पा ङोस् पो थम चे दङ डल व फुङ पो दङ
तीनों कालों के बुद्ध तथा बोधिसत्त्व, सर्वपदार्थहीन, स्कन्ध,

ཁམས་དང་། སྐྱེ་མཆེད་ཀྱིས་མ་ཟིན་པའི་ཆོས་བདག་མེད་པ་དང་མཉམ་པ། ཐོག་མ་ནས་མ་སྐྱེས་པ།
खम दङ क्ये छेद् क्यीस् म ज़िन पई छोस् दग मेद् प दङ ञम प थोग म नेस् म क्येस् प
धातु तथा आयतन द्वारा अगृहीत अनात्मधर्म में समता रखते हैं, अनादि (काल) से अनुत्पन्न, शून्यता स्वभाव

སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པ་ལྟར་བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བས་ཀྱང་།
तोङ प ञिद् क्यि रङ शिन ग्यीस् छङ छुप क्यि सेम क्येद् प तर दग मिङ दि शेस् ग्यि वे क्यङ
के द्वारा बोधिचित्त का उत्पाद करते हैं, उसी प्रकार मैं अमुक...नाम वाला भी

དུས་འདི་ནས་ནམ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་མཆིས་ཀྱི་བར་དུ་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པར་བགྱིའོ། །
दुस् दि नेस् नम छङ छुप क्यि ञिङ पो ल छीस् क्यि बर दु छङ छुप तु सेम क्येद् पर ग्यिह़ो
इस काल से लेकर बोधिगर्भ की प्राप्ति नहीं होने तक बोधिचित्त का उत्पाद करता हूँ।

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ནི་ནམ་གཞར་ཡང་མི་སྟོར་ཞིང་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དམ་པ་དེ་དང་ནམ་ཡང་མི་འབྲལ་
छङ छुप क्यि सेम नि नम शर यङ मि तोर शिङ गे बई शेस् ञेन दम प दे दङ नम यङ मि डल
बोधिचित्त का कदापि त्याग नहीं करते हुए उस सन्त कल्याणमित्र से कदापि वियोग (अलग) नहीं हो।

བར་ཤོག་ཅིག །ཇི་ལྟར་དུས་གསུམ་གྱི་སངས་རྒྱས་དེ་དག་བླ་ན་མེད་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱི་རྗེས་སུ་ཡི་
बर शोग चिग जि तर दुस् सुम ग्यि सङ ग्येस् दे दग ल न मेद् पई सोद् नम क्यि जेस् सु यि
जैसे तीनों कालों के उन बुद्धों ने (उन) अनुत्तर पुण्यों का अनुमोदन

རང་བ་ལྟར། བདག་མིང་འདི་ཞེས་བགྱི་བས་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསོད་ནམས་ཐམས་ཅད་
रङ व तर  दग मिङ दि शेस् ग्यि वे क्यङ जिग तेन दङ जिग तेन लेस देस् पई सोद् नम थम चे
किया, वैसे ही मैं अमुक...नाम वाला भी लोक एवं लोकातीत समस्त पुण्यों का

ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ་། །ནམ་འཆི་བར་ངེས་པའི་དུས་དེ་ན་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དག་
ल जेस् सु यि रङ ङो  नम छि बर ङेस् पई दुस् दे न सङ ग्येस् दङ  छङ छुप सेम पा दे दग
अनुमोदन करता हूँ। जब मृत्यु-काल नियत हो उस समय उन सभी बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों के

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞལ་མངོན་སུམ་དུ་མཐོང་ནས། ཕྱག་གཡས་པ་གསེར་གྱི་ཁ་དོག་ཅན་བརྐྱང་སྟེ། བདག་གི་སྤྱི་
थम चे क्यि शल ङोन सुम दु थोङ नेस्  छग येस् प सेर ग्यि ख दोग चेन क्यङ ते  दग गि चि
मुख का प्रत्यक्ष रूप से दर्शनकर, (अपने) सुवर्ण-वर्ण वाले दायें हस्त को आगे बढ़ाकर मेरी मूर्द्धा पर

བོར་བཞག་ནས་ལུང་ནོད་པར་གྱུར་ཅིག །བདག་གིས་ཀྱང་ཉོན་མོངས་པས་སེམས་མི་འཁྲུལ་བར་ཆོས་བདག་
बोर शग नेस् लुङ नोद् पर ग्युर चिग  दग गीस् क्यङ ञोन मोङ पेस् सेम मि ठुल पर छोस् दग
रखकर आगम (उपदेश) प्रदान करें। मेरे द्वारा भी, क्लेश से चित्त भ्रमित न होकर धर्मानात्म के अनुरूप

མེད་པ་དང་མཐུན་པའི་འདུན་པ་ཅན་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཚད་མེད་པ་དང་ལྡན་བཞིན་དུ་འཆི་བའི་དུས་
मेद् प दङ थुन पई दुन प चेन दङ  छङ छुप क्यि सेम छ़े मेद् प दङ देन शिन दु छि बई दुस्
श्रद्धावान् होकर अपरिमित बोधिचित्त से युक्त होते हुए (मेरी)

བྱེད་པར་ཤོག་ཅིག །
छेद् पर शोग चिग
मृत्यु का काल आये।

མདོར་ན་བག་ཆགས་མ་ལུས་ཀུན་བྱང་ནས། །
दोर न बग छग म लुस् कुन छङ नेस्
संक्षेपतया अशेष सर्ववासना शोधित कर।

བསོད་ནམས་ཡེ་ཤེས་ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་རྫོགས་ཏེ། །
सोद् नम ये शेस् छ़ोग ञीस् योङ ज़ोग ते
पुण्य-ज्ञानसम्भार द्विविध परिपूर्ण कर।

འགྲོ་བ་མ་ལུས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་ཕྱིར། །
डो व म लुस् छिन ग्यीस् डल बई छिर
अशेष प्राणि(-यों को) अधिष्ठान से तारने हेतु।

བདག་ཉིད་མྱུར་དུ་མངོན་པར་སངས་རྒྱས་ཤོག །
दग ञिद् न्युर दु ङोन पर सङ ग्येस् शोग
मैं स्वयं शीघ्र अभिसम्बोधि को प्राप्त करूँ।।

ཟླ་བའི་སྙིང་པོའི་མདོ་ལས་གསུངས་པའི་བསྟན་པ་རྒྱས་པའི་བདེན་ཚིག་ནི།
चन्द्रगर्भसूत्र में उक्त (बुद्ध के) शासन-विस्तार का सत्य-वचन तो–

སེམས་ཅན་དོན་དུ་བདག་གིས་སྔོན། །
सेम चेन दोन दु दग गीस् ङोन
सत्त्वार्थ हेतु मेरे द्वारा पूर्व में।

བདག་གི་བདེ་བ་བཏང་བ་ཡིས། །
दग गि दे व तङ व यीस्
स्वसुख के त्याग के कारण।

ངས་སྔོན་ནད་པའི་དོན་ཆེད་དུ། །
ङेस ङोन ने पई दोन छेद् दु
मेरे द्वारा पहले रोगी के कल्याणार्थ।

སེམས་ཅན་ཕོངས་པ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར། །
सेम चेन फोङ प क्यप पई छिर
सत्त्व-विपत्ति की रक्षा हेतु।

བུ་དང་བུ་མོ་ཆུང་མ་དང་། །
बु दङ बु मो छुङ म दङ
पुत्र, दुहिता तथा स्त्री।

རིན་ཆེན་བྱང་ཆུབ་ཕྱིར་བཏང་བས། །
रिन छेन छङ छुप छिर तङ वे
बोधिचित्तरत्न हेतु त्याग करने से।

བདག་གིས་སངས་རྒྱས་རང་རྒྱལ་དང་། །
दग गीस् सङ ग्येस् रङ ग्यल दङ
मेरे द्वारा बुद्ध तथा प्रत्येकबुद्ध।

དྲང་སྲོང་དག་ལ་མཆོད་བྱས་པས། །
डङ सोङ दग ल छोद् छेस् पेस्
ऋषि लोगों को पूजने से।

བསྐལ་པ་བྱེ་བ་དུ་མར་བདག །
कल प छे व दु मर दग
अनेक कोटि कल्पों तक मैंने।

དཀའ་བ་གང་ཞིག་བྱས་གྱུར་དང་། །
का व गङ शिग छेस् ग्युर दङ
जो तप(-श्चर्या) किए गए थे।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

རང་གི་འཚོ་བ་ཡོངས་བཏང་བས། །
रङ गि छो व योङ तङ वे
स्वजीविका का परित्याग करने से।

ཡུན་རིང་བདག་བསྟན་འབར་གྱུར་ཅིག །
युन रिङ दग तेन बर ग्युर चिग
स्वशासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

ནོར་དང་གླང་ཆེན་ཤིང་རྟ་དང་། །
नोर दङ लङ छेन शिङ त दङ
धन, हस्ति तथा रथ।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

ཉན་ཐོས་ཕ་དང་མ་དང་ནི། །
ञेन थोस् फ दङ म दङ नि
श्रावक पुरुष और (श्रावक) स्त्री।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

སྡུག་བསྔལ་སྣ་ཚོགས་མྱོང་གྱུར་ཅིང་། །
दुग ङल न छोग न्योङ ग्युर चिङ
नाना दुःख का भोग किया।

བྱང་ཆུབ་དོན་དུ་ཐོས་བཙལ་བས། །
छङ छुप दोन दु थोस् ज़ल वे
बोधि हेतु श्रवणान्वेषण करने से।

བདག་གིས་བརྟུལ་ཞུགས་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་། །
दग गीस् तुल शुग छुल ठिम दङ
मेरे द्वारा व्रत तथा शील का।

ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་ངས་མཐོང་བས། །
छोग चुइ सङ ग्येस् ङेस थोङ वे
मेरे द्वारा दशदिग् बुद्धों के दर्शन करने से।

བདག་སྔོན་བརྩོན་འགྲུས་དང་ལྡན་པ། །
दग ङोन ज़ोन डुस् दङ देन प
मैं पहले वीर्य से युक्त था।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་གྲོལ་དོན་དུ། །
सेम चेन थम चे डोल दोन दु
समस्त सत्त्वों के मुक्ति हेतु।

བཟོད་བརྟུལ་རྟག་ཏུ་གནས་གྱུར་ཅིང་། །
ज़ोद् तुल तग तु नेस् ग्युर चिङ
क्षान्तिव्रत पर सदा स्थित रहा।

སེམས་ཅན་ངན་བྱུས་བཟོད་གྱུར་པས། །
सेम चेन ङेन छेस् ज़ोद् ग्युर पेस्
सत्त्व दुष्टकार्यों के सहन करने से।

བསམ་གཏན་རྣམ་ཐར་གཟུགས་མེད་དང་། །
सम तेन नम थर ज़ुग मेद् दङ
समाधि विमोक्ष और अरूपी।

བསྒོམས་པས་དེ་མཐུས་བདག་གི་ནི། །
गोम पेस् दे थुस् दग गि नि
भावित हुए, उन शक्ति द्वारा मेरे।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

དཀའ་ཐུབ་ཡུན་རིང་བྱས་གྱུར་ཅིང་། །
का थुप युन रिङ छेस् ग्युर चिङ
दीर्घकाल तक तपश्चर्या किया गया।

ཡུན་རིང་བསྟན་པ་འབར་གྱུར་ཅིག །
युन रिङ तेन प बर ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

རྟག་ཏུ་བརྟན་ཅིང་ཕ་རོལ་གནོན། །
तग तु तेन चिङ फ रोल नोन
सदा स्थिर तथा पराभिभूतक।

བདག་བསྟན་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
दग तेन युन रिङ बर ग्युर चिग
स्वशासन का दीर्घकाल प्रज्वलन हो।।

སེམས་ཅན་ཉོན་མོངས་སྙིགས་མ་ཡི། །
सेम चेन ञोन मोङ ञिग म यि
सत्त्व-क्लेश कषाय रूपी।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ नेस् ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

ཏིང་འཛིན་གངྒཱའི་བྱེ་སྙེད་པ། །
तिङ ज़िन गङ्गाई छे ञेद् प
गङ्गाबालुवत् जितनी समाधियाँ हैं।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་འབར་གྱུར་ཅིག །
तेन प युन रिङ बर ग्युर चिग
शासन का दीर्घकाल तक प्रज्वलन हो।।

ཡེ་ཤེས་དོན་དུ་བདག་གིས་སྔོན། །
ये शेस् दोन दु दग गीस् ङोन
ज्ञानार्थ पूर्व में मेरे द्वारा।

དཀའ་ཐུབ་ནགས་དག་བསྟེན་བྱས་ཤིང་། །
का थुप नग दग तेन छेस् शिङ
तप-वनों का सेवन किया गया।

བསྟན་བཅོས་དུ་མ་ཉེར་བསྟན་པས། །
तेन चोस् दु म ञेर तेन पेस्
अनेक शास्त्रों का उपदेश करने से।

བདག་གི་བསྟན་པ་འབར་གྱུར་ཅིག །
दग गि तेन प बर ग्युर चिग
प्रज्वलन हो अपने शासन का।।

བརྩེ་བའི་རྒྱུ་ཡིས་ཤ་ཁྲག་དང་། །
त्से बई ग्यु यीस् श ठग दङ
दया रूपी हेतु से रक्त-माँस।

འཚོ་བ་ཡོངས་སུ་བཏང་གྱུར་ཅིང་། །
छ़ो व योङ सु तङ ग्युर चिङ
तथा जीविका का परित्याग किया।

ཡན་ལག་ཉིང་ལག་བཏང་བ་ཡིས། །
येन लग ञिङ लग तङ व यीस्
अंग-प्रत्यंग के त्याग करने से।

ཆོས་ཚུལ་རྣམ་པར་འཕེལ་གྱུར་ཅིག །
छोस् छुल नम पर फेल ग्युर चिग
धर्मनय की विवृद्धि हो।।

བདག་སྔོན་སྡིག་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས། །
दग ङोन दिग पई सेम चेन नम
मैंने पूर्व में पापी सत्त्वों को।

བྱམས་པས་གསལ་བར་སྨིན་བྱས་ཤིང་། །
छम पेस् सल वर मिन छेस् शिङ
मैत्री द्वारा स्पष्टतया विपाक किया।

ཐེག་པ་གསུམ་ལ་རབ་བཀོད་པས། །
थेग प सुम ल रप कोद् पेस्
तीन यानों पर प्रारूढ करने से।

ཆོས་ཀྱི་མཆོད་སྦྱིན་རྒྱས་གྱུར་ཅིག །
छोस् क्यि छोद् छिन ग्येस् ग्युर चिग
विस्तृत हों, धर्म का पूजा-दान।।

བདག་སྔོན་ཐབས་ཤེས་གྱུར་པ་ན། །
दग ङोन थप शेस् ग्युर प न
मेरे, पूर्व में प्रज्ञोपायवान् होने पर।

སེམས་ཅན་ལྟ་ངན་ལས་གྲོལ་བྱས། །
सेम चेन त ङेन लेस डोल छेस्
सत्त्वों को कुदृष्टि से मुक्त किया।

ཡང་དག་ལྟ་ལ་རབ་བཀོད་པས། །
यङ दग त ल रप कोद् पेस्
सम्यक् दर्शन पर प्रारूढ करने से।

ཆོས་ནི་རྣམ་པར་འཕེལ་གྱུར་ཅིག །
छोस् नि नम पर फेल ग्युर चिग
धर्म की विवृद्धि हो।।

བདག་གིས་སེམས་ཅན་བསྡུ་དངོས་བཞིས། །
दग गीस् सेम चेन बदु ङोस् शीस्
मैंने, सत्त्वों को चार संग्रह(वस्तुओं) द्वारा।

ཉོན་མོངས་མེ་ལས་ཐར་གྱུར་ཅིང་། །
ञोन मोङ मे लेस थर ग्युर चिङ
क्लेशाग्नि से मुक्त कराया।

བདག་གིས་འཕེལ་སྡིག་ཕམ་བྱས་པས། །
दग गीस् फेल दिग फम छेस् पेस्
मेरे द्वारा पापवृद्धि को हराने से।

བདག་གིས་མུ་སྟེགས་ཅན་གཞན་དག །
दग गीस् मु तेग चेन शेन दग
अन्य तैर्थिकों को मैंने।

ཡང་དག་ལྟ་ལ་བཀོད་གྱུར་པས། །
यङ दग त ल कोद् ग्युर पेस्
सम्यक् दृष्टि पर आरूढ करने से।

བདག་འཁོར་ཡུན་རིང་གནས་གྱུར་ཅིག །
दग खोर युन रिङ नेस् ग्युर चिग
मैं संसार में दीर्घकाल तक स्थित रहूँ।।

ལྟ་བའི་ཆུ་ལས་བསྒྲལ་བྱས་ཤིང་། །
त बई छु लेस डल छेस् शिङ
(कु-)दृष्टि रूपी जल से तारण कराया।

བདག་འཁོར་རྟག་ཏུ་གུས་གྱུར་ཅིག །
दग खोर तग तु गुस् ग्युर चिग
मेरा परिवार सदा भक्त हो।।

ཉོངས་པ་བཤགས་ཏེ་གཤེགས་སུ་གསོལ་བ་ནི།
दोष की देशना कर प्रत्यागमन (लौटने) हेतु प्रार्थना तो–

མ་འབྱོར་པ་དང་ཉམས་པ་དང་། །
म छोर प दङ ञम प दङ
अयोग एवं दूषित हुए हों और।

བགྱིས་པ་དང་ནི་བགྱིད་སྩལ་གང་། །
ग्यीस् प दङ नि ग्यिद् त्सल गङ
जो किए या कराए गए हों।

དུས་ངན་སེམས་ཅན་བསོད་ནམས་དམན། །
दुस् ङेन सेम चेन सोद् नम मेन
बुरे समय में सत्त्व पुण्यहीन हैं।

འཕགས་པའི་ཐུགས་དགོངས་མ་རྫོགས་པ། །
फग पई थुग गोङ म ज़ोग प
आर्य के चित्ताभिप्राय पूर्ण नहीं हुए।

སེར་སྣའི་དབང་གྱུར་མི་མཁས་པས། །
सेर नई वङ ग्युर मि खेस् पेस्
मात्सर्यवश कुशल नहीं होने से।

གང་ཡང་བདག་རྨོངས་བློ་ཡིས་ནི། །
गङ यङ दग मोङ लो यीस् नि
जो भी मेरे मूढ-चित्त द्वारा।

དེ་ཡང་བཟོད་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दे यङ ज़ोद् पर ज़े दु सोल
प्रार्थना है, उनको भी क्षमा करें।।

མ་རིག་ཉོན་མོངས་དང་འདྲེས་པས། །
म रिग ञोन मोङ दङ डेस् पेस्
अज्ञान-क्लेश से मिश्रित होने से।

དེ་ཡང་བཟོད་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दे यङ ज़ोद् पर ज़े दु सोल
प्रार्थना है, उनको भी क्षमा करें।।

མཆོད་པ་ངན་ཞིང་བཤམས་ཉེས་པ། །
छोद् प ङेन शिङ शम ञेस् प
हीन पूजा तथा सजावट में दोष हों।

མགོན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ལྡན་པས། །
गोन पो थुग जे छे देन पेस्
नाथ के महाकरुणावान् होने से।

དེ་ཡང་བཟོད་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दे यङ ज़ोद् पर ज़े दु सोल
प्रार्थना है, उनको भी क्षमा करें।।

བག་མེད་སྤྱོད་པ་མ་དག་པས། །
बग मेद् चोद् प म दग पेस्
प्रमाद(-वश) चर्या की अशुद्धि से।

མདོ་ལས་བྱུང་བའི་ཆོ་ག་བཞིན། །
दो लेस छुङ बई छो ग शिन
सूत्रोत्भूत विधि के अनुसार।

མ་ལྕོགས་འཁྲུལ་པ་ཅི་མཆིས་པ། །
म चोग ठुल प चि छीस् प
असमर्थता (एवं) मिथ्यात्व जो भी हुए हों।

དེ་ཡང་བཟོད་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दे यङ ज़ोद् पर ज़े दु सोल
प्रार्थना है, उनको भी क्षमा करें।।

ལྷག་པ་དང་ནི་ཆད་པ་དང་། །
ल्हग प दङ नि छे प दङ
अधिकता तथा विच्छिन्नता।

ཆོ་གའི་ཡན་ལག་ཉམས་པ་དང་། །
छो गई येन लग ञम प दङ
विधि-अवयव के दूषित होने तथा।

བདག་གིས་བརྗེད་ངས་ཅི་མཆིས་པ། །
दग गीस् जेद् ङेस चि छीस् प
जो भी भूल मुझसे हुई हों।

དེ་ཡང་བཟོད་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
दे यङ ज़ोद् पर ज़े दु सोल
प्रार्थना है, उनको भी क्षमा करें।।

འཕགས་པའི་ཚོགས་རྣམས་ཀྱིས་བདག་ཅག་ལ་སོགས་པ་འགྲོ་བ་ཉམ་ཐག་པ་རྣམས་ཀྱི་དོན་མཛད་ཅིང་བཀའ་དྲིན་
फग पई छ़ोग नम क्यीस् दग चग ल सोग प डो व ञम थग प नम क्यि दोन ज़े चिङ का डिन
आर्य गणों ने हम निरीह प्राणियों के अर्थ का सम्पादन कर (हम लोगों पर) बड़ी कृतज्ञता की है।

སླུལ་ལགས་ཏེ། ད་དུང་དུ་ཡང་བདག་ཅག་ལ་ཐུགས་བརྩེ་བས་ཡང་དང་ཡང་དུ་གདན་འཛོམས་པ་མཛད་པར་དགོངས་
ज़्हल लग ते   द दुङ दु यङ दग चग ल थुग ज़्त्रे वे यङ दङ यङ दु देन ज़ोम प ज़े पर गोङ शिङ सो
दुबारा भी हम लोगों पर कृपा करके बारम्बार पधारने का विचार करते हुए अपने(-अपने) विनेयजनों के क्षेत्रों

ཤིང་སོ་སོའི་གདུལ་བྱའི་ཞིང་རྣམས་སུ་འགྲོ་བ་མང་པོའི་དོན་ལ་གཤེགས་པར་སླལ་དུ་ཅི་གནང་།
सोइ दुल छ्ई शिङ नम सु डो व मङ पोइ दोन ल शेग पर ज़्हल दु चि नङ
में अनेक सत्त्वों के कल्याण हेतु पधारने की कृपा करें।

དགེ་བ་བསྔོ་བ་ནི། རྒྱལ་བ་འབྲི་གུང་པའི་གསུང་།
पुण्य-परिणामना तो, जिन (बुद्ध) डि-गुङ्-पा ने (इस प्रकार) कहा है–

བདག་དང་འཁོར་འདས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུས་གསུམ་དུ་བསགས་པ་དང་ཡོད་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས་བདག་དང་
दग दङ खोर देस् थम चे क्यीस् दुस् सुम दु सग प दङ योद् पई गे बई ज़्च व दीस् दग दङ सेम
मेरे सहित संसार-निर्वाण के सभी (सत्त्वों) के द्वारा तीनों कालों में संचय किए तथा जो कुशलमूल उपस्थित हैं,

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་མྱུར་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་རིན་པོ་ཆེ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག ། ཅེས་དང་།
चेन थम चे न्युर दु ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप रिन पो छे थोप पर ग्युर चिग
इनके द्वारा मैं और समस्त सत्त्व शीघ्र अनुत्तर सम्यक् सम्बोधिरत्न प्राप्त करें। इति।

དགེ་བའི་རྩ་བ་དེས་ལུས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་ཐོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
गे बई ज़्च व देस् लुस् क्यीस् सेम चेन थम चे ल फेन थोग पर ग्युर चिग
उन कुशलमूलों से काय के द्वारा समस्त सत्त्वों का कल्याण हो।

ངག་གིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་ཐོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
ङग गीस् सेम चेन थम चे ल फेन थोग पर ग्युर चिग
वाक् के द्वारा समस्त सत्त्वों का कल्याण हो।

ཡིད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་ཐོགས་པར་གྱུར་ཅིག །
यिद् क्यीस् सेम चेन थम चे ल फेन थोग पर ग्युर चिग
चित्त के द्वारा समस्त सत्त्वों का कल्याण हो।

ཉོན་མོངས་པ་འདོད་ཆགས་ཀྱི་བསམ་པ་མི་འོང་བར་གྱུར་ཅིག །
ञोन मोङ प दोद् छग क्यि सम प मि ह़ोङ बर ग्युर चिग
राग रूपी क्लेश का चिन्तन नहीं आए।

ཞེ་སྡང་གི་བསམ་པ་མི་འོང་བར་གྱུར་ཅིག །ང་རྒྱལ་དང་། ཕྲག་དོག །རྙེད་པ་དང་བཀུར་སྟི།
शे दङ गि सम प मि ह़ोङ बर ग्युर चिग ङ ग्यल दङ ठग दोग ञेद् प दङ कुर ति
द्वेष रूपी चिन्तन नहीं आए। मान (अहंकार), ईर्ष्या, लाभ-सत्कार,

གྲགས་པ་དང་སྙན་པ། ཚེ་འདིའི་བསམ་པ་མི་འོང་བར་བྱམས་པ་དང་སྙིང་རྗེ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱིས་
डग प दङ ञेन प छ़े दी सम प मि ह़ोङ बर छम प दङ ञिङ जे छङ छुप क्यि सेम क्यीस्
कीर्ति एवं स्तुति, इस जन्म का चिन्तन नहीं आते हुए मैत्री तथा करुणा, बोधिचित्त के द्वारा (चित्त-)सन्तति को

རྒྱུད་བརླན་ནས། ཡོངས་སུ་འཛིན་པའི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་གྱུར་ནས།
ग्युद् लेन नेस् योङ सु ज़िन पई गे बई शेस् ञेन नम खा दङ ञम पर ग्युर नेस्
आर्द्र कर परिग्राहक रूपी कल्याणमित्र आकाशसम होकर मुझे इसी

བདག་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
दग छ़े दि ञिद् ल छग ग्य छेन पो छोग गि ङोस् डुप थोप पर ग्युर चिग
जन्म में परम महामुद्रा सिद्धि की प्राप्ति हो।

ནམ་འཆི་བའི་ཚེ་གནད་གཅོད་པའི་སྡུག་བསྔལ་མི་འོང་། གཤིས་ངན་དུ་འཆི་བར་མི་འབྱུང་། དུས་མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་
नम छि बई छ़े ने चोद् पई दुग ङल मि ह़ोङ   शीस् ङेन दु छि बर मि छुङ   दुस् म यिन पर छि
जब मृत्यु-काल हो (तब) मर्मच्छेदन का दुःख न हो, बुरे स्वभाव में (अर्थात् असह्य दुःख आदि के साथ) मृत्यु

མི་འོང་བར། འཆི་བ་ལ་དགའ་བ་དང་བཅས། བདེ་དང་བཅས་ནས། སེམས་ཉིད་ཤིན་ཏུ་གསལ་བ་དང་།
व मि ह़ोङ बर   छि व ल गा व दङ चेस्   दे दङ चेस् नेस्   सेम ञिद् शिन तु सल व दङ
नहीं हो तथा असामयिक मृत्यु नहीं होकर मृत्यु के प्रति प्रसन्नता एवं सुख सहित चित्त की अत्यन्त स्पष्टता

ཆོས་ཉིད་ཤིན་ཏུ་གསལ་བ་དང་འགྲོགས་ནས། འཆི་ཁ་དང་བར་དོར་ཅིས་ཀྱང་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆོག་
छोस् ञिद् शिन तु सल व दङ डोग नेस्   छि ख दङ बर दोर चीस् क्यङ छग ग्य छेन पो छोग
तथा अत्यन्त प्रकट धर्मता के साथ मृत्यु के समय अथवा अन्तराभव में महामुद्रा रूपी

གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིག །
गि ङोस् डुप थोप पर ग्युर चिग
परम सिद्धि को प्राप्त करूँ।

དེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །དེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །དེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག །
दे दे खो न शिन दु ग्युर चिग   दे दे खो न शिन दु ग्युर चिग   दे दे खो न शिन दु ग्युर चिग
तथा तथास्तु। तथा तथास्तु। तथा तथास्तु।

བཀྲ་ཤིས་བརྗོད་པ་ནི། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཁྱིམ་བདག་དེས་པ་ལ་གསུངས་པ།
मङ्गल-वाचन तो भगवान् ने गृहपति सौरत्य से कहा–

ཆེ་བའི་ཆེ་མཆོག་སྟོན་མཆོག་བླ་ན་མེད། །
छे बई छे छोग तोन छोग ल न मेद्
महाग्रतर परम अनुत्तर शास्ता।

ཆོས་རྗེ་ཉི་མ་རྒྱལ་བའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
छोस् जे ञि म ग्यल वई छिन लप क्यीस्
धर्मस्वामी आदित्यराज का अधिष्ठान (आशीर्वाद) से।

བདུད་དང་བགེགས་རིགས་གནོད་པའི་དགྲ་ཞི་སྟེ། །
दुद् दङ गेग रिग नोद् पई ड शि ते
मार तथा विघ्न समूह नाशक शत्रु शान्त होकर।

རྟག་ཏུ་དཔལ་གནས་ཉིན་མཚན་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
तग तु पल नेस् ञिन छ़ेन ट शीस् शोग
सदा श्रीस्थ अहोरात्र मङ्गल हो।।

ཆོས་ཉིད་བདེན་པའི་ཆོས་མཆོག་བླ་ན་མེད། །
छोस् ञिद् देन पई छोस् छोग ल न मेद्
**धर्मता सत्य रूपी परम धर्म-अनुत्तर।**

ཉོན་མོངས་སྡུག་བསྔལ་གདུང་བའི་དགྲ་ཞི་སྟེ། །
ञोन मोङ दुग ङल दुङ बई ड शि ते
**क्लेश-दुःख तप्त रूपी शत्रु शान्त होकर।**

དགེ་འདུན་ཡོན་ཏན་རིན་ཆེན་དཔལ་འབར་བ། །
गेन दुन योन तेन रिन छेन पल बर व
**संघ गुणरत्न श्री प्रज्वलित।**

ཉེས་པའི་སྐྱོན་བྲལ་དགེ་ཚོགས་རྣམ་འཕེལ་བ། །
ञेस् पई क्योन डल गे छ़ोग नम फेल व
**आपत्तिदोष रहित, कुशल सम्भार की विवृद्धि।**

ཚངས་དང་ལྷ་དབང་སྲུང་མའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
छ़ङ दङ ल्ह वङ सुङ मई छिन लप क्यीस्
**ब्रह्मा, देवेन्द्र तथा रक्षकों के अधिष्ठान से।**

བདེ་ལེགས་བསམ་པ་ཡིད་བཞིན་འགྲུབ་པ་དང་། །
दे लेग सम प यिद् शिन डुप प दङ
**स्वस्ति, मनोवाञ्छित इच्छा की पूर्ति हो।**

དམ་ཆོས་བདུད་རྩི་བདེན་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
दम छोस् दुद् ज़ि देन पई छिन लप क्यीस्
**सद्धर्मामृत (रूपी) सत्य के अधिष्ठान से।**

རྟག་ཏུ་དཔལ་གནས་ཉིན་མཚན་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
तग तु पल नेस् ञिन छ़ेन ट शीस् शोग
**सदा श्रीस्थ अहोरात्र मङ्गल हो।।**

རྒྱལ་སྲས་ཕན་མཛད་བདེན་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱིས། །
ग्यल सेस् फेन ज़े देन पई छिन लप क्यीस्
**जिनपुत्र हितकारी सत्य के अधिष्ठान से।**

རྟག་ཏུ་དཔལ་གནས་ཉིན་མཚན་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
तग तु पल नेस् ञिन छ़ेन ट शीस् शोग
**सदा श्रीस्थ अहोरात्र मङ्गल हो।।**

ཕན་མཛད་ལྷ་ཡི་བཀྲ་ཤིས་གནས་གྱུར་ཏེ། །
फेन ज़े ल्ह यि ट शीस् नेस् ग्युर ते
**हितकारी देवमंगलस्थ होकर।**

ཚེ་རིང་ནད་མེད་བདེ་སྐྱིད་ལྡན་པར་ཤོག །
छ़े रिङ ने मेद् दे क्यिद् देन पर शोग
**दीर्घायु, निरोग तथा सुख-आमोद से युक्त हों।।**

བླ་མ་མཆོད་པའི་ཆོ་ག་འདི་ནི་དགོས་པ་དང་ཆེད་དུ་བྱ་བ་དུ་མ་ལ་བརྟེན་ནས་ཀརྨ་པར་འབོད་པ་ཨོ་རྒྱན་ཕྲིན་ལས་རྡོ་རྗེས། བོད་ཡུལ་དུ་ཆོས་ལ་སྔ་བ་དཔང་སྐོང་ཕྱག་བརྒྱ་པའི་མདོ་དང་། རྒྱལ་སྲས་ཞི་བ་ལྷའི་སྤྱོད་འཇུག་དང་། གྲུབ་ཆེན་གླིང་གིས་མཛད་པའི་བླ་མ་མཆོད་པ་དང་། པཎ་ཆེན་བློ་བཟང་ཆོས་རྒྱན་གྱིས་མཛད་པའི་བླ་མ་མཆོད་པ། འཇམ་མགོན་བླ་མ་བློ་གྲོས་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་མཛད་པའི་དྭགས་བརྒྱུད་སྤྱིའི་བླ་མ་མཆོད་པ། མཁས་པ་ཆེན་པོ་མི་ཕམ་འཇམ་དབྱངས་རྣམ་རྒྱལ་གྱིས་མཛད་པའི་ཐུབ་ཆོག །ཀརྨ་ཞྭ་དམར་པ་ཆོས་གྲགས་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་མཛད་པའི་གནས་ཆོག །ས་སྐྱ་པའི་བཤེས་གཉེན་ཆེན་པོ་འགས་མཛད་པའི་མདོ་ཆོག་སོགས་གྲུབ་མཐའ་རིས་མེད་ཀྱི་བླ་མས་མཛད་པའི་ཆོ་ག་དུ་མའི་ཚིག་དོན་ལ་མཇལ་ཞིང་ལེགས་པར་བརྟགས་ནས་སྐབས་དོན་གྱི་དགོས་ཆེད་དང་བརྗོད་བྱ་མཐུན་པ་རྣམས་ལེགས་པར་བཏུས་ཏེ། སྐྱེས་བུ་ཐུན་མོང་བའི་བགོ་སྐལ་དང་འཚམས་པར། སྟོན་མཆོག་ཤཱཀྱའི་དབང་པོས་ལྔ་སྡེར་བདེན་བཞིའི་ཆོས་འཁོར་གདམས་པའི་གནས། དྲང་སྲོང་སྨྲ་བ་རི་དྭགས་ཀྱི་ནགས། བཛྲ་བིདྱཱའི་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་སྤྱི་ལོ་ ༢༠༠༥ ལོར་སྦྱར་བའོ། །

यह गुरु-पूजा-विधि आवश्यकता एवं अनेक अभिप्रायों के आश्रय से कर्मापा (नाम) से सम्बोधित किये जाने वाले उग्र्यन ठिन्-लस् दोर्जे (ओडियान कर्मवज्र) ने प्राचीन भोटदेशीय धर्म (कहे जाने वाले) पङ्-कोङ छग्-ग्या-सूत्र, जिनपुत्र शान्तिदेव का (बोधि-)चर्यावतार, महासिद्ध लिङ्(-रस्-पा) द्वारा रचित गुरु-पूजा, पण्-छेन लो-ज़ङ छोस्-ग्यन् द्वारा रचित गुरु-पूजा, जम्-गोन् ला-मा लो-डोस् था-यस् द्वारा रचित सामान्य द्वग्स-पो परम्परा की गुरु-पूजा, महान् विद्वान् मि-फम् जम्-यङ्ग नम्-ग्यल् द्वारा रचित थुब-छोग (मुनि-विधि), कर्मा श-मर्-पा छोस्-डग्स येशेस् द्वारा रचित नस्-छोग् (अधिष्ठान-विधि), साक्यापा के किन्हीं महान् कल्याणमित्रों द्वारा रचित सूत्र-विधि आदि निष्पक्ष सिद्धान्तवादी गुरुओं द्वारा रचित अनेक विधियों के शब्दार्थों को प्रत्यक्ष करते हुए अच्छी तरह परीक्षा कर प्रसंगानुसार आवश्यकता एवं जो विषय समान हैं, उनका समुच्चय (संकलन) कर सामान्य पुरुषों के भाग्यानुसार परम शास्ता शाक्येन्द्र द्वारा पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को (प्रथम चार आर्यसत्य रूपी) धर्मचक्रोपदेश करने का स्थान ऋषिपत्तनमृगदायवन (में स्थित) वज्रविद्या (नामक) विहार में 2005 ई० में निबद्ध किया गया।

## མགོན་པོ་བེར་ཅན་ལྕམ་དྲལ་གྱི་གསོལ་ཁ་བསྡུས་པ།
# नाथ बेर्-चन् चम्-डल् का संक्षिप्त पोषण-विधि

འདི་འདོན་སྐབས་གཏོར་མ་དང་གསེར་སྐྱེམས་ཤིག་ནི་མེད་དུ་མི་རུང་ལ། མཆོད་པ་གཞན་འཛོམས་ཀྱང་ལེགས་མ་འཛོམས་ཀྱང་གཏོར་མས་ཆོག །སྐུ་གཟུགས་རྟེན་རྫས་སོགས་མ་འབྱོར་ཡང་གཏོར་མགྲོན་དུ་བྱས་པས་འཐུས། གོང་སྔོན་བྱུར་དུ་མ་བཏོན་ཡང་ལྷའི་ང་རྒྱལ་ཙམ་གྱིས་ཆོག །སྐྱབས་འགྲོ་སེམས་བསྐྱེད་ཚོའང་མ་ནོར་བ་ཞིག་གྱིས་ལ། ཁ་ཀློག་གཅིག་པས་ཐོན་ཅིག་དང་འཇིག་རྟེན་མཆོད་བསྟོད་ཀྱི་ལྷུར་གཏོགས་པས་དམིགས་པས་མ་འཕྲོངས་ཀྱང་སྐྱོན་མེད་དོ། །མཆོད་པ་བྱིན་བརླབས།

ཨོཾ་དྃ་སོགས་ཀྱིས་བསངས།
ओं दंष्टोत्कट भैरवाय सं सं सं रु रु रु हूँ हूँ हूँ फट स्वाहा।

སྭ་བྷཱ་བས་སྦྱངས། ཁྲག་མཚོ་ཁོལ་མའི་རྒྱུད་རྒྱས་པ་ལས།
ओं स्वाभाव शुद्धाः सर्व धर्माः स्वाभाव शुद्धो ऽहं।

དེར་ནི་ཡཾ་ལས་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷུང་ཁུ་བསྐྱེད། །
देर नि यं लेस लुङ गि दक्यिल खोर जङ खु क्येद्

མེ་རླུང་སྦྱོར་བས་བདུད་རྩིའི་ཐིག་ལེར་བཞུ་བྱས་པ། །
मे लुङ छोर वे दुद् ऱ्ची थिग लेर शु छेस् प

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་ཁ་བཅད་དེ་ལ་འབྲུ་གསུམ་བསམ།
न छ़ोग दोर जेस् ख चे दे ल डु सुम ग्युर

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ལན་གསུམ། ཡབ་ཀྱི་སྤྱན་འདྲེན།
ओं आःहूँ

གྲུབ་ཆེན་ཀརྨ་པཀྴིའི་གསུང་ལས།

ཧཱུྃ། ཐུགས་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལས་མ་གཡོས་ཀྱང་། །
हूँ थुग नि छोस् क्यि यिङ लेस म योस् क्यङ

གདུག་པ་འདུལ་ཕྱིར་ཐུགས་རྗེས་སྐུར་སྤྲུལ་པ། །
दुग प दुल छिर थुग जेस् कुर टुल प

ཡེ་ཤེས་འདུ་འབྲལ་མེད་པའི་གློང་དཀྱིལ་ནས། །
ये शेस् दु डल मेद् पई लोङ दक्यिल नेस्

དཔལ་ལྡན་མགོན་པོ་ནག་པོ་སྤྱན་འདྲེན་ནོ། །
पल देन गोन पो नग पो चेन डेन नो

ཡུམ་གྱི་སྤྱན་འདྲེན། ཁྲག་མཚོ་ཁོལ་མའི་རྒྱུད་རྒྱས་པ་ལས།

བྷྱོཿ དཔལ་ལྡན་ཞུགས་འགྲོ་བྱམས་མགོན་དམ་ཚིག་ཅན། །དབང་ཕྱུག་སྲས་མོ་དཔལ་ལྡན་དུང་སྐྱོང་མ། །
भ्योः पल देन शुग डो छम गोन दम छ़िग चेन वङ छुग सेस् मो पल देन दुङ क्योङ म

བྱམས་དང་ཐུགས་རྗེས་མ་བུ་གདུང་བ་བཞིན། །
छम दङ थुग जेस् म बु दुङ व शिन

སྒྲུབ་པའི་གནས་འདིར་སྤྱན་འདྲེན་གཤེགས་སུ་གསོལ།
ड्रुप पई नेस् दिर चेन डेन शेग सु सोल

ཕྱི་ནང་གསང་བའི་མཆོད་ཚིག །བདག་རང་གིས་སྒྱུར་བ།

ཁྱོད་ནི་ཕ་དང་མ་སྟེ་གཉེན་དང་གྲོགས། །
ख्योद् नि फ दङ म ते ञेन दङ डोग

ཁྱོད་ནི་ཕན་དང་སྡིག་འཕྲོག་མགོན་པོ་སྟེ། །
ख्योद् नि फेन दङ दिग ठोग गोन पो ते

ཁྱོད་ཉིད་སྐྱོན་དག་ཡོན་ཏན་མཆོག་གི་གནས། །
ख्योद् ञिद् क्योन दग योन तेन छोग गि नेस्

རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་རྩ་བའི་བླ་མ་དང་། །
दोर जे छङ छेन ज़्त्र बई ल म दङ

ཁྱད་པར་ཆོས་སྐྱོང་བེར་གྱི་ན་བཟའ་ཅན། །
ख्ये पर छोस् क्योङ बेर ग्यि न ज़ा चेन

དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་རང་བྱུང་རྒྱལ་མོ་ཆེ། །
पल देन ल्ह मो रङ छ्ुङ ग्यल मो छे

རྣམ་མང་ཐོས་སྲས་སྔགས་ཀྱི་བདག་པོ་སོགས། །
नम मङ थोस् सेस् ङग क्यि दग पो सोग

དམ་ལྡན་མཆེད་ལྕམ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ལ། །
दम देन छेद् चम खोर दङ चेस् प ल

ཟག་མེད་ཡེ་ཤེས་འཕྲུལ་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །
ज़ग मेद् ये शेस् ठुल लेस छ्ुङ व यि

འདོད་དགུ་ཅིར་ཡང་འཆར་བ་ནམ་མཁའི་མཛོད། །
दोद् गु चिर यङ छर व नम खई ज़ोद्

ཟུང་འཇུག་བདེ་ཆེན་མཆོག་ཏུ་དགྱེས་སྐྱེད་པ། །
ज़ुङ जुग दे छेन छोग तु ग्येस् क्येद् प

ཕྱི་ནང་གསང་བའི་མཆོད་སྤྲིན་རྒྱ་མཚོས་མཆོད། །
छि नङ सङ बई छोद् टिन ग्य छ़ोस् छोद्

སྣོད་བཅུད་ཀྱི་མཆོད་པ། རྗེ་དྲུག་པ་མཐོང་བ་དོན་ལྡན་གྱི་གསུང་ལས།

སྐྱབས་གསུམ་གྲོང་གིས་མཚན་པའི་ལྷུན་པོ་དང་། །
कप सुम डोङ गीस् छ़ेन पई ल्हुन पो दङ

ལུས་ཅན་ཡོ་བྱད་རྫོགས་པའི་གླིང་རྣམས་དང་། །
लुस् चेन यो छे ज़ोग पई लिङ नम दङ

རིན་ཆེན་ས་འཛིན་རྣམས་དང་བདུད་རྩིའི་མཚོ། །
रिन छेन स ज़िन नम दङ दुद् ज़्त्री छ़ो

དག་བྱེད་མུ་ཁྱུད་ཕྱོགས་རྣམས་བཀང་སྟེ་འབུལ། །
दग छेद् मु ख्युद् छोग नम कङ ते बुल

ཡབ་ཀྱི་བསྟོད་པ། གྲི་གུག་བརྗེགས་པའི་རྒྱུད་ལས།

འགྱུར་མེད་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལས་སྐུར་བཞེངས་པ། །
ग्युर मेद् छोस् क्यि यिङ लेस कुर शेङ प

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཚད་མེད་སྟོབས་ཀྱིས་ནི། །
थुग जे छेन पो छ़े मेद् तोप क्यीस् नि

སྐྱེ་མེད་བྱང་ཆུབ་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཐུགས། །
क्ये मेद् छङ छुप सेम लेस छुङ बई थुग

བདེ་ཆེན་རང་བྱུང་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
दे छेन रङ छुङ ख्योद् ल छग छ़ल तोद्

ཡུམ་གྱི་བསྟོད་པ། ཁྲག་མཚོ་ཁོལ་མའི་རྒྱུད་རྒྱས་པ་ལས།

སྐྱེ་མེད་ངང་ལས་ལྷ་མོར་བཞེངས་པ་ནི། །
क्ये मेद् ङङ लेस ल्ह मोर शेङ प नि

ཁམས་གསུམ་ལོག་པར་ལྟ་བ་འདུལ་མཛད་ཅིང་། །
खम सुम लोग पर त व दुल ज़े चिङ

གསང་སྔགས་བསྟན་པའི་བདག་མོ་མཐིང་ནག་སྐུ། །
सङ ङग तेन पई दग मो थिङ नग कु

སྐྱོན་གསུམ་གཟིགས་བྱེད་མ་ལ་བདག་བསྟོད་དོ། །
चेन सुम ज़िग छेद् म ल दग तोद् दो

ཕྲིན་ལས་བཅོལ་བ། གྲུབ་ཆེན་ཤྲཱི་བ་རིའི་གསུང་ལས།

སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་གཉན་པོ་བསྲུང་བ་དང་། །
सङ ग्येस् तेन प ञेन पो सुङ व दङ

དཀོན་མཆོག་དབུ་འཕང་གཉན་པོ་བསྟོད་པ་དང་། །
कोन छोग उ फङ ञेन पो तोद् प दङ

བདག་ཅག་དཔོན་སློབ་འཁོར་དང་བཅས་རྣམས་ཀྱི། །
दग चग पोन लोप खोर दङ चेस् नम क्यि

རྐྱེན་ངན་བར་ཆད་ཐམས་ཅད་ཞི་བ་དང་། །
क्येन ङेन बर छे थम चे शि व दङ

ཅི་འདོད་དངོས་གྲུབ་མྱུར་དུ་སྩལ་དུ་གསོལ། །
चि दोद् ङोस् डुप न्युर दु ज़ल दु सोल

བསྔོ་བ། རྗེ་བརྒྱུད་པ་མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེའི་གསུང་ལས།

དེ་ལྟར་མཆོད་བསྟོད་དད་པའི་དགེ་བ་དེས། །
दे तर छोद् तोद् दे पई गे व देस्

མར་གྱུར་འགྲོ་བ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀུན། །
मर ग्युर डो व सेम चेन थम चे कुन

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གོ་འཕང་འཐོབ་ཕྱིར་བསྔོ། །
ज़ोग पई सङ ग्येस् गो फङ थोप छिर ङो

བཀྲ་ཤིས། རྗེ་བཅོ་ལྔ་པ་མཁའ་ཁྱབ་རྡོ་རྗེའི་གསུང་ལས།

གསང་བའི་ཐེག་པ་རྒྱ་མཚོའི་སྙིང་པོ་ནི། །
सङ वई थेग प ग्य छ़ोइ ञिङ पो नि

བཀའ་བརྒྱུད་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུའི་བསྟན་པ་འདི། །
का ग्युद् यिद् शिन नोर बुइ तेन प दि

བཀའ་བཙན་ཕྱིན་ཆེ་འབྲེལ་ཚད་རྣམ་གྲོལ་ཐོབ། །
का ज़ेन छिन छे डेल छ़े नम डोल थोप

དར་རྒྱས་ཡུན་དུ་གནས་པའི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
दर ग्येस् युन दु नेस् पई ट शीस् शोग

ཅེས་པའང་རྫོགས་ཆེན་དཔོན་སློབ་རིན་པོ་ཆེས་མགོན་པོ་ལྷམ་དྲལ་གྱི་གསོལ་ཁ་དོན་འདྲིལ་བ། རྒྱུན་འཁྱེར་ཐུབ་པ། དྲག་ཚིག་མ་ཡིན་པ་ཞིག་དགོས་ཞེས་ནན་ཏན་མཛད་པས་བདག་ཐབས་ཟད་ནས། མགོན་པོའི་རྒྱུད་རྒྱ་གཞུང་སོགས་ལ་ལྟ་རྟོག་རྟོལ་ཙམ་བྱས་ཁུལ་གྱིས་སྐབས་དོན་མཐུན་པ་རྣམས་སྒྲིག་ཅི་ཐུབ་དང་། མཆོད་པ་ནི་དྲག་མཆོད་མིན་པ་ཞུང་བས་རང་རྩོམ་ཐབ་ཐུབ་རེ་མ་བྱས་ཀ་མེད་བྱུང་། སྒྲི་ཡི་འགྲོས་ནི་རྗེ་བརྒྱུད་པའི་མ་དཔག་མ་ལ་ཀྲུ་ཐབས་འདྲ་བྱས་ཏེ་ས་ག་ཟླ་བའི་དམར་ཕྱོགས་ཀྱི་བཅུ་དགུའི་སྔོད། མགོན་པོ་རྒྱུ་བའི་དུས་ཚེས་ལ་ཀརྨ་པ་ཨོ་རྒྱན་ཕྲིན་ལས་རྡོ་རྗེར་འབོད་པ་དེས་ཟླ་མགོན་དབྱེར་མེད་ཀྱི་ཕྲིན་ལས་ལ་བསམས་ཏེ་སྦྱར་བའོ། །

 རྩ་གསུམ་ཆོས་སྐྱོང་དང་བཅས་པ་རྣམས་ལ་གཏོར་མ་བསྔོ་བ་ཕྲིན་ལས་མྱུར་མགྱོགས།

# कर्म-आशु प्रार्थना

རཾ་ཡཾ་ཁཾ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ལན་གསུམ།
रँ यँ खँ। ओं आः हूँ। हूँ

འདིར་གཤེགས་དགྱེས་པའི་གདན་ལ་བཞུགས་སུ་གསོལ།།
दिर शेग ग्येस् पई देन ल शुग सु सोल

དངོས་གྲུབ་སྟྲིན་འཕྲིགས་ཡི་དམ་ཞི་ཁྲོའི་ལྷ། །
ङोस् डुप टिन ठिग यि दम शि ठोइ ल्ह

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

ཡེ་ཤེས་མགོན་པོ་ཕྱག་བཞི་ཕྱག་དྲུག་པ། །
ये शेस् गोन पो छग शि छग डुग प

ཕྲིན་ལས་མགོན་པོ་ཡབ་ཡུམ་འཁོར་དང་བཅས། །
ठिन लेस गोन पो यप युम खोर दङ चेस्

མཐུ་སྟོབས་དུས་མཐའི་རླུང་དང་བསྐལ་པའི་མེ། །
थु तोप दुस् थई लुङ दङ कल पई मे

སྔགས་སྲུང་ཨེ་ཀ་ཛ་ཊི་སྲོག་སྒྲུབ་མ། །
ङग सुङ ए क ज टा सिोग डुप म

མཆོད་གཏོར་འདིར་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད།།
छोद् तोर दिर शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

ཨུ་མ་དེ་ཝི་ཡུམ་བཅས་མཁའ་འགྲོའི་ཚོགས། །
उ म दे वा युम चेस् खा डोइ छोग

ཧཱུྃ། བླ་མ་ཡི་དམ་མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་རྣམས། །
ल म यि दम खा डो छोस् क्योङ नम

བྱིན་རླབས་གློང་ཡངས་རྩ་བརྒྱུད་བླ་མ་དང་། །
छिन लप लोङ यङ त्स ग्युद् ल म दङ

དགོས་འདོད་ཆར་འབེབས་དཔའ་བོ་མཁའ་འགྲོའི་ཚོགས།།
गोस् दोद् छर बेप पा बो खा डोइ छोग

མཁའ་ལྟར་ཁྱབ་པའི་ལེགས་ལྡན་ཚོགས་ཀྱི་བདག །
खा तर ख्यप पई लेग देन छोग क्यि दग

ཞལ་བཞི་མ་ནིང་སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་ཡོན་ཏན། །
शल शि म निङ कु सुङ थुग योन तेन

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

རྡོ་རྗེ་བེར་ཅན་ལྷ་མོ་རང་བྱུང་མ། །
दोर जे बेर चेन ल्ह मो रङ छुङ म

ཤན་པ་དམར་ནག་ལས་བྱེད་དྲེགས་པའི་ཚོགས། །
शेन प मर नग लेस छेद् डेग पई छोग

སྲིད་པའི་རླུང་ཞགས་དབང་ཕྱུག་ལྷ་ཆེན་ཡབ། །
सिद् पई लुङ शग वङ छुग ल्ह छेन यप

ལྷ་སྲིན་ཀུན་གྱི་དམག་དཔུང་སྤྲིན་ལྟར་སྤུད། །
ल्ह सिन कुन ग्यि मग पुङ टिन तर दुद्

དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་གཟའ་མཆོག་རཱ་ཧུ་ལ། །
डङ सोङ छेन पो ज़ा छोग रा हु ल

གཏུམ་ཆེན་ཛམས་པའི་ང་རོ་འབྲུག་ལྟར་སྒྲོགས། །
तुम छेन ड्म पई ङ रो ड्रुग तर ड्रोग

རྒྱལ་ཆེན་རྣམ་མང་ཐོས་སྲས་རྟ་སྔོན་ཅན། །
ग्यल छेन नम मङ थोस् सेस् त ङोन चेन

ལས་ཀྱི་གཤིན་རྗེ་དམ་ཅན་རྡོ་རྗེ་ལེགས། །
लेस क्यि शिन जे दम चेन दोर जे लेग

ཕྲིན་ལས་དངོས་གྲུབ་ཐོགས་མེད་གློག་ལྟར་འཁྱུག །
ठिन लेस ङोस् ड्रुप थोग मेद् लोग तर ख्युग

ཁ་རག་ཁྱུང་བཙུན་ལ་སོགས་བརྟན་མའི་ཚོགས། །
ख रग ख्युङ ज़ुन ल सोग तेन मई छ़ोग

ཛམ་ལྷ་རིགས་ལྔ་རྟ་བདག་ཀུ་བེ་ར། །
जम ल्ह रिग ङ त दग कु बे र

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

རྟ་ནག་དྲེགས་པ་ཤ་ཟ་ཁ་མོ་ཆེ། །
त नग डेग प श ज़ ख मो छे

ཤ་ན་ས་བདག་བདག་ཉིད་སྐྱེས་བུ་སོགས། །
श न स दग दग ञिद् क्येस् बु सोग

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད།
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

སྤུ་གྲི་མཆེད་གསུམ་སྔགས་བདག་སྨྱོ་ཁ་དང་། །
पु डि छेद् सुम ङग दग न्यो ख दङ

དྲེགས་པ་སྡེ་ལྔ་པེ་ཧར་ཙི་མཱ་ར། །
डेग प दे ङ पे हर ज़ि मा र

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

ཞིང་སྐྱོང་སེང་གེའི་གདོང་ཅན་ཡབ་དང་ཡུམ། །
शिङ क्योङ सेङ गे दोङ चेन यप दङ युम

དུར་ཁྲོད་བདག་པོ་བདག་མོ་ངས་ནུས་མ། །
दुर ठोद् दग पो दग मो ङेस नुस् म

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

ཚེ་རིང་མཆེད་ལྔ་ཨ་ཕྱི་གཡུ་སྒྲོན་མ།
छ़े रिङ छेद् ङ अ छि यु डोन म

གནོད་སྦྱིན་ཞང་བློན་བེག་ཙེ་ཚོགས་ཀྱི་བདག །
नोद् छिन शङ लोन बेग ज़े छ़ोग क्यि दग

ཀུན་འཁྱིལ་མཆེད་གསུམ་ལ་སོགས་ནོར་བདག་རྣམས།།
कुन ख्यिल छेद् सुम ल सोग नोर दग नम

དྲག་སྔགས་མཐུ་རྩལ་ཐོག་སེར་བཞིན་དུ་འབེབས། །
डग ङग थु ज़ल थोग सेर शिन दु बेप

སྡེ་དཔོན་སུམ་ཅུ་སྔགས་བདག་བཅོ་བརྒྱད་དང་། །
दे पोन सुम चु ङग दग चो ग्ये दङ

གཟའ་གདོང་གིང་ལྔ་བདུད་ཤན་རྩིས་ཀྱི་བདག །
ज़ा दोङ गिङ ङ दुद् शेन ज़ीस् क्यि दग

དགྲ་བོའི་སྟེང་དུ་རླུང་ལྟར་ཛག་པར་རྒྱུགས། །
ड बोइ तेङ दु लुङ तर जग पर ग्युग

ཛག་པ་མི་ལེན་ཀླུ་བཙན་སྤུན་བདུན་དང་། །
जग प मि लेन लु ज़ेन पुन दुन दङ

ཟབ་གཏེར་བཀའ་ཡི་སྲུང་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
ज़प तेर का यि सुङ म थम चे क्यीस्

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

ཐང་ལྷ་སྨག་གི་བཙན་རྒོད་སྤོམ་ར་ཚེ། །
थङ ल्ह डग गि ज़ेन गोद् पोम र छे

ཆོས་འཁོར་སྒྲུབ་གནས་དབེན་གནས་ཆོས་བཞིན་སྐྱོང་།།
छोस् खोर डुप नेस् वेन नेस् छोस् शिन क्योङ

གཞི་བདག་ཕོ་མོ་འཁོར་དང་བཅས་པ་རྣམས། །
शि दग फो मो खोर दङ चेस् प नम

སངས་རྒྱས་བསྟན་སྲུངས་དཀོན་མཆོན་དབུ་འཕང་སྟོད།།
सङ ग्येस् तेन सुङ कोन छोन उ फङ तोद्

སྟོན་པའི་དར་ཕྱོར་གྲགས་པའི་དུང་བུས་ལ། །
ञेन पई दर छोर डग पई दुङ बुस् ल

ཞི་རྒྱས་དབང་དྲག་ལས་རྣམས་མ་ལུས་པ། །
शि ग्येस् वङ डग लेस नम म लुस् प

རྟེན་ལ་བཞུགས་སམ་རང་གནས་ཅི་བདེར་གཤེགས། །
तेन ल शुग सम रङ नेस् चि देर शेग

སྒྲུབ་པའི་མཐུན་རྐྱེན་དབྱར་གྱི་དཔལ་ལྟར་སྤེལ། །
डुप पई थुन क्येन यर ग्यि पल तर पेल

མགུར་ལྷ་བཅུ་གསུམ་དགེ་བསྙེན་ཉེར་གཅིག་དང་། །
गुर ल्ह चु सुम गे ञेन ञेर चिग दङ

གཙུག་མར་གནས་དང་གློ་བུར་ལྷགས་པ་ཡི། །
ञुग मर नेस् दङ लो बुर ल्हग प यि

མཆོད་གཏོར་འདི་བཞེས་བཅོལ་བའི་ཕྲིན་ལས་མཛོད། །
छोद् तोर दि शेस् चोल बई ठिन लेस ज़ोद्

དགེ་འདུན་སྡེ་རྒྱས་རྣལ་འབྱོར་ཚེ་དཔལ་སྤེལ། །
गेन दुन दे ग्येस् नल छोर छ़े पल पेल

འཁོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་རྒྱས་པ་ཉིད་དུ་མཛོད། །
खोर दङ लोङ चोद् ग्येस् प ञिद् दु ज़ोद्

འབད་མེད་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པར་མཛད་དུ་གསོལ། །
बे मेद् ल्हुन ग्यीस् डुप पर ज़े दु सोल

སྲིད་ཞིའི་དགེ་ལེགས་རྒྱས་པའི་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །
सिद् शी गे लेग ग्येस् पई ट शीस् शोग

ཅེས་འདི་ལྟར་ཉམས་ལ་གང་ཤར་མཆོག་གྱུར་གླིང་པས་བྲིས་པ་བྱིན་རླབས་ཀྱི་བབ་ཅུང་ཟད་ཡོད་དམ་སེམས་པས་ལྷག་པ་ལྷ་མཚམས་ཀྱི་འགྲུབ་སྐྱོར་དུ་བྲིས་པ་དགེ །

# नाथ-अविक्षिप्त धारणी-सूत्र

ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས།

# आर्य-सर्वकर्मावरण-विशोधनी नाम धारणी

རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཨཱརྱསརྦཀརྨཨཱབརཎབིཤོདྷནིནཱམདྷཱརཎཱི།
ग्य गर के दु  आर्यसर्वकर्मआबरणविशोधनिनामधारणी। बोद् के दु
**भारतीय भाषा में–आर्य-सर्वकर्मावरण-विशोधनी नाम धारणी।**

བོད་སྐད་དུ། འཕགས་པ་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས།
फग प लेस क्यि डिप प थम चे नम पर छोङ व शेस् छ बई ज़ुङ
**भोट-भाषा में–फग्स-पा लस्-की डिब्-पा थम्स-चद् नम्-पर जोङ्-वा शेस्-ज-वई ज़ुङ्ग।**

བཅོམ་ལྡན་འདས་མི་འཁྲུགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།
चोम देन देस् मि ठुग प ल छग छ़ल लो
**भगवान् अक्षोभ्य को प्रणाम करता हूँ।**

ན་མོ་རཏྣ་ཏྲ་ཡཱ་ཡ། ཨོཾ་ཀཾ་ཀ་ནི་ཀཾ་ཀ་ནི། རོ་ཙ་ནི་རོ་ཙ་ནི། ཏྲོ་ཊ་ནི་ཏྲོ་ཊ་ནི། ཏྲཱ་ས་ནི་ཏྲཱ་ས་ནི།
नमो रत्नत्रयाय। ओं कंकनि कंकनि। रोचनि रोचनि। त्रोटनि त्रोटनि। त्रासनि त्रासनि।
**नमो रत्नत्रयाय। ओं कंकनि-कंकनि। रोचनि-रोचनि। त्रोटनि-त्रोटनि। त्रासनि-त्रासनि।**

པྲ་ཏི་ཧ་ན་པྲ་ཏི་ཧ་ན། སརྦ་ཀརྨ་པ་རཾ་པ་ར་ཎི་མེ་སྭཱ་ཧཱ།
प्रतिहन प्रतिहन। सर्व कर्म परंपराणि मे स्वाहा।
**प्रतिहन-प्रतिहन। सर्वकर्मपरंपारणि मे स्वाहा।।**

གཟུངས་སྔགས་འདིའི་ཆོ་ག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། རྟག་ཏུ་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ན་ལས་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་བརྒྱུད་པ་ཐམས་ཅད་
ज़ुङ ङग दी छो ग नि दि यिन ते तग तु देस् जोद् छेस् न लेस चिग नेस् चिग तु ग्युद् प थम चे
**इस मन्त्रधारणी की (सम्पादन) विधि तो यह (इस प्रकार) है। सदा जप-वाचन करते हैं, तब प्रत्येक पारम्परिक**

རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་རོ། །དུས་གསུམ་དུ་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ན་མཚམས་མེད་པ་ལྔ་ཡང་བྱང་བར་འགྱུར་རོ། །
नम पर दग पर ग्युर रो  दुस् सुम दु देस् जोद् छेस् न छ़म मेद् प ङ यङ छङ बर ग्युर रो
**समस्त कर्म विशोधित हो जाते हैं। एक बार जप-वाचन करते हैं, तब बुरे निमित्त, बुरे स्वप्न तथा समस्त**

ལན་ཅིག་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ན་ལྟས་ངན་པ་དང་། རྨི་ལམ་ངན་པ་དང་བཀྲ་མི་ཤིས་པ་རྣམས་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །
लेन चिग देस् जोद् छेस् न तेस् ङेन प दङ   मि लम ङेन प दङ ट मि शीस् प नम मेद् पर ग्युर रो
अमंगल नष्ट होते हैं। काय में धारण करते हैं अथवा पोथी में लिखकर गले में धारण करते हैं, तब उसकी

ལུས་ལ་འཆང་ངམ་གླེགས་བམ་ལ་བྲིས་ནས་མགུལ་དུ་ཐོགས་ཏེ་འཆང་ན་དེ་ལ་དུས་མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་རྣམས་གཏན་དུ་
लुस् ल छङ ङम लेग बम ल डीस् नेस् गुल दु थोग ते छङ न दे ल दुस् म यिन पर छि व नम तेन
असामयिक मृत्यु कदापि नहीं होती है। कोई करुणा के वशीभूत होकर मृग, पक्षी, मनुष्य अथवा अमनुष्य

འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །གང་ཞིག་སྙིང་རྗེས་ཉོན་ཏེ་རི་དྭགས་དང་བྱ་དང་མི་དང་མི་མ་ཡིན་པ་
दु छुङ बर मि ग्युर रो   गङ शिग ञिङ जेस् नोन ते रि दग दङ छ दङ मि दङ मि म यिन प
कोई भी हो, मृत्यु होने वाले के कान में वाचन करता है, तब वह (मृतक) दुर्गति में नहीं जाता है। अथवा मृत्यु

རྣམས་ཀྱང་རུང་སྟེ། འཆི་བའི་རྣ་ཁུང་དུ་བརྗོད་ན་དེ་ངན་སོང་དུ་འགྲོ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །
नम क्यङ रुङ ते   छि बई न खुङ दु जोद् न दे ङेन सोङ दु डो बर मि ग्युर रो
को प्राप्त कर कालातीत हो जाता है, तब मृत्यु-संक्रमण होने वाले के नाम को लेकर, उसके लिए मैत्री एवं

ཡང་ན་ཤི་སྟེ་དུས་ལས་འདས་ན་ཤི་འཕོས་པའི་མིང་ནས་སྨོས་ཏེ་དེའི་ཕྱིར་བྱམས་པ་དང་སྙིང་རྗེས་ལན་
यङ न शि ते दुस् लेस देस् न शि फोस् पई मिङ नेस् मोस् ते दे छिर छम प दङ ञिङ जेस् लेन
करुणापूर्वक सौ बार, हज़ार अथवा लाख बार वाचन करते हैं, तब वह सत्त्व नरक में उत्पन्न हो जाने पर भी

བརྒྱའམ་སྟོང་ངམ་འབུམ་བརྗོད་ན་སེམས་ཅན་དེ་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་སྐྱེས་སུ་ཟིན་ཀྱང་དེའི་མོད་ལ་ཐར་
ग्यह़म तोङ ङम बुम जोद् न सेम चेन दे सेम चेन न्यल बर क्येस् सु ज़िन क्यङ दे मोद् ल थर
उसी समय मुक्त हो जाता है।

བར་འགྱུར་རོ། །སའམ་ཏིལ་ལམ་ཡུངས་ཀར་རམ་ཆུ་གང་ཡང་རུང་བ་ལ་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ཏེ་ཤི་བའི་ལུས་ལ་
वर ग्युर रो   सह़म तिल लम युङ कर रम छु गङ यङ रुङ व ल देस् जोद् छेस् ते शि बई लुस् ल
मिट्टी, तिल, सफेद तिल अथवा जल किसी में भी जप-वाचन कर मृतक के शरीर पर छिड़के, स्नान कराकर

གཏོར་རམ། ཁྲུས་བྱས་ནས་དེའི་འོག་ཏུ་བསྲེག་པའམ། ཡང་ན་མཆོད་རྟེན་གྱི་ནང་དུ་བཅུག་སྟེ་བཞག་ལ།
तोर रम   ठुस् छेस् नेस् दे ह़ोग तु सेग पह़म   यङ न छोद् तेन ग्यि नङ दु चुग ते शग ल
उसके बाद जलाए, अथवा स्तूप के अन्दर स्थापित करके रखें, विद्यामन्त्र को भी लिखकर शीर्ष पर बाँधने से

རིག་སྔགས་ཀྱང་བྲིས་ཏེ་མགོ་བོ་ལ་བཏགས་ན་དེ་ངན་སོང་དུ་སྐྱེས་པ་ཡང་ཞག་བདུན་གྱིས་གདོན་མི་ཟ་
रिग ङग क्यङ डीस् ते गो बो ल तग न दे ङेन सोङ दु क्येस् प यङ शग दुन ग्यीस् दोन मि ज़
वह भी जो दुर्गति में जन्म ले चुका है, सात दिन में निश्चित रूप से मुक्त होकर सुगति रूपी अभ्युदय (देव एवं

བར་ཐར་ཏེ་བདེ་འགྲོ་མཐོ་རིས་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་དུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བའམ། ཡང་ན་རང་གི་སྨོན་ལམ་གྱི་དབང་གིས་
वर थर ते दे डो थो रीस् क्यि जिग तेन दु क्ये बर ग्युर बह्म यङ न रङ गि मोन लम ग्यि वङ
मनुष्य) लोक में उत्पन्न होता है, अथवा स्वयं के प्रणिधानवश (जहाँ प्रणिधान किया है वहाँ) उत्पन्न होता है।

སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ། །གང་ཞིག་ཟླ་བ་ཉ་བའི་ཚེ་ཁྲུས་བྱས་ལ་གཙང་མར་བྱས་ཏེ་དུས་གསུམ་དུ་གོས་བརྗེ་
गीस् क्ये बर ग्युर रो गङ शिग द व ञ बई छ़े ठुस् छेस् ल त्सङ मर छेस् ते दुस् सुम दु गोस् जे
जो मास के पूर्णिमा के दिन स्नान कर, स्वच्छ करके तीन काल में वस्त्र बदलते हुए भोजन न करे, अथवा

ཞིང་ཁ་ཟས་མི་ཟ་བའམ་ཡང་ན་ཟས་དཀར་བག་བཟའ་ཞིང་སྐུ་གདུང་དང་ལྡན་པའི་མཆོད་རྟེན་སྐོར་བཞིན་དུ་
शिङ ख ज़ेस् मि ज़ बह्म यङ न ज़ेस् कर बग ज़ा शिङ कु दुङ दङ देन पई छोद् तेन कोर शिन दु
किञ्चिद् श्वेत खाद्य का भक्षण करते हुए अस्थियुक्त स्तूप का प्रदक्षिणा करते हुए नाम सहित एक लाख बार

གང་གི་མིང་དང་ལྡན་པས་ལན་འབུམ་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ན་དེ་ངན་སོང་ནས་ཐར་ཏེ་གནས་གཙང་མའི་ལྷའི་
गङ गि मिङ दङ देन पेस् लेन बुम देस् जोद् छेस् न दे ङेन सोङ नेस् थर ते नेस् त्सङ मई ल्हई
जप-वाचन करें तो वह (मृतक) दुर्गति से मुक्त होकर (चतुर्थ ध्यान रूपी) शुद्धावासक देवनिकाय में उत्पन्न

རིས་སུ་སྐྱེས་ནས་སྒྲུབ་པ་པོའི་ཐད་དུ་འོང་སྟེ་མཆོད་པ་བྱེད་ཅིང་ལུས་ཀྱང་སྟོན་ལ་ལེགས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་
रीस् सु क्येस् नेस् डुप प पोइ थे दु ह़ोङ ते छोद् प छेद् चिङ लुस् क्यङ तोन ल लेग सो शेस् छ व
होकर साधक के समक्ष आकर पूजा करते हुए, अपना काय भी प्रकट करते हुए साधुवाद कर, तीन बार

ཡང་བྱིན་ནས་ལན་གསུམ་བསྐོར་བ་བྱས་ཏེ་མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །
यङ छिन नेस् लेन सुम कोर व छेस् ते मि नङ वर ग्युर रो
प्रदक्षिणा करके लुप्त हो जाता है।

དེའི་མིང་བྲིས་ལ་གཟུངས་སྔགས་བཟླས་བརྗོད་བྱེད་ཅིང་མཆོད་རྟེན་འབུམ་བྱས་ལ་གདུགས་དང་། རྒྱལ་མཚན་དང་།
दे मिङ डीस् ल ज़ुङ ङग देस् जोद् छेद् चिङ छोद् तेन बुम छेस् ल दुग दङ ग्यल छ़ेन दङ
उस (मृतक) का नाम लिखकर धारणी-मन्त्र का जप-वाचन करते हुए एक लाख स्तूप बनाएँ।

བ་དན་ལ་སོགས་པས་ལེགས་པར་མཆོད་ནས་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་དང་། ཡང་ན་ཆུ་ཀླུང་དུ་བཏང་ན་དེས་སེམས་ཅན་
व देन ल सोग पेस् लेग पर छोद् नेस् ग्य छ़ो छेन पो दङ यङ न छु लुङ दु तङ न देस् सेम चेन
साथ ही छत्र, ध्वज और पताका आदि से अच्छी तरह पूजाकर महासमुद्र, अथवा (यदि) नदी में लगाते हैं,

དམྱལ་བ་ལ་སོགས་པ་ནས་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །
न्यल व ल सोग प नेस् थर बर ग्युर रो
तब इसके द्वारा सत्त्व नरक आदि से मुक्त हो जाता है।

ཡང་ན་དེ་ལྟར་མཆོད་པ་བྱས་ནས་མཇུག་ཏུ་ལམ་གྱི་བཞི་མདོར་མཆོད་རྟེན་ཆེན་པོ་བྱས་ཏེ། གདུགས་དང་།
यङ न दे तर छोद् प छेस् नेस् जुग तु लम ग्यि शि दोर छोद् तेन छेन पो छेस् ते    दुग दङ
अथवा इस प्रकार पूजा करके अन्त में चौराहे पर महास्तूप का निर्माणकर छत्र,

རྒྱལ་མཚན་དང་། བ་དན་ལ་སོགས་པས་ལེགས་པར་མཆོད་ལ་འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཡང་མཆོད་རྟེན་གསོལ་ནས་
ग्यल छेन दङ    व देन ल सोग पेस् लेग पर छोद् ल फग पई गेन दुन ल यङ छोद् तेन सोल नेस्
ध्वज और पताका आदि से अच्छी तरह पूजा करके आर्य संघ को भी स्तूप दे, दक्षिणा भी देकर अच्छी तरह

ཡོན་ཡང་ཕུལ་ཏེ་ལེགས་པར་མཆོད་ནས་འདི་ཚེ་གེ་མོ་ཞིག་གི་དགེ་བའི་རྩ་བར་གྱུར་ཅིག །
योन यङ फुल ते लेग पर छोद् नेस् दि छे गे मो शिग गि गे बई त्र बर ग्युर चिग
पूजाकर यह अमुक...का कुशलमूल में परिवर्तित हो।

འདི་ཁོ་ནས་བདེ་འགྲོ་མཐོ་རིས་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་དུ་སྐྱེ་བར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་ཀྱང་ཤེས་པར་བྱས་ན་དེ་ཁོ་ན་
दि खो नेस् दे डो थो रीस् क्यि जिग तेन दु क्ये बर ग्युर चिग चेस् क्यङ शेस् पर छेस् न दे खो न
मात्र इसके द्वारा सुगति रूपी स्वर्गलोक में उत्पन्न हो। इस विधि को भी जानते हैं, तब (वह मृतक) वैसे ही

བཞིན་དུ་སྐྱེས་ནས་ལུས་ཀྱང་སྟོན་ཅིང་ལེགས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་བྱིན་ནས་མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །
शिन दु क्येस् नेस् लुस् क्यङ तोन चिङ लेग सो शेस् छ व यङ छिन नेस् मि नङ वर ग्युर रो
उत्पन्न होकर काय का प्रदर्शन करते हुए साधुवाद देकर लुप्त हो जाता है।

མཚམས་མེད་པ་ལྔ་བྱེད་པའམ། དམ་པའི་ཆོས་སྤོང་བའམ། འཕགས་པ་ལ་སྐུར་པ་བཏབ་པ་ཡང་རུང་སྟེ་འཆི་ཀར་
छम मेद् प ङ छेद् पहम    दम पई छोस् पोङ बहम    फग प ल कुर व तप प यङ रुङ ते छि कर
पाँच आनन्तर्य कर्म के करने, सद्धर्म का त्याग करने, अथवा आर्य का अपवाद करने पर भी मृत्यु के समय

རྩིག་པ་ལ་གཟུངས་སྔགས་འདི་བྲིས་པ་མཐོང་ན། དེའི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་འགྱུར་ན།
त्सिग प ल ज़ुङ ङग दि डीस् प थोङ न    दे लेस क्यि डिप प थम चे ज़े पर ग्युर न
दीवार पर इस धारणी-मन्त्र को लिखा देखते हैं, तब उसके समस्त कर्मावरण समाप्त होते हैं तो पाठ करने तथा

འདོན་པ་དང་བཟླས་བརྗོད་བྱེད་པ་ལྟ་ཅི་སྨོས་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེ་ཉིད་བྱོན་ནས་འདི་སྐད་དུ་རིགས་ཀྱི་
दोन प दङ देस् जोद् छेद् प त चि मोस् ते    दे शिन शेग प दे ञिद् छोन नेस् दि के दु रिग क्यि
जप-वाचन करने का तो कहना ही क्या। वह तथागत (बुद्ध) आकर तद्यथा–कुलपुत्र! यहाँ मेरे पास आओ,

བུ་ཚུར་ངའི་གན་དུ་ཤོག་ཅེས་ཀྱང་གསུང་བར་འགྱུར་རོ། །
बु छुर ङई गेन दु शोग चेस् क्यङ सुङ बर ग्युर रो
ऐसा कहते हैं।

འཕགས་པ་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས་རྫོགས་སོ། །
फग प लेस क्यि डिप प थम चे नम पर छोङ व शेस् छ बई ज़ुङ ज़ोग सो
**आर्य-सर्वकर्मावरण-विशोधनी नाम धारणी समाप्त हुई।**

སྡུག་བསྔལ་ལས་རྣམ་པར་དགྲོལ་བའི་གཟུངས་ཀྱི་མདོ།

# (आर्य-)दुःख-विमुक्तक-धारणी-सूत्र

རྒྱ་ནག་སྐད་དུ། པ་ཅི་ཁྱུའུ་ནན་ཐུའོ་ལུའོ་ཉི་ཅིང་།
ग्य नग के दु    प चि खुहु नेन थुहो लुहो ञि चिङ
चीनी भाषा में–पचि खुहु नन थुहो लुहो ञिचिङ।

བོད་སྐད་དུ། སྡུག་བསྔལ་ལས་རྣམ་པར་དགྲོལ་བའི་གཟུངས་ཀྱི་མདོ།
बोद् के दु    दुग ङल लेस नम पर डोल बई ज़ुङ क्यि दो
भोट-भाषा में–दुग्-ङल्-लस् नम्-पर-डोल्-वई ज़ुङ्ग-की दो।

བཅོམ་ལྡན་འདས་མགོན་པོ་མི་འཁྲུགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चोम देन देस् गोन पो मि ठुग प ल छग छ़ल लो
भगवान् नाथ-अक्षोभ्य को प्रणाम करता हूँ।

འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པ་དུས་གཅིག་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་མཉན་ཡོད་ན། རྒྱལ་བུ་རྒྱལ་བྱེད་ཀྱི་ཚལ་
दि के दग गीस् थोस् प दुस् चिग न    चोम देन देस् ञेन योद् न    ग्यल वु ग्यल छेद् क्यि छ़ल
एक बार ऐसा मैंने सुना। भगवान् श्रावस्ती में राजकुमार जेतवन के

མགོན་མེད་ཟས་སྦྱིན་གྱི་ཀུན་དགའ་ར་བ་ན། ཉན་ཐོས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་གྲངས་
गोन मेद् ज़ेस् छिन ग्यि कुन गा र व न    ञेन थोस् दङ    छङ छुप सेम पा सेम पा छेन पो डङ
अनाथपिण्डकाराम में श्रावक तथा असंख्य बोधिसत्त्व महासत्त्वों के

མེད་པ་དག་དང་ཐབས་ཅིག་ཏུ་བཞུགས་ཏེ། ལྷ་དང་མི་དང་ལྷ་མ་ཡིན་སོགས་ཀྱི་འདུས་པ་ཆེན་པོ་ཚད་མེད་
मेद् प दग दङ थप चिग तु शुग ते    ल्ह दङ मि दङ ल्ह म यिन सोग क्यि दुस् प छेन पो छ़े मेद्
साथ विराजमान होकर, देव, मनुष्य तथा अमनुष्य आदि अपरिमित महासमूहों

པས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བའོ། །དེའི་ཚེ་འདུས་པ་དེ་དག་གི་དབུས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བརྗོད་དུ་མེད་པའི་
पेस् क्यङ योङ सु कोर वहो    दे छ़े दुस् प दे दग गि उस् न छङ छुप सेम पा जोद् दु मेद् पई
से परिवृत्त थे। उस समय उन महासमूहों के मध्य से बोधिसत्त्व

ཡོན་ཏན་གྱི་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ་ཞིག་མཆིས་པ་དེ་སྟན་ལས་ལངས་ཏེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞབས་ལ་མགོ་བོས་
योन तेन ग्यि ग्येन शेस् छ व शिग छीस् प दे तेन लेस लङ ते चोम देन देस् क्यि शप ल गो बोस्
अनिर्वचनीय गुणाभरण नामक उपस्थित थे, वे आसन से उठकर भगवान् के चरणों में शीर्ष से

ཕྱག་བཙལ་ཏེ། ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ་བཀུར་སྟི་དང་བཅས་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ། །
छग ज़ल ते   थल मो छर ते कुर ति दङ चेस् पेस् चोम देन देस् ल दि के चेस् सोल तो
नमन कर, अञ्जलिबद्ध हो सत्कार सहित भगवान् से इस प्रकार कहे–

བཅོམ་ལྡན་འདས། དེང་འདིར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སུ་སེམས་ཅན་ཚད་མེད་པ་དག་ཉོན་མོངས་པའི་རྒྱུ་དང་
चोम देन देस्   देङ दिर जिग तेन ग्यि खम सु सेम चेन छ़े मेद् प दग ञोन मोङ पई ग्यु दङ
भगवन्! इस समय यहाँ लोकधातु में अपरिमित सत्त्व क्लेशहेतु एवं प्रत्ययवश नाना (प्रकार के) पापकर्मों के

རྐྱེན་གྱི་དབང་གིས་སྡིག་པའི་ལས་སྣ་ཚོགས་པ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པས། སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་དང་།
क्येन ग्यि वङ गीस् दिग पई लेस न छ़ोग प ङोन पर दु छेद् पेस्   सेम चेन न्यल व दङ
अभिसंस्कारों से सत्त्व-नरक, प्रेत तथा पशु-योनिओं में पतित हो रहे हैं।

ཡི་དྭགས་དང་། བྱོལ་སོང་རྣམས་སུ་ལྷུང་བར་འགྱུར་བའམ། ཡང་ན་ལྷ་དང་མིའི་འགྲོ་བ་དག་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་དོས་དྲག་
यि दग दङ   छोल सोङ नम सु तुङ बर ग्युर बह़म   यङ न ल्ह दङ मी डो व दग तु दुग ङल
अथवा देव-मनुष्य रूपी गतियों (योनियों) में नाना (प्रकार के) दुःख रूपी बोझ झेलने वालों को दया-चित्त से

པ་སྣ་ཚོགས་པ་སྤྱོད་བར་འགྱུར་བ་ལ་ཐུགས་བརྩེ་བས་རྣམ་པར་དགྲོལ་བའི་ཐབས་བསྟན་པར་མཛད་དུ་གསོལ།
दोस् डग प न छ़ोग प न्योङ बर ग्युर व ल थुग ज़े वे नम पर डोल बई थप तेन पर ज़े दु सोल
विमुक्ति-उपाय का प्रदर्शन करें।

དེ་སྐད་ཅེས་གསོལ་པ་དང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རིགས་ཀྱི་བུ། ལེགས་སོ། །ལེགས་སོ། །
दे के चेस् सोल प दङ   चोम देन देस् क्यीस् का ज़ल प   रिग क्यि बु   लेग सो   लेग सो
ऐसा कहने पर भगवान् ने कहा–कुलपुत्र। साधु, साधु।

ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྙིང་བརྩེ་བས་དེ་ལྟར་གསོལ་བ་བཏབ་པ་ལེགས་སོ། །
ख्योद् क्यीस् सेम चेन थम चे ल ञिङ ज़े वे दे तर सोल व तप प लेग सो
तुम्हारे द्वारा सर्वसत्त्वों के प्रति दया-चित्त होने से इस प्रकार की प्रार्थना करना अच्छा है।

དོན་དེའི་ཕྱིར་དེང་ཁྱོད་ལ་སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་དགྲོལ་བའི་ཐབས་བསྡུས་པ་ངས་བཤད་ཀྱིས།
दोन दे छिर देङ ख्योद् ल दुग ङल थम चे लेस नम पर डोल बई थप बदुस् प ङेस शे क्यीस्
इसलिए अब तुम्हें समस्त दुःखों से विमुक्ति का संक्षिप्त उपाय मैं बताता हूँ।

ཉོན་ཅིག་ཡང་དག་པར་ཉོན་ཅིག །རིགས་ཀྱི་བུ། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་
ञोन चिग यङ दग पर ञोन चिग रिग क्यि बु यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् चोम देन देस्
सुनें। सम्यक् रूप से सुनें। कुलपुत्र! सम्यक् सम्बुद्ध भगवान्

མི་འཁྲུགས་པ་ཞེས་བྱ་བས། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བའི་དོན་འཚལ་བས་ན། གཟུངས་སྔགས་འདི་
मि ठुग प शेस् छ वे सेम चेन थम चे ल फेन प दङ दे वई दोन छ़ल वे न ज़ुङ ङग दि
अक्षोभ्य नाम वाले ने सर्वसत्त्वों के हित तथा सुखार्थ की इच्छा होने से इस धारणी-मन्त्र को

གསུངས་ཤིང་འདུས་པ་རྣམས་ལ་བཟླས་བརྗོད་དུ་བགྱིད་པར་གནང་ངོ་། །
सुङ शिङ दुस् प नम ल देस् जोद् दु ग्यिद् पर नङ ङो
कहा तथा एकत्रित लोगों को जप-वाचन करने के लिए प्रदान किया।

སྔགས་སྨྲས་པ། ཀཾཀནི་ཀཾཀནི། རོཙནི་རོཙནི། ཏྲོཊནི་ཏྲོཊནི། ཏྲཱསནི་ཏྲཱསནི། པྲཏིཧན་པྲཏིཧན།
ङग मेस् प कंकनि कंकनि। रोचनि रोचनि। त्रोटनि त्रोटनि। त्रासनि त्रासनि। प्रतिहन प्रतिहन।
मन्त्र कहा–कंकनि-कंकनि। रोचनि-रोचनि। त्रोटनि-त्रोटनि। त्रासनि-त्रासनि। प्रतिहन-प्रतिहन।

སརྦ་ཀརྨ་པརཾཔརཱཎི་མེ་སྭཱཧཱ།
सर्व कर्म परंपराणि मे स्वाहा।
सर्वकर्मपरंपराणि मे स्वाहा।

རིགས་ཀྱི་བུའམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་གང་ལ་ལ་ཞིག་གིས། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་
रिग क्यि बुह़म रिग क्यि बु मो गङ ल ल शिग गीस् दे शिन शेग प यङ दग पर ज़ोग पई सङ
कुलपुत्र वा कुलपुत्री किन्हीं के द्वारा तथागत सम्यक् सम्बुद्ध

རྒྱས་མི་འཁྲུགས་པ་ལ་གཡོ་དང་སྒྱུ་མ་མཆིས་པར་ཕྱག་བྱས་ཏེ་གཟུངས་འདི་འཆང་བ་དང་འཛིན་པར་བྱས་ན།
ग्येस् मि ठुग प ल यो दङ ग्यु म छीस् पर छग छेस् ते ज़ुङ दि छङ व दङ ज़िन पर छेस् न
अक्षोभ्य को शठता एवं माया से रहित होकर इस धारणी को धारण करे तथा ग्रहण करे तो

སྔོན་སྤྱད་པའི་མཚམས་མེད་པའི་ལས་ལྔ་པོ་དག་གམ། རྩ་བ་བཞིའམ། མི་དགེ་བ་བཅུའམ། འཕགས་པའི་ཚོགས་ལ་
ङोन चे पई छ़म मेद् पई लेस ङ पो दग गम त्स़ व शिह़म मि गे व चुह़म फग पई छ़ोग ल
पूर्व में आचरित पाँच आनन्तर्य कर्म, अथवा चार मूल, दशाकुशल, आर्यगण के अपवाद

སྐུར་བ་བཏབ་པའམ། དམ་པའི་ཆོས་ལ་སྐུར་བ་བཏབ་པའི་ཉེས་པ་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །
कुर व तप पह़म दम पई छ्होस् ल कुर व तप पई ञेस् प दङ चेस् प थम चे रप तु शि वर ग्युर रो
करने अथवा सद्धर्म के अपवाद करने की समस्त आपत्तियाँ शान्त हो जाती हैं।

འཆི་བའི་དུས་ལ་བབ་པའི་ཚེ་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་མི་འཁྲུགས་པ་དེ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་གང་གི་མདུན་
छि बई दुस् ल बप पई छे न    चोम देन देस् मि ठुग प दे दङ छङ छुप सेम पा नम गङ गि दुन
जब मृत्यु का समय आ जाए, (तब) वे भगवान् अक्षोभ्य और बोधिसत्त्व लोग जिसके सामने

ན་མངོན་སུམ་དུ་འོངས་ནས། སྙན་པར་བརྗོད་ཅིང་མགུ་བར་བྱས་ཏེ་གང་དེ་རབ་ཏུ་དགའ་བར་བྱེད་དོ། །
न ङोन सुम दु ह़ोङ नेस्    ञेन पर जोद् चिङ गु बर छेस् ते गङ दे रप तु गा बर छेद् दो
प्रत्यक्ष पधार कर मधुर वचन बोलते हुए प्रसन्न हो, वे उसको प्रसन्न करते हैं।

དེ་ནས་དེང་ཁྱོད་བསུ་བར་བྱེད་ཀྱིས་བདག་གང་དུ་གནས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དུ་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འདོང་
दे नेस् देङ ख्योद् सु बर छेद् क्यीस् दग गङ दु नेस् पई सङ ग्येस् क्यि शिङ दु ल्हेन चिग तु दोङ
उसके बाद, आज तुम्हारा स्वागत करता हूँ, मैं जिस बुद्धक्षेत्र में रहता हूँ, वहाँ (मेरे) साथ में

བར་རིགས་སོ་ཞེས་གསུངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཤི་འཕོས་ནས་ཀྱང་ངེས་པར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མི་འཁྲུགས་པའི་
वर रिग सो शेस् सुङ पर ग्युर रो    शि फोस् नेस् क्यङ ङेस् पर दे शिन शेग प मि ठुग पई
चलना युक्तिसंगत है–ऐसा कहते हैं। मृत्यु-संक्रमण होने के बाद भी (वे) नियत रूप से तथागत

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམ་པར་དག་པར་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ། །
सङ ग्येस् क्यि शिङ नम पर दग पर क्ये बर ग्युर रो
अक्षोभ्य बुद्ध के विशुद्ध क्षेत्र में उत्पन्न होते हैं।

རིགས་ཀྱི་བུ། གཞན་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ངན་སོང་སྦྱོང་བའི་རྒྱལ་
रिग क्यि बु    शेन यङ दे शिन शेग प यङ दग पर ज़ोग पई सङ ग्येस् ङेन सोङ छोङ बई ग्यल
कुलपुत्र! अन्य भी, तथागत सम्यक् सम्बुद्ध (सर्व-)दुर्गतिशोधनराज नाम वाले ने

པོ་ཞེས་བྱ་བས། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བའི་དོན་འཚལ་བས་ན། གཟུངས་སྔགས་འདི་གསུངས་
पो शेस् छ वे    सेम चेन थम चे ल फेन प दङ दे वई दोन छ़ल वे न    ज़ुङ ङग दि सुङ
समस्त सत्त्वों के प्रति हित एवं सुख के अर्थ की इच्छा करने से इस मन्त्रधारणी को कहा है तथा

ཤིང་འདུས་པ་རྣམས་ལ་བཟླས་བརྗོད་དུ་བགྱིད་པར་གནང་ངོ་། །
शिङ दुस् प नम ल देस् जोद् दु ग्यिद् पर नङ ङो
समूहों को जप-वाचन करने के लिए प्रदान किया है।

སྔགས་སྨྲས་པ། ཤོ་དྷ་ནེ་ཤོ་དྷ་ནེ་སརྦ་པཱ་པཾ་བི་ཤོ་དྷ་ནེ་ཤུདྡྷེ་བི་ཤུདྡྷེ་སརྦ་ཀརྨ་བི་ཤུདྡྷེ་སྭཱ་ཧཱ།
ङग मेस् प    शोधने शोधने सर्व पापं विशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्व कर्म विशुद्धे स्वाहा।
मन्त्र कहा– शोधने शोधने सर्वपापं विशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मविशुद्धे स्वाहा।

གལ་ཏེ་རིགས་ཀྱི་བུའམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་གང་ལ་ལ་ཞིག་གིས། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་
गल ते रिग क्यि बुह्म रिग क्यि बु मो गङ ल ल शिग गीस्   दे शिन शेग प यङ दग पर ज़ोग
यदि कुलपुत्र वा कुलपुत्री किन्हीं के द्वारा तथागत सम्यक् सम्बुद्ध

པའི་སངས་རྒྱས་ངན་སོང་སྦྱོང་བའི་རྒྱལ་པོ་ལ་གཡོ་དང་སྒྱུ་མ་མཆིས་པར་ཕྱག་བྱས་ཏེ་ སྔགས་འདི་འཆང་བ་
पई सङ ग्येस् ङेन सोङ छोङ बई ग्यल पो ल यो दङ ग्यु म छीस् पर छग छेस् ते ङग दि छङ व
दुर्गतिशोधनराज को शठता एवं माया से रहित हो प्रणाम कर, इस धारणी को धारण करे

དང་འཛིན་པར་བྱས་ན། བསྐལ་པ་ཁྲི་བཞི་སྟོང་གི་སྔོན་གྱི་ཚེ་རབས་ཀྱང་རྟག་ཏུ་དྲན་པར་འགྱུར་རོ། །
दङ ज़िन पर छेस् न   कल प ठि शि तोङ गि ङोन ग्यि छे रप क्यङ तग तु डेन पर ग्युर रो
तथा ग्रहण करे तो चार सहस्त्र कल्प पूर्व के जन्मान्तरों का सदा स्मरण होता है।

གང་དུ་སྐྱེ་བའི་གནས་སུ་སྐྱེས་པའི་ལུས་འཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །
गङ दु क्ये बई नेस् सु क्येस् पई लुस् थोप पर ग्युर रो
जिस स्थान पर उत्पन्न होते हैं, वहाँ पुरुष-काय की प्राप्ति होती है।

དབང་པོ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་ཤིང་ལས་འབྲས་ལ་མངོན་པར་ཡིད་ཆེས་པར་འགྱུར་རོ། །
वङ पो फुन सुम छोग शिङ लेस डेस् ल ङोन पर यिद् छेस् पर ग्युर रो
इन्द्रिय सम्पद् होते हुए कर्मफल में अभिश्रद्धा होती है।

བཟོ་ཡི་རིགས་སྣ་ཚོགས་ལ་མཁས་ཤིང་བསྟན་བཅོས་ཐམས་ཅད་ལེགས་པར་ཤེས་པར་འགྱུར་རོ། །
ज़ो यि रिग न छोग ल खेस् शिङ तेन चोस् थम चे लेग पर शेस् पर ग्युर रो
नाना शिल्प विद्याओं में कुशल होते हुए समस्त शास्त्र परिज्ञात होते हैं।

གཏོང་བ་ལ་སྤྲོ་ཞིང་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡིད་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །
तोङ व ल टो शिङ दोद् प थम चे ल यिद् छुङ बर ग्युर रो
त्याग (दान) के प्रति प्रसन्नता तथा समस्त इच्छाओं से विरागता प्राप्त होती है।

སྡིག་པའི་ལས་མི་བགྱི་ཞིང་འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བར་འགྱུར་རོ། །
दिग पई लेस मि ग्यि शिङ जिग प थम चे दङ डल बर ग्युर रो
पाप कर्मों को नहीं करते हुए, समस्त भयों से विरक्त होता है।

ཡང་དག་པའི་འཚོ་བ་དང་ཤེས་རབ་ལྡན་ཞིང་སྐྱེ་དགུ་ཀུན་གྱིས་ཤིན་ཏུ་གཅེས་པར་འགྱུར་རོ། །
यङ दग पई छो व दङ शेस् रप देन शिङ क्ये गु कुन ग्यीस् शिन तु चेस् पर ग्युर रो
सम्यक् आजीविका तथा प्रज्ञा से युक्त होते हुए सभी लोगों में प्रिय होता है।

རྟག་ཏུ་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་དྲུང་དུ་དམ་པའི་ཆོས་རྒྱུན་མར་ཐོས་པར་འགྱུར་རོ། །
तग तु गे बई शेस् ञेन ग्यि डुङ दु दम पई छोस् ग्युन मर थोस् पर ग्युर रो
सदा कल्याणमित्र के समक्ष निरन्तर सद्धर्म का श्रवण करता है।

བྱང་ཆུབ་འདོད་པའི་སེམས་ཐང་ཅིག་ཙམ་ཡང་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །
छङ छुप दोद् पई सेम थङ चिग ज़म यङ पोङ बर मि ग्युर रो
बोधि प्राप्ति की इच्छा रूपी चित्त को क्षण भर के लिए भी त्याग नहीं करता।

ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བདག་ཉིད་མཛེས་པར་འགྱུར་རོ། །
योन तेन थम चे क्यीस् दग ञिद् ज़ेस् पर ग्युर रो
समस्त गुणों से स्वयं सुशोभित होता है।

ཡང་དག་པའི་སྡོམ་པ་དང་ལྡན་ཞིང་སྡིག་པའི་ལས་ཐམས་ཅད་ལ་འཇིགས་པར་འགྱུར་རོ། །
यङ दग पई दोम प दङ देन शिङ दिग पई लेस थम चे ल जिग पर ग्युर रो
सम्यक् संवर (से) युक्त होकर समस्त पापकर्मों से भय करता है।

གཏན་དུ་ཉོན་མོངས་པ་མེད་ཅིང་མཉེན་ཞིང་རབ་ཏུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །
तेन दु ञोन मोङ प मेद् चिङ ञेन शिङ रप तु शि वर ग्युर रो
क्लेश से पूरी तरह रहित होकर कोमल और शान्त होता है।

ལྷ་དང་མི་དག་གི་ནང་དུ་རྟག་ཏུ་བདེ་བ་མྱོང་བར་འགྱུར་རོ། །
ल्ह दङ मि दग गि नङ दु तग तु दे व न्योङ बर ग्युर रो
देव और मनुष्य (योनि) में सदा सुख का भोग करता है।

བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མྱུར་དུ་འཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །
ल न मेद् प यङ दग पर ज़ोग पई छङ छुप न्युर दु थोप पर ग्युर रो
शीघ्र अनुत्तर सम्यक् सम्बोधि को प्राप्त करता है।

ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བཅུ་པོ་དག་ལས་ཕྱིར་ལྡོག་པར་མི་འགྱུར་རོ། །
फ रोल तु छिन प चु पो दग लेस छिर दोग पर मि ग्युर रो
दश पारमिताओं से निवर्तन नहीं करता।

རྟག་ཏུ་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་ཕན་བདེ་ལ་འགོད་པར་འདོད་པར་འགྱུར་རོ། །
तग तु सेम चेन म लुस् प फेन दे ल गोद् पर दोद् पर ग्युर रो
सदा अशेष सत्त्वों को हित-सुख पर आरूढ करने की इच्छा करता है।

གང་ཉམས་སུ་བླངས་པ་ཐམས་ཅད་བདག་དོན་དུ་གཞོལ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །
गङ ञम सु लङ प थम चे दग दोन दु शोल बर मि ग्युर रो
जो भी सारे अभ्यास करता है, स्वार्थ के लिए नहीं करता।

གང་དུ་སྐྱེ་བའི་གནས་སུ་རྟག་ཏུ་སངས་རྒྱས་མཐོང་བ་འཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །
गङ दु क्ये बई नेस् सु तग तु सङ ग्येस् थोङ व थोप पर ग्युर रो
जहाँ भी उत्पन्न होता है, उस स्थान पर सदा बुद्ध-दर्शन की प्राप्ति करता है।

དམ་པའི་ཆོས་སྐྱོང་བའི་འཕགས་པའི་ཚོགས་ཀྱི་གྲངས་སུ་བགྲང་བར་འགྱུར་རོ། །
दम पई छोस् क्योङ बई फग पई छ़ोग क्यि डङ सु डङ बर ग्युर रो
सद्धर्मपालक रूपी आर्यसंघ में गिना जाता है।

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་ནས། ཉན་ཐོས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་ལྷ་དང་མི་དང་
चोम देन देस् क्यीस् दे के चेस् का त्स़ल नेस्   ञेन थोस् दङ छङ छुप सेम पा दङ ल्ह दङ मि दङ
भगवान् ने इस प्रकार कहा। तब श्रावक, बोधिसत्त्व, देव, मनुष्य और

ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་ཚོགས་དང་བཅས་པ་ཡི་རངས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པ་ལ་མངོན་པར་བསྟོད་དོ། །
ल्ह म यिन ग्यि छ़ोग दङ चेस् प यि रङ ते   चोम देन देस् क्यीस् सुङ प ल ङोन पर तोद् दो
अमनुष्य-गणों द्वारा अनुमोदन कर भगवान् के वचन का अभिनन्दन किया।

སྡུག་བསྔལ་ལས་རྣམ་པར་དགྲོལ་བའི་གཟུངས་རྫོགས་སོ། །
दुग ङल लेस नम पर डोल बई ज़ुङ ज़ोग सो
दुःख-विमुक्तक-धारणी समाप्त हुआ।

ཆེན་པོ་ཐང་གུར་གྱི་སྡེ་སྣོད་གསུམ་པ་ཧྭེན་ཙང་ནས་གོང་མའི་བཀའ་ལུང་གིས་རྒྱ་ནག་གི་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བ་ལས་སྙིགས་མའི་དུས་སུ་བྱང་ཕྱོགས་གངས་ཅན་གྱི་རྒྱུད་དུ་བྱུང་བ་ཞྭ་མཐོན་མཐིང་ཅན་ཨོ་རྒྱན་ཕྲིན་ལས་དབང་གི་རྡོ་རྗེས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ། །ཤིང་ཕོ་རྟ་ལོ་སྤྱི་ལོ་ ༢༠༡༤ ལོར་སླར་ཞུས་སོ། །

महान् थङ्-गुर के त्रिपिटकवादी ह्वेनसांग द्वारा सम्राट के आज्ञानुसार चीनी भाषा में अनुवाद किये गये (ग्रन्थ) से, कषाय-काल में उत्तर दिशा के हिमवन्त देश में उत्पन्न, गहरे नीले मुकुट वाले ओडियान कर्मेन्द्रवज्र (उग्र्यन ठिन्-लस् वङ्-गी दोर्जे) द्वारा अनूदित कर सम्पादित किया गया। काष्ठ-पुरुष अश्व-वर्ष सन् 2014 ई0 में पुनः सम्पादन किया गया।

# दीर्घायु-अध्येषणा

གོང་ས་ལྷ་མིའི་རྣམ་འདྲེན་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་ཞབས་བརྟན་གསོལ་འདེབས་འཆི་མེད་བདུད་རྩིའི་བུམ་བཟང་བཞུགས་སོ།།

# परमपावन 14वें दलाई लामा की अमर-अमृत भद्रघट (नामक) दीर्घायु-अध्येषणा

ༀ་སྭསྟི་སིདྡྷཾ།
ओं स्वस्ति सिद्धम्।
ओं स्वस्ति सिद्धम्।

གདོད་ནས་རྣམ་དག་ཀུན་ཁྱབ་རིག་པའི་གཤིས། །
दोद् नेस् नम दग कुन ख्यप रिग पई शीस्
आदि विशुद्ध, सर्वव्याप्त विद्या-स्वभाव।

གཞི་དང་ཡེ་ཤེས་འདུ་འབྲལ་མེད་པའི་ངང་། །
शि दङ ये शेस् दु डल मेद् पई ङङ
वस्तु एवं ज्ञान के अभिन्न स्वभाव द्वारा।

ཇི་ལྟ་ཇི་སྙེད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཅན། །
जि त जि ञेद् ख्येन पई ये शेस् चेन
यथा (एवं) संवृति के ज्ञाता-ज्ञानी।

ཆོས་སྐུ་མངོན་པར་གྱུར་མཛད་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
छोस् कु ङोन पर ग्युर ज़े शप तेन सोल
दीर्घायु हों, धर्मकाय-अभिमुखी का।।

སྒྲིབ་གཉིས་མུན་པ་སངས་ཤིང་བརྩེ་བར་ལྡན། །
डिप ञीस् मुन प सङ शिङ ज़े बर देन
द्विविध आवरणान्धकार स्वच्छ कर, दया से युक्त हैं।

འདུས་མ་བྱས་ཤིང་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པའི་དཔལ། །
दुस् म छेस् शिङ ल्हुन ग्यीस् डुप पई पल
असंस्कृत तथा अनाभोग के श्री।

སྟོབས་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་འབྱུང་གནས་བདག །
तोप ल सोग पई योन तेन छुङ नेस् दग
बल आदि के गुणाकराधिपति (हैं)।

གངས་ཅན་རྒྱལ་བའི་རྒྱལ་ཚབ་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
गङ चेन ग्यल वई ग्यल छ़प शप तेन सोल
दीर्घायु हों, हिमवन्तराज प्रतिनिधि का।।

དེ་ཉིད་མ་འགག་ཆོས་དབྱིངས་རང་མདངས་ལས། །
दे ञिद् म गग छोस् यिङ रङ दङ लेस
अनिरुद्ध तथता, धर्मधातु स्वप्रकाश से।

གཟུགས་སྐུ་འབྲལ་མེད་གསར་དུ་རྫོམ་གྱུར་ཅིང་། །
ज़ुग कु डल मेद् सर दु ङोम ग्युर चिङ
रूपकाय विरहित, नवीन तृप्ति-बोधक।

ངེས་པ་ལྔ་ལྡན་བསམ་མི་ཁྱབ་པའི་འཕྲུལ། །
ङेस् प ङ देन सम मि ख्यप पई ठुल
पाँच नियत से युक्त, अचिन्तनीय ऋद्धि।

ཁྱབ་རྫོགས་ལྷན་སྐྱེས་འབྱུང་གནས་ཞབས་བརྟན་གསོལ།།
ख्यप ज़ोग ल्हेन क्येस् छुङ नेस् शप तनसोल
दीर्घायु हों, व्याप्त-पूर्ण सहज-आकर का।।

ཅིར་ཡང་འཆར་བའི་མི་ཟད་རྒྱན་འཁོར་ལོ། །
चिर यङ छर बई मि ज़े ग्येन खोर लो
किसी में भी उदय होने वाले अक्षयाभरणचक्र।

ཁམས་གསུམ་སྲིད་ན་འགྲན་པའི་རྒྱན་གཅིག་པུ། །
खम सुम सिद् न डेन पई ग्येन चिग पु
त्रिधातु-भव में स्पर्धा के एकमात्र अलंकार।

རྒྱལ་བའི་འབྱུང་གནས་མཐའ་ཡས་བསམ་བཞིན་གྱིས། །
ग्यल वई छुङ नेस् था येस् सम शिन ग्यीस्
जिनाकर अनन्त, जानते हुए।

འཇིགས་བྲལ་རྗེ་བཙུན་མཚུངས་མེད་མཆོག་གི་དཔལ། །
जिग डल जे त्सुन छुङ मेद् छोग गि पल
अभय भट्टारक अनुपम परमश्री।

ཁོར་ཡུག་ཡངས་པའི་ས་ཆེན་མཚུངས་པའི་སྡེ། །
खोर युग यङ पई स छेन छुङ पई दे
विशाल चक्रवाल रूपी महाभूमि स्वरूप नायक।

རྩོལ་མེད་ངག་དབང་ཤེས་བྱའི་ཕ་མཐར་ཕྱིན། །
त्सोल मेद् ङग वङ शेस् छई फ थर छिन
श्रम रहित वागिन्द्र ज्ञेय पारंगत।

གཙུག་ལག་རྒྱ་མཚོར་གཟིགས་པའི་སྤྱན་ཡངས་ཤིང་། །
त्सुग लग ग्य छोर ज़िग पई चेन यङ शिङ
शास्त्रसमुद्र के दर्शन में विशाल नेत्र वाले।

སྤོབས་པ་མི་ཟད་བློ་གྲོས་གཏིང་རྒྱ་མཚོའི། །
पोप प मि ज़े लो डोस् तिङ ग्य छोइ
अक्षय प्रतिभावान् मति सागर-तल-सा।

ཇི་སྙེད་དེ་ལྟར་མཁྱེན་པའི་གཏིང་ཡངས་ལས། །
जि ञेद् दे तर ख्येन पई तिङ यङ लेस
यावत् तथता ज्ञान के विशाल तल से।

གང་འདུལ་དེ་སྙེད་ཀུན་གྱི་འབྱུང་གནས་མཆོག །
गङ दुल दे ञेद् कुन ग्यि छुङ नेस् छोग
यथा दम्य उन सभी का परम स्रोत (हैं)।

སྤྲུལ་པའི་ཚུལ་འཛིན་འགྲོ་བའི་དེད་དཔོན་གསོལ། །
टुल पई छुल ज़िन डो बई देद् पोन सोल
निर्मितनय धारक जगत् सार्थवाह (से) अध्येषणा है।।

མི་འཇིགས་དབུགས་འབྱིན་བདེ་བའི་གོ་སྐབས་ལས། །
मि जिग उग छिन दे वई गो कप लेस
अभय-आश्वासन सुख-अवसर से।

སྦྱིན་པའི་གོ་བཅན་མཚུངས་བྲལ་ཏག་བརྟན་གསོལ། །
छिन पई गो त्सेन छुङ डल तग तेन सोल
दाता, अनुपम कवच कठोर, सदा स्थिर रहें।।

མ་འདྲེས་བློ་ཡི་ཀུན་སྤྱོད་བདག་པོ་མཁྱེན། །
म डेस् लो यि कुन चोद् दग पो खेन
अमिश्रित बुद्धिसर्वचर्या के अधिपति।

ཚུལ་ཁྲིམས་ཉི་མའི་གཉེན་གྱུར་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
छुल ठिम ञि मई ञेन ग्युर शप तेन सोल
दीर्घायु हों, शील-आदित्यबन्धु।।

འགྲོ་ཁམས་ཇི་སྲིད་མ་འདྲེས་སོར་སྣང་བས། །
डो खम जि सिद् म डेस् सोर नङ वे
यावत् जगत्-धातु अमिश्रित अलग दिखाई देते।

བཟོད་པའི་ཕར་ཕྱིན་མཚུངས་མེད་ཞབས་བརྟན་གསོལ།།
ज़ोद् पई फर छिन छुङ मेद् शप तेन सोल
दीर्घायु हों, अपरिमित क्षान्ति पारमिता वाले।।

ཆགས་ཐོགས་ཟད་མེད་ཕུང་པོའི་གཞི་རྒྱུད་ལམ། །
छग थोग ज़े मेद् फुङ पोइ शि ग्युद् लम
अक्षय रागसंग स्कन्धाधार-तन्त्र मार्ग।

གྲོལ་སྨིན་བྲལ་འཛིན་ཡེ་ཤེས་གཅིག་འཆར་བས། །
डोल मिन डल ज़िन ये शेस् चिग छर वे
मुक्ति-विपाक अभाव-ग्राहक, एक ज्ञान के उदय से।

གངས་ཅན་མཁས་དང་གྲུབ་པའི་རྒྱན་གཅིག་པུ། །
गङ चेन खेस् दङ डुप पई ग्येन चिग पु
हिमवन्त के अलंकारैक विद्वान्-सिद्ध।

བདེན་གཞི་རྟག་ཆད་བྲལ་བའི་བསྟན་འཛིན་མཆོག །
देन शि तग छे डल बई तेन ज़िन छोग
सत्याश्रय शाश्वतोच्छेद रहित परम शासनधर।

ལུང་རིགས་སྒོ་འདོགས་ཕྲ་བའི་ཕ་མཐའ་ལས། །
लुङ रिग डो दोग ठ बई फ था लेस
आगम-युक्ति द्वारा सूक्ष्म परीक्षा में पारंगत।

རྒྱ་མཚོའི་གཏིང་མཐའ་དཔོག་པའི་གོ་སྐབས་ཕྱུང་། །
ग्य छोइ तिङ था पोग पई गो कप छुङ
समुद्र-तलान्त के अनुमान का अवसर प्रदान करें।

འཁོར་ལོ་གསུམ་གྱིས་རྟག་ཏུ་བསྐྲུན་པའི་དཔལ། །
खोर लो सुम ग्यीस् तग तु टुन पई पल
त्रिचक्र द्वारा सदा श्री की उत्पत्ति वाले।

ཡེ་གྲུབ་སྣ་བདུན་འཁོར་བཅས་རྩོལ་མེད་ལྡན། །
ये डुप न दुन खोर चेस् ज़ोल मेद् देन
अनादि से सिद्ध सप्तविध सचक्र, यत्नहीन।

རྫོགས་ལྡན་གསར་པའི་ངང་ཚུལ་ཕུལ་བྱུང་བ། །
ज़ोग देन सर पई ङङ छुल फुल छुङ व
नवीन सतयुग के अतिशय स्वभाव वाले।

ཕྱོགས་མཐའ་མི་མཛེད་ཀུན་ལ་ཁྱབ། །
ज़म लिङ छोग था मि जेद् कुन ल ख्यप
जम्बूद्वीप दिगन्त समस्त सहलोक में व्याप्त है।

བརྩོན་འགྲུས་སྔོན་བྱུང་དམ་བཅའ་རྟག་བརྟན་གསོལ། །
ज़ोन डुस् ङोन छुङ दम ज़ेन तग तेन सोल
वीर्यवान्, सदा स्थिर हों, पूर्वभूत कठोर समय वाले।।

དཔལ་ལྡན་ཨ་ཏི་ཤ་དང་བློ་བཟང་གྲགས། །
पल देन अ ति श दङ लो ज़ङ डग
श्रीमान् अतीश तथा सुमतिकीर्ति।

བསམ་གཏན་ཕར་ཕྱིན་གང་དེ་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
सम तेन फर छिन गङ दे शप तेन सोल
दीर्घायु हों, ध्यान पारमि को प्राप्त हैं।।

མང་ཐོས་བཞི་བཅོམ་བྲལ་སྨིན་འབྲས་བུའི་དཔལ། །
मङ थोस् शि चोम डल मिन डेस् बुइ पल
बहुश्रुत, वस्तुहन्त, विरक्त-विपाक-फलश्री वाले।

ཤེས་རབ་བརྩེ་བའི་དཔལ་སྟེར་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
शेस् रप ज़े बई पल तेर शप तेन सोल
दीर्घायु हों, प्रज्ञा एवं दयाश्री के दाता।।

མི་འཇིགས་སེངྒེ་ཆོས་ཀྱི་ཁྲི་འཕང་ལས། །
मि जिग सेङ्गे छोस् क्यि ठि फङ लेस
अभय-हरि धर्मासन रूपी गौरव से।

རིས་མེད་བསྟན་པ་ཀུན་གྱི་གཙུག་གི་ནོར། །
रीस् मेद् तेन प कुन ग्यि ज़ुग गि नोर
सम्प्रदाय-हीन सर्वशासन के चूड़ामणि हैं।

གང་ལ་དེ་ཡིས་ལྷག་བསམ་སྨོན་པའི་ཚིག །འཛམ་གླིང་
गङ ल दे यीस् ल्हग सम मोन पई छ़िग
जिन्हें, उनके अध्याशय प्रणिधान-पद।

དྲང་སྲོང་བདེན་པའི་སྨོན་ཚིག་དེ་བཞིན་དུ། །
डङ सोङ देन पई मोन छ़िग दे शिन दु
ऋषि सत्य प्रणिधान-पद की तरह।

དེ་ལྟར་གསོལ་བའི་འབྲས་བུ་མངོན་གྱུར་ཅིག །
दे तर सोल बई डेस् बु ङोन ग्युर चिग
**तथा अध्येषणा का फल अभिमुख हो जाए।**

ཇི་བཞིན་མ་འོངས་བསྐལ་པ་ཇི་སྲིད་དུ། །
जि शिन म ह्रोङ कल प जि सिद् दु
**यावत् अनागत कल्प हो तावत्।**

དེ་བཞིན་འབྲལ་མེད་རྗེས་གཟུང་རྟག་ཏུ་སྐྱོངས། །
दे शिन डल मेद् जेस् ज़ुङ तग तु क्योङ
**वैसे ही अलग न होकर अनुग्रह तथा सदा पालन करें।।**

ཞེས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདི་ནི་པད་དཀར་འཆང་བའི་སྐུ་ཕྲེང་བཅུ་བཞི་པ་རྗེ་བཙུན་ངག་དབང་བློ་བཟང་ཡེ་ཤེས་བསྟན་འཛིན་རྒྱ་མཚོ་སྲིད་གསུམ་དབང་བསྒྱུར་མཚུངས་པ་མེད་པའི་སྐྱེ་མཆོག་གི་ལུགས་གཉིས་ཀྱི་སྐྱབས་འོག་ཏུ་འཁོད་པ་ཀརྨའི་མིང་འཛིན་བཅུ་དྲུག་པས་ཟླ་བ་གསུམ་པའི་ཡར་ཚེས་དགེ་བའི་ཉིན་མཆོག་གི་མཚན་དཔེ་རྗེས་སུ་དྲན་པས་ཐལ་མོ་སྤྱི་བོར་བཀོད་དེ་ཞབས་པད་བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོའི་བར་དུ་བརྟན་ཅིང་འཛམ་གླིང་རྒྱལ་བསྟན་ཡོངས་རྫོགས་ཀྱི་མགོན་དུ་བཞུགས་པར་གསོལ་བ་ལན་བརྒྱར་འདེབས་པ་ལགས་ན་དེ་དེ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག །ཤུབྷཾ། ཛཡནྟུ། །

ये पद्य, पुण्डरीक को धारण करने वाले भट्टारक, तीन भवों के अधिपति, परम ऩायक 14वें दलाई लामा ङग्-वङ् लो-ज़ङ् ये-शेस् तन्-ज़िन् ग्या-छो के द्विविध परम्परा के शरण ग्रहण करने वाले 16वें कर्मापा-नाम को ग्रहण करने वाले ने तृतीय मास शुक्लपक्ष के पुण्य दिवस पर परमपावन के लक्षणानुव्यञ्जन का अनुस्मरण करते हुए अञ्जली को शीर्ष पर रख (आपका) चरणकमल कल्पसमुद्र तक स्थिर होकर जम्बूद्वीप के समस्त जिनशासनों के नाथ रूप में विराजमान होने हेतु शत-शत बार अध्येषणा करता हूँ। अतः वैसा ही सिद्ध हो। शुभम्। जयन्तु।

བྱང་ཕྱོགས་གངས་རིའི་ར་བས་བསྐོར་བའི་རྒྱུད། །
छङ छोग गङेस् रिई र बेस् कोर बई ग्युद्
**उत्तर दिशा (में) हिमगिरि बाड़ से परिवृत्त देश।**

བོད་ཡུལ་ཆོས་ལྡན་ཞིང་གི་རྒྱལ་ཁམས་སུ། །
बोद् युल छोस् देन शिङ गि ग्यल खम सु
**भोट-देश, धर्मवान् क्षेत्र के राज्य में।**

སྐྱེ་དགུའི་ཕན་དང་བདེ་བ་མ་ལུས་པ། །
क्ये गुइ फेन दङ दे ब म लुस् प
**(समस्त) प्रजा के अशेष हित तथा सुख।**

འབྱུང་བའི་ཡོན་གནས་དམ་པ་ཐུགས་རྗེའི་གཏེར། །
छुंङ बई योन नेस् दम प थुग जे तेर
**प्राप्ति के परम दाक्षणीय करुणानिधि।**

འཕགས་མཆོག་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་མི་གཟུགས་ཅན།།
फग छोग चेनं रेस् ज़िग वङ मि ज़ुग चेन
**मनुष्य स्वरूप परमार्य अवलोकितेश्वर।**

ཐུབ་བསྟན་འཛིན་པ་རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུ་ཡི། །
थुप तेन ज़िन प ग्य छो त बु यि
**मुनिशासनधर, सागर के समान।**

གཙུག་གི་རྒྱན་གྱུར་བླ་མའི་ཞབས་སྐྱེས་པད། །
त्ज़ुग गि ग्येन ग्युर ल मई शप क्येस् पे
**चूड़ामणिभूत, गुरु पादज कमल।**

སྲིད་མཐའི་བར་དུ་གཡོ་མེད་བརྟན་གྱུར་ཅིག །
सि थई बर दु यो मेद् तेन ग्युर चिग
**भवान्त पर्यन्त अचल स्थिर रहें।।**

རྒྱལ་བའི་ཞབས་བརྟན་བསྡུས་པ་ཀརྨ་པ་ཨོ་རྒྱན་ཕྲིན་ལས་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའོ། །

जिन (बुद्ध रूपी परमपावन 14वें दलाई लामा) के इस संक्षिप्त दीर्घायु-अध्येषणा की रचना कर्मापा उर्ग्यन ठिनले दोर्जे ने की है।

འདྲེན་མཆོག་ཀརྨ་པའི་སྐུ་ཕྲེང་བཅུ་བདུན་པ། བསྟན་འཛིན་ཀུན་ཁྱབ་དབང་གི་རྡོ་རྗེའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ་འདེབས་འདོད་དོན་ལྷུན་གྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ། །

# परम नायक 17वें कर्मापा तन्-ज़िन् कुन्-ख्यब् वङ्-गी दोर्जे की अनाभोगेच्छा (नामक) दीर्घायु-अध्येषणा

ཨོཾ་སྭསྟི།
आं स्वस्ति
ओं स्वस्ति।

ཕུན་ཚོགས་སྟོབས་བཅུའི་དཔལ་ལྡན་ཤཱཀྱའི་རྒྱལ། །
फुन छ़ोग तोप चुइ पल देन शाक्यई ग्यल
दशबल-सम्पद्वान् श्रीमान् शाक्येन्द्र।

ཐུགས་རྗེའི་བདག་ཉིད་མཚོ་སྐྱེས་རྡོ་རྗེའི་ཞབས། །
थुग जे दग ञिद् छ़ो क्येस् दोर जेई शप
करुणात्मक पद्मवज्रपाद।

མ་སྨད་ཐུགས་བསྐྱེད་སྐྱ་རེངས་ཀྱིས་དྲངས་པའི། །
म मे थुग क्येद् क्य रेङ क्यीस् डङ पई
माँ-पुत्र के चित्तोत्पादारुण से आकर्षित।

ཞིང་འདིར་གསལ་བའི་སྐལ་བཟང་ལེགས་ཤར་བས། །
शिङ दिर सल बई कल ज़ङ लेग शर वे
इस क्षेत्र में प्रकट हो, सौभाग्य जागने से।

རྒྱལ་བསྟན་ལུང་རྟོགས་ཆོས་ཚུལ་འཛིན་པའི་དཔལ། །
ग्यल वतेन लुङ तोग छोस् छुल ज़िन पई पल
आगम-अवगम जिनशासन-धर्मनय के धारणकर्ता श्री।

ལྷུན་གྲུབ་དབང་གི་ཕྲིན་ལས་རབ་བརྙེས་པའི། །
ल्हुन डुप वङ गि ठिन लेस रप ञेस् पई
अनाभोगेन्द्र-कर्म को प्राप्त करने वाले।

འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་རྒྱལ་བ་རྒྱ་མཚོ་དང་། །
जिग तेन वङ छ्युग ग्यल व ग्य छ़ो दङ
लोकेश्वर तथा जिनसमुद्र लोग।

སྐྱབས་ཡུལ་ཀུན་གྱིས་དེང་འདིར་དགེ་ལེགས་སྩོལ། །
क्यप युल कुन ग्यीस् देङ दिर गे लेग ज़ोल
शरण-विषय सभी के द्वारा आज स्वस्ति प्रदान करें।।

མཆོག་སྤྲུལ་ཉིན་མོར་བྱེད་པའི་མཚན་དཔེའི་གཟི། །
छोग टुल ञिन मोर छेद् पई छ़ेन पे ज़ि
उत्तम निर्माण(-काय) द्वारा दिवस-कृत-सा, औजस् लक्षणानुव्यञ्जन।

བདག་ཅག་རེ་བ་དོན་བཅས་ཉིད་དུ་གྱུར། །
दग चग रे व दोन चेस् ञिद् दु ग्युर
हमारी आशा अर्थपूर्ण हुई है।।

ཀུན་ཁྱབ་ཐུགས་རྗེ་རྒྱ་མཚོའི་བདག་ཉིད་ཆེ། །
कुन ख्यब थुग जे ग्य छ़ोइ दग ञिद् छे
महात्मा हैं सर्वव्याप्त करुणासमुद्र के।

རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཀརྨ་པ་ལ་འདུད། །
दो॰जे ज़िन प कर्म प ल दुद्
नमन है, वज्रधर कर्मापा को ।।

བསྟན་ལ་མཛད་པ་དཀར་པོའི་འོད་རིས་ཅན། །
तेन ल ज़े प कर पोइ ह़ोद् रीस् चेन
(बुद्ध-)शासन हेतु श्वेतकर्मप्रभावान्।

ཀུན་གྱི་རྣམ་ཐར་ཚུལ་བཞིན་སྐྱོང་མཁས་པའི། །
कुन ग्यि नम थर छुल शिन क्योङ खेस् पई
सभी विमोक्षों के यथावत् कुशल पालनकर्त्ता।

རྒྱ་ཆེན་ལུང་གི་གོས་བཟང་ལྷབ་ལྷུབ་གཡོ། །
ग्य छेन लुङ गि गोस् ज़ङ ल्हप ल्हुप यो
विस्तृत-आगम रूपी सुवस्त्र लटकता लहराता।

རྣམ་དཔྱོད་གསེར་གྱི་ཡུ་བ་རབ་བརྟན་པའི། །
नम चोद् सेर ग्यि यु व रप तेन पई
विवेक रूपी सुस्थिर सुवर्ण-दण्ड वाले।

།གྲུབ་པའི་གཙུག་རྒྱན་ལྷོ་བྲག་མར་པ་སོགས། །
डुप पई त्सुग ग्येन ल्हो डग मर प सोग
सिद्ध चूडामणि ल्हो-डग् मर्-पा आदि।

གྲུབ་རིགས་བསྟན་པ་སྐྱོང་ཞིང་སྤེལ་བའི་མགོན། །
डुप रिग तेन प क्योङ शिङ पेल बई गोन
सिद्धगोत्र के शासन की रक्षा एवं वृद्धिकर्त्ता नाथ।

།རྒྱ་བོད་ལ་སོགས་ཤར་ནུབ་ཡུལ་གྲུ་ཀུན། །
ग्य बोद् ल सोग शर नुप युल डु कुन
चीन-भोट आदि पूर्व-पश्चिम के सभी देश।

སྐྱེ་རྒུའི་བདེ་ལེགས་རྩ་བ་ཚུགས་པ་དང་། །
क्ये गुइ दे लेग त्स व छुग प दङ
प्रजा के स्वस्ति-मूल का रोपण हुआ।

།བླ་མ་ཡི་དམ་མཆོག་གསུམ་བདེན་བྱིན་དང་། །
ल म यि दम छोग सुम देन छिन दङ
गुरु-इष्ट त्रिरत्न के सत्य-अधिष्ठान तथा।

རིམ་བྱོན་ཀརྨའི་སྐྱེས་རབས་མུ་ཏིག་ཕྲེང་། །
रिम छोन कर्म ई क्येस् रप मु तिग ठेङ
क्रमागत कर्मापा-जातक मुक्तामाला।

དཔལ་ལྡན་འགྲོ་བའི་མགོན་པོར་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
पल देन डो बई गोन पोर शप तेन सोल
दीर्घायु हों, श्रीमान् जगन्नाथ का।।

ཕུལ་བྱུང་ཉམས་རྟོགས་ནོར་བུའི་རྩེ་རྒྱན་མཛེས། །
फुल छुङ ञम तोग नोर बुइ त्से ग्येन ज़ेस्
अतिशय अनुभूति ज्ञान रूपी शिखा-मण्यलंकार सुशोभित।

སྐྱེས་མཆོག་བསྟན་པའི་རྒྱལ་མཚན་ཞབས་བརྟན་ཤོག
क्येस् छोग तेन पई ग्यल छ़ेन शप तेन शोग
दीर्घायु हों, पुरुषोत्तम शासन-ध्वज का।।

གྲུབ་ཐོབ་རྒྱ་མཚོའི་གདམས་ངག་མཛོད་བརྙེས་ཏེ། །
डुप थोप ग्य छ़ोइ दम ङग ज़ोद् ञेस् ते
सिद्धसमुद्र के उपदेश-कोश को प्राप्त कर।

གྲུབ་མཆོག་དཀྱིལ་འཁོར་བདག་པོར་ཞབས་བརྟན་ཤོག
डुप छोग दक्यिल खोर दग पोर शप तेन शोग
दीर्घायु हों, परम सिद्ध-मण्डलाधिपति का।

གང་གི་མཛད་པའི་ཞིང་དུ་ཡོངས་བཟུང་བས། །
गङ गि ज़े पई शिङ दु योङ ज़ुङ वे
जिनके कर्मक्षेत्र के रूप में परीगृहीत होने से।

ཕུན་ཚོགས་ཆོས་འབྱོར་ལུགས་བཟང་འཕེལ་གྱུར་ཅིག
फुन छ़ोग छोस् छोर लुग ज़ङ फेल ग्युर चिग
सम्पन्न धर्म-सम्पद्, सुपरम्परा की वृद्धि हो।।

ཆོས་ཉིད་རྟེན་འབྲེལ་ཟུང་འཇུག་དངོས་པོའི་གཤིས། །
छोस् ञिद् तेन डेल ज़ुङ जुग ङोस् पोइ शीस्
धर्मता-प्रतीत्य-युगनद्ध वस्तु-स्वभाव है।

ལྷག་བསམ་དག་པའི་བདེན་ཚིག་མཐུ་བཙན་པས། །
ल्हग सम दग पई देन छिग थु त्सेन पेस्
**अध्याशय रूपी सत्यवचन महान् बलवान् होने से।**

སྨོན་པའི་གནས་རྣམས་འབད་མེད་ལྷུན་གྲུབ་ཤོག །
मोन पई नेस् नम बे मेद् ल्हुन डुप शोग
**प्रणिधान स्थान सभी अनाभोग सिद्ध हों।।**

ཅེས་པ་འདི་བཞིན། འདྲེན་མཆོག་ཀརྨ་པ་རིན་པོ་ཆེའི་མཆོག་སྤྲུལ་ཨོ་རྒྱན་འགྲོ་འདུལ་ཕྲིན་ལས་རྡོ་རྗེ་གཏན་འཁེལ་བྱུང་འཕྲལ་མཚན་གསོལ་ཡོང་བ་ཞེས་སི་ཏུ་རིན་པོ་ཆེ་དང་། རྒྱལ་ཚབ་རིན་པོ་ཆེ་གཉིས་ནས་གསུང་བསྐུལ་བྱུང་བར་མགྱོགས་མྱུར་རབ་བྱུང་སྡོམ་གནང་སྐབས་མཚན་གསོལ་བགྱི་རྒྱུའི་བསམ་པས་ད་བར་ནར་ལུས་གྱུར་པ་ད་ཆ་རུམ་བཏེག་མཚུར་ཕུ་བླ་བྲང་དང་། བིར་ཤེས་རབ་གླིང་བླ་བྲང་། ར་ལང་དཔལ་ཆེན་བླ་བྲང་སོགས་ནས་ཞབས་བརྟན་གསོལ་འདེབས་ཤིག་འབྲི་དགོས་ཞེས་ནན་བསྐུལ་བྱུང་བ་ལྟར། ༼བསྟན་འཛིན་ཀུན་ཁྱབ་དབང་གི་རྡོ་རྗེ་༽ ཞེས་པའི་མཚན་གསོལ་དང་འབྲེལ་ཞབས་བརྟན་གསོལ་འདེབས་འདོད་དོན་ལྷུན་གྲུབ་ཅེས་པ་འདི་ཉིད། ཤཱཀྱའི་དགེ་སྦྱོང་བསྟན་འཛིན་རྒྱ་མཚོས། རབ་བྱུང་བཅུ་བདུན་པའི་མེ་གླང་ཟླ་བ་ ༡༠ ཚེས་ ༡༧ ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༧ ཟླ་ ༡༢ ཚེས་ ༡༥ ལ་དྭང་བའི་ཡིད་ཀྱིས་སྦྱར་བ་དགེ་ལེགས་འཕེལ། །

इस प्रकार (का) यह (ग्रन्थ), परम नायक कर्मापा-रत्न के उत्तम निर्माण(-काय के रूप में) उग्र्यन डो-दुल् ठिन्-लस् दोर्जे के नियत होते ही नाम रखने हेतु (परमपूज्य) सितु रिनपोछे तथा (श्रद्धेय) ग्यल्-छब् रिनपोछे दोनों ने आग्रह किया था। तब शीघ्र जब श्रामणेर का संवर लेंगे तब नाम रखूँगा–इस आशय के साथ अभी तक यह कार्य नहीं कर पाया। अभी छुर्-फु विहार रुमतेग, शेस्-रब्-लिङ् विहार बीर तथा र-लङ् के पल्-छेन् विहार आदि द्वारा दीर्घायु-अध्येषणा लिखने के लिए आग्रहपूर्वक निवेदन किया गया है। अतः तन्-ज़िन कुन्-ख्यब् वङ्-गी दोर्जे नाम रखते हुए अनाभोगेच्छा नामक दीर्घायु-अध्येषणा को शाक्य श्रमण तन्-ज़िन् ग्या-छो ने 17वें प्रभव के अग्नि-वृषभ 10वें मास की 17वीं तिथि, सन् 1997 ई0 के 12वें मास के 15वीं तिथि को श्रद्धाचित्त से निबद्ध किया। स्वस्ति की वृद्धि हो।

བཀའ་བརྒྱུད་བླ་མ་རྣམས་ཀྱི་ཞབས་བརྟན།

# काग्युद् गुरुओं की दीर्घायु-अध्येषणा

ཨོཾ་སྭསྟི།
ओं स्वस्ति।
ओं स्वस्ति।

ཤེས་བྱའི་མཁའ་ལ་མཁྱེན་རབ་དཀྱིལ་འཁོར་རྒྱས། །
शेस् छई खा ल ख्येन रप दक्यिल खोर ग्येस्
ज्ञेय रूपी आकाश में प्रज्ञा-मण्डल का विस्तार हुआ।

མཛད་པའི་འོད་སྟོང་གདུལ་བྱའི་གླིང་ལ་ཕོག །
ज़े पई ह़ोद् तोङ दुल छई लिङ ल फोग
कर्म रूपी सहस्र रश्मियों का विनेयजनद्वीप से स्पर्श हुआ।

རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་ཀུན་ནས་གསལ་མཛད་པ། །
ग्यल वई तेन प कुन नेस् सल ज़े प
जिन-शासन को सर्वत्र प्रकाशित करने वाले।

བཀའ་བརྒྱུད་རིན་པོ་ཆེ་རྣམས་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
का ग्युद् रिन पो छे नम शप तेन सोल
दीर्घायु हों, काग्युद्-रत्न लोग।।

ནཱ་རོ་མཻ་ཏྲི་ལས་བརྒྱུད་ཤངས་པ་དང་། །
ना रो मै त्रि लेस ग्युद् शङ प दङ
नरो-मैत्री से आगमित शङ्गपा तथा।

སྒྲ་སྒྱུར་མར་པ་ཐུགས་སྲས་ཀ་ཆེན་བཞི། །
ड ग्युर मर प थुग सेस् क छेन शि
अनुवादक मरपा के हृदयपुत्र चार स्तम्भ।

རས་ཆུང་པ་དང་གདན་ས་བཀའ་བརྒྱུད་སོགས། །
रेस छुङ प दङ देन स का ग्युद् सोग
रस्-छुङ्-पा तथा काग्युद-पीठ आदि।

བསྟན་འཛིན་སྐྱེས་མཆོག་རྣམས་ཀྱི་ཞབས་བརྟན་གསོལ།།
तेन ज़िन क्येस् छोग नम क्यि शप तेन सोल
दीर्घायु हों, शासनधर पुरुषोत्तम लोग।।

བསྐྱེད་རིམ་རྣལ་འབྱོར་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་མ་དང་། །
क्येद् रिम नल छोर ल्हेन चिग क्येस् म दङ
सहजा उत्पन्नक्रम-योग तथा।

རྫོགས་རིམ་རླུང་སེམས་གཉིས་མེད་རང་དབང་འབྱོར། །
ज़ोग रिम लुङ सेम ञीस् मेद् रङ वङ छोर
सम्पन्नक्रम वायु-चित्त अद्वयता सम्पद्।

རྒྱལ་ཀུན་འཕྲིན་ལས་བདག་ཉིད་ཀརྨ་པ། །
ग्यल कुन ठिन लेस दग ञिद् कर्म प
सर्वजिनों के कर्मात्म कर्मापा।

སྤྲུལ་པའི་བརྒྱུད་འཛིན་ཆེན་པོའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
टुल पई ग्युद् ज़िन छेन पोइ शप तेन सोल
दीर्घायु हों, निर्मित-महापरम्परा वाले के।।

བདེ་སྟོང་ཕྱག་ཆེན་བསྲེ་འཕོ་གནད་དུ་བསྣུན། །
दे तोङ छग छेन से फो ने दु नुन
सुख-शून्य, महामुद्रा, मिश्रण-संक्रमण के मर्म-ताडक।

གནས་ལུགས་ཕྱག་ཆེན་གསེབ་ལམ་མངོན་དུ་གྱུར། །
नेस् लुग छग छेन सेप लम ङोन दु ग्युर
तत्त्व महामुद्रा रूपी गम्भीर मार्ग के अभिमुख-कर्त्ता।

བླ་མའི་ཞབས་ཏོག་ཕུལ་ཕྱིན་འབའ་རོམ་པ། །
ल मई शप तोग फुल छिन बा रोम प
गुरु-सत्कार में अतिशय बा-रोम-पा।

བསྟན་འཛིན་སྐྱེས་མཆོག་གང་དེའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ།།
तेन ज़िन क्येस् छोग गङ दे शप तेन सोल
दीर्घायु हों, वे शासनधर पुरुषगण।।

གསུང་རབ་མ་ལུས་དགོངས་པ་གཅིག་ཏུ་འདྲིལ། །
सुङ रप म लुस् गोङ प चिग तु डिल
अशेष वाङ्मयों को एक अभिप्राय में संग्रह किया।

ལྔ་ལྡན་མན་ངག་ཟབ་མོས་ཐུགས་རྒྱུད་གཏམས། །
ङ देन मेन ङग ज़प मोस् थुग ग्युद् तम
गम्भीर पञ्चयुक्तोपदेश चित्त-सन्तति में उत्पन्न किया।

སྡོམ་བརྩོན་འགྲན་ཟླ་བྲལ་བ་འབྲི་གུང་པ། །
दोम त्सोन डेन द डल व डि गुङ प
संवर-वीर्य में अप्रतिम डि-गुङ्-पा।

སྐྱབས་མགོན་ཉི་ཟླ་གཉིས་ཀྱི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
क्यप गोन ञि द ञीस् क्यि शप तेन सोल
दीर्घायु हों, शरणनाथ द्विविध सूर्य-चन्द्र।।

ངོ་མཚར་རྨད་བྱུང་རྣམ་ཐར་སོ་དགུས་བརྒྱན། །
ङो छर मे छुङ नम थर सो गुस् ग्येन
आश्चर्य-अद्भुत् सप्त त्रिंशत विमोक्ष से अलंकृत।

ནོར་བུ་བཞི་སྐོར་ཆོས་ཀྱི་ཆེ་བས་བརྗིད། །
नोर बु शि कोर छोस् क्यि छे वे जिद्
चतुर्रत्न परिवृत्त धर्ममाहात्म्य में गुरु (भारी) हैं।

མོས་གུས་མཐར་ཕྱིན་དཔལ་ལྡན་སྟག་ལུང་པ། །
मोस् गुस् थर थुग पल देन तग लुङ प
छन्दादर में पारंगत श्रीमान् तग्-लुङ्-पा।

ཞབས་དྲུང་རིན་པོ་ཆེ་ཡི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
शप डुङ रिन पो छे यि शप तेन सोल
दीर्घायु हों, शब्स-डुङ् रिन्-पो-छे का।।

ཕྱི་ནང་རྟེན་འབྲེལ་ཀུན་གྱི་དོན་ལ་མཁས། །
छि नङ तेन डेल कुन ग्यि दोन ल खेस्
बाह्याध्यात्म समस्त प्रतीत्यार्थ के ज्ञाता।

ཕུང་སོགས་ཆོས་རྣམས་དབྱེར་མེད་རོ་གཅིག་སྙོམས། །
फुङ सोग छोस् नम येर मेद् रो चिग ञोम
स्कन्ध-आदि समस्त धर्मों में अभिन्न एवं समरस हैं।

གངས་ལྗོངས་གྲུབ་པའི་ཚང་ཆེན་དབྱར་རྔ་པ། །
गङ जोङ डुप पई छङ छेन यर ङ प
ड्रेगन (डुग्-पा) हिमवन्त सिद्धों के महागृह।

རྒྱལ་དབང་འབྲུག་པ་ཆེན་པོའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
ग्यल वङ डुग प छेन पोइ शप तेन सोल
दीर्घायु हों, जिनेन्द्र महाडुग्पा का।।

གཞན་ཡང་ཕག་གྲུ་ཚལ་པ་ཁྲོ་ཕུ་དང་། །
शेन यङ फग डु छल प ठो फु दङ
अन्य भी, फग्-डु छल्-पा तथा ठोफु।

སྨར་ཡེལ་ཤུག་གསེབ་བཀའ་བརྒྱུད་ལ་སོགས་པ། །
मर येल शुग सेप का ग्युद् ल सोग प
मर्-येल और शुग्-सेब् काग्युद् आदि।

བྱིན་རླབས་འབྱུང་གནས་གདམས་ངག་རྒྱ་མཚོའི་མཛོད།།
छिन लप छुङ नेस् दम ङग ग्य छोइ ज़ोद्
**अधिष्ठानाकर, उपदेशसमुद्र के कोश हैं।**

དཔལ་ལྡན་བླ་མའི་ཞབས་པད་བརྟན་པ་དང་། །
पल देन ल मई शप पे तेन प दङ
**श्रीयुत गुरुपाद (का जीवन) स्थिर हो।**

བདག་གཞན་མ་ལུས་ཚོགས་བསགས་སྒྲིབ་སྦྱངས་ནས།།
दग शेन म लुस् छोग सग डिप छङ नेस्
**स्व-पर अशेष (लोग) सम्भार-संचय तथा आवरण को शुद्ध कर।**

བརྒྱུད་འཛིན་རིན་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
ग्युद् ज़िन रिन छेन नम क्यि शप तेन सोल
**दीर्घायु हों, परम्पराधर-रत्न गण।।**

མཁའ་མཉམ་ཡོངས་ལ་བདེ་སྐྱིད་འབྱུང་བ་དང་། །
खा ञम योङ ल दे क्यिद् छुङ व दङ
**आकाशसम समस्त (सत्त्वों) में सुख-आमोद आ जाए।**

མྱུར་དུ་སངས་རྒྱས་ས་ལ་འགོད་པར་ཤོག །
न्युर दु सङ ग्येस् स ल गोद् पर शोग
**आरूढ करूँ शीघ्र बुद्धभूमि में।।**

རྗེ་མར་པའི་སྒྲུབ་བརྒྱུད། དྭགས་པོའི་བཀའ་བརྒྱུད་འདི་ལ་ད་ལྟ་བསྟན་པ་དང་དེ་འཛིན་གྱི་སྐྱེས་བུའི་རྒྱུན་འགའ་ཙམ་ལས་གཞན་རྣམས་གོ་ཐོས་མེད་པས་སེམས་སྐྱོ་མོ་རང་ཞིག་ཡོང་མོད། རྗེས་འཇུག་ཚོས་ལེགས་ཉེས་ཅི་མཛད་རུང་ད་ལྟ་ཞལ་བཞུགས་པའི་བཀའ་བརྒྱུད་འདི་རྣམས་ལ་བཤད་སྒྲུབ་ལས་གསུམ་དགའ་མོ་རང་ཞིག་ཡོད་པས་དེད་ཀྱང་བརྒྱུད་པ་འདི་དག་ལ་མི་ལྡོག་པའི་དད་པ་ཡོད་པའི་ཐོག །གདན་ས་རུམ་བཏེག་གི་བྱང་འཛིན་འོད་ཟེར་རབ་བརྟན་ནས་བཀའ་བརྒྱུད་སྨོན་ལམ་དུ་འདོན་རྒྱུའི་ཞབས་བརྟན་འདི་འདྲ་ཞིག་རྩོམས་དང་ཟེར་བས། དེ་འདྲ་མི་ཤེས་མོད་ཀྱང་ཁོང་གི་ངོ་མ་ལྡོག་ནས་གོ་ཐོས་ཅི་ཡོད་ཀྱིས་འབོལ་རྩོམ་དུ་བྱས་པ་ཡིན། སྤྱིར་བླ་མ་མི་མཉམ་པའི་ཡོན་ཏན་མངའ་བ་དེ་ཚོར་མཐོ་དམན་དང་འགངས་ཆེ་ཆུང་སོགས་ཀྱི་གོ་རིམ་ངེས་ངེས་པོ་ཞིག་མི་བདོག་ཅིང་། སྐབས་རེར་སློབ་མ་གུས་ཞེན་ཆེ་བ་འགས་སངས་རྒྱས་ཕལ་པར་གཏོང་བའི་བྱ་བ་མི་དགོས་པ་དེ་འདྲ་བྱེད་པའང་ཡོད་མོད། རེ་ཞིག་གོ་རིམ་ཕལ་ཆེར་རྗེ་བན་སྒར་བའི་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཐུང་མ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན་ལ། ད་དུང་ཐུགས་བློ་མ་བདེ་ན་ཆོས་ཐོག་ཏུ་བཙུན་དབང་ཆེ་བའི་དཔེ་ལྟར་འདོན་པའི་གོ་རིམ་ཅི་འདོད་དུ་ཐོངས་ཤིག །དེ་སྐད་ཅེས་མེ་མོ་ཕག་གི་ལོ་ནག་པ་ཟླ་བའི་ཚེས་བཅུ་གསུམ་ལ་ཀརྨ་པ་ཨོ་རྒྱན་ཕྲིན་ལས་རྡོ་རྗེ་དེས་རྡ་ས་རྒྱུད་སྟོད་དུ་སྤྱི་ལོ་ ༢༠༠༧ ཟླ་ ༤ ཚེས་ ༣༠ སྦྱར་བ་དགེའོ། །

भट्टारक मरपा की साधन-परम्परा, इस द्वग्सपो काग्युद् में, वर्तमान में शासन तथा उसको ग्रहण करने वाले पुरुष-परम्परा कुछ ही बचे हैं तथा अन्यों की कोई जानकारी नहीं है। इससे चित्त में निश्चित रूप से दुःख का अनुभव होता है। किन्तु अनुयायियों के द्वारा अच्छे-बुरे जो भी किये जायें, अभी जो काग्युद् परम्परा शेष हैं, इनमें व्याख्या, साधना तथा कर्म तीनों अच्छी अवस्था में निहित हैं। अतः मैं भी इनमें अनन्य श्रद्धा रखता हूँ। ऐसे ही रुमतेग पीठ के पाठ-विधि-संचालक (उ-ज़द्) होद्-ज़ेर रब्-तन् द्वारा काग्युद्-प्रणिधान में पाठ हेतु दीर्घायु(-प्रणिधान), आप इस प्रकार निबद्ध करें—ऐसा निवेदन किया। वैसा (निबद्ध करना जैसा कहा गया था) नहीं जानने पर भी, क्योंकि उनके निवेदन को मैं नकार नहीं सकता, अतः मैंने जितना (परम्परा के विषय में) सुन रखा है, उसके आधार पर सरल रूप से इसकी रचना की है।

सामान्यतया गुरु के अनुपम गुणों से युक्त होने में उच्च-निम्न तथा महान् तथा लघु मर्म आदि नियत क्रम नहीं है। कभी-कभी कुछ अति-श्रद्धावान् शिष्यों के द्वारा बुद्ध (रूपी गुरु) को सामान्य(-जन) की गिनती में भी करने का कार्य होता रहा है। फिलहाल यहाँ पर (परम्परागत गुरुओं का) क्रम प्रायः बन्-गर्-वा के दोर्जे छङ्-थुङ्-मा के अनुसार रखा गया है। यदि इससे (आप लोग) सन्तुष्ट नहीं हों, तो जैसे कहा है कि धर्म के अवसर पर भन्ते का अधिकार होता है, इसी उपमा के अनुसार पाठ का क्रम यथेच्छ कर सकते हैं।

इस प्रकार अग्नि स्त्री-शूकर वर्ष चैत्रमास के त्रयोदशी तिथि को कर्मा उर्ग्येन ठिन्-लस् दोर्जे द्वारा धर्मशाला स्थित ग्युद्-तोद् विहार में 30 अप्रैल, 2007 ई0 को निबद्ध किया गया।

स्वस्ति।।

## ཀཾ་ཚང་ཡབ་སྲས་བདུན་གྱི་ཞབས་བརྟན་གསོལ་འདེབས།
# कम्-छ़ङ सप्त पिता-पुत्र की दीर्घायु-अध्येषणा

ཨོཾ་སྭསྟི།
ओं स्वस्ति।
ओं स्वस्ति।

གཞན་ཕན་ནམ་རོལ་པདྨ་འབྱུང་གནས་དང་། །
शेन फेन नम रोल पेमा छुङ नेस् दङ
परहित-विलोड़ित (आचार्य) पद्मसम्भव तथा।

ས་ར་ཧ་དང་ཀླུ་ཡི་བྱང་ཆུབ་སོགས། །
स र ह दङ लु यि छङ छुप सोग
(सिद्ध) सरह(-पाद) तथा (आचार्य) नागबोधि आदि।

ས་བཅུའི་དབང་ཕྱུག་གཅིག་ཏུ་བསྡུས་པའི་སྐུ། །
स चुइ वङ छुग चिग तु बदुस् पई कु
दश-भूमीश्वरों के संचयैक-काय।

ཀརྨ་པ་ཞེས་གྲགས་དེའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
कर्म प शेस् डग दे शप तेन सोल
दीर्घायु हों, उस कर्मापा नाम से प्रसिद्ध की।।

གར་དབང་རྡོ་རྗེ་འཆང་གི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ལས། །
गर वङ दोर जे छङ गि ग्यु ठुल लेस
नटेश्वर वज्रधर के ऋद्धि के द्वारा।

འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་དཔལ་ལྡན་ཀརྨ་པའི། །
जिग तेन वङ छुग पल देन कर्म पई
लोकेश्वर श्रीमान् कर्मापा का।

བསྟན་པའི་ཁུར་ཆེན་འདེགས་ལ་མངའ་བརྙེས་པ། །
तेन पई खुर छेन देग ल ङा ञेस् प
शासन के महाबोझ को उठाने में सक्षम।

ཞྭ་དམར་ཅོད་པན་འཛིན་པའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
श मर चोद् पेन ज़िन पई शप तेन सोल
दीर्घायु हों, रक्तटोपमुकुटधर का।।

བྱམས་པ་མགོན་དང་ཌོཾ་བྷི་ཧེ་རུ་ཀའི། །
छ्म प गोन दङ डोंम भि हे रु कई
मैत्रेयनाथ तथा डोम्बि हेरुक के।

ཐུགས་རྗེའི་བྱིན་རློབས་གོང་བུར་འཁྱིལ་བའི་སྐུ། །
थुग जे छिन तोप गोङ बुर ख्यिल बई कु
करुणा रूपी अधिष्ठानबलपिण्ड-आवृत काय।

མཁའ་མཉམ་འགྲོ་ལ་ལམ་བཟང་སྟོན་མཛད་པའི། །
खा ञम डो ल लम ज़ङ तोन ज़े पई
आकाशसम प्राणियों में सुमार्ग को प्रदर्शित करने वाले।

ཀུན་ཏིང་ཏཱ་ཡི་སི་ཏུའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
केन तिङ ता यि सि तुइ शप तेन सोल
दीर्घायु हों, क्वन्-तिङ ता-यी सि-तु का।।

དཔལ་ལྡན་རིགས་ཀུན་ཁྱབ་བདག་རྡོ་རྗེ་འཆང་། །
पल देन रिग कुन ख्यप दग दोर जे छङ
श्रीयुत सर्वगोत्र विभु वज्रधर।

རྣམ་འཕྲུལ་འཛམ་གླིང་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མེ་མཆོག །
नम ठुल ज़म लिङ तेन पई डोन मे छोग
विकुर्वन, जम्बूद्वीप-शासन के परम दीप।

ཀུན་བཟང་ཡེ་ཤེས་ཐུགས་རྗེའི་སྤྲུལ་བསྒྱུར་གྱིས། །
कुन ज़ङ ये शेस् थुग जे टुल ग्युर ग्यीस्
समन्तभद्रज्ञान-करुणा के निर्माण से।

ཐབས་མཁས་ཟབ་མོའི་ཆོས་ཀྱི་མངའ་བདག་མཆོག །
थप खेस् ज़प मोइ छोस् क्यि ङा दग छोग
उपायकौशल्य, गम्भीर धर्म के परम-अधिपति।

རབ་འབྱམས་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་བདུད་རྩི་ནི། །
रप छम डुप पई ये शेस् दुद् त्सि नि
अनन्त सिद्धि स्वरूप ज्ञानामृत तो।

རིགས་དྲུག་སྡུག་བསྔལ་དྲུང་ནས་འབྱིན་བྱེད་པ། །
रिग डुग दुग ङल डुङ नेस् छिन छेद् प
षट् योनियों के दुःख को उन्मूलन करने वाले।

ཚེ་དཔག་མེད་དངོས་གང་འདུལ་ཐབས་ཟབ་མོས། །
छे पग मेद् ङोस् गङ दुल थप ज़प मोस्
प्रत्यक्ष अमितायु, यथा दमित गम्भीर उपाय से।

ཐར་པའི་ལམ་བཟང་རྩེ་མོར་འགོད་མཁས་པ། །
थर पई लम ज़ङ त्से मोर गोद् खेस् प
मुक्ति रूपी सुमार्ग के शिखर पर कुशल आरूढ-कर्त्ता।

དེ་ལྟར་སྙིང་པོའི་བསྟན་པ་རིན་པོ་ཆེ། །
दे तर ञिङ पोइ तेन प रिन पो छे
तथा हृदय रूपी शासन-रत्न।

གུ་རུའི་རྒྱལ་ཚབ་མཚུངས་མེད་བཻ་རོ་རྗེའི། །
गु रुइ ग्यल छप छुङ मेद् बै रो जे
गुरु-प्रतिनिधि, अनुपम वैरोचन स्वामी का।

འཇམ་མགོན་བླ་མ་བསྐལ་བརྒྱར་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
जम गोन ल म कल ग्यर शप तेन सोल
दीर्घायु हों, मञ्जुनाथ-गुरु कल्प शत (पर्यन्त)।।

ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་ཁམས་དམིགས་མེད་ཐུགས་རྗེ་ཡི། །
छोग चुइ शिङ खम मिग मेद् थुग जे यि
दशदिग् क्षेत्रधातुओं में अनालम्ब करुणा के द्वारा।

རྒྱལ་བའི་རྒྱལ་ཚབ་དམ་པའི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
ग्यल वई ग्यल छप दम पई शप तेन सोल
दीर्घायु हों, सत्-जिन(बुद्ध)प्रतिनिधि का।।

གཅིག་ཏུ་འདུས་པའི་བྱིན་རླབས་རྒྱ་མཚོ་ཆེ། །
चिग तु दुस् पई छिन लप ग्य छो छे
एक में एकत्रित अधिष्ठान रूपी महासमुद्र।

དཔའ་བོའི་དབང་ཕྱུག་མཆོག་གི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
पा बोइ वङ छुग छोग गि शप तेन सोल
दीर्घायु हों, परम पा-वो वङ्-छुग् का।।

འགྲོ་བློ་རྟོག་པའི་མུན་པ་ཀུན་ཏུ་བཅིལ། །
डो लो ञोग पई मुन प कुन तु चिल
सत्त्व-बुद्धि रूपी अशुद्ध-अन्धकार के सर्वतः नाशक।

རྣམ་འདྲེན་ཏྲེ་བོ་མཆོག་གི་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
नम डेन त्रे बो छोग गि शप तेन सोल
दीर्घायु हों, विनायक परम त्रेहो।।

འཛིན་སྐྱོང་སྤེལ་བའི་བྱེད་པོ་མཆོག་རྣམས་ལ། །
ज़िन क्योङ पेल बई छेद् पो छोग नम ल
धारण, पालन तथा वृद्धिकर्त्ता परम लोग।

| | |
|---|---|
| དད་ཅིང་གུས་པས་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་མཐུས། ། | མཁའ་མཉམ་འགྲོ་ཀུན་རྫོགས་སངས་རྒྱས་ཐོབ་ཤོག ། |
| दे चिङ गुस् पेस् सोल व तप पई थुस् | खा ञम डो कुन ज़ोग सङ ग्येस् थोप शोग |
| **श्रद्धा-आदरपूर्वक अध्येषणा करने के बल से।** | **आकाशसम समस्त प्राणि बुद्धत्व को प्राप्त करें।।** |

དེ་ལྟར་ཡབ་སྲས་རིམ་བྱོན་སྤྱིར་མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བར་བཞུགས་པར་གསོལ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདི་དག་རྒྱལ་བའི་དབང་པོ་དྲུང་བཅུ་གསུམ་པས་མཛད་པའི་གསོལ་འདེབས་སོར་བཞག་ལ། འཇམ་མགོན་བླ་མའི་གསོལ་འདེབས་རྗེ་བཅོ་ལྔ་པས་མཛད་པ་གསར་སྣོན་དང་བཅས། ཞབས་བརྟན་དུ་ཞལ་བསྒྱུར་བ་ཙམ་ལས་དུས་དབང་གིས་རང་རྩོམ་བགྱི་བར་གེགས་དོགས་ཆེ་བས་བཏང་སྙོམས་ཀྱི་གནས་སུ་མ་བཏང་ག་མེད་ལས། གཞན་རྗེ་བཙུན་གོང་མ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་ཚིག་གྲུབ་པའི་གསུང་དང་རང་ངོས་ནས་དད་ཞེན་མ་ནོར་ཙམ་ཡོད་པའི་སྟོབས་ངེས་རྒྱལ་མཆོག་ཡབ་སྲས་རྣམས་སྐྱེ་སྔོན་སྨོན་ལམ་དང་དགེ་ཚོགས་མཐུན་པར་སྤྱད་དེ། ཞིང་འདིར་རྡོ་རྗེའི་དཔོན་སློབ་ཀྱི་ཚུལ་གྱིས་ཐུགས་ནང་གཙང་མའི་ཕྲིན་ལས་ཇི་ལྟར་བཞེད་པ་མཐའ་དག་གེགས་མེད་དུ་གྲུབ་པས་འཚོ་ཞིང་གཞེས་ནས། བདག་སོགས་གདུལ་བྱ་རྣམས་དད་པ་དང་དག་པའི་སྣང་བ་ཁོ་ན་ལ་སྦྱོར་བའི་བཀའ་དྲིན་མཛད་པར་གསོལ་བའི་སྨོན་འདུན་ཞུགས་དྲག་བཅས། ཀརྨ་པར་འབོད་པ་ཨོ་རྒྱན་ཕྲིན་ལས་པས། རབ་བྱུང་བཅུ་བདུན་པའི་མགོ་ཟླ་བའི་ཚེས་ ༣ ནང་ལོ་ ༢༥༤༩ ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༥ ཟླ་ ༡༢ ཚེས་ ༤ ཉིན་ར་མོ་ཆེའི་རྒྱུད་པ་གྲྭ་ཚང་དུ་སྦྱར་བ་དགེ །

इस प्रकार क्रमागत पिता-पुत्र, सामान्यतः परिनिर्वाण को नहीं प्राप्त करने के लिए अध्येषणा रूपी ये पद्य 13वें जिनेन्द्र के द्वारा रचित अध्येषणा की (किञ्चिद्) पूर्ति सहित 15वें भट्टारक द्वारा लिखे गये जम्-गोन् ला-मा की अध्येषणा को नये रूप में जोड़कर दीर्घायु(-अध्येषणा) के रूप में (किञ्चिद्) परिवर्तन मात्र किया गया है तथा कालवश स्वरचना का निर्माण करना अधिक बाधा एवं संशययुक्त होने से जानबूझकर (स्वतन्त्र रचना की) उपेक्षा की गई है।

इसके अतिरिक्त भट्टारक परमपावनों के सत्यपदसिद्धिवचन तथा अपनी ओर से अमिथ्या अनन्य श्रद्धा मात्र होने से परम जिन तथा पुत्रों में पूर्वजन्मों के प्रणिधान तथा समान रूप से कुशल सम्भार का आचरण करने तथा इस क्षेत्र में वज्राचार्य तथा शिष्य के नयानुसार शुद्धचित्त रूपी कर्मों के यथानुरूप समस्त अभिप्राय, विना बाधा सिद्ध करने से, जीवित रहते हुए हम विनेयजन लोग भक्ति तथा शुद्धाभास मात्र से योग करने की कृतज्ञता-कृपा रूपी यह अध्येषणा, उग्र-प्रणिधान तथा छन्द सहित कर्मापा नाम से सम्बोधित किये जाने वाले उग्र्यन ठिन्-लस् द्वारा 17वें प्रभव, मार्गशीर्ष मास के तृतीया तिथि, बुद्धाब्द 2549, 4 दिसम्बर 2005 ई0 को र-मो-छे के ग्युद्-पा विहार (धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश) में निबद्ध किया गया।

कुशलं भवतु।।

# महाप्रणिधान के अवसर पर प्रवचन-पाठ

མཎྜལ་སོ་བདུན་མ།

# सप्त त्रिंशत (सैंतीस) मण्डल(-पूजा)

སྐྱབས་འགྲོ་དང་སེམས་བསྐྱེད་ཇོ་བོའི་ལུགས་ནི།
स्वामी (आचार्य दीपंकरश्रीज्ञान) के मतानुसार शरणगमन और बोधिचित्तोत्पाद–

སངས་རྒྱས་ཆོས་དང་ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་རྣམས་ལ། །
सङ ग्येस् छोस् दङ ऴोग क्यि छोग नम ल
बुद्ध, धर्म और परम गणों के।

བྱང་ཆུབ་བར་དུ་བདག་ནི་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छङ छुप बर दु दग नि क्यप सु छि
शरण जाता, मैं बोधि पर्यन्त।

བདག་གིས་སྦྱིན་སོགས་བགྱིས་པ་འདི་དག་གིས། །
दग गीस् छिन सोग ग्यीस् प दि दग गीस्
दानादि मेरे इन कृत्यों से।

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་འགྲུབ་པར་ཤོག །
डो ल फेन छिर सङ ग्येस् डुप पर शोग
जगत् हित हेतु बुद्ध बन जाऊँ।।

ཡན་ལག་བདུན་པ་ནི།
सप्ताङ्ग पूजा–

ཇི་སྙེད་སུ་དག་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་ན། །
जि ञेद् सु दग छोग चुइ जिग तेन न
जितने भी दश दिशाओं के लोकों में।

དུས་གསུམ་གཤེགས་པ་མི་ཡི་སེང་གེ་ཀུན། །
दुस् सुम शेग प मि यि सेङ गे कुन
त्रिकालगत जो भी, सब नरसिंह हैं।

བདག་གིས་མ་ལུས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ། །
दग गीस् म लुस् दे दग थम चे ल
मैं अशेष उन समस्त लोगों को।

ལུས་དང་ངག་ཡིད་དང་བས་ཕྱག་བགྱིའོ། །
लुस् दङ ङग यिद् दङ वे छग ग्यि ह्रो
नमन करता, काय-वाक्-चित्त भक्तिपूर्वक।।

བཟང་པོ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་སྟོབས་དག་གིས། །
ज़ङ पो चोद् पई मोन लम तोप दग गीस्
भद्रचर्या-प्रणिधान के बल से।

རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཡིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ། །
ग्यल व थम चे यिद् क्यीस् ङोन सुम दु
समस्त जिनों को (स्व-)चित्त में प्रत्यक्ष कर।

ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་ལུས་རབ་བཏུད་པ་ཡིས། །
शिङ गि दुल ञेद् लुस् रप तुद् प यीस्
यावत् क्षेत्ररज कायों को आदर से।

རྒྱལ་བ་ཀུན་ལ་རབ་ཏུ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ग्यल व कुन ल रप तु छग छल लो
समस्त जिनों को प्रणाम करता हूँ।।

རྡུལ་གཅིག་སྟེང་ན་རྡུལ་སྙེད་སངས་རྒྱས་རྣམས། །
दुल चिग तेङ न दुल ञेद् सङ ग्येस् नम
एक रज के ऊपर यावत् रज बुद्ध हैं।

སངས་རྒྱས་སྲས་ཀྱི་དབུས་ན་བཞུགས་པ་དག །
सङ ग्येस् सेस् क्यि उस् न शुग प दग
बैठे हैं, बुद्धपुत्रों के मध्य।

དེ་ལྟར་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྣམས་མ་ལུས་པར། །
दे तर छोस् क्यि यिङ नम म लुस् पर
वैसे ही अशेष धर्मधातुओं में।

ཐམས་ཅད་རྒྱལ་བ་དག་གིས་གང་བར་མོས། །
थम चे ग्यल व दग गीस् गङ बर मोस्
अधिष्ठित करें, सारे जिन (बुद्ध) लोग भरे हैं।।

དེ་དག་བསྔགས་པ་མི་ཟད་རྒྱ་མཚོ་རྣམས། །
दे दग ङग प मि ज़े ग्य छो नम
अक्षय सागर रूपी उनकी प्रशंसा।

དབྱངས་ཀྱི་ཡན་ལག་རྒྱ་མཚོའི་སྒྲ་ཀུན་གྱིས། །
यङ क्यि येन लग ग्य छोइ ड कुन ग्यीस्
समस्त शब्द रूपी स्वरांग सागर से।

རྒྱལ་བ་ཀུན་གྱི་ཡོན་ཏན་རབ་བརྗོད་ཅིང་། །
ग्यल व कुन ग्यि योन तेन रप जोद् चिङ
समस्त जिनों (बुद्धों) के गुणों का प्रवाचन कर।

བདེ་བར་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་བདག་གིས་བསྟོད། །
दे वर शेग प थम चे दग गीस् तोद्
समस्त सुगतों की मैं स्तुति करता।।

མེ་ཏོག་དམ་པ་ཕྲེང་བ་དམ་པ་དང་། །
मे तोग दम प ठेङ व दम प दङ
उत्तम पुष्प और उत्तम माला।

སིལ་སྙན་རྣམས་དང་བྱུག་པ་གདུགས་མཆོག་དང་། །
सिल ञेन नम दङ छुग प दुग छोग दङ
उत्तम वाद्य तथा लेपन और छत्र।

མར་མེ་མཆོག་དང་བདུག་སྤོས་དམ་པ་ཡིས། །
मर मे छोग दङ दुग पोस् दम प यीस्
उत्तम दीप तथा उत्तम धूपों के द्वारा।

རྒྱལ་བ་དེ་དག་ལ་ནི་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व दे दग ल नि छोद् पर ग्यि
उन जिनों की पूजा करता हूँ।।

ན་བཟའ་དམ་པ་རྣམས་དང་དྲི་མཆོག་དང་། །
न ज़ा दम प नम दङ डि छोग दङ
उत्कृष्ट वस्त्र तथा उत्तम गन्ध।

ཕྱེ་མའི་ཕུར་མ་རི་རབ་མཉམ་པ་དང་། །
छे मई फुर म रि रप ञम प दङ
मेरु समान चूर्ण गन्ध-द्रव्य।

བཀོད་པ་ཁྱད་པར་འཕགས་པའི་མཆོག་ཀུན་གྱིས། །
कोद् प ख्ये पर फग पई छोग कुन ग्यीस्
परम विशिष्ट व्यूहों के द्वारा।

རྒྱལ་བ་དེ་དག་ལ་ཡང་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व दे दग ल यङ छोद् पर ग्यि
उन जिनों की पूजा करता हूँ।।

མཆོད་པ་གང་རྣམས་བླ་མེད་རྒྱ་ཆེ་བ། །
छोद् प गङ नम ल मेद् ग्य छे व
जो अनुत्तर तथा विपुल पूजाएँ हैं।

དེ་དག་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་མོས། །
दे दग ग्यल व थम चे ल यङ मोस्
उन्हें, समस्त जिनों में अधिष्ठान और।

བཟང་པོ་སྤྱོད་ལ་དད་པའི་སྟོབས་དག་གིས། །
ज़ङ पो चोद् ल दे पई तोप दग गीस्
भद्रचर्या में श्रद्धाबल के द्वारा।

རྒྱལ་བ་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་མཆོད་པར་བགྱི། །
ग्यल व कुन ल छग छ़ल छोद् पर ग्यि
समस्त जिनों को प्रणाम कर पूजता हूँ।।

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་དབང་གིས་ནི། །
दोद् छग शे दङ ति मुग वङ गीस् नि
राग-द्वेष और मोह के वश से।

ལུས་དང་ངག་དང་དེ་བཞིན་ཡིད་ཀྱིས་ཀྱང་། །
लुस् दङ ङग दङ दे शिन यिद् क्यीस् क्यङ
काय और वाक् तथा चित्त के द्वारा भी।

སྡིག་པ་བདག་གིས་བགྱིས་པ་ཅི་མཆིས་པ། །
दिग प दग गीस् ग्यीस् प चि छीस् प
मेरे द्वारा जो (भी) पाप किए गए हों।

དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་གིས་སོ་སོར་བཤགས། །
दे दग थम चे दग गीस् सो सोर शग
प्रत्येक उन सबकी मैं देशना करता हूँ।।

ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱལ་བ་ཀུན་དང་སངས་རྒྱས་སྲས། །
छोग चुइ ग्यल व कुन दङ सङ ग्येस् सेस्
दश दिशाओं के समस्त जिन (बुद्ध) तथा जिनपुत्र (बुद्धपुत्र)।

རང་རྒྱལ་རྣམས་དང་སློབ་དང་མི་སློབ་དང་། །
रङ ग्यल नम दङ लोप दङ मि लोप दङ
प्रत्येकबुद्ध तथा शैक्ष और अशैक्ष।

འགྲོ་བ་ཀུན་གྱི་བསོད་ནམས་གང་ལ་ཡང་། །
डो व कुन ग्यि सोद् नम गङ ल यङ
समस्त जगत् के जो भी पुण्य हों।

དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་བདག་ཡི་རང་། །
दे दग कुन ग्यि जेस् सु दग यि रङ
अनुमोदन करता, मैं उन सबका।।

གང་རྣམས་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་སྒྲོན་མ་དག །
गङ नम छोग चुइ जिग तेन डोन म दग
दश दिशाओं के लोकदीप जितने हैं।

བྱང་ཆུབ་རིམ་པར་སངས་རྒྱས་མ་ཆགས་བརྙེས། །
छङ छुप रिम पर सङ ग्येस् म छग ञेस्
बोधिक्रम में विराग बुद्धत्व को प्राप्त किए।

མགོན་པོ་དེ་དག་བདག་གིས་ཐམས་ཅད་ལ། །
गोन पो दे दग दग गीस् थम चे ल
उन समस्त नाथों की मैं।

འཁོར་ལོ་བླ་ན་མེད་པར་བསྐོར་བར་བསྐུལ། །
खोर लो ल न मेद् पर कोर बर कुल
अध्येषणा करता हूँ, अनुत्तर (धर्म-)चक्र(-प्रवर्त्तन) हेतु।।

མྱ་ངན་འདའ་སྟོན་གང་བཞེད་དེ་དག་ལ། །
न्य ङेन दा तोन गङ शेद् दे दग ल
उन परिनिर्वाण के विचार वालों को।

འགྲོ་བ་ཀུན་ལ་ཕན་ཞིང་བདེ་བའི་ཕྱིར། །
डो व कुन ल फेन शिङ दे वई छिर
सर्वजगत् के हित तथा सुख के लिए।

བསྐལ་པ་ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་བཞུགས་པར་ཡང་། །
कल प शिङ गि दुल ञेद् शुग पर यङ
यावत् कल्परज तक विराजमान रहने हेतु।

བདག་གིས་ཐལ་མོ་རབ་སྦྱར་གསོལ་བར་བགྱི། །
दग गीस् थल मो रप छर सोल बर ग्यि
प्रार्थना करता, मैं अञ्जलिबद्ध होकर।।

ཕྱག་འཚལ་བ་དང་མཆོད་ཅིང་བཤགས་པ་དང་། །
छग छ़ल व दङ छोद् चिङ शग प दङ
वन्दना तथा पूजा एवं देशना।

རྗེས་སུ་ཡི་རང་བསྐུལ་ཞིང་གསོལ་བ་ཡི། །
जेस् सु यि रङ कुल शिङ सोल व यि
अनुमोदना, अध्येषणा तथा याचना से।

དགེ་བ་ཅུང་ཟད་བདག་གིས་ཅི་བསགས་པ། །
गे व चुङ ज़े दग गीस् चि सग प
किञ्चिद् कुशल जो भी मैंने संचय किए।

ཐམས་ཅད་བདག་གིས་བྱང་ཆུབ་ཕྱིར་བསྔོ་འོ། །
थम चे दग गीस् छङ छुप छिर ङो ह़ो
परिणामना करता, मैं सभी के बोधि हेतु।।

ཞེས་དང་། མཎྜལ་སོ་བདུན་མ་ནི།
इति। सप्त त्रिंशत (सैंतीस) मण्डल तो–

ཨོཾ་བཛྲ་བྷཱུ་མི་ཨཱཿཧཱུྃ། གཞི་རྣམ་པར་དག་པ་དབང་ཆེན་གསེར་གྱི་ས་གཞི།
वज्र भ्ु मि आःहूँ   शि नम पर दग प वङ छेन सेर ग्यि स शि
ओं वज्रभूमे आः हूँ। विशुद्धाश्रय महेन्द्र सुवर्णभूमि।

ཨོཾ་བཛྲ་རེ་ཁེ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཕྱི་ལྕགས་རིའི་འཁོར་ཡུག་གི་ར་བས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བའི་དབུས་སུ་རིའི་རྒྱལ་པོ་རི་བོ་
ओं वज्र रे खे आःहूँ   छि चग री खोर युग गि र वे योङ सु कोर बई उस् सु री ग्यल पो रि वो
ओं वज्ररेखे आः हूँ।

མཆོག་རབ། ཤར་ལུས་འཕགས་པོ། ལྷོ་འཛམ་བུ་གླིང་། ནུབ་བ་གླང་སྤྱོད། བྱང་སྒྲ་མི་སྙན།
छोग रप   शर लुस् फग पो   ल्हो ज़म बु लिङ   नुप व लङ चोद्   छङ ड मि ञेन
बाह्य अयोगिरि क्षेत्र-प्राकार से परिवृत्त के मध्य में गिरिराज सुमेरु, पूर्व में विदेह, दक्षिण में जम्बूद्वीप, पश्चिम में

ལུས་དང་ལུས་འཕགས། རྔ་ཡབ་དང་རྔ་ཡབ་གཞན། གཡོ་ལྡན་དང་ལམ་མཆོག་འགྲོ། སྒྲ་མི་སྙན་དང་སྒྲ་མི་
लुस् दङ लुस् फग   ङ यप दङ ङ यप शेन   यो देन दङ लम छोग डो   ड मि ञेन दङ ड मि
गोदानीय, उत्तर में कुरु, देह और विदेह, चामर और अपरचामर, शाठा और उत्तरमन्त्रिण, कुरव और

སྙན་གྱི་ཟླ། རིན་པོ་ཆེའི་རི་བོ། དཔག་བསམ་གྱི་ཤིང་། འདོད་འཇོའི་བ། མ་རྨོས་པའི་ལོ་ཏོག །
ञेन ग्यि द   रिन पो छे रि बो   पग सम ग्यि शिङ   दोद् जोइ व   म मोस् पई लो तोग
कौरव, रत्नगिरि, कल्पद्रुम, कामधेनु, सहज सस्य,

འཁོར་ལོ་རིན་པོ་ཆེ། ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ། བཙུན་མོ་རིན་པོ་ཆེ། བློན་པོ་རིན་པོ་ཆེ།
खोर लो रिन पो छे नोर बु रिन पो छे ज़ुन मो रिन पो छे लोन पो रिन पो छे
**चक्ररत्न, मणिरत्न, स्त्रीरत्न, मन्त्रिरत्न,**

གླང་པོ་རིན་པོ་ཆེ། རྟ་མཆོག་རིན་པོ་ཆེ། དམག་དཔོན་རིན་པོ་ཆེ། གཏེར་ཆེན་པོའི་བུམ་པ།
लङ पो रिन पो छे त छोग रिन पो छे मग पोन रिन पो छे तेर छेन पोइ बुम प
**हस्तिरत्न, अश्वरत्न, सेनापतिरत्न, महानिधिकलश,**

སྒེག་མོ་མ། ཕྲེང་བ་མ༔ གླུ་མ། གར་མ། མེ་ཏོག་མ། བདུག་སྤོས་མ། སྣང་གསལ་མ། དྲི་ཆབ་མ།
गेग मो म ठेङ व म लु म गर म मे तोग म दुग पोस् म नङ सल म डि छ़प म
**लास्या, माला, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीपा, गन्धा,**

ཉི་མ། ཟླ་བ། རིན་པོ་ཆེའི་གདུགས། ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་རྒྱལ་མཚན།
ञि म द व रिन पो छे दुग छोग लेस नम पर ग्यल वई ग्यल छ़ेन
**सूर्य, चन्द्र, रत्नछत्र, दिग्विजयध्वज,**

དབུས་སུ་ལྷ་དང་མིའི་དཔལ་འབྱོར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་མ་ཚང་བ་མེད་པ། རབ་འབྱམས་རྒྱ་མཚོའི་རྡུལ་གྱི་གྲངས་
उस् सु ल्ह दङ मी पल छोर फुन सुम छ़ोग प म छ़ङ व मेद् प रप छम ग्य छ़ोइ दुल ग्यि डङ
**मध्य में देव-मनुष्यों की सम्पन्न सम्पूर्ण सम्पत्तियाँ, अनन्त समुद्ररज की संख्या से**

ལས་འདས་པ་མངོན་པར་བཀོད་པ་འདི་ཉིད་ཁྱབ་བདག་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོ་དང་དགོངས་པ་དབྱེར་མ་མཆིས་པའི་
लेस देस् प ङोन पर कोद् प दि ञिद् ख्यप दग दोर जे छङ छेन पो दङ गोङ प येर म छीस् पई
**अतीत ये जो अभिव्यूहित किया गया है, विभु महावज्रधर तथा अभिप्राय में अभिन्न**

དཔལ་ལྡན་བླ་མ་དམ་པ་དོན་གྱི་སྐད་དུ་མཚན་ནས་སྨོས་ན། དཔལ་ཁྱབ་བདག་རང་བྱུང་ཨོ་རྒྱན་རྒྱལ་བའི་
पल देन ल म दम प दोन ग्यि ले दु छ़ेन नेस् मोस् न पल ख्यप दग रङ छुङ उग्येन ग्यल वई
**श्रीमान् सत्गुरु अर्थतः नाम से पुकारें तो श्रीविभुस्वयंभू ओडियान जिनांकुर**

མྱུ་གུ་འགྲོ་འདུལ་ཕྲིན་ལས་རྡོ་རྗེ་རྩལ་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་སྡེ་ལྷ་བུས་མཆོད་ཚོས་བདེ་པ་པོའི་མཚན་རྒྱས་པ་ནས་སྨོས།
न्यु गु डो दुल ठिन लेस दोर जे ज़ल छोग लेस नम पर ग्यल वई दे
**जगत्-दम्य कर्मवज्र कला-दिग्विजय**-सेन इत्यादि के समान धर्मदेशना करने वालों का नाम विस्तृत रूप से लेना चाहिए।

དཔལ་བཟང་པོའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་བདུད་རྩི་ཞུ་བའི་དོན་དུ་འབུལ་བར་བགྱིའོ། །
पल ज़ङ पोइ शल ङ नेस् थेग प छेन पो दम पई छोस् क्यि दुद् ज़ि शु बई दोन दु बुल बर ग्यिहो
**श्रीभद्र के मुख से महायान सद्धर्मामृत ग्रहण हेतु अर्पित करता हूँ।**

དབང་ཞུ་བའི་སྐབས། ཞལ་སྔ་ནས། སྨིན་བྱེད་ཀྱི་དབང་བསྐུར་ཟབ་མོ་ཞུ་བའི་དོན་དུ་འབུལ་བར་བགྱིའོ། །
शल ङ नेस्   मिन छेद् क्यि वङ कुर ज़प मो शु बई दोन दु बुल बर ग्यिहो
अभिषेक ग्रहण के समय–श्रीभद्र के मुख से गम्भीर विपाक-अभिषेक ग्रहण हेतु अर्पित करता हूँ।

ལུང་ཞུ་བའི་སྐབས། ཞལ་སྔ་ནས། དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་བདུད་རྩི་ཞུ་བའི་དོན་དུ་འབུལ་བར་བགྱིའོ། །
शल ङ नेस्   दम पई छोस् क्यि दुद् त्सि शु बई दोन दु बुल बर ग्यिहो
आगम ग्रहण के समय–श्रीभद्र के मुख से सद्धर्मामृत ग्रहण हेतु अर्पित करता हूँ।

ཁྲིད་ཀྱི་རིགས་ལ། ཞལ་སྔ་ནས། གྲོལ་བྱེད་ཁྲིད་ཀྱི་རིམ་པ་ཟབ་མོ་ཞུ་བའི་དོན་དུ། ཞེས་བསྒྱུར།
शल ङ नेस्   डोल छेद् ठिद् क्यि रिम प ज़प मो शु बई दोन दु
व्याख्यान आदि के समय–श्रीभद्र के मुख से गम्भीर मुक्तक व्याख्यानक्रम ग्रहण करने हेतु अर्पित करता हूँ।

བཀའ་ཆོས་གྲུབ་རྗེས་ཀྱི་གཏང་རག་ལྟ་བུའི་ཚེ། ཞལ་སྔ་ནས། སྨིན་བྱེད་ཀྱི་དབང་བསྐུར་ཟབ་མོའམ། གྲོལ་བྱེད་ཀྱི་ཁྲིད་
शल ङ नेस्   मिन छेद् क्यि वङ कुर ज़प मो/डोल छेद् क्यि ठिद्
सद्धर्म-प्रवचन के बाद धन्यवाद ज्ञापन आदि के समय–श्रीभद्र के मुख से गम्भीर विपाक-अभिषेक अथवा गम्भीर मुक्तक

ཟབ་མོའམ། དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་བདུད་རྩི་ལེགས་པར་ཐོབ་པའི་སྐུ་དྲིན་གཏང་རག་གི་ཡོན་དུ་འབུལ་བར་བགྱིའོ། །
ज़प मो/दम पई छोस् क्यि दुद् त्सि लेग पर थोप पई कु डिन तङ रग गि योन दु बुल बर ग्यिहो
व्याख्यान वा सद्धर्मामृत के सम्यक् रूप से प्राप्ति की कृतज्ञता स्वरूप, दक्षिणा के रूप में अर्पित करता हूँ।

བརྟན་བཞུགས་ལྟ་བུ་ལ། ཞལ་སྔ་ནས། ཞབས་པད་བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོར་བརྟན་ཅིང་ཟབ་རྒྱས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རྟག་པ་
शल ङ नेस्   शप पे कल प ग्य छ़ोर तेन चिङ ज़प ग्येस् छोस् क्यि खोर लो तग
दीर्घायु-प्रार्थना आदि के समय–श्रीभद्र के मुख से चरण-कमल कल्पसमुद्र तक स्थिर होकर गम्भीर एवं विस्तृत

རྒྱུན་དུ་བསྐོར་བར་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་སླད་དུ་འབུལ་བར་བགྱིའོ། །
प ग्युन दु कोर बर सोल व देप पई ले दु बुल बर ग्यिहो
धर्मचक्र का सदा निरन्तर प्रवर्त्तन करने की अध्येषणा स्वरूप अर्पित करता हूँ।

བརྟན་བཞུགས་ཀྱི་གཏང་རག་སྐབས། ཞལ་སྔ་ནས། ཞབས་པད་བསྐལ་པ་རྒྱ་མཚོར་བརྟན་ཅིང་ཟབ་རྒྱས་ཆོས་ཀྱི་
शल ङ नेस्   शप पे कल प ग्य छ़ोर तेन चिङ ज़प ग्येस् छोस् क्यि
दीर्घायु के उत्सव पर - श्रीभद्र के मुख से, आपकी उपस्थिति शत कल्पों तक स्थिर होकर विस्तृत एवं गम्भीर

འཁོར་ལོ་རྟག་པ་རྒྱུན་དུ་བསྐོར་བའི་ཞལ་བཞེས་བཟང་པོ་ལེགས་པར་ཐོབ་པའི་བཀའ་དྲིན་གཏང་རག་གི་ཡོན་དུ་འབུལ་
खोर लो तग प ग्युन दु कोर बई शल शेस् ज़ङ पो लेग पर थोप पई का डिन तङ रग गि योन दु
धर्मचक्र सदा निरन्तर प्रवर्तन करने हेतु भद्र स्वीकृति की सुप्राप्ति के कृतज्ञता रूपी उत्सव में दक्षिणा स्वरूप

བར་བགྱིའོ། །ཞེས་ཁ་བསྒྱུར་བ་བྱའོ། །གང་ལྟར་ཡང་མཐར།
बुल बर ग्यिह्ो
अर्पित करता हूँ। इस प्रकार (प्रसंगानुसार) परिवर्तन करना चाहिए। जैसे भी हो अन्त में–

ཐུགས་རྗེས་འགྲོ་བའི་དོན་དུ་བཞེས་སུ་གསོལ།
थुग जेस् डो बई दोन दु शेस् सु सोल
करुणा से जगत् हित में ग्रहण करें।

བཞེས་ནས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །ཞེས་དང་།
शेस् नेस् छिन ग्यीस् लप तु सोल
ग्रहण कर (हमें) अधिष्ठित करें।। इति।

ས་གཞི་སྤོས་ཆུས་བྱུགས་ཤིང་མེ་ཏོག་བཀྲམ། །
स शि पोस् छुस् छुग शिङ मे तोग टम
भूमि को धूप लेपनकर पुष्प बिखेरता हूँ।

རི་རབ་གླིང་བཞི་ཉི་ཟླས་བརྒྱན་པ་འདི། །
रि रप लिङ शि ञि देस् ग्येन प दि
सुमेरु, चतुर्द्वीप, सूर्य-चन्द्र से अलङ्कृत यह।

སངས་རྒྱས་ཞིང་དུ་དམིགས་ཏེ་ཕུལ་བ་ཡིས། །
सङ ग्येस् शिङ दु मिग ते फुल व यीस्
बुद्ध-क्षेत्र को आलम्बन कर भेंट करने से।

འགྲོ་ཀུན་རྣམ་དག་ཞིང་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག །
डो कुन नम दग शिङ ल चोद् पर शोग
समस्त सत्त्व विशुद्ध क्षेत्र में वास करें।।

ཨིདཾ་གུ་རུ་རཏྣ་མཎྜལ་ཀཾ་ནིརྻ་ཏ་ཡ་མི།
इदं गुरु रत्न मण्डल खं नीर्यतयमि।
इदं गुरु रत्नमण्डलकं निर्यातयामि।।

སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་དང་། །
सेम चेन नम क्यि सम प दङ
सत्त्वों के आशय तथा।

བློ་ཡི་བྱེ་བྲག་ཇི་ལྟ་བར། །
लो यि छे डग जि त बर
बुद्धि भिन्नता के अनुसार।

ཆེ་ཆུང་ཐུན་མོང་ཐེག་པ་ཡི། །
छे छुङ थुन मोङ थेग प यि
महा, हीन, सामान्य यान का।

ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་དུ་གསོལ། །
छोस् क्यि खोर लो कोर दु सोल
धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करें।।

ཞེས་གསོལ་བ་གདབ། གསུང་ཆོས་གྲུབ་རྗེས།
धर्मप्रवचन समाप्ति के बाद–

བསོད་ནམས་འདི་ཡིས་ཐམས་ཅད་གཟིགས་པ་ཉིད། །
सोद् नम दि यीस् थम चे ज़िग प ञिद्
इस पुण्य से सर्वदर्शी।

ཐོབ་ནས་ཉེས་པའི་དགྲ་རྣམས་ཕམ་བྱས་ནས། །
थोप नेस् ञेस् पई ड नम फम छेस् नेस्
प्राप्त कर, दोष रूपी शत्रु को हराकर।

སྐྱེ་ག་ན་འཆིའི་ཟ་རླབས་འཁྲུག་པ་ཡི། །
क्ये ग न छी ब लप ठुग प यि
जाति, जरा, रोग, मरण रूपी तरंगों का विक्षेपन।

སྲིད་ཞིའི་དཔལ་འབྱོར་མ་ལུས་འབྱུང་བའི་གཞི། །
सिद् शी पल छोर म लुस् छुङ बई शि
भव-शान्त के अशेष श्रीसम्पद् की उत्पत्ति का
आधार।

དེ་འཛིན་བྱེད་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་རྣམས། །
दे ज़िन छेद् पई क्येस् बु दम प नम
उसके धारण-कर्त्ता सत्पुरुष लोग।

ཕན་བདེ་འབྱུང་བའི་གནས་གཅིག་པུ། །
फेन दे छुङ बई नेस् चिग पु
एकमात्र हित-सुख का आकर (स्रोत)।

བསྟན་པ་འཛིན་པའི་སྐྱེས་བུ་རྣམས། །
तेन प ज़िन पई क्येस् बु नम
शासन धारण-कर्त्ता सन्त पुरुष लोगों का।

རྒྱལ་ཀུན་སྙིང་རྗེའི་རང་གཟུགས་ཀརྨ་པ། །
ग्यल कुन ञिङ जे रङ ज़ुग कर्म प
सर्वजिनों के करुणा स्वरूप कर्मापा।

རྒྱལ་ཀུན་གདུང་འཚོབ་དབང་བསྐུར་ཀརྨ་པ། །
ग्यल कुन दुङ छ़ोप वङ कुर कर्म प
सर्वजिनों के वंशपोषकाभिषेक कर्मापा।

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་འགྲོ་བ་སྒྲོལ་བར་ཤོག །
सिद् पई छ़ो लेस डो व डोल वर शोग
भव-सागर से जगत् तर जाए।।

ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ཡུན་རིང་གནས་པ་དང་། །
थुप पई तेन प युन रिङ नेस् प दङ
मुनि का शासन दीर्घकाल तक स्थिर हो।

དཔལ་འབྱོར་གྱིས་བརྒྱན་ཡུན་རིང་ཞབས་བརྟན་ཤོག །
पल छोर ग्यीस् ग्येन युन रिङ शप तेन शोग
श्रीसम्पद् द्वारा अलंकृत हों, दीर्घकाल तक स्थिर
हों।।

བསྟན་པ་ཡུན་རིང་གནས་པ་དང་། །
तेन प युन रिङ नेस् प दङ
शासन, दीर्घकाल तक स्थिर हो।

སྐུ་ཚེ་རྒྱལ་མཚན་བརྟན་གྱུར་ཅིག །
कु छ़े ग्यल छ़ेन तेन ग्युर चिग
जीवन-ध्वज स्थिर हो जाए।।

རྒྱལ་ཀུན་ཕྲིན་ལས་གཅིག་བསྡུས་ཀརྨ་པ། །
ग्यल कुन ठिन लेस चिग बदुस् कर्म प
सर्वजिनों के कर्मैक संग्रह कर्मापा।

ཨོ་རྒྱན་འགྲོ་འདུལ་ཕྲིན་ལས་ཞབས་བརྟན་གསོལ། །
उग्येन डो दुल ठिन लेस शप तेन सोल
ओ-ग्यन् डो-दुल् ठिन्-लस् (ओडियान जगत्-दम्य
कर्मापा) का जीवन स्थिर हो।।

ལྟ་བུ་ཆོས་བདག་པ་པོའི་ཞབས་བརྟན་རྒྱས་བསྡུས་ཅི་རིགས་འདོན།
इस प्रकार धर्मप्रवचन करने वाले (गुरु) का संक्षिप्त अथवा विस्तृत किसी भी दीर्घायु-प्रार्थना का पाठ करना चाहिए।

བསྟན་རྒྱས་སྨོན་ལམ་ཕྱོགས་བཅུ་དུས་བཞི་མ།

# दशदिग् चार काल (नामक) शासन-विस्तार प्रणिधान

ཨོཾ༔ ན་མོ་གུ་རུ༔ སྤྲེལ་ལོ་སྤྲེལ་ཟླ་ར་བའི་ཚེས་བཅུ་ལ་བསམ་ཡས་བར་ཁང་གཡུ་ཞལ་ཅན་དུ་རྡོ་རྗེ་དབྱིངས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞལ་ཕྱེས་ཚེ་ཨོ་རྒྱན་གྱིས་སྨོན་ལམ་འདི་གསུངས་པས་རྗེ་འབངས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་དམ་ནར་མར་མཛད། ཕྱི་རབས་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་འདི་ལ་ཐུགས་དམ་རྩེ་གཅིག་ཏུ་མཛོད།

ओं। नमो गुरु। वानर-वर्ष वानर-मास की दशमी को सम्-यस् (विहार) के मध्य-गृह यु-शल्-चन् में वज्रधातु-मण्डल के उद्घाटन के समय उर्ग्यन (पद्मा जुङ्-नस् अर्थात् ओडियान पद्मसम्भव) द्वारा इस प्रणिधान को कहा गया। अतः (तत्कालीन) स्वामी (राजा तथा) समस्त प्रजा ने निरन्तर (इसका) अभ्यास किया। आगे आने वाले वंशजों द्वारा भी इसका एकाग्र होकर अभ्यास किया जाना चाहिए।

ཕྱོགས་བཅུ་དུས་བཞིའི་རྒྱལ་བ་སྲས་དང་བཅས༔
छोग चु दुस् शी ग्यल व सेस् दङ चेस्
दश दिशाओं तथा चार कालों के जिन, पुत्रों सहित।

བླ་མ་ཡི་དམ་མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་ཚོགས༔
ल म यि दम खा डो छोस् क्योङ छोग
गुरु,इष्ट (तथा) डाक-धर्मपालक गण।

མ་ལུས་ཞིང་གི་རྡུལ་སྙེད་གཤེགས་སུ་གསོལ༔
म लुस् शिङ गि दुल ञेद् शेग सु सोल
अशेष क्षेत्र-रज(-सम) जितने हैं (सभी) पधारें।

མདུན་གྱི་ནམ་མཁར་པད་ཟླའི་གདན་ལ་བཞུགས༔
दुन ग्यि नम खर पे दई देन ल शुग
सामने के आकाश में पद्मचन्द्रासन पर विराजें।।

ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་ལོ༔
लुस् ङग यिद् सुम गुस् पेस् छग छ़ल लो
(आपको) काय-वाक्-चित्त त्रिभक्ति (श्रद्धा) से नमन करता हूँ।

ཕྱི་ནང་གསང་བ་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱིས་མཆོད༔
छि नङ सङ व दे शिन ञिद् क्यीस् छोद्
बाह्यान्तरगुह्य तथता द्वारा पूजता हूँ।

རྟེན་མཆོག་བདེ་གཤེགས་རྣམས་ཀྱི་སྤྱན་སྔ་རུ༔
तेन छोग दे शेग नम क्यि चेन ङ रु
परम अधिष्ठान सुगतों के समक्ष।

སྔོན་གྱི་སྡིག་པའི་ཚོགས་ལ་བདག་གདོང་ཞིང༔
ङोन ग्यि दिग पई छ़ोग ल दग नोङ शिङ
पूर्वकृत पाप समूह से, मैं लज्जित हूँ।

ད་ལྟའི་མི་དགེ་འགྱོད་པས་རབ་ཏུ་བཤགས༔
द तई मि गे ग्योद् पेस् रप तु शग
वर्तमान अकुशल को पश्चात्ताप से प्रदेशना करता हूँ।

ཕྱིན་ཆད་དེ་ལས་ལྡོག་ཕྱིར་བདག་གིས་བསྡམས༔
छिन छे दे लेस दोग छिर दग गीस् बदम
अबसे इनके निवर्तन हेतु मैं संवरित होता हूँ।

བསོད་ནམས་དགེ་ཚོགས་ཀུན་ལ་ཡི་རང་ངོ༔
सोद् नम गे छ़ोग कुन ल यि रङ ङो
समस्त पुण्य-कुशलसम्भारों का अनुमोदन करता हूँ।

རྒྱལ་བའི་ཚོགས་རྣམས་མྱ་ངན་མི་འདའ་བར༔
ग्यल वई छ़ोग नम न्य ङेन मि दा बर
जिन समूह लोग परिनिर्वृत्त न होकर।

སྡེ་སྣོད་གསུམ་དང་བླ་མེད་ཆོས་འཁོར་བསྐོར༔
दे नोद् सुम दङ ल मेद् छोस् खोर कोर
त्रिपिटक एवं अनुत्तर धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करें।

འགྲོ་རྣམས་བླ་མེད་ཐར་པའི་སར་ཕྱིན་ཤོག༔
डो नम ल मेद् थर पई सर छिन शोग
जगत् (प्राणी) सभी अनुत्तर मोक्ष-भूमि में चले जाएँ।

བདག་གིས་བརྩམས་པའི་སྨོན་ལམ་རབ་བཟང་འདི༔
दग गीस् त्रम पई मोन लम रप ज़ङ दि
मेरे द्वारा निबद्ध प्रभद्र यह प्रणिधान।

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་དབྱངས་ཀྱི་མཁྱེན་པ་ལྟར༔
फग प जम पल यङ क्यि ख्येन प तर
आर्य मञ्जुश्रीघोष के ज्ञान समान।

བསྟན་པའི་དཔལ་གྱུར་བླ་མ་རིན་ཆེན་རྣམས༔
तेन पई पल ग्युर ल म रिन छेन नम
शासन-श्रीभूत गुरुरत्न लोग।

ཉི་ཟླ་བཞིན་དུ་ཀུན་ལ་གསལ་བར་ཤོག༔
ञि द शिन दु कुन ल सल वर शोग
सूर्यचन्द्रवत् सभी में प्रकाशित हों।

བསྟན་པའི་གཞི་མ་དགེ་འདུན་རིན་པོ་ཆེ༔
तेन पई शि म गेन दुन रिन पो छे
शासन का आधार संघरत्न।

བསྟན་པའི་སྙིང་པོ་གསང་སྔགས་སྒྲུབ་པའི་སྡེ༔
तेन पई ञिङ पो सङ ङग डुप पई दे
साधन-हृदय गुह्यमन्त्र साधन-वर्ग।

བསྟན་པའི་སྦྱིན་བདག་ཆོས་སྐྱོང་རྒྱལ་པོ་ཡང་༔
तेन पई छिन दग छोस् क्योङ ग्यल पो यङ
शासन-दानपति धर्मपालक राजा भी।

དགེ་ཚོགས་མ་ལུས་འགྲོ་བའི་རྒྱུད་ལ་བསྔོ༔
गे छोग म लुस् डो बई ग्युद् ल ङो
अशेष पुण्य-सम्भार जगत् सन्तति हेतु परिणामित करता हूँ।

སངས་རྒྱས་སྲས་བཅས་བདག་ལ་དགོངས་སུ་གསོལ༔
सङ ग्येस् सेस् चेस् दग ल गोङ सु सोल
पुत्र सहित बुद्ध मुझे ध्यान दें।

རྒྱལ་བ་ཀུན་ཏུ་བཟང་དང་དེ་སྲས་དང་༔
ग्यल व कुन तु ज़ङ दङ दे सेस् दङ
जिन समन्तभद्र तथा उनके पुत्र।

དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་བདག་སློབ་ཤོག༔
दे दग कुन ग्यि जेस् सु दग लोप शोग
उन सबके पीछे, मैं शिक्षा ग्रहण करूँ।

ནམ་མཁའ་བཞིན་ཏུ་ཀུན་ལ་ཁྱབ་པར་ཤོག༔
नम खा शिन तु कुन ल ख्यप पर शोग
आकाशवत् सभी में व्याप्त हों।

རི་བོ་བཞིན་དུ་རྟག་ཏུ་བརྟན་པར་ཤོག༔
रि बो शिन दु तग तु तेन पर शोग
मेरु समान सदा स्थिर हों।

ཐུགས་མཐུན་ཁྲིམས་གཙང་བསླབ་གསུམ་གྱིས་ཕྱུག་ཤོག༔
थुग थुन ठिम त्सङ लप सुम ग्यीस् छुग शोग
एकमत, शुद्धशील, त्रिशिक्षाओं से सम्पन्न हो जाएँ।

དམ་ཚིག་ལྡན་ཞིང་བསྐྱེད་རྫོགས་མཐར་ཕྱིན་ཤོག༔
दम छिग देन शिङ क्येद् ज़ोग थर छिन शोग
समय (दम्-छिग्) युक्त हों, उत्पन्न-सम्पन्न(-क्रम) में पारंगत हों।

ཆབ་སྲིད་རྒྱས་ཤིང་བསྟན་ལ་སྨན་པར་ཤོག༔
छप सिद् ग्येस् शिङ तेन ल मेन पर शोग
राज्य विस्तार सहित शासन में लाभकारी हों।

བསྟན་པའི་ཞབས་འདེགས་རྒྱལ་རིགས་བློན་པོ་ཡང༔
तेन पई शप देग ग्यल रिग लोन पो यङ
शासन, सेवक, क्षत्रियकुल मन्त्री भी।

བློ་གྲོས་རབ་འཕེལ་རྩལ་དང་ལྡན་པར་ཤོག༔
लो डोस् रप फेल ज़ल दङ देन पर शोग
बुद्धि विवृद्ध कर कला से युक्त हों।

བསྟན་པའི་གསོས་བྱེད་ཁྱིམ་བདག་འབྱོར་ལྡན་རྣམས༔
तेन पई सोस् छेद् ख्यिम दग छोर देन नम
शासन-पोषक गृहपति सम्पन्न लोग।

ལོངས་སྤྱོད་ལྡན་ཞིང་ཉེར་འཚེ་མེད་པར་ཤོག༔
लोङ चोद् देन शिङ ञेर छ़े मेद् पर शोग
समृद्ध हों, उपहिंसा से रहित हों।

བསྟན་ལ་དད་པའི་ཡངས་པའི་རྒྱལ་ཁམས་ཀུན༔
तेन ल दे पई यङ पई ग्यल खम कुन
शासन-भक्ति वाले समस्त विशाल राष्ट्र।

བདེ་སྐྱིད་ལྡན་ཞིང་བར་ཆད་ཞི་བར་ཤོག༔
दे क्यिद् देन शिङ बर छे शि वर शोग
सुख-आमोदयुक्त होकर बाधाओं से शान्त (मुक्त) हों।

ལམ་ལ་གནས་པའི་རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་ཀྱང༔
लम ल नेस् पई नल छोर दग ञिद् क्यङ
मार्ग में स्थित योगात्म लोग भी।

དམ་ཚིག་མི་ཉམས་བསམ་པ་འགྲུབ་པར་ཤོག༔
दम छ़िग मि ञम सम प डुप पर शोग
समय दूषित न हों, आशय सिद्ध हों।

བདག་ལ་བཟང་ངན་ལས་ཀྱིས་འབྲེལ་གྱུར་གང༔
दग ल ज़ङ ङेन लेस क्यीस् डेल ग्युर गङ
अच्छे-बुरे कर्म से मेरे जो सम्बन्ध हुए हैं।

གནས་སྐབས་མཐར་ཐུག་རྒྱལ་བས་རྗེས་འཛིན་ཤོག༔
नेस् कप थर थुग ग्यल वे जेस् ज़िन शोग
आकस्मिक-अन्ततः जिन (बुद्ध) द्वारा अनुगृहीत करें।

འགྲོ་རྣམས་བླ་མེད་ཐེག་པའི་སྒོར་ཞུགས་ནས༔
डो नम ल मेद् थेग पई गोर शुग नेस्
जगत् के लोग अनुत्तरयान के द्वार में प्रवेश कर।

ཀུན་བཟང་རྒྱལ་སྲིད་ཆེན་པོ་ཐོབ་པར་ཤོག༔
कुन ज़ङ ग्यल सिद् छेन पो थोप पर शोग
समन्तभद्र महाराज्य की प्राप्ति करें।।

དེ་ལྟར་གྱི་སྨོན་ལམ་དུས་དྲུག་ཏུ་བརྩོན་པར་བྱ། ས་མ་ཡ་རྒྱ༔ ལྷ་སྲས་མུ་རུབ་རྣམ་འཕྲུལ་གཏེར་ཆེན་མཆོག་གྱུར་བདེ་ཆེན་གླིང་པས་གནས་མཆོག་སེང་ཆེན་གནམ་བྲག་གི་གཡས་ཟུར་བྲག་རི་རིན་ཆེན་བརྩེགས་པའི་གོང་མོ་འོག་མ་ནས་ཁྲོམ་གཏེར་དུ་སྤྱན་དྲངས་པའི་བཻ་རོ་ཙ་ནའི་སྐུ་ཆོས་དར་ཤོག་དེས་མཚོ་རྒྱལ་གྱི་ཕྱག་བྲིས་བོད་ཡིག་བཤུར་མ་ལས་དེ་འཕྲལ་ཉིད་དུ་པདྨ་གར་དབང་བློ་གྲོས་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་དག་པར་བཤུས་པ་དགེ་ལེགས་འཕེལ། །

इस प्रकार के प्रणिधान में छह काल (सत्र) में प्रयत्नशील होना चाहिए। समयमुद्रा। देवपुत्र मु-रुब का निर्माण, महानिधि परमभूत दे-छेन् लिङ्-पा द्वारा परम स्थल सेङ्-छेन् नम्-डग् के दक्षिण-कोण (में स्थित) रिन्-छेन् चेग्स-मा (नामक) पहाड़ के नीचे के गोङ्-मो के नगर-निधि से आकर्षित वैरोचन का धर्म प्रत्यक्ष पट्ट-कागज़ छो-ग्यल का पत्र पट्टाक्षर में लिखे उन भोटी अक्षरों को उसी समय पद्मा गर्-वङ लो-डोस् थाह्-यस् द्वारा शुद्ध रूप से उतारा गया।

स्वस्ति भवतु।।

# दीप-प्रणिधान

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་སྒོམ་བཟླས་འགྲོ་དོན་མཁའ་ཁྱབ་མ།

# महाकारुणिक की भावना-जप : जगदर्थ आकाश-व्याप्त

སྐྱབས་འགྲོ་སེམས་བསྐྱེད་ནི།
शरणगमन-चित्तोत्पाद–

སངས་རྒྱས་ཆོས་དང་ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་རྣམས་ལ། །
सङ ग्येस् छोस् दङ छोग क्यि छोग नम ल
बुद्ध, धर्म एवं परम गण के,

བྱང་ཆུབ་བར་དུ་བདག་ནི་སྐྱབས་སུ་མཆི། །
छङ छुप बर दु दग नि क्यप सु छि
बोधि पर्यन्त मैं शरण जाता हूँ।

བདག་གིས་སྦྱིན་སོགས་བགྱིས་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱིས།།
दग गीस् छिन सोग ग्यीस् पई सोद् नम क्यीस्
मेरे द्वारा दानादि-कृत पुण्यों से,

འགྲོ་ལ་ཕན་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་འགྲུབ་པར་ཤོག །
डो ल फेन छिर सङ ग्येस् डुप पर शोग
जगद्-हितार्थ बुद्ध बन जाऊँ।। (तीन बार)

ཡན་གསུམ། ལྷ་བསྐྱེད་ནི།
देवोत्पत्ति–

བདག་སོགས་མཁའ་ཁྱབ་སེམས་ཅན་གྱི། །
दग सोग खा ख्यप सेम चेन ग्यि
स्वयं सहित आकाश-व्याप्त सत्त्वों के,

སྤྱི་གཙུག་པད་དཀར་ཟླ་བའི་སྟེང་། །
चि ज़ुग पे कर द बई तेङ
मूर्द्धा पर पुण्डरीक-चन्द्रमा के ऊपर।

ཧྲཱིཿལས་འཕགས་མཆོག་སྤྱན་རས་གཟིགས། །
ह्राःलिेस् फग छोग चेन रेस ज़िग
हृः से परमार्थ अवलोकितेश्वर,

དཀར་གསལ་འོད་ཟེར་ལྔ་ལྡན་འཕྲོ། །
कर सल होद् ज़ेर ङ देन ठो
श्वेत प्रकाशित पञ्च रश्मियाँ हुई प्रस्फुटित।।

མཛེས་འཛུམ་ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན་གྱིས་གཟིགས། །
ज़ेस् ज़ुम थुग जे चेन ग्यीस् ज़िग
हास-युक्त करुण-चक्षु से देखते,

ཕྱག་བཞི་དང་པོ་ཐལ་སྦྱར་མཛད། །
छग शी दङ पो थल छर ज़े
चार हाथों में प्रथम अञ्जलिबद्ध किये।

འོག་གཉིས་ཤེལ་ཕྲེང་པད་དཀར་བསྣམས། །
ह़ोग ञीस् शेल ठेङ पे कर नम
नीचे के दोनों स्फटिक-माला और पुण्डरीक लिये,

དར་དང་རིན་ཆེན་རྒྱན་གྱིས་སྤྲས། །
दर दङ रिन छेन ग्येन ग्यीस् टेस्
वस्त्र रत्नालंकारों से अलंकृत।।

རི་དྭགས་པགས་པའི་སྟོད་གཡོགས་གསོལ། །
रि दग पग पई तोद् योग सोल
मृगचर्म का उत्तरासंग धारण किये,

འོད་དཔག་མེད་པའི་དབུ་རྒྱན་ཅན། །
ह़ोद् पग मेद् पई उ ग्येन चेन
अमिताभ के मुकुट से युक्त।

ཞབས་གཉིས་རྡོ་རྗེ་སྐྱིལ་ཀྲུང་བཞུགས། །
शप ञीस् दोर जे क्यिल टुङ शुग
द्विपाद वज्रपर्यङ्क बैठे हैं,

དྲི་མེད་ཟླ་བར་རྒྱབ་བརྟེན་པ། །
डि मेद् द बर ग्यप तेन प
आश्रय लिये पार्श्व विमल चन्द्र का,

སྐྱབས་གནས་ཀུན་འདུས་ངོ་བོར་གྱུར། །
क्यप नेस् कुन दुस् ङो बोर ग्युर
हुये शरण सर्वसंग्रह स्वरूप।।

བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མགྲིན་གཅིག་ཏུ་གསོལ་བ་འདེབས་པར་བསམ་ལ།
स्वयं सहित समस्त सत्त्वों द्वारा एक कण्ठ से अध्येषणा कर रहे हैं–ऐसा चिन्तन करना चाहिये।

སྐྱོན་གྱིས་མ་གོས་སྐུ་མདོག་དཀར། །
क्योन ग्यीस् म गोस् कु दोग कर
दोष अलिप्त श्वेत-वर्ण-काय,

རྫོགས་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་དབུ་ལ་བརྒྱན། །
ज़ोग सङ ग्येस् क्यीस् उ ल ग्येन
सम्बुद्ध द्वारा मुकुट पर अलंकृत किये।

ཐུགས་རྗེའི་སྤྱན་གྱིས་འགྲོ་ལ་གཟིགས། །
थुग जे चेन ग्यीस् डो ल ज़िग
करुण-चक्षु द्वारा सत्त्वों को देखते,

སྤྱན་རས་གཟིགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
चेन रेस ज़िग ल छग छ़ल लो
अवलोकितेश्वर को नमन करता हूँ।।

ཞེས་ཅི་ནུས་བསགས།
ऐसा यथाशक्ति (इस पाठ का) संग्रह करना चाहिये।

དེ་ལྟར་རྩེ་གཅིག་གསོལ་བཏབ་པས། །
दे तर ज़्ते चिग सोल तप पेस्
ऐसी एकाग्रचित्त अध्येषणा करने से,

འཕགས་པའི་སྐུ་ལས་འོད་ཟེར་འཕྲོས། །
फग पई कु लेस ह़ोद् ज़ेर ठोस्
आर्य-काय से हुईं रश्मियाँ प्रस्फुटित।

མ་དག་ལས་སྣང་འཁྲུལ་ཤེས་སྦྱངས། །
म दग लेस नङ ठुल शेस् छङ
**शोधित हुआ अशुद्ध कर्माभास असत्य-ज्ञान,**

ཕྱི་སྣོད་བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་། །
छि नोद् दे व चेन ग्यि शिङ
**बाह्य भाजन सुखावती क्षेत्र,**

ནང་བཅུད་སྐྱེ་འགྲོའི་ལུས་ངག་སེམས། །
नङ चुद् क्ये डोइ लुस् ङग सेम
**आन्तरिक-सत्त्व पुरुष-प्राणियों के काय-वाक्-चित्त,**

སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་སྐུ་གསུང་ཐུགས། །
चेन रेस ज़िग वङ कु सुङ थुग
**अवलोकितेश्वर काय-वाक्-चित्त,**

སྣང་གྲག་རིག་སྟོང་དབྱེར་མེད་གྱུར། །
नङ डग रिग तोङ येर मेद् ग्युर
**आभास प्रतिध्वनि विद्या-शून्य हुये अभिन्न।।**

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧཱུྃ། འཁོར་གསུམ་མི་རྟོག་པའི་རང་ངོར་མཉམ་པར་བཞག །
ओंमणिपद्मेहूँ।
**ओं मणिपद्मे हूँ।।** त्रिपरिवार निर्विकल्प स्वरूप में समाहित होना चाहिये।

བདག་གཞན་ལུས་སྣང་འཕགས་པའི་སྐུ། །
दग शेन लुस् नङ फग पई कु
**स्व-पर काय-आभास आर्य की काय,**

སྒྲ་གྲགས་ཡི་གེ་དྲུག་མའི་དབྱངས། །
ड डग यि गे डुग मई यङ
**शब्द प्रतिध्वनि षडक्षरी-घोष,**

དྲན་རྟོག་ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོའི་ཀློང་། །
डेन तोग ये शेस् छेन पोइ लोङ
**स्मृति-विकल्प महाज्ञान-स्वरूप।।**

དགེ་བ་འདི་ཡིས་མྱུར་དུ་བདག །
गे व दि यीस् न्युर दु दग
**इस पुण्य से शीघ्र मैं,**

སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་འགྲུབ་གྱུར་ནས། །
चेन रेस ज़िग वङ डुप ग्युर नेस्
**अवलोकितेश्वर(-पद) सिद्ध करके।**

འགྲོ་བ་གཅིག་ཀྱང་མ་ལུས་པ། །
डो व चिग क्यङ म लुस् प
**एक प्राणी भी (संसार में) शेष न रहे,**

དེ་ཡི་ས་ལ་འགོད་པར་ཤོག །
दे यि स ल गोद् पर शोग
**उन (अवलोकितेश्वर) की भूमि पर आरूढ़ करूँ।।**

མར་མེའི་སྨོན་ལམ།

# दीप-प्रणिधान

མར་མེའི་སྣོད་ནི་སྟོང་གསུམ་གྱི་སྟོང་ཆེན་པོ་འཇིག་རྟེན་ཁམས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་དང་མཉམ་པར་གྱུར་ཅིག །
मर मे नोद् नि तोङ सुम ग्यि तोङ छेन पो जिग तेन खम क्यि खोर युग दङ ञम पर ग्युर चिग
दीप-पात्र- त्रिसाहस्र-महासाहस्र लोक-धातु के चक्रवाड़- समान हो जायें।

སྡོང་བུ་ནི་རིའི་རྒྱལ་པོ་རི་རབ་ཙམ་དུ་གྱུར་ཅིག །མར་ཁུ་ནི་མཐའི་རྒྱ་མཚོ་ཙམ་དུ་གྱུར་ཅིག །
दोङ बु नि री ग्यल पो रि रप त्सम दु ग्युर चिग   मर खु नि थई ग्य छो त्सम दु ग्युर चिग
दण्ड- गिरिराज सुमेरु के बराबर हो जायें। तेल- भूम्यन्त के समुद्र जितना हो जायें।

གྲངས་ནི་སངས་རྒྱས་རེ་རེའི་མདུན་དུ་དུང་ཕྱུར་རེ་རེ་འབྱུང་བར་གྱུར་ཅིག །འོད་ཀྱིས་སྲིད་པའི་རྩེ་མོ་མན་
डङ नि सङ ग्येस् रे रे दुन दु दुङ छुर रे रे छुङ बर ग्युर चिग   ह़ोद् क्यीस् सिद् पई त्से मो मेन
संख्या- प्रत्येक बुद्ध के समक्ष एक-एक अर्बुद हो जायें। रश्मि द्वारा- भवाग्र से नीचे (और)

ཆད་ནས། མནར་མེད་པའི་དམྱལ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱི་མ་རིག་པའི་མུན་པ་ཐམས་ཅད་བསལ་ནས་ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་
छे नेस्   मनर मेद् पई न्यल व येन छे क्यि म रिग पई मुन प थम चे सल नेस् छोग चुइ सङ
अवीचि नरक से ऊपर के समस्त अज्ञान (रूपी) अन्धकारों को हटा कर, (समस्त) दश-दिशाओं

རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་མངོན་སུམ་དུ་མཐོང་ཞིང་གསལ་བར་གྱུར་ཅིག །
ग्येस् दङ छङ छुप सेम पई शिङ खम थम चे ङोन सुम दु थोङ शिङ सल वर ग्युर चिग
के बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों के समस्त क्षेत्र-धातु प्रत्यक्ष दिखाई देते हुये स्पष्ट हो जायें।

ༀ་བཛྲ་ཨ་ལོ་ཀེ་ཨཱཿཧཱུྃ།
ओंवज्रअलोकेआः हूँ।
ओं वज्र आलोके आः हूँ।

ཨེ་མ་ཧོ། ངོ་མཚར་རྨད་བྱུང་སྣང་གསལ་སྒྲོན་མེ་འདི། །
ए म हो   ङो छर मे छुङ नङ सल डोन मे दि
हे माँ ! अद्भुत-आश्चर्य प्रकाशमान यह दीप

བསྐལ་བཟང་སངས་རྒྱས་སྟོང་རྩ་ལ་སོགས་པའི། །
कल ज़ङ सङ ग्येस् तोङ त्स ल सोग पई
भद्रकल्प के एक-हज़ार बुद्ध आदि

རབ་འབྱམས་ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་ཁམས་མ་ལུས་པའི། །
रप छम छोग चुइ शिङ खम म लुस् पई
अनन्त दश्-दिग् अशेष क्षेत्र-धातुओं के

དཀྱིལ་འཁོར་ལྷ་ཚོགས་རྣམས་ལ་འབུལ་བར་བགྱི། །
दक्यिल खोर ल्ह छ़ोग नम ल बुल बर ग्यि
मण्डल-देव-गणों को अर्पित करता हूँ।1।

ཚེ་རབས་འདི་དང་སྐྱེ་གནས་ཐམས་ཅད་དུ། །
छ़े रप दि दङ क्ये नेस् थम चे दु
इह-जन्म और सभी योनियों में

འོད་དཔག་མེད་མགོན་ཉིད་དང་དབྱེར་མེད་ཤོག །
ह़ोद् पग मेद् गोन ञिद् दङ येर मेद् शोग
अमिताभ-नाथ से अद्वैत हो जाऊँ।2।

བདེན་པའི་མཐུ་ཡིས་སྨོན་ལམ་འདི་བཏབ་སྟེ། །
देन पई थु यीस् मोन लम दि तप ते
सत्य-बल द्वारा यह प्रणिधान करने से

བླ་མ་ཡི་དམ་མཁའ་འགྲོ་ཆོས་སྐྱོང་དང་། །
ल म यि दम खा डो छोस् क्योङ दङ
गुरु, इष्ट, ड़ाकिनी और धर्मपालक,

ཕ་མས་གཙོ་བྱས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
फ मेस त्सो छेस् सेम चेन थम चे क्यि
प्रधानतया माता-पिता सहित, सर्वसत्त्वों के

རྫོགས་སངས་རྒྱས་པའི་ཞིང་ཁམས་མངོན་མཐོང་ནས། །
ज़ोग सङ ग्येस् पई शिङ खम ङोन थोङ नेस्
सम्बुद्ध-क्षेत्र-धातु (का) प्रत्यक्ष दर्शन कर

དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་རྩ་གསུམ་ལྷ་ཚོགས་ཀྱི། །
कोन छोग सुम दङ त्स़ सुम ल्ह छ़ोग क्यि
त्रिरत्न और त्रिमूल देव-गणों के

མྱུར་དུ་འགྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཏུ་གསོལ། །
न्युर दु डुप पर छिन ग्यीस् लप तु सोल
अधिष्ठित करें, (यह) शीघ्र सिद्ध हो जायें।3।

ཏདྱ་ཐཱ། པཉྩེནྡྲི་ཡ་ཨ་ཝ་བ་བོ་དྷཱ་ནཱ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ།
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अवबोधानाय स्वाहा।
तद्यथा। पञ्चेन्द्रिय अवबोधनाय स्वाहा।

ཞེས་ཇོ་བོ་རྗེ་དཔལ་ལྡན་ཨ་ཏི་ཤས་དབུས་གཙང་གི་མཆོད་ཁང་རྣམས་ལ་དཔོན་སློབ་བཅོ་བརྒྱད་ཙམ་གྱིས་ཞུར་འདོན་མཛད་ཅེས་གྲགས་སོ།། །།
ऐसा स्वामी भट्टारक श्रीयुत अतीश (आचार्य दीपंकरश्रीज्ञान) द्वारा (भोट-देश) उईस्-त्स़ङ के पूजा-गृहों में अठारह गुरु-शिष्यों सहित उद्घोष किया जाता था- ऐसा प्रसिद्ध है। ।।भवतु सर्वमङ्गलम।।